

# ভক্তিরসামৃতসিষ্ণাঃ।

পরগণজাপার জীল জীক্ষণোখার্মিনা—

পরমপ্রস্থাদ ই ল জীজাবার সি নি তিজ্ঞা

তুৰ্গমঙ্গমনাস্থাগ্যা টীক্ষা গহিতঃ।

**৺রামনার।য়ণবিদ্যারে হুন** বঙ্গভাষ্যাক্রাণিতা।

শ্রীরামদেবমিশ্রেণাম্য—

**চতুর্থস**ংস্করণ শুকাশিক।

## यूर्निमावानः

প্রীপ্রতিতি প্রদারিনীসভাজো, বহরমপুর, **বাধারমণবারে,** ব শ্রীপ্রজনাথমি শ্র— 'প্রকা-বারা

মুদ্রিত :

यन ১०७३ मारम । रेवणार्थ

# প্রথমবারের বিজ্ঞাপন।

প্রীমন্মহাপ্রভুর ভক্তগণের নিকট প্রার্থনা এই যে,"জঞ্জি-রুদাযুত্দিদ্ধ" গ্রন্থ অতিশগ প্রগোজনীয়, ইহার রুদাস্থাদে প্রক্তিত হটলে বৈষ্ণবপদের গৌরব লাভ করিতে পারিবেন না. প্রী শ্রী শ্রমহাপ্রভুর ভক্তিপ্রাণান বৈষ্ণবদম্প্রদায়ের পক্ষে এই গ্রন্থ বিষ্ণান্ত কি প্রাপ্ত কি প্রাপ্ত বিষ্ণান্ত বিষ্ণান বিষ্ণান্ত বিষ্ণান্ত বিষ্ণান্ত বিষ্ণান্ত বিষ্ণান্ত বিষ্ণান্ত অধিকারিভেদ নিরূপিত হইয়াছে. বৈফবদস্প্রদায়মাতেরই এই গ্রন্থের আলোচনা করা কর্ত্তব্য, জ্রীকৃষ্ণচৈতন্তমহাপ্রভু শ্রীরূপ ও শ্রীদনা ধনপ্রভৃতি ছয় জন গোস্বামিপাদকে স্বকীয় শক্তি প্রদানপুর্বাক পরন্দাবনধামে প্রেরণ করেন, গোস্বামি-পাদগণ ঐকুষ্ণ চৈত্তন্য মহাপ্রভুৱ সমুদায় মত ভক্তজনের উপ-কারার্থ স্বস্থ প্রত্থে প্রকাশ করেন, এই কারণে গোস্বামিপাদ-বিগের গ্রন্থ খাস্বাদন করিতে না পারিলে ক্লফভক্তি স্বত্র্লভ হইবে ৷ এখনকার কতকগুলি বৈষ্ণবদস্পাদায়কে দেখিতে পাওয়া যায়, যে কেবল তাহাদের তিলকও মালাধারণ পর্যন্ত. কুঞ্চপ্রেম যে কি প্রকার ভাহার দিকু দিয়েও যাইতে পারেন না, অতএব তাঁহারাও যেন এ এত্তের আসাদনে পরাজ্থ না হন, ধনব্যায়র শহা অনেকের খাছে, কিন্তু ধন কাহারও সঙ্গে বায় না, সামান্য ধনবায়ে ভক্তিধন ক্রেম করিতে পারিলে ইহ-•লোক ও পরলোক জয় করিতে পারিবেন, এমন সহজ উপায়ে তাঁহারা কেন বঞ্চিত হয়েন, তবে যাঁতে পরাজ্যুথ দেখা যায়

তিনি জন্মান্তরীণ অপরাধে পামরচিত হইয়াছেন, অতএব ক্ষ্যু-প্রেম চলভি, এই ভক্তিরসায়তিসিলুর কণামাত্রও আস্থানন করিতে পারিলে সংসার হইকে নিস্তার পাইবেন, নজুবা জন্ম জন্ম সংসারভোগ করিতে হইবেক। ইত্যলং বিস্তরেণ ॥ জীরামনারায়ণবিদ্যারত।

### ২্র, ৩য় ও ৪র্থবারের বিজ্ঞাপন

"ভক্তিরদায়তদিক্" প্রথমদংক্ষরণ, দ্বিতীয়দংক্ষরণ ও তৃতীয়দংক্ষরণ ভারতবিখাতি প্রামনারায়ণবিদ্যারত্ব মহাশয় পূর্বে যাহা প্রকাশ করিয়াছিলেন, তাহা সমস্থই একেবারে নিঃশেষ হওয়ায় আমি পুনরায় চতুর্থদংক্ষরণ পাঁচ শত এছ মুদ্রাক্ষণে প্রবৃত্ত হইলাম, বৈষ্ণবদ্যাবলম্বী প্রাহকপণ আমার প্রতি সকলেই এরপ কুপা দৃষ্টিরাখিলেই আমি চরিভাগ হই ও পরিশ্রম সফল হয়। ইতি ১০০১ সাল। ৪ঠা বৈশাধ।

> বৈষ্ণবস্থাত্রনকুপাভিলাষী — ভারামদেব মিশ্র, ম্যানেকার।

क्तारमा भी भन्न DE STREET **\$**5 a MINATES **ર** ર " अविगादत्र 29 क्षेत्रक ह ₹ & के मन्त्र्नामित्रमं হ ৫ ট্র প্রথ প্রবৃত্ত • ঐ মোক সমুতারুং কৈ প্ৰকৃষ্ণ ভাৰত ज माळानमवित्नवाचा 25 শাধনত কি . देवशी जे ভব্তিবিৰয়ে অধিকারী৷ 83

· [本]

ট্র উত্তম জী ট্র মধ্যম ট্র ট্র কমিটটো

#### শ্বরং আসিয়া উপস্থিতি হয় কু কুঞ্চপাদপন্ধতন্ত্রনার ভক্তদিসের নোকস্থা হর না ভক্তিতে নরমাত্রের অধিকার

|  | - 4        |             |
|--|------------|-------------|
| <b>৬%</b> ভক্তিতে <b>অ</b> ধিকারী        | 40         | <b>૨</b> ૨' |
| বিশ্বস্কৃতক্তের দৈবাং পাপ উপস্থিত        |            |             |
| <b>হইলে তাহাতে</b> প্ৰাণ্ডিত নাই         | 55         | 8           |
| সাধনভক্তিরাচড়ঃবৃষ্টি অলস্কল             | *! વેં     | >           |
| <b>ওরূপার্গা</b> র্জ্ব                   | me alm     | >           |
| क्रमभीकोनिकन                             | ١١ بحو     | 8           |
| বিশাস সহকাবে প্রধানবা                    | pc. 0.0    | ર           |
| স <b>াধুরত্ম</b> হিন্দ্র                 | الاستطي    | * «         |
| नवर्ष किछान।                             | b d        | <b>ર</b>    |
| <b>রুক শ্রী</b> ভার্থে <b>ভোগতা</b> াগ   | ৳ ও        | ২           |
| बात्रकानि नियाम                          | ৮৬         | #           |
| नुक्रांनि योग                            | ₩3°        | 8           |
| জুর্জাপুবর্ষ্টিত। অর্থাৎ আপনার বার: गাহা |            |             |
| ্রাক্তি বেব সেই মাত্র নিয়মের গ্রহণ      | bb         | , ,         |
| THE HALLS                                | b≈         | >           |
| प्रमाणानि त्रक्त रूपावर                  | F 20       | 8           |
| <sup>শু শু</sup> র্বির সঙ্গ পরিত্যাগ     | <b>»</b> • | ۲           |
| 🖄 👣 অনমবন্ধিক ভিন্দী                     | 2 0        | 9           |
| ভ প্ৰে <u>শ্ব</u> পৰিসাম                 | 22         | ર           |
| - শীভূততা                                | 25         | ২           |

| n ( Ne   | . € .       |              |
|--|-------------|--------------|
| ्रि <b>निय</b> यः ।  | পৃষ্ঠা। '   | <b>अक्ष्</b> |
| অঞ্জের্তার অবজ্ঞাশ্স   | <b>३</b> २  | 8            |
| आनिहिर्गर्व अछि षण्यान   | <b>.</b> 42 | 1            |
| ्मवीष्र । ६वळन   | ७८          | >            |
| नामानवाध -   | <b>১৮</b>   | >            |
| কৃষ্ণ শুণ্ৰা উক্ল উভয়েব নিন্দাদির অস্থিস্তা   | 74          | *            |
| दे <del>वेक्क व</del> र्षे हे स्थान कर   | 44          | ২            |
| नामांकल धार्व  | 22          | 1            |
| ने बार्ग वास्तु ।  | . >••       | 8            |
| इ.विक्यार वृष्टा   | 2.2         | •            |
| र्भव मुक्ती  | 2 • 5       | >            |
| a girdi:   | >•₹         | * \$         |
| es de la companya de | > 5         | 4            |
| The state of the   | >•3         | <b>ર</b>     |
| हीं हैं  | 2.0         | 8            |
| ংকি ঋ্শবে শি   | >.0         | ٦            |
| - ব্লিকেন <u>'</u>   | > 8         | >            |
| 破碎料  | 3 * 8       | •            |
| ***चाउँचाउँ  | > + 10      | ₹            |
| শীষ  | ۹ ۵ د       | •            |
| দ <b>হী</b> ৰ্ত্তন   | 2 . A.      | *            |
| गोलाकी इन  | 2.0₽        | 3            |
| अम्की केन  | 3 • ₺       | 8            |
| <b>等</b> 对   | >>+         | 3            |
| निक्किं  | >> २        | b            |
| দ প্রার্থনা হিক্স বিজ্ঞপ্তি  | >>>         | >            |
| रेमसाहदर्ग्धकः की  | <b>3</b> >> | ş            |

| বিষয়                      | र्वेक्ष ।  | পঙ্কি।   |
|----------------------------|--|----------|
| नाननामदी व                 | >>>  | 9        |
| <b>ত</b> বপাঠ              | >>>  |          |
| देनदबन्ताचान               | >> 0   | ٠ ٩      |
| পাদ্যাম্বাদ                | >>8  | Ċ        |
| <b>ध्</b> भरमोत्र <i>छ</i> | <b>7</b> ,8  | ٠        |
| নিশাল্যদৌরভ                | >>e  | >        |
| শ্ৰীমূৰ্ত্তিৰ দৰ্শন        | >> @   | 1        |
| 🗬 मृर्डिव मर्नन            | <b>&gt;&gt;</b> >  | ર        |
| আরাত্রিকদশন                | 22#  | ર        |
| <b>छ</b> <সব দর্শন         | 559  | ર        |
| পুজা ধশন                   | >> 9   | •        |
|                            | The same of the sa |          |
| স্ত্রবণ                    | >>9  | <b>b</b> |
| নাম শ্ৰবণ                  | 320  | ,        |
| চরিত ভাবণ                  | 724  | - 8      |
| <b>€्र</b> ीं चूर्यम       | 3>9  | >        |
| শ্রীক্রমের কুপার প্রতি 🕫   | >>>  | , 'y     |
| শ্বতি                      | >< •   | 9        |
|                            |  |          |
| <b>था</b> न                | >5>  | 8        |
| <b>अ</b> नशांनः            | <b>ે</b> રર  | ર        |
| कींशांगान                  | <b>ે</b> ર   | q        |
| সেবাধ্যান                  | <b>\$</b>  | 4        |
|                            | named and  |          |
| व्यथ माम्त                 | > <b>?</b> ¢   | >        |
| क खीर्शनस्थात्रः           | 3 2 %  | >        |
|                            |  |          |

| 9               |  |
|-----------------|--|
| পৃষ্ঠ ।         | পঙ্জি  |
| >२१             | ર  |
|                 |  |
| <b>&gt;</b> 29  | ¢  |
| >>৮             | >  |
| <b>&gt; २</b> > | ¢  |
|                 |  |
| > 2 •           | Š  |
| 2.52            | 9  |
| 2 02            | <b>&gt;</b>  |
|                 |  |
| 200             | >  |
| Ð               | 8  |
| > 22            | ٩  |
| <b>5</b> :58    | Œ  |
| 2.00            | Ь  |
| <b>১</b> ৩৭     | ২  |
| <i>&gt;</i> এন  | •  |
| >8•             | ٦  |
| \$8\$           | <b>4</b>   |
| >82             | 6-   |
| <b>(</b>        | *  |
| >8₹             | ર  |
| \$8₩            | 2  |
| 285             | ç  |
|                 |  |
|                 | পূর্ত ।  > ২ গ  > ১ গ  ১ গ |

|    |   | 1.,,                   |          |
|----|---|------------------------|----------|
| ,  | विष्यू ।                                | পৃষ্ঠ।                 | পঙ্কি।   |
|    | শ্রদ্ধা থাকিলেও মহুষোর কল্যাণ           | \$85                   | 4        |
|    | <b>जी</b> मृष् <u>डि</u>                | > 0 •                  | ,        |
|    | <b>জ</b> ীভাগবত                         | > 4 >                  | >        |
|    | ङ्गक्षण्डक                              | ३ ७ २                  | >        |
|    | নাম                                     | > 0 5                  | •        |
|    | মথুরাম গল                               | <b>&gt;</b>            | >        |
|    |   |                        |          |
|    | বর্ণাপ্রম ধর্মভক্তির অঙ্গ নহে           | > ¢ ¢                  | છ        |
|    | <b>জ্ঞানবৈরা</b> গ্য ভক্তিযোগের কণ্টক এ | কারণ                   | . · i≹   |
|    | ভক্তিই ভক্তিযোগে প্রবেশ করান            | ১৫৭                    | ર        |
|    | ওক্তিদ্বার। জ্ঞানবৈরাগ্য সিদ্ধ হয়      | , > ¢ F                | 8        |
|    | বৈরাগ্য                                 | >.60                   | ৩        |
|    | <b>ফড়বৈরা</b> গ্য                      | <i>&gt;७</i>           | >        |
|    | উত্তমাভক্তিতে যে সকল অঙ্গ অঞ্পযু        | क ३७२                  | >        |
|    | ভক্তিই গতিপ্ৰদ                          | 200                    | t        |
|    | একাঙ্গা ভক্তি                           | <b>&gt;</b> %8 .       | <b>ર</b> |
|    | অনেকাঙ্গা ভক্তি                         | 5 58                   | •        |
|    |   | THE PARTY AND ADDRESS. |          |
|    | অথ রাগাহুগা                             | ১৬৬                    | 8        |
| 13 | ভক্ত ও শক্রর গতি পৃথক্                  | 59•                    | <b>ર</b> |
|    | কামরূপা                                 | >90                    | •        |
|    | সম্বন্ধকাপা রাগামুগা                    | >96                    | ¢        |
|    | রাগামুগা ভক্তির অধিকারী                 | >99                    | 8        |
|    | লোভোৎপত্তি লক্ষণ                        | >99                    | ٩        |
|    | <b>কামানুগা</b>                         | 24.                    | >        |
|    | <b>गवकार्</b> श                         | >>8                    | 8        |
|    |   |                        |          |

| विषग्र ।                   | পৃষ্ঠা ।                       | १७ कि।    |
|----------------------------|--------------------------------|-----------|
| অথ ভাব                     | ンレゼ                            | >         |
| দাধনাভিনিবেশজ              | ०६८                            | ٩         |
| রাগামুগা সাধনাভিনিবেশজ     | <b>४</b> ६८                    | •         |
| অথ শ্ৰীকৃষ্ণ তম্বক প্ৰদাদৰ | 9 そく                           | ર         |
| কৃষ্ণ প্ৰদাদজ ভাব          | <b>5</b>                       | ¢         |
| বাচিক প্রদাদসভাব           | ক্র                            | •         |
| আলোকদানজভাব                | ンジト                            | ৩         |
| शर्किस्वाव 😘               | ক্র                            | *         |
|                            | described activities officials |           |
| তম্ভক প্ৰদাদজ ভাব          | <i>661</i>                     | 8         |
| জাতাকুর ভাব ভক্তে মণ্ডাব   | ₹••                            | ٩         |
| কান্তি                     | <b>২•</b> ১                    | •         |
| অবার্থকালত্ব               | <b>₹•</b> ₹                    | ર         |
| বিরক্তি                    | २०७                            | 5         |
| মানশৃভ তা                  | <u>.</u> 🔄                     | ৬         |
| অশোবক                      | ₹•8                            | 8         |
| সমূৎকণ্ঠা                  | ₹•₡                            | Φ         |
| নামগানে সদা কচি            | ₹•७                            | ৬         |
| তকাণাখ্যানে আদক্তি         | ર • ૧                          | >         |
| ত্ৰসতি স্থলে প্ৰীতি        | २०१                            | 8         |
|                            | is named production analysis,  |           |
| র তিলকণ                    | ₹•৮                            | <b>ર</b>  |
| বত্যাভাগ                   | २००                            | <b>'a</b> |
| প্রতিবিশ্ব                 | ₹•₽                            | 8         |
| ছায়া                      | <b>\$</b> >>                   | <b>ર</b>  |

| विवर्षः ।                    | · পৃষ্ঠা।    | পঙ্কি।   |
|------------------------------|--------------|----------|
| <b>्रश्र</b> मन              | হবী          |          |
| অগ প্রেম                     | <b>२</b> ५ ९ | >        |
| ভাবোণ                        | <b>37</b> P  | 8        |
| বৈধভাবোগপ্রেস                | <b>D</b>     | 4        |
| রাগাতুগীয়ভাবোখপ্রেম         | रऽञ          | 9        |
| অণ হরির অতি প্রসানোখপ্রেন    | ঐ            | ٦        |
| মাহাত্মজান যুক               | <b>২</b> २ o | 8        |
| কেবল প্রেম                   | <b>২</b> ২১  | 2        |
| <b>अन्य छे</b> नरत्रद्र क्रम | 13           | >        |
| मृक्ति ।                     | বৈভাগ ॥      |          |
| বিভাব                        | नहती।        | •        |
| দক্ষিণ বিভাগের অনুক্রমণিকা   | <b>२२</b> ७  | >        |
| বিভাব                        | <b>३</b> २>  | 8        |
| का न चन                      | २०•          | २        |
| কুষ্ণ আশিষন                  | <b>A</b>     | •        |
| অন্ত কপে ঐ                   | २०५          | 8        |
| শ্বরূপে ঐ                    | २७२          | >        |
| আৰুত ঐ                       | <b>२</b>     | ৩        |
| শ্রুকট স্বরূপে জালম্বন       | <b>२</b> :၁२ | *        |
| কুষ্ণের শুণ                  | २७०          | ¢        |
| হুরমা কি                     | ₹8•          | <b>ર</b> |
| সর্ক সলকণান্বিত              | ₹8>          | •        |
| <b>भ</b> टनांच <b>के</b>     | ₹85          | ¢        |
| অংশেথ ঐ                      | 282          | >        |

| विषय ।                          | शृष्ट्य ।                   | পঙ্কি।      |
|---------------------------------|-----------------------------|-------------|
| অপ ক্রচির                       | 288                         | ₹ .         |
| ভেজদা যুক্ত                     | <b>૨</b> ૪%                 | >           |
| বলীয়ান্                        | <b>२</b> 8 <b>१</b>         | .9          |
| বয় সাম্বিত                     | ₹8₩                         | <b>9</b> 1. |
| বিবিধাদ্ভভাষাবিং                | <b>२</b> ८৯                 | •           |
| <b>শত্যবাক্য</b>                | <b>୧</b> 8∙                 | <b>u</b>    |
| <b>ि</b> शंत्र <b>य</b> म्      | <b>२</b> ৫२                 | >           |
| বাবদূক                          | २৫२                         | <b>b</b> *  |
| <b>স্</b> পৃতি                  | ₹₡8                         | ŧ           |
| বুদ্ধিমান্                      | ₹ <b>¢</b> 9                | •           |
| প্ৰতিভ ৃদ্বিত                   | <b>36</b> 6                 | ¢           |
| বিদগ্ধ                          | ₹�•                         | ર           |
| চ <b>তু</b> র                   | ঽ৬•                         | ٠<br>م      |
| দক্ষ                            | <i>২৬</i> ১                 | ¢           |
| कृष्टळ                          | <b>ર ৬</b> ૨                | •           |
| <del>হা</del> দ্ <i>ড়</i> ব্ৰত | ર <b>ે</b>                  | •           |
| দেশকাল স্থপাত্রজ্ঞ              | રહ                          | •           |
| শাস্ত্রচকু                      | ર <i>ખ</i> ખ                | •           |
| <b>ভ</b> চি                     | <b>२</b> ७ <b>१</b>         | 8           |
| <b>व</b> की                     | રછ৮                         | <b>5</b>    |
| रें इ                           | ₹ <b>٩</b> •·               | >           |
| गंख                             | 3                           | ъ           |
| <b>इ.ग</b> िंग                  | <b>২</b> ૧১                 | 8           |
| ান্তীর                          | <b>२</b> १२                 | ¢           |
| /তিমান্<br>বম                   | <b>২</b> ৭৩                 | ŧ           |
| १५ .<br>श्रिक                   | २ <b>१</b> ৫<br>२१ <b>७</b> | <b>•</b>    |
|                                 | ×1-                         | •           |

| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | পৃষ্ঠা।       | পঙ্ক্তি ৷ |
|---------------------------------------|---------------|-----------|
| বিষয়।                                |               | •         |
| ধার্শ্মিক                             | ২৭৮           | •         |
| শ্র                                   | 29>           | 4         |
| ক্ষণ                                  | <b>4</b> 42   | >         |
| মানা মানকুৎ                           | २৮२           | ¢         |
| मिकिन                                 | २४७           | 8         |
| <b>विनग्री</b>                        | २४8           | ર         |
| <b>ट्री</b> मान्                      | <b>२</b> ৮8   | <b>a</b>  |
| শরণাপত পালক                           | ২৮৬           | 8         |
| स्थी                                  | <b>२</b> ৮१   | •         |
| ·<br>ভক্তমূৰৎ                         | २५३           | •         |
| প্ৰেমবশ্য                             | २ क ५         | •         |
| স্ক্ ওড়ক্ব                           | २ ३ र         | ૭         |
| প্রতাপী                               | २२०           | ર         |
| <b>की</b> र्छिमान्                    | २४●           | 9         |
| त्रस्तार                              | २৯⊄           | 8         |
| ना <b>धून</b> माञ्चय                  | 229           | ٩         |
| নারীগণ-মনোহারী                        | ২৯৭           | t         |
| <b>मक्</b> तित्रांश                   | २৯७           | >         |
| <b>म</b> मृक्षिमाम्                   | <b>6</b> ¢ \$ | >         |
| <b>व</b> दीयांन्                      | 402           | >         |
| <b>के</b> बंद                         | ৩•১           | ъ         |
| স্দা স্কুপসংপ্রাপ্ত                   | <b>७</b> ◦8   | ર         |
| স্কৃত                                 | ७०৫           | >         |
| নিতা নৃতন                             | <b>9.</b> 5   | •         |
| সচিবানশ্যাস্ত্র                       | ৩০৮           | 8         |
| मळनाम-पराज्यान<br>मक्समिषि निरमिष्ठ   | 9>>           | •         |
| অবিচিন্তা মহাশক্তি                    | ં ૭১૨         | •         |

| <b>U</b> o                 |                            |          |
|----------------------------|----------------------------|----------|
| বিষয় ৷                    | श्रृष्ठी ।                 | পঙ্কি।   |
| দিবা ুসর্গাদিক র্তত্ব      | ७১२                        | •        |
| ব্ৰহ্মক্তাদিমোহন           | ৩১৩                        | 8        |
| ভক্তপ্ৰারন্ধবিধ্বংস        | ৩>৪                        | ৩        |
| কোটি ব্ৰহ্মাণ্ড বিগ্ৰহ     | ७) ৫                       | ¢        |
| অবতারাবশীবীজ               | ७२ <b>१</b>                | 8        |
| হতারি গতিদায়ক             | ७८७                        | ર        |
| আক্সারামগণাকর্ষী           | ৩২ •                       | 8        |
| <b>नी</b> नांधिका          | 957                        | ২        |
| প্রেম্না প্রিয়াধিক্য      | ७२२                        | ૭        |
| বেৰুমাধুৰ্যা               | ७२७                        | ٩        |
| রপমাধুর্য্য                | ળર∢                        | '3       |
| হন্নির পূর্ণাত্মস্বাদি ভেদ | ७२৮                        | ৩        |
| 'ধীরোদাত্ত                 | <b>७२४</b>                 | 9        |
| <b>ধীম্ব</b> ললিত          | ৩৩১                        | ¢        |
| <b>ধীরশান্ত</b>            | <b>೨೨</b> ೨                | 5        |
| ধীরোদ্ধত                   | <b>90</b> 8                | Ġ.       |
| ভগ্ৰন্মূৰ্ত্তিতে দোষ রহিত  | <b>√</b> 22€               | 8        |
| ञहे मम्खन                  | ¹98 <b>•</b>               | e        |
| শেভা                       | 985                        | ર        |
| বিলাস                      | <b>૭</b> 8૨                | ₹.       |
| <b>মাধ্</b> ৰ্য্য          | <b>৩</b> 8₹                | >•       |
| মাজল্য                     | <b>৩</b> ৪২                | 9        |
| टेक्स                      | ৩৪৪                        | •        |
| তেজ                        | <b>७</b> 8€                | t        |
| ननिठ                       | 989                        | <b>ર</b> |
| ঔষার্য্য                   | <b>18⊕</b><br>√38 <b>⊬</b> | »<br>9   |
| <b>জ্রীকৃঞ্জে</b> র সহায়  | ~ 6 <b>7</b>               | ,        |

| বিষয় ।             | পৃষ্ঠা।  | পঙ্কি    |
|---------------------|--|----------|
| অণ কৃষ্ণভক্ত        | ৩৪৯  | `        |
| সাধক                | <b>98</b> %  | ٩        |
| সিদ্ধ               | ٥٥ >   | ৩        |
| প্রাপ্ত সিদ্ধি      | ৩৫১  | ٩        |
| সাংন সিদ্ধ          | ७६५  | ప        |
| <b>কুপাসিদ্ধ</b>    | ৩৫৩  | 8        |
| নিত্য <b>পি</b> দ্ধ | <b>०</b> ६६  | 2        |
|                     | Commence of the Commence of th |          |
| ष्यथ উদ्দीপন        | 600  | ৩        |
| <b>ત્ક</b> ન        | 500  | <b>b</b> |
| বয়স                | હહડ  | 2        |
| প্রথম কৈশোর         | <b>૭</b> કર્   | ' २      |
| मधा किलात           | ∙ ప కు ๕   | ¢        |
| শেষ কৈশোর           | <b>પ</b> હર્   | ৬        |
| ক্ষের মোগনতা        | ৩৭১  | ż        |
| <b>टगोन्न</b> र्था  | ৩৭০  | ઝ        |
|                     |  |          |
| অথ রূপ              | 8 PC   | •3       |
| মূহতা               | ৩৭৫  | >        |
| চেষ্টা              | <b>৩</b> ৭ €   | ь        |
| রাদ                 | ৩৭৬  | >        |
| ছষ্টবৰ              | <b>৩१</b> ৬  | ৬        |
|                     | **************************************   |          |
| <b>अ</b> नांधन      | ৩৭৭  | •        |
| <b>र</b> मन         | <b>৩</b> ৭৭  | ¢        |
| ষুগ                 | তপু প  | ь        |
| <b>इ</b> क्         | ৩৭৮  | <b>\</b> |

| বিষর ৷             | পृष्ठी ।            | পঙ্কি। |
|--------------------|---------------------|--------|
| ভূমিষ্ঠ            | .99 ৯               | 8      |
| আকল্ল              | <b>७•</b> ৮         | ર      |
| ग छन               | ७४२                 | ર      |
| শ্বিত              | ৩৮৩                 | ર      |
| সৌরভ               | ে বরু               | •      |
| 4 <b>%</b>         | <b>७</b> ४६         | •      |
| বেণু               | <b>೨৮</b> ৭         | •      |
| স্বলী              | <b>৩৮৫</b>          | ર      |
| <b>⋖</b> ९¥҈∏      | 3) <del>4</del> (c) | ¢      |
| শৃঙ্গ              | এ৮৬                 | •      |
| কন্মু অৰ্থাং শন্তা | <b>্রচ</b> ৮        | ২      |
| পীদাক              | ৩৮৮                 | *      |
| ক্ষেত্র            | ৩৮৯                 | >•     |
| তৃশ্সী             | <b>ಿ</b> ದ್ದ        | ¢      |
| ভ ক্               | <b>৩</b> ৯ •        | 5.∙    |
| ভগ্ৰশাস্ব          | <b>৩</b> ৯২         | >      |
| ৰমুভাৰ ়           | <i>و</i> ډ <i>د</i> | >      |
| <b>न्</b> ष्ठा     | ∂&¢.                | .,     |
| -<br>কিনুঠি ভ      | 98                  | ¢      |
| গীভ                | ৩৯৫                 |        |
| ক্রোশন             | ৩৯৬                 | *      |
| তমুনোটন            | ७≽७                 | >      |
| <b>टक</b> ांव      | <b>?</b> ۾و         | ¢      |
| জ্ <i>ন্ত</i> ণ    | <b>೨</b> ৯৮         | >      |
| লাসভূমা            | <b>এ৯৮</b>          | . &    |
| লোক্মণেকা পরিস্থাস | दइए                 |        |

| अर्छ। ।                | পঙ্কি।   |
|------------------------|--|
| 801                    | •  |
| 8                      | •  |
| 8•>                    | •  |
| 8 • ₹                  | ર  |
| Militar minus (facing) |  |
| 8•৩                    | 8  |
| 8 • 8                  | >  |
| 8.5                    | ર  |
| 8•9                    | ર  |
| 8 • ৯                  | ৬  |
| <i>e</i> ¢8            | ŧ  |
| 8>€                    | <b>૭</b> ·   |
| 859                    | ۲  |
| 852                    | >  |
| 8२२                    | 8  |
| 8 २ 8                  | ৮  |
| 8२१                    | ૭  |
| A-teriportulo-a        |  |
| 8२४                    | 9  |
| 8 <b>♥</b> >           | 9  |
| 8 🤷                    | <b>ર</b>   |
| 839                    | ь  |
| <b>९७</b> ৫            | <b>ર</b>   |
|                        |  |
| 8 ৩৮                   | ৩  |
| ક્છ૧                   | 2  |
| 8 <b>%</b>             | >  |
|                        | 800<br>800<br>800<br>800<br>800<br>800<br>800<br>800<br>800<br>800 |

| ত্ৰণতীপ  ত্ৰণ ব্যভিচাৰী  নিৰ্দেশ  বিবাদ ধ <sup>৩ ০</sup> কৈলা  ত্ৰণ বিত্ৰণ ধ <sup>৩ ০</sup> কলা  ত্ৰণ বিত্ৰণ ধ <sup>৩ ০</sup> কলা  ত্ৰণ বিত্ৰণ বিত্ৰণ  ত্ৰণ বিত্ৰণ বিত্ৰণ  কলা  ত্ৰণ বিত্ৰণ  কলা  ত্ৰণ বিত্ৰণ  কলা  ত্ৰণ বিত্ৰণ  কলা  ত্ৰিভা  কলা  কলা  কলা  কলা  কলা  কলা  কলা  ক  | विषय ।         | शृष्टी ।    | পঞ্জি।   |
|---|----------------|-------------|----------|
| ভাগ ব্যভিচারী নির্দেদ বিবাদ ধর্ণ স বিবাদ বিবাদ ধর্ণ স বিবাদ ব |                | 88•         | •        |
| ভাগ ব্যভিচারী নির্কোদ থিনা বিবাদ ধর্ণ স কিন্তা ক্রিলা ক্রিলা ক্রিলা ক্রিলা ক্রিলা ক্রিলা ক্রিলা কর্মা | <u></u>        |             |          |
| নির্বোদ ধর্ণ স বিবাদ ধর্ণ স কল   মানি  মানি  মানি  মান  মান  মান  মান   | দ্ৰুণ বাডিচারী | 882         | •        |
| বিষাদ ৩৫০  নিমা  ১৯০  মানি  শ্রম  মদ  সর্কর  শহা  ত্রিদি  আবেগ  ভুমাদ  অপস্মান  ব্যাধি  মোহ  মৃতি  আবদ্যা  ভ্রাভা  ভ্ |                | 889         | ۲        |
| মানি  হাম  হাম  হাম  হাম  হাম  হাম  হাম  হা   |                |             | -        |
| মানি  শ্বম  নদ  গৰ্ম  শব্বা  আমি  আবেগ  উন্মাদ  অপস্মার  বাাধি  মোহ  মৃতি  আলদ্য  আগ্রেথা  অবহিথা  স্বাতি  বিতর্ক  চিন্তা  মুতি  কিন্তুক  সিতি  বিতর্ক  চিন্তা  মুতি  কিন্তুক  স্থিত  ক্রেক্ত   |                | 9€ •        |          |
| সদ  সদ  সক  সক  সক  কার্কা  ক |                | 8¢>         |          |
| মদ গৰ্ম  শক্ষা  ৪৬২  শক্ষা  ৪৬২  ৯  ত্ৰীদ  আবেগ  উন্মাদ  অপন্মান  বাাধি  মোহ  মৃতি আলদ্য  জাডা  বীড়া অবহিখা স্বতি বিতৰ্ক  চিন্তা মুতি  ১৯৯৯  |                | 8⊄€         | _        |
| গৰ্ম  শক্ষা  ত্ৰীদ  আবেগ  উন্মাদ  অপন্যা  বাধি  মোহ  মৃতি  আলদ্য  ত্ৰাভা  বিতৰ্ক  চিন্তা  মৃতি  বিতৰ্ক  কিন্তা  স্থিত  বিত্ৰিক  কিন্তা  স্থিত  স |                | 849         |          |
| শ্বন ৪৬২ ৪  ব্যাবেগ উন্মাদ অপন্মার ব্যাধি মোহ মৃতি আলদ্য জাড্য ব্রীজ্য ব্যবহিপা ন্বতি বিতর্ক চিন্তা মৃতি কিন্তুক  |                | 698         |          |
| ত্রাদি  আবেগ  উন্মাদ  অপস্মার  বাাধি  মোহ  মৃতি  আলদ্য  জাডা  ত্রীজা  অবহিথা  স্মৃতি  বিতর্ক  চিস্তা  মৃতি  বিতর্ক  স্মৃতি  স্মুক্  স্মৃতি  স্মৃতি  স্মৃতি  স্মৃতি  স্মৃতি  স্মৃতি  স্মৃতি  স্মৃতি  স্মৃতি  স্মুক্  স্মৃতি  স্মুক্  স্মৃতি  স্মুক্  স |                | 845         |          |
| আবেগ  উন্মাদ  অপন্মার  বাধি  মোহ  মৃতি  আলদ্য  জাভ্য  বীজ্য  অবহিপা  স্বতি  বিতর্ক  চিস্তা  মৃতি  ১০০০  ১০০ |                | 89¢         |          |
| উন্মাদ  অপন্মান  বাাধি  মোহ  মৃতি আলদ্য  জাড্য  বীড়া অবহিথা স্বিত  বিতর্ক  চিম্তা মৃতি  বিতর্ক  কিন্তা মৃতি  বিত্তি  বিত্তি মৃতি মৃতি  বিত্তি মৃতি মৃতি  বিত্তি মৃতি মৃতি  বিত্তি মৃতি মৃতি  বিত্তি মৃতি মৃতি মুক্ত  বিত্তি মৃতি মুক্ত মুক্ |                | 8७१         |          |
| অপস্মার বাধি হাধি মাহ মৃতি আলদ্য ভাতা বীজা অবহিপা স্বতি বিতর্ক চিম্তা মৃতি হিন্তি হাধি হাধি হাধি হাধি হাধি হাধি হাধি হাধ  |                | 81 <b>9</b> | *        |
| বাধি মেহ মৃতি আনস্য জাত্য বীজ্ঞা অবহিথা স্বতি বিতর্ক চিম্তা মৃতি কিন্তুক কিন্ |                | 996         | <b>b</b> |
| মেহ  মৃতি  থালপ্য  ভাজা ভাজা ভাজা ভাজা ভাজা ভাজা ভাজা ভা  |                | 866         | •        |
| মৃতি আলদ্য ভাষ্য  |                | \$47        |          |
| আলপ্য ভাচ্য ভাচ্য ভীন্তা অবহিথা অবহিথা স্থাত বিত্তৰ্ক চিম্ভা মৃতি   |                | 8₽€         | ર        |
| জাডা  বীড়া  অবহিখা  স্বতি  বিতর্ক  চিস্তা  মৃতি  ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১   | ·              | ઇપ્ર8       | -        |
| ব্ৰীভা<br>অবচিখা<br>স্বতি<br>বিতৰ্ক<br>চিম্বা   |                | 866         |          |
| অবহিথা  স্বতি বিত্তৰ্ক  চিম্তা  মৃতি  ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১   |                | \$27        |          |
| শতি বিতৰ্ক চিম্তা মতি   |                | 820         | _        |
| বিতর্ক<br>চিস্তা<br>মৃতি  |                | <b>6</b> 68 |          |
| চিন্তা<br>মুক্তি  |                | € • •       |          |
| মৃতি<br>১০৮   |                | €•₹         |          |
| 4.3.  |                | ۥ8          | ·        |
|   |                | <b>€•</b> ७ | ¢        |

| विवस् ।                                  | <b>त्र्ष्ठ</b> । | পঙ্কি।   |
|--|------------------|----------|
| <b>₹</b>                                 | 6.0              | ` 9      |
| <u>উৎস্</u> ক্য                          | 603              | <b>6</b> |
| <b>উগ্ন</b> তা                           | <b>e&gt;</b> <   | ₹.       |
| অমৰ্থ                                    | 670              | *        |
| অনু বা                                   | <b>47</b> 9      | >        |
| চাপল                                     | ৫১१              | ors ,    |
| দিতা                                     | @ 2 F            | \$       |
| বোধ                                      | <b>६</b> २७      | ,<br>,   |
| <b>অপর ভাবে স্ক</b> ল অন্যভাবের অস্তর্গত | 440              | 9        |
|  |                  |          |
| <b>লঞ্চারী</b>                           | e Zed            | 8        |
| <b>4</b> 8                               | (\)              | ď        |
| বর পর্তম্                                | e o o            | ৬        |
| সাকাৎ                                    | 8 <b>C</b> D     | >        |
| ৰাব <b>িত</b>                            | \$0.0            | >        |
| অৰ্য                                     | 000              | 9        |
| বভন্না                                   | ଜ ୬ ୩            | ş        |
| রতিশ্ন্য                                 | ૯૭৮              | 5        |
| ব্ভ্য <b>মূম্প</b> ৰ্শ                   | ৫৩৮              | 9        |
| রতিগন্ধ                                  | € ৩৯             | •        |
| শুক্তা                                   | €8•              | <b>હ</b> |
| <b>গ্রা</b> তিকুব্য                      | € 8.2            | >        |
| <b>অ</b> নৌচিত্য                         | <b>€</b> 8₹      | અ        |
| चर्थ मिक                                 | 48€              | >>       |
| সমান ভাবৰয়ের সন্ধি                      | 489              | ર        |
| জিন্নবহের সন্ধি                          | ¢ 8 9            | \$       |
| কি হেতৃর সন্ধি                           | 484              | 8 '      |

| विषय ।                 | পৃষ্ঠা              | পঙ্কি।   |
|------------------------|---------------------|----------|
| •                      | <b>683</b>          | `\$      |
| অনেক হেতুর সন্ধি       | €8⊅                 | >        |
| ष्मथ भारता             |                     | <b>5</b> |
| শাস্তি                 | <b>46</b> 2         | _        |
| ভব্জভেদে ভাবের তারতম্য | 4 € 8               | b        |
|                        |                     |          |
| অথ স্থায়ীভাব          | 640                 | ,        |
| मूथा                   | 600                 | •        |
| স্থার্থ                | ¢%>                 | >        |
|                        | e&>                 | 8        |
| পরার্থ                 | ૯৬૨                 | <b>ર</b> |
| <b>₩</b>               | <i>4</i> % <b>2</b> | ¢        |
| সামান্য                | ¢ \&8               | >        |
| শ্বীক্ষা               | <b>( % (</b>        | 9        |
| শান্ত                  |                     |          |
|                        |                     | \sigma   |
| র্তির ভেদত্রম          | ७५१<br><b>८७३</b>   | ૭        |
| কেবলা                  | 463<br>663          | 3        |
| সন্থ্ৰা                | 49•                 | ર        |
| প্রীতি                 | ¢95                 | ٦        |
| <b>म</b> थ्र           | ¢ 9.0               | Œ        |
| বাৎস্লা                | <b>¢</b> 98         | >>       |
| প্রিয়তা<br>অথ গোণী    | 698                 | 8        |
| হাসরতি                 | <b>(</b> ৮)         | ,        |
| বিশ্বয়রতি             | <b>८</b> ४२         | ¢        |
| উৎসাহ রতি              | 643                 | 1        |
| শোকরতি                 | <b>CF8</b>          | ٠.<br>ج  |
| ক্রোধরতি               | <i>(</i>            | <b>Y</b> |
| ভমরতি                  | 843                 | 3        |
| <b>ভূ ও</b> পারতি      | r at 3              |          |

| विषय ।   | श्रृष्ठा ।   | পৃঙ্কি।       |
|--|--------------|---------------|
| সাত্ত্বিক রাজস তামস রভিভেদ   | •63          | ¢             |
| রতির শীতত্ব উষ্ণত্ব  | १८३          | 8             |
| রভির বিভাবাদি প্রাপ্তি   | १८३          | e .           |
| ভক্তিরস মুখ্য গৌণ ভেদে ছই প্রকার   | ৬•8          | 9             |
| <u> মুখ্যভক্তির</u> স  | 906          | >             |
| গৌণভক্তিরস   | ७•৫          | 8             |
| খাদশ ভক্তিরসের বর্ণ ও দেবতা ভেদ  | ৬০৫          | ۶             |
| শাস্তাদিরসে আনন্দানুভব   | ৬•৭          | ¢             |
| ভক্তিরস আবাদনে বহিম্প  | <i>७</i> ७ ० | ၁             |
| Accordance of the Contract of  |              |               |
| পশ্চিমবিভাগ  | ৬১৪          | >             |
| SAME A COURT OF THE PARTY OF TH |              |               |
| শাস্তভক্তিরদ   | <i>~</i> 28  | ٩             |
| <b>আৰম্</b> ন  | ৬১৬          | <b>ર</b>      |
| শাস্ত  | 97F          | >             |
| <b>অান্যা</b> রাম  | 474          | 8             |
| <b>তাপুস</b> ্ব  | G C &        | •             |
| উদ্দীপন  | <b>७२</b> •  | 4             |
| <b>অ</b> পুভাব   | ७२२          | ٩             |
| সান্ধিক  | <b>₩</b> ₹8  | •             |
| সঞ্চারী -  | ७२ <i>७</i>  | •             |
| স্থায়ী  | 65.0         | . 8           |
| 3  |              |               |
| প্রীতভক্তি   | %08<br>%08   | <b>5</b><br>9 |
| আল্ছন  | ৬৩৮<br>৬৩৮   | _             |
| मान्   | ৬৩৯          | <b>▶</b><br>∀ |
| অধিকৃত দাস   | 902          | •             |
| অাশ্রিতদাস   | 98 <b>3</b>  | <b>,</b>      |
| শরণ্য<br>জ্ঞানিচয়   | ৬ <b>৪</b> ৩ | ,<br>{        |
| <del>क</del> (।ग्र <sub>ि</sub> भ  | <b>50 5</b>  | •             |

| विवस १                                  | পৃষ্ঠা ।    | পঙ্কি।     |
|---|-------------|------------|
| দেবানিষ্ঠ                               | 886         | ¢          |
| পারিষদ                                  | <b>98¢</b>  | 9          |
| অমূগ                                    | 484         | <b>b</b>   |
| পুরস্থ অনুগ                             | 482         | ૭          |
| ব্ৰহ্ম অমুগ                             | 40.         | · <b>5</b> |
| ধুর্যাদি পারিযদএয়                      | <b>७</b> ৫२ | 4          |
| আন্ত্ৰিতাদি ত্ৰিবিধ দাদে নিতাসিকাদি ভেদ |             |            |
| অমুভাব                                  | 404         | •          |
| ্<br>শাৰিক                              | 467         | ર          |
| ব্যভিচারি                               | ৬৬২         | ૭          |
| <b>श</b> री                             | ७७४         | *          |
| অথ প্রেম                                | 49          | 9          |
| সেহ                                     | からせ         | .5         |
| রাগ                                     | दरक         | Ŀ          |
| अरगंश                                   | ७१२         | ¢          |
| উৎক্ঠিত<br>-                            | ৬৭৩         | •          |
| देवना                                   | ৬৭৫         | 9          |
| निर्द्शम                                | <b>৬৭</b> ৬ | •          |
| চিস্তা                                  | ৬৭৭         | 8          |
| চাপল                                    | ७१৮         | ર          |
| <del>অ</del> ড়তা                       | ৬৭৯         | ૭          |
| উন্মাদ                                  | 96.         | ٩          |
| বি <b>রোগ</b>                           | ৩৮২         | त्र        |
| ডাপ                                     | <b>₽</b> ₽8 | ર          |
| কুশতা                                   | <b>७</b> ৮८ | 9          |
| জাগর্যা                                 | <b>૭৮ ૯</b> | ¢          |
| <b>আঁগ</b> খশূন্যতা                     | St. C       | ь          |
| <b>অ</b> ধৃতি                           | <b>6</b> 79 | ¢          |
| <b>ৰ</b> ড়তা                           | 469         | 2          |
|   |             |            |

| বিষয়                  | পৃষ্ঠা।              | পঙ্কি।   |
|------------------------|----------------------|----------|
| रा <b>भि</b>           | & <b>৮</b> 9         | ٩        |
| चेगान<br><b>खे</b> गान | 466                  | •        |
|                        |                      | <i>b</i> |
| <b>মূৰ্চিছ</b> ত       | ৬৮৮                  |          |
| <b>মৃ</b> ভি           | <b>シ</b> レス          | 9        |
| যোগ                    | • 5.6                | ર        |
| সিকি                   | ৬৯০                  | đ        |
| ভূষ্টি                 | • <64                | 9        |
| <b>হি</b> তি           | ೮೧೮                  | <b>ર</b> |
|                        | named and the second |          |
| গৌরবপ্রীতি             | <i>७</i> द <i>७</i>  | >        |
| আলম্বন                 | ৬৯৬                  | 8        |
| হরি                    | ৬৯৬                  | 9        |
| অথ লাল্য               | P & &'               | ¢        |
| ক্সপ                   | ৬৯৭                  | ۵        |
| 'ভক্তি                 | 426                  | ₡.       |
| রূপ                    | 446                  | >        |
| <b>উ</b> क्षी भन       | 900                  | Ŀ        |
| <b>অমু</b> ভাব         | ۲•۱۹                 | ૭        |
| <b>সান্থিক</b>         | 9 • २                | <b>b</b> |
| ব্যভিচারী              | 9•৩                  | 8        |
| <b>স্থা</b> য়ী        | 9 • 8                | ¢        |
| গৌরবঞ্জীতি             | ৭০ ৬                 | ર        |
| <b>িপ্রেম</b>          | 9•৬                  | •        |
| সেহ                    | 9 - 9                | ৩        |
| ে রাগ                  | ঠ                    | ь        |
| উৎক ষ্টিত              | 9.6                  | 8        |
| বিয়োগ                 | 9•3                  | >        |
| <b>তৃষ্টি</b>          | ٩٥٠                  | >        |
| <b>হি</b> তি           | <b>₫</b>             | **       |

| বিষয় ।                 | পৃষ্ঠা।    | পঙ্কি।   |
|-------------------------|------------|----------|
| :প্রমোভক্তিরস           | 952        | >        |
| হালৱম                   | 9>2        | 8        |
| শ্রীক্লক্ষের বয়সা      | 958        | ٩        |
| <b>पूर्वमस्कि</b> त्यमा | 95¢        | ь        |
| ্রজসম্বন্ধি বয়স্য      | 924        | ь        |
| হস্                     | 925        | ¢        |
| ্বলদেবে <b>র রূ</b> প   | १२७        | 4        |
| नथां                    | 928        | 9        |
| প্রয়দথা                | 9 2 9      | >        |
| প্রমন্মস্থা             | 922        | 19       |
| डे <b>फी</b> श्रम       | ৬৩৫        | ঔ        |
|                         |            |          |
| বয়স                    | १७৫        | 9        |
| কৌমার                   | 9219       | *        |
| পৌগ গু                  | 9 <b>9</b> | ૭        |
| बानार शोश ७             | ঠ          | •        |
| वधा टभोगख               | 980        | <b>ર</b> |
| শেষ পৌগণ্ড              | 982        | ₹        |
| কৈশোর                   | 188        | ¥        |
| 類々                      | 989        | ŧ        |
| <b>শৃ</b> স্            | 989        | ¢        |
| ্বণু                    | 989        | ર        |
| 14                      | 989        | ь        |
| वेटनाम                  | 986        | >        |
| অমুভাব                  | 187        | *        |
| <u>শবিক</u>             | 142        | ¥        |
| য়ভিঙারী                | 944        | ტ        |
| शबी                     | 744        | 8        |
| রতি                     | 9€9        | >        |

| विसन् ।          | र्वेश्च ।    | পঙ্কি।   |
|------------------|--------------|----------|
| প্রেণর           | 949          | 8        |
| <b>ে</b> শ্রম    | 944          | ٠        |
| মেহ              | 9 63         | ર        |
| ন্মাপ            | ৭%•          | ৩        |
| অযোগে উৎকটিড     | 9%>          | ¢        |
| অব বিয়োগ        | 995          | Ö        |
| তাপাদি দশ দশা    | <b>૧</b> ৬২  | 8        |
| ष्मथ रशरभ मिषि   | ৭ ৬৮         | ¢        |
|                  |              |          |
| বৎসল ভক্তিরস     | ११२          | >        |
| আলম্বন           | 9 <b>92</b>  | 8        |
| গুরুবর্গ         | 990          | 8        |
| ব্রজেশরীর রূপ    | 999          | 8        |
| বাৎলা            | 995          | 8        |
| নন্দের রূপ       | 992          | •        |
| বাৎসন্য          | 96•          | 8        |
| উদীপন            | 96.          | •        |
| <b>टकोमां</b> त  | 965          | 2        |
| আদ্যকোমার        | 967          | 8        |
| মধ্যকৌমার        | ৭৮৩          | 9        |
| শেষকৌমার         | 964          | >        |
| পোগও             | 966          | >        |
| <u>কৈশোর</u>     | 966          | ь        |
| শৈশবে চাপল       | 969          | •        |
| অনুভার           | 920          | 9        |
| সাৰিক            | 922          | <b>9</b> |
| <b>দ্যভিচারী</b> | 8 <b>4</b> P | •        |
| <b>क</b> ांग्री  | 776          | •        |
| ৰাংসন্যৱতি       | 120          | 8        |

#### ، اواد

| िवस्य ।                                  | পृष्ठी ।     | পঙ্কি। |
|--|--------------|--------|
| : <b>প্র</b> মবং                         | P & P        | 8      |
| <i>,त्र ह</i> द ९                        | 446          | ૭      |
| ্যাপ্রবৎ                                 | <b>b</b>     | ٠      |
| মথ যোগে উৎকম্ভিত                         | b•>          | >      |
| বঁলোগ                                    | ক্র          | 22     |
| ্যা <b>ভ</b> চারী                        | <b>b•</b> 3  | •      |
| ্যাগে সিদ্ধি                             | ₩•9          | 9      |
| ₹ <b>8</b> ·                             | ₽•≠          | >      |
| হান্ত<br>শ্বিষ্                          | <b>&amp;</b> | ત્ર    |
| <sub>े</sub> श्                          | ·            |        |
| -6                                       | <b>6</b> 74  | •      |
| চ <b>ক্তি</b> রস<br>মাল্ <b>জ</b> ন      | 424          | ર      |
|  | ४३४          | •      |
| <b>কৃষ্ণ</b><br>ুপ্রয়দীবর্গ             | 679          | 9      |
| এ রূপ                                    | <b>४२०</b>   | >      |
| এ মাণ<br>ই রতি                           | ক্র          | 40     |
| উদ্দীপন                                  | <b>४२</b> ३  | ¢      |
| সমূভাব<br>-                              | <b>४</b> २२  | >      |
| নাৰিক                                    | <b>४२</b> .० | >      |
| ব্যভিচারী                                | <b>४</b> २७  | 4      |
| शंत्री                                   | <b>४२</b> ¢  | >      |
| বিপ্সালম্ভ                               | ४२४          | >      |
| পূর্ব্বরাপ -                             | <b>४२</b> ४  | 8      |
| यांन ८                                   | 925          | ¢      |
| প্রবাদ '                                 | ৮৩৽          | 8      |
| সংস্থা <b>গ</b>                          | ५०५          | 8      |
| <del>Paralania</del>                     | <b>৮৩</b> ৩  | >      |
| উদ্ধরবিভাগ<br>গ্রাসান্ <del>ডকি</del> রস | F38          | ર      |
| र्गिश्वाच मन                             | -            |        |

| विषय ।                        | 4011        | পঙ্কি।   |
|-------------------------------|-------------|----------|
|                               | 400         | ૭        |
| কৃষ্ণ<br>তদৰশ্বী              | 400         | ъ        |
|                               | っつと         | 9        |
| শ্বিত                         | P03         | ર        |
| হসিত                          | <b>680</b>  | ૭        |
| বহিসিত                        | P87         | >        |
| অবহ্সিত                       |             | <b>b</b> |
| অপহসিত                        | P8>         |          |
| অতিহসিত                       | <b>∀</b> 8₹ | ٩        |
|                               |             |          |
| অন্তুত ভক্তিরস                | ₽8€         | 9        |
| সা <b>কা</b> ৎ                | F89         | æ        |
|                               | <b>৮8</b> % | 9        |
| দৃষ্ট<br>শ্রুত                | F8F         | ર        |
| वार्थ<br>मःकीर्द्धिष          | <b>684</b>  | ٩        |
| সংসাওত<br>অমুমিত              | A82         | ૭        |
|                               |             |          |
| বীরভক্তিরস                    | be-         | ৬        |
| 418018-3-1                    | 463         | •        |
|                               | 447         | 20       |
| <b>তু</b> সূত্বর              | 440         | ૭        |
| ক <b>খিত</b>                  | ree         | >        |
| আহোপুক্ষধিকা                  | <b>४७</b>   | 9        |
| <b>আ</b> হার্য্যোৎসাহ         | <b>be 9</b> | 9        |
| সহজোৎসাহ রতি                  | rab         | 8        |
| দানবীর                        | <b>~</b> %• | ۴        |
| भानवात्र<br>व <b>रू</b> श्चेष | F67         | २        |
| বছ্তাদ<br>আভূ্যদয়িক          | 865         | ર        |
| भ <u>्श्वास्य</u>             | A-p-3       | 2        |

| विषय ।                    | পৃষ্ঠা।  | পঙ্কি।   |
|---------------------------|--|----------|
| প্রীতিদান                 | F 50   | ¢        |
| উপস্থিত হুরাপার্থত্যাগী   | ₽₽€  | ধ        |
|                           | parameter of the parame |          |
| দয়াবীৰ                   | PAP  | 8        |
| ধর্মবীর                   | <b>b9•</b>   | 9        |
| ,                         | Committee production appropriate applicable  |          |
| · ক <b>রুণভক্তির</b> স    | <b>४१</b> ७  | >        |
| আলম্বন কৃষ্ণ              | <b>৮</b> 98  | >        |
| ক্নফের প্রিয়জন           | ৮৭৬  | >        |
| <b>শ্ব</b> প্রিশ্ব        | <b>₽</b> 9₩  | 8        |
| •                         |  | •        |
| রোক্ত ভক্তিরদ             | <b>৮</b> 9৯  | ৩        |
| কৃষ্ণের প্রতি স্থীর ক্রোধ | ৳৮৽  |          |
| জরতীর ক্রোধ               | 447  | <b>ર</b> |
| হিত                       | <b>४४</b> २  | ৩        |
| অনবহিত্ত                  | <b>b</b> b2  | t        |
| সাহগী                     | <b>७</b> ७७  | •        |
| <b>ञ</b> र्ष <u>ग</u>     | <b>b</b> b <b>8</b>  | •        |
| <b>অ</b> হি ত             | <b>₽₽</b> €  | 8        |
| ক্রোধরতি                  | ৮৮ <b>৭</b>  | >>       |
|                           |  |          |
| ভন্নানক ভক্তিরদ           | A>5  | >        |
| ভক্তে আলম্বনরূপী ক্বঞ্চ   | ७७७  | 2*       |
| ব্ৰুদ্কলে দারণ            | ₩\$  | 0        |
| ধীভংগ ভক্তিরস             | <b>64</b> 4  |          |

[घ]

| বিষয় ৷                        | পৃষ্ঠা ।     | পঙ্কি। |  |
|--------------------------------|--------------|--------|--|
| জুপ্তপা রতি                    | ৮৯৮          | > •    |  |
| -<br>বিবেকজ                    | ६८५          | ર '    |  |
| প্রায়কী                       | ه ۰ ۰ ۵      | >      |  |
|                                |              |        |  |
| तमम <b>क</b> रणत देवञ्चदेवत्री | <b>৯</b> • ২ | ৬      |  |
| স্থহৎ                          | ₩ ० फ        | ર      |  |
| <b>বৈ</b> রি <b>ক্ক</b> ভ্য    | <b>३</b> २¢  | ં ૭    |  |
| week gangle over               |              |        |  |
| র <b>দাভা</b> স                | 486          | >      |  |
| উপরস                           | <b>۲</b> 85  | ৬      |  |
| শাস্তোপরস                      | <b>28</b> 6  | *      |  |
| <b>শ্রীতোপর</b> স              | 8.8          | >      |  |
| প্রেয় উপর্দ                   | 886          | ₹      |  |
| ব <b>ৎসলো</b> পরস              | <b>3</b> 8€  | >      |  |
| শৃঙ্গারোপরস                    | <b>38</b> €  | b      |  |
| ভাব বৈরূপ্য                    | ৯৪৭          | *      |  |
| অঞ্ভাব বৈরূপ                   | ৯৫∙          | 9      |  |
| গ্রাম্যস্থ                     | ۲۵۶          | þ      |  |
| অন্তর্স                        | 200          | ২      |  |
| অপরস                           | 8 0 6        | ત્ર    |  |
| গ্ৰন্থ সমাপন                   | <b>ት</b> ሬ ዓ | ŧ      |  |

# ভক্তিরসামতদিষ্ণঃ।

3883

পূৰ্ব্ব বিভাগঃ

প্রণাজনী সামানাছক্তি:। অবিলরসায়ভমূর্তিঃ, প্রসমরক্তিক্তিজ্জভারকাপ।লিঃ। কলি হুশ্যামা ল'লংহা, রাধাপ্রেধান্ বিধুর্জয়িতি॥ ১॥

জীন দ্রাধারে¶িবলৈ জয়তাং। সনাহনসমো যদা জাগ্যান্ জীমান্ সনাভনঃ। জীবলভোহস্তঃ সোহসৌ ভীকাণো জীবসদ্ধভিঃ॥

অথ শিমান্ যোহ্যং গ্রন্থকার: মকলভাগর হলোকহিতাভিলামপর বশত্যা প্রকাশিতে: অসম্পরিক্ষণকে মারিলাসিভি: <u>শিমন্ত্রিক্তর সৈরের</u> ভক্তি-রমামৃত্যিকুন্যানং গ্রন্থকার্চন্যাচিন্যানপ্রথিয়িত্রাল্যেক্চ সর্বোভ্যতাং

যাঁহার পর্যানক মৃর্ট্টি বক্ষ্যাণ দাদশ রুমের ক্লাক্সম স্করণ, প্রদর্গনীল কাভিছারা ভারকা ও পালিকানামা গোপী দ্ব্য যাঁহার বনীভূণ হইনাভেন এবং 'মনি শ্যামা ও ললি গাকে আয়ুণাই করিয়াছেন জীরামার আঙ্গায় প্রাভিক্তা সমস্ত ভূথে নাশন নিধিল ত্রপ্রাদ সেই জীকুক জয়যুক্ত হউন ॥ ১॥

<sup>\*</sup> শাস্ত্র, দাসা, স্থা, বাংস্থা, মধুর, **হাস, করণ, রৌজ, বীর, ভরানক** অক্ত ও বীভংগ। এই দাদশ রস॥

ইতি চ বিজ্ঞাণয়তি অথিলেতি। বিধু: এক্সেফো অয়তি সর্বোৎকর্ষেণ বর্ততে। ষ্দাপি বিধ: এবংসলাঞ্চন ইতি সামান্যভগবদাবিভাবপর্যায়ত্তথাপি বিধুনোতি খণ্ডরতি সর্বাহংখং অভিক্রামতি সর্বাঞ্চেভি। যথা, বিদ্যাভি করোভি সর্বাস্থিং স্ক্রিফেডি নিক্তে: পর্যাবসানে বিচার্যামাণে তবৈবে বিল্লান্ডে: অমুরাণামণি মুক্তি এদ্বেন স্ববৈভবাতি ক্রাঞ্চনকারেন প্রমাপূর্কাস্থেমমহাস্থপর্যা মুস্থবি-স্থারকদ্বেন স্বয়ং ভগবত্বেনচ ভবৈগ্য প্রসিদ্ধে:। অত্তর অমরেণাপি তৎপ্রাধান নোনৈব ভানি নামানি প্রোক্তানি। বছদেবোংস্য জনক ইঙাাছাজে:। এত-দেব সর্বং অগ্নতী ভার্থেন স্পষ্টীঞ্বতং। সর্ব্বোৎকর্ষেণ বৃত্তিন্মি ভত্তদেবেতি। অতএব প্রাকট্যদমগ্রমাত্রদৃষ্টার যা লোকদা অপ্রতীতিঃ তদাাঃ নিরাদকো বর্ত্ত-মানপ্রয়োগ:। তুপাচ প্রমাণানি। বিজয়রথকুটুর ইত্যালো যমিহ নিরীকা হতা গভা: স্বরপমিতি। সমন্ত্রামাতিশ্যস্তাধীশঃ স্বারাজ্ঞালক্ষাপ্রসমন্তকাম:। বলিং হরম্ভিশ্চিরলোকপালৈঃ কিরীটকোটীড়িতপাদপীঠঃ ॥ ইতি । যদ্যাননং মকরকু ওল6া ফকর্ণ ভাজংকপোলস্থ ভগং স্থবিলাসহাসং। নিত্যোৎস্বং ন ख्छुपूर्वि : शिवरञ्चा नार्या। नदान्छ भूषिछाः कृषिछ। निरम् हेछि। का স্তাঙ্গ তে কলপদায় তবেণুগীত-সম্মোহিতার্যাচরিতায় চলেজ্রিলোক্যাং। ত্রৈলো-कारमोक्शिमक नित्रीका ज्ञानः यम् रागिष्ठकक्रममुगाः भूनकानाविज्ञन हेकि। যন্ত্রালীলৌপয়িক: স্বযোগ-মায়াবল: দর্শয়তা গৃহীত:। বিস্থাপন: স্বসা চ সৌভগর্জে: পরং পদং ভূষণভূষণাক্ষমিতি। এতে চাংশকলা: পূংস: ক্লফন্ত ভগ-বান্ সমমিতি। জয়তি জননিবাদো দেবকীজনাবাদ ইত্যাদি শ্রীভাগবতে। অথ তত্তহংকর্যহেতুং স্বরূপলকণমাহ। অথিলা: রুসা: গক্ষ্<u>যমাণা: শাস্তাদ্যা: ছাদ্</u>শ যাম্বল্ডাদৃশমমূতং পরমানল এব মূর্ত্তিব্দ্য সং! আনলমূর্ত্তিমূপগুছেতি। দ্ববোৰ নিভাত্বথবোধতনাবমন্ত ইতি। মল্লানামশনিরিত্যাদি জীভাগবতাং। তন্ত্রাং ক্ষম এব পরে। দেবতাং ধার্যেং তং রুসয়েদিতি শ্রীগোপালতাপনীভ্যক। ততাপি त्रमविष्मविविष्ठिभित्रकत्रदेवनिष्ट्रान व्याविकावदेवनिष्ठाः पृत्यादक । व्यक्तवाष्ट्रित्र-বিশেষবিশিষ্টসম্বন্ধেন নিতরাং॥ তথা গোপান্তপঃ কিমচরন্ যদমুষ্য রূপং गांवगागात्रमगरमार्द्धमनना निद्धः। पृत् ভि: निवसास्त्रवा जिनवः इतान्यका स्थाम

শদঃশ্রির ঐর্থানে।তি। তৈলোকালকোকপদং বছদ বিদিভাদি। তত্তাভিশুভভ গভিরিত্যাদি শ্রীভাগেবতে। তামুচ গোপীরু মুখাা: দশ ভবিব্যো**ডরে** শ্রার**তে**। পা। গোপালী পালিকা ধন্যা বিশাখান্যা ধনিষ্ঠিকা! রাধামুরাধা লোমাছা ারকা দশমী তথেতি। বিশাখা ধাননিষ্ঠিকেতি পাঠান্তরং। তথেতি দশমাপি ারকানামে।বেভার্থ:। দশ্মীভোকং নাম বা। স্কালে গ্রহলাদসংহিভারাং। ারকামাহাত্মেট । ললিভোবাচেভ্যাদৌ মুখ্যাম্বন্ধ পুর্ব্বোক্তাভ্যোহন্যা ললিভা ্যামলা শৈব্যা প্রা ভদ্রান্চ শ্রারত্তে। পূর্ব্বোক্তান্ত রাধা ধন্যা বিশাখান্চ, ভদে দভিপ্রেতা তত্তাণি মুখামুখ্যাভিকভারোত্তর: বৈশিষ্ট্যং দর্শবিভূমবরমুখে দে ারকাপালী ভাবল্লিক্ষ্য তাভ্যাং বৈশিষ্ট্যমাহ প্রস্মরেতি। প্রস্মরাভি: ফচি-।: কাম্বিভী-ক্ষে বশীকৃতে তারকাপালী যেন স:। পালিকেতি সং**ভারাং** ন বিধানাং। পালীতি দীর্ঘাস্তে। পি কচিদুশাতে। অথ মধ্যমমুখাভাষিতে, লিতে আত্মদাংকৃতে শ্যামা শামলা ললিতা চ যেন স:। অথ প্রমমুধারা ।হ্রাধারা: প্রেরান্ অভিশয়নে প্রীতিকর্তা। ইগুপধঞাপ্রীগৃকির: ক ইভি ন্ত্রি কপ্রতায়ে বিধেয়ঃ অতএব অস্যা এবাসাধারণ্যমালোকা পুর্ববদ্ যুগ্ম-নোপি নেরং নির্দিষ্টা অভন্তদ্যা এব প্রাধান্যং পালে কার্ত্তিকমা**হাত্মো উত্তর**-েও তৎকু গুপ্রাসঙ্গে ॥ যথা রাধা প্রিয়া বিক্ষোন্তদ্যা: কুণ্ডং প্রিয়ং তথা। সর্জ-াণীৰ দৈবৈকা বিষ্ণোরতান্তবল্লভা। অতএব মাংসাঞ্চালাদৌ, শক্তিম্বাধ্-ণোন অভিনত্যা গণনাঘামপি তসা। এব বৃন্দাবনে প্রাধান্যা**ভিপ্রারেণাই।** ক্ষিণী ঘারবত্যান্ত, রাধা বৃন্ধাবনে বনে ইতি॥ তথাচ বৃহদ্গৌতমীয়ে জন্মা ব মন্ত্রকথনে । দেবী কুঞ্ময়ী প্রোক্তা রাধিকা পরদেবতা। সর্বাস্থীমরী র্কান্তি: সম্মেহিনী পরা ইতি। ঋকপ্রিশিষ্টশ্রুতাবপি। রাধন্ধা মাধ্যে। াবো মাধবেনৈব রাধিকা। বিভালতে অনেখেতি 🛊। অভএবাতঃ। অনমা-

রাধিক। দেবী পরেতাঘয়:। বতঃ রুফনয়ী রুঞায়িক। তথাপি পরদেবতা
 জার্চিকা সর্বলন্দ্রীময়ী নিথিলানাং লন্দ্রীণাং অংশিরপা সর্বাসাং কাভিরিল্প লাতাভিলাবো বল্যাং লা সন্মোহিনী রুঞাতুরভিকেতি লোকাবঃ। বিঝালভে চাজতে, আ সর্বায়, ইতি ঐতি পদার্থঃ।

রাধিতো নুনমিত্যাদি। অথ প্লেষার্থব্যাখ্যা। তত্ত্বৈর লেষেণোপমাং স্চয়ংন্ডয়া \* অর্থবিশেষং পুষ্ণাতি। সর্বলোকিকালৌকিকাভীতেছপি ভাষান লৌকিকার্থ-श्विरশ্যোপমান্বারা লোকানাং বৃদ্ধিপ্রবেশ: স্যাদিতি কেনাপ্রংশন উপমেরং। **দর্বভনতাপ্রত:এশমক্ষেন স্ব্যিত্থপ্রদক্ষেন চ ভত্র পূর্ববিদ্নিক্তিপর্যাবসানে** বিচার্যামাণে রাকাপতেরের বিধুরং মুখাং পর্যাবদাতীতি দর্বতঃ প্রভাবাৎ পূর্ণ-স্বাংশেনচ এবং সূর্যাদীনাং ভাপশমনখাদিনান্তীতি নোপমানযোগ্যতা। ভভো বিধু: সর্বত উৎকর্ষেণ বর্তত ইতি লভাতে। এবং বর্তমানপ্রয়োগাংশস্থ ১ প্রতি ঋতুরাল্পমের ভাত্তদ্রপভয়ামুরুতে:। এবং বিশেষ্যে সাম্যাং দর্শয়িছা বিশেষণেছপি সামাঃ দর্শন্তি অধিবেতাাদিভি:। অথিবঃ অথওঃ রসঃ আহাদো যত্র তাদৃশ মমৃতং পীযুষং তদাঝিকৈব মূর্ত্তিম গুলং যদ্য । অতা শক্তেন সাম্যাং রগনীয়জাংশে নার্থেনাপি যোজাং। তথা প্রস্থাভিঃ কান্তিভী রুদ্ধা আর্ড। তারত্বাণাং পালি: শ্রেণী যেন। ইতি পূর্ববং নিজকান্তিবশীক্তকান্তিমতীগণবিরাজ্যান-ছাংশেনার্থেনাপি জ্ঞেরং। কলিতমুরীক্বতং শ্যামায়া: রাত্রে: ললিতং বিলাদো (यन दें जि त्राजिविनानित्वनात्र्यनात्रि (छत्रः। एथा गाना कु खन् खल्नो। ष्म श्रम जान नामाक ज्या त्मामन क्या । जित्र वा भात्रिका करता निभा कृष्ण , প্রিয়ঙ্গুছিতি বিশ্বপ্রকাশাং। তথা রাধায়াং বিশাঝানায়্যাং তারায়াং প্রেয়ান্ অধিক প্রীতিমান । ঋতুরাজঃ পূর্ণিমায়াং তদকুগামিখাৎ ইতি তদকুগতিমাত্রসাধ্য चरेवछवविकादारमनार्थनानि (छत्रः। উनमानमा टिल्लान विरमयनाञ्चारकर्य-ৰাচকানি সূৰ্ব্যাদেন্তাদৃশমূৰ্তিহাভাবাৎ তারানাশনক্রির্থেন তৎসাহিত শোভিত ৰাভাৰাৎ স্থাবিশেষকররাত্রিবিলাসাভাবাৎ ভাদৃশবিজ্ঞহানভিবাক্তেশ্ভেভি। निकालतम्बारानाः श्रयणकात्रयात्रि । व्यनस्यार प्रवेशक राकार् पूर्वे । ্ভিছ। লিখনং সর্বমেবাত্মিরাশকানাশগর্ভিতং। বুথেত্যাশকরা তত্ত্ব নাবধ্যেরম-বুদ্ধিভি:। গ্রহ্মভাং স্বার্গাাৎ, কভিচিৎ পাঠাস্ত যে মরা ভাজা:। নাজানিষ্ঠং विदार, विदार Cखरामकीहर दि॥ > ॥

তথা উপময়া। (১) প্রতি বসন্তমেব তক্রপতয়া রাধাপ্রেরভাগি রূপ
ভবা শত্র বতুরাকেতি সামানোকাবপি বৈশাধতাংপর্যাং।

হুদি যদ্য প্রেরণরা, প্রবর্তিভোহহং বরাকরপোহিপি।
তদ্য হরেঃ পদক্ষণং, বন্দে চৈতন্যদেবদ্য॥২॥
বিপ্রাথমান্দরভয়া, তদ্য দ্যাতনতনোদ্দীশদ্য।
ভক্তিরশায়তদিয়ুভবতু দ্যায়ং প্রমোদায়॥৩॥

অধ নিজ ভিক্তি প্রবর্ত্তনেন কলিবুগপাবনাবভার: বিশেষতঃ স্বাশ্রম্ভরণক্ষলং প্রীপ্রীকৃষ্ণ হৈ তনাদেবং ভগবন্ধ: নমস্করোতি স্থানীত। জ্বিষরপ্রেরণায় প্রবৃত্তিতঃ সন্দর্ভে ইতি শেষঃ। বরাকরূপ ইতি। স্বয়ং দৈন্যেনোকং সরস্বতীতু তদস্ভন্যানা বরং শ্রেষ্ঠং আ সমাক্ কায়তি শস্বায়তইতি সংক্বিভায়ামপিতঃপ্রের্থাইরব প্রবৃত্তিঃ স্যারান্যপতি অপের্থাঃ ইতি ভল্বিবিণৰ ত্যেব স্থাবয়তি॥ ২॥

অব নিজেইদেবারতারত্বেন নিজগুরু: স্তবন্ প্রাথগুতে বিশ্রামেতি। ভজ্জিররকপন্যাম্ভসা দিজ্বিবেতি তলামাখং গ্রন্থ: তসা প্রীক্ষণাবাদ্য মদীশদ্য সদা খেইনব রূপেণ স্থিভিট্যাব সদা প্রকাশিতনানান রূপভনোর্যা সনাভননানী তমুস্তদ্যা: বিশ্রামমন্দিরতার ভত্ত লাভ্যাকীকারেণেত্যে । অন্যদ্যা অপি নারাল্যাণ ব্যায়া: সদা প্রসিদ্ধসমানার্যনাভনভনো: সিদ্ধৃবিশ্রামমন্দির: ভবতীত্যা: ॥৩॥

আমি অতি ক্ষুদ্রব্যক্তি হইলেও যিনি আমার হৃদরে উপকরণ গুলি দমর্পণ করিয়া এই গ্রন্থনির্মাণে প্রবর্তিত করিয়াছেন দেই এ এইচিতন্যদেব ছরির পদক্ষণকে আমি বন্দনা করি॥২॥

যে মদীশ্বর সনাতনতত্ম প্রকটন করিয়াছেন, মংকুত এই ভক্তিরসাম্ভসিদ্ধৃ তাঁহার বিশ্রোমমন্দির স্কলপ হইয়া স্কালা আনন্দ্রদ্ধিন করুক ॥ ৩॥ ভক্তিরসায়্তদিকোঁ, চরতঃ পরিভূতকালজালভিয়ঃ!
ভক্তমকরানশীলিত,-মুক্তিনদীকান্নমদ্যামি॥৪॥
মীমাংদকবড়বাগ্নেঃ, কঠিনামপি কুঠান্নদৌ জিহ্বাং।

তদেবং নামগ্রাহং তং তং বলিতা স্বাভীষ্টানন্যানপি সামান্তঃ সম্ভকান্
বলতে ভক্তিরুসেতি। ভক্তা এব মকরা মীনরাজাথ্যা জলচরান্তামমস্যামি
মকর্ত্বেন রূপকে সাদৃশ্যঞ্জমাহ ভক্তিরস এবামৃতসিন্ধন নাবিধম্কিন্দীনাং
আশ্রঃপ্রমপরানলক্তিমিন্ চরতঃ বিহরতঃ। পূর্বহেতোরেব ন শীলিতা জনাদৃতা মুক্তিরেব নদী ভক্তপতয়া রূপিতং জন্মমরণাদিবদ্ধছেদকম্পি অনবচ্ছিদ্দপ্রাহ্রপম্পি ব্রহ্মকৈবল্যাদিহ্বং বৈস্তান্। অনাদৃত্য ইত্যেব বা পাঠঃ।
সালোক্য সান্তি সারূপোত্যাদেং মংসেবয়া প্রতীতম্ভ ইত্যাদেশ পূর্বহেতোরেব
পরিভূতং জন্মমরণাদিবদ্ধত্থপরম্পরাহেতোঃ কালরূপাজ্ব্যাভ্রং বৈস্তান্।
বৈষাং বয়ং নচ বয়ঃ প্রভবাস দত্তে ইত্যুক্তেঃ। ৪ ॥

অথ নিজগ্রহুদ্য বিরোধিক তপরা তবা তব ক্রীং দদা ক্র্ বিং শ্রীপ্তক্ষরণান্ প্রার্থনতে মীমাংদকেতি। মীমাংদকে। বিবিধঃ কর্মজ্ঞানবিচারভেদেন। বড় বাগ্রেজিইবা জালা তত্ত্ত্ত্তেনিবারেঃ দগুজিইববেন প্রসিদ্ধেঃ। তাং মথা কৃঠ্যন্ত্রাধিব বিতে তথা অমুমিণি মীমাংদকানাং বচনশক্তিমিতার্থঃ। তৎকুঠনাতিশর-বিবক্ষারানেব তাৎপর্যাং। উভয়্রাণি তদীয়রসম্বাভাবাাদিতি ভাবঃ। অথবা জন্যান্তোধিতো বিলক্ষণত্মত্রোক্তঃ। তদেবং মে তৎপদ্যব্রেরণ দিল্পক্ষপত্তং বিশ্বদিতিং দিল্লবিন্যব্র বড়বারেঃ বাভাবিকী স্থিতিঃ অব তু মীমাংদক্ষ্য মধা কথিকাগন্ত্রকী স্যাদিত্যাশঙ্কা ভদেব প্রাথি তিং॥ ৫॥

যে সকল ভক্তরূপ মকর বুঁক্তিরূপ। নদীপমূহকে অনাদর পূর্বক কালরূপ ভয় হইতে অব্যাহতি পাইয়া ভক্তিরুপায়ত-সিদ্ধতে বিচরণ করেন তাঁহাদিগকে প্রণাম করি॥ ৪ ।

হে গনাতন! তোমার এই ভক্তিরাসমৃত্যিকু মীমাংগকক্লপ বড়বাগ্লির কঠিনভম জিহ্লাকে কুন্তিত করিয়া বহুকালের

স্ফুরতু সনাতন স্থচিরং, তব ভক্তিরদায়ভাজোধিঃ॥ ৫॥ ভক্তিরদদ্য প্রস্তি,-রখিল র্ভগমঙ্গলপ্রদঙ্গদ্য। অজেনাপি ময়াদ্য, ক্রিয়তে সুহৃদাং প্রমোদায়॥ ৬॥

# প্রস্থবিভাগঃ।

এতস্য ভগবদ্ধক্তিরশামৃতপ্রোনিধেঃ।
চন্থারঃ থলু বক্ষান্তে ভাগাঃ পূর্বাদয়ঃ জুনাৎ॥
তত্র পূর্ববিভাগেহিম্মিন্ ভক্তিভেদনিরূপকে!
অনুক্রমেণ বক্তব্যং লহরীণাং চতুষ্টয়ং॥
আদ্যা সামান্যভক্ত্যাচ্যাং বিভীয়া সাধনাক্ষিতা।

মম পুনরমূক্লানাং প্রতিক্লানাঞ্চ পণ্ডিতানাং সমাধানেন শক্তিঃ কিন্তেজন দর্থনেবেদং ক্রিয়ত ইত্যাহ ভক্তিরসস্যোতি। অজ্ঞেনেতি পূর্ববিদ্নোহিপি ন বিদাতে জ্যো যন্ত্রাং তেনেতি জ্যেয়ং। অপেরর্থঃ স্বভঃ প্রবাজনাভাবং ব্যস্তর্গতি॥ ৬ ।

অণগ্রন্থারকুং তংপরিপাটীং দর্শন্তি এতদাতি চতুর্ভি: ॥ १ ॥

নিমিত্ত ফুর্ত্তি পাউক॥ ৫॥

আমি অজ হইয়াও হৃত্তদ্গণের আনন্দবর্দ্ধনার্থ অথিল জগনাঙ্গল শ্রীক্ষের প্রদঙ্গাধীন ভক্তিরস বিস্তার করিতেছি ॥ ৬ ॥
আমি এই ভক্তিরসায়তসিন্ধুর পূর্ব্বাদিক্রমে চারিটা বিভাগ
বর্ণন করিব॥

তনাধ্যে পূর্ববিভাগে ভক্তির বিভিন্নতা নিরাপিত হইবে, এই পূর্ব-বিভাগে চারিটী লহনী বর্ণন করিব। তাহার প্রথম-লহরীতে দাদান্যভক্তি, বিতীয় লহনীতে দাধন ভক্তি, তৃতীর- ভাবাশ্রিতা তৃতীয়াত্র তুর্যা প্রেমনিরপিকা ॥ ৭ ॥ ভত্তাদৌ হুষ্ঠু বৈশিষ্ট্যমন্যাঃ কথিছিং ক্ষুটং ! লক্ষণং ক্রিয়তে ভক্তেরভ্রমায়াঃ নতাং মতং ॥ ৮ ॥ অন্যাভিলাবিভাশুনাং শ্রীনকর্মান্যনারভং ।

ভঞাণাবিতি। ভত্র পূথাবিভাগগত প্রথমলহায়াং আদৌ প্রথমত এব উত্তময়াঃ ভজেল কণং ক্রিয়তে প্রতিপাদ্যবেন বিধীয়তে। নতু সর্বাত্মিকায়াঃ।
ভত্র হেতৃ: পুরু বৈশিষ্টাং কথয়িতুমিতি। অন্যত্রান্যাভিলাযজ্ঞানকর্মাদ্যাবৃতত্বনাপূর্বল হাং এতদংশত. এবাস্যান্তাদৃশব্ব্যক্তে:। যস।তি ভক্তির্জাবত্যকিঞ্নেভ্যাদেঃ॥৮॥

শৃথ ত্যা। একণং বদয়েব গ্রন্থ বিত্ত অন্যতি। অফুণীলনমত ক্রিয়াশককরাবর্তীত্র মৃত্যতে। ধার্থতি দিবিধঃ। প্রবৃত্তিনিবৃত্তাায়কঃ কায়বাভ্ মানসাপতস্কলেই কিন্তুল প্রতিবিধায়কো মানসত্তত্তাবরূপত। সন্থাসত্তে প্রস্পরমুপমর্কিয়াজেই তেওঁত এব। তদেবং সতি ক্রফ্রসম্বির ক্রফার্থং বা অফুণীলনং
ক্রিফাফ্রণালনিমিতি। তৎসম্বন্ধমাত্র গাতালগাস্য বা বিবক্ষিত্রাক্র ক্পালাশ্রমাদৌ
ভাষক্রপন্যাপি ক্রোড়ীকৃত্র। স্থায়িনি বাভিচারিষ্ চ ভাবেষ্ নাব্যাথিঃ।

লহরীতে ভাষভক্তি এবং চতুর্থ লহরীতে প্রেমভক্তি নিরূপিত হইবে॥ ৭॥

তন্মধ্যে প্রথম লহনীতে ভক্তির হৃদ্দর বৈশিষ্ট্য স্পষ্ট-রূপে কীর্ত্তন করিবার নিমিত্ত দাধু দদ্মত উত্তমা ভক্তির লক্ষণ করিতেছি—॥ ৮॥

শ্রীকৃষ্ণদ্বন্ধি অথবা শ্রীকৃষ্ণের নিমিত্ত অনুকৃল অনুশীল-নকে গামান্যতঃ ভক্তি কহে, এই অনুশীলন জ্ঞান ও কর্মাদি-ছারা অনার্ত এবং অন্য বস্তুর প্রভি স্পৃহাশূন্য হইলেই উত্তমা ভক্তি বলা যায়॥

# আমুকুল্যের কৃষ্ণাসুশীলনং ভক্তিক্রভ্যা ॥ ১ ॥ -

এতচ ক্ষতভাত কৰাৰৈক্লভাং গ্ৰীভগৰত: স্বন্ধণ ক্ৰিকুতিৰ পদতোহ প্ৰাক্তৰণি কামাদিব্যতিতাদায়ে।নৈবাবিভূতিমিতি জেয়ং। অপ্রেকু স্টোকরিবাতে। ছক শ্ব-চাত্র স্বয়ং ভগবতঃ জীকুঞ্চা তত্রপাশাং চানোবামণি প্রাহকঃ। ভারত্তমাং-ঞাগ্রে বিবেচনীয়ং। তিত্র ভাক্তমাত্রছবিদ্ধার্থং বিশেষণমাত্রকুলোনেতি। প্রতি-কুল্যে ভক্তিরা গ্রসিজে:। আতুকুলাঞ অমিলুদেশ্যার জীকুফার রোচমানা প্রবৃত্তি:। প্রাতিকুলাস্ক তদিপরীতং ক্রেরং। তৃতীয়া চেরং বিশেষণ এব নতু উপলক্ষণে ততশ্চ / ফা শস্ত্রিণঃ সমানয়েত্যুক্তে শস্ত্রাণামপি সমানম্বনং প্রসম্ভাতে ত্তথানুকুল্যসাথি ভক্তিৰবিধানং। নতু শক্তিণো ভোজৰেতাত্ত শস্ত্ৰাণামভোজন-বঙদবিধানং। নধাতুকুলাং ভজিরিত্যেবান্তাং ভত্ত রাঞায়ং গছভীভাজ রাজগদেন তংগরিকরাণাং গ্রহণং সাথে। সতাং। তথাপি ধার্থভেদানাং স্পষ্টা প্রতিপত্তিন সাাদিতি ধাত্বপাত্রগ্রহণায়ামুশীলনপদমুপাদীয়তে। অবিভি পদং চাতুকুলো জাতে মুহুরেব শীলনং স্যাদিতাভিপ্রায়েণ কৃত:। তদেতৎ বন্ধ-भगकार । উত্তম प्रमिकार्थक अधिक मान वित्मुमन हार । जमा किनानिकामू-নামিতি। অত্তানোতি ভহিত্যকাভিলায়েণ যুক্তামতার্থ:। আনমত নির্ভেশর কাছসনানং নতু ভলনীয়বাতীসনানমপি তদ্যাবশ্যাপেকণীবৰাং। কৰা স্বস্তা-হাক্তং নি হানৈমিত্তিকাদি ন ভজনীয়পরিচ্যাদি তস্য তদমূশীদনরাপদ্ধং এ আদিশব্দেন বৈরাগ্যযোগদাংখাভ্যাদাদয়: ৷ অত প্রীরকার্শীলনং কৃষ্ণ চক্তি-বিতি বক্তব্যে ভগবচ্ছাল্লেষু কেবলস্য চ ভক্তিশবস্য ভবৈৰ বিশ্ৰানিবিভাতি লারাত্তপোকং তথৈব হুগ্রিমবাক।মিতি ॥ ৯ ॥

তাৎপর্য। এই বিষয়ে ক্রিরা শব্দের ন্যায় অসুনীলনকে ধাতুর অর্থমাত্র বলিতে হইবে, ধাতুর **অর্থ চুই প্রকার প্রবৃত্তি** ७ निवृत्तित्रण, कांत्रिक वाहिक **७ माननिक टब्लेक्स अस** 

খ্ৰীভিবিষয়াত্মক মানসিকভাব জানিতে হইবে অৰ্থাৎ শরীর-ছারা পরিচর্বাা, বাক্যছার। নাম গুণ কার্ত্তন, মন্ট্রারা তদীয় नीन। क्रणानिव हिस्रो धवः क्रस्तः करा गर्यना श्रीजिम्लाने বুঝাইবে। "কৃষ্ণদৰ্দ্ধি" এই শব্দে গুরু পাদাপ্রয়াদিকেও কুষ্ণামুশীলন জানিতে হইবেক, কারণ গুরুদেবের নিকট দীকিত না হইলে বিশুদ্ধভলনে অধিকারী হয় না। এইরূপ অফুশীলন ভগবানের স্বরূপশক্তির রুত্তিস্বরূপ, অপ্রাকৃত, ইহা এ ছলে স্বয়ং ভগবান্ জীকৃষ্ণ এবং তাঁহার অন্যান্য মূর্তিও মানিবে। অনুশীলনের ভক্তিমাত্র দিদ্ধির নিমিত অনুকূল এই **ঃথাটা বিশেষণ** দেওয়া হইয়াছে, প্রতিকূলভাবে ভক্তিদিদ্ধি য়ে না, যেমন রাবণাদির প্রতিকূল অনুশীলন্ ভক্তিপদ-বাচ্য 👣 নাই। ভক্তি বিষয়ে আনুকূল্য শব্দের অর্থ এই যে, শ্রীকৃষ্ণে ষ্ঠিকর প্রবৃত্তি প্রতিকূল হইলে ভাহার বিপরীত হয়। আমু-कृता मत्म (य ज्जोश विश्वक्ति हेश (क्वेन विश्वता, ज्ञान-ক্ষণার্থ নহে, যেমন অন্ত্রধারি ব্যক্তিকে আনয়ন কর, এই কথা বলিলে অন্তেরও আময়ন সন্তব ইয়, ভেমনি অনুকূল অনুশীলন বলাতে আমুকুল্যেরও ভক্তিত্ব দিন্ধি হইবে। অস্ত্রধারি ব্যক্তিকে **ংভাজন করাও এই কথা বলিলে অস্ত্রের ভোজন সিদ্ধ হয় না,** ভক্রপ প্রতিকৃলের ভক্তিত্ব হয় না। উত্তমা ভক্তির <u>স্বরূপল-</u> ক্ষণ অমুকুল এবং কৃষ্ণামুশীলন। ভটস্থলকণ চুটী-অন্যাভি-गाँविकामूना ' ख खानक मानिए च ना त्र । দীয় দক্ষিতিসম্পাদক অভিলাষ ভিন্ন পন্যবস্তুর প্রতি

যথা-নারদপঞ্চরাতে ॥ সর্বোপাধিবিনিম্ক্তং তৎপরত্বেন নির্মাণং স্থীকে। স্থাকেশগেবনং ভাক্তিকে। ১০ ॥ ১

खर्भत्राच्य आयुक्तान मर्व्यकामाधिनापि डाम्नाः तर्वसम्बद्धनीननः वि-र्यानः कानकर्यामानातु वः । अव छेउमदः चष्ठ এर्वाकः ॥ ১० ॥

অভিলাষশুন্য। জ্ঞানশব্দে ভজনীয়রূপে অমুসন্ধানব্যতিরেকে কেবল নির্ভেদ ত্রকানুদন্ধান, কারণ নির্ভেদ ত্রকানুসন্ধানাত্মক জ্ঞান ভক্তিযোগের উপযোগী হয় না। কর্মশব্দের অর্থ শ্বাজি-শাস্ত্রোক্ত নিত্য নৈমিত্তিক কর্মাদি, এইরূপ কর্মে প্রহুতি থাকিলে ভক্তিলাভ হয় না, কেবল ভজনীয় পরিচর্যাদিরপ কর্মা ক্রিবে, যে হেতু, ঐ সকল পরিচর্য্যালিকে অসুশীলন বুলা याय, "छान कर्यानि' এই एत जानिभारकत खेटस्थर हु रेवत्रामा যোগ ও জ্ঞানের অভ্যাদ ইত্যাদি ভক্তির প্রতিকৃত ॥ ৯ 🛙

गथा-नात्रमभकतात्व ॥ ইন্দ্রিয়গণছারা ছ্যীকেশের তৎপর্বরূপে গেবনকেই জ্ঞি কংে, এই দেবন সর্কোপাধি বিরহিত এবং নির্মাণ ছইবে 🛊

তাৎপর্য। তৎপরত্ব শব্দের কর্ম কামুকুন্য, সর্ব্বোগানি विनियुक्त नत्स वानाविनाविकानुना रहेनन अधूनीनन निर्मान শব্দে জানকর্মাদিতে খনারত ৷ ১০ 6

শীকাগৰতনা তৃতীয়সকে চ ।
শীক্ষানাতি যা ভজিঃ পুরুষোভনে।
শালোকানাতি নামীপানার গৈ ক্ষমপুত।
শীক্ষানং ন গৃহুতি নিনা মংগেবনং জনাঃ॥
শালে ভজিবোগাব্য আভালিক উদাহতঃ। ইভি॥
শালোকাভাগিশগুভভকোৎ ক্র্নিরপাণ।

শৈষ্ট্ৰত্বীতি। তত্ত্ব অহৈত্বীতি অন্যাভিদাবিভাশুনা অব্যবহিতা জ্ঞানক্ষান্ত্ৰাৰূপ ককিউবিদ্ধান তথাংশ্যতদ্বাভিচারিণী ক্ষান্ত্ৰপথিশি লক্ষাতে।
ক্ষান্ত্ৰীদ্ধনেৰ বিলেষৰ ধৰ্ণৱতি সালোকোতি। বসাবিতি শেষঃ। আঁত্যক্ষিত্ৰ প্ৰমপ্তদাৰ্থা। ১১॥

কলিলনের কহিলেন, মাতঃ। থাহারা আরাতে অন্যবভার অভিনাদনা ও জ্ঞানকর্মাদিরপ আচ্ছাদনরহিত মনের
লাজিরল ভাজিলাভ করিয়াছেন, শেই ভজগণের আমার সমিবানে অন্য কোন ফলাসুসনান দুরে থাকুক; প্রত্যুত তাঁহাদিবাকে সালোক্য অর্থাৎ আনার সহিত এক পোকে বান, আলার সমান এম্বর্য আমার দামীলা, আমার সমানর্যুত্ত অথবা
লার সমান এম্বর্য আমার দামীলা, আমার সমান্ত্রুপত্ত অথবা
লার্যুত্ত করিছেলত তাঁহারা গ্রহণ করেন না, কেবল আমার
ক্রেন্তে চাহিলেত তাঁহারা গ্রহণ করেন না, কেবল আমার
ক্রেন্তে চাহিলেত তাঁহারা গ্রহণ করেন না, কেবল আমার
ক্রেন্তে চাহিলেত তাঁহারা গ্রহণ করেন না, কেবল আমার
ক্রেন্তে করেন প্রকার্য আনিয়া প্রার্থনা করিয়া থাকেন,
না ইংলিক্ট আভাজিক ভজিবোগ করে।
ভারতার বিভর্তা প্রকাশ ভারতা ভারত কর্মণেই প্রার্থভারতার বিভর্তা প্রকাশ ভারতা ভারত কর্মণেই প্রার্থ-

ভক্তেবিশুদ্ধতা ব্যক্তা। লক্ষণে পৰ্যাৰস্যতি ॥ ১১॥ ক্লেশত্মী শুভনা মোক্ষলযুতাকৃৎ হৃত্ত্ৰভা। সাজ্ঞানন্দবিশেষাত্মা ঞ্জিকাক্ষিণীত সা॥

ভত্তাস্যা: ক্লেশস্থাই।

ক্লেণান্ত পাপং তথীলকবিদ্যা চেভি তে জিখা। ভত্ত পাপং।

অপ্রারকং ভবেৎ পাপং প্রারকং চেতি<sup>\*</sup>তদ্বিধা॥

অণ বৈশিষ্ট্যং কথমি চুমিতি বছকং তদেব সংক্রিণা দর্শরতি ক্লেশন্তীতি। পাকাদার্থ: প্রস্ত্রনিতোহমির্যণা কাষ্টানি ভত্মীকরে।তি তথা মহিবরা ভজিকথা

পিত হইতেছ। ১১॥

ভক্তির বৈশিষ্ট্য কীর্ত্তন করিবার নিমিত্ত লক্ষণ করিছে-ছেন, এই যাহা বলা হইয়াছে তাহা সজ্ফেপে দেখাইডেছেন।

উত্তমা ভক্তি ছয় প্রকার হয় যথা—ক্লেশন্থী, শুভদা, মোক্ষের লঘুতাকারিণী, স্বত্ল ভা, সান্দ্রানন্দবিশেষ।ত্মা এবং শ্রীকৃষ্ণাক্ষিণী॥

ভক্তির ক্লেশনাশকত্ব যথা।। ক্লেশ তিন প্রকান, পাপ, পাপবীজ এ**বং অবিদ্যা।** ভন্মদ্যে পাপ যথা।

অথারক এবং প্রারক ভেদে পাপ ছুই প্রকার হয়।

তাংপর্য। অপ্রারক্ষ পাপ ইংকেই বলে যাহা অদৃষ্ঠ-ক্রপে আজার অবস্থিত আছে এবং যাহার ভোগকাল উপ-ন্থিত হয় নাই, ইং। অনাদি ও অনস্ত। আর প্রারক্ষ পাপ যাহা ফলোমুণ অর্থাং যদ্ধারা নীচ জান্তিকে জন্মগ্রহ্ণপ্রভৃতি করিয়া ক্রেশাদি ভোগ করিতে হয়। ভত্তা প্রায়ন্তরন্থং যথৈকাদশে
যথাগ্নিঃ সুসমিন্ধার্কিঃ করোভ্যেধাংনি ভস্মনাৎ।
ভথা মবিষয়া ভক্তিক্লেইবনাংনি কৃৎস্নশঃ॥ ১২॥
প্রায়ন্তর্বন্ধং যথা ভৃতিয়ে।
যন্ত্রামধ্যেক্রব্যানুকীর্ত্তনাদ্
যৎপ্রস্থান্যংশ্ররণাদ্পি কৃচিৎ।

क्षेक्ट स्वनानिक्या मम्खानि भाभानि गर्कील ॥ ১२॥

ব্যানেতি। খাদখনত খভককজাতিবিশেবছমেব খানমতীতি নির্ক্তি বর্ত্তমানপ্রাপ্তাং ক্রবাদৰতজ্জীলছপ্রাপ্তে:। কাদাচিৎকখভলণপ্রায়লিজবৈবভাষাং ঘতীভপ্রবেগ: ক্রিয়েত ক্রচিবোগনপহরতীতি ন্যায়েন চ তছিক্ষণেত।
ভাতত্তব খপচ ইতি তৈ: খামিচরগৈব্যাখ্যাতং তভল্চাস্য ভগবন্নমন্ত্রখণানাদক্রবাৎ দলা এব স্বন্ধোগ্যভারা: প্রতিকৃশস্ক্রতিছপ্রায়ম্ভকপ্রার্থণাশনাদপুর্কিস্বন্ধোগ্যভাতিছলনকপুণালাভ: প্রতিপ্রাতে। ব্যাহ্মণানাং শৌক্রে

তন্মধ্যে অপ্রারক্ষ পাপ হারিত্ব যথা একাদশে ১৪ অ। ১৮ শ্লোকে॥

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, হে উদ্ধব! যেমন প্রজ্বনিত অগ্নি কাঠরানিকে ভত্ম করে, ডজ্রাণ মধিবয়া ভক্তি নিধিল পাপকে বিনষ্ট করিয়া থাকে॥ ১২॥

প্ৰান্ধৰপাপহারিত্ব যথা।

্ভৃতীয়ন্ধদ্ধে ৩৩ অ। ৬ শ্লোক।

দেবছুতি কহিলেন, হে ভগধন্! ভোষার নামপ্রবণ, ভোমার নামকীর্ত্তন, ভোষাকে নমস্কার এবং ভোষার স্মরণ ইত্যাদির মধ্যে যে কোন একটী যাজন করিলে কুকুরভোজী খালোছপি সন্যঃ স্থনার ক্রতে কুভঃ পুনস্তে ভগবলু দর্শনার ॥ ১০॥ ভূজ্জাতিরের স্থনাযোগ্যছে কারণং মভং।

জন্মনি ছক্তাভিবাভাবেছণি স্বনার স্থলাভিবজনক্সাবিত্যজন্মণেকাবং। ভর্মা ভক্তি: পুনাতি মল্লিচা খণাকানণি সম্ভবাদিতি তু কৈছ্ত্যাধ্যেব গোক্তবিভাগ-বাতি॥ ১৩॥

ভন্মানুজ্রণিতিরেবেভাত স্বনাধোগাছে কারণবিভি ভদ্যোগাতে প্রতিকৃশ্ পাপময়ীভার্থ:। নতু ভদ্যোগাছাভাবমাত্রময়ীতি বাল্যক্ষারাণাং শৌকে লমনি হর্জাভিছাভাবেছিপি স্বন্যোগাছার পুণাবিশেষমর্সাবিত্রজন্সাপেক্ষছাং। তভুক্ত স্বন্যোগাছপ্রতিকৃশহর্জাভারিস্তকং প্রারন্ত্রমণি গভ্যেব কিন্তু শিষ্টা-চারাভাবাং সাবিত্রং জন্ম নাজীতি ব্রাহ্মণকুমারাণাং স্বন্যোগাছাভাষাবিজ্ঞেন-ক্পুণাবিশ্বিমর্গাবিত্রজন্মাপেক্ষাবদ্সা জন্মাছরাপেক্ষা বর্ত্ত ইতি ভাব:। আভঃ প্রমাণবাক্যেছিপি স্বনার ক্রতে স্ক্তাবিভো ভ্রতি নতু ভ্রেরাধিকারী

চণাল্ভ যথন শীদ্রই দোষ্যাগ করিবার যোগ্যতা লাভ কংক, ভথন যে ব্যক্তি তোমার গাক্ষাৎকার করিয়াছে দে ব্যক্তি যে প্রিত্র না হইবে, ইহা কোন মতেই গন্তব নহে, অর্থাৎ অক-শ্যুই কুতার্থ হইবে ॥

উক্ত পদ্যে ক্কুরভোজী চণ্ডাল সদ্যই সোম্যাগ করিবার বোগ্যতা প্রাপ্ত হয়, এতদ্বারা সোম্যাগের প্রতিকৃণ হুর্জাভিছ প্রায়ন্তক প্রায়ন্ত্র পাণ নাশ সন্তব হইল, যে হেতু ভগদনিষ্ঠ ভক্তি লাভিণোব হইতে শ্রপাককেও পবিত্র করিরা বাকেনা ১০॥ এ শ্বলে শ্রপ্তত্ব রূপ তুর্জাভিই সোম্যাগে অব্যোক্তার ছুর্জ্জা গ্রারস্তক্র পাপং যং স্যাৎ প্রারন্ধনেব তথা ১৪॥ পদ্মপুরাণে চ।

অপ্রারর্কণং পাশং কূটং বীজং ফলেপুমুখং।

স্যাদি গানিপ্রেক্তং। বাধ্যাতক তৈ সদাং দ্বনার সোম্যাগার কলতে। প্রেন পূজ্য লক্ষত ইতি। তদেবং চ্ছালিত্যার ছক্ষা পাণ্য্য সদ্যোনাশে বচনাদব-গতে তুথানুক্তক্যাপি নাশস্ত ভক্তা বৃত্যা সন্তাবিত ইতি সর্বপ্রারন্ধপাপহারি-ভার্যাং দ্যুদাহরণং যুক্তমেব। যথোক্তং। ন বাস্থদেব ভক্তানাম গুডং বিন্যুক্ত ক্ষতিং। জন্ম মৃত্যুক্তরা ব্যাধিভাগং বাপুশেকার ত ইতি॥১৪॥।

পৃশাননের স্পষ্টর'ত পালে চেতি। পাণমিতি বিশেষাং। ততা ফলোমুধং প্রায়ন্ধং নাজন বাসনামগং প্রারন্ধনোমুগমিতি যাবং কুটং নী এলোমুধং অপ্রারন্ধ ফলংন পারন্ধং কৃট্ডাদির্পক। গানিস্থং দেন তং। ওচ্চানাদিসিদ্ধং অন্নত্ত দেব। কারিকায়াং ভূ এতদেবাপ্রারন্ধিভাকেং। বীজপ্রার্নেত্ পূর্বং গণিতে

কারণ এবং চূর্জাতির আরম্ভক অর্থাৎ নীচজাতিতে জন্মগ্রহণ করাইবার কারণ পাপকে প্রারক্ষ বলে ॥ ১৯॥

এই সমস্ত প্রমাণ পদ্মপুরাণে স্থাপটরপে নির্দিষ্ট রছি-য়াছে।

### यथा--- .

যাহাদের চিত্ত বিষ্ণুভক্তিতে একান্ত অমুরক্ত, ভাহাদিগের অপ্রারক্ষক, কূট বীজ এবং ফলোমুখ এই পাপ চতুষ্টয় ক্রেমে ক্রেমে বিশম প্রাপ্ত হইয়া যায়॥

উক্ত পদ্যে ফলোমুখ, শব্দের অর্থ প্রারক, বীজের অর্থ ধাসনাময় অর্থাৎ প্রারক্তের উন্মুথ (কারণ), কৃট শব্দে

ক্রমেণেৰ প্রলীয়েত বিষ্ণুভক্তিষ্কৃত।তানাং # ১৫ # वीक्रहतकः यथा यर्छ २ ज्याद्य । ১१ (शांदक । ৈ তৈন্তান।ঘানি পূয়ন্তে ভপোদানব্রতাদিভিঃ !

পুর্ব্বোক্তং সদাঃ স্বনায়েতি ক্ষণপঞ্চতবেধনায়ের কিঞ্ছিৎকাশবিলখে জের हेडि ४२६॥

বীজহর ১ং বিশেষভো দর্শগতি ইত্যাহ বীলেতি ॥১৬॥

বীজোমুখ অর্থাথ বীজের কারণ, প্রারক্ত ফল শব্দে যাহাতে কোনও ফল অৰ্থাৎ কৃটছাদি রূপ কার্য্যাবস্থ। আরব্ধ হয়নাই, ইংবারই নাগ অপ্রারক্র পাপ, এ সমুদায়ের তাৎপর্যা এই যে, অথাতক আদি বীজসরণ, কৃট ভাহার অকুরোৎপাদন **অবস্থা**, বীজ শাথাপল্লবাদি শ্রীরৃদ্ধির কাল এবং এতল্লিবন্ধন প্রারন্ধ পাপফলের প্রণবোমুগ হুক্ষদদৃশ, পূর্বের প্রারন্ধ ও বীজ গণনা করা হইখাছে, কৃটকে অথানবের অন্তভূতি জানিতে इहेर्य ॥ ५० ॥

বালহরত যথা যজকলে ২ আ। ১৭ শ্লোকে॥

क्षकरमय किहितन, ८१ ताझन्। उभागा मान धवः ठाउरा-মণাদি ব্রত, এতদ্বারা পাপ সমূহ বিষষ্ট হয়, কিন্তু হৃদয়স্থ পাপ-বীজ বিন্দ হয় না, তাহা কেবল জীকুমের চরণারবিলের (मवाट इटे विनक्षे इहेग्रा शादक ॥

তাৎপর্যা। প্রায়শ্চিত রূপ তপদ্যা দান এবং চান্তায়ণাদি ত্রত করিলে পাপ কর হয় বটে, বিশ্ব তাহার পরক্ষেপ্ট নাধর্মকং ভদ্দনং ভশ্ন পৌশাজিনু দেবরা ॥ ১৬॥
অবিদ্যাহরতং যথা চতুর্বে ২২ আ । ৩৭ গোকে।
যৎ পাদপক্ষপলাশক্ষিশাস্ভক্তা।
কর্মাশনং গ্রথিতমূল্য থয়ন্তি সন্তঃ।

নৈষ্ঠিকাশ্ব অস্যা অবিদ্যাহরত্বমণি প্রতিজ্ঞার হাজাং দর্শরতি বংপাদেতি। রিক্সভরো ভগন্ধানাদিনাভূতমতর:। অরণং শরণং। ক্রমণ্ডাত্র প্রীপ্তেন প্রব-শোপনক্ষরত্বা প্রোক্তঃপূর্ব হাং স্বক্ষাঃ ক্রফঃ পূণাপ্রবণকীর্ত্তনঃ। হাদ্যক্তক্রেশ্বজ্ঞ-আনি বিধুনোতি স্বস্থং স্তাং। নইপ্রাধেষ চলের নিতাং ভাগবত সেবয়াঁ। ভগ-ব্জুাস্তমালোকে ভক্তিভতিতি নৈষ্টিকা। ভদা রলস্তমোভাবাঃ কামলোভাদরশ্চ

পুনরার পাপে প্রত্ত করার এমত পাপনীজ হলরে সংলগ্ন আকে, তাহা যদি না হর তবে কেন পুনতার লোককে পাপে প্রায়ত হইতে দেখা যার, এই কারণে প্রাশ্চিত করিলে ও সার্মতোভাবে অন্তরের পাপ বিনক্ত হয় না, ঐ পাশ বীজস্বরূপ হইরা পুনরার অন্তরেংশাদন করে, অর্থাৎ পাপকর্মে প্রত্ত করার। ইহা কেবল প্রীক্তক্রনার বিদ্দের সেবাদারাই ক্র প্রাপ্ত হয়, জন্য কোন সাধনে বিনক্ত হয় না॥ ১৬॥

## व्यविनाश्चिष यथ।।

**इजूर्बऋरक्ष २२ ज्या ७१ ८**क्षारक ॥

লনংক্ষার কৰিলেন, হে রাজন ! মনুষে র অহলাররপ হানমগ্রন্থি কর্ম রজ্জে আবন । ইহা বেমন সাধুগণ শ্রীকৃষ্ণ ভারমার্থিকের ভাজিমারা উন্মোচন করিতে পারেন, তক্রপ কার্মান্থিকের ভিনিক্তি নির্বিষয়-মতি-যভিগণ ইন্দ্রিয়চয়কে তম্ম রিক্তমতথো যত্ত্যো নিক্তম-অে চোগণান্তমরণং ভল বাহে দেবং ॥ शासा है।

কৃতাসুযাত্র। বিদ্যাভিছ রিভজ্ঞিরমূত্তমা । व्यतिमार निर्मारका एक मायकाटन व अमगीर ॥ ३० ॥ SPRE!

প্রভানি খ্রীনবং সর্বজগভাষত্রকভা।

য। চেত এতৈরনাবিদ্ধা ছিতং সংখ প্রসীদভি। এবং প্রদর্মনসো ভগবছকি। বাগত:। ভগবতত্ত্বিক্ষানং মুক্তসক্ষ্যা কারতে। ভিনাতে **ছনরএছিভিনাতে** র্বসংশরা: की शट छ। সা কর্মাণ দুষ্ঠ এবাজনীখর ইভি। নৈটিকী নিশ্চলেভি il ez a :igiwiot

मर्सक्य ठामिछि । मर्सक्गरकर्यकः खीगनः ७९कर्जुकाष्ट्रत्रकः का ह । जनावाः ोला गांबर्डात्वर्शन पृश्वकिः मर्त्साख्य शर्मण्या । किः वा एक अएक वमानि

নিগ্ৰহ করিয়াও সমর্থ হয়েন নাই। অতথৰ আপনি শেই মাশ্রা সরপ ভগবান বাস্থানেবকৈ ভজন করুন ॥

> এই উদাহরণে এথিত কর্মাশয় শবে অবিদ্যা ॥ शम्रभूबार्ग यथा।

অভ্যন্তনা হরিভক্তি বিদ্যাপক্তির সহিত আগমন করিয়া ্যমন দাবানলশিখা দ্পীকে সংহার করে. ভাহার ন্যার আঞ च्यविषा: दक विनक्षे करतन ॥ ১१ ॥

### **१७ ज**नायिनी यथा ।

সমুদায় জগতের প্রীতি বিধান, সকলের অসুরাগ, সন্গুণ এবং তথ ইত্যাদিকে পণ্ডিতগণ শুভ শক্ষে কছিলা থাকেন 🛭

সদগুণাঃ অথমিত্যাদীন্যাখ্যাতানি মনীধিভিঃ॥ তত্ত সংগৎখীণনাদিষয়প্ৰদত্তং।

यथा भएता।

যেনার্চিতে। হরিস্তেন তর্পিতানি জগস্তাপ।
নজান্তি জন্তবন্তত্ত জঙ্গনাঃ স্থাবরা অপি॥ ১৮॥
মালা ণাদিপ্রদেষং যথা পঞ্চমে ১৮ অধ্যায়ে। ১২ শ্লোকে।
যাস্যান্তি ভক্তিভগবত্যকিকানা
স্কৈপ্ত বৈস্তত্ত সমাদতে হারাঃ

শালগুণাক্বতে অপি তত্ত সন্তবতঃ তথাপানাতৈব তথাতাক্বতে ন' স্যাতাং কিন্ত ৰক্ষপক্তে অপীতি পৃথগুকিঃ ক্বা। যথোক্তং চতুর্থে প্রবচরিতে। বস্য প্রসরো ভগবান্ গুণৈমৈ ত্যাদিভিছ বি:। তথা নমন্তি ভূজানি নিম আপ ইব ৰম্মিতি। আদিগ্রহণাৎ সর্ক্বশীকারিত্মক্লক বিষাদীনি জ্ঞোনি ॥ ১৮॥ সলগুণাদী ভাতাদিগ্রহণাৎ সর্ক্বশীকারিত্বোপলক্ষক হ্রবশীকারিতঃ গৃহতে।

দর্ব্ব জগতের প্রতি ও দর্ব্ব জগতের অনুরাগ যথা। পদ্মপুরাণে।

যে ব্যক্তি ভগণান্ হরির ূঅর্চনা করিয়াছেন তিনি সমুদায় জগৎকে পরিতৃপ্ত করিয়াছেন, অধিক কি স্থাবর জন্ম প্রস্তৃ-তিও তাথার প্রতি অমুরক্ত হয়॥ ১৮॥

ভক্তির সদগুণাদিপ্রদন্ত যথা।
পঞ্চনক্ষে ১৮ অধ্যায়ে। ১২ স্লোকে॥
ভক্তিব কহিলেন, হে মহারাজ। ভগবান্ শ্রীক্তান্তর
প্রতি মাঁহার আকিঞ্চনা অর্থাৎ নিক্ষাম ভক্তি হয়, তাঁহার দেহে

ঁছরাণভক্তন্য কুডো মহন্যুণা 🛴 🧢 मनातर्भनामिक शावदका विवः ॥ ১৯ ॥ প্ৰথ প্ৰদায়ং।

इयः देशिकः आफारेमचत्रक्छि छक्तिया। যথা তালে।

সিদ্ধাঃ পরমাশ্চর্যা ভুক্তিমুক্তিশ্চ শাশ্বতী।

দ্যু পাল্লি প্রদ্রমিতাত সদ্যু পাদিবণীকার্যিভূত্মিত। র্থ ॥ ১৮ ॥

क्तां छश्रवानशः। य छ छथा छर्भविकता दन्या म्नवत्कश्चार्थः। स्वानतः वरी इस जिंहेरी जार्थः ॥ ১৯ ॥

° निकरबारुनियानरंत्रा कृत्किन्त विवत्रमत्रक्ष्यः मुक्तिर्ज चक्र्यः । शाविनियाक्तिः

(कर्मन यम डालन हरेया मगक श्रान महिल **व्यक्ति कर्**वन. किन्छ (य दाक्ति रुतित शक्ति एकि करत ना, छोरान महम्मून Cकार्थ। इहेर्छ इहेरव, रिंग क्रिक्स चामर मानाहरू बाक्स खि ছইয়া বাহ্য বিষয়ের প্রতি ধাব্যান হয় অর্থাৎ ভাছার কোনই অপ গিছি হয় না ॥

खेळ छेनाहत्रां निकाय खाळत थाडि **खेळ्डे मान**्गांनि थानान करवन, कावन अकिट्यारण हिन्छ विश्व इंश्वांत छोशांव **८९८६ (१२१० च च छटनद्र महिल चरिहिल करवन, अंड्यांश** खनवष्ठकितरे मनगुगचानि धनान कहा एरेन ॥ ३৯ ॥

ভক্তির হুখপ্রদত্ব যুখা !

प्रमु जिन अकात रूप, स्था—दिस्तिक, लामा अकुर जेप तिक । যুধা ভৱে ॥

महारमन कहिरलन, थिरह ! दय बाक्ति (भावित्र हत्रभावf 8 ]

## নিছ্যক প্রমান্সর ভবেদেগাবিন্দ ভক্তিতঃ ॥ ২• ॥

ভাং প্রমানক্ষেবরস্থা ভচ্চ ভত্তরত্তব্যরংখা ২০ ॥

নিক্ষেত্ত কোৰ উৎপন হইবাছে, ঐ ভক্তিযোগ তাহাকে অণিমাদি অউনিমি বিষয়স্ক্রপ ভূক্তি মুক্তিস্কল শাখত আস্ক ও নিত্য প্রমানক্ষম ঐখনিক হুখ অমুভ্য করাইয়া থাকেন এ

উক্ত উদাহনণে ক্ষণিমাদি অউদিদ্ধি যথা—ক্ষণিমা, মহিমা, লখিমা, প্রাপ্তি, ঈশিষ, বশিষ প্রকাম্য এবং কামাবদায়িতা। এ সমুদাবের অর্থ এই যে, যে সিদ্ধিদারা শীলামধ্যে প্রবেশ ক্ষিতে পারা যায় তাহার নাম ক্ষণিমান ১%

খে দিনিজারা পর্বভের নায় মহান্ হওয়া যার ভাহার নাম সহিমা ২। যে দিনিজারা দ্র্যিকিরণ ধরিয়াও স্থালোকে গমন করিছে পারা যায় ভাহার নাম লছিমা ৩। যে দিনিজে জঙ্গুলারে চন্দ্র স্পর্ণ করিছে পারা যায়, ভহার নাম প্রাপ্তি, এড-ছারা কেবল চন্দ্রমাত্রই স্পর্ণ করিছে পারে এমত নয়, যথন যাহা অভিলাষ করিবে ভখনই ভাহা স্পর্ণ করিছে পারিষেত্র। যে দিনিজারা ভূত ভোতিকের স্প্রি, স্থিতি ও প্রলয় করিছে পারা যার ভাহার নাম ঈশিষ ৫। যে দিনিজারা ভূত ভোতিককে বন্ধুত করিতে পারা যায় ভাহার নাম বশিষ ৬। যে বিজিবারা ইক্রার জনাধা হরনা স্বর্গাৎ করের নাম বশিষ্ক ৬। যে বিজিবারা ইক্রার জনাধা হরনা স্বর্গাৎ করের নাম প্রকাষ্ট্র করিছে পারা মায়, ভাহার নাম প্রকাষ্ট্র করিছে পারা মায়, ভাহার নাম প্রকাষ্ট্র করিছে পারা মায়, ভাহার নাম প্রকাষ্ট্র করির, বেমন সম্বর্গা করিছের জন্ধুরোংপাদন, ভাহার নাম কামাব্রানা বিজ্ঞান স্থান স্থিত ৮ য় ২০ ॥

হ্বিভক্তিস্থানরে চ।
ভূনোহিশ বাচে নেবেশ ছার ভক্তিদু চান্ত দে।
বা মোক্ষান্তচতুর্বর্গকলনা ভূবনা কভা ॥ ইতি ॥ ২১ ॥
মোক্ষান্তভাক্ত ।

मनार्गव व्यक्तवृत्यः स्वर्ट स्वर्ट । भूक्रवावीस व्यक्तिस्वाधः समञ्जः ॥

য়ৰ। নারদপক্ষাতে। হরিভক্তিমহাদেব্যাঃ সর্বা মুক্ত্যাদিসিদ্ধঃ।

ত্বধাঈখরার্ভবানন্দাত্রী ঃ ২১॥

শনাগেবেন্ডি। অন্তৰ্মণি প্ৰান্তঃ নি চাৰাং তস্তঃ স্বৰুপু কাগন্ধণ কীং। পুসৰাৰী কথাৰ্কামযোক্ষাব্ধাত্ধানতে ভক্ত সঙ্কং সক্ষাত্তে ইভাৰ্ছঃ হরি-হ্রিভজিক্তিক্তিকেন্দ্রেতে ও যথা ॥

প্রহলাদ নৃ'সংগদেবকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, ছেনেবেশ। আমি বারস্থার ভোষার নিকট এই প্রার্থনা করিভেছি যে, আমার ভক্তি ভোষাতে যেন স্বাচ্চু হইয়া অবস্থিত
হয়, যে হেতু এই ভক্তি লভা স্থানা অর্থাৎ ঈশ্বরাসুভব রূপখানন্দ্রনারিনা এবং ধর্মা, অর্থ্য, কাম ও মোক্ষরপ চতুর্বর্গের
ক্রিনান করেন। ২১॥

ভক্তির মোক্ণযুকারি । বধা।

যাহার জনরে অল্লমাত্রের ভগববিষয়া মতি আবির্ভ হইনাজে, তিনি ধর্মা, অর্থ, কাম ও মোক্ষমপ্র পুরুষার্থ চতুষ্টারে ক ভূগজুল্য জ্ঞান করেন অর্থাৎ ঐ পুরুষার্থ ভাঁহার ক্রটের সমন স্কাশচাদ্ভাস্সাশেচটিকাবদসুরভাঃ ॥ ইভি ॥ স্তুলভা ।

সাধনৌঘৈরনাসকৈরলভ্যা হুচিরাদপি। হরিণা চাখদেয়েতি দ্বিধা দা ম্যাৎ হুহুল্লভা ॥ ২১ ॥

ভক্রাদ্যা যথা ভদ্রে।

জানতঃ হলভ। মৃকি ভুক্তির্যজ্ঞাদিপুণ্যতং।

ভক্তাত। চেটিকাবদিতি ভীতা ইভাব:। হারণা চাম্পদেরেভাতাসঙ্গেৎণীতি গ্নাতে। অনাথা বৈবিধাস্পিপত্তে:। হিধা স্ব্রতিতি প্রকারকরেনাপি স্কৃত্রভিদং তসাই ইভাব:॥২২॥

জ্ঞানত ইতি। ওল্লমতং তাব্যিচার্থাতে। অঞ জ্ঞান্যজ্ঞাদিপুণো সংস্থে এব বাচো ওয়োভাদৃশহং বিনা মুক্তিভূক্তোঃ সিদ্ধাপ ন সাং। আছ ভাবং জ্লভ্যবার্তী। অবঃ সাধনসহস্রাণামপি সাসঙ্গ্রমৰ বভাতে।

### यशा नांत्रप्रशक्ताटक ।

যেমন চেটিকা অর্থাৎ দাসী সকল ভীত্চিত্তে রাজমহিষীর অমুগামিনী হয়, তদ্ধেপ ভূক্তি মুক্তি গুড়তি অন্তুত গিছি সকল হবিভক্তি সহাদেশীর পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করেন।

## ভক্তির হৃত্ত্রভিতা যথা।

ত্তপ্ল ভি ভিক্তি ছই প্রকার,—নিকাম সাধন সমূহ্যারা চিরকালেও অলভ্যা এবং কামনা থাকিলেও **প্রিকৃষ্ণ কর্তৃ**ক আত অলেয়া য় ২ ॥

### অনভ্যা যথা তপ্তে।

মহাদেব কহিলেন, প্রিয়ে। নৈপুণ্য সহক্ত জ্ঞানদারা মৃক্তি আনারাদেই লাভ হা এবং তাদৃশ যজাদি পুণ্যদারা স্বর্গাদি অধভোগরপভুক্তিও প্রাপ্ত হত্যা যায়, কিন্তু এই হরিভক্তি সহক্র সহক্র সাধনদারাও হতুর ভা অর্থাৎ কোনকানেই ভক্তি

## সেয়ং সাধনসাংক্রৈহ রিভক্তিঃ অতুল ভা ॥ ২ ০ ॥

वाकार्य जन्म जन्मात्राहर्भाषार भरू अवास्ताहरू । एव यशि कान-यणामिलुनारबाः मानव १० ७ रमक्तिक्वेद्रमा ६० वाहार छमा छानुनास्मासनि कासार कत्याः स्मान्यः त्वाललन्।त्व । दक्रालंदिषक्वत्यवायगुक्तानं कद्यविनामिः ভাবে কুরাশা ভূরিকর্মাণো বালিশা বৃদ্ধনানিন ইছাদেশ্য। ভত্মান্তরো: সা-मक्र देनमूर्तान विवृद्धांपरभाव वाहाः, देनमूनाक अखिरवानम्स्वास् विविध । পুরেছ ভ্রমন বছবোহপি বোগিন ইত্যাদে: অর্গাপবর্গরো: পুংশামিতাদেও। वर्ष क्तिकित्स्त्रम् माध्यस्था ब्राजियशिवाद्याय शत्कारात अका मश्रक्षा उत्सार जिवर। ७७- माधन नायन इतिमधिक माधन गायन गायन छ। ভদ্ধবিজ্যাধোগাং তথাচ সাধনশব্দেন সাক্ষাভত্তমনে বাচো তত্ত পুৰিঞ্ছতঃ সাসপ্রেল্ডে সংঅবচ্ছনির্দেশেনাপ্রাণাবনাং স্থাপাচচ ভীত্র। ক্সাপি ভল (ভাৰতকৌ) প্ৰবৃত্তিন্দাং। তেন ভদাং অগভ্যন্ত, শুৰুভঃ অভ্যানি লং গুণ ৬-৮ খচেটি হং। নাতিদীর্ঘেণ কালেন ভগবান বিশতে ছাট। ভাষা ছংং कुक्ककणाः आधात्र आमञ्जाद्याम् गान् मत्नाह्ताः । । । अक्षता (मश्कूणनः विश्व-ণুড: প্রির্শ্রণাক ম্যাভব্ডভিরিড্যালৌ অসিকং ভত্তাং সংস্পদ্ধন ন সাধ-র্ভি সাং যোগ ইভাদিবতদখনিব্যক্তকর্মানিক্ষেবেভিতে। অভ্যক সাধ্য मक এव विचारको नहु उक्तनकः। अना मानुमश्य नाम ह उन्विक्तिरवानाय পুর্ববলৈপুণ্যেন বিহিত্তমের। তৎসাহলৈরপি ছত্ত্বগ্রেড়াজির সাক্ষান্তমঞ্জ-জন্মের কর্ত্তবাছেন প্রবর্ত্তরতি। তথাপি কারিকাবাদনসকৈরিভি বহুক্ত ভঙ্ক চাসক্ষেন সাধনবৈলপুণ্ডমৰ বোগতে ভবৈপুণ্ডে সাক্ষাভত্তপনে অধুবিং । ভতত ভদা ভাদৃশগামধ্যেহণানাত অ্গাদে গায়ভা ন বিদাচে আদক্ষে নৈপুণাং তেছু ভার্টেশন্নি।সাধ্টন্রিভার্থ:। ভার্শন্নাসাধ্বয়ত নেটা, তথাবেকেন স্ব্রা ভগৰাৰ সাত্তাং পতিঃ। শ্ৰেচবাঃ কীটি গ্ৰাণ্ড **প্ৰত্যানেজ্ভাছতম্বিভাবেই।** ভত্মাদি চরাস্ত্রি চাপি ম বুক্তেতি গানেববদ্ধিতং কানস্থানাসায়ভবিভি ক্রঞ

गाक क्तिए शांता यात्र मा ॥ २०॥

ৰিতীয়া যথা পঞ্চমক্ষকে।
রাজন্ পতিপ্র ক্রনং ভবতাং যদৃনাং।
দৈবং প্রিয়ঃ কূলপতিঃ কচ কিছরো বঃ।
আল্বেমস ভজভাং ভগবামুক্লো
মুক্তিং দদাতি কহিছিল সান ভক্তিযোগং॥ ইতি॥ ২৪॥
সাজ্যানন্দবিশেষাত্বা যথা।
ভ্রহ্মানন্দে ভবেদেষ চেৎ পরার্ভণীকৃতঃ।

কহিচির দলাতীভূকে কহি চন্দদাতীত্যায়াতি। অসাকল্যেভূ চিচ্চনৌ।
অভএব কহি চিদ্দীতি নোজং। তত্মাদাসকলাপিঞ্ভে সাধনভূতে সাকাইজি-বোগে দতি যাবং ফলভূতে ভক্তিযোগে গাঢ়াসজিল লায়তে ভাবল দদাতী ভার্ম-অথৈব চ লক্ষিতং অন্যাভিলাযিভাশুনামিতি॥ ২৪॥

পরার্ক্কেতি। পরার্ক্কালস্থাধিনা সমূদিতং তৎস্থমপীতা 📽 ॥

र्षतिकर्त्ति चाल्ध चारतः। यथा। भक्षत्रकरका ७ च । ১৮ ट्रांटिक ।

ভকদেন কৰিলেন, ছে রাজন্! ভগবান্ মুকুন্স ভোমা-নের ৪ যাদবদিগের পতি অর্থাৎ পালক, গুরু (উপদেশক, ) নৈন (উপাস্য), প্রিয় ৪ কুলের নিয়ন্তা, অধিক কি ভোমা-নের আজ্ঞাকুন্তী হইয়া কথন ২ দোত্যাদি কার্য্যেও প্রায়ুত্ত হইয় ছেনা প্রিয়া রাজন্! এ সকল কথা দূরে থাকুক, বাঁধারা তাঁহাকে ভজনা করেন, তাঁহাদিগকে মুক্তিই প্রদান করিরা পাক্তেন, কিন্তু তিনি কথন কাহাকে শীত্র ভক্তিযোগ প্রায়ান করেন কা ॥ ২৪ ॥

माञ्चानम्बद्धियाणा ।

ंगनि जनानम रूथएक विशेष ग्रांका वाता ७१ कता

নৈতি ভক্তিত্থাড়োশেঃ প্রমাপুত্নামণি গ্রহণ ॥ यथा रुबि जिल्हा स्थानरम् । ष्ठः माक्षरं क त्रवास्तापि एका कि खिल्मा (य স্থানি গোষ্পায়ন্তে ত্রান্মাণ্যপি জগদগুরো 🛊 ২৬ 🛊 তথা ভাবার্ধনীপিকায়াক। ष्यदक्षाम् ज्ञार्यार्धः विश्वत्सा महामूनः !

\* बाक्सविडाज भारत्मक्रांनीकि कुन वार्थायः भवत्रकानस्मरेनव क्या कार्य-चनाः 🖣 छ। गव छ। सिव् शिनिक्षिति छना। इविन्यन मना भगा विश्व का । सिकाः ॥३७ मश्यां वहत् डेनाहतिवामात्वत् ज्ञीलांव श्रीतिवादकाय् जाशंबनीशिष्टकायाः ক্রণার ভংকর্ত তংপর্বাজ্ঞাবন সর্বাভরবাক্যার্থসংগ্রাহোহরমিতাতি গারা**ৎ ॥ ২৭ ॥** 

যায় তাহা হইলে ঐ ত্রকা নন্দ হুখভক্তি হুখদাগরের প্রমাণ্-রপ তুল্য হটতে পারে না ॥ ১৫ ॥

যথ। হরিভক্তিস্থাপয়ে ॥

প্রহল।দ নৃসিংহদেশকে ভাব করিয়া কহিলেন, ছে ভাগ-দ্যারো! আমি আপনার সাকাং লাভ করিয়া বিভন্ধ আন্দ্র-পাগরে নিমগ্র হইগাছি, একংশ আসার ত্রগানশত্বও গোস্পদ जुना (वाथ ष्टेटल्ट् ॥ २७ ॥

এই প্ৰকান্ন ভাৰাৰ্ধনীপিকা চীকান্ন বৰা ॥ · ভর্বন্ : আপনায় কথারূপ অযুত্গার্রে বিহার**ীল কোন্ড** কোনও পুৰাবান জন, মহানন্দ অসুত্ৰৰ করত চতুর্বাপক্তেও কু বিশ্বি কু জিন: কেচিচ্চ চুর্ব্বর্গং তৃণোপমং ॥ ২৭ ॥ শ্রীকুফাক ধিনী ॥

কৃষা হবিং থেমভাজ: গ্রিধ্বুর্মণসন্থিতং।
ভক্তিবশীক্রোভীতি শ্রীকৃষ্ণাক্রিণী সভা ॥ ২৮ ॥
যথৈকাদশে।

় ন সাধয়তি মাং যোগো ন সাংখ্যং ধর্মউদ্ধব। ন স্বাধায়স্তপস্ত্যাগো যথা ভক্তির্পানোর্ভিভি গা ॥ ২৯ ॥

্রেম ভারামিতি আকর্ষণশন্দ্রগাং প্রিরণর্ঘদন্তি শ্রীশন্দ্রগান্ধার পাতিং ৪ ২৮ ॥

ন ধাৰ্মতী তাল যদ।পি বোগাদিনাগন প্ৰতিপ্ৰিক্তিন সাধন লয়ের্গা। আৰাতি তত্ত তাগ্ৰত ইত্যাদিবকামাণাক্সাহেণ সাধ্য ভক্তিম হিম প্রভাবেহ কিছু ছাইন্ধা ন সম্ভবতি। তথাপি সাধ্যমেব জনন্ত্রি বন্ধীকরোভাসাধিতি জেপাজং ॥ ২৯॥

# ত্পতুল্য জ্ঞান করেন॥ ২৭॥

**बी १व्हा करिंगी** यथा॥

ষে ভক্তি শ্রীকৃষ্ণকেও প্রেমে মুগ্ধ করিয়। প্রিয়ণর্গের সহিত্ বশীস্কৃত করেন, ভাঁহাকে শ্রীকৃষ্ণাক্ষিণী বলা যায়॥ ২৮॥

যথা একাদশককে ১২ আ। ১ সোঁকে :

জীক্ষ কহিলেন, হে উদ্ধব! যেরপ মন্বিষয়িণী বিশুদ্ধ। ভক্তি আমাকে বশীভূত করিতে পারে, ভদ্রেপ যোগ, সাংখ্য ধর্মী, বেদাধায়ন, তপদ্যা এবং দান ইহারা বশীভূত করিতে পারে না ॥ ২৯॥ সপ্তমে চ নারদোকো।

যুমং নৃলোকে বত ভূরিভাগ।
লোকং পুনানা মুনয়োহভিযন্তি।
যেষাং গৃহানাবসভীতি সাক্ষদ্গৃঢ়ং পরং ব্রহ্ম মনুষ্যলিঙ্গং ॥ ইতি ॥ ৩০ ॥
অগ্রতো বক্ষামাণায়া স্তিধা ভক্ষেরসুক্রমাৎ।

অ হএব ত্রাণরি হুষান্ প্রিয়বর্গনম্বি তহে। ংলাহরণঞ্করিষার প্রমাহ যুখ-শিক্তি॥ ৩ ॰ ॥

বিশো ঘাত্যাং ঘাড্যাং যড়ভিং পলৈং কেশনী আদি খিং পরিকীর্তি মিক্তি অসাধারণজেনেতি পরিশ্লাখিং। তেন যাধনকণায়া বেই গুণৌ ভাবকণায়া-

> প্রিয়বর্গের সহিত্ত শ্রীক্ষেত্র বশীকরণ যথ। সপ্তমক্ষে ১০ আ। ৩৭ শ্রোকে॥

রাজা যুধিন্তির নারদম্থে প্রহলাদচ্রিত্র শ্রাণ করিয়ামনোমধ্যে বিবেচনা করিলেন, প্রহলাদইভগণানের প্রিয়পাত্র আমারা
নহি, নারদ রাজার এইরূপ মনোর্ত্তি অনুভব করিয়া কহিলেন,
হে মহারাজ! এই নরলোকে ভোমরাই ভাগ্যবান্ যেহেতু
লোকপাবন মুনিগণ সর্বাণা ভোমাদের গৃহে আগমন করেন,
অধিকস্ত সাক্ষাৎ পরত্রক্ষ মানবশ্যীর প্রকটন করিয়া প্রচল্লভাবে তোমাদের গৃহে অবহিতি করিভেছেন, অতএব আপনাদিগের অপেকা অধিক ভাগ্যবান্ আর কে আছে !॥ ৩০॥
সামান্তঃ ভক্তি ভিন প্রকার অর্থাৎ সাধ্যন, ভাব ও প্রেম

দ্বিশঃ ষড়্ভিঃ পদৈরেতন্মাহান্স্যং পরিকীর্ত্তিতং॥ ৩১॥ কিঞ্চ।

স্বল্পাপি রুচিরেব স্যাদ্ধক্তিত্ত্বাববোধিকা।

যুক্তিস্ত কেবলা নৈব যদস্যা অপ্রতিষ্ঠত। ॥ ৩২ ॥
তথা প্রাচীনৈরপ্যুক্তং।

যজেনাপাদিতোহপার্থঃ কুশনৈরনুমাতৃভিঃ।

শ্চমারো গুণা: প্রেমরপারা: যড়পি জেরা:। তত্ত্ব তত্ত্ব ভর্তাবাং বাযুাদি-ভূতচ চুষ্ট্যবং ॥ ৩১ ॥

আর বহিমুখান্ প্রতি আনাদপ্চোতে ইত্যাহ কিংক্তি। রুচিরত্র ভক্তি-তক্ত প্রতিপাদকশনের শ্রীমন্তাগব হাদির্ প্রাচীনসংস্থারেণো রুম হল্পানং সৈব ভক্তিতকং আবববোধরতি। যথা শব্দং শ্রুদাগয়তীতি কেবলা শুকা নৈবেতি কিন্তু তক্রচিসহিতা ইখনেব বক্ষাতে। শাস্ত্রে যুকৌচ নিপুণ ইতি॥ ৩২॥

অপ্রতিষ্ঠতামেব দর্শন্তি। প্রাচীনৈ: তর্কাপ্রতিষ্ঠানাৎ, ইতি ন্যায়াত্মা-

ইহা অগ্রে বিশেষরূপে ব্যক্ত ইইবে। তুইটা কহিয়া ক্লেশন্নী-প্রভুতি ছয়টীতে ক্রমে ভক্তিমাহাত্ম্য অসাধারণ**রূপে** পরিকীর্তি**ত** ইইল॥ ৩১॥

অপর ভক্তিপ্রতিপাদক ভাগবতাদি শাস্ত্রে জন্মান্তরীণ সংস্কারাসুদারে ভাঠেছ জানরপ রুচি অল পরিমাণে হইলেও তদ্ধারা ভক্তিতত্ত্ব প্রকাশ পায়, কিন্তু কেবল যুক্তি অবলম্বন করিলে ভক্তিতত্ত্বের দর্শনিও পাওয়া যায় না, কারণ তর্ক অভ্রির তদ্ধারা নিশ্চর হয় না॥ ৩২॥

এই বিষয়ে প্রাচীন পণ্ডিত সকল কহিয়াছেন যে,— তর্ককুশল কোন ব্যক্তি যুক্তিখারা অভিযন্তে একটা সিদ্ধান্ত অভিযুক্ততরৈ রন্যৈ রন্যথৈবোপপাদ্যতে ॥ ৩৩ ॥
॥ \* ॥ ইতি শ্রীভক্তিরদায়তদিকো পূর্ববিভাগে ভক্তিসামন্যলংরী প্রথমা ॥ \* ॥

সা ভক্তিঃ সাধনং ভাবং প্রেমা চেতি ত্রিণোদিতা ॥ ১॥

রিভি: বার্ত্তিককারাদিভি:। অভিযুক্ততরাস্তার্কিকেমু প্রবীণতরা:॥ ৩০ ॥

॥ । ইতি ছুর্গমলক্ষমনীনায়া।ং ভক্তিরলামুক্লিকায়াং লহ্মীচভুইয়ায়কে পুর্ববিভাগে ভক্তিলামন।লহরী প্রথমা ॥ • ॥

সা ভক্তি রৈতি আপাততঃ প্রতীতার্থমেবেদং বিবেচনং বিশেষ হস্তিদং জ্ঞেয়ং ভক্তি তাবিদ্ধিবিধা সাধনরূপা সাধারূপাচ। তার প্রথমারা লক্ষণং ভেদাক বক্ষান্তে দিরীয়া তু হার্দিরূপা সাপি ভক্তিশব্দেনোচ্যতে। যথৈকাদশে ভক্তা। দংজাতয়া ভক্তাা বিপ্রত্যংপলকাং তমুমিতি। অস্যাশ্চ ভাব প্রেম প্রণয়াধ্যাং পঞ্চ ভেদাং। তথোজ্ঞবানীল্মণাবস্য প্রিশিষ্টিপ্রভ্ মানানুরাগ্মহা ভাবারুমণ্চ সন্তি। ভদেবমটো তথাপি ভাব প্রেমেতি বিভেদ্ভেনোভিক্ত প্রণাধ্যের। প্রেম্ব এব বিশাস্থাকৈর লাাৎ সাধকেকপি। আন ক্ষেহাদয়ো ভেদা বিবিচা নহি শংস্তাং। ইতাবৈর প্রেমণ্ড্য হে বক্ষামাণ্ডাং॥ ১॥

স্থিরকরিয়া রাখিয়াছেন কিস্তু ওর্কশাস্ত্রে নিপুণতর অন্য ব্যক্তি অনায়াদে তাহা থণ্ডন করিতে পারেন॥ ৩০॥

॥ # ॥ ইতি শীভক্তিরসায়তিসিকুর পূর্ববিভাগে **শ্রীরাম**নারায়ণবিদ্যার হুক্ত ব্যাখ্যায় ভক্তি সামান্য নিরূপণ **প্রথম**লহরী॥ # ॥

পূর্বোল্লিখিতা ভক্তি সাধন, ভাব ও প্রেম ভেদে তিন প্রকার হয় ঘথা—সাধনভক্তি, ভাবভক্তি ও প্রেমভক্তি ॥ ১॥

## তত্র সাধনভক্তিঃ॥

কৃতিসাধ্যা ভবেৎ সাধ্যভাবা সা গাধনাভিধা। নিত্যদিদ্ধন্য ভাবন্য প্রাকট্যং হুদি সাধ্যতা॥ ২ ॥ সা ভক্তিঃ সপ্তমস্কদ্ধে ভঙ্গ্যা দেবর্ষিণোদিতা॥ ৩॥

ক্তীতি। সামানাতো লকিতো উওমা ভক্তি:। কৃত্যা ই ক্সিপ্থেরণয়া সাধা

চে: সা সাধনাভিধা ভবতি। কৃত্যাক্ষণগুলিক পুক্রিয়ায়া , যজাক্তবিবং।
ভক্ত ভাবারাক্রলকার ব্যবছেরার্থাই সাধ্যা ভাবঃ প্রেমাদিরপো যয়া সা
নতু ভাবদিদ্ধা। সাহি ভবজবা: সাধ্যর সাধ্যা বিশেষঃ। উত্তমায়া ক্রেপেকা

সাধাপ্রগান্তরা চ পরিষ্টা। অর্থাপ্রর স্বাধ্কিয়া বিশেষঃ। উত্তমায়া ক্রেপেকা

ক্তাং। ভাবসা সাধারে ক্রিমেরাং প্রম্পক্ষাধ্ত্বভাবঃ স্যাদিত্যাশক্ষাভ্
নিভোক্ত। ভব্যছেক্রিশেষ্টেন্ডিলের্গ্রেমাণ্ডাদিতি ভাবঃ হয়।

সোত। নগৰ ওলাছৈরাত্বশেল কিবৈ এেণ ভয়েন বা। সেহাৎ কামেন বা মুল্লাং কণ্ডিলেজাতে পুণ্লিত। ভয়ছেয়াবপি বিহিতৌ ভটি ভাবপি

### ভেশ্বন্য সাধনভাক্তি যথা।

ইন্দিগ্রন্থের খ্রেরণা অর্থাৎ প্রারণ ও দর্শনাদিদারা সংধনীয়া সামানা ভক্তিকেই সাধনভাক্ত কহে, একদারা ভাব ও
প্রোম সাধা ইইয়াছে। "ভাব ও খেম সাধ্য" এই কথা বলাতে
"ইহারা ক্রিম," এই প্রকার জম উপস্থিত হইতে পারে,
বাস্তবিক ভাহা নয়, ইহা নিভাগিদ্ধ বস্তু, ইংার কোন সাধন
নাই, কিন্তু জীবের হৃদ্ধস্থ প্রেমের উদ্দীপন করণের নাম
সাধন॥২॥

সপ্তথ্য সংস্কা ১ হা ।৩০ শ্লোকে। দেবর্ষিনারদণ্ড ভঙ্গিক্রেসে সাধন ভক্তি প্রদর্শন করিয়াছেন॥ ৩॥

#### यथ। ---

তত্মাৎ কেনাপ্যপায়েন মনঃ ক্ষে নিবেশয়েৎ ॥ ইতি ॥ বৈধীরাগামুগা চেতি দা দ্বিধা সাধনাভিধা॥ ও॥

**उ**क विशे ॥

যত্র রাগনেবাপ্ততাৎ শ্রান্তব্দিশঙ্কারতে। শাসনেনৈৰ শাস্ত্রস্যা সা বৈধীভক্তিরুচ্যতে॥

ভকী স্যাভাং যদি স্যাভাং তহ্যাপ্ত্লোনেতি বিশেষণবিরোদ: স্যাপ্তলাহন ভকোতি। যং বলু ভয়বেষরোরপি সঙ্গলং বিদ্ধীত ত্রিমাপি কোবা পরমন্পামরো ভক্তিংন কুবর্গিত প্রভাত তৌ বিদ্ধীতেতি পরিপাটোর্থা। যুল্লানিতি তু স্ভাবনায়ামের লিঙ্বিধানাং ন তু বিদ্ধী। ভর্বেষরোবি ধাতৃমশ্বন্ধ ছাং । যধাপি তীকৃষণপর্ষেব্দেং বাকাং তথাপি ভদংশাদৌ চ ভারভ্যানে জ্ঞোণ ॥ ১॥

তথ্যাগতি। উগায়েন কাষাদিনা নিবৈ বিশক্ত তিগাব্যিতবোল বিধিনা চ দ্বারা সনোলিবেশোগলকবিছন ত্রদিন্তিয়চেষ্ঠা চ ভক্তিরিতার্থন তথাপি কেন্দ্রি গোণোন ভ্যবেশাতিরিকেন অমনোক্ত্রুলেনৈকত্রেণৈবেতার্থন ৪ ।

যর ভক্তে। গুলুতিঃ পুংসো রাগানবাপ্তমাং রাগেণানবাপ্তেতি **হেতেঃ** শুলুসা শাসনেনৈৰ উপজায়তে যা ভক্তিবৈশী উচ্যতে। রাগোহ্যা**রাগতক** 

নারদ ন্ধষ্ঠিককে কহিলেন, কাজন্। যে কোন উপায়ে ছউক শ্রীকুফে মনোনিবেশ করা বিধেয়॥

বৈদী এবং রাগানুগাভেদে সাধনভক্তি ছই প্রকার ॥ ৪ ॥ তন্মধ্যে বৈধীভক্তি যথা।

রাগের অপ্রাপ্তি হেতু অর্থাৎ অনুরাপ উৎপন্ন হয় নাই, কেবল শাস্ত্র শাসন ভয়েই যাহাতে প্রবৃত্তি জন্মিরা থাকে, তাহাকে বৈধীভক্তি বলে॥ যথা দ্বিতীয়ে।

তিশাস্তারত সঞ্জাতা ভগবান্ হরিরীশবঃ। শ্রোতব্যঃ কীর্ত্তিব্যান্ত মার্ত্তব্যানেচছে ভাহভয়ং॥

পাদ্মেচ।

শার্ত্তব্যঃ সততং বিষ্ণুবি স্মর্ত্তব্যে। ন জাতুচিৎ। সর্ব্বে বিধিনিদেধাঃ স্থানেতথোরের কিঙ্করাঃ॥ ৫॥ ইত্যসৌ স্যাদি ধিনি তিঃং সক্ষবর্ণাপ্রমাদিষু।

চিশ্চ। অত্যে রাগায়িকারাগান্থগোর্ভেদিসা বক্ষামাণহাং। শাসনেনৈধ ইত্যেব কারাং রাগপ্রাপ্তমাপি চেত্তহি অংশেনৈব বৈধীত্বং জ্ঞেয়ং। অহরহঃ সন্ধান্ত্রান্ধণো ন হস্তব্য ইত্যাদিরপাং। এত্যােঃ অর্তব্যবিশ্বর্তব্যরূপয়ে৷ বিধিনিবেধ্রােরেব কিহ্নাঃ অধীনাঃ বিপরীতে তু বিপরীত্ফলা ভবস্তীতি ভাবঃ চিছ্কেস্ত্রে কাতৃ শব্দসার্থদ্যাতক এব ন তু বাচকঃ॥৫॥

ইতাদাবিতি কারিকাত এবং ক্রিয়াযোগণথৈঃ পুন।নিতানস্তরং পঠনীয়া।

যথা দ্বিতীয়স্কন্ধে > অধ্যায়ে। ৩৫ শ্লোকে।

শুকদেব কহিলেন, রাজন্! যে ব্রুক্তি অভগ ইচ্ছা করে, ভাহার পক্ষে ভগবান্ হরির শ্রবণ, কীর্ত্তন ও স্মরণ সর্বতো-ভাবে বিধেয়, যেহেতু ভিনি সর্বাজা। সর্বেশ্বর ॥

## পদ্মপুরাণে।

শক্ষণ। বিষ্ণুকে সারণ করিবে, কখনও তাঁহাকে বিস্মৃত হইবে না, ইহাই মুখ্য বিধি, কিন্তু শাস্ত্রে যে সকল বিধিও নিষ্ণেধ দেখিতে পাওয়া যায়, সে সম্পায় উক্ত সারণ ও বিস্ম-রণক্ষপ বিধি ও নিষেধের অনুগত কিক্ষর ॥ ৫॥

ব্রাক্ষণাদি সকল বর্ণের এবং গৃহিপ্রভৃতি সম্দায় আঞ্র-

নিত্যত্তেহপ্যদা নির্ণীত্যেকাদশ্যাদিবৎ ফণং॥

একাদশেতু বাক্তমেবে!কেং।

মুখবাত্ত্রুকপাদেভাঃ পুরুষদ্যাশ্রেমিঃ দৃহ।
চত্তারো জজিরে বর্ণা গুলৈবিপ্রাদয়ঃ পৃথক্॥

য এষাঃ পুরুষং সাক্ষাদাত্মপ্রভবনীশ্বরং।
ন ভজন্তাবজানন্তি স্থানাদ্রুকীঃ পতন্তাধাং॥ ৬॥
এবং ক্রিয়াযোগপথেঃ পুমান্ বৈদিকতান্তিকৈঃ।

ইতি শক্ষেন পূর্ব্য প্রকরণদা তেতুভায়াং যোগোন। ক্রতম্থায়া এতদ্যা কারি। কায়া উপদংহার বাকাতা প্রাধেস্তংপ্রকরণান্ত এব যোগ্য হাং ॥ ৮॥

তুৎফলমুলাহরমর্জনমুপলকা। তথ্যমিতি। তথ্তাং। অকাম: সর্বকামো বা

মের পক্ষেই এই বিধি নিত্য, এবং নিত্যু হইলেও একাদশী-ব্ৰতাদির ন্যায় শাস্ত্রে ইহার ফল নির্ণী ক∶হট্যাছে॥

এই বিষয়টি একাদশ ক্ষ:স্ক ৫ অধ্যায়ে। ১।২ শ্লোকে স্পান্টরূপে বর্নিত হইয়াছে॥

চমদ কহিলেন হে রাজন্! পরম পুরুষের মুখ, বাস্ত্, উরু ও চরণ হইতে, সভাদি গুণবারা চারিটী আশ্রমের সহিত ব্রাহ্মণ, ক্রিয়, বৈশ্য এবং-শুদ্র ক্রমে জন্ম গ্রহণ করিয়াছে, উহাদের দকলের ধ্যাই পৃথক্ পৃথক্। কিন্তু যাহারা আপনার উহপত্তির কারণ দেই পুরুষের ভজনা না করে অথবা তাঁহাকে ঈশ্র জানিয়াও তাঁহার প্রতি অবজ্যা প্রকাশ করে, তাহারা বর্ণ ও আশ্রম হইতে ভ্রাই হইয়া অধ্পত্তিত হয়॥ ৬॥

এই বিষয়ের ফল একাদশস্কন্ধে ৫ অধ্যায়ে। ২ স্লোকে বলিগাছেন যথা।

জ্ঞিক কহিলেন, হে উদ্ধা! এই প্রকারে যে পুরুষ

অর্চন্ত্র সিদ্ধিং মতে। বিন্দত্যভীপ্সিতাং ॥৭॥ পঞ্চরাত্রে চ ।

স্থারর্ষে বিহিতা শাস্ত্রে হরিমুদ্দিশ্য যা ক্রিয়া। সৈব ভক্তিরিতি থোক্তা তগ্না ভক্তিঃ পরা ভবেদিতি ॥ ৮ তত্রাধিকারী ॥

যঃ কেনাপ্যতিভাগ্যেন জাতশ্রদ্ধোহ্য্য সেবনে। নাতিশক্তো ন বৈরাগ্যভাগদ্যামধিকার্য্যমো॥ ৯॥

সোক্ষাম উদারনী:। তীরের ভিক্রিটেরন মজেত পুরুষং পর মিত্যাদে:॥ ৭॥
সামস্তোন দর্শানন্ গ্রমক্লমাহ প্রেক্তি। সৈবভক্তিরিতাক বৈধীতি গ্নাং
ভংশেক্রণ পঠিতহাং॥ ৮॥

অভিভাগোন মহংসঙ্গাদিজাত্ম কার্বিশেষেণ। ১।

বৈদিক অগণা তাল্লিক ক্রিয়াগোগ অবলন্দন করিয়া আফার অর্চনা করেন তিনি ইছ লোকে ও পর লোকে আমা হইতেই অভিলয়িত সিদ্ধি লাভ করিয়া থাকেন। ৭।।

### পঞ্চাত্তে মুগা

কেনেবর্ষ। হরিকে উদ্দেশ করিয়া শাস্ত্রে যে ক্রিয়া বিহিত হইয়াছে, সাধুগণ তাহাকেই বৈধীভক্তি বলেন, এই বৈধীভক্তি যাজন করিতে করিতে প্রেমভক্তি লাভ হয়॥৮॥ ভক্তিবিষয়ে অধিকারী যথা

মহংসঙ্গাদি-জনিত সংস্কার বিশেষধার। যাঁহার জ্রীকৃষ্ণ-সেবনে শ্রদ্ধা জন্মিরাছে, এবং, যিনি কর্মে অভিশার আসক্ত বা গ্রেরাবান্হন নাই, তিনিই ভক্তিবিষয়ে অধিকারী ॥ ১॥

## ·यदेशकानस्य ।

যদৃদ্যা মংকথানে জাতপ্রান্ত ধুমান্। ন নির্দ্রিঃ নাতিগজে। ভক্তিয়োগোইন্য সিদ্ধিদঃ ॥ ইতি॥ উত্তলো ন্যামশ্চ ম্যাৎ ক্ষিতিদেচ্তি স্বাজিধা ॥ ১০॥

### তে তেতিয়া

শালে র্ভেণ্ড নিল্পঃ সালিখা দুচ্নিশ্চয়ঃ।

াষর্জ্যোত ভদের জ বির্ভি স্থা ভগাতা আত্তালো মংকথাস নির্বিধঃ
স্থাক এছ ৷ বেরজ্যার কান্ তামান্ গরিতনগৈরগানী ধরঃ। ততে ভজেত
নাং প্রীত প্রতিবিজ্যার কান্ কামান্ ক্থেনিকাংশ গছরিব রিজি। অর তত্তীভ ভাষরজানার ভেতেগান ভিজাত স্বতঃ প্রক্ষাদন্দ নির্বিধিধা নতু জানাগিবং স্মান্ধ্রাগানিমাধিধান ক্মানির্বোপশাজ্ত ভাষ্ট্রেরির ভিজাতার ভিজামেনাবভাগার প্রতিষ্ঠিশা। কিন্ত আ্লারামাশ্চন্দ্র ভাগানে তুলি ভিজাত প্রস্থারামাশ্চন্দ্র ভাগানে তুলি ভাগানে তুলি ভাগানে তুলি ভাগানিক ভাগানিকা

পুর্ব শ্রেম শাস্তেন্ত্র পুরু উবিভাক্তরাক্ষাম্থ্রিধাস এব সা**দিকারং** 

### এক সিত্র ত্র স্বাধি ৮ জোকে যথ। ॥

উচ্চিত কৰিলেন, তে উদ্ধা ! সোভাগ্যশতঃ **আমার** কথায় চে আজি অজাবান্ হইয়াছে ও কথায়া**ত্তি বৈরাগ্যুক্ত** বা কথায়ে আনক্ত ২খ নাষ, ভাহার সম্মেই ভ**ক্তিযোগ সিদ্ধি** এদান করেন ॥

উত্তন মধ্যম ও কনিতি ওছিল অধিকারী তিনপ্রকার॥ ১০ তন্মধ্যে উত্তম অধিকারী ম্থা॥

বিনি শাস্ত্রে এবং শাস্ত্র।তুগত বুক্তি বিষয়ে বিশেষ নিপুণ, তত্ত্বিচার, সাধনবিচার এবং পুরুষার্থ বিচারদার। জীকৃষ্ট

প্রোঢ়প্রদ্ধে হিধকারী যং সভকাবুত্তমে। মতঃ ॥ ১১॥ মধ্যমঃ।

यः শাস্ত্রাদিম্বনিপুণঃ শ্রহ্ধাবান্ স তু মধ্যমঃ ॥ ১২ ॥

লকং অতঃ শ্রদ্ধাশকন্তর প্রযুক্তঃ তত্মাচ্চান্তার্থবিশাদ এব শ্রদ্ধেতি লক্তে শ্রদ্ধা ভারতমান শ্রদ্ধাবতাং তারতমানাহ শাস্ত্র ইতি ঘাডাাং। নিপুণঃ প্রবীশঃ সর্ক্রণেত্তি ভত্মবিচারেল সাধনবিচারেল চ দৃঢ়নিশ্চয় ইতার্থঃ। যুক্তিশ্চাত্র শাস্ত্রান্তিব জ্রো। যুক্তিস্ত কেবলা নৈবেতি সুক্তেঃ সাত্রানিষেধাৎ শ্রুতস্ত্র শক্তি মুল্লাদিতি নাাামাং। পুর্বাপরাজ্রোধেন কোদহর্থোহ্তিমতো ভবেৎ। ইত্যাদ্যমুহ্নং ভর্কঃশুক্ষতর্কয় বর্জয়েদিতি বৈক্ষণভন্নাচ্চ। এবস্তুতো যঃ প্রোচ্শেশ্বীভাগিঃ॥ ১১॥

অনিপূণ ইতি নিপুণসদৃশ: বলবদাধে দত্তে সতি সমাধাত্মসমর্থ ইতার্থ:। তথাপি শ্রদাবান্ মনসি কুট্নিশ্চয় এবেতার্থ:॥ ১২॥

একমাত্র উপাদ্য ও প্রীতির বিষয় এইরূপ যাঁহার নিশ্চয় দৃঢ়-তর এবং প্রদ্ধা প্রগাঢ় হইয়াছে, তিনিই ভক্তি বিষয়ে উত্তমা ধিকারী॥ ১১॥

### মণ্যোধিকারী যথা ॥

যিনি শাস্তাদিতে অনিপুণ, কিন্তু শ্রদাবান্, তিনি ভক্তি বিষয়ে মধ্যম অধিকারী॥

তাৎপর্য। অনিপুণ শব্দে নিপুণসদৃশ, কারণ, শাস্ত্রবিচারে বলবকী বাধা প্রদত্ত হইলে সমাধান করিতে অসমর্থ
কিন্তু প্রদাবান্ অর্থাৎ মনোমধ্যে উপাদ্যদেবের প্রতি দৃঢ়তর
নিশ্চয় রহিয়াছে এ নিমিত্ত তাহাকে মধ্যমাধিকারী বলে ॥১২॥

দিতে অভিমান এবং বিষয়ে চিত্তের বিকেপ শুন্য হওয়াতে একার ভক্তির দিদ্ধ হইল, অন্যের ইইতে পারে না। এই স্থলে দিদ্ধান্ত এই যে, জং-পদার্থ জ্ঞানবারাও জ্ঞানীশ্রেষ্ঠ হইতে পারেন, কিন্তু হং-পদার্থ জ্ঞানানন্তর ঘাঁথালিলের **অভেদ** জ্ঞান জন্মিয়াছে, দেই দকল ঐক্য আন-ওরুদিগেরও ভগবৎ-প্রদাদে বিশুদ্ধ ভাজি ছইয়া থাকে । যথা তৃতীয়স্ককে, (সই জ্রবিক্ষনখন ভগবানের চরপারবি ক্রের কিঞ্জক্ষ ( কেশর) সকল তুলদী মকরনের গভিত মিলিত হইয়াছিল, বায়ু তাহা গ্রহণপূর্ত্তিক ব্রহাণেলদেবিগনকালি চতুলেনের নাসারস্ক্রে প্রবিষ্ট ছইয়া ভাগদিগের হৃদ্য হর্ষিত ও পুলকিত করে. অৰ্ত্ৰৰ এই অভিপ্ৰায়েই সনক্ষনন্দপ্ৰভৃতি আত্ম কন্ত্ৰজ্ঞদিগের নাম কার্ত্তন করিখাছেন এবং বিশুদ্ধভক্তির উৎকর্ষ প্রদর্শনই উক্ত উদাহরণের উদ্দেশ্য গীতোক্ত চতুর্বিধ উদাহরণ**ই শুদ্ধ**-ভজনে পর্যাব্দিত স্ট্থাছে, ইহাই গ্রহ্কারের ভভিপ্রায়। বেহেছু আর্ত্তবাক্তি স্বীর পীড়ার উপশ্যের নিমিত্ত **এগবান্তে** আরণ কবে, কিন্তু ভাগার যদি জ্ব্যান্তরীয় ভাতিবাদনা হেতু সংস্থাদির প পুরুত বিদ্যান থাকে, তাহা ইইলে সেই ব্যক্তির হরিভঙ্গনে প্রবৃত্তি হয়। যেমন গজেন্দ্র কুন্তীর দংশনে শীড়িত হুইয়া হরিকে সারণ করায়, জন্মান্তরীয় সঞ্জি নিব-ন্ধন হ'রর অক্সপ্রহ ভাজন ইইয়া বিশুদ্ধভাক্তর অধিকারী হই-যাছে, এইরূপ শৌনকাদি প্রায় ভদ্বজিন্তান্ত ইয়া পুণ্যপুঞ হেতু ভগবানের ভজনে গণিকানী হড়েন। প্রব অর্থার্থী হইয়া ভুক্তিমুক্তিস্পৃহ। যাবৎ পিশাচীক্ত দিবর্ত্ত । তাবদ্ধক্তিত্বখন্যাত্র কথ্যভুদ্দে। ভবেং ॥ ১৫॥ ততাপি চ বিশেষেণ গড়িমণ্ডমনিজ্জভঃ।

ভকাপি মুক্তাছাবহিতারা ভরেনবৈশিপ্তগাহ তত্রালীতি। অগ্নীং মোক লক্ষণাং। ভক্তিঃ শ্রণাদিলকণা হাত্যাগ্রদাংকৃতং মনঃ প্রাণানেচক্রিয়ানি

ভগবদ্ভানে প্রার হইলে জ্যাতিরায় পুণ্পেল্ল নিবন্ধন নার-দের কুপায় হরিভক্ত এইধাছেন ॥ ১৪॥

যে মানব ভক্তি সুখের খনিলাগ করিবেন, ভাছাকে জান্যান্ত বিষয়স্থের আশা একেবারেই জ্যাগ করিতে হইবে, কারণ, যত দিন ভুক্তি মুক্তি স্পৃথারূপ পিশাচী-হৃদ্ধে বর্ত্তমান থাকিবে ভাবৎ প্রয়ন্ত কিরুপে গেই হৃদ্ধে ভাক্ত সুখের অভ্যুদ্ধ হইবে ?॥ ১৫॥

কিন্তু বাঁহারা নোক্ষ লক্ষণরূপ গতিকে লযু জ্ঞান করিয়া তাহাতে বিশেষ অনিচ্ছা প্রদর্শন করেন, প্রবণ কীর্ত্তনাদিরূপ ভক্তি প্রেম্বারা তাঁহাদিগের মনঃ ও প্রাণ হরণ করিয়া

### क निर्मः ॥

যো ভবেৎ কোমলপ্রাক্ষণ কনিছো নিগদাকে ॥ ১৩॥ তত্র গীতাদিয়কানাং চতুর্ণামধিকারিণাং।

ু যোভবেদিভাতাপি শাল্লাদিবনিপুণ ইভায়বর্জনীয়ং। শ্রহ্মানত্যা শাল্লার্থ-বিখাসরপতার। ত তশ্চাতানিপুণ ইতি যং কি কিরিপুণই তার্থঃ। কোমল্রশ্রন্ধ मंखिएका श्रांत्र (छन् भकाः॥ ५०॥

লীভগদনীভাম যে চতুর্বিধা অধিকারিন উক্তান্তেংপি গুরভক্তিত: পুর্বা-বন্ধা এবেতাহি তত্ত্তি। তণ্ড যশ্মিলিতি সাইতি চামানোলোকেঃ যশ্মিন্ याचान म म छे छ। याः । त्योनकां विर्णाण हुए सनः मनका विः । शौ छ। वां का त्यापा চ তুর্মিধা ভল্পতে মাং জনাঃ স্থক্তিনোংর্জন ৷ আর্তো জিল্পাস্থ রর্থাপী আনীচ ভুরুতর্যত। তেয়াং জ্ঞানী নিতাযুক্ত একভক্তিবিশিষতে প্রিয়োধি জ্ঞানিনো-

যিনি শাস্ত্র ও শাস্ত্রাসুগত যুক্তি বিষয়ে অনিপুণ এবং কোমল শ্রেদাবান অর্থাৎ শাস্ত্র বা যুক্তিদারা ঘাহার বিশাস খলন করিতে পারা যায়, তাহাকে ভক্তিবিষয়ে কনিষ্ঠাধিকারি জানিতে হইবে ॥ ১৩॥

যদিও শীভগৰদাী হাদি শাস্ত্রে আর্ত্ত, তত্ত্তিজ্ঞান্ত, অর্থ-কামী এবং জ্ঞানী এই চারি প্রকার অধিকারী বলিগা নিরূপিত হুইয়াছে, তথাপি ইহাদিগের মধ্যে যাহার প্রতি শ্রীকুষ্ণের বা <u> এক্ষের প্রিয়জনের কুপা হয় তাহার তত্ত্বাবক্ষাণ হণ্যাতে</u> দে শুদ্ধভক্তির অধিকারী হয়, যেমন গজেন্দ্র শৌনকাদি, ধ্রুব ও সনকাদি চতুঃদন॥

তাৎপর্য্য। ভগবদগী হায় ৭ अধ্যায়ে একুম কহিলেন ছে অৰ্জ্বন! সূক্তিশালী পুরুদেরাই আমাকে ভল্পনা করিয়া থাকেন কিন্তু পৃশিক্ত পুণ্যের তারতম্য হৈতু তাঁহারা চারি

### মধ্যে যন্মিন্ ভগৰতঃ কুপা স্যাতৎ প্রিয়স্য বা॥

**হতার্থমহং দ চ মম প্রিয়:**। উদারাঃ দাপ এবৈতে জ্ঞানী হাজ্যৈর মে মতং। আছিত: সহি যক্তাত্মা মামেবাফুডুমাং গতিং। বহুনাং জনানামথে জ্ঞানবান্মাং প্রাপদাতে। বাহ্নদেব: সর্ক্ষমিতি স মহাথা স্কুল্ভি:। কামৈত্তৈ হৃতিভানা: প্রাপদান্তেহনাদেবতা ইত্যাদি। খন জ্ঞানী আত্মবিদিতি টীকাকারাং। তথে-· खगदगा कार्यक्ष वाध्या ठ० यः छानित्न। (प्रशास जिस्ताना कार्यन हिन्दिन था-ভাবান্তি হাযুক্ত হমেকা স্কু ভক্তি হঞ্চ মংভবা ড নানায়েছিল। আহচেদং প্রতিপদাতে ভাদৃশবং তথা বংপদার্থজানেহপি সন্তবতীভাগেরাং ভল্জানী। তাইং পদার্থ-জ্ঞানানস্তরভাবৈকাজ্ঞানি গুল্মাগপি জ্ঞান্তবংপ্রসাদাত্ত্ব একি প্রেশো দৃশ্যতে, যথা তভীয়ে। তদ্যারবিদ্নাল্যা প্রবিদ্য কিওল্ডিছিল্সীমকর্দ্বায়ুঃ। **অন্তর্গতঃ স্ববিধ্**রেশ চৰার ভেষাং সংজ্ঞাভিষক্ষরজ্ব।ম্পিচিড্ডতক্ষোরিতি। **ওঁলে ওদভিপ্রেডাাছ ম চ চ্ছঃমন ইতি** ভ্রেবং গুল্লভ্রেকংকর্ষ্বাগ্র্**নার্থমেট্র্য** উদাহত:। নতু বৈধাংশেহ'গ রাগগাগুছাৎ তফাঞ্ছব জ্ঞান্তাৰ, অভএব শাল্পামনাতীত হাচচ। বৈধাদাহরণত তাদশশক্তানিধ ভেরং। তথারন্তত এব শুদ্ধত জাখানে প্রশাসপ্রদাহরবং দুরিবং। বগা পুর্বহ্বাতি শ্রীনারদ এব। শ্রীগীতাদিষ্প রাজ্বিদ্যাল গুইণ্গায়াপানীদৃশ এবাদিকারী দর্শিত:। ভদে-ভদ্গীতোদাহরণক তন্ম গ্রুমারেণাপি জনভল্লে প্রাব্যাতীতি গ্রন্থকান্ত্রিপি

শ্রেণীতে বিভক্ত হয়েন। যথা পাড়িত, ভত্তাজ্ঞাস্থ্য, অর্থাভিলামী ও জানী। হে ভরণজোঠা এই চতুর্নিধ ভক্তের
মধ্যে জানী সকাপেক্ষা প্রধান, যেগেডু তিনি সকাদা আমাতে
আসক্ত এবং অসার মংগার মধ্যে আমাকেই মার জানিয়া
কৈবল আমাতেই অচলা ভাক্তি করিয়া থাকেন, এই কারণে
জ্ঞানির আমিই অতিশয় প্রিয় এবং তিনিও আমার প্রিয়ত্র।
পরস্ত ইহারা সকলেই উদারস্থভাব, বিশেষতঃ আমি আত্ম-

# म की गंड उद्याः महाक्ष्यका विकास वान् ।

দর্শিতং। প্রীবৈঞ্বানাং মতে তু স্তরামেবেতি তল্লোট্টকিত: ব**ন্ততম্ভ তত্ত্ব** হি জ্ঞানিশক্ষেন ভগবজ্জানোবোচাতে । পূর্বং হি । জ্ঞানং তেখহং সবিজ্ঞানমিশং ব্যনামাশেষত ইত্যুক্তা তথা চ জ্ঞান্যা মনুষ্ন্ৰাং সহস্ৰেখিতগ দিনা আছু-জান্দিকেরপি হলভিত্মুক্র অসাচ ভূমিরাণইভাদিনা প্রধানাধালী বাধান শভিষয়করিবকে স্থানিন্পর্যকারব্রম্কা অত্তব সর্বলেটছং স্বা**ল্ল** - ক্লোক্তং স্কাশ্রমতেহিণ পুলো গল ইত্যাদে পুণাদিশকানাং যুগা যোগং স্থাত্ত বেজিন্যা প্রাপ্তা দেবিপা স্থা যে সর্প্রে গুণাজ্যোমতি ওছোনামণি স্থাডেদ-निर्दिर्गन च खगछितिमयय मर्गिया माकार च खगानास देकमू छ। स्वानी छमान-ত্ত 🗢। তণ্চ। যে 5ৈব সাহিকা ভাবা রাজ্যান্তাম্যাশ্চ যে। স্তু এবেডি তান বিদ্ধি নবহং দেশু তে স্থীতানেন মায়াগুণাম্পু ইগুণবং দর্শিতং। তদেবং ভেদেংপি শক্ষে বৃত্ওলত বহুনাং জন্মনামিত্যাদৌ বাহুদেবঃ স্থমিতি জ্ঞানবান্ মাং প্রাণরত ইং র প্রতিপালে যদভেদ ইব ক্রতে ভংগলু সুর্গভল্পাাদিবং বাহ্নবোং দর্মং ন ভিন্নং দর্মগ্রাত্ত বাহুদেবো ভিন্নইতোৰ স**লহতে।** যথোকেং ঐভাগনতে ব্ৰহ্মণ।। মোহয়ং তেহভিহ্ হস্তাত ভগবান্ ভূ হজাবন:। সমাদেন ভবেন বিবাদনাস্থাৎ স্বস্ত ধ্বিতি। তবৈব প্রীভগবতা প্রোক্তং। বে হৈব মাৰিকা ভাষা ইত্যাদি। শ্ৰীমনজ্জুনেন তু দৰ্মং সমাপ্লোষি তভোংসি সর্ব ইভোব বক্ষাতে। স্থানের চৈবজুভজ্ঞানবান্ যা স্মাং প্রপদাতে ইভি আভি-পতিবেৰ পোলা বতো বাহুদেৰঃ দৰ্জনিতি মায়াগুণাতীতৰাহাভদ্মান ভ্ৰহা-

জ্ঞানিকে আমার আজ্পররণ জ্ঞান করিয়া থাকি, যেহেতু তিনি সকল হউতে উত্তম গতিপরূপ আমাকে আজার করিয়া আমা ভিন্ন অন্য কোন ফলের আশা করেন না। বহু জন্মের পর জ্ঞানবান্ব্যক্তি স্থাবর জ্পুসাত্মক সমুদায় জ্পুৎকে বাস্থ-

## যথেভঃ শৌনকাদিশ্চ ধ্রুবঃ স চ চতুঃসনঃ ॥ ১৪ ॥

জ্বালয়তঃ সোহহমিতি স জ্ঞানমেব নির্দিশন স্বস্য ভজনমেব নিশ্চিকায়। অথ **हर्जिक्स हेन्छा**नि निर्मिण शास्त्र अधान शक्त की बरझा क्यांनर यह शर्या शिर्द्ध निर्देश कर অত আহ: আর্ত ইত্যাদি। পদানোং চায়মেবার্থ:। আর্ত্তো ছঃথহানেচছু:। অবাণী অথপাণ্ডীচ্চ: সচ সচ দিবিধ: পরিচ্ছিলাপরিচ্ছিলবদৃষ্টিভেদেন অপরি ক্তিরদৃষ্টিশ্চেৎ ভত্তদর্থ কন্চিত্রত্বজিজাহারপি ভবতি। বাতিক্রমেণোকিরার্টি-ছামেছান শ্বরমেব চ জিজ্ঞাসা জায়ত ইতি। জ্ঞানী পুর্ব্বোক্ত থকারক শাক্ कानियान्। স চ ত্রিবিধ: তাদুলৈম্ব্যাগাধ্বা তত্ত্বিশ্রহজানভেদেন ৮ স্কুক্তং ভক্তিবাসনাহেত্ মহৎসঙ্গাদিমরং বিদ্যুতে যেষাং তে। তত্তাদোষু তিযু স্থান্ত স্য সন্দেহ ইতি যদি মুক্তিনত্তে তদা ভজন্ত ইতার্থ:। চতুর্থে তু নিশ্চয়: যতোহসৌ স্কৃতি ঘাজ্ঞানস্তলে। ভত্তত এবেতার্থঃ দেয়াং মধ্যে সূত্রব পুর্ব্বোক্তম্ত্র জ্ঞান্যেবান্যাভিলাযিতায়া মতান্তর প্রসিদ্ধতত্তং প্রাথিক্যভাবনারূপজ্ঞানস্য স্ভিপ্রসিদ্ধবর্ণাশ্রমধর্ম্মনা (চাপেক্য়া কেবলং মাং ভজনুত্মক্তবানামাভাস্ত-প্রিয়ন্ত্রা চাহমভান্তপ্রিয় ইতি সংহতৃক্মাহ তেবামিতাাদি দ্বেন ন্যার্জাদি-ত্রমান্তে কা নিষ্ঠা স্যাৎ ওতাহ বহুনামিতি। স্কৃতিন ইতাত্র জ্ঞাপিতং স্থ-क्र छविटमघः विनाषत्मा मः मत्रश्री गार कार्रमित्र गानि । उत्पाद्धः पृक्तिभव्यस्य ভক্তানামিতি ভগবংপ্রতিক্তৈব নির্ণেধা ॥ ১৪ ॥

দেব্ময় দেখিয়া থাকেন এবং এই প্রকার দর্শতি আত্ম-দৃষ্টি
নিবদ্ধন কেবল আমাকেই ভজনা করেন, অতএব এতাদৃশ
ভক্ত অভিশয় হল্লভি, কিন্তু বিবিধ বাদনাতে যাহাদের জ্ঞান
আছত হইয়াছে, তাহারাই অন্যান্য ক্ষুদ্র দেবতার উপাদনা
করে। এই ছলে জ্ঞানিশব্দে আত্মতত্ত্ত, অতএব জ্ঞানাই
ভিজন, ইহাই ব্যাথ্যা করা হইল, কারণ, জ্ঞানিদিগের দেহা-

ভক্তির্তমনঃপ্রাণান প্রেম্না তান্ কুরুতে জনান্ ॥ ১৬ ॥ তথাচ ততীগ্ৰহদে।

তৈদ শ্লী গাব্য বৈক্লার-বিলাদহাদেকিতবামনুকৈ:। সভাগ্ৰনো সভপ্ৰাণাংশচভক্তি-রনিচ্চতো মে গতিমণীং প্রযুজ্জে ইভি॥ - শ্রীকৃষ্ণচরণাম্ভোজদেবানির ১চে ১ সাং।

শেষাং তথীভূতান প্রেমদারা কুরুতে ॥ ১৬॥

এতৎ প্রমাণয়তি তৈরিতি। দশনীবাবয়বাদার ভবজাতপ্রেমন্বারে তেতার্থ:। প্রযু**্তে** কুরুতে। তদেবমক্লেশপ্রাপ্তথাখ্যাতং। ব্যাথ্যান্তরেহপি অম্বীং স্কুমাং ছক্তে য়াং পাৰ্যনলকণামিতোৰ।র্থঃ। প্রকরণপ্রাপ্তত্বাং। শ্রিয়ং ভাগবতীঞাপ্রহয়ন্তি ভদ্রাং পরদ্য মে তে২শ্বতে হি লোকে ইতি বক্ষ্যমাণাৎ তদ্যা অপ্যানিচ্ছা দৈন্যে নৈবেতি ভাবঃ। একাস্মতাং ব্ৰহ্মদাযুজ্যং ভগবং সাযুজ্যমধি॥

पारकन ॥ ১৬॥

এই বিষয় তৃতীয়ক্ষদ্ধে ২৫ অ। ৩৩ শ্লোকে वर्षिक चाट्य गथा।

कि शिलारित के हिल्ला, या ! शामात मूर्तिमम्रहत म्भरनदानि অবয়ব অভিশয় মনোহর, এত্রিবন্ধন তাঁহাবের বিলাদ, হাদ্য, कठीक अवः मरनाइत वहन शतन्त्रताध याशिक्रिता मन उ आण হৃত হইয়াছে ভাহাদিগের কোন পুরুষার্থ বিষয়ে অভিলাষ না থাকিলেও মৰিষ্যিণী ভক্তি তাখাদগকে পার্ষদম্বরূপ। গভি क्षमान कतिया थारकन ॥

वञ्च डः जीकुक्छ त्रवात्रवित्मत (मवादात्रा याहास्त्र हिड

থা থা ও তৈবে শ্রীনত্ব বাক্তো।

বেশ স্থা ও তৈবে শ্রীনত্ব বাক্তো।

কো স্থা ও তৈবে শ্রীনত্ব বাক্তো।

কো স্থান তে পাদসরোজভাজাং

স্থল ভাই থেব তুর্ম পীহ।

তথাপি নাহং প্রব্যোমি ভুমন্
ভবৎপদাস্তোজনিষেবনোৎ স্কঃ॥

তিত্রব শ্রীক পিলদেবোক্তো।

নৈকাত্মতাং মে স্পৃহয়ন্তি কেচিস্থাৎপাদসেবাভিরভা সদীহাঃ।

আনন্দরদে পরিপ্লুত হইয়াছে, দেই দকল ভক্তজনের মোক্ষ-লাভ-নিমিত্ত কথনই স্পৃহা হয় না॥

৩ স্বন্ধে ১৫ শ্লোকে উদ্ধবের উক্তিতে যথা।

উদ্ধব কহিলেন, হে ঈশ! যাঁহারা ভোমার পাদপদ্মের দেবা করেন, ভাঁহাদের ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক্ষ রূপ পুরু-ষার্থ চতুষ্টার মধ্যে কোন্ পুরুষার্থ জ্ল ভ! অর্থাৎ ভাঁহারা সকলই প্রাপ্ত হইতে পারেন, কিন্তু হে নাথ! এইরূপ হইলেও আমি দে, সকল অভিলাষ করিনা, আমার চিত্ত কেবল ভোমার চরণারবিন্দ নিষেবণার্থই সমুৎস্কুক হইয়াছে ॥

তৃতীয়ক্ষক্ষে ২৫ আ। ০১ শ্লোকে কপিলদেবের উক্তি ধথা। কিপিলদেব কহিলেন, মাতঃ! বাঁহাদিগের হৃদয় আমার চরণদেবন ভিন্ন আন্ত কোন বিষয়ে অসুরক্ত নহে, আমার সম্ভোষার্থ বাঁহারা সমস্ত ক্রিয়ার অসুষ্ঠান করেন, বিশেষভঃ

যেহন্যোন্যভো ভাগবভাঃ প্রসহ্য সভাজয়তে মুম পৌক্ষাণি ॥ সংলোক্যসাষ্টি দানীপ্যসারূপ্যক হমপ্রত। मोग्रमानः न गृङ्खि विना मर्टमवनः कनाः ॥ >१॥ **हर्ज्य शिक्षर**गरकी ॥ যা নির্ভিস্তমুভ্তাং তব পাদণদ্ম-धार्मिष्यण्डनकथा अवर्णन वा मारि।

माष्ट्रिः मगदिनश्र्याः॥ ১१॥ ল্লমহিম্নি তঃ অসাধারণো মহিমা যদ্য ত্রিম্নপি অন্তক্ষ্যাদিন। কালেন

বাঁহারা পরস্পার মিলিত হইয়া আমার পৌরুষ সকল কীর্ত্তন করিতে অতিশয় আমে!দিত হইয়া থাকেন, সেই দকল ভাগ-বত আমার একাত্মতাও অভিশাষ করেন না, অধিক কি বলিব তাঁহ।দিগকে সালোক্য, স।ষ্টি (স্থান ঐখর্যা,) সামীপ্য, মারূপ্য ও একছ রূপ অপবর্গ প্রদান করিলেও তাহা গ্রহণ करत्रम मा, (कवल कामात (मवनरक हे शत्रम शूक्रवार्थ बिलग्रा ख्यांन करत्रन ॥ ३१ ॥

চতুর্থক্ষক্ষে ৯ অ । ১০ শ্লোকে ধ্রুবের উক্তিতে ॥

ধ্রুব স্তব করিয়। ভগবান্কে করিলেন, :(হ নাথ। ভোমার পাদপদ্ম ধ্যান অথবা তোমার ভক্তজনের কথা তাবণ করিয়া **८** महाधातिमिर्गत ८ । चानमना इ.स. खादा स्वरः चानमस्त ত্ৰহ্ম সাক্ষাৎকারেও প্রাপ্ত হওয়া যায় না. কিন্তু ঘাহার কিন্তং- সা ত্রন্ধণি স্বয়হিমন্যপি নাথ মার্ড্র কিম্বস্তকাদিলুলিতাং পততাং বিমানার ॥ ১৮॥ তত্তিব শ্রীমদাদিরাজোক্তৌ॥

ন কাময়ে নাথ তদপ্যহং কচি-ল যত্ত্ব যুশ্মৰ্চরণাম্বজাদবঃ। মহত্তমান্তহ্ব দিয়ান্মুগচুক্তো বিধৎস্ব কণিযুদ্ধেষ মে বরঃ॥ ১৯॥

লুলিতাৎ বিমানাৎ পততাং নাস্তীতি কিমুত বক্তবাং॥ ১৮॥

তদপি কৈবলামপি যত্র ভবংপাদান্তোজমকরদে। যশঃস্রবণাদিস্থংন্তি। তহি কিং কাময়দে তত্রাহ্ যশঃশ্রবণায় কণামাময্তং বিধৎস্ব এয় মে বরঃ॥ ১৯॥

কিয়ৎকাল স্বৰ্গ ভোগ করিলা পুন্যাবসানে অন্তক্ষে **এড়গ** ছিল বিমান চইতে অধঃপড়িত হইতেছে, তাহাদিণের ভাগ্যে এ সুথ নাট, ইহাও কি বলিতে হইবে ?॥১৮॥

চতুর্পক্ষে ২০ আ। ২১ লোকে আ'দরাজ পুগুরউক্তি যথা।।
পুথু কহিলেন, নাগ! যদাপি নোক্ষপদেও মহন্তমদিগের
হৃদয়াভাতর ১ইতে বদনজারা বিনিগতি তোমার চরণারবিদ্দের
মকরন্দ পান করিবার আশা না থ'কে অগাং তোমার যশাংভাবণাদি জনিত সুথলাভের সম্ভাবনা না হয়, তাহা হইলে
আমি সোক্ষও প্রার্থনা করি না, আমার প্রার্থনা এই যে যদ্ধারা
হৃদয় পুর্গ করিয়া ভোমারে যশাং প্রবন্ধ করিতে পারি, ভঙ্গনিত্ত
আমাকে দশ সহস্র কর্প প্রদান কর, প্রভো! ইহাই আনার
বর ঃ ১৯॥

# **न्स के २ नरक्षात्र है। "अक्रिक्तावृक्षात्रक्रा**

পঞ্চ শ্রী শুকো জৌ।
বা হান্ত ক্লোক তিহুত মঞ্জনার্থদারান্
প্রার্থাং শ্রিয়ং হারবরৈ: সদ্যাবলোকাং।
নৈচ্ছন্ পন্ত হুচিতং মহতাং মধুদিট্-সেবাহুর ক্রমন্দানভবোহ পি ফ্রাঃ॥
মতে শ্রীর্ত্রেকো।
নুনাকপৃষ্ঠং নুচ পার্মেষ্ঠাং ক্ল

ুণ আর্যভেরে ভরতঃ। নাকপুটং জবপদং <mark>দার্কভৌমং শ্রীপ্রেয়ব্রতাদীনামিব</mark> মহারাজ্যং। ব্যাধিণতাং প্রালাদিদাম্যং <mark>অপুনর্ভবং মোক্ষমপি হা ছাং বিরহ্যা</mark> তঃকুণ। অত্র নাকপুটাদিচভূষিয়্যাা<del>হুক্রমণ্ড ন্যাহবিবক্ষয়া। তত্তেভাতেরাত্র</del>ং

পঞ্চমক দ্ব ১৪ হা। ৪০ শ্লোকে শুকলেবের উক্তিয়ণা।।
শুকলেব কহিলেন, রাজন্! মহাত্মা ভরত শ্রীকৃষ্ণচরণারবিশেদ একান্ত অন্তরক্ত ছিলেন, এই নিমিত্ত তিনি তুন্তার ধরাম এল, পুত্র, স্বজন, গন ও কলত্রপ্রভৃতি অনাগ়াদেই পরিভাগে করিগ়াছিলেন, পরন্ত দেবোভ্যদিগের প্রার্থনীয়া রাজ্যলক্ষ্মী তাঁহার প্রতি সদ্য় দৃষ্টিপাত করিলেও তিনি কথন 
তাঁহার প্রতি সভ্যাও নেত্র নিক্ষেপ করেন নাই, এইরূপ ব্যবহার ভরতের উপযুক্তই হইয়াছে, কারণ যে সকল মহভের
চিত্ত সধুসূদনের সেবাগ় একান্ত অনুরক্ত, তাঁহারা মোক্ষকেও
ভৃত্যান করিগা পাকেন॥

. ষষ্ঠক্ষে ১১ আ। ২০ জোকে র্ভা**ক্ষের উল্ভি বর্ণা।**মহেরবিফাং, ইতি পাঠারর:॥

ন যোগসিদ্ধীরপুনর্ভবং বা

শমঞ্জদ স্থা বিরহ্য্য কাজেদ ॥

তত্ত্বৈ শ্রীক্রেডোক্রেণ ॥

নারায়ণপর'ঃ দর্বে ন কুতশ্চন বিভ্যতি।

স্বর্গাপবর্গনরকেম্বণি তুল্যার্থদর্শিনঃ ॥

তত্ত্বেব ইন্দ্রোক্রেণ ॥

স্থারাধনং ভগবত সহমান। নিরাশিয়ঃ।

ইকম্ত্যমপি ধ্বপদস্য শ্রৈষ্ঠং বিষ্পুদসন্নিহিতত্বাৎ যোগসিদ্ধাদিকস্ক সর্ববৈত্বতাং পশ্চাদিনাক্তং। অনয়োক্তৃত্বত্ব শ্রেষ্ঠং॥ শ্রীনারায়ণং বিনা অন্যত্র হানোপদান-দৃষ্টিরাহিত্যাৎ অপবর্গ ইব স্বর্গে নরকেহপি তুল্যমেকমেবার্থং দ্রষ্ট্রু মন্থভিত্তিং শীলং যেবাং তে তুল্যশন্দস্যকবাচিত্বং। র্ষাভ্যাং নো গং সমানপদে, ইতিবং। পরং মোক্ষমপি অগুণেন মোক্ষেণ। সারং জুষাং তন্মাধ্যাসাদিনাং

র্ত্রাহ্র কহিল, হে ভগবন্! তোমাকে পরিত্যাগ করিয়া ধ্রুবলোক অথবা ইন্দ্রপদ কিহা স্ক্রিভ্নির স্থামিত্ব অথবা পাতালের আধিপত্য কিহা যোগদিদ্ধি অথবা অপুনর্ভব মুক্তি, ধ্র স্কুল কিছতেই আমার অভিলাব নাই॥

ষষ্ঠক্ষদ্ধে ১৭ আ। ৫২ শ্লোকে রুদ্রের উক্তি যথা॥

শঙ্কর কহিলেন, প্রিয়ে! নারায়ণ পরায়ণ ব্যক্তিরা কোন বিষয়েই ভীত হয়েন না, পরস্ত স্বর্গ, অপবর্গ (মোক্ষ) এবং নরক এই ভিনকেই তুল্যুরূপে দেখিয়া থাকেন।

ঐ ষষ্ঠক্ষকে ১৮ গৃ। ৫২ সোকে ইন্দ্রের উক্তি॥
ইন্দ্র দিভিকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, মাতঃ ! বাঁহারা
নিরাকাজ্য হইমা ভগবানের আরাধনা করেন, ভাঁহরাই স্বার্থ-

যে তুনেচছ স্তাপি পরং তে স্বার্থকুশলা: স্থাঃ ।

সপ্তমে শ্রী প্রস্লাদোকো ।

তুক্টে চ তত্র কিমলভামনন্ত আদ্যে

কিং তৈও প্রাত্ত ক্রাদিহ যে স্বদিদ্ধাঃ ।

ধর্মাদেখঃ কিমগুণেন চ কাজিফারেন

সারং জুনাং চরণযোক্ষপগায় গাং নঃ ॥

তব্রে 1 শক্রোকো ।

প্রত্যানীতাঃ পরম ভবত। তায়তা নঃ সভাগা

সতাং। অত্র নাকপৃষ্টমপি ন বাঞ্জি কিমৃত সার্বভৌমং পারমেষ্ঠামপি ন বার্শন্তি কিমৃত রসাধিপ তামিতি পূর্ব্বার্দ্ধে যোজাং। উত্তরার্দ্ধে বাশকোহপার্থে। পাদরজাং-শব্দেন ভক্তিবিশেষজ্ঞাপনয়া গাঢ় প্রতিপত্তিজ্ঞাপাতে॥ ২১॥

কুশল, অর্থাৎ আপনার যথার্থ অর্থে পারদর্শী ॥

সপ্তযক্ষরে ৬ আ। ২০ শ্লোকে প্রহল দের উক্তি যথা ॥

প্রহলাদ কহিলেন, হে অস্তর্বালকগণ! সেই আদি ও

অনন্ত, ভগবান ভূষ্ট হইলে সংগাবে কি অণভ্য থাকে? কিন্তু
গুণপরিণাম নিক্ষন দৈববশণঃ বিনা যত্নে যে সকল ধর্মাদি

গিদ্ধি হয়, তাহাভেই বা প্রযোজন কি ? আর যোকেই বা

আকাজ্মা কেন ? কারণ আমরা নিরন্তর তাঁহার ওণ কীর্তন
ও তদীয় চরণারণিশের মাধুর্য আকাদন করিয়া থাকি ॥

সপ্তমক্ষেরে ৮ আ। ৩৯ শ্লোকে ইন্দের উক্তি যথা ॥

हेस करितन, ८६ शतम ! भागाति यक्त भागमन रिका

দৈত্যাক্রান্তঃ হৃদয়কমলং ত্বদ্গৃহংপ্রত্যরোধি।
কালগ্রন্তং কিয়দিদমহো নাথ শুক্রাষ্ঠাং কে
মুক্তিন্তেষাং নহি বহুমতা নারপিংহাপরিঃ কিং ।
অফ্রিম শ্রীগজেন্ডোস্টো ॥
একান্তিনো যদ্য ন কঞ্নার্থং

গণ হরণ করিয়াছিল, আপনি আমাদিগকে রক্ষা করত দে সকল পুনরায় প্রকানয়ন করিলেন, প্রভো। ঐ পকল ভাগ আপনকারই, বেহেতু আপনি সর্বান্তর্যামী, আপনিই যজ্ঞ ভোক্তা অপর হে বিভো! আমাদের এই ভবদীয় গৃহস্বরূপ হানয়কমল এত দিন পর্য্যন্ত ভয় হেতৃত্বপ্রযুক্ত দর্ববদা স্মৃতি পথস্থ দৈত্যকর্ত্তক আক্রান্ত হইয়াছিল, সম্প্র ত ভয়াপসারণ-দ্বারা আপনি ইহাকে বিক্ষিত ক্রিলেন, হে নর্ষিংহ। আপ-নকার এই উদ্যাস আমাদিগের তৈলোকে খার্য্য সাধনার্থ বলিয়া আমরা আশ্চর্যান্থিত হইনা, কারণ, ঐ ঐশ্ব্য কালগ্রন্ত হইয়াছিল, যে দকল ব্যক্তি আপনকার শুশ্রেষা করে, তাঁহা-দের পক্ষে ঐ ঐশ্বর্যা কিয়ৎ পদার্থ, তাহারা মুক্তিকেও বহু-জ্ঞান করেন না, অপর পদার্থের কথা কি ? অতএব যজ্ঞাগ-লাভ আমাদের পুরুষার্থ নহে, আপনকার পরিচর্য্যা লাভই আমাদের পুরুষার্থ, আপনকার এই কোপপ্রকাশে দেই কার্য্য गायन रहेशारह. अकरा अहे टक्काथ मःहात करून॥

অন্টমস্কন্ধে ৩ অ। ২০ শ্লোকে গজেন্দ্রের উক্তি যথা ॥ গজেন্দ্র কহিল, আমার ভক্তিস্থবে পরিজ্ঞান নাই, একা- ৰাঞ্জি যে বৈ ভগৰৎপ্ৰপন্না:।

অভ্যন্ত হ তচ্চ রিতং হ্নমঙ্গণং
গায়ন্ত আনন্দসমুদ্রমগ্না:।

নবমে ক্রিবৈক্ গণাথোক্তো ।

মং দেবয়া প্রতীতং তে সালোক্যাদিচতু ক্টয়ং।

নেচছন্তি দেবয়া পূর্ণাঃ ক্তোহন্যৎ কালবিপ্লুডং।

শ্রীদশমে নাগপত্নীস্ততো ।

ন নাকপৃষ্ঠং নচ সাক্ষিভোমং
ন পারমেষ্ঠাং ন রসাধিপত্যং!

রণ আসি এতাবন্মাত্র প্রার্থনা করিলাস, যাঁগারা তাঁথার একান্ত ভক্ত, মুক্ত পুরুষদিগের দেবা করিয়া নিজাম হইয়াছেন, অভ-এব কেবল তদীয় অন্ত প্রমঙ্গলচরিত্র গান করিয়া আনন্দ-নগেরে মগ্র থাকেন, তাঁথারা কোন পুরুষার্থই বাঞ্চা করেন না॥

নবমক্ষদে ৪ অধ্যায় ৪৯ ক্লোকে বৈক্ঠনাথের উক্তি।
ভগবান্ নারায়ণ ছুর্বাগাকে কহিলেন, ছে মুনে! আমার
সেণাছারা সালোক্যাদি পদার্থ কুকুটয় উপস্থিত হইলেও
লামার ভক্তগণ তাহা গ্রহণ করিতে ইচ্ছা করেন না, আমার
সেবাতেই পরিত্প্ত হইয়া থাকেন, ইহাতে কালনাশ্য অন্য
স্থেতে তাঁহাদের অভিনায় হইবে সম্ভাবনা কি ? ॥

দশমস্কর্মে ১৬ অ। ৩৬ শ্লোকে নাগপত্নীগণের স্তুজি মুখা ॥
নাগপত্নীগণ কহিলেন, হে প্রভো! আপনকার চরণরেপু

ন যোগসিদ্ধীরপুনর্ভবং বা বাঞ্জি যৎপাদরজঃপ্রপন্নাঃ॥ ২০॥ **छ**टेखन (तमञ्जल्डी । মুরবগমাত্মভন্তনিগমায় তবাভভনো-শ্চরিতমহামূভান্ধিপরিবর্ত্তপরিপ্রামণাঃ। ন পরিলম্ভি কেচিদপ্রর্গ্র্যপীশ্র ভে

**তে ঈশার চরবগমং বদাখান: স্থা** ভগবতন্তবং ব্রহ্মাননাচ্ছাদকরপঞ্গলীলা ৰাথাৰ্থাং ত্যা নিগমায় জ্ঞাপনায় আতা প্ৰপঞ্চানীতা তকু: শ্ৰীবিগ্ৰহো যেন ত্যা ভৰ চৰিভবেৰ মহামুভালিওত যঃ পরিবর্তঃ মুহুঃ পরিব্তা প্রবনং তেন পরি-स्रमण: বর্জি চসংসারপরি শ্রমান্তে কেচিদিরল প্রচারা অপবর্গমিপ নেচছন্তি। कीत्मारक छखाइः। ८७ हत्रशमत्त्राक्त्यार्श्यानाः छात्रवरुभत्रमद्दशम्यानाः ৰানি কুলানি শিষোপশিষাপরশারা তেষাং সলেন বিস্পৃত্যিহাঃ তলতে প্রথমত এৰ প্ৰবৃত্তান্তে। আসতাং ভাবতে হংগাঃ ভংকুলানি চেতাৰ্থঃ॥ ২১॥

সামান্য নহে, যে সকল ব্যক্তি ইহা প্রাপ্ত হয়েন, তাঁহারা সর্গ পৃষ্ঠ অথবা সার্বভৌমপদ কিন্তা যোগসিদ্ধি অথবা অপুনর্ভব ﴿ মৃক্তি ) কিছুই বাঞ্চা করেন না, অর্থাৎ আপনার চরণরেণু खार इटेल वर्गानि भन कुछ (वाध द्य ॥ २० ॥

দশমক্ষকে ৮৭ অধ্যায় ১৭ শ্লোকে বেদস্তভিতে যথা॥ আফতিগণ কহিলেন, হে ঈশর! তুর্নোগ আত্মতত্ত্ব জ্ঞাপ-হেমর নিমিত্ত আবিষ্কৃত মূর্ত্তি যে তুমি, তোমার চরিতরূপ নহা-नमृत्य পরিভাষণেতে বিগঙ্ঞাম ভক্তদিগের মধ্যে কোন

চরণদরোজহংসকুলদঙ্গবিস্ফীগৃহাঃ॥ ২১॥ একাদশে উদ্ধবং প্রতি 🗐 ভগবতুকো। न किथिए माध्या शौदा ज्ञा क्या क्या स्थिता मधा বাঞ্চন্তাপি ময়া দত্তং কৈবল্যমপুনর্ভবং। • তথা ॥ न পারমেষ্ঠাং ন মহেলবিষ্ঠাং ন সার্বভৌমং ন রসাধিপত্যং।

অত্র পরিনেষ্ঠাাদিচতৃষ্টরদাকুক্রম-চাধোহধো বিবক্ষরা নান্দ্ববিক্ষরাচ ভভভ পুর্মবং কৈমৃত্যমণি যোগাদিবয়ং তু পুর্মবং কিম্বনা বং কিঞ্চিন্যাদণি সাধ্য-জাত: তৎ সর্বং নেচ্ছস্তোব কিন্তু মং মাং বিনা ভালুশভক্তিসাধ্যং মামেৰ সর্বা

কোন ব্যক্তি ভোমার পাদদরোজে রমমাণ হংসকুলের ন্যার তৎ সংগর্গে পরিত্যক্তাশ্রম হইয়া মক্তি পর্যান্তও ইচ্ছা করেন 리 # 2 2 #

> একাদশক্ষরে ২০ আ। ৩৪ শ্লোকে উদ্ধবের প্রতি ভগবানের উক্তি যথা 🏾

छभवान् कहित्सन, (इ উদ্ধव! (य नकस माध् धीत भूक्रध ্বামার একান্ড ভক্ত, তাঁগারা সংসার মধ্যে কোন বস্তর 😅 🕏 অভিলাষ রাখেন না. অধিক কি আমি যদি ভাঁহাদিগকে অপুন র্ভব মোক্ষও প্রদান করি তথাপি তাহ। বাঞ্চা করেন না ।

के क्रिकाल्य 38 व्यक्षाय 30 (श्रांक वर्ष !

ভগৰান কহিলেন, হে উদ্ধৰ ! বাঁহাৰের চিত্ত আৰাজে সমর্পিত হুইয়াছে তাঁহারা কি ত্রহাপদ কি ইস্রাসন, কি সর্বা- ন যোগদিদ্ধীর পুনর্ভবং বা।

মযাপিতাত্মেচ্চতি মহিনান্যে ॥

হাদশে শ্রীক্রেটেটো ॥

নৈবেচ্ছত্যাশিষঃ কাপি ব্রহ্মার্থিযোক্ষ্যপুতে।
ভক্তিং পরাং ভগবতি লব্ধবান্ পুরুষেহ্ণ্যুয়ে ॥ ২২ ॥
প্রপুরাণেচ কার্ত্তিক্মাহাজ্যে॥
বরং দেব মোক্ষং ন মোক্ষাব্দিং বা
ন চান্যং রুণেহহং ব্রেশাদপীহ।

পুক্ষার্থাধিকমিচ্ছস্তীভাগ: ময়ি অর্পিভাগ্না কৃতাত্মনিবেদন:॥ ২২॥

শোক্ষাব্দিং মোক্ষাকেভি নরকাদিযোগাস্ত ভন কে বরাকা ইভি ভাব:॥১৩॥

ভূমির স্থামিক কি পাভালের অংধিপত্য অথবা যোগদিদ্ধি কিম্বা অপুনর্ভব মোক্ষ, আমা ভিন্ন অন্য কোন বিষয়ের প্রতি ইচ্ছা কংবেন না।

দাদশককো ১০ আ। ৬ শোকে ক্রেরে উক্তি যথা ॥
শক্ষা কহিলেন, দেবি ! এই একার্ষি অগ্য পুরুষ ভগবানে
পানস ভক্তি লাভ করিয়াছেন, অতএব ইনি আন কোন প্রকার
কার্যাণ বা মৃক্তি পর্যায়েও ইচ্ছা করেন না ॥ ২২ ॥

- পুদ্মপুরাণে কার্ত্তিকমাহাত্য্যে যথা॥

হে দেব! আপনি বরদাতার ঈশ্বর, সকলই প্রদান করিতে পারেন, কিন্তু আমি আপনার নিকট মোক্ষ অথবা মোক্ষপর্যন্ত ধর্মাদ কোন বরই গ্রহণ করিতে ইচ্ছা করি না। হে নাথ!

ইদং তে বপুনথি গোপালবালং
সদা মে মনস্যাবিরান্তাং কিমন্যৈ ॥
কুনেরাক্সজৌ বদ্ধমূর্ত্তিবে যদ্ধ
দ্বরা মোচিশে ভিজ্তভাজৌ কুর্তো চ।
তথা প্রেমভক্তিং স্বকাং মে প্রযুদ্ধ
ন মোকে গ্রহো মেহন্তি দাযোদরেছ ॥
হয়শীর্ষী নারায়ণব্যুহস্তবেচ।।
ন শুগাং কাম্মর্থ বা বেশেশ্ব ।

কেবল সাপনার এই বালগোপাল মূর্ত্তি **আমার মনোমধা** নিরন্তর অংশিভূতি হউক, আমার অন্য কোন বরে **প্রয়োজন** নুজ্

হে দাংমাদর ! এক দিন আপনি দণিভাও ক্ষে।টন করিরা অপরাধী হইলে, যশোদা রজ্জু দারা আপনাকে উদূখলে বন্ধন করিয়াছিলেন, সেই সময় নলকুবর ও মণিগ্রীবনামে কুবের-নন্দনর্য নারদকর্ত্ব ছিলাও হইয়া, যমলার্জ্জুন-নামক বৃক্ষ-রূপে গোকুলে বাস করিছে ছিল, আপনি যেমন ভাহাদিগকে মুক্ত করিয়া ভক্তিভাঙ্গন করিয়াছেন, তদ্রপ আমাকে স্বীয়-প্রেমভক্তি প্রদান করুন, মোকলাভে আমার আগ্রহ নাই ॥ হয়শীর্মীয় নারায়ণবৃহহস্তবে॥

হে বরদ ! হে ঈবর ! আমি ধর্মা, অর্থ, কাম অথবা মোক ইহার কিছুই প্রার্থনা করি না, কেবল আপনার পালপত্তে প্রার্থয়ে তব পাদাজে দান্যমেণভিকাময়ে॥ ২০॥ ভত্তিব ॥

পুনঃ পুনব রান্ দিৎ স্থি ক্ষুম্ জিং ন যাচিতঃ।
ভক্তিরেব র্ভা যেন প্রহলাদং তং নমান্যহং॥
যদৃচ্য়া লব্ধপি বিফোদ শির্থেস্ত যঃ।
নৈচ্যাকিং বিনা দাস্যং তল্মহনুমতে নমঃ॥
অভএব প্রদিদ্ধং শ্রীহনুমন্বাক্যং॥
ভ্রবদ্ধচ্ছিদে তল্ম স্পৃহয়ামি ন মুক্রে।

শ্বিষ্ণুন বাচিত ইতি হুহাদৌ গৌণকর্মণ এব বিষ্ণোব চি।ত্বাং প্রথমা ভজিবের যুক্তেতাত বুণোতেরপি তদাদিতে মুখাকর্মণো ভক্তের কত্মার্মণা ২৪॥

দাশ্যমাত্র কামনা করি, আমাকে উহাই প্রদান করুন ॥ ২৩॥ হয়শীর্ষে ॥

ভগণান্ নৃসিংহদেব বারখার প্রহ্লাদকে বর দিতে ইচ্ছা ক্ষালে ঐ মহাত্মা মুক্তি প্রার্থনা না করিবা ভক্তিকেই বরণ ক্ষায়াছিলেন অভএব তাঁহাকে প্রণাম করি॥

ি বিনি দশরথ তন্ম রামচন্দ্রের সলিধানে দাস্যভিন্ন অনা-যাস শব্ধ মোক্ষও ইচছা করেন নাই, সেই হতুমান্কে নন্ন-ক্ষার॥

এ বিষয়ে স্থানিদ্ধ হতুমন্ত্রন যথা।।

শেষাৰ ! বাহাতে আপনি প্রভু, আমি দাদ, এইরূপ সম্বদ্ধ
বিসুপ্ত হয়, সেই ভববদ্ধন-ছেদনকারী মোক্ষেও আমার স্পৃহ।

# ভ্রান প্রভুরহং দাস ইতি যত্র বিলুপ্যতে ॥ শিনারদপক্ষরাত্রে জিতন্তে-স্তোত্রে ॥ ধর্মার্থকামমোক্ষের নেছা মম কদাচন । ত্বংপাদপক্ষসমাধ্যে জীবিতং দীয়তাং মম ॥ বোক্ষসালোকাসার্ল্যান্ প্রার্থিয়ে ন ধরাধর। ইচ্ছাম হি সহাভাগ কার্ল্যাং তব স্থ্রত ॥ ২৪ ॥ অত্তবে শ্রীভাগবতে যঠে চ ॥

- মুক্তানামপি সিদ্ধানাং নারায়ণগরায়ণঃ।

° মুকানা প্রাক্তশরীরহুফেছপি তদভিমানশ্নানাং। সিদ্ধানাং **প্রাক্** 

নাই ॥

হে ভগণন্। ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক্ষ এই চতু**র্কার্পের** প্রতি কথন আমার ইচ্ছা নাই, হে এভো। আমার জীবনকে আপ্রমার চরণগলের অধোভাগে স্থান দান করুন।

হে ধর ীণর। হে মহাভাগ। আমি দালোক্য**দারূপ্যরূপ** মোক্ষ প্রার্থনা করি না, হে স্কুল্ড। আমি কেবল **আপনার** ক্রুণামাত্র ইচ্ছা করি॥ ২৪॥

ভাগবভের ষষ্ঠক্ষে ১৪ অধ্যায় ৪ শ্লোকে ॥
রাজা পরীক্ষিৎ জিজাসা করিশেন, হে অক্ষন্ । র্জাক্ষ অভিশয় পাণী, ভাষার সভাব রক্ষঃ ও ত্যোগুণে পরিপূর্ণ ছিল। নারায়ণে কি প্রকারে তাহার দৃঢ়া মন্তি হইল ? সে স্তুল ভি: প্রশান্তাত্থা কোটির পি মহামুনে ॥ ২৫ ॥
প্রথমেচ শ্রীধর্মরাজমাতৃঃ স্ততৌ ॥
তথা পরমহংদানাং মুনীনামমলাত্মনাং ।
ভক্তিযোগবিধানার্থং কথং প্রশোসহি দ্রিয়ঃ ॥ ২৬ ॥
তব্রৈব শ্রীদৃভোক্তৌ ॥
শ্বাত্মারামাশ্চ মুনয়ে। নিপ্রস্থা অপ্যুক্তক্রে ।

সালোক।।দীনাঞ্চ কে:টিম্বপি মধ্যে নারায়ণসেবামাত্রাকাজ্জী স্বত্র ভ: ॥ ২৫ ॥
তদেব: প্রীকৃষ্ণচরণাস্তোজদেবানির তিচেত্রসামিতানেন তৎসেবাস্থাকিকস্পৃথিণং যন্মোক্ষপৃহা নাডী চাক্তং তর প্রমাণানি বিবৃত্তানি অথ তাদৃশেষু তদ্য

চন্দ্রবাদান এর প্রযন্ত হার্ত প্রথমে চেতান শ্বরং তথা প্রমেতানেন। প্রমূহং-সানাং ভক্তিযোগবিধানমর্থো যদ্য তং থামিতি শেষঃ। পশ্যেমহি জানীমহি ॥২৬

নিএছা বিধিনিষেধাত্মকগ্রন্থেভে।।নির্গতা অপি॥ ২৭॥

সকল পুরুষ, মুক্ত ও তত্ত্ত হন্, তাঁগাদের কোটিজনের মধ্যে আবার নারায়ণপর ও প্রশান্ত চিত্ত লোক অগ্যন্ত তুল্লিভি অর্থাৎ তত্ত্বপ লোক প্রায় দেখিতে পাওয়া যায় না॥২৫॥

প্রথমক্ষমে ৭ অধ্যায় ১৯ শ্লোকে কুন্তান্তবে ॥

কুন্তীদেবা কহিলেন, কুন্ধা! তোনার এতাদৃশ মহন্ত যে আজানাত্মবিবেকা পরমহংস, তথা সননশীল রাগ দ্বেষ রহিত মুনিগণও তোমাকে দেখিতে পান না, আমরা স্ত্রীজাতি, ভক্তিযোগ বিধানার্থ অবতীর্ণ তোমাকে দেখিতে পাইব সন্তান্ধনা কি ?॥২৬॥

প্রথমস্কল্পে ৬ অধ্যার ১০ শ্লোকে॥ সূত কহিলেন, হে ঋষিগণ! আজারাম মুনিদকলের ক্রবন্তাহৈ চুকীং ভক্তিমিপান্ত তথাে হরি: ॥ ২৭ ॥ পত্র ভাল্যত যেবাকা মুক্তিং পঞ্চিবাপি চেৎ । সাল্যোক্যাদিন্তথাপ্যত্র ভক্ত্যা নাভিবিরুধাতে ॥ ২৮ স্থাপ্রয়োভর। সেয়ং প্রেমদেবাভ্রেভ্যাপি।

জত্র তাজ্যেতি॥ অপিচেন্বদাপি তথাপি সালোক্যাদিঃ সাংলাক্যসাষ্টি সামীপাসাক্ষপা নাতিশয়েন বিরুধাতে কিন্তু কেনাপাংশেন বিরুধাতে প্রতিকৃপত্রা ভাষাত ইতি তত্র তল ভক্তিশ্রবণাং॥২৮॥

ভত্রাতিশক প্রতিপাদামাহ স্থেতি তলোকাদিসভাবকং স্থমেশ্বর্ণ । উত্তরং প্রাধানোন বঞ্নীয়ং যদ্যাং সা প্রেমা প্রেমশাভাবোন দেনৈর উত্তরা যদ্যাং দা তত্র নালা সেবাজ্যাং মতেতি দালোকা দার্ভি দামীপ্যেভাাছাক্র হাং।

কোন প্রকার হাদয় গ্রন্থি বাধিক শেও তাঁহারা উরুক্রম জীকুষ্ণে ফলাভিদ্দ্ধি-রহিঙা ভক্তি করিয়া থাকেন, হরির এতাদৃশ অসাধারণ গুণ যে, মৃক্ত অমৃক্ত সকলেই তদর্থসমূৎ স্ক্
হয়েন ॥ ২৭ ॥

যদিও পূর্ব্বোক্ত উদাহরণ সকলে সর্বভোভাবে পঞ্চিধ মুক্তিকে পরি গ্রাগ করিবার বিধি হইল তথাপি সালোক্য, সাষ্টি, সামীপা, সারূপ্য এই চারিটী মুক্তি ভক্তির সম্পূর্ণ বিরোধী নহে, উক্ত অবস্থাতেও কোন কোন ব্যক্তির শ্রীকৃষ্ণ বিষয়ক ভাব উদ্দীপিত হইয়া থাকে॥ ২৮॥

অপর সালোক্যাদিরপে মৃক্তির ছইটী অবস্থা। প্রথমান বস্থায় প্রধানরূপে ঐশ্বিক হুথ গাঞ্নীয়। বিভীয় অবস্থায় প্রেম স্থাৰ হুলভ সেণনই এক।স্ত স্পৃহণীয়ইইয়া উঠে, অত- সালোক্যাদিৰিধা তত্ৰ নাদ্যা সেবাজ্যাং মতা ॥ ২৯ ॥
কিন্তু প্ৰেটনক্ষাধ্য্যভুজ একান্তিনো হরো ।
নৈবাঙ্গীকৃকিতে জাতু মুক্তিং পঞ্চিধামপি ॥ ৩• ॥
তত্ৰাপ্যেকান্তিনাং শ্ৰেষ্ঠা গোবিন্দহত্মান্যাঃ ।

ভাজ সালোক্যাদি চতুইয়ং সেবনং বিনা ভূতং চেত্তহি ন গৃহুছেয়বেভার্থ:। একত্বং তুনিতাং ভদ্দিনাভূতহাং। তচ্চ ঈশ্বরে ব্রহ্মণিচ সাযুজ্ঞাং জ্ঞেয়ং॥ ২৯॥

নৈবাদীকুর্বত ইতি প্রেমদেবোররে হাররশকোপাদানাদন্যাংশস্যাপি সম্ভাবাপত্তে: তত্রানাংশং নেচছন্তীত্যর্থ:। মংদেবয়া প্রতীত্ত ইত্যাদৌতু প্রথমা সেবা সাধনরূপা বিতীয়াতু তয়া সিদ্ধরূপা প্রতীত্তমানুষদিকতয়া প্রাপ্তমণি সালোক্যাদিচতুইয়ং তলগ্তস্থবৈশ্যাদিকত্ত নেচছন্তীতার্থ:। যতঃ সাক্ষাত্ত-দীয়দেববৈরব পুনল বিপ্রমানলাঃ। সেবা হেযা সালোক্যাদিকমণেকত এব ভচ্চন বাস্ত্তি চেং কিষ্টতক্যং। সালোক্যাদিভ্যো যদন্যত্তবুকাণবিপ্লুত-মেব তদ্বা কথং বাস্ত্তীত্যর্থ:॥ ৩০॥

ে গোবিলঃ প্রীগোকুলেন্তঃ। শ্রীশঃ পরমব্যোমাধিপঃ উপলক্ষণত্বেন শ্রীদারকা

দেবারসিক ভক্তর্ন্দ প্রথম।বস্থাকেই প্রতিকূল বলিয়া স্বীকার করেন ॥ ২৯ ॥

কিন্তু যাঁহারা একবার মাত্র প্রেমভক্তির মাধুর্য্য আস্থাদন করিয়াছেন, হরিতে একান্ত অনুরক্ত সেই ভক্তগণ সালো-ক্যাদি পঞ্চবিধ মোক্ষণ্ড কদাচ স্বীকার করেন না ॥ ৩০॥

পূর্ব্বোক্ত এক প্রেম মাধুর্য্যাম্বাদি ভক্তর্দের মধ্যে বাঁহাদের গোকুলেন্দ্রের চরণারবিন্দে মন আকৃষ্ট হইয়াছে

যেষাং জীশপ্রসাদে; ছপি মনোহর্ত্তণুন শরুরাং ॥ ৩১ ॥ শিদ্ধান্ত গুত্তদেহপি শ্রীশরক্ষন্তরপঞ্জার। রুপেনোংকুষ্তে কুঞ্জুপুমেষা রুসন্থিতিঃ : ৩২ ॥

### নাথোহাপ ॥ ৩১ ॥

রসেনেতি। সর্ব্যোক্ত ইপ্রেমনম্বরসেনেত। ও: । উৎক্রবাতে অগ্নভূতিণার্থ
ভাং উৎকৃত্ত রা প্রকাশতে ইতার্থ:। যতন্ত সারস্যা এবৈব ছিতি: অভাব:
যং কৃষ্ণকলাসেবাংকৃত্ত হন দশন তীভার্থ:। যথোক ং কুরুকে এযাএনাং অইণ্ট্রমহিবাত রমহিবাভি:। ন ব্যং সাধিব সামার্থাং স্বামান্ধাং ভোজামপুতে।
বৈরাজাং পারমেন্ত ং বা আনস্তাং বা হরে: পদং। কামনাম্থ এত সা আমিং
পান কলা ক্রিয়:। কচকুলু মগনাতাং মুদ্ধা বোচু গ্রাভ :। এল প্রিয়ো বছান্ধান্ত
পুলিনান্ত প্রীর্মাং। গাবশ্চারগ্রতা গোপাঃ শালন্পাবং মহামুন ছতি। অঅ
সামান্তাং সার্ব্যালি বিরাজমানতং। পার্যেন্তাং প্রাজ্যাপ্তাং। আনস্তাং
বিরাজ্যমনিম্বাদি সিল্যা বিরাজমানতং। পার্যেন্তাং প্রাজ্যপতাং। আনস্তাং
বির্ভি শতমিতাদি প্রাজীত্যা মন্ত্রানন্দ্রন্ত্র শতশত গ্রিত ক্রেন

তাঁহারাই একান্ত ভক্তদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ, কারণ বৈকুঠাণি পতি লক্ষ্মীপতির তথা দারকানাথের প্রদর্গাণ তাঁহাদিগের মন হরণ করিতে সমর্থ হয় না॥ ৩১॥

থাদিও শ্রীনাথ এবং শ্রীকৃষ্ণে স্থান্তঃ কোন প্রভেদ নাই, কিন্তু কেবল প্রেমময় রুগনিবন্ধন উন্কৃষ্ণের উৎকর্ষ লাক্ষিত হট্যা থাকে, বাস্তবিক প্রেমেরও এইরূপ স্বভাব যে তাহ। ভালস্থনকে (আশ্রয়কে) উৎকৃষ্টরূপে প্রদর্শন করে॥ ৩২॥ প্রাজাপত্যান্দ্র্য্য গণনায়াঃ পরাকাঠাং দর্শয়িতা পরব্রহ্মণি তু ষতে! বাচো নিবর্ত্তম্ব ইত্যানেন যদানলগণানস্তাং দর্শিতং তদপীতার্থঃ। কিং বছনা হরে: **बी भारतः भारता में भारत का मार्ग का का मार्ग मार्ग का मार्ग का मार्ग मार्ग क** কর্ত্মিচ্ছাম ইতার্থঃ। তহি কিমধিকং লব্ধুং কাময়ধ্বে তত্তাহঃ এতস্যাত্মৎ প্রিছেন স্ক্রিজ্ঞাত্স্য গ্লাভ্ত: শ্রীমংপাদরজ এব মৃদ্ধা বোঢ়ুং কামগ্র মহে। ততাপি যৎ শ্রিম: কুচকুকুমগন্ধেনাচাং তলগন্ধেন প্রাপ্তসম্পবিশেষং ভং পুনরধিকং কাময়ামহ ইতার্থ:। নতু শ্রীপতেরের পদং শ্রীকুচকৃষ্মগন্ধাতাং তং সামীপাাদিতাগাং তত্ত্বকাসাক্তবতা এব। যদি শ্রীরণ ক্রিয়াভিপ্রে-মতে তহি তিক্তৰ গীনাং পাপ্নেৰ তথাত্দিলকণায়া এৰ প্ৰিয়ঃ কুচকুলুম-গন্ধাটাং তং দার্ণিতি গ্নাতে ভতস্তদ্বধােশনায় পুনবি শিষ্যতাং ভতাইত্ত কিন্তিয় ইতি পূর্ণা: পুলিক্ উক্গায়প্রাজ্রাগ শ্রীকুঙ্গুমেন দ্বিতা স্তনমণ্ডিতেন। তদ্ধ-শ্নিমাররজ্জসূণ্রবিতেন শিম্পান্থা আননকুচেয়ু জল্তাপাধিমিতি। স্বাকাদিন্ত্ সারেণ ব্রজন্তাদিয়ো যদাঞ্জি বর্ণাঞ্রিত্যে । বর্ত্তমান প্রায়োগেণ তত্তদ্বিক্ষেদ উংপ্রেক্ষতে। অনু পুলিন্দ্যাদি নির্দেশস্ত স্বেয়ামপি তৎ প্রাপ্তিযোগ্যভাবিবক্ষরা তৃণনীরুধো দুর্বাদাা:। আসাং তাদৃগত্মভব চ তৎকুত্ব মসৌরভবাসিত্থা-বিচ্ছিন্ন তংপদ প ভাবাদেবেতি ভাবঃ। আসাং বাঞ্ছা। কেবলেনছি ভাবেন ঁলোলো গাবোমুগা নগা ইতি দৃষ্টেঃ। গাবে। গাশ্চারমক্ষো গোপা ইভাক্তে নির্দেশন্ত তেখাং কেষাঞ্চিং প্রিয়নশ্রস্থাদীনাং তদন্তমে।দকারিত্রেংপি পুরুষত্রাৎ ভত্রাযোগ্যন্ত্রিবঞ্চয়া। অয় ভাব: স্থাতেন প্রাস্থায় শ্রিয়ন্ত্র কামেনৈব শ্রাতে নতু সঙ্গতিঃ সঙ্গতিঃ ক্যাকুভাবে।২্যান দেব বিল্লাহে ত্বাভিন্রেণু-ম্পূর্মার । যদাঞ্ধা জীল লনাচলত পো বিহার কামান্ স্চিরং ধৃতত্ততি মাগপদ্ধীনাম্তে:। বা বৈ শ্রিমার্চিভং ইত্যদ্ধবস্যাপ্যক্তে: নচ ক্রিণীছেন প্রসিদ্ধারাঃ শ্রিষক্তর সঙ্গতিকালদেশগোরনতেমতাৎ নচ এলস্ত্রীণাং শ্রীসম্বন্ধ-লালসায়কা নায় লিয়ে। ফ উনিতা হরতে: প্রমাদ ইত্যাদিনা ভড়ে। প্র পরমাধিকাশ্রবণাৎ ভত্মাৎ ক্রিণীবারবভাাস্ত রাধা বৃন্ধাবনে বনে ইভি মাৎসো স্থান্দাদি নির্ণীত্যা ক্ষমণা সহ পঠিতা শক্তিবসাধারণ্যেনৈব শাস্তদ্ধ্যাতৃপ (मा वामापवनमिकि ना। प्रतीका। गाहर खन भवामध्य देव कर्मश्राभावः खाहा-

কিঞা

শাস্ত্রতঃ জ্রায়তে ভক্তে। নুগাত্রসাধিকারিতা। সর্বাধিকারিতাং মাঘস্লানস্য ক্রবতা যতঃ !

পাসনাশারদুষ্টর্ণ আভেদেনোপদিষ্টা। জীরাধাত মর্বত: পুর্বা ওল্লুলী:। তথা দেবী কুক্ষময়ী পোজা রাধিকা প্রদেবকা। সর্পল্জীময়ী স্পকান্ধি: সংখ্যা হিনী পরা ইতি বুহলোঁ শ্মীয় দুষ্টাচি । তথা যা ভাস্থ রাধান্তেন প্রসিদ্ধা দুর্বছো বিলক্ষণা শ্ৰীবি বাজতে ভামুদ্দিশৈবে ভাষাং ভদিবং বাকাং। যথা অনমারাধিতো নুনং ভগৰান্ গ্রিবীখর:। যদো বিগাগ গোবিদা: প্রীতে। যামনগুলছ ইভি অপোণপত্রপার: পির্যেহেক্যাদি ঘ্রাঞ্চ। তত্ত ভাসাং যার স্পৃত্যস্থান তথাআকং চেতি। তদেবং ভালুশংপ্যক্ষিয় ওলালাচাতারা: সম্প্রভালাস্থ প্রকাশ: স্যাদিতি দর্শিত । ন কেবলং তাদৃশ তন্ত্র এব বা**হুত্তি অপি**তু खाप्रभार शास्त्रप्रभाषिक वाञ्चलि उटला वयमिति कामयागर हेन्छ। यहा. **छत्रक्रम** এব বিশেষণ পাদস্পর্নাতি ভদবাভিচারি ফল্বারদভিল্নেবেভার্থ:। এভস্য ভত্ত কীৰ্শ্য মহান্দ্ৰীৰভাদিপি স্বভাবাহত্ম আ্যা গৌল্বী। দিংকাশ্যয় স্ব লাবে। যদ্য তাদুশ্যা। ত্রাতিভ্রত্তে তাভিভগবান দেবকী হত ইলি 🕮 🗣 কোন্ডে:। তথাং গাগুকং ওতাংগাকান্তিনা লোচা গোবিন্দন্তমানসা ইক্তা-দিনা। ক্রফক্রপমিতানেন চ তালুশং তৎ গৌন্দর্গাদেরোপলক্ষিত্রমিতি। যদাপো তৎপ্রকরণং সিমভক্তগণাঞ্জিত। তথাপানো তথা দুৱা স্থারিভাতাস্থ-कीर्डिङः॥ ७२॥

ন্দ্ৰেবং ভুক্তিমুক্তিস্পৃহারহিতাঃ শ্রদ্ধালবঃ প্রদেশকারিব ইত্যায়াভং ∤

পূর্বে যে সকল উদাহরণ দেওয়া হইল তৎসমুদায়ের অভিপ্রায় এই যে, যাঁহারা ভূক্তি মুক্তি স্পৃহাশুনা ও প্রদানা বানু তাঁহারাই বিশ্বস্কৃতিতে অধিকারী। ভক্তি ব্রাহ্মণ ক্ষিয়ে বৈশ্য এই ত্রিজাতিকে অপেকা করে না, ভক্তিবিষয়ে মনুষ্য

দৃষ্টান্তিত। বশিষ্ঠেন হরিভক্তিনৃ পং প্রতি। श्रश शास्त्र ॥ দর্কেছবিকারিশে ছত্ত হরিভক্তে যথা নূপ। ৩০। কাশীখণ্ডেচ ॥ অন্তাজা অপি তদ্রাফে শহাচক্রাক্ষধারিণঃ। সম্প্রাণ্য বৈষ্ণবীং দীক্ষাং দীক্ষিত। ইব সংবভুরিতি ॥৩৪॥

জন্ত তৈ তৈবৰ্ণিকা এব কিম্বা সৰ্ব্বে তত্তাচ কিম্বেভি ॥ ৩৩ ॥

कानीथर ७ एको नृगांवनाधिकात्रिका आग्रतक हेट गुरुवावाश्यानाम्यः। **भी किन्छा: शक्तिका:** ॥ ७८ ॥

মাত্রের অধিকার আছে, ইহা শাস্ত্রে স্পাইকরপে শুনিতে পাওয়া যায়। যেহেতু ভগবান্ বশিষ্ঠদেব হারভক্তির দৃষ্ঠান্ত প্রদর্শন করিয়া মহারাজ দিলীপকে মাঘ্রানে সকল বর্ণের অধিকার আছে, ইহা স্পান্টরূপে কহিয়াছেন॥

यथा भग्रभुतारम ॥

বিশিষ্ঠ কহিলেন, হে নৃপ! যেমন হরিভক্তিতে সাধারণ মসুষ্যমাত্রের অধিকার আছে, তজ্ঞপ মাঘ্মাদের প্রাতঃসানে भक्तिहे अधिकात्री॥ ७०॥

কাশীখণ্ডে যথা ॥

অমিত্রজিৎ কহিলেন, ময়ুরধ্বজপ্রদেশে অন্ত্যজঁজাতিও **বৈক্ষ্যীলীক্ষায় দীক্ষিত হইয়া শহা**চক্রাদি চিহু ধারণ করত ৰাজিকের ন্যায় শোভা পাইয়া থাকে ॥ ৩৪ ॥

ভাপির॥ অনুত্রনতা দোবে। ভক্তাপানাং প্রজায়তে। ন কর্মণামকরণাদেষ ভক্তাধিকারিণাং ॥ নিষিদ্ধাচারতো দৈবাৎ প্রায়শ্চিকক্স নোচিতং।

তদেবমনাভিলাবিভাশনামিতি জাপিতং। তৎপ্ৰসক্ষসভাগ সংক্ৰাৰণঃ-।कातिकः पर्णि ६:। ७०॥ भक्षत् । नसु, छवस्र मर्भा वर्षाधिकातिनः, व्यवभक्षेत्रका বেতি যদাতে তং বিনা প্রভাবারপ্রবশাং। তথা সর্ফোরা নিষিক্ষর্ম াপততোৰ। সভিচ ভেন ছষ্টাৰে কৰং শুক্ষাং সাাং ক্লান্ত চ প্ৰাৰ্শিচতে ব্যার চহমণপ্রের তর্গাহ অপিচেতি। ভক্রান্থানাং নিত্যানামিতি ভোরং। দ্বানিতি যায় ভাজে তাদুৰী কচি: শ্ৰন্ধা জাতা তসাত বিক্**শ্ৰণিশত: প্ৰবৃত্তিন** অবতোবেতি ভাব:। প্রায়ণ্চিত্ত নোচি গুমিতি প্রক্রিপ্রভাব এব **ওৎপ্রায়**-শ্রায় ক্রভইতি ভাব:॥ ৩৫॥

ভারত বলি, যাঁথারা ভক্তিবিষয়ে অধিকার লাভ করিয়া-ছেন, তাঁহারা যদি গুরুপদাপ্রাাদি নিত্য ভক্তাপ সকলের মাচরণ না করেন, ভবে তাঁহা দিগের দোষ জম্মে বস্তভঃ নিভঃ ছক্তাপ্রথাজিলেগের আশ্রমে। চিত ক্রিয়াকলাপের অনমুষ্ঠানে প্রত্যবায় হয় না, কিন্তু যাদ কথন দৈববশতঃ নিষিদ্ধকর্ম দাচনিত হয়, তাহা হইলেও হরিভক্তিপরায়ণ ব্যক্তিদিগের প্রায়ন্চিত্র করা বিধের নহে, বৈষ্ণবশাস্ত্রের রহস্যবেতা পণ্ডিত-দিগের অভিপ্রাধ এই যে, ভক্তিপ্রভাবেই ভাহার প্রার্শিচত ইতি বৈষ্ণবশাস্ত্রাণাং রহস্যং তদ্বিদাং মতং ॥ ৩৫ ॥ यदेशकां प्रतम् ॥

(श (श्रव्धिकाद्ध या निक्री म खनः श्रिकोर्डिकः । विপर्याग्रस्य भाषः माष्ट्रस्यात्वय निम्हतः ॥ ५७ ॥

প্রথমে॥

ভাক্তে স্বধর্মাং চরণাম্বজং হরে-

ৈ তদেতদেব স্পাদমূলং ভজ্ত: প্রিয়স্য ইত্যন্তেন গ্রন্থেন আহ স্বেম্ম ইতি। খে খে অধিকার ইভি পুর্নোক্তকেবলকর্মজ্ঞানভক্তিবিষয়ত্মা পূর্ণক পূথক নির্দিষ্ট ইতার্থ:। উভয়ো গুলিনে বিয়ো:। ততা শুদ্ধভক্তাধিকারিল ইভর্বমুকর্পে **লোব এব । ন জ্ঞানং ন চ বৈরাগাং প্রায়ঃ শ্রেয়ো ভবেদিছ ইতি ভবৈত্রবাজেঃ** । ভাবং কর্মাণি কুরবী হ ইত্যাদেশ্য। কর্মজ্ঞানাধিকারিণোস্ত তাদৃশশ্রদ্ধা রহি-ভরো: সমাদিবশাং তাদৃশশুরভকে প্রবৃত্তয়ারপি অনাদরদোষেণ ঝটিতি विशिक्तः দৌষপ্রায় এবেতি জেয়ং। বিপর্যায়: স্বাধিকারানিষ্ঠা ভদিতর নিষ্ঠাত ।। ৩৬ ॥

বত্র क বা নীচযোনাবপি অমুধ্য ভক্তে প্রবৃত্তপ্য অভদ্রং কিমভূৎ কিং প্যাৎ

**इटेरव. अन्य शासिक्छानि कर्णात अर्भका नार्टे ॥ ०० ॥** একদিশক্ষে ২১ অধ্যায়ে। ২ শ্লোকে যথা॥ জীকুষ্ণ কহিলেন, হে উদ্ধৰ ! যে ব্যক্তি যে বিষয়ে অধি-কার লাভ করিয়াছে, জাহার সেই বিষয়ে নিষ্ঠাই গুণ বলিয়া কার্ত্তিত হয় এবং তাহার বিপরীত হইলেই দোষ বলা যায় ব

বস্তুত: গুণ দোযের এই মাত্র নিশ্চর॥ ৩৬ । व्यथनकरक ए व्यशास्त्र । ১१ (शास्त्र ॥

্ৰাঃশ্ৰ প্রিভ্যাগ পূর্বক হরিচরণামুজ ভল্পন করভ কোন

র্ভন্মপকোহণ পতে ততো যদি। যত্ৰ কৰা ভদ্ৰমভূদমুষ্য কিং কো ৰাৰ্থ আপ্ৰোহন্তজ্ঞ ভাং স্বধৰ্মতঃ॥ ৩৭ ॥

**अकामतभा**॥

षाळाटेशवः खनान (नायान गग्ना निकीनिन खकान। ধৰ্মান সম্ভাষ্য যং পৰ্কান মাং ভলেৎ দ চ দত্ৰঃ ॥ ৩৮ ॥

অপিতুনে তার্ব: ভক্তিবাসনায়া অপরিছেদানিতি ভাব:। অভজভামভজডিছ यस्प्र ३: का वा व्यर्थ व्यारश न काली अर्थः ॥ ७१॥

क्रुशानुबङ्ग ठालाह हे जाति। व्हितः व्यथत्यं कृतिः नमाक क्रानीकि निकास-সারেণ কর্মজানমিলা ভগবচ্ছবণলকণা ভিতিদ শিতা। তদনত্তরকাছ আঞা-देववैश्विका यनि চ স্বান্থনি তত্ত্বাগ্রোগাভাব: তথাপ্যেবং পূর্বোক্তপ্রকারেণ खगान कुपानुकामीन त्याचान छित्रपत्री छा क बाख्यात (इत्यामात्मत्र वन निम्ह-ভাপি যো মহা ভেবু মধ্যে ভতাদিষ্টান্পি অকান নিভানৈমিত্তিকলকণান্ স্ক্রানের ব্রাভাষবিহি তান ধর্মান ভত্পলক্ষকং জ্ঞানম্পি মদননাভজিবিছাত। কত্যা সম্ভ জা নাং ভলেৎ সচ সভ্তম:। চকারাং পুর্নেচিকাছপি সভ্তম ইঞ্জাত। রুদা ভরুদ্ গুণা ভাবেছপি পুর্বিদাদা দিতি বোধয়তি ॥ ৩৮ ॥

ব্যক্তি যদি অপক দশাভেই তাহা হইতে ভ্ৰফ অথবা মৃত্যু প্রাপ্ত হয় তথাপি তাহার কি কখন স্বধর্ম ত্যাগ জনিত স্বন্ क्ष इश ? कमां शि इश ना। जात इति छक्त वा छिति एक रन অধর্ম পালনছার। কোন বাক্তিই বা অর্থ লাভ করিয়াছ ? ॥ ১৭ धकामम करक >> व्या ०२ (भ्रांदक ॥

खगरान् कहिलन, ८१ छेक्रव ! **এই**রূপে যে ব্যক্তি মং-কর্ত্তক আদিউ সীয় বর্ণাশ্রম ধর্ম সকল পরিত্যাগপুর্বক কপাসুতাদি গুণ ও কপাশুন্য প্রভৃতি দোকের হেয়োপাদেছতা তত্তিশ।

দেববিভূতাপুনৃণাং পিতৃণাং
ন কিকরো নায়মূণী চ রাজন্।
সর্বাহ্মনা যঃ শরণং শরণ্যং
গতো মুকুন্দং পরিহৃত্য কর্তিং॥ ৩৯॥
শ্রীভগবদগীতান্ত ॥
সর্বাধ্যান পরিভাঞ্য মামেকং শরণং এজ।

পরিক্তা কর্তমিতি। অংমিল: সেব: অংং চল্র: সেবা ইত্যাদিলকণ-ভেদং। শরণমনেন প্রারক্ষনাশাৎ বর্ণাশ্রমখনাশেন ন নিভাকর্মাধিকার:। কুতামিতি গাঁঠেংপি স এবার্থ:॥৩৯॥

সর্ধধর্মন্ পরিভাল্যেতি। পরিশব্দ স্বর্গতোহণি তাগিং বোধরতি। সর্ধ্ বিচার করিয়া আমাকে ভজন করেন, তিনি সাধুদিগের সংধ্য উত্তয় ॥ ৩৮ ॥

, একাদশস্বদ্ধে ৫ অ। ৩৭ স্লোকে॥

করভাজন নিগিরাজকে কহিলেন, হে মহারাজ ! যে ব্যক্তিবর্গাঞ্জন বিহিত সম্লায় ধর্ম পরিত্যাগপূর্বক সর্বব প্রযত্তে শালা মুকুন্দের শারণ প্রহণ করেন, তিনি আর দেব, খাষি, পিতৃ, ভূত, ও আজীয় মনুষ্যগণের কিঙ্কর হয়েন না ও তাঁহা-দিগের নিকটে অঞ্চলী হয়েন অর্থাৎ দে ব্যক্তিকে আর পঞ্চ বজ্ঞের অনুষ্ঠান করিতে হয় না, একান্ত ভক্তিযোগদারা সর্বার্থ দিদি হয়। ৩৯॥

ভগবলগীভার ॥

জীকৃষ্ণ কহিলেন, হে অৰ্জুন! ভুমি বৰ্ণাঞ্জনিহিত

चरः द्वार मर्द्यभारभएका स्माक्तिकानि मा ७६%॥ ८० ॥ অগস্থাসংহি ভারাং ॥ यथ। विधिनित्याधी कु मुक्तः रेनत्वाशनर्गकः।

ভথা ন স্পুশভো রামোপাসকং বিধিপুর্বাকং ॥

B SINTALD

স্বপাদমূলং ভজতঃ প্রিয়াশ্য काक्तांबाखावमा इतिः श्रात्रभः !

भार्तिकाः मर्सास्त्रप्रात्त्रका हेर्जावार्थः। श्रीकृतवास्त्रका करको समावकार ভব্বাগে পাপারুপপতে:॥ ৪ • ॥

• विधिनित्रत्भो चात्छो विधिभूर्क्तकः देविषक डाञ्चिकभूकाविधिमहि इर ॥

গম্দার ধর্ম পরিত্যাগ করিয়া কেবল আমারই শরণাগত হঙ বিহিত কর্মের অনুষ্ঠান না করায় তোমার যে দকল পাপ হইবে, তাহা হইতে আমিই হোমাকে মুক্ত করিব, এজনঃ তুমি শোক করিও না॥ ৩ ॥

অগস্তাদংহিতার ॥

বেমন স্মাত্যক্ত বিধি নিষেধ মৃক্ত পুরুষের নিকট উপস্থিত इस ना. जलान तामहत्त्वत यथाविधि छेनाननाकातिएकं के विधि নিষেধ স্পূর্ণ করিতে পারে না ॥

করভালন কহিলেন, রাজনু ! যিনি অন্ত দেবভায় উপাক্ত বুদ্ধি পরিভাগ করিয়া পরম ঈশব হরির পালমূল ভলনা करतन, जिनि इतित अकास अध्यान्त्रीत इरान यक्ति कथन প্রমাণৰশতঃ নিবিদ্ধ কর্মের জাচরণ মটিয়া উঠে, ভাষার বিকশ্ম যচ্চোৎপতিতং কঞ্জি-দ্ধুনোতি সর্বাং হুদি সমিবিফ ইতি ॥ 8১ ॥ হরিভাক্তবিলাদেহ্দ্য। ভক্তেরঙ্গানি লক্ষশঃ। কিন্তু তামি প্রসিদ্ধানি নিদ্দিশ্যন্ত যধাগতি॥

তত্রাঙ্গলকণং ॥

আ প্রিতাবান্ত গানেক ভেদং কেবলমেব বা। একং কর্মাত্র বিদ্বন্তিরেকং ভক্ত্যুপমূচ্যতে ॥ ৪২ ॥

ভাভোধন্য ন ্ভাব উপাস বুদির্থেন ত্সা কণ্শিকৈবাত্ৎপতিত মুংপাত-ক্রপেশ জাতং ॥ ৪১ ॥

আব্রোহণা একড় খানাদি চ ॥ ৪২ ॥

নিক্তি নিমিত পৃথক্ প্রাথশ্চিত করিতে হইবে না, হৃদয়ত্ত ছবি সমুদার পাপ বিন্ত করিয়া থাকেন॥ ৪১॥

ছরিভক্তিবিলাগে সাধন »কির মঙ্গ অসংখ্য বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়াছে, কিন্তু ভাহাদিগের সধ্যে যে গুলি অতিশয় প্রসিদ্ধ, আমার যভ দূর মতি, সেই সমস্ত নির্দেশ করিতেছি॥

कांश्रहाकांग यथ। म

যাহার অবাস্তরে ভেলু শক্ষিত হয়, অথবা যাহাতে স্থাপত ভেল স্পাইক্রপে প্রতীয়মান হয় না, এতাদৃশ বক্ষায়াণ এক্ প্রকৃষ্টী কর্মকে ভক্তির মুখ্য অস বলা যায়॥

ি তাৎপর্য। 'বেমন অর্চনাদি ভক্তাঙ্গের আভার্তারিক অন্ত্রেক ভেদ দৃষ্ট হর এবং শুরুপালাপ্রায়াদির অন্তর্গত কোন ক্রাণাব্যক্ত প্রভেদ শক্তিত হয় না॥ ৪২॥ শুরুপাদাপ্রার (১) স্তম্মাৎ ক্ষণীক্ষাণিদিক্ষণং (২)।
বিপ্রভিন্ন গুরোঃ দেবা (৩) সাধুবর্ত্তনিং (৪,);
সদ্ধাপুচছা (৫) ভোগাদিত্যাগঃ কৃষণস্য হেড়েবে (৬)।
নিবাদো বারকানেতি গঙ্গাদেরপি সনিধে (৭) দ
ব্যবহারের সর্বেষ্ যাবদর্থানুবর্তি হা (৮)।
হরিবাসরসম্মানে। (৯) ধাত্র্যম্থাদিগোরবং (১০)।
এষামত্র দশাক্ষানাং ভবেং প্রারম্ভরপাহা॥

গুকপাদাশ্রর ইতি। জন্মিন্ গ্রন্থে অহা বিবিধা:। ওংপত্তিকা: চীকাক্রক-লাভার্ত্ত কলিভান্চ। অর পূর্বা বিবিন্দ্যক্তকা:। টুউত্রাপ্ত জন্মা,ইভি ভেলো জের: কুন্দীকাদীতি দীকাপুর্বকশিক্ষণমিতার্থ:। সাধুবদ্ধাস্থি

গুরুপাদপদ্মে ভাশ্রের গ্রহণ ১। ক্ষমস্ত্রে দীক্ষিত্র হইরা-গুরুদেশের নিকট হইতে তত্তবিষয়ক শিক্ষালাভ ২। বিশাস সহকারে গুরুদেশ্য ০। সাধুদিগের আচ্রিত পথের অনুগামী হওন ৪। সক্ষা জিল্ডাগা ৫। শ্রীক্ষের প্রসমত। লাভের উদ্দেশে ভোগাদিত্যাগ ৬। ঘারকাদি ধান অথবা গলাদি মহা-তার্থে নিবান ৭। যে কোন বিষ্ত্রের অনুষ্ঠান করিতে হইতে, ভাহাতে বে অংশের সম্পাদন না করিলে ভতিলাভ হর্মন, দেই পর্যান্তের অনুষ্ঠানক্ষণ বাবদর্থান্থবিতা ৮। একান্দী কন্মান্ট্রী প্রভৃতি হরিবাস্বের বর্ণাভিত সন্মান ৯। এই দ্বানি আস্ক্রান্ট্রির আরম্ভর্কির প্রথিত ভাইন্দ্রির সঙ্গত্যানো বিদ্বেণ ভগৰ্ষিমু নৈৰ্ছনেঃ (১)।
ভিৰ্যাদ্য নুসুবৃদ্ধিছাং (২) মহারপ্ত দিয়কুদ্যমঃ (০)॥
বহু গ্লন্থ লাভাগে ব্যাখ্যা নাদ-বিবৰ্জনং (৪)।
ব্যবহানেহ প্যকাপণিং (৫) শোকাদ্যব শবর্তিভা (৬)॥
আন্যদেবানবজ্ঞাচ (৭) ভূ ভামু বেগদায়ি ভা (৮)॥
শেবানামাপরাধান।মুদ্ত বাভাবকারিভা (৯)॥

चर्डिमर नगान्ति ভশ্ল ভালি বিধিনে বিషং। কৃষ্ণ সোতি কৃষ্ণ প্রতিপ্রতি।

করিতে পারিলে ভক্তিদেবীর আবির্ভাব হইবে॥

দ্ব হইতে ভগবিষ্থিজনের সংসর্গ পরিত্যাগ ১। অন ধিকারী ব্যক্তিকে শিষ্যাদিরপে অঙ্গীকার না, করণ ২ শহৎ
আরস্তে অর্থাৎ মঠানি নির্মাণিবিষয়ে নিরুদ্যগতা ৩। বহুবিধ
প্রেম্ন ও চতুংষন্তিকলার অভ্যাদানা ব্যাঞ্চা এবং বামপরিবর্জন ৪া

মার্বহারে রুপণতা প্রা অর্থাৎ যে দ্রব্য লাভ হয় নাই কিছা
লাম দ্রেশ্য বিনন্ট ইইমাছে, ভ্রিষয়ে শোচনা না করিয়া অদীনভাব প্রকাশকরণ অন্যাশ্যাহ ও নামাণারাধ উৎপন্ন হইতে
না সেওন অর্থাং মাহাতে ঐ চুই অপরাধ জন্মে এমত কার্য্য
ক্ষানিশানি দ্রু বা করণ অর্থাৎ যনি কোন ব্যক্তি কৃষ্ণনিশা
ক্ষানিশানি দ্রু বা করণ অর্থাৎ যনি কোন ব্যক্তি কৃষ্ণনিশা
ক্ষানিশানি দ্রু বা করণ অর্থাৎ যনি কোন ব্যক্তি কৃষ্ণনিশা
ক্ষানিশানি দ্রু বা করণ অর্থাৎ যনি কোন ব্যক্তি কৃষ্ণনিশা
ক্ষানিশানি দ্রু বা করণ অর্থাৎ যনি কোন ব্যক্তি কৃষ্ণনিশা

क् १३ व स स्वि (घरवि निन्मः मा में क्रिक्टा, ( > ) ব্যতিরেকভয়ামীযাং দশানাং স্যাক্সুটিডিঃ # ষদ্যান্তত্ৰ প্ৰবেশায় দাৰক্ষেহপাদ্বিংশতে:। जाः श्रान्यावाकः अक्रमानाध्यम् करः ॥ ध्रुडिटेव अविक्यानाः ( > ) स्टबर्नामाकतमार ('२) নির্মাল্যাদেশ্চ (৩) তদ্যাগ্রে তাওবং (৪) দওবছজিঃ (৫) অভ্যুত্থান (৬) মনুত্ৰজ্যা (৭) গ্ৰিঃ স্থানে (৮) প্রিক্লমা:(৯) অর্চনং(১০)পরিচর্যাচ(১১) গী ৩ং (১২) সন্ধীর্ত্তনং(১৩) অপঃ(১৪) विक्रिखिः(১৫) छवशार्ठ मह (১৬) खारमारेन (वना (১৭) शामार भाः (১৮)

হেতৃ ° ঋৎ প্রদাদ অদর্থমিত। অং তা বৈষ্ধিকরণাভাপথে চতুর্থের ) এই দশটা অসব্যতিরেকে সাধনভক্তির উদয় হয় না, এজন্য এই দুশ অঙ্গের অনুষ্ঠান অবশ্যকর্ত্তবা। যদিও উল্লিখিত বিং-শতি অস ভ'ক্ততে প্রবেশ করিবার ঘারস্বরূপ, তথাপি গুরু-भागाञ्चर्याप जिन्ही अश्हे अधान विषया कीर्तिक स्टेश थाटकं ...

হৈনফ বচিক্ত ধারণ ১। শরীরে হরিনাথাক্ষর লিখন ২ 🖫 নিশ্মাল্য ধারণ ত। ভগণানের অত্যে নৃত্যুকরণ ৪। দেওৰং নমন্ধার ৫ া প্রীক্ষের প্রতিমূর্তি দর্শন করিয়া গাতোশাম 😘 অসুব্ৰজ্যা অৰ্থাৎ ভগবানের প্ৰতিমূৰ্ত্তির পশ্চাৎ পশ্চাৎ গ্ৰন্ ভগব।নের অধিষ্ঠ'ন স্থানে গ্রমন ৮। পরিক্রমা ৯। আইন (পূজা) ১০ বি পরিচর্যাত ১১। সাই কুন্ ৯ ছ । শ अश 38 | विकाश (निरंत्तन) 30 | खनशांठ 36 | देन्द्रवसूर-যার এংব ১৭ লি পালের অর্থাৎ চরুণান্ত্রের আর্থান

धूनगाना। निर्मात्र छ १ (১৯) क्री पूर्वः क्यू ष्टि (२०) तीक ११ (२०) छात्र। विर्मार मिन १२०) छात्र। विर्मार १२०) छात्र। विर्मार १२०) छात्र। विर्मार १२०) छात्र। १२०) माञ्च (२०) म

প্রস্য হেভোবস্টীভাল ষ্ঠা হেভুপ্রয়োগ ইতি বংলহেখোঃ সামানাধি-

खर्ग २৮। धृणगानापित (गोत्र छ शर्ग २०। श्री मुर्डिन मिन १०। गात १०। मिन स्था प्राप्त १०। श्री मिन मिल म्या १०। मिन स्था १०। श्री मिन स्था १०। श्री मिन स्था १०। स्था

## THE SHALL A SHALL SHALL

गंकाकीशान्त विषय गरियों गर्म व्यक्ति गरि ( 20 ) । नामगढ़ी ईनः ( 20 ) किन्यापूर्वायकान विक्तिः ( 20 ) । जगानार शक्कशामा शृक्तर विविधिकां छ । निधिन टेक्केंग्रर्थायां शृक्तरमात की ईक्सर । रेकि काषक्ष्मीकाकः करनानाम्शांगर्भाः । क्रूःबर्धिः शृथक् माक्याकिक क्रियार क्रियार । वर्षार्था सुमरक्रोन्यायुगार्यन्योग्रस्क ॥ 20 ॥

कत्ना এव अवुकः। क्रकार्तः (कानाविकानः देवासाह्दविकामन्त्रानिः क्रकः आनक्षरः अनुनारं, देरभवारः। व्यक्तिक्तारः रमाकविकन्ता वृक्षः ।३५,३०,३

ভত্ত প্রিপ্তরাগালিকারে। ববৈদ্যালগোঞা ভারানস্কং প্রান্দ্যাত জিজাক্ষা ভারে উত্তর । শাব্দে পর্টেট্ট নিঞ্চাতং অক্ষান্দ্যালারং ॥ ৪৪ ॥ কুফ্টীকাদিশিকাং বধা ভত্তিব ॥ ভত্ত ভারতান্ ধর্মান্ শিকেদ্ গুর্মাক্টার্ডঃ।

শুরুপাদাশ্রের যথা একাদশহ্রে ৩ আ। ২২ প্লোকে ॥
থাবুর কহিলেন, মহারাজ! সংসারমধ্যে কোন হথই
নাই, কেবল জংখমাত্র, অতএব যে ব্যক্তি নিত্যস্থাধর
অভিলাধ করিবেন তিনি শাস্ত গুণসম্পন্ন গুরুদেবের আশ্রের
গ্রহণ করিবেন। ফলতঃ যিনি শন্তক্র বৈদে ন্যারাক্র্যান্ত
ব্যাখ্যাদারা ভব স্থিরীকর্ণে নিপুণ এবং শুরুনপরিপাক
নিব্যান শ্রহ্যাত্র, তাহারই উপলেশক্রীনে বর্ধার্থ অধিকার ॥

जिल्ला । बाहात नाजकान नाहे क्षर ककात्र वाक्रम द्रम्या यात्र ना ७ कात्र द्रम्यानिक कर दर्श नाहे, ध्रक्रश बाक्रिक कर बनियाँ है।हात्र नाक्षिक हहेर्य ना ॥ 88 ॥

ं , अक्रासरक विक्रे क्येक्सिकासि-निक्स ।

ं नेपा अकामनेकाक ० ण । २० क्रांट्य ॥ धार्क कविरमन, शुक्रामात्त्र निक्षे त्रमनपूर्वक वेलीना क्रे ब्रोकि मामाधन मामा द्वि साराष्ट्र शतिकृष्ठे स्टान, राष्ट्रक्री महत्वविष्ठा शकास्त्र स्थल व्यवस्ति राष्ट्रा व्यान क्षित्र मनावतासूत्रका दिख्यां माधायां हिन्दः ।
विव्याद्धन करताः तमा वर्षा करेत्वयं ॥
मागितः मारं विकानीतात्रावयतां करि हिर्दः
म मर्कात्र्धान्द्यक मर्वदन्त्यस्या कर्मः ॥ ८० ॥
माभ्यक्षास्त्रक्तरी कारणः ॥
म मृगाः दक्षत्रमार दश्कः नहाः महानयिक्तः ।
मनवाश्रक्षयः भृद्द्य यन मक्षः श्रक्तिः ॥
स्वायामस्त ॥

### ভাগৰভধৰ্ম শিকা করিবে ৷

विश्वान संस्कादा छक्रात्रम।

and a second control of the second control o

यथा अकामणकर्ष >१ च । २२ ८म्राटक म

ভগবান কহিলেন, হে উদ্ধন। আচার্যাকে আকার আর্থন ক্লান করিবা, কলাচ মসুষ্য বৃদ্ধি করিয়া ভাষার বিজিয়া কর্মন করিলেও তাঁহার প্রভি অসুরা করিবা না, বে হেতু ভর পর্যা-ক্ষেম্বর ৪৪॥

সাধুৰত্ম কুৰৰ্তন ঘৰা কলপুৱালে 🖫 🐇

পূর্বভন মহাজনগণ যে পথ অবস্থান করিয়া পঞ্জনকারাণ স্থান লাভ করিয়াছেন, তাঁহাদেরই অনুসর্ধ করা কর্তবা, থে হেতু ভাষাতে প্রস্ন জেলো লাভ হইবা থাকে, একং ক্থন সম্ভূপ্ত হইতে হয় পা ॥ শ্রুতিপুরাশাদি-পশ্বরাজনিধিং নিনা। একান্তিকী হরেছজিক্লংপাভারেন করতে। ইতি ॥ ৪১॥ উলিনৈকান্তিকীবেদ্বিমনিচারাৎ প্রতীয়তে।

উচ্চ সাধুবল শ্রাদিবিধাবাক্ষমের ভতক্তর্করণে দোরমাহ শ্রুকীতি।
শ্রুকালবোহপাত্র বৈশ্বানাং স্থাধিকারপ্রাপ্তান্তরাগা এব জেগা:। স্থেহধিন্
কার ইড়াক্ষে:। শ্রুকি স্থাদিবিধিং বিনেতি নান্তিক্তরা তং ন মন্ত্রেগি:।
নামজানেন স্থালসোন বা তাকেতার্থ:। ধাবলিমীলা বা নেত্রে ইড়াক্ষে:।
শ্রুকান্তিকনিষ্ঠাং প্রাপ্তাপি ॥ ৪৬ ॥

নম্প, তহি কথাবৈকান্তিকী সাাং ওজপতে চ কথমুংপাতার করতে ভলাই ভলিজিতি। ইয়ং নাজিকভাষয়ী বৌদ্ধাদীনাং বৃদ্ধান্তাতেয়াদিয়ু ভলিকীদৈ কাভিকীব প্রভীয়তে তদপ্যবিচারাদেবেত্যবং। ওজ হেতুং বদ্যামাহ

শুভি, শুভি, পুরাণ ও পঞ্চরাত্র এই সকলে যেরপ বিশিক্ষিত ইইয়াছে ভাষা উল্লেখন করিয়া অর্থার্থ ঐ সকল শাংক্রীর প্রতি অনাদর প্রকাশ করত হরিতে ঐকান্তিক ভক্তি ক্রিলে, ভশ্মরা কল্যাণ লাভ হয়না, বরক উৎপাতের নিমিত্ত ক্রিত হয় অর্থাৎ ঐ সকল শাস্ত্রের বিধি অনুসরণপূর্বক ভক্তাক যাজন করিবে গ ৪৬ ॥

উল্লিখিত ব্ৰহ্মান্দীয় খাদ্যে বরা হইয়াছে, একান্ডিকী ভক্তি উৎপাতের নিমিত কলিত হয়, ভাহাতে কোন ফল লাভ হয় না। ইহাতে এরপ আগঙ্কা হইতে পারে যে, আছি শৃতিপ্রভৃতি প্রামাণ্য শান্তের অনাদরকেই নাতিক্তা হলে, অভএব এ সকল শ্লাত্রের প্রক্তি অবজ্ঞা প্রকাশ হইলে

## ্ৰস্ত হস্ত তথা নৈৰ যদশান্তীয়তেক্ষাতে। সন্ধৰ্মপুচ্ছা যথা নাৱদীয়ে। অচিৱাদেৰ সৰ্বাৰ্থঃ সিধ্যতেগ্ৰামন্তীপিতঃ ।

অশাস্ত্রীয়তা শাস্ত্রাবজ্ঞানয়তা তত্ত্তে ভাত্ত শাস্ত্রখন্ত দেবি । শাস্ত্রখনিছাদিতি ন্যায়াং । তদা তত্তদ্বতারিভগ্রদাক্তাশ্লাদিসংপরক্ষ্রাপ্রাপ্তবেছবেদালায়াং স্ত্যাং ক্পমেকাঞ্জিলী সা স্যাদিতি ভগ্তাং । কিঞ্, হেকৈছ

একান্তিকী ভক্তি লাভ হইতে পারে না এবং যদিও একান্তিকী ভক্তি লাভ হয়, তাহা হইলে ভদ্মারা কেনই বা কল্যাণ লাভ না হইবে? ইহার সমাধান এই যে বৌদ্ধদিগের বৃদ্ধ এবং দত্রাত্রেয়াদিতে গে একান্তিকী ভক্তি দেখা যায়, উহা কেবল নান্তিকতা ময়ী, তবে যে উহা একান্তিকী বলিয়া প্রভীতি জন্মে, তাহা কেবল অবিচার বিজ্ঞন্তিত, কেন না ঐ কোন্ত্রন্দা, তাহা কেবল অবিচার বিজ্ঞন্তিত, কেন না ঐ কোন্ত্রন্দা, তাহা কেবল অবিচার বিজ্ঞান্তিত, কেন না ঐ কোন্ত্রন্দা, তাহা কেবল অবিচার প্রজ্ঞান্তির, কেন না ঐ কোন্ত্রন্দা, তাহা কেবল অবিচার প্রজ্ঞান্ত কান্তির প্রক্রিয়া পায় ভার্মিক কিরপে একান্তিকী ভক্তি বলা যাইতে পারে, অপর যে শাজে বৃদ্ধদেবাদি শ্রীক্রক্ষের অবভার বলিয়া কর্তিত হইয়াছে, গেই শাজেই অহ্বমোহনের নিমিত্ত ভগবান্ বৃদ্ধদেব অবভীর্ণ হইয়া পারও শাস্ত্র প্রথমন করিয়াছেন এমত শুনা বার ।

সম্ব্রজিজাগা যথা নার্গীয়ে ॥ সাধুনিগের অসুষ্ঠিত এবের ভড় অব্যত হইবার নিরিক্স সন্ধর্মনারবোধার যেষাং নির্বন্ধিনী নতিঃ ॥ ৫৭॥
কুফার্থে ভোগাদিত্যাগো যথা পাল্মে॥
হরিমুদ্দিশ্য ভোগ্যানি কালে ত্যক্তবতস্তব ।
বিষ্ণুলোকস্থিতা সম্পদলোলা সা প্রতীক্ষতে ॥
বারকাদিনিবাসো যথা স্কান্দে॥
সংবৎসরং বা ষ্থাসান্ সাসং সাসার্দ্ধমেব বা ।
ভারকাবিনিনঃ সর্বেন নরা নার্য্যস্চভূম্প্রাঃ ॥

বেদাবি প্রাণানের বৃদ্ধানীনামবভারতঃ গমাতে ভেনৈব বৃদ্ধনাত্রমোহনার্থং পাষ্প্রশাল্প প্রকৃষ্ণ ক্রার্থে বিষ্ণুশ্বাদে। তির্গুনামবাাথানে। তওঁজু প্রভাবদাবেশমাত্রকোপাথারতে তল্পং তদাজ্ঞাপি ন প্রমানীকর্তব্যেতি ৪৪৭ ত্যুক্তেতি তাক্তবতঃ ছামিতার্থঃ ৪৪৮॥

ষাহাদিগের মতি আগ্রহশালিনী তাহাদিগের অভিল্যিত সকল অর্থ সচিরকালের মধ্যে দিন্ধ হইয়া থাকে॥ ৪৭॥

শ্রীক্ষের প্রীতিনিমিত ভোগত্যাগ যথা পালে।
ভাগনি হরি উদ্দেশে যথাকালে ভোগদকল পরিত্যাগ
করিয়াছেন, এই কারণে বিষ্ণুলোকস্থিত অচঞ্চল সম্পদ্ আপনাকে প্রতীক্ষা-করিতেছে।

ষারকালি নিবাস যথা পদ্মপুরাণে॥
যাকার বারকানগরীতে এক বৎসর অথবা ছয় মাস কিন্ধা
এক নাস বা অর্জ নাস নিবাস করিয়াছে, ভাহারা নর হউক বা নারী হউক, সকলেই চতুত্ব হইবে ॥ আনিপদেন পুরুষোভ্যবাসন্ট ষ্থা প্রাক্ষ্যে ।
আহা ক্ষেত্রস্য মাহান্ত্রাং সমস্তাদ্দশ্যোজনং ।
দিবিতা যত্র পণ্যস্তি সর্বানেষ চত্তু জান্ ॥ ৪৮ ॥
গগাদিবাসো মথা প্রব্যে ॥
যা বৈ লসচ্ছীতুলসীবিমিজ্ঞকুফাজিরেপুভ্যধিকাম্বনেত্রী ।
পুনাতি লোকামুভয়ত্র সেশান্
কন্তাং ন সেবেত মরিষ্যমাণঃ ॥

## আদি শব্দপ্রয়োগ হেডু পুরুষোত্তম বাদ যথা ত্রহাপুরাণে ॥

পুরুষোত্তম ক্ষেত্র চতুর্দিকে দশযোজন পরিমিত ছান, ইছার মাহাজ্য অনিব্যচনীয়, যেহেতু দেবগণ পুরুষোত্তম ক্ষেত্রনিবাসি সকলকেই চতুর্ভুজরূপে দর্শন করেন ॥ ৪৮ ॥

### गत्राविनियाम यथा व्यथ्य ।

সৃত শৌনকাদিকেদখোধন করিয়া কছিলেন, হে ঋৰিগণ! মৃত্যুসময়ে রাজা পরীক্ষিতের গলাতীরে গমন বিচিত্র
নহে ঐ নণী শ্রীকৃক্ষের তুলসীমিঞ্জিত চরণয়েপু সংস্পৌ,
সর্কোৎকৃষ্ট সলিল বহন করত লোকপাল সহিত সমস্ত লোককে অন্তরে ও বহির্ভাগে পাঁবিত্র করিতেছেন, ইহাতে
আপনার মরণ আসম্পানিরা কোন্ ব্যক্তি সেই স্বরভর্মিশী
গলাদেবীর সেবা না করিবে ? ॥

यानपर्याञ्चर्विका वर्षां याना वाना प्राची निर्देश हरेल ह

# যাবদর্থাসুবর্ত্তিতা যথা নারদীয়ে ॥ যাবতা স্যাৎ স্থনিকাহ: স্বীকুর্য্যাৎ তাবদর্যবিৎ। স্থাধিক্যে নূনেভায়াঞ্চ চ্যবতে পরমার্থতঃ॥ ৪৯॥

স্নিৰ্কাহ ইতি। স্বভক্তিনিৰ্কাহ ইতাৰ্থ: ॥ ৪৯ ॥

## यथा नातनीत्य ॥

যে পরিমাণ নিয়ম অনুষ্ঠান করিলে আপনার ভক্তিনিকাছ ছইতে পারে, অর্থজ্ঞ পুরুষ সেইরূপ নিয়ম স্বীকার করিবেন, কারণ নিয়মের আধিক্য অথবা ন্যুনতা হইলে, পরমার্থ হইতে দ্রুষ্ট হইতে হর॥

তাৎপর্য। যদি কোন ক্ষণ্ডক্ত পুরুষ অনুরাগ বলতঃ
এরূপ সক্ষর করেন, "আমি প্রত্যহ একলক্ষ নাম জপ করিব"
কিন্তু তাঁহার সাধ্য নাই যে তিনি প্রত্যহ এরূপ নিয়ম রক্ষা
করিতে পারেন, তুই চারি দিবদ প্ররূপ নিয়ম পালন করিতে
করিতে অক্সাৎ কোন সংসারিক কার্য্য উপস্থিত হইল,
তাহাতে তাঁহার উল্লিখিত নিয়ম রক্ষা হইল না, তথন তিনি
মনোমধ্যে এই নিশ্চয় করেন "অদ্য বিষয় রক্ষা করি, কল্যকার নিয়মের সহিত অবলিন্ট নিয়ম রক্ষা করিব" পর দিনও
প্ররূপ সাংসারিক ব্যাপার ঘটাতে কোন নিয়মই রক্ষা হইল
না, ক্রমশঃ এইরূপ আচরণদারা ভক্তির প্রক্তি অনাদর উপদ্বিত্র হয়, অভএব প্রত্যাহ অবাধে যাহা নির্বাহ করিতে
পারিবে দেইমাত্র নিয়মের পরিপ্রাহ করিবে, অধিক বা দ্যুন
হুইলে ভক্তির পৃষ্টি হুইবে না, উহা প্রতিনিয়ত ভুর্বল হুইরা
পান্ধিরে গ্রহ্ম ৪৯ ॥

হরিবাসরসম্মানো বধা জক্ষবৈবর্ধে।
সর্বাপ্রশাসনং পুণ্যমাত্যজিকং জ্বা।
গোবিন্দস্মারগং নুণামেকাদশ্যামুপোষণং ॥
খাত্র্যখ্যাদিগোরবং যথা জাল্যে॥
অখপত্লসীধাত্রী-গোভ্মিন্থরবৈক্ষবাঃ।
প্রজিতাঃ প্রণতা ধ্যাতাঃ ক্ষপরস্তি নৃণামঘং॥ ৫০॥

অখবদ্য ভবিভ্তিরণবাং প্রাবং। ভ্মিন্নরা বান্ধণাং। গোরান্ধণরো-হিলোবভার্বান্তগবতো ভাগবতৈরেভাবলি প্রাাবিভি ভাবং। সর্বেবাদেবাং ভূলদীবৈক্ষবদাহিত্যোজিবি চিকিংদানিরদনার। তত্র গ্রাং প্রাত্ বীগো-পালোপাদকানাং পর্মাজীইপ্রান। যথা প্রীগোভ্নীরে গ্রাং কভূবনং কুর্বাং গোগ্রাসং গোরান্দিশং। গোদু নিভাং প্রদান্ন গোণালোহিশ ক্রাম্ভাতি ১০০

হরিবাসরদম্মান যথা ত্রহ্মবৈবর্তে॥

একাদশীতে উপবাস করিলে সমুধ্যমাত্রের সমুদার পাশ

বিন্ফ এবং অভিশয় পুণ্যাভ হয়, বিশেষভঃ ইহা গোকিশকে স্মরণ করাইয়া দৈয়ে॥

আমলকী এবং অখথানি রুক্তের গৌরব। যথা কলপুরাণে॥

जन्न ज्नमी जानको, त्या, खाजन अवर देवस्य देवी-निभक्त शृक्षा, नमकात ७ व्यान कतित्म, देवाता ममूर्यमित्यक शांभ विनक्षे कंद्रन ॥ ४० ॥ অধ ঐকৃষ্ণবিমুখজনসঙ্গতালো—
যথা কাত্যায়নযংহিতায়াং ।
বরং ত্তবহজ্বালা পঞ্জরান্তর্ববিভিতিঃ।
ন শৌরিচিন্তাবিমুখজনুসংবাদবৈশৃসং ।

বিষ্ণুরহৃদ্যে চ ॥

श्वालिঙ্গনং বরং মন্যে ব্যালব্যাক্তজ্বলোকিসাং ।
ন সন্ধঃ শল্যযুক্তানাং নানাদেবৈকদেবিনাং ॥ ৫১ ॥
শিষ্যাদ্যনসুবন্ধিত্বাদিত্রয়ং যথা সপ্তমে ॥
ন শিষ্যানসুবধীত গ্রন্থাকৈবাভ্যদেদ্বহূন্।

বৈশসং বিপত্তি:। শল্যমত্র তত্তদেবতাস্তরসেবাবাসনা॥ ৫১॥

হরিপরাজ্যুথজনের সংসর্গ পরিত্যাগ প্রদীপ্ত অগ্নির শিখাপিঞ্জরে অবস্থান করিতে হয় সেও বরং ভাল, তথাপি যেন কৃষণ্টিন্তা-বিমুখ জনের সহবাদরূপ কেশ ভোগ করিতে না হয়॥

বিষ্ণুরহসোক্তেও এইরূপ॥

যদি দর্প, ব্যাত্র ও কুজীরের সহিত আলিঙ্গন ঘটে, তাহাও ত্রোয়স্কর, তথাপি যেন বাসনারূপ নানাদদৈব গত শল্যবিদ্ধ নানা দেবোপাদকের সংসর্গ না ঘটে॥ ৫১॥

শিষ্যাদ্যনমুবন্ধিত্ব, মঠাদি নির্মাণবিষয়ে নিরুদ্যমতা এবং বৃত্ত্বিধ গ্রন্থভাগাদি পরিবর্জন॥

যথা সপ্তমক্ষক্ষে ১০ আ। ৭ স্লোকে॥ 'নারদ যুধিন্ঠিরকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, রাজন্! ন ব্যাব্যামূপযুদ্ধীত নারস্তানারতেৎ কচিৎ ॥

ব্যবহারেহপ্যকার্পন্যং যথা পালে ॥

অলকে বা বিনক্টে বা তক্যাত্মালনসাধনে।

অবিরবমতিত হা হরিনের বিয়া সার্থের ॥ ৫২ ॥

শিষ।বৈর্থাবধীয়াদিভাদিকো যদাপি সন্নাসধর্মভথাপি নির্ভালাই পানোষাং ভক্তানামুপ্যুক্তাত ইতি ভাব: । এভচ্চানধিকারিশিয়াদাপেকরা । শ্রীনারদাদে ভক্তুবণাং ভত্তংসম্প্রদায়নাশ প্রস্থাচ্চ । অনাথা জ্ঞানশাঠা-পতে: । অতএব নাহ্বধানীয়াদিভি স্বস্থাদায়বৃদ্ধার্থমনধিকারিশাংশি মাল্ট্রীয়াদিভার্থ: । বহুনিভি ভগবছিমুখাননাাংশ্ভির্থ: আরস্তানিভাপি চভ্তুর

অলক ইতি। শ্বরণাদিপরাণানেবেয়ং রীতি:। নেবাপবৈস্ক বর্ধা লাভ্যমেই সেবা কার্য্যা। ন তু যাজ্ঞাদাতিশবেন নাতিকার্পণ্যং কার্য্যমিতিক্রেরং ॥৫২॥৫৩॥

যিনি সন্ন্যাগাশ্রম অবলম্বন করিয়াছেন, তিনি অনধিকারি ব্যক্তিকে শিষ্য করিবেন না, যাহাতে ভগবস্তক্তি তিরোহিত হন্, এমত বহু গ্রন্থ অভ্যাগে বিরত হইবেন, শাস্ত্রব্যাধ্যাদ্যায় জীবিকা নির্বাহ্ করিবেন না এবং মঠাদি নির্মাণবিষ্য়ে উদ্যম করিবেন না ॥

ব্যবহারে অকার্পন্য যথা পদ্মপুরাণে ॥
হরিভক্তিপরায়ণ জন জোজন ও আজ্বাদন সাধনবিবরে
লাভ অথবা লবের বিনাশ ঘটিলে, ব্যাক্শটিভ না হইয়া মনো
দধ্যে হরিকে সামণ করিবেন ॥ ৫২ ॥

শোকাদ্যবশবর্ত্তির ষথা তত্তিব ॥
শোকামশাদিভির্ভাবৈরাক্রান্তং ষদ্য মানসং ।
কথং তত্ত মুকুন্দস্য স্ফুর্ত্তিসম্ভাবনা ভবেং ॥
স্থানেবানবজ্ঞা যথা তত্তিব ॥
হরিবের সদারাধ্যঃ সর্বাদেবেশরেশরঃ ।
ইতরে ব্রহ্মক্রদাদ্যা নাবজ্ঞেয়াঃ কদাচন ॥
স্থাসুদ্বেগদায়িতা যথা মহাভারতে ॥
পিতের পুত্রং করুণো নোদ্বেজয়তি যো জনং ।
বিশুদ্ধস্য হ্যীকেশস্তুর্ণং তস্য প্রসীদ্তি ॥ ৫০ ॥

শোকমোহাদির অবশীভূততা।
যথা পদ্মপুরাণে॥

যাহার হাদয়দেশ শোক ও জোধে পরিপূর্ণ, তথায় কি-রূপে মুকুন্দের স্ফূর্ত্তির সম্ভাবনা হইবে ?॥

অন্যদেবতার প্রতি অবজ্ঞাশূন্যতা। মধা পদ্মপুরাণে॥

ভগবান্ হরি সমস্ত দেবেশ্বরদিগের অধীশ্বর, এতএব সর্বদা তিনিই আরাধ্য, কিস্ত ইহা বলিরা, ত্রহ্মরুদ্রাদি অন্যান্য দেবতার প্রতি কথন অবজ্ঞা করিবে না॥

প্রাণিদিগের প্রতি অভয় দান, যথা মহাভারতে।
বিনি প্রাণিমাত্রকে উদ্বেগ না দিয়া, সকক্ষণ পিতার ন্যায়
পুত্র নির্বিশেষে অবলোকন করেন, সেই বিশুদ্ধ হৃদদ্বের
প্রতি ভগবান্ হ্বীকেশ আশু প্রসম হয়েন। ৫০।

त्मयानामाणवाधामाः वर्ष्यनः यथा वातादः ॥ ममार्कनाणवाधा (य कीर्काटक वर्ष्य महा। रेवकटवन मन। एक वर्ष्यनीहाः श्रवकृतः ॥

সেবানামাপরাধানাং বর্জনমিতাদি। বারংছে পালে চ বথাক্রবং বোজাং।
ভক্র সেবাপরাধা আগমাসুসারেশ গণাতে। বানৈবা পাছকৈবাপি গমনং জগবলপূছে। দেবােংসবালাসেবাচ অপ্রধামস্তদপ্রতাং। উচ্ছিটে বাপাশেচে বা
ভগবন্দমাদিকং। একহন্ত প্রধাসন্চ ভৎপুরস্তাং প্রদক্ষিণং। পাল প্রসার্থকাপ্রে
ভণা পর্বঃস্করনং। শরনং ভক্ষণকাপি মিথা ভাবণ্যেব্রচ। উট্রেভাবা মিথোলয়ো রোদনানি চ বিগ্রহং। নিগ্রহাস্থাং। তৈব নৃক্তি ক্রেভাবণং। ক্ষলাবরণ্টকর পরনিন্দা পরস্কৃতি, অল্লীলভাবণকৈব অধানার্বিমান্দশং। শক্ষে
সৌণোপচারণ্ড অনিবেদিতভক্ষণং। ভত্তংকালোয়্রনানাক ক্সাধীনামনর্পাং।
বিনিযুক্তাব্দিইস্থাকানং বাঞ্চনাদিকে। পৃষ্টিক্তাস্নাইকর প্রেধামভিবাধনং,

(मराश्रदाध वर्জन, यथा वदाहभूताए। ॥

বরাছদের পৃথিবীকে কছিলেন, ছে বস্থধে! **সামার** অর্চনা-সম্বন্ধীয় অপরাধ আমি কীর্ত্তন করিতেছি, বৈষ্ণবৰ্ণণ যন্ত্রপূর্ব্যক সর্বনা ঐ সকল অপরাধ বর্জন করিবেন।

আগমশান্তে সেবাপরাধ বাত্তিংশং প্রকার বলিয়া কীঠিত হইয়াছে। যথা যান অর্থাং শিবিকাদি অথবা পদে পাছকা প্রদান করত ভগবদগৃহে গমন্। ১। ভগবংপ্রীভ্যর্থে কত উৎস্বাদির অর্থাং ভগবংসমন্ত্রীয় দোলপ্রভৃতি উৎস্বের অক্সব। ২। তাঁহার সম্মুধে প্রশাম না করা। ১। উচ্ছিক

चारी त्योगः निवासावः त्वकामिनागः छवा। चनवावास्त्वा विकार्याविःगः পরিকীর্ভিতাঃ। বারাহে চ। যে জন্যাপরাধান্তে স্ভক্ষা নিখ্যন্তে। রাজার-रकाबनः श्वाखानादत्रं हृदत्रः न्यानाः । विविश् विमा हर्यु । त्रानाश्चारः । वानाश्चिमा चयात्वाम्बाहेनः। क्कृतपृष्टेसकामः धरः। व्यक्ततः त्योमञ्जः। পृकाकात्व विष्, १ मर्भाव मर्भार । भक्तमाना निक्मवका धुननर । अनह शृष्णेन शृक्षनर । छथी अक्षा महकार्ष्ट क्या निधूबनः छवा। म्लुहे। तकः चलाः मीनः छ्वा मृठक-रमवेठ । बक्तः मीनमर्था ठक भावकाः मनिनः भछैः। भविभात्र मृठः मृष्ट्री विश्-চ্যাপানমাকতং। কোধং ক্বলা মাণানক গলা ভ্কাপাজীণগুক্। ভ্কা কুহনতং भिनाकः टेडणां छात्रः विधात छ । टरतः म्मार्गा हरतः कर्याकताः भावकावहः । তথা তত্রৈবাদার। ভগবছাস্তানাদরেণ তংপ্রতিপতি:। অন্যাস্ত্রপ্রবর্তনং। ভদগ্রততামূলচর্মণং। এরগুপরস্থপুলৈরর্জনং। আত্মরকালে পূজনং। পীঠে ভূমৌ বোপবিশা পূজনং। স্থপনকালে বামহন্তেন তৎম্পর্শঃ। পর্যাষ্ট্রতর্গাচি-ঠৈতর্বা পুলৈবর্চনং পূজায়াং নিষ্ঠীবনং। তসাাং স্বগর্বপ্রতিপাদনং। ভির্তৃক্ পুগু ধৃতি:। অপ্রকালিতগদবেংপি তল্দিরে প্রবেশ:। অবৈঞ্বপ্রকনিবে-मनः। अदैवक्षवृद्धी भूजनः। विद्यममभूजविदा कभागिनः पृष्ठे। वा भूजनः। নথান্তসা স্নপনং। ঘর্ষাবৃলিপ্তবেৎপি পূজনমিত্যাদরঃ। অন্যত্র নির্মানাল্ভবন

লিপ্ত দৈছে অথবা অশোচে ভগবৰন্দ্রনাদি। ৪। এক হস্তদারা প্রণাম। ৫। প্রীকৃষ্ণের সন্মুখে প্রদক্ষিণ। ৬। ভগবানের অগ্রে পাদপ্রদারণ। ৭। পর্যক্ষবদ্ধন অর্থাৎ ভগবানের অগ্রে হস্তদারা জাত্বয় বন্ধনপূর্বক উপবেশন। ৮। প্রীকৃষ্ণের প্রীমৃত্তির অগ্রে শারন। ৯। ভোজন। ১০। মিথ্যা কথন। ১১। উচ্চঃস্বর্বে ভাষণ। ১২। পরস্পার কথোপকথন। ১০। রোদন। ১৪। কলহ। ১৫। কাহারও প্রতি নিপ্রহ। ১৬। কাহারও প্রতি ক্রিপ্তর অগ্রভাগে সাধারণ

মতুষ্টের প্রতি নিষ্ঠার ভাষণং। ১৮। কমলের ভানরণ ভর্বাৎ कश्चल आवतन निया (भवानि काँची कतित ना, कि काँनि छोली হইতে লোম স্থালিত হইতে পারে। ১৯। ভগবাদের অথ্রে পরনিদা।২০। পরস্তুতি।২১। অশ্লীনভাষণ অর্থাৎ গালি দেওন । ২২। অধো বায়ু পরিত্যাগ। ২০। সামর্থ্য থাকিতেও আর উপচার দান অর্থাৎ পুষ্পা তুলদীপ্রভৃতি আইরণ করিয়া পরি-পাটী রূপে ভগবৎ পূজাদি নির্দাহ করিতে সামর্গ্য থাকিতেও मुख्याप क्रामा पुरापि निसीह कर्म वर्षा वर्षामर्थी থাকিতেও কুণ্ঠতা প্রকাশপূর্মক অল্পগ্রে ভগবৎ উৎসবাদি নিকীহ করণ। ২৪। শনিবেদিত ভক্ষণ। ২৫। যে কালে যে ফল বা শদ্যাদি উৎপন্ন হয়, সেইকালে ভাহা ভগবান্কে সম-প্র না করা। ২৬। আনীত দ্রব্যের অগ্রভাপ অন্যকে দিয়া অবশিক্টাংশ ব্যঞ্জনাদিতে প্রদান। ২৭। শ্রীমৃষ্টির দিকে পৃষ্ঠ করিয়া উপবেশন। ২৮। শ্রীক্রফের শ্রীয়র্ত্তির অগ্রে খন্যকে অভিবাদন। ২৯। গুরুদেবে মৌল লবাং গুরুদেবের **অগ্রে** टकान खवानि ना कतिशा **जुकी छा**त्व जाशनात खाना कता 1951 अवर (मनकानिम्मन। 921 विकृत अ**हे पाजिरमंद** প্রকার অপরাধ কীর্ত্তিত হইল, এতদ্ভিম বরাহপুরাণে বে স্কর্ল অপরাধ কীর্ত্তন করিয়াছেন তাহা সক্ষেপে লিখিত হইছেছে। যথা-রাজানভকণ। ১। অফকার গৃতে শ্রীমৃতির স্পর্ণন। ২। বিধি উল্লেখন কৰিয়া খেঁচছাচাৰে ছবিব উপাসনা। ।। বাদ্য

ना कतिहा और मिए देव बांद्र छेन्दा हैन । है। देव सरवाद अंडि কুকুর দৃষ্টিপাত করিয়াছে তদ্ধারা ভক্ষ্য-দ্রব্যের সংগ্রহ করণ । ৫। পূজাকালে মেনিভ্র । ৬। পূজা করিতে করিতে মল ভ্যাগার্থ গমন। ৭। গন্ধমাল্য প্রদান না করিয়া অত্যে ধুপ ८मध्य। ৮। व्यायांशा श्रुष्टिश शृक्य । ৯। मख्यांत्र मां कत्र व । ১০। ७ छो मरस्राग। ১১। तकः यनास्त्री म्लर्भ। ১२। भील-म्लामी १०। भवम्लामी १४। ब्रक्टवर्ग, नीलवर्ग, व्यापीक भरतत खर मिन वस शतिशान । ১৫। मूछमर्गन । ১७। অপান বায়ু পরিত্যাগ। ১৭। ক্রেখি করণ। ১৮। শ্বান গমন। ১৯। ভুক্ত দ্ৰব্য জীৰ্ণ না হইতে। ২০। কুহুস্ত ভাৰ্বাৎ গাঁলা পান। ২১। পিন্যাক অর্থাৎ অহিফেন ভোজন। ২২। अवः रेजन मर्फन कतिया इतिन्नार्भ ७ इतित रमवा कतिरम, পাপ জন্ম ।২০। অপর অন্যত্র বর্ণিত আছে। ভগ-বচ্ছান্তের প্রতি অনাদর করিয়া ভংগ্রতিপত্তি। অন্য শান্তের ধাবর্তন। ভগবানের অত্যে তামুল চর্বাণ। এরও পত্রস্থ পুত্রা-ষারা স্মর্চন। আহরিক কালে ভগবৎপূজা পীঠ অথবা স্থানতে উপবেশন পূৰ্বক পূজন। স্নানকালে বাম হস্তদারা জীৰুর্ত্তির স্পর্শন। পর্যুক্তিত অথবা যাচিত পুঞাবিষয়ে স্বীন গৰ্ব প্ৰতিপাদন অৰ্থাৎ আমি বরপুজক ইত্যাদি মনন। ভিগ্যক্ পুশুধারণ। পাদপ্রকালন না করিয়া জীমন্দিরে व्यादम । करिकारवर भाक कता क्रम ज्ञानित्क निर्वान । সর্বাপরাধরদিপি মৃচ্যতে ছরিসংশ্রেয়: ।

হরেরপ্যপরাধান্ যঃ কুর্যাদ্দিপদপাংশলঃ য়
নামাশ্রমঃ কদাচিৎ স্যাৎ তরত্যের স নামতঃ ।

ভগবচ্ছপথাদরোধনোচ বহব ইতি। অধ নামাপরাধাঃ পাল্লোকাঃ। সভাং নিকা। ঞীবিকোঃ সকাপাৎ শিবসা নামাদেঃ স্বাভয়ামননং। গুর্মবক্ষা। শ্রুতিভদমুগ চলাত্রনিকানং। হরিনামমহিদ্নি অর্থবাদমাত্রমিদ্দিতি মননং। গুরু প্রকারান্তরেপার্থকরনং। নামবলেন পাপে প্রবৃত্তিঃ। অন্যন্ত ইতিকাতিদািদ-সামানামননং। অশ্রুধানাদৌ নামোপদেশং। নামমাহাত্রে শ্রুতিধ্পাঞ্জিতি

অবৈষ্ণবের সমুগে বিষ্ণুপ্জন। গণেশকে পূজা না করিয়া এবং কপালি অর্থাং স্থনামধ্যাত নীচজাতি-বিশেষকে দর্শন করিয়া বিষ্ণুপ্জন। নগস্পৃষ্ট জলে শ্রীমৃত্তির স্থপন। এবং ঘর্মাঘূলিপ্ত কলেবরে হরিপুজন। এতদ্তিম অন্যত্ত বর্ণিত আছে। নির্মাল্য-লজ্বন। ভগবংশপথাদি করণ। ইত্যাদি অনেকানেক দেবাপরাধ আছে।

नामाश्रताथ यथा श्रेषाशुद्धार्व ह

মনুষ্য সর্বপ্রকার অপরাধ করিয়াও যদি হরিচরণারবিশ আশ্রয় করে, ভাহা হইলে সকল অপরাধ হইতে পরিজ্ঞাণ পার, কিন্তু যে নরাধম হরির নিকটেও অপরাধী, সে যদি কথন হরিনামের আঞ্জিভ হয়, ভাহা হইলে নামমাহাজ্যে ঐ অপরাধ হইতে নিস্তার পাইতে পারে। ফল্ডঃ হরিনাম নামে। হি সর্বাহ্মহাদে। হৃপরাধাৎ পতত্যধঃ ॥ ৫৪ ॥ তন্মিন্দাদ্যসহিষ্ণুতা যথা খ্রীদশমে ॥ নিন্দাং ভগবতঃ শৃণুংস্তৎপরস্য জনস্য বা ।

রিতি। সর্বা এবৈতে হরিভক্তিবিলাসে প্রমাণবচনৈর্দ্রপ্রাা:॥ ৫৪ ॥

সকলের স্থান্ অভএব নামাপরাধ করিলে অধোলোকে পতিত হইতে হইবে॥৫৪॥

#### নামাপরাধ যথা॥

সংসকলের নিন্দা। ১। বিষ্ণুনাম হইতে শিবনামাদির আন্তন্ত্র্যরূপে মনন অর্থাৎ বিষ্ণুনাম হইতে স্থাণীনরূপে শিবনামাদির চিন্তন। ২। গুরুদেবের প্রতি অবজ্ঞাপ্রকাশ। ৩। বেদ ও বেদানুগত শাস্ত্রের নিন্দা। ৪। হরিনামের মাহাগ্রের "ইহা অর্থবাদ অর্থাৎ স্তৃতিমাত্র" ইত্যাদি মনন। ৫। অথবা থেকারাস্তরে নামের অর্থক্সন। ৬। নামবলে পাপে প্রবৃত্তি। ন। অন্য শুভুজিরার সহিত নামের তুল্যস্থচিন্তন। ৮। প্রদাবিহীন জনকে নামোপাদেশ। ৯। এবং নামমাহাল্য্য-প্রবৃধি করিয়া তাহাতে অপ্রীতি। ১০। এই দশ প্রকার নামাপরাধ বৈষ্ণুব্যক্তি অবশ্য বর্জন করিবেন॥

ভগবান্ বা ভগবজ্জনের নিন্দাদিতে
অসহিষ্ণুতা যথা দশমক্ষমে ৭৪ আ। ২৬। শ্লোকে॥
তক্ষেব কহিলেন, রাজন্! যে ব্যক্তি ভগবান্ বা ভগবংপরায়ণ জনের নিন্দা শ্রেবণ করিয়া, দেই স্থান হইতে প্রায়ন

ভতো নাপৈতি যা সোহপি যাত্যধা স্কৃতাচ্চ্যুতঃ ॥ অথ বৈষ্ণবচিহ্নপুতির্যধা পাছে।

যে কণ্ঠলগ্নত্লদীনলিনাক্ষালা-যে বাত্মূলপরিচিহ্যিতশঙ্গকলোঃ। যে বা ললাটফলকে লদদ্ৰূপুঞা-তে বৈক্ষবা ভুবনমাশু পবিজ্ঞানী

নামাক্ষরপুতির্যথা স্থান্দে॥ হরিনামাক্ষরযুত্ত ভালে গোপীমুদক্ষিতঃ। তুলদীমালিকোরক্ষং স্পৃশেয়ুর্ন যমোস্তটাঃ॥ ৫৫॥

(भागोभ्वकिंः)ः त्थाभोठनस्यान जिल्लिकः ॥ ६६ ॥

না করে, সে সমুদায় পুণ্য ছইতে বিচ্যুত হইয়া **অবোগামী** হয়।

रेवकविहरू शांतन वथा भन्नभूतारन ॥

ইাহারা কণ্ঠদেশে তুলগী, পদ্মবীক্ষমালা-ধারণ করেন, ইাহারা বাহুমূলে শহা চক্রের চিহ্ন ধারণ করিয়া থাকেন এবং ইাহাদের ললাটদেশ উদ্ধপুত্তে দেনীপ্যমান, উার্মেরাই বৈক্ষর, ভাঁহারাই ভুবনভলকে আশু পবিত্র করেন ॥

र्विनाभाकत धात्रण यथा ऋणभूतार्ग ॥

বাঁহার ললাটদেশ গোপীচন্দনে ভিল্কিড, সাঁতে হাঁর-নামাক্ষর লিখন এবং হান্ত্রে তুলসীমালা দোতুল্যমান মহি-নাছে, যমকিক্ষরগণ ভাহাকে স্পার্শ ক্ষিডে পারে না॥ ৫৫ ॥ কৃষ্ণনামকিবৈগাত্মক্ষয়েচন্দনাদিনা।
স লোকপাবনো ভূষা তস্য লোকমবাপ্নুয়াং॥
নির্মাল্যধৃতিইথকাদশে॥
ছয়োপযুক্তস্রগ্গন্ধ-বাসোহলক্ষারচর্চিতাঃ।
উচ্ছিউভোজিনো দাসান্তব মায়াং জয়েম হি॥
ক্ষান্দে চ॥
কৃষ্ণোতীর্ণস্ত নির্মাল্যং যস্যাক্ষং স্পুশতে মুনে।

ছরোপযুক্তেতি শ্রীমহন্ধববাকাং। পরোক্ষপূজাদাবণীতি ভাবং। জুরেষ জেতুং শরুম ইত্যর্থ:। এতহ্তরমস্য পদন্বরং চান্তি। মুনরো বাতবসনা: শ্রমণা উর্জমন্থিন:। ব্রহ্মাধ্যং ধাম তে বান্তি শান্তা: সন্নাসিনোহ্মলা:॥

### পদ্মপুরাণে ॥

যিনি চন্দনাদিদ্বারা গাত্রে হরিনামাক্ষর লিখন করেন, তিনি লোকপাবন হইয়া শ্রীক্ষের সালোক্যপ্রাপ্ত হইবেন॥ নির্মাল্যধারণ, যথা একাদশ ক্ষমে ৬ অ। ০১ শ্লোকে॥

উদ্ধব কহিলেন, কুষ্ণ ! তুমি যে সমস্ত বস্ত উপভোগ করিয়া ত্যাগ করিয়াছ, দেই মাল্য, গদ্ধ, বস্ত্র ও অলঙ্কারে অলঙ্কত হইয়াছি এবং দাদের ন্যায় তোমার উচ্ছিষ্ট ভোজন করিয়া থাকি, অতএব তোমার মায়া অনায়াসেই জয় করিব॥

#### স্কন্দপুরাণে n

बक्ता कहिल्लन, रह नात्रम! ब्लीकृरकत चरत्राछीर्

সর্বরোগৈত্তথা পাপৈর্কো ভবতি নারদ। ৫৬। তথা তাওবং, যথা দারকামাহাত্মে। ।
যো নৃত্যতি প্রক্ষীত্মা ভাবৈর্বহুত্তক্তিতঃ। 
স নির্দ্দিত পাপানি সম্বন্ধনাতেম্বি ।
তথা শ্রীনারদোক্তে চ ।
নৃত্যতাং শ্রীপতেরপ্রে তালিকাবাদনৈত্বং।
উড্ডীয়ন্তে শ্রীরত্মাঃ সর্বে পাতকপক্ষিণঃ।

বয়বিহ মহাযোগিন্ ভ্ৰমান: কৰ্মব্যু হি। বলার্ডরা তরিবামিভাষ**ৈক্ ভ্র**ং তম:। ইতি । তবিহামভার্ং শকুম ইতার্থান ৫৬॥ মহত্রশতেবিহাল কাতানীতি শেষ: ॥ ৫৭॥

নির্মাল্য ঘাহার অঙ্গ স্পর্শ করে, সে ব্যক্তি সর্বপ্রকার রোগ ও পাপরাশি হইতে মুক্তিলাভ করেন॥ ৫৬॥

হরির সম্মুথে নৃত্য যথা দ্বাদ্দকামাহাত্য্যে ॥

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, নারদ! যে ব্যক্তি প্রছাই চিত্রে **একা-**ন্তিকী ভক্তিসহকারে বিবিধ ভাব ব্যঞ্জক অপভঙ্গী করিমা আমার অগ্রে নৃত্য করেন, তাঁহার শত শত ম**রস্তরস্কিত** পাপপুঞ্জ দশ্ধ হইরা যায়॥

এবং নারদও কহিয়াছেন যথা॥

বে ব্যক্তি শ্রীকৃষ্ণের অত্যে করতালি দিয়া বারন্থার নৃত্য কন্ধেন, ত্রিহার শরীরন্থ পাপরূপ পশ্চিদকল উর্দ্ধে, পলারন করে ॥ \*\*

দণ্ডবন্ধতির্থা নারদীয়ে ॥

একোহপি কৃষ্ণায় কৃতপ্রণামো, দশাখনেধাবভূথের তুল্যঃ।

দশাখনেধী পুনন্ধতি জন্মকৃষ্ণ, প্রণামী ন পুনর্ভবায় ॥

অভ্যুত্থানং যথা ত্রন্ধাণ্ডে ॥

যানারতং পুরু প্রেক্য সমায়ান্তং জনার্দ্দনং।

অভ্যুত্থানং নরঃ কুর্বন্ পাতয়েৎ সর্বকিল্লিষং॥ ৫৭॥

অথাসুত্রজ্যা যথা ভবিষ্যোত্তরে ॥

রথেন সহ গচছন্তি পার্যভঃ পৃষ্ঠতোহ্গ্রভঃ।

রঙ্গেনেজুপেলকণঃ অনেদনাপি ইত্যুদ্মেয়মিতি ভাবঃ। এবং পূর্ব্বত্র চ ধানা-রুজুমিতদ্র জ্বেরং॥ ৫৮॥

मध्यर द्यागंग, यथा नांद्रमञ्जूतात्। ॥

দশ অশ্বনেধ যভ্জের অবভ্থ সান ও শ্রীকৃষ্ণে একবারমাত্র প্রশাম এতত্বভারের তুল্য ফল হইতে পারে না, কারণ দশ অশ্বনেধ যজ্ঞকারী পুণ্যক্ষমে পুনর্কার জন্মগ্রহণ করে, কিন্তু কুষ্ণপ্রশামী ব্যক্তি পুনরায় ভবে আগমন করেন না॥

> অভ্যুত্থান অথীৎ গাত্তোত্থান॥ যথা ত্ৰহ্মাণ্ডপুরাণে॥

যে ব্যক্তি সম্মুখে রথারোহণে জনার্দনকে আগমন করিতে দেখিলা গাজোভান করেন, তিনি সমুদায় পাতককে পাতিত করিয়া থাকেন॥ ৫৭॥

অনুগমন অর্থাৎ পশ্চাৎ ২ গমন যথা ভবিষ্যোত্তরে॥ মে সকল মানব ভগকান রথারোছণে গমন কারিতেইছন,

# পূर्व। २ महता। ७ क्तित्रभाष्ठ्र निक्रः।

বিকুনৈব সমা: সর্বের্ব ভবন্তি শ্বপচাদর: ॥

স্থানে গতিঃ ॥

স্থানং ভীর্বগৃহকাস্য, তত্র তীর্থে গতির্বথা।

পুরাণান্তরে ॥

সংসারমককান্তার-নিন্তারকরণক্ষমৌ।

শ্লাঘো তাবেব চরণো যৌ হরেন্তার্থগামিনো ॥

আলায়ে যথা হরিভক্তিমধোদয়ে ॥

প্রবিশ্যালয়ং বিফোর্দর্শনার্থং ফুজিকারাগৃহং স্থীঃ ॥
ন ভূমঃ প্রবিশেয়াকুং কুজিকারাগৃহং স্থীঃ ॥

দেখিয়া পার্মনেশে অথবা পশ্চাৎভাগে কিমা সমুখে রথের সঙ্গে সঙ্গে গমন করে, তাহারা চভালাদি জাতি হইলেও বিস্থুর তুলাত্ব লাভ করিয়া থাকে।

স্থানে গমন॥

স্থান তুই প্রকার, তীর্থ এবং ভগবদানর। তম্মধ্যে তীর্থগমনং, ঘণা পুরাণাস্তরে॥

যে তুই চরণ হরিদখন্ধীয় তীর্থে গমনশীল ভা**হাই অভিশর** প্রশংসনীয়। যেহেতু ভদ্মরা সংসাররূপ মরুত্মির তুর্গম পথ উঠার্ণ হওয়া যায়॥

ভগবদালরে পমন, যথা হরিভক্তিয়ধোদরে ॥

যিনি বিশুদ্ধ ভক্তিসূক্ত হইয়া ঐীবিফুর দর্শনার্থ আলয়ে

•প্রবেশ করেন, সেই সন্ধ্রিশালী মানব মাতৃক্কিয়প কারাসূহ
পুন্ধ প্রবেশ করিবেন না ॥

পরিক্রমা যথা তত্তির ॥
বিষ্ণুং প্রদক্ষিণীকুর্বন্ যন্তত্তাবর্ত্তে পুদাঃ।
তদেবাবর্ত্তনং তদ্য পুনর্নাবর্ত্ততে ভবে ॥ ৫৮ ॥
ক্ষান্দে চ চাতৃশ্মাদ্যমাহাত্ম্যে ॥
চতুর্বারং ভ্রমীভিস্ত জগৎ সর্বং চরাচরং।
ক্রান্তং ভবতি বিপ্রান্ত্য ! তত্তীর্থগমনাধিকমিতি ॥
অথার্চ্চনং ॥

শুদ্ধিন্যাদাদিপূর্মাঙ্গ-কর্মনির্ব্বাহপূর্ব্বকং।

চতুরিতাত বিষ্ণুং পরিত:। ইতি প্রকরণপ্রাপ্তং। তীর্থানাং শ্রীগলাদীনাং সমলাদশ্যধিকং। শীল্ঞং ভগবস্তুক্তিপ্রদ্যাদিতার্থ:॥

ভ জিভু ত ভ জি:। নাাসাঃ মাতৃ কান্যাসাদয়:। তদাদিকং পূর্ববঙ্গং যস্য।

পরিক্রমা যথা হরিভক্তিত্বধোদয়ে॥

যে মানব বিষ্ণুকে প্রদক্ষিণ করিতে করিতে যভবার আবর্ত্তন করিয়া থাকে, তাহার দেই আবর্ত্তন নিবন্ধন পুনর্কার ভবে প্রত্যাবর্ত্তন করিতে হয় না॥

**এবং ऋक्षश्वतार्य हाजूर्यामामार्गा**ज्या ॥

ে ছে ছিজোন্তম! বিফুকে চারিবার প্রদক্ষিণ করিলে সম্দায় চরাচর জগৎ পরিক্রমা করা হয় এবং গঙ্গাদি তীর্থ সম্দায়ের গ্রমন অপেক্ষা অধিক ফল হয়, কারণ এতদ্বারা আশু
ভগবস্তুক্তি লাভ করিতে পারা যায়।

#### অৰ্চ্চন 🛭

ভূতভাৰ ও মাতৃকান্যাদাদি পূৰ্বাল নিৰ্বাহপূৰ্বক মন্ত্ৰ

অর্চনন্তুপচারাণাং স্যান্মন্তেণোপপাদনং ॥ ৫৯ ॥
তদ্যথা গ্রীদশমে।
অর্গাপবর্গয়ো: পুংসাং রসায়াং ভূবি সম্পাদাং ।
সর্বাসামপি সিদ্ধীনাং মূলং ভক্তরণার্চনং ॥
বিষ্ণুরহ্সো চ।
গ্রীবিষ্ণোর্চ্চনং যে তু প্রকৃত্তির নরা ভূবি ।

ভালৃশক্ষনিব্যাহপূৰ্বকং যক্ত গ্ৰেণাপচারাণাং সমর্পণং ভদর্জনমিভাবন্ধঃ । ১৯৪
ুখর্গাপবর্গরোবিভি। অঞার্জনংপ্রধানং করা ভক্তার্থ মহিনা খৃষ্টিভ: । ইত্যচলিং মহিনানের দিবিভং মুলমিভি। অন্যভু ভদভাবাদের বিধীয়ত ইত্যর্থ: ।
কালেন নটা বাণীয়ং প্রলাবে বেদসংজ্ঞিভা। মনাদৌ ক্রমণে প্রোক্তো ধর্মো
বাগাং মদায় হ ইভি। অকানং সর্ক্রামো বা ইত্যাদেশ্চ। বর্ধা ভ্রত্মিশাং
সাধনাত্রস্যাণ্যসিদ্ধে: । তত সম্ভত্ত ভিদ্বিন্যাদেং । মুধ্বাহ্রশাদেভ্য

দারা উপচার সমর্পনকেই অর্চন করে। ৫৯॥ যথা দশমক্ষমে ৮১ আ। ১৬ শ্লোকে।

শ্রীদাম ত্রাহ্মণ গৃহে আগমন করিতে করিতে ক**হিলেন** পুরুষদিগের ঘর্গ, অপপর্গ, পাতালের আধিপত্তা, পৃথিবীর সম্পত্তি ও অণিমাদি সিদ্ধি সকলের মূল কারণ এক শ্রীকৃত্তের চরণার্চন, ইহার দারাই সর্বার্গ সিদ্ধি হয় ॥

এবং বিফুরছস্যে যথা ॥ এই পৃথিবীতে যে সকল নৱ শ্রীবিফুর অর্জন করেন, [১৪] তে যান্তি শাখতং বিফোরানন্দং পরমং পদং ॥ ৬० ॥

অথ পরিচর্য্যা ।

পরিচর্য্যা তু সেবোপকরণাদি-পরিক্ষু যা ।

তথা প্রকীর্ণকছত্ত্বাদিত্রাদৈয়ক্রপাসনা ॥

যথা নারদীয়ে ।

মুহুর্তং বা মুহুর্তার্কং যন্তিকেন্ধরিমন্দিরে ।

স যাতি পরমং স্থানং কিমু শুক্রাবণে রতাঃ ॥

চতুর্থে চ।

देखाद्यः । जनवित्ना माननता देखाद्यः ॥ ७० ॥

পরিচর্যাত্র রাজ্ঞ ইব দেবোচাতে। সা বিধা। উপকরণাদিপরিজিক্ষা চামরাদিভিক্পাসনা চেত্যর্থ: ॥ ৬১ ॥

ভাঁছারাই বিষ্ণুর নিত্য পরমানন্দময় পরম ধাম প্রাপ্ত ছইয়া থাকেন॥ ৬০॥

## অথ পরিচর্ব্যা॥

রাজার ন্যায় জ্রীকৃষ্ণের দেবনকে পরিচর্য্যা কছে। এই পরিচর্ব্যা ছুই প্রকার। যথা উপকরণাদি পরিফার করণ এবং চামরাদি দ্বারা উপাসনা॥

## यथा नांत्रमभूतारण॥

যে ব্যক্তি মুহূর্ত্ত বা অর্দ্ধ মুহূর্ত্ত কাল হরিমন্দিরে অবস্থিতি কর্মেন, তিনি পরমধাম প্রাপ্ত হয়েন। কিন্তু সর্বহা যাঁহারা হরিসেবায় রত তাঁহাদিগের কথা আর কি বলিব ?॥

**जवः रुष्करक २३ च । २৯ (अ) एक ।।** 

যৎপাদদেবাভিক্ষচিন্তপস্থিনামশেষজ্পোপিচিতং মলং ধিয়ঃ।
সদ্যঃ ক্ষিণোত্যম্বহমেধতী সতী
যথা পদাস্ঠবিনিঃস্তা সরিৎ ॥ ৬১ ॥
অসানি বিবিধান্যের স্তাঃ পূজাপরিচর্য্যয়োঃ।
ন তানি লিখিতান্যত্র গ্রন্থবাল্ল্যভীতিতঃ ॥
অথ গীতং যথা লৈকে।
ভ্রাক্ষাণো বাস্থদেবাখ্যং গায়মানোহনিশং পরং।
হরেঃ সালোক্যমাপ্রোতি ক্ষুদ্রগানাধিকং ভ্রেৎ ॥ ৬২ ॥

ব্ৰাহ্মণ ইতি গানসামান্যস্য ব্ৰাহ্মণে নিষিদ্ধবাং। ব্ৰাহ্মণোহসীভাৰ্ব:। ব্ৰাহ্ম-কৰ্ত্তকগানাদ্পি ভগবদতো তদ্য গানম্থিকং ভবেদিভাৰ্থ:॥ ৬২ ॥

পৃথুরাজ কহিলেন অহে প্রজাগণ! ভগবান্ হরিই জীব সকলের মোক্ষণাতা, তদ্ভিম অন্য দেবতা হইতে মুক্তির সম্ভাবনা নাই, কারণ তাঁহারাও জীব বিশেষ। অতএব বাঁহার চরণন্ধরের সেবাবিধয়ক অভিলাষও পদাসুষ্ঠ বিনিঃস্তা সরিদ্ধরা গঙ্গার ন্যায়, সংসারসন্তও জীবদিগের অশেষ জন্ম-সঞ্চিত বৃদ্ধিমালিন্য সদ্যঃ বিনিষ্ট করিয়া অহরহঃ বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়।

পূজা এবং পরিচর্য্যার অঙ্গ বহুবিধ। কিস্তু এছের বাছ্ল্য-ভয়ে এ স্থলে তাহা লিখিত হুইল না॥ ৬১॥ গীত যথা লিঙ্গপুরাণে॥

আন্দা নিরন্তর পরম পুরুষ বাহুদেবের গুণ গান করিয়া

व्यव मको र्खनः ॥

নামলীলাগুণাদীনামুচ্চৈভাষাতু কীর্দ্তনং ॥
ভত্ত নামকীর্ত্তনং যথা বিষ্ণুধর্মে ॥
কুফেতি মঙ্গলং নাম যদ্য বাচি প্রবর্ততে।
ভক্ষীভবন্তি রাজেন্দ্র ! মহাপাতককোটয়: ॥ ৬০॥
শীলাকীর্ত্তনং যথা দপ্তমক্ষমে ॥

সোহহং পরদ্য স্থহদঃ পরদেবভায়া-

কুক্তেতি মঙ্গলং নামে ডার্চনবদের ব্যান্থি।য়ং। তলেভৎ প্রাধানোন নামান্তর কীর্ত্তনম্পি জের্মিতি। এব্যন্যত্তাপি ॥ ৬৩॥

তিত্রি ভরিষামী চার্থ:॥ ৬৪ ॥

উাহার সালোক্য লাভ করিয়া থাকেন, এমন কি শ্রীকৃষ্ণ মছা-দেবকৃত সঙ্গীত- অপেক। তাঁহার গানকে অধিক প্রিয়তর জ্ঞান করেন। ৬২॥

## व्यथ मकीर्जन॥

नाम, ज्ञान ७ छनानित छेल्डकारन छलात्रन कत्रारक कीर्तन यान ॥

তন্মধ্যে নামসঞ্চীর্ত্তন যথা বিষ্ণুধর্মে॥

হে রাজেন্দ্র । "কৃষ্ণ" এই পরম মঙ্গলপ্রদ নাম যাঁহার বাক্যে বিরাজ করেন ভাহার্ কোটি মহাপাতক ভস্মীভূত ছইয়া যায়॥ ৬৩॥

শীলাকীর্ত্তন যথা সপ্তমক্ষদ্ধে ৯ আ। ১৭ স্লোকে।। • অহুলাদ কহিলেন হে নুসিংহ। আমি আপনকার দাস লীলাকথান্তব নৃসিংহবিরিঞ্চিগীতাঃ।
অঞ্জন্তিতর্মানুগুন্ গুণবিপ্রমুক্তো
ছুর্গাণি তে পদযুগালয়হংসদকঃ॥ ৬৪॥
গুণকীর্ত্তনং যথা প্রথমস্কন্ধে॥
ইদং হি পুংসন্তপদঃ শ্রুতস্য বা
বিষ্টাস্য স্কুস্য চ বুদ্ধদন্তয়োঃ।
অনিচ্যুতোহর্থঃ কবিভি নির্মিণিতো
যদ্ভব্যংশ্লোকগুণামুবর্ণনং॥

হইলে প্রিয় পরম হুছদ্ ও পরমদেবতা যে আপনি, আপনকার লীলা কথা উচ্চারণ করত হুমহৎ তুঃখ সকলও গণ্য
করিব না, তৎকালে আপনার পদ্যুগলই যাঁহাদের আলয়,
সেই সকল ভক্ত স্বরূপ যে সমন্ত হংস অর্থাৎ তত্ত্তর, তাঁহাদের সহিত সঙ্গ হওয়াতে রাগাদি হইতে বিশেষরূপে পরিত্রাণ
পাইব। প্রভো! আপনকার লীলাকথা অবগত হওয়া আমার
পক্ষে কঠিন হইবে না, ব্রহ্মা ঐ সকল কথা গান করিয়া
ছিলেন, তাহাতে তাহাসম্প্রদায় প্রবৃত্ত হইয়া আণিয়াছেয় ৬৪য়

গুণ কীর্ত্তন যথা প্রথমক্ষমে ৫ আ। ২২ স্লোকে ॥

নারদ কহিলেন হে ব্যাস। উত্তমংশ্লোক শ্রীক্ষের যে শুণামুবর্ণন, পণ্ডিভেরা ভাহাকেই তপদ্যা, বেদাধ্যয়ন, যজ্ঞ, মন্ত্রপাঠ, জ্ঞান এবং দান এই সকল কর্ম্মের নিভ্য কল বলিয়া কীর্ত্তন করিয়াছেন ॥

#### खराः ॥

মন্ত্রস্য স্কর্চারো অপ ইত্যভিধীয়তে॥ যথা পাল্মে॥

কৃষ্ণায় নম ইত্যেষ মন্ত্র: সর্ব্বার্থদাধকঃ। ভক্তানাং জপতাং ভূপ। স্বর্গমোক্ষলপ্রদঃ॥

विष्ठिथिर्यश कारम ॥

হরি মৃদ্দিশ্য যথ কিঞ্চিৎ কুতং বিজ্ঞাপনং গিরা।
মোক্ষারার্গলান্মোক্ষস্তেনৈব বিহিতঃ স্তবঃ॥ ইতি॥
সংপ্রার্থনাময়ী দৈন্যবোধিকা লালস।ময়ী।
ইত্যাদিবিবিধা ধীরিঃ কুষ্ণে বিজ্ঞপ্তিনীরিতা॥

#### জপ।

মন্ত্রের অতিশর লঘু উচ্চারণকে জ্বপ কহে। অর্থাৎ এরপে মন্ত্র উচ্চারণ করিতে হয় তাহা কেবল আপনার কর্ণগোচর-মাত্র হয়, অন্যে শুনিতে পায় না॥

यथा भग्नभूतात्।॥

হে রাজন্! "কৃষ্ণায় নমঃ" এই মন্ত্র সমুদায় অর্থনিদ্ধি বিষয়ে সাধক। যে সকল হরিভক্ত পুরুষ ইহা জপ করেন তাঁহাদিগের। স্বর্গ ও মোক্ষ লাভ হইষা থাকে ॥

विष्ठि यथा ऋम्म श्रुतात्।।

তুমি হরিকে উদ্দেশ করিয়া যাহা কিছু নিবেদন করিয়াছ এতন্দ্র রোই তোমার মোক্ষদারের অর্গল (থিল) বিমৃক্ত হই-য়াছে॥

भोत्रभन और कविषदा विकाशि जिन धाकात्र कौर्जन कतिया-

তত্র সংপ্রার্থনাত্মিকা যথা পাদ্মে ॥

যুবতীনাং যথা যুনি যুনাঞ্চ যুবতো যথা।

মনোহভিরমতে তদ্মনোভিরমতাং ছয়ি ॥

দৈন্যবোধিকা যথা তত্ত্বৈব ॥

মতুল্যো নাস্তি পাপাক্সা নাপরাধী চ কশ্চন।
পরিহারেহপি লজ্জা মে কিং ক্রুবে পুরুষোত্তম ! ॥

লালসাময়ী যথা নারদপঞ্চরাত্ত্রে ॥

কদা গম্ভীরয়া বাচা প্রিয়া যুক্তো জগৎপতে।

टहन। यथा मः श्रार्थनामग्री, देननादाधिक। व्यर्था श्रीय देनना निद्यमन अ नानमामग्री॥

সংপ্রার্থনাত্মিকা বিজ্ঞপ্তি, যথা ক্ষন্দপুরাণে॥
হে ভগবন্! যুবতীগণের যেমন যুবা পুরুষে এবং যুবা
দিগের যেমন যুবতীতে (স্ত্রীতে) মন আসক্ত হয়, তজ্ঞপ আমার চিত্ত তোমাতে অনুরক্ত হউক॥

দৈন্যবোধিকা বিজ্ঞক্তি, যথা স্কল্পুরাণে॥
হে পুরুষোত্তম ! আমার তুল্য পাপাত্মা ও অপরাধী আর কেহই নাই, বলিব কি ? পাপপরিহারের নিমিত্ত ভোমার নিকট দৈন্য জানাইতে আমার লজ্জা হইতেছে॥

লালদাময়ী বিজ্ঞপ্তি, যথা নারদপঞ্চরাত্তে ॥ হে জগৎপতে ! আমার এমন দিন কবে উপস্থিত হইবে বে দিন দলক্ষীক তোমাকে চামর করিতে আমার হস্ত খ্যপ্ত চামরব্যগ্রহন্তং মামেবং কুর্বিবিত্তি বক্ষাসি ॥ অথবা ॥

কলাহং যমুনাতীরে নামানি তব কীর্ত্তরন্। উদ্বাস্পঃ পুগুরীকাক রচয়িষ্যামি তাগুবং॥ ৬৫॥ অবসাঠঃ॥

প্রোক্তা মনীষিভি গীতা গুৰুরাজাদয়ঃ শুৰাঃ ॥

কদাহং যমুনাতীরে ইভি দ্রত: প্রার্থনা ক্যাচিজ্জাতভাবসা যতঃ সংপ্রার্থনা অফুংপরভাবসা লালসাডু জাতভাবসাতি ভেদ:। লালসামর্বাং সংপ্রার্থনালাপাত্র লালসেভোব ভণাতে। অতো লালসাম্রীয়ং। অত্তেদ্শে সংপ্রার্থনালালদে প্রার্থনালালদে প্রার্থনালাদের প্রেম্বর্থনালাদের প্রার্থনালাদের প্রার্থনালাদে

গী চারা তবছং ভগবন্দিশা মক ছাও। গুবরাজো গৌতমীলোকঃ গুবরাজঃ ॥ ৬৬ ॥

দেখিয়া তুমি আমাকে "এইরূপ কর" এই বলিয়া আদেশ করিবা॥

#### यथावा ॥

হে পুগুরীকাক (পদ্মনেত্র!) কবে আমি ষমুনাতীরে তোমার নামসকল কার্ত্তন করিতে করিতে সজল নমনে নৃত্য আরম্ভ করিব॥ ৬৫॥

#### खव ॥

পণ্ডিতগণ ভগবদ্যীতা ও গোত্তমীয় তন্ত্রোক্ত স্তবরাক্তকে জীক্ষের স্তব বলিয়া নির্দেশ করেন ॥

#### यथा ऋाटन ॥

জীকৃষ্ণন্তবরজৌ ঘৈর্যেষাং জিহনা ত্বাস্কৃত।।
নমস্যা মুনিশিদ্ধানাং বন্দনীয়া দিবৌকসাং ॥ ৬৬ ॥

নারসিংছে छ।

ट्डिटिंड: रुरिक्ट दिवाद्य यः ट्डिटि मध्मूमनः । मर्द्यभाभविनिम्ब्टिंडा विक्टलाकमवीश्रुवाद ॥ ७० ॥

दिनरबन्ताचारमा यथा भारत्य ।

নৈবেদ্যমন্নং তুলদীবিমিশ্রং বিশেষতঃ পাদজলেন সিক্তাং।

ভোত্রতবরোরভেদেহপাবাস্তরভেদ:। পূর্বপ্রিসিরত্বস্কৃতভাজ্যাং ক্রের:। ভোত্রস্য করণসাধনত্বন পূর্বসিরত্বপ্রতীতে:। ভবস্য ভাবসাধনত্বন প্রকৃতত্ব-প্রতীতে:। তথাপি প্রোক্তা মনীবিভিরিত্যাদৌ গীতাদীনাং ভবত্বমূক্তং। ভক্ষ কননা। গত্যা করণসাধনত্বন কর্তব্যং তদেবাগ্রে শ্রীমদর্চায়া: পূরত:॥ ৬৭ ॥

## खनभार्व यथा कन्मभूताए। ॥

জীক্ষের স্তবরূপ রত্মমূহে বাঁহাদিগের জিহ্বা অলক্ষতা হইরাছে, সেই দকল মানব, মুনি ও সিদ্ধগণের নমস্য এবং দেবতাদিগের বন্দনীয় হয়েন॥ ৬৬॥

**এ**वः नृतिः हभूतारः। ॥

ষে ব্যক্তি ভগবান্ মধুসূদনের সমুথবর্তী হ**ইরা স্তোত্ত** এবং স্তব্যারা তাঁহাকে স্তুতি করেন, তিনি নিথিল পাপ **হইডে** বিনিমুক্তি হইয়া বিষ্ণুলোকপ্রাপ্ত হইয়াদথাকেন ॥ ৬৭॥

নৈবেল্যাস্থাদ এছণ, যথা পদ্মপুরাণে ॥ দে ব্যক্তি মুরারির সম্মুখ ভাগ পরিভ্যাগ করিয়া চরণাস্কডে বোহশ্বাতি নিত্যং পুরতো মুরারে:
প্রাথ্যেতি যজ্ঞাযুতকোটিপুণ্যং ॥
পাদ্যাস্বাদো যথা তত্ত্বৈব ॥
ন দানং ন ছবির্যেষাং স্বাধ্যায়ো ন স্থরার্চনং ।
তেহিপি পাদোদকং পীত্বা প্রস্নান্তি পরমাং গতিং ॥
ভাথ ধূপসৌরভ্যং যথা ছরিভক্তিস্থধোদয়ে ॥
ভাজাং যদ্ধেরের্দ্ধন্তধূপোচিছফীদ্য সর্ববিতঃ ।
ভদ্তাবব্যালদ্ভীনাং নদ্যং কর্ম্ম বিবাপহং ॥

সুরারে: পুরত ইতি নাপ্লোপে পঞ্মী। পুরং অন্তঃপুরং পরিত্যক্ষেত্যর্থ:। ভারতা ভোলননিবেধাৎ ॥ ৬৮ ॥

বিশেষরপে দিক্ত তুলদী-দলদময়িত নৈবেদ্যায় নিত্য ভোজন করেন, তিনি দশ সহত্র কোটি যজেব পুণ্য প্রাপ্ত হয়েন।

চরপায়তের আফাদন, যথা পদাপুরাণে ॥

ষাহাদিপের দান, যজ্ঞ, বেদাধ্যয়ন ও দেবার্চন প্রভৃতি সং কর্মের অমুষ্ঠান নাই, তাহারাও বিষ্ণুপাদোদক পান করিয়া পরম গতি প্রাপ্ত হয় ॥

ধুপদৌরভা, যথা হরিভক্তিপ্রধোদয়ে॥
হরিকে নিবেদন করিয়া উচ্ছিই ধূপের আত্রাণ করিলে
সংসাররূপ সর্পদিই জীবগণের বিষনাশন নস্য (নাস) জিয়ার
অনুষ্ঠান করা হয়॥

মাল্যদৌরভ্যং যথা তন্ত্রে ॥
প্রবিষ্টে নাদিকারদ্ধে হরেনি মাল্যদৌরতে ।
দদ্যে বিলয়মায়তি পাপপঞ্জনবন্ধনং ॥ ৬৮ ॥
অগস্ত্যদংহিতারাঞ্চ ॥
আগ্রাণং গন্ধপুষ্পাদেরচ্চিত্র্য তপোধনু
বিশুদ্ধিঃ স্যাদনস্ত্য্য গ্রাণস্যেহাভিধীয়তে ॥ ৬৯ ॥
অথ শ্রীমৃর্ত্তেঃ স্পর্শনং যথা বিষ্ণুধর্মোত্তরে ॥
স্পৃষ্ট্যা বিফোর্ধিষ্ঠানং পবিত্তঃ শ্রদ্ধান্থিতঃ ।

নির্মাল্যসৌরজ, যথা তক্ত্রে॥ হরিনির্মাল্যের সৌরভ নাদারক্ত্রে প্রবিষ্ট হইলে, পাশ-দ্ধপ পিঞ্জর বন্ধন তৎক্ষণাৎ বিনষ্ট হইয়া যায়॥

অগব্যসংহিতাতেও বলিয়াছেন 🛭

হে তপোধন! গদ্ধপুষ্পাদিবার। ভগবান্ হরি পুঞ্জিত হইলে, তাঁহার সেই নির্মাল্যের আন্তাণই জাণেন্ডিবের বিশু-দ্বির কারণ হইয়া পাকে॥

শ্রীমৃর্তির স্পার্শন, যথা বিষ্ণুধর্মোতরে ॥

· স্পর্শ করিবার অধিকার সত্ত্বেও যিনি শ্রেদাশ্বিত ও পবিত্র হইয়া ভগবদ্বিগ্রহ স্পর্শ করেন, ভিনি পাপবন্ধন হইতে বিলি-

অর্চিতস্যানম্বদ্য ভগবত: সম্বন্ধী যো গদ্ধপুপাদি স্তস্যার্থাণং ব্রাণেক্তির্বার্গ ইহ জগতি বিশুদ্ধিস্তদ্ধেতু: স্যাদিত্যবধীয়ত ইতি ॥ ৬৯ ॥ অথ শ্রীমদর্চামাত্রদ্য পর্পাধিকারিণাং স্পর্ণমাহাত্মামাহ স্পৃষ্টে,তি ॥ ৭০ ॥

পাপবলৈবি নিমুক্ত: সর্বান্ কামানবাপুয়াং ॥ ৭০ ॥

অথ শ্রীনৃর্ত্তেদ র্শনং যথা বারাহে ॥

ত্বুলাবনে তু গোবিন্দাং যে পদ্যন্তি বহুদ্ধরে।

ম তে ইমপুরং যান্তি, যান্তি পুণ্যক্তাং গতিং ॥ ৭১ ॥

অথ আরাত্রিকদর্শনং যথা স্থান্দে ॥ 
কোটয়ো প্রশীহত্যানামগ্রম্যাগ্রমকোটয়ঃ ॥

জাগ সর্বান্ প্রতি দর্শনমাহাত্মাঞ্চ সর্বাসামর্চানাং বদন ভক্তাবেশবিশেবাছ্পর্গারি কুর্ন্তা। শ্রীসদর্চাবিশেষায়মানস্য সাক্ষান্তগবতঃ শ্রীগোবিন্দদেবস্য
দর্শনে মাহাত্মাবিশেষমাহ বৃন্দানন ইতি যান্তি পুণাক্কতাং গতিমিতি। স বৈ পুংসাং পরো ধর্মো ইতো ভক্তিরধাক্ষত্তে ইতি নাায়েন স্থবিচারবতাং সর্বসংকর্মগামেকান্তগতিং ভক্তাখাপরমপুক্ষার্থসিদিমান্ন ব্যীতার্থঃ ॥ ৭১ ॥

পুন: শ্রীমদর্কামাত্রারাত্রিকদর্শনফলমাহ কোটয়: কোটা রিভি। মুখং কর্মান্ত ॥ বহা

শ্মুক্তি হইয়া সর্বপ্রকার মনোরথ গিদ্ধি করিয়া থাকেন॥ ৭০ ॥ শ্রীমূর্ত্তির দর্শনি, যথা বরাধপুরাণে॥

হে বহুদ্ধরে ! বাঁহারা রুশাবনে গোবিন্দদেবকে সন্দর্শন করেন, তাঁহারা আর ধমপুনীতে গমন করেন না, কিন্তু পুণ্যা-আদিগের গতিই প্রাপ্ত হয়েন॥ ৭১॥

আরাত্রিক দর্শন, যথা স্কন্দপুরাণে ॥

বিশুর আরাত্রিক-সমন্থিত বদনকমল অবলোকনমাত্রেই ক্লোটি কোটি ত্রসাহত্যা ও কোটি কোটি অসম্যাগমন জন্য দহত্যালোকমাত্রেণ বিষ্ণোঃ দারাত্রিকং মুখং॥ ৭২॥ উৎসবদর্শনং যথা ভবিষয়োক্তরে॥

রথন্থং যে নিরীক্ষত্তে কৌভুকেনাপি কেশবং । দেবতানাং গণাঃ সূর্ব্বে ভবস্তি শ্বপচালয়: ॥ ৭৩ ॥

আদিশকেন পূজাদর্শনং যথা চাগ্নেরে॥ পূজিতং পূজ্যমানং বা যঃ পশ্যেম্ভক্তিতো ছরিং। শ্রুদ্ধা মোদমানস্ত সোহপি যোগফলং লভেং॥

অথ প্রবণং ॥

ভাবণং নাম চরিতগুণাদীনাং ভ্রুতির্ভবেৎ ॥

রথস্থমিতৃংংসবাস্তবোপলক্ষণং সর্ব্বে খণচাদরোহপি দেবানাং পার্বদানাং ॥ ৭৩ ॥ যোগোহত্র পঞ্চরাত্রাহৃত্তে: ক্রিয়াযোগঃ ॥ ৭৪ ॥

পাপ বিনষ্ট হয়॥ ৭২ ॥

উৎসবদর্শন, যথা ভবিষ্যোত্তরে ॥

যাঁহারা কোতুক নিমিত্তই রথন্থ কেশবকে অবলোকন করেন, তাঁহারা চণ্ডালজাতি হইলেও বিফুপার্যনগণের মধ্যে পরিগণিত হয়েন॥ ৭০॥

আদিশকে পূজাদর্শন, যথা অগ্নিপুরাণে॥

• ধিনি ভক্তিও শ্রজানহকারে সানন্দচিতে পূজিত অথবা
পূজ্যমান হরিমূর্ত্তি সন্দর্শন করেন, তিনি যোগের অর্থাৎ পঞ্চরাত্রাদি শাস্ত্রোক্ত ক্রিয়াযোগের ফল প্রাপ্ত হরেন॥

व्यथ खारन ॥

क्तर्वारनत नाम, कतिक ७ ७गानित धारगरेक धार्य बरम ॥

তত্র নামজাবদং যথা গারুড়ে॥
সংসারসর্পনংশকী-নকটেটেকভবজং।
ক্ষুক্ষেতি বৈক্ষবং মন্ত্রং শ্রুড়া মুক্তো ভবেদরঃ॥ ৭৪ দ
চরিভজ্ঞবনং যথা চতুর্থে দ
ভিন্মিন্মহন্ম্থরিতা মধ্ভিচ্চরিত্রপীযুষশেষসরিতঃ পরিতঃ অবন্ধি।
তা বে পিবস্তাবিত্ধো নূপ গাঢ়কটৈন-

তিরিরিতি। মহতাং সদসি মহডিমুঁ থরি চাঃ শব্দার্মানীর তাঃ তান্ প্রাণা শ্বমুমের শ্বাঞ্কশবং কুর্বতা ইব জাতা ইতার্থঃ। শেষঃ সারঃ॥

ন্তান স্পুশস্তাশনতৃড্ভয়শোকবোহাঃ ▮

ভন্মধ্যে নামজাবণ, যথা গরুড়পুরাণে॥ সংসাররূপ সর্পদংশনে জানশূন্য ব্যক্তির একমাত্র মহৌ-যধ "রুক্ষ" বলিয়া এই বৈক্ষবসন্তা, ইহা ভাবণ করিলে মানব বিমৃক্ত হয়॥ ৭৪॥

চরিতশ্রবণ যথা চতুর্থে ২৯ অ। ৩৭ ক্লোকে ॥
থেকানে মহাপুরুষদিগের বদনচন্দ্র হইতে বিগলিত শ্রীকুষের চরিতরপ অমৃতনদী, সর্বতোভাবে প্রবাহিত হয়, হে
রাজন্! দেইস্থানে অবস্থিতিপূর্বক যে সকল ব্যক্তি বাম্নাশুন্য চিত্তে কর্ণাঞ্জলিদ্বারা ভাহা পান করেন, ক্ষুক্ষা, তৃষ্ণা,
ভয়, শোক ও মাহপ্রভৃতি ভাহাদিগকে কখনই স্পার্শ করিতে
পারে না॥

#### खनखेरनः यथा चामरण ।

প্রস্তুরতেহভীক্ষমমঙ্গলন্ধ:।
তমেব নিত্যং শৃণুরাদভীক্ষং
ক্ষেহ্যলাং ভক্তিমভীপ্সমান:॥ ৭৫॥
তথ তৎক্পেকণং যথা জ্রীদশমে॥
ভত্তেহত্ত্কস্পাং স্থদমীক্ষমাণো
ভুঞ্জান এবাত্মকৃতং বিপাকং।

উত্তরস্মাকানাং ভগবদব নারাণাং ভাগবতানাঞ্চ শুণামুবাদো মছান্তঃ সঙ্গীরতে। তমেব নিতাং প্রভাহং তত্রাপাতীক্ষং শৃণুরাং। তত্র পতিশরেনাগ্রহং ক্র্যাদিতার্গঃ। প্রবণসা তসা পর্মফলমাহ ক্লফ ইতি। ক্লফন্ত ভগবান্ বর্মিতাাদিপ্রসিদ্ধে: প্রীগোপাল ইভার্থঃ॥ ৭৫॥

স্বত্তে হ্রুকপামিতা তামুকশোকণং নমস্বারশেতি পৃথগেব সাধনদরং বৈশি-ইার ত্রেকত্র পঠিতং। তত উভয়মণি সমানফলমেব জ্রেমমিভি ভাবং। নবৰ

গুণপ্রবণ যথা দ্বাদশক্ষে ও আ। ১২ ক্লোকে ॥
অমঙ্গলনাশক প্রীকৃষ্ণের যে সকল গুণাসুবাদ তাহাই
বান্ধার প্রবণ করিবেন ॥ ৭৫ ॥

তাঁহার কুপার প্রতি ঈক্ষণ, যথা দশমক্ষয়ে ১৪ **অ**। ৮ প্লোকে॥

্রেছ-ভগবন্! তোমার অনুকল্পা নিরীক্ষণ করিরা অর্থাৎ কবে আপনার দয়া হইবে এই প্রভীকার বহু মন্যমান হইয়া হাদ্বাধপুর্ভিবিদ্ধন্ নমস্তে

জীবের যো মুক্তিপদে স দায়ভাক্ ॥

অপ স্মৃতিঃ ॥

যথা কথঞ্জিন্মনদা সম্বন্ধঃ স্মৃতিরুচ্যতে ।

যথা বিষ্ণুপুরাণে ॥

স্মৃত্তে সকলকলাণভাজনং যত্র জায়তে ।

পুরুষ্ত্তমন্তং নিত্যং ব্রজামি শরণং হরিং ॥ ৭৬ ॥

পদার্থন। মৃক্তেরপাশ্রে দশমণদার্থে ছবি স দায়ভাগ্ ভবতি। জং তসা দার-দেন বর্তনে ইতার্থ: ৪ ৭৬ ॥

আনাসক্ত চিত্তে আপনার অর্জিত কর্মফল ভোগ ও কায়মনো-বাক্যে আপনার প্রতি নমস্কার বিধান করত যে ব্যক্তি জীবিত থাকেন, তিনিই মুক্তিবিষয়ে দাযভাগী হয়েন। ফলতঃ ভক্ত-ক্যক্তির জীবন ব্যতিরেকে অন্য কিছুই দায় প্রাপ্তির ন্যায় মুক্তিবিষয়ে উপযোগী নহে।

অথ স্মৃতি॥

যে কোন প্রকারে মনের সহিত সম্বন্ধ হওয়াকে স্মৃতি-কাহে।

यथा विक्रुभूताए ॥

ৰাঁহার স্মনণে জীৰগণ সমস্ত কল্যাণের ভাজন হর, সেই স্মান্ত্রিত নিভ্য বিগ্রহ পুরুষ শ্রীহ্রির স্মন্ত্রণাগত হই॥ ষধা বা পান্ধে ॥
প্রাণে চাপ্রয়াণে চ যক্ষাক স্মরতাং নৃণাং ।
সাদ্যো নশ্যতি পাপোঘো নমস্তব্যৈ চিদাত্মনে ॥
ধ্যানং যথা ॥
ধ্যানং রূপগুণক্রীড়াসেবাদেঃ স্মর্চ্চ চিস্তনং ॥ ৭৭ ॥
তত্র রূপধ্যানং যথা নার্নিংহে ॥
ভগবচ্চরণদ্বন্দ্ব্যানং নিদ্ধনীরিতং ।

প্রথাণে মরণদশারাং অগ্রন্থাণে জীবনদশারাং। প্রথাণকালে মনসা চলেনেডি শ্রীগীতাতঃ ॥ ৭৭ ॥

নির্দ্ধি শীতোঞাদিময়হংবপরম্পরাতীতং ঈরিতং শাক্তে বিহিতং তচ্চ পাশিনোহপি প্রসক্ষোপি পরমুৎকুটং স্থিতং বিহিতং ততৈবেতার্থ: ॥ ৭৮॥

#### যথা বা পদ্মপুরাণে॥

মৃত্যুকালে অথবা জীবদশায় বাঁহার নাম সারণ করিলে পাপরাশি সদ্যই বিনষ্ট হইয়া যায়, সেই সচ্চিদানন্দবিপ্রহ শ্রীকৃষ্ণকে প্রণাম করি॥

#### অথ ধানি ॥

রূপ, গুণ, ক্রীড়া ও দেবাদির যে স্থ্র্ছ চি**স্তন ভাহার** দাম ধ্যান ॥ ৭৭ ॥

রূপধ্যান, যথা নারসিংহে॥
ভগবানের চরণঘন্দ ধ্যানই শীতোফাদিমর তথতঃখণারম্প্রা-রহিত বলিয়া কথিত হইয়াছে, যাঁহার প্রসঙ্গ মাজে

# **ভिত्तिमात्र्**कितिकः। श्रुवि । २ गरेत्री

পাশিনোহশি প্রদক্ষেন বিহিতং স্থাহিতং পারং ॥
তথ্যানং যথা বিষ্ণুধর্মে ॥
বে কুর্বন্তি দলা ভক্ত্যা গুণাকুম্মরণং হরে: ।
প্রকাণকলুযোঘান্তে প্রবিশন্তি হরে: পদং ॥
ক্রীড়াধ্যানং যথা পাল্মে ॥
সর্বমাধ্র্যারাণি সর্বান্ত্রময়ানি চ ।
ধ্যায়ন্ হরেশ্চরিত্রাণি ললিভানি বিম্চাতে ॥ ৭৮ ॥
বেবাধ্যানং যথা পুরাণান্তরে ॥
মানশেনোপচারেশ পরিচর্য্য হরিং মূল। ।

মানসেনেভাত ত্রদ্ধবৈষ্ঠকথা চ যথা। প্রভিষ্ঠানপুরে কন্চিবিপ্র, দ্বাসীৎ সুচ দরিক্রোহণি কর্মাধীনং দ্বাদ্মানং মন্যমানং শাস্ত এবাসীং। স ভূ সম্মনবৃদ্ধিঃ

পাপাত্মাদিগেরও হৃদ্দর হিত হইয়া থাকে॥
গুণধ্যান যথা বিফুধর্ম্মোভরে॥

বাঁহারা নিরস্তর ভক্তিযোগ দহকারে ভগবান্ হরির গুণ-ক্ষলের অনুস্মরণে প্রবস্ত হয়েন, তাঁহারা পাপরাশিকে ক্ষর করিয়া ভগবদ্ধামে প্রবেশ করেন॥

की ड़ाधान, यथा भष्मभूतार्ग॥

দনত মাধুর্য্যের দার এবং দর্বাশ্চর্য্যমর ও মনোহর হরির চরিত্র যাঁহারা ধ্যান করেন, তাঁহারা সংদার হইতে বিনিমুক্তি হরেন। ৭৮॥

সেবাধ্যান যথা পুরাণান্তরে ॥ মনঃক্ষিত উপচার ছারা আনক্ষচিত্তে হরির পরিচর্ট্না

### পরে বাধানসাছগম্যং তৎ দাকাৎ প্রতিপেদিরে ॥ ৭৯ ॥

ক্লাচিংবিপ্রেক্সাণাং সদসি বৈশ্ববান্ ধর্মান্ভপ্রাব। তেত চ ধর্মা মনসাণি সিধ্যভীতি প্রম্বা দিরিক্রঃ স্বয়ং তথৈবাচরিত্যমান্ধরান্। তত্তক গোদার রীশ্লানপূর্ব্বকং নিতাকর্ম সমাপ্য শাস্তমতিভূবি বিবিক্তাসনঃ প্রাণারামাদিকর্মপূর্ব্বকং
ছিরীভূয় মনসৈবাভিমতাং শ্রীহরিমূর্ত্তিং স্থাপরিত্বা স্বয়ং গুক্লাদিকং পরিধার তাং
প্রণম্য দৃচং পরিকরং বছা তৎসদনং সন্মার্জ্য তাং প্রণম্য রাজতগোর্ববিটঃ
সর্বেবাং গঙ্গাদিতীর্ধানাং জলমান্তত্য তথা নানা পরিচর্ব্যাদ্রগাণি উপানীশ্ব
তদীয়ং সপনাদিকমারাত্রিকান্তং মহারাজোপচারং সমাপ্য চ দিনং প্রথাতিশব্বমার্থ ব্রাসীং। তদেবং বহুমু কালেয়ু গতেয়ু কদাচিৎ মনসৈব সম্মুত্তং পর্মান্ত্রং
নির্মার, সৌবর্ণপাত্রেণ তভোজনার্থমুখাপ্য ন্বিতন্ত প্রতিষ্কৃত্ব কর্মান্ত হিশ্ব কর্মান্ত তিন্তির ত্তার পর্বাহিমঙ্গুইম্বাং দগ্ধং প্রতিবন্ হন্ত তদিদং গুইং আতমিতি গ্রুংখন তদ্বিদ্বা সমাবিভিদ্দে
হিল বৈক্ঠনাথেন হসতা প্রীপ্রভৃতিভিন্তং কারণং স্পৃষ্টেন চ সতা স্থিকিটং
বিমানেন আনরামানে। তথাবিধতয়া স্থনিকটে দর্শরামানে স্থনিকটে বেগ্যান্তরা স্থাপরামানে চেতি ॥ ৭৯ ॥

করিয়া কোন কোন ব্যক্তি বাক্য মনের অগম্য সেই ছব্নির শাক্ষাংকার লাভ করিয়াছেন॥

ক্ষাৎকার লাভ করিয়াছেন॥ মানস পরিচর্য্যাসম্বন্ধে ভ্রহ্মবৈবর্ত্ত পুরাণের কথা, যথা—

প্রতিষ্ঠান-পুরে কোন এক প্রাহ্মণ বাস করিছেন, কিন্তু তিনি দরিদ্র হইয়াও আপনাকে কর্মাধীন মানিয়া শান্তিচিত্তে কাল যাপন করিতেন, প্রাহ্মণ অতি সরল-চিত্ত, কোন সময় বিজ্ঞতম বিপ্রদিগেরর সভায় বৈফবধর্ম সকল প্রবন করিছে क्तिए औ धर्म मकल मानद बादां । निम्न इस, अहे कथा अंदन করিয়া স্বীয় দরিদ্রতা নিবন্ধন স্বরং মনে মনে ঐ ধর্মের স্পাচ-রগ করিতে আরম্ভ করিলেন। কোন এক দিবস গোদাবরী-নদীতে স্নানপূর্বাক নিত্য কর্ম্ম সমাপন করিলেন, পরে নিশ্চল वृक्षित्व निर्कत श्राप्ताम छेश्रार्यमनशृक्षक श्रागाश्चामानियाता মনকে স্থির করিয়া তত্মধ্যে ভগবান্ হরির মূর্ত্তি স্থাপন করিয়া পট্টবন্ত্র পরিধান করাইলেন, পরে প্রণামপূর্ব্যক দৃঢ়রূপে কটি বন্ধন করত @ মন্দির মার্জনা করিতে লাগিলেন। খন-স্তর ঐ মূর্ত্তিকে প্রণিপাতপুরঃদর স্বর্ণ রোপ্য নিশ্মিত কলদ-बाबा भनामि भूगा डीर्थ मकल इट्रेंट छल आनशन कतिरागन, ভদনস্তর বিবিধ পূজোপকরণ দ্রব্য আহরণপূর্ব্যক মহারাজো-পচারে তাঁহার স্নানাদি আরাত্রিকপর্যন্ত সমস্ত কর্মা সমাপন করিয়া দিন দিন অতিশয় স্থামুভব করিতে লাগিলেন। এই-রূপে বহু কাল অভিবাহিত হইলে কোন এক দিবস মনে মনে শন্নত প্রমান্ন পাক করিয়া স্বর্ণাত্রে সংস্থাপন করত ভগ-বানের ভোজনের জন্য দণ্ডায়মান হইলেন, পরমান্নের উত্ত-প্রতা নিবন্ধন তমধ্যে প্রবিক্ট অনুষ্ঠন্বয় দগ্ধ জ্ঞান করিয়া হায় ! শরমান্ন দূষিত হইল, তুঃথিতচিত্তে এই কথা বলিতে বলিতে তাঁহার সমাধি ভঙ্গ হইল এবং অনুতাপ করিতে করিতে দৈবাৎ অঙ্গুর্চের প্রতি দৃষ্টিপাত হওয়াতে দেখেন সত্যই শৃষ্ঠ ৰয় দক্ষ হইয়াছে, ত্রাক্ষণের এই ব্যাপার অংগত **इंदेश देव**क्री शिष्ठिंड देवर्थनाथ श्रेयर हामा कतिरनन,क्

## भृक्ता २ लहती। एक्तित्रमाञ्चलिक्तः।

## অথ দাস্যং॥ " দাস্যং কর্মার্পণং ভস্য কৈক্ষর্যম্পি সর্বাথা॥ ৮∞॥

কর্মার্পণমিতান্দা দাসামিতি বিধীয়তে। তদেউচ্চ অনামতং অমতব্ধকৈক্র্যমিতি। তচ্চ কিং করোমীতাভিমান:। যথোক্তমিতিহাদসমূচরে।
জন্মান্তরস্থসা সামাতিরীদৃশী। দাসোহহং বাস্থদেবসা সর্বান্ লোকান্
সম্করেদ্তি। তথৈব বাাথাতং। তথৈয়ব নে সৌহদস্থামৈত্রী, দাসাংপ্রজন্মনি স্যাদিতি শ্রীদামবিপ্রসা বাকো স্থামিভিরণি দাসামিতি সেবকস্থং
ব্যাথাতং। এতসাচ কার্যভূতং পরিচ্ব্যাদিকং জ্রেরং কেবলপরিচ্ব্যাক্সপ্তে
ভেদোন স্যাং॥ ৮০॥

লক্ষাপ্রভৃতি শক্তিগণ স্থীপ্রবর্তিনী থাকিয়া হাস্যের কারণ জিজ্ঞাসা করিলেন, প্রভো! আপনি হাস্য করিলেন কেন ? ভগবান্ কোন উত্তর না দিয়া, আপনার বিমান প্রেরণপূর্বক ঐ আক্ষাণকে স্থীয় নিকটে আনয়ন করিলেন এবং প্রেয়সী-গণকে দেখাইয়া সমস্ত বৃত্তান্ত বর্ণন করিলেন। অনন্তর ভগ-বান্ ঐ দরিদ্র আক্ষাণকে বৈকুঠে স্থানদানপূর্বক বাসের অধি-কার প্রদান করিলেন॥ ৭৯॥

#### व्यथ मांगा॥

কর্ম সমর্পণ করাকে কেহ কেহ দাস্য বলেন, বস্তুতঃ সর্বতোভাবে দাসভাভিমানের নামই দাস্য ম ৮০ ॥ ভত্তাদ্যং যথা ক্ষান্দে ॥
ভশ্মিন্ সমর্পিতং কর্ম স্বাভাবিকমপীশ্বরে ।
ভবেদ্যাগৰতং ধর্মং তৎকর্ম কিমৃতার্পিতং ।ইতি ॥
কর্ম স্বাভাবিকং ভদ্রং জপধ্যানার্চ্চনাদি চ ।
ইতীদং দ্বিধং ক্ষেও বৈষ্ণবৈদ্যামর্পিতং ॥ ৮১ ॥
মৃত্যুজ্বদ্যা ক্ষিতা স্বল্লা কর্মাধিকারিতা ।

ভজাদাং কর্মার্শণমুদাহরতি ভরিন্নিতি। তত্রৈব বিধেরং দাসামণি বৈর্ধিধানাহ কর্ম বাভাবিকমিতি। স্থাভাবিকং তত্ত্বর্গাশ্রমাতাপাধিসভাব**প্রাঞ্জ তত্ত্ব**জ্ঞার মন্ত্রার ভ্রমান্ত ভানিক ভ্রমান্ত ভ্

छनात्था कर्णमञ्जी माना यथा ऋमानू तात् ॥

শ দেই পরমেশ্বর হরিতে যদি বর্ণাশ্রমাদি স্বভাবপ্রাপ্ত কর্মা সকলও সমর্পিত হয়, ভাহা হইলে ঐ কর্মাসকলকে ভাগবত ধর্মা বলে, আর যদি ভগবানের কর্মা ভগবানের প্রীত্যর্থ করা হয়, তবে সে যে ভাগবত ধর্মা না হইবে ইহার কথা কি ? ॥

বর্ণাপ্রাথানি সভাবপ্রাপ্ত যে কর্ম তাহা মঙ্গলজনক, অন্য কর্ম নহে এবং জপ, ধ্যান ও অর্চনাদিরূপ কর্মও পর্মকল্যাণ স্থরূপ, এজন্য বৈফ্ডবগণ এই চুই প্রকার দাস্য শ্রীকৃষ্ণে সম-র্পণ করেন ৪৮১॥

যাহার অর্মাত ও প্রদা জন্মরাছে, ভাহার কর্মেভে

ভদর্শিতং হরে দাস্যমিতি কৈশ্চিত্দীর্ঘতে ॥ ৮২ ॥

বিতীয়ং যথা নারদীয়ে ॥

ঈহা যস্য হরেদাস্যে কর্মণা মনসা গিরা।

নিশিলাম্বপ্যবস্থান্ত জীবন্মুক্তং স উচ্যতে ॥ ৭০ ॥ ।

কথ স্থাং ॥

বিশ্বাসো মিত্রেভিশ্চ স্থাং বিবিধ্নীরিতং ॥ ৮৪ ॥

শুত্র উত্তরস্যার্শণাভাষাদাস্যদাভাবেংশি শুদ্ধশুদ্ধমন্তি পূর্বস্য ডু ভদ্দি নাশ্তীভি স্থভরামের ন তৎ স্থমভ্মিভ্যাহ মৃত্পদ্ধগেতি। ডেন তস্যার্শিজ-মর্পনং দাস্যং তদের পূর্বত্র অর্পন এব তাৎপর্বাং। প্রবশং কীর্ত্তনমিভ্যাদৌ ডু ইতি পুংসার্শিভা বিফাবিভ্যনেন দাস্যাদ্প্যদর্শণং প্রভীরতে ॥ ৮২ ॥

অথ সমতং মহিন্না দুৰ্শবৃতি জহা যুসোতি। দাস্যে নিৰিত্তে জহা দাসো ভবানীতি স্পুত্ত্তাৰ্থ: ॥ ৮৩ ॥

বিখাস ইতি। পূর্ববদন্যমতং মিত্রবৃদ্ধিতি তৃ স্বমতং বৈশ্বমাত্রং। বন্ধিত্রং প্রশানক্ষমিতিবং তছ্তিভয়ে। অভিমানঃ ॥ ৮৪॥

অধিকারও অল্ল, সেই কর্ম হরিতে সমর্পিত হইলেই কেছ কেছ ভাষাকে দাস্য বলিয়া থাকেন ॥ ৮২ ॥

ৰিতীয় প্ৰকার অর্থাৎ কৈক্ষর্যা, যথা নারদীয়ে ॥ কায়মনোবাক্যৰার। হরির দাস্যের প্রক্তি যাহার স্পৃহা, তিনি সকল অবস্থাতই জীবন্মুক্ত॥ ৮৩॥

व्यथु मभा ॥

রিশ্বাদ ও মিত্রহৃতি এই ছুইকে সখ্য বলা যায়॥ ৮৪ ॥

তত্রাদ্যং যথা মহাভারতে ॥ প্রতিজ্ঞা তব গোবিন্দ ন মে ভক্তঃ প্রণশ্যতি। ইতি সংস্মৃত্য প্রাণান্ সংধারয়াম্যহং ॥ ৮৫ ॥ একাদশে চ ॥

ত্রিভুবনবিভবহেতবেহপ্যকুণ্ঠ-স্মৃত্তির**জি**ভাত্মস্থরাদিভির্বিমৃগ্যাৎ।

প্রতিজ্ঞতি জীজৌপদীবাকাং। তন্মাদ্যা ফ্লাপি প্রেমবিশেষ্ময়পরিকরাস্ত্রিকেন দশ্রিবামাণায়া বাকামিদং প্রেমবিশেষকায়্মের নতু দাধনং
ক্রাপ্রিকামাজিশ্রানাং সাধনম্পি সাাদিত্যেবম্দাস্তং। এব্যুত্তর্তু চ
ভীতাগ্রতান্ত্রমবর্ণন্ময় প্রকর্ণাছ্ক্তে প্রেম জেয়ং। প্রব্রসনয়া ধৃতাজিলু পদ্ম
ইতি ভছ্পসংহারাং॥ ৮৫॥

ত্ত্বিত্বনবিভবার কিমৃত তত্ত্বেত্তব ইতার্থ:। সর্বোছপি ছন্দো বিভারত্ত্বিকব্যবহাতি ন্যারেন একবচনং ॥ ৮৬ ॥

তন্মধ্যে বিশ্বাস যথা মহাভারতে ॥

জৌপদী জ্রীকৃষ্ণকে কহিলেন, হে গোবিন্দ! তোমার প্রতিজ্ঞা এই শ্বে আমার ভক্ত কখনও বিনষ্ট হইবে না। ইহাই স্মরণ করিয়া স্মরণ করিয়া আমি প্রাণধারণ করি-তেছি॥৮৫॥

धकानम ऋक्ष २ च । ৫১ ह्यां कि **।** 

ঋষভনন্দন হবি, নিমিরাজকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, মহারাজ! ত্রৈলোক্য রাজ্য উপস্থিত হইলেও ইস্তাদি দেবগণের অফেদণীয় ভগষ্চরণার্থিক ইইতে লব নিমিয়ার্ক্ ন চলতি ভগবৎপদারবিন্দা
ল্লবনিমিধার্দ্ধমপি স বৈষ্ণবাগ্রাঃ। ইতি ॥ ৮৬ ॥

শ্রামাত্রন্য তন্তক্রাবধিকারিত্বহেতৃতা।

সঙ্গত্রমন্য বিশ্বাসবিশোষন্য তু কেশবে ॥

দিতীয়ং যথা অগস্ত্যসংহিতায়াং॥

পরিচর্য্যাপরাঃ কেচিৎ প্রানাদের্চ শেরতে।

মনুষ্যমিব তং দ্রেফুং ব্যবহর্ত্তৃক বন্ধুবৎ॥ ৮৭॥
রাগানুগাঙ্গতান্য ন্যাদিধিমার্গানপেক্ষণাৎ।

শ্রদ্ধানাত্রস্য ইতি যদ্যপি শ্রদ্ধবিশাদরোরেকপর্যায়ন্ত্রমেব তপাপি তৎপুর্বো।
ন্তর্ভাবস্থ্রা তত্তদ্বেশপ্রেরোগগাচ্র্যামিতি পৃথক্শকপ্রেরোগঃ ফলদামানাবেশকেসর্ব্বোভ্রমণাধনকেন প্রতীতিরত্র মাত্রপদার্থঃ। ফলবিশেষদ্য তাদৃশদাধনকেন কতঃ
সর্ব্বোভ্রমফলরূপত্বেন বা প্রতীতিঃ বিশেষপদার্থঃ। তত্ত্ব প্রস্তৃত্বাৎ শ্বরং ক্রেমেণ
উদাহ্বত্যিতি ভাবঃ॥ ৮৭ ॥

তদেব যদ্যপি পূর্বমুদাহরণং ৰক্ষ্যমাণরাগান্থগাঙ্গওমেব প্রবিশতি ভথাপো-

কালের নিমিত্তও বিচলিত হয়েন না, ভগবচ্চরণারবিন্দকেই
শার বলিয়া দুঢ় নিশ্চয় করিয়াছেন, তিনিই বৈফবল্পেষ্ঠ ॥৮৪॥

ভগৰম্ভক্তিতে শ্রদ্ধামাত্রের অধিকারিত্ব আছে ঐ শ্রদ্ধাক্ষে কেশব সম্বন্ধীয় বিশ্বাস বিশেষের অঙ্গত্ব বলা যায় ॥

মিত্রবৃতির বিষয় অগস্ত্যদংহিছায় যথা।।

ভগবান্কে সমুষ্যের ন্যায় দর্শন করিবার নিমিক্ত এবং তাঁহার সহিত বন্ধুবৎ ব্যবহার করিবার জন্য কোন কোন মহাজ্মা তাঁহার শ্রীমন্দিরে শয়ন করিয়া থাকেন॥৮৭॥

বিধিমার্গের প্রতি দৃষ্টিপাত না করিলে এই সধ্যের রাগা-

# ভক্তিরসাত্তসিদ্ধঃ। পুর্বা ২ বছরী

মার্গন্ধরেন চৈত্তেন সাধ্যা স্থ্যরতির্ম্ তা ॥ ৮৮ ॥
অথাজ্মনিব্রদনং যথৈকাদশে।
গর্ত্তো যদা ত্যক্তসমস্তকর্মা
নিবেদিতাজা বিচিকীর্ধিতো মে।
তদামৃতত্বং প্রতিপদ্যমানো
ময়াজ্মনুয়ায় চ কল্পতে বৈ। ইতি॥ ৮৯ ॥

ভক্ষুদারেণ বৈধ্যপোদাহরণমণি জ্ঞব্যমিত্যভিপ্রায়েণ আহু রাগাসুগালভেডি। স্থারতিব স্কুভাবরতিরিভার্থ:॥ ৮৮॥

মন্ত্রা ইতি । যতো নিবেদিভাত্মা অভতাক্তং সমন্ত্রমহিকামুত্মিকং কর্ম্ম আত্মাত্মীরপোনণাদিরপং যেন সং । তহি মে ময়া বিশিষ্টং কর্ত্ মিষ্টো ভবতি । অনুভত্মিতি মৃত্যুপরস্পরাসতিক্রামরি ভার্যং । করা সহ ? মৎসাম্যেন আত্ম ভ্রার করতে অরুণাবিশ্বিং দৎসাষ্টি লক্ষণাং মৃত্তিং প্রাপ্তোত্যর্থঃ ॥ ৮৯ ॥

মুগাঙ্গতা সিদ্ধ হয়, ফলতঃ পূর্বেলিক শ্রন্ধা ও বিশাস এই চুই প্রকারে স্থ্য রভি সাধ্য হইয়া থাকে ॥ ৮৮॥

আত্মনিবেদন যথা একাদশে ২৯ তা। ৩২ শ্লোকে।
আনাতে যিনি দেহাদি সমর্পন করিয়াছেন এবং যিনি
ঐহিক পারত্রিক সমুদায় কর্মা পরিজ্যাগ করিয়াছেন, এরপ
সরণ ধর্মাক্রান্ত মনুষ্য যথন আমাকর্তৃক বিশেষিত হয় অর্থাৎ
আমি যথন ভাহাকে উত্তম করিতে ইচ্ছা করি, তথন তিনি
মুত্যুপরম্পরা অভিক্রেম করিয়া আমার সান্তি লক্ষণা মুক্তি
আলি হয়েন ॥ ৮৯ ॥

অর্থে। বিধাত্মশবদ্য পণ্ডিতৈরুপপাদ্যতে।

দেহুহস্তাম্পদং কৈশ্চিদ্দেহ: কৈশ্চিম্মস্বভাক্ ॥ ৯০ ॥
ভত্র দেহী যথা যামুনাচার্য্যন্তোত্রে।
বপুরাদিয়ু বোহপি কোহপি বা
গুণতোহ্দানি ষথা তথাবিধঃ।
তদয়ং ভব পাদপদ্ময়োরহমদ্যৈব ময়া দমপিতঃ॥

দেহো ষথা ভক্তিবিবেকে।
চিন্তাং কুর্যাম রক্ষায়ে বিক্রীতদ্য যথা পশোঃ।

দেহ: কৈন্চিং ইতামুকল্ল এব ॥ ৯•॥

বোহপি কোহপীতি বাদিভেদাৎ শ্বশ্নপঃ। অথবা গুণতো ধ্বা তথাবিশো

আরাশব্দের অর্থ গুই প্রকার, কোন কোন পণ্ডিত অহং-তত্ত্বাস্পদীভূত ( অহঙ্কারাস্পদ—আমি আমার ইত্যাদি) দেহীকে আত্মা বলেন, কেহ কেই বা মমন্বাভিমানী দেহকে আত্মা বলিয়া উল্লেখ করেন॥ ৯০॥

তন্মধ্যে দেহি সমর্পণ, যথা যামুনাচার্যান্তো ।।

হৈ ভগবান্! আমি শরীরাদিতে যে কেই হই অথবা
গুণনিবন্ধন দেব মনুষ্যাদিই হই, দেই আমি আন্তই আমাকে
আপনার চরণযুগলে সমর্পণ করিলাম ॥

দেহসমর্পণ যথা হরিভক্তিবিবেকে॥

বিক্রীত পশুর রক্ষণাবেক্ষণ নিমিত্ত যেমন চিন্তা করা ধায় না, ডক্রপ হয়িতে দেহ সমর্পণ করিয়া ভাহার রক্ষণা-

## किन्त्रभाष्ठितिकः। शृति। २ नहती

ख्यार्थित् हर्द्धा त्महः वित्रत्ममगु त्रक्यां ॥ ৯১॥ प्रकृत्यक्व वित्रत्म त्व मथाज्ञिनित्यम् । त्क्यां क्षित्मय थीतांगाः मट्डिल माथनाह डाः॥ ৯२॥

দেবদর্ব্যদির প:। অসানি ভবানি। কামচারে লোট্। তদর্মিতি সচাসা-বয়ঞ্জেতি বিগ্রহাৎ সোহয়মিত্যর্থ: ॥ ১১ ॥

ক্ষরত্বেনেতাত আত্মনিবেদনস্য কেবলস্য ত্ষরত্বেন বৈরল্যং নতু মহিসাধিকান ভাবশূন্যথাৎ স্থাস্য তৃ ত্ষরত্বেন মহিমাধিকান চ বৈরল্যং ভাবোভ্রমরপথাং। যদিচ ভাবমিশ্রমাত্মনিবেদনং ভবতি তদা তৃ স্থতরাং মহিমাধিকোনাপি বিরলং স্যাৎ। তার কেবলমাত্মনিবেদনং দানসময়ে শ্রীবলিরাজে
দৃষ্ঠতে। শরণাপতিং থলু রকিত্ত্বেন বরণং তদিদন্ত আত্মনন্তনীয়তাসম্পাদনমিতি ভেদং। ভাববিমিশ্রেয় দাসোনাত্মনিবেদনং শ্রীমদন্তরীয়ে। তত্তকং। স বৈ
মনং ক্ষপদারবিন্দ্রোরিত্যারভ্য কামঞ্চ দাস্যে ন তৃ কামকাস্যারেতান্তেন।
ভবেবোকং শ্রীভাগবভৈকাদশে দাসোনাত্মনিবেদনমিতি। তথা প্রেরসীভাবেন
শ্রীক্ষরিণীদেব্যা। যথোকং তবৈব। তন্মে ভবান্ থলু বৃত্তঃ পতিরক্ষজায়ামাত্মাপিতিশ্ব ভবতোহত্র বিভা বিধেহীতি। এবং স্থাদীনাপীতি ভ্রেমং॥ ৯২॥

বেক্ষণ হইতে উপরত হইবে॥ ৯১॥

সধ্য ও আত্মনিবেদন এই চুইটী অতিশয় চুক্ষর বলিয়া অতি বিরল, কিন্তু কোন কোন ধীর পুরুষদিগের নিকট ঐ ছুইটী দাধনযোগ্যতা প্রাপ্ত হয়॥

ভাৎপর্য। এই তুইটা ভক্তাঙ্গকে বিরল বলিবার কারণ এই যে, কেবল আজ্নিবেদনের তুজরত্ব প্রযুক্ত বিরল, উহার কোর বিশেষ মহিনা নাই, যে হেতু উহা ভাবশূন্য নহে। আজ্বাবিষেদন যদি ভাবমিশ্র হয় তাহা হইলে তাহা মহিমা-ধিক্যেতেই বিরল হইবে॥ ৯২॥

## পৃথব। "২ লছরী। ভক্তিরসাম্ভণিকু:।

অপ নিজপ্রিয়োপহরণং যথৈকাদশে ॥

যদযদিউতমং লোকে যচ্চাতিপ্রিয়মাস্থানঃ ।

তত্তমিবেদয়েমহাং তদানস্ত্যায় কল্পতে ॥

অথ তদর্থেহথিলচেষ্টিতং যথা পঞ্চরাত্রে ॥
লোকিকা বৈদিকী বাপি যা ক্রিয়া ক্রিয়তে মুনে ।
হরিসেবামুক্লৈব সা কার্যা ভক্তিমিচছতা ॥ ইতি ॥৯০ ॥

অথ শরণাপত্তির্থা হরিভক্তিবিলাসে ॥

তবাস্থীতি বদন্ বাচা তথৈব মনসা বিদন্ ।

র্মন্যদিতি চকারানাম প্রিয়ঞ্চ । ১০ ॥

নিজ খিয়োপহরণ যথা একাদশে ১১ আ। ৪০ শ্লোকে । শ্রীকৃষ্ণ উদ্ধাবকে কহিলেন, হে বন্ধো! যে যে দ্বার্য লোকসমাজে অত্যুৎকৃষ্ট এবং যে দকল দ্রব্য আপনার এবং আমার প্রিয় হয়, দেই দেই দ্রব্য আমাকে নিবেদন করিলে, ভাহা অনন্তকাল ফলপ্রাদ হইবে॥

ভগবানের নিমিত্ত সমুদায় চেফী, যথা নারদপক্ষরাত্তে ।

হে মুনে! মানবকুল লোকিক ও বৈদিক যে সকল জিয়ার
জামুঠান করে, ভক্ত্যাভিলাষি ব্যক্তিরা সেই সমস্ত জিয়া।

যাহাতে হরিসেবায় জামুকূলা হয়, সেইরূপ করিবেন। ৯০॥
শরণাপত্তি যথা হরিভক্তিবিলাদে॥

"হে ভগবন্! আসি আপনার হইলান," যে ব্যক্তি ৰাক্য খারা এইরূপ বলেন এবং মনোমধ্যে ভজ্ঞপ অভিযান করেন তৎস্থানমান্তিতন্ত্রা মোদতে শরণাগতঃ ॥
নারদিংহে চ ॥
দ্বাং প্রপ্রোহ্যি শরণং দেবদেবং জনার্দ্দিং ।
ইতি যঃ শরণং প্রাপ্তত্তং ক্লেশাহ্ররাম্যহং ॥ ৯৪ ॥
ভ্রথ ভূলদ্যাঃ দেবনং যথা স্কান্দে ॥
যা দৃষ্টা নিথিলাঘদংঘশমনী স্পৃক্টা বপুঃপাবনী ।
রোগাণামভিবন্দিতানিরদনী দিক্রাহস্তক্রাদিনী ।

শরণং প্রাপরোহমি রক্ষিত্তান বৃত্বানমি। শরণং তদাশ্রং প্রাপ্ত: শরণ-শক্ষেন হি ভদ্বমপু:চাত ইতি ॥ ১৪ ॥

য। দৃষ্টেতি। বপু:পাবনী কুজন্মখাদিশোধনী রোগাণাং ক্লেশমাজাণাং

ও শরীরদ্বারা আপনার স্থান আগ্রয় করেন, সেই শরণাগত ব্যক্তিই আনন্দাকুভব করিতে পারেন॥

नृतिः ह्रभूद्रार्टिख यथा ॥

নৃসিংহদেব বলিয়াছেন "তুমি দেবদেব তুমি জনাদিন, তোমার শরণ প্রাপ্ত হইলাম" এই কথা বলিয়া যে ব্যক্তি আমার শরণাগত হয়, আমি তাহাকে ক্লেশ হইতে উদ্ধার করিয়া থাকি॥ ৯৪॥

कुलगौरमवन यथा ऋन्मश्रुतारन ॥

দর্শন করিলে যিনি নিখিল পাঁপরালি বিনষ্ট করেন, স্প্রশ করিলে যিনি দেহ পবিত্র করেন, প্রণাম করিলে যিনি রোগ-প্রভৃতি ক্লেশ হউতে বিমুক্ত করেন, জলদেচন করিলে যিনি অন্তক-(যম)-ভয় নিবারণ করেন, রোপণ করিলে যিনি ভগ- প্রত্যাসত্তিবিধায়িনী ভগবতঃ কৃষ্ণন্য সংরোপিতা ন্যস্তা ভচ্চরণে বিমুক্তিফলদা, তদ্যৈ তুলদাৈ ন্যঃ ॥ তথাচ তত্তিব ॥

দৃষ্ট। স্পৃষ্টা তথা ধ্যাতা কীর্ত্তিতা নমিতা প্রাতা।
বোপিতা দেবিতা নিত্যং পূজিতা তুলদী শুভা॥
নবধা তুলদীং দেবীং যে ভজন্তি দিনে দিনে।
যুগকোটিনহস্রাণি তে বদন্তি হবেগ্হে॥ ৯৫॥
অথ শাস্ত্রদ্য॥

শাস্ত্রমত্র সমাখ্যাতং তদ্ধক্তিপ্রতিপাদকং।

প্রত্যাসন্তিম নিদ আদল: বিমুক্তিবিশিষ্টা মুক্তিঃ সপ্রেম চকিরিত্যর্থঃ ॥ ৯৫ ॥ 🚦

বান্ প্রীক্ষে আদক্তি বিধান করেন ও ভগবচ্চরণে অর্পণ করিলে যিনি বিশিষ্ট মুক্তি (প্রেমভক্তি) প্রদান করেন, সেই তুলদীদেবীকে প্রণাম করি॥

ঐ কন্দপুরাণে আরও বলিয়াছেন॥

দৃষ্ট, স্পৃষ্ট, ধ্যাত, কীর্ত্তিত, প্রণমিত, প্রাতত, রোপিত, ঘেবিত এবং নিত্যপুজিত হইলে, তুলদী শুভদায়িনী হয়েন ॥

যে ব্যক্তি প্রতিদিন উক্ত নয় প্রকারে তুলসীদেবীর দেবা করেন, তিনি কোটিদহস্র যুগ হরিগৃহে বাদ করেন। ৯৫॥

অথ শাস্ত্র॥

যাহা ভগবদ্ধজির প্রতিপাদক হয়, ভজিব্রিয়য়ে তাহাকেই শাস্ত্র বলে॥

#### যথা স্কান্সে ॥

বৈক্ষবানি তু শাস্ত্রাণি যে শৃণুন্তি পঠন্তি চ।
ধন্যান্তে মানবা লোকে তেষাং কৃষ্ণঃ প্রদীদতি ॥
বৈষ্ণবানি তু শাস্ত্রাণি যেহর্চহান্তি গৃহে নরাঃ।
শর্ষপাপবিনিম্মৃন্টা ভবন্তি হ্ররবন্দিতাঃ॥
ভিষ্ঠতে বৈষ্ণবং শাস্ত্রং লিখিতং যদ্য মন্দিরে।
ভক্ত নারায়ণো দেবঃ স্বয়ং বস্তি নারদ॥

चानट्न ह ॥

সর্ববেদান্তদারং হি ঐভাগবভমিষ্যতে।

#### यथा ऋष्मभूताल ॥

বাঁছারা প্রতিনিয়ত বৈষ্ণবশাস্ত্র প্রবণ অথবা পাঠ করেন, সংসারমধ্যে তাঁছারাই ধন্য এবং শ্রীকৃষ্ণ তাঁছাদের সহক্ষেই প্রানম হয়েন॥

অপর যে সকল মানব প্রতিদিন গৃহে বৈষ্ণবশাস্ত্রের পূজা করেন, তাঁহার। সমুদায় পাপ হইতে বিনির্ফুক্ত হইয়া দেব-গণেরও বন্দনীয় হয়েন॥

অধিক কি বৈষ্ণবশাস্ত্র লিখিত হইয়া যাঁহার গৃছে অব-স্থিতি করেন, হে নারদ! ভগবান্ নারায়ণদেব সেই গৃহে (শাস্ত্ররূপে) স্বয়ং বাস করিয়া থাকেন॥

দ্বাদশ ক্ষরে ১২ আ। ১২ শ্লোকে ও

শ্রীমন্তাগবত সমস্ত বেদান্তের সার, ইহার রসামূতে বাঁহারা পরিতৃপ্ত হইয়াছেন, কথনই তাঁহাদের অন্যত্ত রতি

# नृत्य । २ लहेशे। छक्तित्रगाञ्चलिक्रे।

ভদ্রশায়ততৃপ্রস্য নান্যত্র স্যাদ্রতিঃ কচিৎ ॥
অপ শ্রীমপুরায়া আদিবারাহৈ।
মপুরাঞ্চ পরিত্যক্ষ্য যোহন্যত্র কুরুত্তে রভিং।
মুচো ভ্রমতি সংসারে মোহিতো মন মায়য়া॥

बकार७ ह।

ত্রৈলোক্যবর্ত্তিতীর্থানাং দেবনাদ্দুর্ল্প। হি যা। পরানক্ষময়ী সিদ্ধির্মপুরাস্পর্শমাত্রতঃ॥ ৯৬॥ শ্রুতা ক্বার্তিতা চুবাঞ্চিতা প্রেক্ষিতা গতা।

পরানন্দর্মী প্রেমলকণা ॥ ৯৬॥

প্রেকিতা দ্রাদ্টা গতা তৎসমীশং প্রাপ্তা প্রিতা নিজাশ্রহত্বন কুতা সেবিতা তত্তংস্থানসংক্ষারালিনা পরিচরিতা অভীষ্টদেত্যুত্তরোওরবৈশিষ্টোন জেরং 🏗 ৯৭ 🗈

#### एयना ॥

## শ্রীমপুরাদেবন যথা আদিবারাহে ॥

বরাহদেব কহিলেন হে ধরণি ! যে ব্যক্তি মধুরাপরিত্যাগ করিয়া অন্যত্র বাদে অসুরক্ত হয়, দেই মূঢ় আমার মায়ায় বিমোহিত হইয়া কেবল সংগারমধ্যে পরিভ্রমণ করিয়া বেড়ার॥

### ব্রকাণ্ডপুরাণেও বলিয়াছেন্॥

ত্রৈলোক্য সধ্যবর্তি সম্পার তীর্থ সেবনেও যে পরম্-জানন্দ্র-মরী অর্থাৎ প্রেমলকণা সিদ্ধি ছল্ল'ভা, মধুরার স্পার্শমাত্র ভাত্য লাভ তইয়া থাকে ॥ ৯৬ ॥

্ৰেন্ড, স্মৃত, কীৰ্ত্তিত, বাঞ্চিত, দৃষ্ট, প্ৰাপ্ত, স্পৃষ্ট, জালিভ

স্পৃকী প্রিতা সেবিতা চ মধুনাভীইকা নৃণাং।
ইতি থ্যাতং পুরাণের ন বিস্তারভিয়োচ্যতে।
অথ বৈষ্ণবানাং যথা পাল্মে।
আরাধনানাং সর্বেষাং বিষ্ণোরারাধনং পরং।
ভক্ষাৎ পরতরং দেবি তদীয়ানাং সমর্চনং॥ ৯৭॥
তৃতীয়ে চ॥

বংসেবয়া ভপ্রতঃ কুটস্থ্য মধুদ্বিষঃ।

একরপতরা তুয:, কালবাণী স কৃটস্থ ইত্যমর:। মধুছিব: পালরোরভি-কালো রতেকলাসো ভবেং। তীবো নিতান্ত:॥ ১৮॥

ও দেবিত হইলে, মথুরা মসুষ্যমাতেরই সমস্ত অভীক্ত প্রদান করেন॥

এইরূপ পুরাণাদিতে মথুরার মাছাত্ম্য বিশেষরূপে বর্ণিত আছে, কিন্ত গ্রন্থের বাহুল্যভরে আমি আর দে সকল কীর্ত্তন করিলাম না॥

অধ বৈষ্ণবদিগের দেবা, যথা পদ্মপুরাণে॥
মহাদেব কহিলেন, হে পার্ববিত । যত যত আরাধনা
আছে ভন্নধ্যে ভগবদারাধনাই শ্রেষ্ঠ, তদপেক্ষা আবার তাঁহার
ভাকের আরাধনা শ্রেষ্ঠতর ॥ ৯৭॥

ত্তীয়ক্ষকে ৭ আ। ১৯ শ্লোকেও যথা॥ িবে সকল ভক্তগণের সেবা করিলে নির্কিকার ওগবানের ন্তরাদো ভবেতীত্র: পাদর্যোব্যমনার্শনঃ ॥
স্কান্দে॥

শব্দকারিতজনু: শিরদা মঞ্জরীধর:। গোপীচন্দনলিপ্তান্দো দৃষ্টন্দেতভদ্মং কুঁতঃ॥

প্রথমে ॥

যেষাং সংস্মরণাৎ পুংসাং সদ্যঃ শুধ্যন্তি বৈ গৃহাঃ। কিং পুনর্দ্ধশনস্পর্শপাদশোচাসনাদিভিঃ॥

ञानिश्रुवारन ॥

ি যে মে ভক্তজনাঃ পার্থ ন মে ভক্তাশ্ট তে জনাঃ।

চরণারবিদে সমস্ত ছু:থবিনাশক প্রগাঢ় রতির উল্লাস হইর থাকে I

### ऋम्मश्रुतार्गछ यथा॥

বাঁহার শরীর শন্থ চক্রাদি-চিহ্নে চিহ্নিত, মন্তকে তুলসী ।
মঞ্জরী ধারণ এবং অঙ্গ গোপীচন্দনে লিগু, সেই মহান্ধনী
মন্ত্রমান্তর হুইলে আর পাপের আশ্বর কোথায় ? ॥

প্রথমক্ষমে ১৯ আ। ৩৬ শ্লোকে কহিয়াছেন।

যাঁহাদিগের স্মরণমাত্রে পুরুষদিগের গৃহসকল সদ্যই পবিত্রতা লাভ করে, তাঁহাদিগের দর্শন, স্পর্ণনি, পাদপ্রকা- । লন ও আসন দানাদিতে যে পবিত্র হইবে না ভাহার সংক্রিং

আদি পুরাণেতেও র্যথা। শ্রীকৃষ্ণ অর্জনকে কহিলেন, তে পার্থি। বাইরি জানার মন্তকানাঞ্চ যে ভক্তা মম ভক্তান্ত তে নরাঃ # ইভি ॥

যাবন্তি ভগবন্তক্তেরঙ্গানি কথিতানি হ ।
প্রায়ন্তাবন্তি তন্তক্তভক্তেরপি বুধা বিহুঃ ॥

অথ যথাবৈভব-মহোৎসবো যথা পাছে ॥

যঃ করোতি মহীপাল হরের্গেহে মহোৎসবং ।

তস্যাপি ভবতে নিত্যং হরিলোকে মহোৎসবং ॥ ৯৮ ॥

অথ উজ্ঞাদরো যথা পাছে ॥

যথা দামোদজনা ভক্তবংসলো বিদিতো জনৈঃ ।

তস্যায়ং তাদুশো মাসঃ স্বল্লমপ্যুক্তকারকঃ ॥ ৯৯ ॥

ৰথা দামোদরে। জনৈওঁ ক্রংগলো বিদিত জ্ঞাপশ্চ সন্ অল্পপাক কারকঃ।

ঋণনিবাঁত ক ইৰ অল্পণি উল্লেখা দাভীত্যথা। তস্য দামোদর্শ্যারং লাব্য

কার্তিকাথোছিলি তাদৃশা সন্ অল্পন্সকারক ইতি পুর্বেবং। "অকেনোর্ভবিধাদাধ্যপ্রেয়া" ইতি ব্লীনিবেধাং॥ ১৯॥

ভক্ত তাঁহার। আমার ভক্ত নহে, কিন্তু বাঁহারা আমার ভক্তের অক্ত তাঁহারাই আমার যথার্থ ভক্ত ॥

এই গ্রন্থে যে সকল ভগবন্তজ্ঞির অঙ্গ উল্লেখ করা ছই-য়াছে তমধ্যে অধিকাংশই প্রায় ভক্তগণের ভক্ত্যঙ্গ বলিয়া শশুতেরা স্বীকার করেন।

বিভবামুসারে মাহাৎসব, যথা পদাপুরাণে ॥

তে মহীপাল ! যিনি ভগবদালয়ে মহোৎসব করেন, হরিলোকে ভাঁহার নিত্যই মহোৎসব হইয়া থাকে ॥ ৯৮ ॥

উर्জ्ञानत वर्गार कार्तिकज्ञ , यथा श्रम्भूतात्व ॥

क्षित्रान् नात्मानत त्नाक्मभादक त्यक्रभ क्रक्रम्भूत

তত্তাপি মধুরায়াং বিশেষো ববা তত্তিব । 
ভূক্তিং মুক্তিং হরির্দ্দ্যাদর্চিতোহনাত্র দেবিয়াং ।
ভক্তিস্ত ন দদাত্যের যতো বশ্যকরী হয়েঃ ।
সাত্বপ্রসা হয়ের্ভক্তির্লভাতে কার্তিকে নরৈঃ ।
মথুরায়াং সরুদ্পি শ্রীদানোদরদেবনাং ।
অথ শ্রীজন্মদিনযাত্তা—
যথা ভবিষ্যোত্তরে ॥
যশ্মিন্ দিনে প্রসূতেয়ং দেবকী ত্বাং জনার্দ্দন ।

•যতো বশাকরীতি। বশাকরীত্বমত্র স্থালানেনৈর জ্ঞেয়ং নতু তৃ:থকানেন। অতোন তদত্র প্রধানকং, কিন্তু তেন লক্ষিতং পরমোৎক্রইছমের। তথাবিধা চ সান অবোগো সংসা দাতৃং বোগোতি। যাবদ্যোগাতা ভারত্তগরতা ন দীয়ত এব। যোগাতা চ স্থানিস্ফতিনিরপেক্ষমের। তথাগোডারামের

বলিয়া বিদিত, সেইরূপ ভাঁহার এই কার্ত্তিক নাসও (হুদ-সহখাণ পরিশোধ কর্তার মত) অল্পকে বহু করিয়া স্বীকার করেন॥ ১৯॥

> মধুরাতে ঐ কার্ত্তিকত্ততের বিশেষ মাহাজ্য। ব যথা পদ্মপুরাণে॥

অন্ত অচিত হইলে ভগবান্ হরি সেবকদিগকে ভুক্তি ও মৃক্তিপ্রদান করিয়া থাকেন, আত্মবশ্যকরী ভক্তিপ্রদান করেন না, কিন্তু কার্ত্তিকদালে মগুরাতে একবারমাত্র শ্রীদামোদরের সেবা করিলে, তাদৃশী হুচুন্ন ভা ইরিভক্তিও লাভ করিতে পারে।

30

তদিনং জাহি বৈকৃষ্ঠ কুর্মান্তে তত্র চোৎদবং।

তেন সমাক্ প্রপদ্ধানাং প্রসাদং কুরু কেশব॥ ১০০॥

অথ শ্রীমূর্ত্তির জিনু সেবনে প্রীতির্যথা আদিপুরাণে॥

মন নাম সলাগ্রাহী মন সেবাপ্রিয়ঃ সদা।
ভিক্তিতীয়ে প্রদাতব্যা নতু মৃক্তিঃ কদাচন ॥ ১০১॥

অথ শ্রীভাগবতার্থাস্থাদো যথা প্রথমে॥

নিগমকল্পত্রোগলিভঃ ফলং

সঁতাং দাতবাৰেছপি যদি সপুরাকার্ত্তিকরো: সঙ্গমে পূজনং ঘটতে ভদা যোগাতা-বিরহিতেনাপি বস্তপ্রভাবাং সহসৈব প্রাপাত এবেতি ভাব: ॥ ১০০ ॥ ওপ্রাপ্রিয়: সেবৈকপুরুষার্থ: সন্। মুক্তিরত ভক্তিশুনা। ক্রেয়া ॥ ১০১ ॥

## অথ জন্মদিনযাত্র। ভবিষ্যোভরে 👢

হে জনার্দন! যে দিবদ দেবকীদেবী আপনাকে প্রদান করিয়াছেন, দেই দিন আমাদের প্রতি উল্লেখ করুন, আমরা সেই দিনে মহোৎদব করিব। হে বৈকৃষ্ঠ! হে কেশব! আমরা সর্বতোভাবে আপনার শরণাগত, অতএব সেই উৎসাবে পরিভৃষ্ট হইয়া আমাদিশের প্রতি প্রদান হউন্॥ ১০০॥

শ্রীষ্ঠির চরণসেবনে প্রীতি, ষধা জাদিপুরাণে ॥

যে ব্যক্তি সর্বনা আমার নামগ্রহণ করেন এবং আমার নেবাকেই যাঁহার শ্রীভি অনুভব হয়, আমি তাঁহাকে ভক্তি ভিন্ন কথনই মৃত্তি প্রদান করিব না॥ ১০১॥

 হে ভাবুকা: । পরসমদনারনা বে রসিকা কগবন্ধভিরস্কা ইজার্থ: । তে বৃষং বৈকুঠাং ক্রমেণ ভূবি পৃথিবাামেব গলিভস্বভীর্ণ, নির্দ্ধক্রমেরা সর্বাক্ত কলোৎপত্তিভূব: শাংশাপশাবাভিবৈ কুঠমণাধারিক্সা বেদরপ্তরো বৃৎ গুলু রম্বন ক্রপং শ্রীভাগবতাথাং ফলং ভদ্তবাপিছিতা: পিবভ সাম্বাদা অন্তর্গতং কুফভ ॥

অহো ইতালভালাভবাঞ্চনা ভাগবতাখাং বছাস্ত্রং তৎ ধলু সুস্বদূপি বুলৈক-यम गिविक्या जनमालन निर्मिष्टेश जानकमास्त्रीत जना जनमा वानानीवर्क বারেত্তং। ভাগবতসা তদীরছেন রস্সাপি ভদীরছাক্ষেপাং শক্ষরেবেণ ভগুবং-সম্বন্ধিরস্মিতি গ্মাতে। সচ্বদো ভগবন্ধক্তিমর এব ব্যাং বৈ প্রার্থাপাল্প-মিতাাদিফ্লশ্রতে:। যুনার্থেনের প্রীভগরতি রুস্পন্ধ: শ্রুতে। প্রুদ্ধাতে। রুসো বৈ স ইতি স্থাৰ চ প্ৰশ্যাতে রসং হেবায়ং লকু নিন্দী ভবতীতি। অত্ৰ রসিকা ইতানেন প্রাচীনার্বাচীনসংস্থারাণামের ভবিজ্ঞায়ং দর্শিতং। প্রতিমিত্যমেন তসাঁ সুপাকিমন্বমুক্তা শান্ত্ৰপক্ষে স্থানিসন্নাৰ্থন্বমধিকদাক্তৰক দৰ্শিতং। রসমিত্য-त्मन क्यापटक चर्तरी मिता विकः वाका जान पटक द्वारमनाहिकाः पर्मिकः। নিগমস পর্মক্রত্বেনোক্র। তদা পর্মলুক্ষার্থখং দর্শিতং। এবং ভদা রুলা-অকফলসা অরপতোহপি বৈশিষ্টো সভিপর্নোংকর্ববোধনার্থং। বৈশিষ্টারন্তর্ মাহ ভকেতি। অৱ ফলপকে করতরুবাসিত্বাদলৌকিকছেন ভকোইপাযুত-মুখোৎভিপেরতে। ভতত্তমুখং প্রাপা যথা তংকলং বিশেষতঃ স্বাহ ভবতি । তথা পরম ভাগবতমুখন হরং ভগবদগুণবর্ণনমিণী। তততাদৃশপরমভাগবত হৃত্ত-মহেন্দ্র প্রীত কলেবমুধলম্বরং কিমুতেতি ভাবঃ। অভএব পরমবাহণরমকার্চা-প্রাপ্তবাং স্বতোহন্যতন্চ ভৃপ্তিরপি ন ভবিষ্যতীতি। স্বাশারং মোন্দানন্দমণ্যন্তি-ব্যাপ্য পিৰতেত্যু কং। তথাচ বক্ষাতে। পরিনিষ্টিতোৎপি নৈও থে। ইত্যাদি। অনেনাম্বালান্তরবরেদং কাণান্তরেংপ্যাম্বানকবাছলোংশি ন বাভিয়াতীভাশি দর্শিতং। বহা, তত্র তস্য রসম্য ভগবন্তকিমরবেহণি বৈবিধাং ভত্তক্যাপযুক্তমং फर्डिक निविधान वरकार । वर्षा कर वामान । केथा देवारेक कविन विविधान केथा वि जांत्र त्यात्कव् वनः शदत्रवृताः । विकासरेवत्रामः विकास विकास विद्यानः वर्षा विक्शि र्जेकु भावमार्थाः। यञ्च खमः स्थान खभारू वानः, अख्याक मुक्की सममन नेपः। छरपद विकार मुन्तापक्षेत्रः, कृरकश्यनार चिक्तकीश्वरातः हेकि॥

শুক্ষুথাদয়তন্ত্রসংযুক্ত: । পিনতভাগবতং রসমালয়ং মূল্রহো রসিকা ভূবি ভাবুকা: ॥ ১•২ ॥ দ্বিতীয়ে চ ॥ পরিনিষ্ঠিতোহপি নৈশু গৈয় উত্তমংশ্লোকবার্ত্রা।

ভতঃ সামানতো রস্বমূকা বিশেষতোহণাই অমৃতেতি। অমৃতদ্রস্থলীলারসঃ ১ ছরিলীলাকথারাভামূতানন্দিতসংস্রমিতি ছাল্পে শ্রীভাগবভবিশেবগাং লীলাকথারসনিবেরণমিতি তাসের রস্বনির্দ্দেশাচ্চ সংস্করমিতি সম্বোহ্ত আছারামাঃ ইঅ' সভামিতাদিবং তএব হ্রাঃ। অমৃতমালালাদিছাং তেন
সমবেতং। তরাপি তাদৃশভকমুখালগবিতং প্রবাহরপে বহস্তমিজ্ঞার্থঃ। তদেবং
ভগবস্তালে গররস্বাপতিঃ শব্দোপাত্রৈর। অনাত্র চ সর্ববেদান্তেভাানে তদ্রসামৃতভ্রসোভাদি। এবমের অভিপ্রেত্য ভাবুকা ইভাক্স রস্বিশেষভাবনচত্রা
ইতিটিকা। তথা, শ্রর্ত্নভ্রাত্রাপ্রহনং প্রঃ, বিহাত্মিচ্ছেররস্থাহো জন
ইতাদি । ১০২ ৪

নিভাণিমেব নৈ ভাণাং স্বার্থে যাঞ্। ভাষিন্ বন্ধাণী ভার্থ: ॥ ১০৩॥

হইতে অবনীতলে পতিত হইয়াছে, অতএব হেরস বিশেষে ভাৰনাপরারণ রসিকগণ! অমৃত্রসান্থিত রসম্বরূপ এই ফল নোক্লপর্যান্ত মৃত্যুক্ত: সেবন করা। ১০২ ॥

ৰিতীয়ক্ষে ১ অ। ১ লোকে॥ মাজা পরীকিংকে শুক্দের কহিলেন, হে রাজন্! নিগুণ গৃহীততেতা রাজর্বে আখ্যানং যদধীতবান্ ॥ ১০০॥ অব সজাতীয়বাসনশ্রীভক্তসঙ্গো যথা প্রথমে । তুলয়াম লবেনাপি ন স্বর্গং নাপুনর্ভবং। ভগবংসঙ্গিসঙ্গা মন্ত্যানাং কিমুতাশিষঃ॥ ১০৪॥ হরিভক্তিশ্রধোদয়ে চ।

ব্ৰহ্মে আসক্ত হইলেও ভগৰল্লীশাকর্ত্ব আকুষ্টচিত্ত হইয়া আমি এই শ্রীমন্তাগবতরূপ আখ্যান অধ্যয়ন করিয়াছি॥১৯৩॥ অধ্যক্ষাভীয়বাসনাবিশিষ্ট-ভক্তাসঙ্গ ষ্থা

প্রথমক্ষরে ১৮ আ। ১৩ প্লোকে ॥

শৌনকাদি ধাষিগণ কহিলেন, হে সূত! ভগবন্তক্ত জনের দহিত অত্যন্ত্র কাল যে সঙ্গ তাহার সহিত সর্গ ও মোক্ষেরও ভূলনা করিতে পারি না অর্থাৎ বর্গ এবং মোক্ষও বৈক্ষর-ভক্তের সঙ্গত্লা ক্ষণ নহে। মর্ত্তলোকের ভূচ্ছ রাজ্যাদি কোথার আছে ?, তাহা কি ভরবন্তক্তলক্ষের স্থান হৃত্তি পারে ? কদাপি নহে ॥ ১০৪ ॥

इतिङक्षिश्रसामस्य विनिग्नार्छन यथा ।

যদ্য যৎসঙ্গতিঃ পুংদো মণিবৎ স্যাৎ স ভালাপুঃ।
স কুলবৈর্তি ততো ধীনান্ স্বযুধ্যানেব সংশ্রেমেৎ ॥ ১০৫ ॥
অব নামসকীর্ত্তনং যথা বিতীয়ে।
এতনির্বিদ্যমানানামিচছভামকুতোভনং।
যোগিনাং নুপ নিণীতং হরেন্নামানুকীর্ত্তনং॥

আত্র অভাতীরসক্ষা প্রভাবং দৃষ্টান্তেন স্পাইরতি বসোতি। প্রভাবং প্রতি বিদ্যাক্ষবিপার্কাক্য। তত্ত্ব তস্যাভিপ্রারাশ্বরেহিশি সামানাবচনত্বন আভিপ্রায়েহিশি তল্বোজ্ঞিত্ব, শকাত ইতি গ্রন্থকামভিপ্রায়:। মণিবং ক্ষিক্মিশিন ক্ষিতি স্থিতি গুলুত্বনার্কালে দৃষ্টাশ্ব:। নতু তদকৈর্ব্যাংশেনাপি। সমুধান অভাতীয়ান্ ॥ ১০৫ ॥

ইছতোং কামিনাং নির্কিদ।মানানাং মুমুক্ণাং বোগিনাং মুক্তানামিতার্বঃ । এতদকুতোতরং ন কৃতন্চিদপি ভয়ং যত্র ভজ্ঞপং সাধ্যক্ক নির্মীভ্রতিরতার্বঃ ॥ ১০৬

হিরণ্যকশিপু প্রহলাদকে কহিলেন, হে পুত্র ! যাহার বহিত যে পুরুষের সহবাদ হয়, ক্ষ্টিকমনিতে রক্তবর্ণ জবা-কুক্সমের ন্যায় তাহার গুণ দেই ব্যক্তিতে প্রতিফলিত হয়, এজন্য বৃদ্ধিমান্ ব্যক্তিদিগের সগণ সমৃদ্ধির নিমিত্ত তুল্যবাসনা-যুক্ত ব্যক্তিগণের সঙ্গে রত হওয়া কর্ত্ব্য ॥ ১০৫॥

নামদক্ষীর্ত্তন যথা বিতীয়ক্ষকে ১ আ । ১১ শ্লোকে ॥
শুক্দের কহিলেন, হে নৃপ! হরির যে নামাতুকীর্ত্তন
ইহাই ফলাকাজ্মিপুরুষদিগের ভত্তংফলের সাধন এবং মুমুক্দুদ্দ
দিগের পক্ষেও ইহাই মোক্ষমাধন, অপর ইহাই জ্ঞানিদিগেরও
জ্ঞানের ফল হয়, অতএব সাধক এবং সিদ্ধু, কাছারও পক্ষে
এতদপেকার অন্য পরম মঙ্গল নাই ॥

# भूके। २ मस्यो । अधिकानामक्रिके ।

আদিপুরামে চ ॥
গাড়া চ মম নামানি বিচরেশ্যম সন্ধিধোঁ।
ইতি ত্রবীমি তে সত্যং ক্রীতোহহং উস্য চার্ক্ত্রান্ত ।
পাণেয় চ।

যেন জন্মদহত্রাণি বাস্থদেবো নিষেবিতঃ।
তপ্মুথে ছরিনামানি সদা তিঠন্তি ভারত॥ ১০৭॥
যথা তত্রৈয়।
নামচিন্তামণি: কুফান্ডেনারস্বিগ্রহঃ।

. যেন জন্মতি। এভাদৃশগাপাসা পুন: পুনর্জন্ম সমুৎকৡ।মরভজিবর্দ্দার্থং পরমেশবেচত্তিরব ॥ ১০৭ ॥

## व्यानिश्वार्गरक्ष यथा

ভগবান্ কহিলেন, হে অর্জুন! আমার নাম গান করও যে ব্যক্তি আমার নিকটে বিচরণ করেন, তোমাকে সত্য বলি-তৈছি, আমি তাঁহার নিকট জীত হইয়া অবস্থিতি করিতে থাকি॥ ১০৬॥

### भष्मभूतारम यथा।।

হে ভারত। যে ব্যক্তি সহত্র সহত্র জন্ম বাহুদেবের সেবা করিয়াছেন, তাঁহারই মুখে সর্বদা হরিনাম বিরাজ করিয়া খাকেন॥ ১০৭॥

যে হেতু এই পদ্মপুরাণেই বলিয়াছেন ॥
নাম এবং নামিতে ভেদ না থাকা প্রযুক্ত নামই চিন্তা।

পূর্ণ: শুদ্ধো নিত্যমুক্তো হতিমন্ত্রামামনামিনো: ॥ ১০৮॥
অত: শ্রীকৃক্ষনামাদি ন ভবেদ্ আহমিন্তিরিঃ ।
সেবোমুখে হি জিহ্বাদো সমমেব স্ফুরত্যদঃ॥ ১০৯॥
স্থ শ্রীমধুরামশুলে স্থিতির্যথা পালো।

নাৰৈব চিন্তামণিঃ সৰ্ব্বাচীইদারকং যভন্তদেব কৃষ্ণ: কৃষ্ণসা স্বৰ্ধনিবিতাৰ্থঃ। কৃষ্ণসা বিশেষণানি টোচনারসে চাণীনি তদা কৃষ্ণছে হেডুঃ। অভিমন্তাদিতি। একমেব সফিদানন্দরসাদিরপং তবং বিধাবিভূতিমিতার্থঃ। বিশেবফিক্সাসা তেং শ্রীভাগবভসন্দর্ভনা শ্রীভগবংসন্তে। দৃশাঃ॥ ১০৮॥

সোবোশুবে হীতি। সেবোশুবে ভগবৎপরপতরামগ্রহণার প্রয়ন্ত ইতার্থ। বি প্রসিদ্ধৌ। যথা মৃগপরীরং তালতো ভরতসা বর্ণিতং। নারারগার হররে ন্ম্ ইতালারণ, হাসান্ মৃগর্মপি যং সম্পালধার ইতি। গলেজসা, জলাপ প্রমং জ্পাং প্রাগ্জন্মনাস্থিকিতমিতাাদি ॥ ১০৯॥

মণিসরপে অর্থাৎ সমস্ত পুরুষার্থনায়ক ঐ নামরূপ ক্রফ, চৈতন্য রসম্বরূপ, অপরিচিছন এবং নায়ার সম্ম্ববিত্রহিত ও মায়া হইতে অতীত ॥ ১০৮॥

এই বেজু প্রীরক্ষনামাদি প্রাকৃত ইন্তিয়গণের গ্রাহ্য হইতে পারে না। তবে যে সাধানণ জনকে নামাদি গ্রহণ করিতে দেখা যায় তাহার কারণ এই যে, ভগবদামাদিগ্রহণে রসনাদি ইন্তিয়গণ উন্মুথ হইলে নামাদি তাহাতে স্বয়ংই প্রকাশিত হয়া থাকেন॥ ১০৯॥

श्वामण्डामण्डा विकि यथा नम्म नुवादन ॥

कतायू भूगाठी (र्षयू यूक्तित्व महोकतः ।

मूटेलः धार्या इत्तर्ङ क्रिम्यूनामास्त महारह ॥

क्रिन्ति कामिनाः या मूम्कृगाक स्माकता।

हकी (क्रिमां कसाः मयूनाः नाला समृषः ॥

क्रित्रिकः मिन्ति सन्। विक्षे क्रिः भ्रम्नी।

क्रित्रकः निनामन इत्नी हकः श्रमारह ॥

हक्तशह्रवी (र्या इस्मिन् लाका मृत्रुष्ट भक्ति।

मिक्तवारं निज्ञान्य विकास । ३३०॥

্অন্যান্য পুণ্যতীর্থে অবস্থানের মহাফলই মৃক্তি, কিন্তু মৃক্তব্যক্তিদিগের একান্ত প্রার্থনীয় যে ভগবন্তক্তি তাহা কণ-কাল মথুরামগুলে অবস্থিতি করিলেই লব্ধ হইয়া থাকে ॥

বে মথুরা কামিগণের ত্রিবর্গ দায়িনী, মুমুক্কুদিগের কৈবল্যদাত্রী, ভক্ত্যভিলাষি বর্গের হরিভক্তিবিধায়িনী সেই সর্বান্ত্যসম্পন্ন মথুরাকে কোন্ বৃদ্ধিমান্ ব্যক্তিসেবা না করিয়া থাকিতে পারেন ? ॥

কি আশ্চর্য। যে সধুপুরীতে একদিনমাত্র বাদ করিলে ভগবান্ হরিতে ভক্তি উৎপন্ন হয়, বৈকুঠ হইতেও গরীয়দী দেই সধুপুরী ধন্তিমা॥

তুরাই অর্থচ অন্তুত বীর্যাশালী যে এই পাঁচপ্রকার অর্থাৎ জীষ্টি, জীমন্তাগবত, জীক্ষণভক্ত, নাম ও ম্যুরামণ্ডল রূপ অস, তাহাতে জ্রন্ধা দূরে থাকুক, অল্পমাত্র থাকিলে ও নির্মণ-রাধ ব্যক্তিদিগের অন্তঃকরণে অচিরাৎ ভাবের আবিভাব যত্র স্বল্লোহশি সম্বন্ধঃ সদ্ধিয়াং ভাবজন্মনে ॥ ১১০ ॥
তত্র শ্রীমৃর্ত্তির্যথা ॥
শ্রেরাং ভঙ্গীত্রয়পরিচিতাং সাচিবিস্তীর্ণদৃষ্টিং,
বংশীন্যস্তাধরকিশলয়ামুচ্ছলাং চন্দ্রকেণ ।
গোবিন্দাগ্যাং হরিতকুমিতঃ কেশিতীর্থোপকর্ষ্ঠে
মা প্রেক্ষিষ্ঠান্তব যদি সথে বন্ধুসঙ্গেহস্তি রঙ্গঃ ॥ ১১১ ॥

স্বাকানাধুনীধারা পূর্কমেণার্থপঞ্চকং অনুভাবররাহ স্বেরামিত্যাদিপঞ্চতিঃ। মা প্রেক্ষিষ্ঠা ইতি নিষেধ্ব্যাজেনাবশকেবিধিররং তদেত্রাধুর্যো অমূভূর্মানে স্বর্মেশ সর্কমেব তৃত্বং মণ্যাসে। তত্মাদেনামেব প্রেটিকাতি প্রারাং ॥ ১১৮॥

#### व्हेश थाटक # >> ॥

তন্মধ্যে শ্রীমূর্ত্তি যথা॥

প্রস্থার স্বীয় বাক্যাধুরীদ্বারা পুর্ব্বাক্ত শ্রীদুর্ন্ত্যাদি পাঁচঅঙ্গকে অনুভব করাইয়া কহিলেন, হে সথে! যদি তোমার
বন্ধুগণের সহিত্ত আমোদ-প্রমোদ করিতে ইচ্ছা থাকে তবে
কেশিতীর্থের সমীপর্বর্তি হাস্যাদ্বিত দ্রিভঙ্গ, বঙ্কিমনয়ন, বংশীবদন, শিপিপুচহধারী গোবিক্দমৃত্তিকে অবলোকন করিও না ॥
তাৎপর্ব্য। উক্ত পদ্যে দর্শন করিও না এই নিষেধছলে
শ্রীমৃত্তির প্রশংসা কীর্ত্তন অর্থাৎ ভগবন্মুর্ত্তির সাধুর্ব্য শ্রমুভব
হলৈ, সমুদার ভুচ্ছ বোধ হইবে অত্তর্বে প্রীমৃত্তির দর্শন
স্বশা কর্ত্তর্য ॥ ১১১॥

# र्थ्या २ नहती। चिक्तिनोत्र्जनिस्हा

শী ভাগবতং যথা।
শক্তে নীতাঃ সপদি দশমক্ষমপদ্যবিলীনাং
বর্ণান্ কর্ণাধ্বনি পথিকভামানুপূর্বব্যান্তবন্তঃ।
হংহো ডিস্তাঃ পরমশুভদান্ হস্ত ধর্মার্থকামান্
যদ্ গর্হ স্থময়মমী মোক্ষমপ্যাক্ষিপস্তি॥ ১১২॥

শক্তেনী হা ইতি উপাশস্তবাজেন স্থতিরিয়ং। শ্লোকর্মীয়মপ্রস্থতপ্রশংসালকরায়মধী সাচ, কার্যো নিম্বিত্র সামানো বিশেষে প্রস্তুতে সতি। তদনাস্য বচন্তবোহকুলাসোতি চ পঞ্চা। ইড়াজন্তাং সামানো প্রস্তুতে বিশেষপ্রস্তাবমধ্যাণি সাাং তদেবমত্র শ্রীমৃর্জি শ্রীভাগবভমাত্রয়েঃ প্রস্তুত্রাস্তর্ভবিশেষঃ প্রস্তুত্রাস্তর্ভবিশেষঃ প্রস্তুত্রাস্তর্ভবিশেষঃ প্রস্তুত্রাস্তর্ভবিশেষঃ প্রস্তুত্রাস্তর্ভবিশেষঃ প্রস্তুত্রান্ত ইতি। কিঞ্চ, পূর্বপ্রেম হিমন্তান প্রয়োজন ইতি। কিঞ্চ, পূর্বপ্রদা শেরাদিনা তসা। হরিতনোঃ প্রশংসনাৎ তৎপ্রেকণনিষেধে তাৎপর্যাং নান্তীতি তহুত্তরগদো ধর্মাদীনাং পরমন্ত জনানাং মোক্ষস্য চ তথ্ময়স। দশমস্বস্কুত্রপঞ্জারা। হংলো ডিন্তা ইত্যানাধিকেশে তাৎপর্যাং নান্তীতি। পদান্তরেছবিরস্কুত্রানাধ্যনিনা স্থতাবের নমনাং স্থতিস্কুত্রাবানের বাজনতিবি বাজস্তুতিরস্কুত্রাচাধ্বনিনা স্থতাবের নমনাং স্থতিস্কুত্রা নিশাবাজেনেতি বাজস্তুতিনামালন্তারেছবং গ্রাত্ত ॥ ১১২ ॥

#### প্রীভাগবত যথা॥

অরে নির্নেষ্টি দকল! যে প্রীনন্তাগণত পরমশুভপ্রদ,
ধর্মার্থ কামরূপ ত্রিবর্গকে নিন্দা করত অথগর মোক্ষকেও
তিরুদ্ধার করেন, বোধ হয় সদ্যুক্ত সেই ভাগণতীয় দশমন্ত্রের
পদ্যুদ্ধারে বর্গ গুলি ক্রুমান্তরে ভোমানের প্রাণ্ড প্রের
থ্যিক হইয়াছে, হারা। কি কুক্রিই করিলে নি



# কুষ্ণভক্তো যথা॥ দৃগস্তোভিগেতিঃ পুলকপটলীমণ্ডিতভকুঃ শ্বানন্তঃফুল্লো দদদতিপুথুং বেপথুমপি ।

हेर मनतः कृत्ति कविश्निम्पानिर्सप्तीतः न्यामञ्चलतः यम मणिति छ-

উপরি-উক্ত শীমুর্ত্তাদি ছুই পদো অপ্রস্তুতপ্রশংসা নামক অলক্ষার এবং ব্যাজস্তুতি এই ছুই অলক্ষার দৃষ্ট হুইতেছে। অপ্রস্তুতপ্রশংসা নামক অলক্ষার এই যে, প্রাদিসিক কথায় অপ্রাদিসিকের অর্থাৎ প্রকরণবহিন্ত্তি অর্থের কীর্ত্তনকে অপ্র- শুভপ্রশংসা অলক্ষার বলে। এই অলক্ষার পাঁচপ্রকার হয় বর্থা। কার্য্যে কারণ কথন, কারণে কার্যাকথন, সামান্যে বিশেষ কথন, বিশেষে সামান্য কথন এবং ভূল্য বস্তুতে ভূল্য বস্তুর উল্লেখ না করিয়া কথনের অযোগ্য বস্তুর কথন।

ব্যাক্সন্ত অলক্ষার এই যে স্ততি যোগ্য বস্তর নিন্দা এবং নিন্দাযোগ্য বস্তর স্ততি। "স্মেরাং ভদীত্রমপরিচি ভাং" এই পদ্যে অপ্রস্তুতপ্রশংসা এই যে, গোবিন্দমূর্ত্তির দর্শন প্রস্তুতে অর্থাৎ কথনে অপ্রস্তুত বস্কুসঙ্গ ভাষার প্রশংসা। 'শঙ্কে নীতা' এই বিতীয় পদ্যে ব্যাক্সন্ততি এই যে, স্তুতিযোগ্য ভাগবভের নিন্দা এবং নিন্দাযোগ্য ত্রিবর্গের স্তুতি ॥ ১১২ ॥

#### কুষঃভক্ত যথা॥

নয়নজলে ধোত, দেহ পুলকিত, প্রতিপদে শ্বলিতজ্নর উল্লাসিত, এবং অভিশন কম্পিত এরূপ কোন এক অনির্বচ-নীরপুরুষ, যে অবধি আয়ার নয়নপদ্বীতে গমন করিয়াছেন,

# भूत्। २ लंहती। छक्तिनाञ्चलिक्दं।

দৃশো: কক্ষাং যাবন্মম স পুরুষ: কোইপ্যুপ্যযো ন জানে কিং তাবুন্মভিরিহ সৃহে নাভিরমতে ॥ ১১৩॥ নাম যথা।

ষদৰধি মম শীতা বৈণিকেনামুগাড়া শ্রুতিপথমঘশত্রোন মিগাথ। প্রয়াতা। অনবকলিতপূর্বাং হস্ত কামপ্যবস্থাং ভদৰধি দধদস্তম নিদং শাস্যতীব ॥ ১১৪ ॥

রমতে গৃহে তু নাভিরমত ইত্যর্থ:॥ ১১৩ ॥

শীতা কর্ণরোত্তাপশমনী বৈনিকেনেত্যজ্ঞাতনামদ্বাং শ্রীনারদস্য তাদৃশ-ভাষাত্রৈণোদ্দেশ:। তবং কামণান্তামিতি প্রেম এবোদ্দেশ:। ইবেতি বাক্যা-লক্ষারে। শাষ্যতি সর্বং বহিষ্ণপ্রবং পরিস্কৃত্য নির্তঃ ভ্ৰতীতার্থ:॥ ১১৪॥

বলিতে পারি না কেন যে তদবধি আমার চিত্ত এই গৃছে অভিরত হইতেছে না॥

উক্ত পদ্যের ফলিতার্থ এই যে, যদবধি প্রেম লক্ষণান্থিত কৃষণ্ডক্ত দন্দর্শন করিয়াছি তদবধি আমার চিত্ত গৃহত্ত্ব বিদর্জনপূর্বক অনিবিচনীয় শ্যামত্ব্দর-বিষয়ক ভাবে আদক্ত হুইতেছে ॥ ১১০ ॥

#### নাম বধা 🛚

বে অবৰি বীণাশাদনতংপর নারদকর্তৃক দলীত জীল্পান্ধর নামগাণা আমার কর্ণাদনীতে গত হইয়াছে দেই অবধি আমার ভিত অনস্ভূতপূর্ব কোন এক অনির্বহনীয় দশাবিশেষ প্রাপ্ত হইয়া দমস্ত বিষয় হইতে উপরত হুইরাছে ॥ ১১৪ ॥ শীমপুনাৰ গুলং যথা।
তটভূবি কৃতকান্তিঃ শ্যামলায়ান্তটিন্যাঃ
ক্ষুটিতনবকদমালমিক্জদ্বিকেফা।
নিরবধিমধুরিম্না মণ্ডিতেয়ং কথং মে
মনসি কমপি ভাবং কাননশ্রীস্তনোতি॥ ১১৫॥
অপৌকিকপদার্থানামচিন্ত্যা পক্তিরীদৃশী।
ভাবং তদ্বিয়্ঞাপি বা সহৈব প্রকাশয়েৎ॥ ১১৬॥

कमिन कांवर भागमञ्जातविवत्रः ॥ >> ॥

া আনৌকিকেতি ভেষাং পঞ্চানামিতি প্রকরণারভ্যতে। বথা, স্কুল্লেকপ্রতি আকরণারভ্যতে। বথা, স্কুল্লেকপ্রতি আকরণারভ্যতে। বথা, স্কুল্লেকপ্রতি আকরণারভাতে। বথা, স্কুল্লেকপ্রতি আকর্মিতা, মর্ম্মেক্সিডেড্ডারেই, কিছা পরেরীখন্ত: সংল্যা ক্লাবক্ষাতে হল ক্রতিতিঃ ভুজাবৃতিতংক্ষণাদিতি, ভুষাপ্রক্রী প্রমত ইতি নামব্যাহরণং বিক্ষোর্যভত্তিবরা মভিরিতি পরানক্ষরী সিশ্বর্যপুরাল্পর্যাত্ত ইতি পঞ্চব্যি কর্দনাং ॥ ১১৬॥

#### मधुनाम छल यथा॥

ৰাহা কালিশীতটে শোভষান, যাঁহার নব বিক্সিত ক্ষম্ব কুম্বনে অলিকুল লম্বমান রহিয়াছে, এবং যাহা নিরবধি মধু-রিমাতে সমল্পত, সেই কাননশোভা আমার মনেতে কোন এক শনিক্চনীয় ভাব বিশুর ক্রিতেছে। ১১৫।

শলোকিক পদার্থের উদৃশী অচিন্তা শক্তি যে যাহার ক্রমমাজেই ভাব ও ভাবের বিষয়কে এককালে প্রকাশ শশ্বিয়া দেব। ১২৬॥ কেষাঞ্চিৎ কচিদঙ্গানাং যথ কুদ্রং শ্রায়তে কলং। ৰহিমুখপ্রইত্যতথ কিন্তু মুখ্যং ফলং রভিঃ ॥-১১৭॥ সন্মতং ভক্তিবিজ্ঞানাং ভক্তাঙ্গত্বং ন কর্মণাং ॥ ১১৮॥

মুধাং কলমিতি, অকাম: সর্কামো বেতাদে:। সভাং দিশভার্বিতমিভানিরভা শ্বরং বিধতে ভল্লভামনিজ্ঞামিভাদে:, সবৈ মন: ক্লুপদারবিন্দ্রোরিভাদৌ, কামঞ্চ দাস্যে নতু কামকামায়েভাশাচ্চ। যথা। বহিন্দু প্রপ্রস্থাইভাস্কর্ম থানাং তু ভল্লনায়।সভলনেহপি কর্মাদিছল ভল্লপ্রাপকভন্তন্ধ্ব-শ্ববেশন রভ্যুৎপাদনান্তভিরেব মুখ্যং কলমিতি। তদেবং রভিক্লথেহপাংশাংশিভগ্রজ্ঞপভেদেন রভ্যুৎপাদ বিভাগ্র প্রেরং ॥ ১১৭ ॥

শন্ম সর্বাসাং কেবলানাসেব ভক্তীনাং মাছাত্মং ধলু ভাদৃশমৈব কিছ প্রান্তর বিদ্যুক্তর বর্ণাপ্রমানারবভা প্রবেশ পরঃ প্রমান্। বিষ্ণুরারাধ্যতে পছা নানাভত্তোরকারণমিতি। কর্মণাং ভক্তাঙ্গদং প্রভীরতে বর্ণাপ্রমানার্ন্তরে বিশ্বেরারাধনে সম্মতিপ্রভীতেঃ তত্তাহ সম্মতমিতি। ভক্তিবিজ্ঞানাং ভক্তিং বিশেষভা জানভাং ভন্ধভক্তানাং প্রীপরাশরাদীনামেবেভার্বঃ। ভন্নভাইতরেব। বজ্জেশাচুতে গোবিল মাধবানস্ত কেশব। ক্লক্ষ্ণ বিশ্বোজ্ঞানুতে গোবিল মাধবানস্ত কেশব। ক্লক্ষ্ণ বিশ্বোজ্যান্ত গোবিল মাধবানস্ত কেশব। ক্লক্ষ্ণ বিশ্বোজ্যান্ত গোবিল মাধবানস্ত কেশব। ক্লক্ষ্ণ বিশ্বোজ্যান্ত গোবিল মাধবানস্ত কেশব। ক্লক্ষ্ণ বিশ্বোজ্যান্ত

কোন কোন ভক্তাঙ্গের যে সকল অল পরিমিত কল ভানা যায়, তলাত্রই যে সেই সকল ভক্তাঙ্গের ফল ভানা নহে বিষয়ালক ব্যক্তিদিণের চিত্তর্ত্তিকে ভক্তিমার্গে প্রবেশ করাই-বার জন্য সে সকল ফল কথিত হইয়াছে, বস্ততঃ ক্রিক্তাবিবরিণী রতিই এই সকল অঙ্গের মুধ্য ফল ॥ ১১৭ ন

কেছ কেছ বলিয়া ধাকেন যে, বর্ণাপ্রান্থ কিছত কর্ম্ম পরশপদা ভক্তির অঙ্গ, কিন্তু ভাহা ভক্তিভুত্মকৈতা পরাধ্বনার্গি

# যথৈকাদশে। ভাবৎ কর্মাণি কুরীত ন নির্বিদ্যেত যাবতা। নৎকথাশ্রবণাদৌ বা শ্রন্ধা যাবন্ন জায়তে॥ ১১৯ ॥ ভারনবৈরাগায়োর্জজিপ্রবেশায়োপ্যোগিতা।

ব্লালা স কেবলং। মান্যজ্ঞগাদ মৈত্রেয় কিকিং প্রপ্লান্তরেষণীতি। বর্ণাশ্রমাচারে ভাষিকং অলাতদৃত্রদান্ শুদ্ধতক্যমধিকারিণঃ প্রভোবোক্তমিতি ভাবঃ ১১১৮

তদেৰোপাপাদরতি বথেতি। তত্মাধ্ণপ্রচেষ্ঠাস্য চায়মেবার্থং। বর্গাপ্রমাচার
ৰঙাশি যবিষ্ণুরারাধাতে সোধর্মের পদান্তভোষকারণং নানাৎ কিমপি। আঙ-এবোক্তং তেনৈব, সা হানিভাশ্যহজ্জিদ্রং স মোহং স চ বিভ্রমং। যাশুহুর্তং কুণং
কাপি বাস্থাদেবং নকীর্ত্তবিদিত্যাদি । ১১৯॥

জ্ঞান্যত্ত দুল্পনাথবিষয়ং তংশদার্থবিষয়ং তরোরৈকাবিষয়কেতি ত্তিভূত্তিকং ব্রশ্বজ্ঞানবৃচাতে। তর ঈবদিতি ঐক্যবিষয়ং তাক্টের্যার্থ। বৈরাগাঞ্চাত্ত ব্রশ্বজ্ঞানোপ্র্যোগ্যাব তত্ত্বচ স্থানিত ভক্তিবিরোধিনং তাক্টের্যার্থ। তচ্চ ওচ্চ প্রথম বেবেতাক্তাবেশপরিত্যাগমান্তার তে উপাদীবেজে তৎপরিত্যাগেন জাতেচ ভক্তি-

মহামুনীন্দ্রগণের সম্মত নহে॥ ১১৮॥
একাদশে ২০ আ। ৯ শ্লোকে।

যে পর্যান্ত নির্বোধ অর্থাথ বিষয়ের প্রতি বৈরাগ্য না জ্বেছ ও যদবধি আমার কথাদিতে প্রজা না জ্বেছ, সেই পর্যান্ত বর্ণা-শ্রম বিহিত কর্মা সকল করিবে॥ ১১৯॥

কেহ কেহ জ্ঞান ও বৈরাগ্যকে ভক্তাস বলিয়া উল্লেখ করেন, কিন্তু বাস্তবিক তাহা নহে, ভক্তিমার্গের অবিরোধী জ্ঞান ও বৈরাগ্য ভক্তিমার্গে প্রবেশ করাইরার প্রথম সহায়,

# পূর্বী। ২ লহরী। ভক্তিরশায়ত্রিকু:।

ঈষং প্রথমমেবেতি নাঙ্গন্ধমূচিতং তয়ো; ॥ ১২০ ॥ বিহুভে চিত্তকাঠিন্যহেতুপ্রায়ঃ সতাং মতে।

थारवर्ष करमात्रकिकिश्कत्रकाः। एखडावनामा छक्तिविष्कृतकर्मकः॥ ১३० ॥

উত্তর হল্প ত্রোরস্গতে লোবাল্পরমিতাাহ যত্তে ইতি। কাঠিনাহেতৃত্বক নানাবাদনিরদনপূর্মকতত্ববিচারসা ত্রখনহনাভ্যাসপূর্মকবৈরাগাসা চ ব্রহ্মক মরপরাং। ভহি সহায়ং বিনোররোত্তর ছক্তিপ্রবেশঃ কথং স্যাক্তরাছ ছক্তিক জনেতৃরীরিতেতি। তসা ভক্তিপ্রবেশস্য হেতৃর্ভক্তিরীরিতা। উত্তরোত্তর ছক্তিপ্রবেশস্য হেতৃর্ভক্তিরীরিতা। উত্তরোত্তর জক্তিপ্রবেশস্য হেতৃং পূর্মপূর্মক কিরেবে ভাগঃ। নমু, ভক্তিরপি ভক্তবারাস্দাধাদাং কাঠিনাহেতৃঃ স্যাত্তরহি স্কুমারসভাবেয়মিতি। প্রভাবনাধুরর পশুণাদিক ভাবনামর ঘাদিতি। তথাত্তগবিভ নিজ্বিত্যা সার্দ্রভাগে কর্ত্ত মিছুনা ছক্তিরেশ কার্যোতি ভাবঃ। পাধানোন চ বথোকেং প্রীপ্রস্তাদেন, নৈতে গুণা ন গুণিরো মহদাদরো যে, সর্বে মনঃপ্রভ্রমঃ সহ দেবমর্ত্তাঃ। আদান্তরন্ত উক্সার

ত্ম চরাং ভাহ। ভক্তির অঙ্গ নহে ॥ ১২০॥

সংসকলের মত এই যে জ্ঞান ও বৈরাগ্য এই চুইটা চিন্ত-কাঠিন্যের হেতু, অতএব স্থকোমলস্বভাবা ভক্তিই ভক্তি-ঝোগে প্রবেশের হেতু বলিয়া কীর্তিত হইয়াছে॥

তাৎপর্য। উত্তর কালে জ্ঞান ও বৈরাগ্য অনুগত থাকিলে দোষান্তরের উৎপত্তি হয় অর্থাৎ চিত্তের কাঠিন্য জন্মে, কারণ মহাজনগণ জ্ঞান ও বৈরাগ্যকে চিত্ত কাঠিন্যের হেতু বলিয়া-ছেন, তাহার কারণ এই যে, নানাবাদ নিরাপপূর্বক তত্ত্ব-বিচার করিতে গেলে এবং হঃগ্রু অন্ত্যাসপূর্বক বৈরাগ্য স্কুমারসভাবেয়ং ভক্তিজন্মেত্নীরিতা॥ ১২১॥ যথা তত্ত্বৈব ॥

ভশাশ্বভুক্তিমৃক্তস্য যোগিনো বৈ মদ।জন:।

র জ্ঞানং নচ বৈরাগ্যং প্রায়: প্রেয়ো ভবেদিচেভি ॥১২১॥

কিন্তু জ্ঞানবিরক্তা।দিসাধ্যং ভক্তোব দিগুতি ॥ ১২২॥

যথা ভক্তিব ॥

বিশ্বতি বিশ্বা নৈবং বিবিচা স্থাপিরে বিরমন্তি শকাং । তাবেইচ রম নমং স্থাতিঅর্থপুর্জাং কর্মান্তি-চর্মারোঃ প্রবণং কথারাং। সংসেবরা তরি বিনেতি বড়ঙ্গরা
ক্রিপু ভাজিং জনঃ পরমহংসগতৌ লভেতেতি। অন কর্মাণরিচর্মা কর্মান্তিঃ
লীলাশ্বরণং চরণরোরিতি ভাজিবাঞ্জকং ওচ্চ ষট্ম্বপান্তিই। তথা সংসেবরা
বিনেতি বৈরাগাানিক্যণি নাদ্তং॥ ১২১॥

ক্ষানসাধাং মৃক্তিশক্ষণং বৈরাগাসাধাং জ্ঞানং শুদ্ভচ্চ ভক্তৈাব সিধাতি ১১২২৪

সাধন করিতে হইলেই অবশ্যই চিত্তের কাঠিনা জন্মে অভএব ভক্তিপ্রবেশে ভক্তি ভিন্ন অন্য হেডু হইতে পারে না ॥

यथा अकानभक्राक २० च । ७५ ट्रांटिक ॥

প্রীকৃষ্ণ কহিলেন, হে উদ্ধব! সেই কারণে মদগতচিত্ত একং আমাতে ভক্তিমান্ যোগিদিগের প্রার জ্ঞান ও বৈরাগ্য সঙ্গাকনক নহে। ১২১॥

কিন্ত জ্ঞানসাধ্য মৃত্তি 🏻 বৈরাগ্য জ্ঞান, কেবল ভক্তি-দান<sup>। ই</sup> সিদ্ধ হইরা থাকে॥ ১২২॥

यथ। धकानमञ्चरक २० म । ७२ । ७० (झाटक ॥

বং কর্মভির্যন্তপদা জ্ঞানবৈদ্ধাগ্যন্তক যথ ।
ধাগেন দানধর্মেন জোমোজিরিষ্ঠ রৈন্দি ॥
দর্বাং সম্ভাজিযোগেন মন্তভো লাভতেইল্পানা
স্বর্গাপবর্গং মদ্ধাম কথকিদ্যদি বাঞ্জি। ইতি ॥ ১২৩ ॥

ইতবৈঃ সালোক্যাদিকামনাময় জ্ঞাদিজিঃ। কথকি জ্ঞুপৰোগিতেক
বণা, চিত্রকে তোবি মান্টারিছে গর্ভত্তকদেবসা মারাজ্যাগে প্রজ্ঞাক্সা জগবংণার্দ্যমনে বাছা। বথোকং বঠে। ক্সেমে বিদ্যাধরত্তী জির্গাপেরন্ হরিমীখর।
মিতি। ব্রন্ধবৈবর্তে জ্ঞিক্ষং প্রতি জ্ঞিক্দেবসা ক্রেমিনা। বং ক্রেছি মাধ্যক্রন্দ্রিগড়োপমেরা, মারাধিলসা ন বিশ্বজ্ঞাক্যা দ্দীরা। বহাতি মাং ন বদি গর্ভাবিমং বিহার, জালামি সম্প্রতি মৃতঃ প্রতিভ্রম্বেজি। সপ্তানে প্রক্রাদিনাব বাকাং। ক্রেছাংমাহং ক্রপাবংসলহংসহোগ্রাসংসারচক্রকদনাদ্রস্তাং প্রতিভ্রম্বরণং
ক্রেমে (অর্থানাং) কদা ছু। ইতি জ্ঞান্সারচক্রকদনং হৃংখং জ্যাদহং ক্রেছাং
হিন্ম। জ্সেহেতি জ্বহির্ম্বভামরদাদিতি ভাবং। জ্ঞাপি প্রস্তাং ক্রক্রেঃ
স্ক্রাদাণি প্রাণাং মধ্যে প্রক্রিরিক্রং সন্প্রণীতঃ নিক্রিপ্রাহিলি তত্ত উপত্তরঃ
প্রীতঃ সন্তে ত্বাজিনু মৃশং চরণারবিক্রেলিলিভাবিরাং প্রতি কলা ক্রম্বে ম্বংহ্

ভগবান্ উদ্ধানক কহিলেন, সথে! কর্মা, তপস্যা, জ্ঞান, বৈরাপ্য, যোগ, দান ও অনুধান্য মঙ্গলম্বারা যাহা কিছু লাভ হয়, আমার ভক্তগণ কেবল মন্ত্রিমি ভক্তিদ্বারা সেই সকল আনায়াসে প্রাপ্ত হয়েন। যদিও আমার ভক্তগণের কোন প্রকার অভিলাষ নাই, তথাপি ভক্তির উম্প্রোপিতার নিমিন্ত কথকিং যদি তাঁহারা স্বর্গ, অপবর্গ ও মহীর ধান বাহা করেন ভাহা ইইলে ভাহাও অনায়াসে লাভ ক্রিক্তে পারেন ॥১২৩৪ ক্ষিচমুদ্বহতন্ত জনদ্য ভন্ধনে হরে:।
বিষয়ের গরিষ্ঠোহপি রাগঃ প্রারো বিলীয়তে ॥ ১২৪ ॥
কাদক্তদ্য বিষয়ান্ যথাহ মুপযুঞ্জতঃ।
নির্বন্ধঃ কৃষ্ণদ্বন্ধে যুক্তং বৈরাগ্যমূচ্যতে ॥ ১২৫ ॥

নমু, পূর্কং ভক্তি প্রবিষ্টিশ্য বৈরাগাং চিত্তকাঠিনাহেত্ত্রা হের্থেনোজং ভহি জন্য বিষয়ভোগ এব বিছিত:। ভচ্চ। বিষয়বিইচিত্তস্য ক্রফাবেশং অদৃস্বভঃ। বান্দণীদিপ্গতং বস্তু অন্তর্নন্তীং কিমাপুরাং। ইত্যাদিশান্তবিরুদ্ধং।
স্বলোচাতে। ভক্তে ক্রিনালমের ভদ্য বিষয়রাগবিলাপকং। তত্মাবৈরাগাভাবে কাঠিনাং ন ব্জমিত্যাহ ক্রচিমিভি। অত্র ক্রচিম্বহত: প্রায়ো বিশীরভ
ইভি পরিশাষ্ট্রস্ক কাংকে নৈব বিশীরভ ইতার্থঃ। তদেভত্রপলক্ষণসূক্তং জ্ঞানিঞ্চ
স্বভীভাস্য। বাস্থদেবে ভগ্রতি ভক্তিবোগঃ প্রবোজিতঃ। জনমত্যাভ
বৈষ্ণাং জ্ঞানক বদ্বৈত্ত্বং ইত্যাদি প্রয়োগঃ ॥ ১২৪ ॥

তৎ প্রাপ্তকং ভক্তিপ্রবেশ্যোগ্যের বৈরাগাং বানজি। অনাস্ক্রস্যেতি।
অনাস্কর্মা সভঃ ব্রাহ্ ব ভজুগুনুক্রমারং ব্যা স্যান্তর্গা বর বিষরামূপ্র্করেতা
ভ্রান্সা পুরুষ্মা ববৈরাগাং তদ্যুক্স্চাতে। ক্রুস্থ্যে নির্ক্তিঃ স্থাদিভার্মান ১২৫ ৪

ভগবান্ হরির ভজনে বাঁহার ক্রচি জনিয়াছে তাঁহার বিবয়াসক্তি গুরুতর হইলেও ভজনপ্রভাবে ঐ বিষয়াসক্তি আপনিই বিলয়প্রাপ্ত হয় ॥ ১২৪ ॥

শ্বনাসক্ত হইন। বথাবোগ্য বিষয় ভোগ করত কৃষ্ণসম্বদ্ধে কে শাগ্রহ জন্ম এছলে ভাছাকেই বিরাগ্য বলিয়া কীর্ত্তন শ্বিয়াছেন ॥ ১২৫॥ প্রাপঞ্চিক তথা বৃদ্ধ্যা হরিদম্বন্ধিবস্তনঃ।

মুমুক্ষুভিঃ পরিত্যাগো বৈরাগ্যং কল্প কথতে ॥ ১২৬॥

প্রোক্তেন লক্ষণেনিব ভক্তেরধিক্তদ্য ৮।

অপত্যে স্থানিরস্তেহপি নিত্যাদ্যখিলকর্মাণাং॥

জ্ঞানস্যাধ্যাত্মিকদ্যাপি বৈরাগ্যস্য চ কল্পনঃ।

স্পাষ্টতার্থং পুনরপি তদৈবেদং নিরাকৃতং॥ ১২৭॥

অথ কয় বৈরাগান্ত ভক্তান্প্যকৃতং বতদেব জ্ঞেরং। তচ্চ ভারবৃত্তিমূর্বালামপরাধপ্যান্ত সাদিতাহ পাপন্দিক তয়েতি। হরিস্থানিবছার ছংগ্রসাদাদিং তয়া পরিত্যাগো বিবিধ:। অপ্রার্থনা প্রান্তানকীকারশ্চ। তত্তোত্তরক্ত ছ্তের্যাপরাধ এব জ্ঞের:। প্রসাদাগ্রহণং বিকোরিভাগিবচনের তচ্চুবণাৎ ॥১২৬॥

প্রোকেনেতি ঘয়োরপাঘর:। অধিক্রত্যা ভক্তিশাল্লাধিকারেশ ব্যাপ্তশ্য বৈরাগাস্য মাত্রসা বিশেষত: ফস্তুন ইত্যর্থ: ॥ ২২৭॥

মুমুক্ষুজনগণকর্ত্ব প্রাকৃতবৃদ্ধিতে হরিসম্বন্ধি বস্তুর থে. প্রতিয়াগ হয়, তাহাকে ফল্প বৈরাগ্য কহে॥

তাৎপর্য্য। ফল্কু বৈরাগ্য ভক্তিযোগের অনুপযুক্ত। এই হানে হরিসম্বন্ধি বস্তর অর্থ এই যে, ভগবৎপ্রমাদাদি। ইহার পরিত্যাগ ছই প্রকার, প্রসাদগ্রহণ করিতে প্রার্থনা না করা, এবং প্রাপ্ত প্রমাদদের উপেকা। ভগবৎপ্রমাদাদি পরিত্যাপ করিলে অপরাধ জন্মে। এই নিমিত্ত ইহা ফল্কে বৈরাগ্য ॥১২৬॥

পূর্ব্বোক্ত লক্ষণদারা নিত্য নৈমিভিকাদি কর্মের ভজ্ঞাক্ত নিরস্ত হইলেও কেবল স্পাইকার ¦নিমিত আধ্যাত্মিক জ্ঞান জ্ঞ হস্ত বৈরাগ্যের পুনরায় নিরাস করা হইল ॥ ১২৭ ॥ ধনশিব্যাদিভির তির্যা ভক্তিরুপপাদ্যতে।
বিদ্রত্বাত্ত্রমতাহান্যা তদ্যাশ্চ নাঙ্গতা ॥
বিশেষণত্বনেবৈষাং সংশ্রমন্ত্যধিকারিণাং।
বিবেকাদীন্যতোহমীষামপি নাঙ্গত্মমৃত্যতে ॥
কুফোমাুখং স্বয়ং যান্তি যমাঃ শোচাদয়ন্তথা।
ইত্যেষাঞ্চ ন যুক্তা স্যান্তক্যকান্তরপাতিতা॥

ধনেতি। জ্ঞানকর্মানানার্তমিত্যাদিগ্রহণেন শৈথিলাস্যাণিগ্রহণাদিতি ভাষ:। নালতেত্যভারেমারামিতি শেব:॥ ১২৮॥

ধন ও শিষ্যাদিধারা যে ভক্তি উৎপন্ন হয়, সে ভক্তি কলাচ উত্তমা ভক্তির অঙ্গ বলিয়া পরিগণিত হইবে না, কারণ এস্থানে শিথিলতাপ্রযুক্ত উত্তমতার হানি হইয়া থাকে॥

তাৎপর্য। প্রথম শহরীতে "অন্যাভিলাষিতাশূন্যং জ্ঞান-কর্মাদ্যনারতং" এই ভক্তিলক্ষণে উক্ত হইরাছে যে, জ্ঞান-ও কর্মাদিতে আরত হইবে না, আদিশব্দপ্রয়োগ হেতু শিথি-শতাও গ্রহণ করিতে হইবেক। অতএব শিথিলাদর হইয়া ধনাদিদ্বারা যে ভক্তির অসুষ্ঠান করে, তাহাকে উত্তমা ভক্তিবলা যাইতে পারে না ॥

বিবেকাদি পদ, ভক্ত্যধিকারী ব্যক্তিদিগের বিশেষণ, এ. নিষিত্ত ঐ সকলকে ভক্ত্যুগ বলা যাইতে পারে না॥

ক্ষভজনে উন্মুখ ব্যক্তিদিগের সথকে যম, নিয়ম ও শৌচাদি বয়ং উপস্থিত হয়, একারণ উহাদিগকেও ভক্তাঞ্ল বলা যাইতে পারে না। यथा ऋाटम ॥

এতে নহাড়ুতা ব্যাধ তবাহিংসাদয়ো গুণাঃ। হরিভক্তো প্রবৃত্তা যে ন তে স্থাঃ পরতাপিনঃ॥ ভারেব ॥

অন্তঃশুদ্ধিবহিঃশুদ্ধিস্তপঃশান্ত্যাদয়ন্তথা।
অমী গুণাঃ প্রপদ্যন্তে হরিদেশাভিকামিনা ॥
সা ভক্তিরেকমুখ্যাঙ্গাঞ্জিতানেকাঙ্গিকাথবা।

#### স্বন্দপুরাণে বলিয়াছেন যথা॥

নারদের উপদেশে কোন এক ব্যাধ পশুহিংসা পরিত্যাগ করিয়া হরিসেবায় প্রবৃত্ত হইয়াছিল, তদবলোকনে কোন এক মহাত্মা সম্বোধনপূব্যক কহিলেন, হে ব্যাধ! তোমার এই অহিংসাদি গুণসকল অন্তুত নহে, কারণ যে সকল ব্যক্তি হরি-ভক্তিতে প্রবৃত্ত হয়েন, ভাঁহারা কখন পরের সন্তাপপ্রদ হইতে ইচ্ছা করেন না॥

অন্ত:শুদ্ধি, বাহাশুদ্ধি, তপদ্যা এবং শান্তি প্রভৃতি গুণ্স্কল হরিসেবাভিলাষি পুরুষের নিকট স্বয়ং গিয়া উপস্থিত হয়।

যে ভক্তি একমাত্র মুখ্যাঙ্গ অথবা বহু আঙ্গ আত্রয় করি-যাছেন, সেই ভক্তিই ভক্তগণের নিষ্ঠা দেখিয়া তাহাদিগকে দিদ্ধি প্রদান করিয়া থাকেন।

এই স্থানে প্রী হৈতন্যচরিতামূতে লিখিয়াছেন, যথা "এক

স্বাসনামুসারেণ নিষ্ঠাতঃ সিদ্ধিকুন্তবেৎ ॥ ১২৮ ॥
তিত্রৈকাঙ্গা যথা গ্রন্থান্তরে ॥
শ্রীবিষ্ণোঃ প্রবণে পরীক্ষিদভবদৈয়্যাসকিঃ কীর্ত্তনে
প্রহলাদঃ স্মারণে তদন্তি ভূজনে লক্ষ্মীঃ পৃথুঃ পূজনে ।
ব্যক্তর্বভিবন্দনে কপিপতির্দাস্যেহণ সংখ্যহর্জ্কনঃ ।
ব্যক্তবাহানিবেদনে বলিরভূৎ কৃষ্ণাপ্তিবেষাং পরা ॥ ১২৯ ॥
ক্রনেকাঙ্গা যথা নব্বে ॥

স বৈ মনঃ কৃষ্ণপদারবিক্দয়ে!-বঁচাংসি বৈকুণ্ঠগুণানুবর্ণনে।

আদি সাধে কিবা সাধে বহু অঙ্গ। নিষ্ঠা হইলে হয় প্রেমের ভারক"। ১২৮ ॥

একাপা ভক্তি যথা গ্রন্থান্তরে॥

শ্রীমন্তাগবত শ্রবণে মহারাজ পরাক্ষিং, শ্রীমন্তাগবতকীর্ত্তনে শুকদেব, স্মরণে প্রহলাদ, চরণদেবনে লক্ষ্মী, অর্চনে আদিরাজ পৃথু, বন্দনে অফ্রর, দান্যবিষ্ণের হন্থান্, সখ্যে অর্জ্বন ও আয়নিবেদনে অগ্নরাজ বলি. ইহারা সকলে কৃতার্থ হইয়াছিলেন, অর্পাং ক্ষবল এক এক মুখ্য ভক্তাদের সেবা করিয়া
ইহাঁদিগের কৃষ্ণপ্রাপ্তি হইয়াছিল। ১২৯।

আনেকাঙ্গা ভক্তি যথা নবমন্ধন্ধে ৪ আ। ১৫। ১৬। ১৭। শুক্দেব কৃহিলেন, হে ভারত ! মহারাজ আম্বরীয শ্রীকৃষ্ণ- করে। হরেম নিরমার্জনাদির ত্রুতিং চকারাচ্যুতসৎকথোদয়ে॥
মুকুন্দলিঙ্গালয়দর্শনে দৃশো
তদ্ভ্যুগাত্রস্পর্শেহ শসক্ষঃ।
আগঞ্চ তৎপাদসরোজসোরভে
শ্রীমন্ত্লস্যা রসনাং তদর্পিতে॥
পাদে। হরেঃ ক্ষেত্রপদান্ত্সপ্রেণ
দিরো হ্বীকেশপদাভিবন্দনে।
কামঞ্চ দাস্যে নতু কামকাম্য়া

ন্তরো। সৌরভবিশেষযোগ: সাহিত্মিরিভার্গ:। কেনং শ্রীমধুরাদি, পদং ভলা-লয়াদি, তদেভচে সর্কাং ভথা চকার যথোভ্রমাকেলনাশ্রয়া রভি: সাজেষা-

চরণারবিশে মন অর্পণ করিয়াছিলেন, বৈকুণ্ঠগুণামু বর্ণনে বাক্যসকলকে নিখোগ করিয়াছিলেন, হরিমন্দির মার্জনাদিতে করম্বরকে ব্যাপৃত রাখিয়াছিলেন, এবং অচ্যুতের সৎকথা-শ্রুণণে শ্রুবণে শ্রুরকে নিযুক্ত করিয়াছিলেন। অপর নয়নম্বরকে মুকুন্দবিগ্রহ সকলের আলয় বিলোকনে, অসসসকে ভগবত্পাদপদ্ম-শংমুক্ত ভূলদীর সৌরভগ্রহণে এবং রসনাকে ভগবত্পাদপদ্ম-শংমুক্ত ভূলদীর সৌরভগ্রহণে এবং রসনাকে ভগবানের প্রতিনিবেদিত অয়াদি-আয়াদনে তৎপর করিয়াছিলেন। আর তাহার চরণদ্বয় ভগবত্দেত্র স্থানে গমনে, এবং তাঁহার মস্তক্কক্ষপদাভিবন্দনে নিযুক্ত হইয়াছিল। অপিচ, তিনি কাম অর্থাৎ স্রক্চন্দনাদি বিষয়ভোগকে ভগবত্জনাঞ্রা রতি বে-

যথোত্যঃশ্লোকজনা শ্রয়ারতিঃ ॥ ইতি ॥
শান্ত্রোক্তয়া প্রবলরা তত্তমর্য্যাদয়ান্বিতা
বৈধী ভক্তিরিয়ং কৈশ্চিমর্য্যাদামার্গ উচ্যতে ॥ ১৩০ ॥
অথ রাগান্তগা ॥

বিরাজন্তীমভিব্যক্তং ব্রজবাসিজনাদিয় । রাগান্মিকামমুস্তা যা সা রাগান্মগোচতে ॥ রাগান্মগা বিবেকার্থমাদে রাগান্মিকোচ্যতে ॥ ইটে স্বারসিকী রাগঃ প্রমাবিষ্টতা ভবেং।

मिकिति: गाउँदेधदवडार्थ: ॥ >>> ॥

ইটে সামুক্গাবিবরে সারসিকী মাভাবিকী পরমাবিঠতা তস্যা হেডুঃ গ্রেম্ম্মত্কেভার্থ:। সারাগো ভবেৎ তলাধিক্যহেত্তরা তলভেলোজিরাছ-

রূপে হই সেইরূপ করিয়া ভগবদাস্যে তৎপর করিয়াছিলেন, ভাহাও কেবল ভগবৎপ্রসাদ স্বীকারার্থ হইয়াছিল, বিষয়ে-ছায় হয় নাই।

শাস্ত্রোক্ত প্রবল মর্য্যাদাযুক্ত এই বৈধী ভক্তিকে কোন২ পণ্ডিতেরা মর্য্যাদামার্গ বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন॥ ১৩০॥

॥ #॥ ইতি বৈধী ভক্তিমার্গ প্রকরণ ॥ #॥
অথ রাঙ্গানুগা॥

ত্রজ্বাদি জনাদিতে প্রকাশ্যরূপে বিরাজমানা যে ভক্তি ছাহাকে রাগান্থিকা ভক্তি কহে। এই রাগান্থিকা ভক্তির ক্ষুসুগতা যে ভক্তি, তাহার নাম রাগানুগা ভক্তি॥

্ এই রাগামুগা ভক্তির পরিজ্ঞানার্থ, প্রথমতঃ রাগাত্মিক। জক্তি কথিত হইতেছে॥ তন্মধী যা ভবেন্তক্তিঃ সাত্র রাগান্মিকোদিতা ॥ ১৩১ ॥ সা কামরূপা সম্বন্ধরূপা চেতি ভবেদ্বিধা ॥ ১৩২ ॥ তথাছি সপ্তমে॥

কামান্দেষান্ত্রাৎ স্বেহাদ্যথা ভক্তেম্বরে মনঃ।

ম্বৃতিমিতিবং। এবমূত্ররাণি তয়য়ী ভলেকপ্রেরিচা। তৎপ্রকৃতবচনে ময়ট্॥১৩২ কামেন রাগবিশেষরপেণ তেন রূপাতে ক্রিরত ইতি তথা সম্বন্ধেন তদ্ধেন ত্বেন রাগবিশেষর রূপাতে ক্রিয়ত ইতি ততংগ্রেতেভার্থ:। যদ্যপি কাম-ক্রপায়ামিপি সম্বন্ধবিশেষাহতে।ব তথাপি পৃথঞ্জপানানং প্রাধান্যবিক্ষয়া সর্বাহ সমায়্যতি রাজা চেতিবং॥ ১৩২॥

কামাদিতি। অত শবসত এবাংপদ্যমানানাং কামাদীনাং বিধাত্মশক্য-ঘাৎ তন্মনীনাং কথমপি ন বৈধীদং। যক্ত তন্মাধৈবাকুবজেন নিবৈরেণ ভ্রেন বা। স্নেহাৎ কামেন বা যুঞ্চানিতি শিঙ্গতায়ঃ শ্রুমতে সোহিপি সম্ভাবনাদা-মেব সম্ভবতি। তন্মাং কেনাপুগোরেনেতিত্ অভাক্সামাত্রং। যথা যথাবং তদ্যতিং তত্ত্বপং গ্রমং প্রাপ্তাঃ। ভ্রেবমিতি তেষাং মধ্যে ইচ্ছেবভয়রোশ্বদং

অভিলয়িত বস্তুতে যে স্বাভাবিকী প্রম আবিষ্টতা অর্থাৎ প্রেমময় তৃষ্ণা তাহার নাম রাগ, সেই রাগমনী যে ভক্তি তাহাকে রাগাল্মিকা ভক্তি কহে॥ ১০১॥

সেই রাগান্ধিকা ভক্তি কামরূপা ও সম্বন্ধরূপা ভেমে ছুই প্রকার হয়॥ ১৩২॥

সপ্তমক্ষমে ক্ষমে ১ আ। ২৯ শ্লোকে বথা।।
নারদ যুখিন্তিরকৈ কহিলেন, মহারাজ। বহু বহু ব্যক্তি
ভক্তি অনুসারে কাম, দ্বেব, ভয় অথবা স্নেহহেছু ভগবান পর-

আবেশ্য তদমং হিত্বা বহবস্তকাতিং গতাঃ ॥ ১০০ ॥
কামাকোপ্যো ভয়াৎ কংসো বেষাকৈদ্যাদয়ো নৃপাঃ ।
সম্বন্ধাদ্ ষ্ণয়ং স্নেহান্য ৃয়ং ভক্ত্যা বয়ং বিভো ॥ ইতি ॥১০৪
আকুক্ল্যবিপর্য্যাসাদ্ভীতিদ্বেমী পরাহতৌ ।
সেহস্য স্থ্যবাচিত্বাবৈধভক্ত্যনুবর্ত্তিতা ॥

ভবতি। তদপি তদাবেশপ্রভাবের হিলেতাগং। নতু কামেংগীতি মন্তনাং। বিবাসিক্ষীকেশং কিনুতাদোকজিপ্রিয়া ইতি ওসা কামসা দেয়। দিশ্বশপ্তি-ভাষ্ত্রতথা অভবং ॥ ১০৪॥

পোলা ইতি পূর্ত্রাগাবস্থা প্রাজ্ঞাঃ , এবং বৃষ্ণাদ্যোহপি॥ ১৩৪ । তিদেবং ব্যবস্থার প্রাপ্তে কামাদির্যমাত্রসোলাগানে কার্ণানাহ আছকুলোতি ৰাজাং। জীনারদেন তু অন্যোভীতিহেষ্যোক্পানানং ওজেন

মেখরে মনঃসংযোগ করিয়া কাসা দিনিমিত্ত কলুষ বিসৰ্জ্জন পুরঃসর তাঁহার গতি প্রাপ্ত হইয়াছে॥ ১৩৩॥

ইহার প্রমাণ এই, গোপীগণ কামহেতু, কংস ভয়হেতু, শিশুপালাদি নরপতি দ্বেষহেতু, যাদবগণ সম্বন্ধহেতু, তোমরা মেহহেতু এবং আমরা ভক্তিহেতু তাঁহার গতি প্রাপ্ত হইয়াছি॥

তাৎপর্যা। উল্লিখিত পদ্যে গোপীগণ ও যাদবগণের যে আবেশ বর্ণিত হইয়াছে, ইহা পূর্ববরাগজনিত জানিতে হইবে॥ ১৩৪॥

্ধই প্রকার জ্রীক্ষকে মনোনিবেশ করার বহুং অঙ্গ সত্ত্ব ক্ষানে কাম ও সম্বন্ধমাত গ্রহণের কারণ এই যে, অনুকৃল্যের

# शुद्ध। २ लहती। जिन्दानाम् जिन्दाः।

#### কিন্তা প্রেয়াভিধারিত্বালোপযোগে। হত্র সাধনে।

কৈম্ভ্যেপণাদনারৈব। ততুক্রং। বৈরেব বং নৃপ্তবং শিশুপাদ-শাক্ষ্পৌঞাদরো
গঙিবিলাসবিলোকনালৈঃ। ধ্যারস্ত আরুতিনিয়ঃ শরনাসনালৌ তৎসাম্যামাপ্রস্করক্র ধিয়াং পূবং কিমিতি। তথাত ব্যাথা তং । সা ভক্তিং সপ্তমন্তম্জে ভলাই
দেবর্ষিণোদিতেতি। এবমপি ষত্ত্রথা বৈরাহ্বন্ধেন সর্ত্ত্যপ্রয়তামিয়াং। ক
ভথা ভক্তিষোগেন ইন্তি যে নিশ্চিতা মতিরিভ্যুক্তং। তদপি ভাবময়কামাদ্যপেক্ষরা বিধিময়সা চিত্তাবেশহে ভূষেং হাস্তন্ত্রমতি বাল্পনার্থেন। যের্ ভাবমনের্ নিন্দিতোহিপি বৈরাহ্বর্গে বিধিময়ভক্তিযোগাচ্ছেই ইতি। তলায়তা হাজ্র
ভদাবিইতা স্ত্রীময়ঃ কাসুক ইতিবং। প্রহ্মেতি। অয়মর্থা:। পাওবানাং য়ঃ
সেহং স স্থাময় রাগায়িকায়ামের পর্যবস্তি তাল্শব্যবহার শ্রবণাৎ। তথাবৈদ্যব্জান প্রধান হারেবাং বিধিমার্গং প্রধান ছমের স্যাদিতি ভদ্মরাগাহ্রগায়াং।
যদিচ স্লেহশক্ষেন প্রেমসামানাম্চোত ভদা তলিশেষানভিধানাং ভতংক্রিয়ালভাবেন লোপ্যোগো বিদ্যুত ইতি। প্রেমবিশেষে তু বাচ্যে সম্বন্ধ স্বাধানক্ষ্
পর্যবস্থানাং। পুনক্রক্রমিতি চ জ্রেয়ং। ভক্তোতি পারিশেষ্যপ্রামাণোন বৈধ্বন্ধ্ব

অভাব হেন্ডু ভর একং দ্বেষ পরিত্যক্ত হইয়াছে, আর স্মেহশব্দ যদি দখ্যবাচী হয় তাহা হইলে ইহা বৈধী ভক্তির মধ্যে পরিগণিত হইবে, স্তরাং রাগাসুগাতে তাহার উপযোগিতা নাই,
কিন্তা যদি স্নেহ এই শব্দটি প্রেমকাচক হয়, তাহা হহিলে
মাধনভক্তির মধ্যে তাহারও কোন উপযোগিতা নাই, আনরা

### किन्नमाञ्चित्रकृः। পूर्यः। २ तहती

ভক্তা বন্নমিতি ব্যক্তং বৈধী ভক্তিরুদীরিতা॥ ১৩৫॥ বিদরীণাং প্রিয়াণাঞ্চ প্রাপ্যমেকমিবোদিতং।

ক্ষোদিতি পূর্বপদাাস্সারেণ পঞ্চয়তে প্রাপ্তেইপান ষট্তরবেন ব্যাথা।
ক্রীকামান্ত্রোপেটনব। বস্ততন্ত সক্ষান্তঃ সেইজলার্করে। যুর্কেত্যেকমিতি
বোপদেবান্ত্রাবেণ ক্রেয়:। উভয়ন সম্মন্তেরোরবিশেষাং। এবমেব, কতমোহপি ন বেণঃ সাং পঞ্চানাং পুরুষং প্রতীতি স্কু সক্ষেত্ত। পুরুষং ভগবস্তঃ
ক্রেজীতালিরেরবার্থে সার্কিতা স্যাদিতি॥ ১০৫॥

তত্ত্ব তদ্গতিং গভা ইত্যুকো সন্দেহান্তরং নির্মাতি যদরীণামিতি। প্রিয়াণাং
শ্রীগোপীর্ক্ষাদীনাং অনয়োঃ কিরণার্কাপমানে ব্রহ্মসংহিতা বথা। বস্য
প্রভা প্রভবভা জগদওকোটকোটবালেবসুধাদিবিভৃতিভিন্নং। ভদুক্ষ
নিকর্মনন্তমণেবসূতং গোবিন্দমাদিপুরুবং ভনহং ভলামীতি। প্রীভগ্রদ্গীতাচ।
ব্রহ্মণোহিপ্রতিভাহ্মিতি। (প্রতিভাজ্মিরঃ)। তথৈব স্থামিটীকাচ দৃশ্যা। তচ্চ
মুক্তংএকস্থাপি ভ্রমাধিকারি বিশেষং প্রাপ্য স্বিশেষাকারভগ্রব্রেনাদ্মাদ্ ঘনমং
নির্কিশেষাকাবব্রহ্মত্বনাদ্মাদ্ ঘনম্বিতি, প্রভাশ্বনীর্ষাং প্রভা ইতি জ্বেয়ং।

ভক্তি নিমিত্ত প্রাপ্ত হইয়াছি, এছনে ভক্তিশব্দে বৈধী ভক্তিই বলিতে হইবে, ইহা রাগাসুরাগা বলিয়া পরিগৃহীত হইবে না॥ ১০৫॥

বহু বহু ব্যক্তি সেই গতি লাভ করিয়াছে এই সন্দেহান্তর উপস্থিত হওয়ার গ্রন্থকতি। ঐ সন্দেহনিরাসপূর্বক কহিলেন, ব্রুমো এবং শ্রীকৃষ্ণে পরস্পার ঐক্য প্রযুক্ত শক্রগণ ও প্রিয়-কর্গের যে এক প্রাণ্য কথিত হইয়াছে ভাহার প্রভেদ এই যে, সূর্য্য এবং সূর্ব্যের কিরণ। তদু সাকৃষ্ণয়ে বৈক্যাৎ কিরণার্কোপমান্ধ্রাঃ ॥ ১৩৬॥ ব্রন্ধণ্যেব লয়ং যান্তি প্রায়েণ রিপবো হরে:। কৈচিৎ প্রাপ্যাপি সার্লগ্যাভাসং মঙ্জন্তি তৎক্ষ্বে॥ ১৩৭ তথাচ ব্রন্ধাণ্ডপুরাণে। সিদ্ধলোকস্ত তমসঃ পারে যত্র বসস্তি হি।

ষ্মতএবাত্মারামাণামণি ভগবদগুণেনাকর্ষণমূপপদ্যতে। বিশেষজিজ্ঞানা চেৎ প্রীভগবৎসন্ধর্ভা দৃশ্যঃ ॥ ১৩৬ ॥

° অরীণাং ব্রহ্মগতিমেব বির্ণোতি ব্রহ্মণোবেতি ॥ ১৩৭ ॥ তক্র পূর্বস্য প্রমাণং নিভৃত্যক্ষিত্যাদ্যহিং বক্ষ্যত<sub>্</sub>ইত্যতি প্রায়েশোভয়স্যাহ

তাৎপর্য্য, সূর্য্য ও কিরণ বস্ততঃ ছুই এক পদার্থ হইলেও ইহাতে যেমন পরস্পার অঙ্গঙ্গী ভেদ লক্ষিত হয়, তজ্ঞপ শ্রীকৃষ্ণে ও ত্রক্ষো প্রভেদ জানিবা, শত্রুগণ কিরণস্থানীয় ত্রক্ষো গতি প্রাপ্তহয়, আর প্রিয়বর্গ সূর্য্যস্থানীয় শ্রীকৃষ্ণে গতি লাভ করেন॥ ১০৬॥

অরিগণের ত্রেক্ষেতেই গতি হয়, গ্রন্থকার এই বিষয় বিস্তার করিতেছেন। ভগবান্ হরির রিপুবর্গ প্রায়ই ত্রেক্ষেতে লয় প্রাপ্ত হয়, তম্মধ্যে কেহ কেহ সারূপ্যাভাস লাভ করিয়াও সেই স্থেই অর্থাৎ ত্রেক্ষেথে নিমগ্ন হইয়া থাকে॥ ১৩৭॥

ত্রকাণ্ড পুরাণেও বলিয়াছেন ॥

সিদ্ধাণ ও ভগবান্ হরিকর্ত্ক নিছত দৈত্যগণ ব্রহ্মার্থে নিময় হইয়া যে সিদ্ধলোকে বাস করিতেছেন, সেই সিদ্ধলোক নিদ্ধা ব্ৰহ্মস্বথে মগ্না দৈত্যাশ্চ হরিণা হতা ইতি গ ১৩৮॥ রাগবন্ধেন কেনাপি তং ভজন্তো ব্রজন্তামী। অভিয় পদাস্থধাঃ প্রেমররপান্তদ্য প্রিয়া জনাঃ ॥ ১০৯ ॥ ख्याहि शिन्मदम ।

নিভূতমঞ্মনোক্দুচ্যোগযুজো হাদি যন্মনয় উপাদতে ভদরয়োহপি যয়ঃ সারণাৎ।

ভাগা চেত্রি। ভাষস: প্রক্রে: ॥ ১৬৮॥

ভাত প্রিয়াণাং বিশেষমাত রাগ্রস্কেট্ড ॥ ১৩৯ ॥

ভত্ত ব্ৰহ্মণোবৈতি পদ্যাৰ্জেন বাগবদ্ধেনেতি পদ্যেন্ত দশ্মস্তশ্ৰতিবাকাং জুলম্বতি ভুগাহীতি। জন্ম নিভ্তেতি প্রতিযুগান্তস্ত্রদাপি শক্ষ্য ধ্যেন যুগাবৃদ্ধ পুণগ্ৰমাটে । ভতশ্চ জনি যৰু স্নাধাং ভত্তং মুনৱ উপাসতে তদব্ৰোহিপি স্মরণাদ-ষ্ধু:। ব্লিগ্ন: শ্রীগোপস্থনর্য্য: ভাসাদের তথা প্রসিদ্ধে:। তা অভ্যিসরোজস্থা-ল্ডংপ্রেম্মন্মাধ্র্যাণি ব্যুব্রম্পি ইুস্মদুশপুটি: স্মভাবা: স্ত্য: স্মাল্ডাভি

স্পির্কি মায়ার পরপারে অবস্থিত। ১০৮॥

ভগৰৎপ্রিয়ব্যক্তিগণের বিশেষ গতিলাভ হয়, গ্রন্থকার এই বিষয় বিস্তার পূর্ব্যক কহিতেছেন। ভগবানের প্রিয় জন সকল কোন অনিকচনীয় অফুরাগ বশতঃ তাঁহাকে ভজন করিয়া প্রেমস্বরূপ ভাঁছার চরণপদ্মের স্থধা লাভ করিয়া पारकन ॥ ४००॥

দশ্যস্কলে ৮৭ আ । ১৯ শ্লোকে ॥ শ্রুতি সকল কহিলেন হে ভগ্রন্ প্রাণ মন ও ইচ্ফিয় শংবম পূর্ববিক হাদৃঢ় মোগযুক্ত মুনিগণ আপনার যে তত্ত্ ক্ষায়ে উপাধনা করেন, শক্রগণ অনিউচেকীয় আপনার

# পूर्वा २ नहती। ভक्तितमात्र्जिनिक्रः।

ন্ত্রিয় উরগেন্দ্রভোগভূজদণ্ডবিষক্তবিরো বয়মপি তে সমাঃ সমদৃশোহজ্বিসুদরোজস্বা: ॥ ১৪০॥ তত্র কামরূপা॥ ১৪১॥

স্তুলাতাং প্রাপ্তা বৃহোদ্বরেণ গোণো ভূষা কবাজিলু সরো**দ্রম্ণাঃ ব্রমেতার্থঃ।** অথবিশোরসা দশ্যটিপ্রনাং শৈক্ষরতার্থী নায়াং দৃশাঃ। তথাত বৃহহাদন্দ্রণাণ ক্রতিভাগ প্রাণি গোপিকারং পাথমিতি প্রসিদ্ধেঃ। করিকারাং ভজত ইতাাদিনা জনসামানানির্দেশস্ত এত তপলকণ তথা ক্রতঃ। তদেবং দ্রির ইতানেন বক্ষামাণা কামরূপা, বর্মিভানেন কামান্তগাঁচ উট্ভিতা। তদেতদমুসারেশ বৃদ্ধাদীনায়পি তংগ্রাপ্তিবিশেষা জ্ঞেরঃ ॥ ১৪০ ॥

অর কামরূপেতি। কামোহত্র তেইবিষররাগাত্মকপ্রেমবিশেষভেনাত্রে নির-প্রীয়: ॥ ১৪১ ঃ

সরপ সারণ করিয়াও তাহাই প্রাপ্ত হয়, অপ্রিছিল যে আপনি আপনাকে পরিচছন রূপে দর্শনপুর্সকি সর্পেন্দ্র দেহ সদৃশ আপনার ভুজদণ্ডে সংসক্ত চেতা কামাত্রা দ্রীগণও ডা্হা প্রাপ্ত হয় এবং শুভত্তভিমানিনী দেবতারূপ আমারা তৎসদৃশ হইয়াও আপনার পাদপদা স্থাধ ধারণ করত ভাহাই প্রাপ্ত হই ॥ ১৪০ ॥

ভন্মধ্যে কামরূপা যথা ॥

ভাৎপর্য্য। এন্থানে কামশব্দ **আপনার অভীষ্টবিষয়ক** রাগময় প্রেম বিশেষ॥ ১৪১॥ সা কামরূপা সম্ভোগতৃষ্ণাং যা নয়তি স্বতাং।
বদস্যাং কুষ্ণসৌধ্যার্থমেব কেবলমূল্যমঃ॥ ১৪২॥
ইয়স্ত ব্রজদেবীযু স্থপ্রসিদ্ধা বিরাজতে।
আসাং প্রেমবিশেষোহয়ং প্রাপ্তঃ কামপি মাধুরীং।
তত্তৎক্রীড়ানিদানত্বাৎ কাম ইত্যুচ্যতে বুধিঃ॥
তথাচ তত্তে।

ভদেবার সেতি। সা প্রাসিদ্ধা প্রেমরুপৈবার কামরুপা নম্বন্যত্যর্থ:। যা সন্ত্রোগভ্ষাং প্রাসিদ্ধাং কামমপি স্বস্থরপতাং নয়তি। তত্ত প্রেমরূপত্তে হেতুঃ ব্যালাংক ক্ষমেণ্ডার্থনের কেবল্যালাম ইতি॥ ১৪২।

ভাদেব দর্শয়ভি ইয়ং বিভি। ত্রপ্রসিদ্ধক যতে ত্র্লাতচরণাধুরহং ভানে-বিভাাদি ভবাকাদর্শনাং। নয়ত্র কামরূপাশকেন কামাত্মিকবোচাতে সাচ ক্রিইয়ব নতু ভাবং। তভভাসাক্ষায়াং অরূপতানয়নে সামর্থা ন সাাং। উচা-তে। ক্রিয়াপীয়ং মানস্ক্রিয়ার্পেণ আংশেন তত্র সমর্থা স্যাৎ সাচ মত্তোহস্য ত্র্বং স্যাদিতি ভাবনাত্রপতি জ্রেয়ং। এবমেবচ অভানয়নং সিব্যতি ॥ ১৪৩ ॥

বে ভক্তি সভোগতৃঞ্চাকে প্রেমময় রূপে পরিণত করে ভাছার নাম কামরূপা ভক্তি, যেহেড় এই কামরূপা ভক্তিতে কেবল রুঞ্জথের নিমিত্ত উদ্যুম দেখা যায়॥ ১৪২॥

এই স্থাসিদ্ধা কামরূপ ভাক্ত কেবল ব্রজদেবীতেই বিরাজমান, ইহাদিগের এই বিশিষ্ট প্রেম কোন এক অনি-ব্রচনীয় মাধুরী প্রাপ্ত হইয়া সেই সেই ক্রীড়ার কারণ হয় বিলয়া পণ্ডিভেরা এই প্রেমবিশেষকে কামশকে উল্লেখ করিয়া প্রেমিব গোপরামাণাং কাম ইত্যাগমং প্রথামিতি॥ ১৪৩॥ ইত্যুদ্ধবাদয়োহপ্রেডং বাঞ্জি ভগবংপ্রিয়াঃ॥ ১৪৪॥ কামপ্রায়া রতিঃ কিন্তু কুজায়ামেব সম্মতা॥ ১৪৫॥

সম্বর্গা ॥

সম্বন্ধরণা গোবিন্দে পিতৃত্বাদ্যভিমানিতা।

ইতাঃ পরং তমুভ্তঃ ইতামুস্তা তত্র হেতুমাহ ইতীতি। ইত্যেতং এতাদৃশেন কাস্তবাভিমানরপেণ ভাবেনোলফিতো যং প্রেমাভিশয়ত্তনেবেতি জ্বেরং তাদৃশ্বেন বিশিষ্টং তমিতি তুন জ্বেরং। মুমুক্ষুমুক্ত ভকানামৈকমতো ভাবভেদবারু স্থাপতঃ। তাদৃশপ্রেমাতিশয়প্রাপকঃ তদ্তাবং বিনৈব হি তৎপ্রেমাভিশরং বাছগীতোবোক্তা তৎপ্রাপ্রিনাভিমতেতি॥ ১৪৪॥

কামপ্রায়েতি যতে স্থজাতেত্যানি শুদ্ধপ্রেমরীত্যদর্শনাং। প্রত্যুক্ত উত্তরী।
য়াস্তমাক্রয়েত্যানি কামরীতিমাত্রদর্শনাং তথাপি রভিত্তত্পাধিভরাংশেন
জেয়া ১৪৫॥

পিতৃ বাদ।ভিমানিতেতি তৎপ্রভবরাগপ্রেরিতেতার্থ:। সম্বন্ধাদৃষ্ণয় ইতি। আছ

গোপরামাদিগের প্রেমই কাম বলিয়া কথিত হইয়াছে॥১৪৩॥
এই কারণে উদ্ধবাদি ভগবানের প্রিয় ভক্তগণ গোপীদিগের এই প্রেমবিশেষ প্রার্থনা করিয়াছেন॥ ১৪৪॥

কিন্তু ব্ৰজ্ঞস্নরাদিগের ন্যায় বিশুক্ক প্রেমের **অভাক**নিমিত্ত, কুজাদিতে যে রভি দেখা যায় পণ্ডিভগণ ভাহাকে
স্ক্রমপ্রায়া রভি বলিয়া সম্মতি প্রাকাশ করিয়াছেন ॥ ১৪৫॥

অথ সম্বন্ধ রূপা 🕸

গোবিন্দে পিতৃহাদি অভিমানই অর্থাৎ আনি এইফের

. আত্তোপলকণতয়। রুষ্ণীনাং বল্লবা মতাঃ ॥ যদৈশ্যভূত্নশূন্যহাদেষাং রাগে প্রধানতা ॥ ১৪৬ ॥ কামদম্মরুদ্ধে তে প্রেম্মাক্রম্রুপিকে।

বুক্সীনামুপ্লক্ণত্যা যে বল্লবা প্রাপ্তান্ত এব অজহলক্ষণয়া মতা:। আই কুপুঙি কুম্ব্যবাদে গৃহতে তথ্নি ভি কুম্ব্যবাদে হণীতি সুবে যথা মুম্উপলক্ষণ হেনামুখারমাত্রং গৃহতে তথ্নি ভি ভাব:। তত্ত্ব হেতৃমাহ্যদিতি। এখাং বল্লবানাং॥ ১৪৬॥

প্রেমনারং স্করণ কারণং যয়ো: নিত্যনিদ্ধা: ব্রিজেস্কর্মির এব আব্রারা স্লভানানি ব্যোগ্ডার্ভাবস্ত্রা ভ্রা হেতুনা। অর সাধনপ্রকরণে ন স্মাগ্রিচারিকে কিন্তু ভংগ্রকরণ এব বিচার্থিয়ত ইতার্থ:। ভত্তাবাদিমাধুর্য্যে ব্রিজারভাবিস্ফিনির্দেশশাস্ত্রের প্রাতঃ প্রবন্ধারা যথ কিঞ্চিন্তভূতে সভিষ্ক্রার: বিধিনাক্যং নাপেক্তের যুক্তিঞ্চ কিন্তু প্রবর্তত এবেতার্থ:। তদেবং

পিতা, আমি ক্ষের মাতা, ইত্যাদি মননই দলন্ধকাপ। ভক্তি।
বুক্ষিণণ দল্পমাত্রে ক্ষেকে প্রাপ্ত হইয়াছেন এই উক্তি
প্রযুক্ত এখানে বৃষ্ণি শব্দ উপলক্ষণ মাত্র, এতদ্বারা গোপগণকেও গ্রহণ করিতে হইবে, কারণ ঈশ্বত্ব জ্ঞানশূন্য হেতু
শোপগণেরও রাগাত্মিকা ভক্তিতে অধিকার আছে॥ ১৪৬॥

প্রেমনাত্রস্বরূপ কামরূপা ও সম্বন্ধরূপা ভক্তিষয় নিত্য-সিদ্ধ নন্দ যশোদাদিকে আশ্রেয় করিয়াছে বলিয়া এই সাধন-ভক্তি-প্রকরণে তাহাদের বিচারের কোন আবশ্যক নাই ॥

কাঞ্জাকা ভক্তি সুই প্রকার ভর্মাৎ কামরূপা ও সম্বন্ধন

নিত্যসিদ্ধাশ্রমতয়া নাত্র সমাগ্ বিচারিতে ॥
রাগাত্মিকায়া ছৈবিধ্যাত্দিধা রাগাত্মগা চ সা।
কীমাত্মগা চ সম্মাত্মগা চেতি নিগদ্যতে ॥
তথাধিকারী।

রাগাত্মিকৈকনিষ্ঠা যে ত্রজবাদিজনাদয়ঃ।
তেষাং ভাবাপ্তয়ে লুদ্ধো ভবেদত্রাধিকারবান্॥ ১৪৭॥
তত্ততাবাদিমাধুর্যো শ্রুতে ধীর্যদপেক্ষতে।
নাত্র শাস্ত্রং ন যুক্তিঞ্চ তল্লোভোৎপত্তিলক্ষণং॥ ১৪৮॥

रिवधञ्चाधिकाती जू जीवाविर्ज्यनाविधः।

লোভেৎপত্তের্লক্রনমিজি ॥ ১৪৭ ॥ ১৪৮ ॥

রূপা, এই কারণে রাগাসুগা ভক্তিও ছুই প্রকার, যুখা কামা-মুগা ও সম্বন্ধাসুগা॥

এই রাগামুগা ভক্তির অধিকারী যথা—

কেবল রাগামুগা-ভক্তিনিষ্ঠ যে দকল ব্রজবাদী জন, তাঁছাদিগের ভাব প্রাপ্তির নিমিত্ত যাঁহাদের চিত্ত লুক্ক, তাঁহা-রাই এই রাগামুগা ভক্তিতে অধিকারী ॥ ১৪৭ ॥

শাস্ত্র ও যুক্তিকে অপেকা না করিয়া কেবল নন্দ যশোদাদির ভাব ও মাধুর্য প্রবণ করিয়া বৃদ্ধিবৃত্তি যাহার অপেকা
করে, অর্থাৎ তত্তংভাব কবে প্রাপ্ত হইব ? এই বলিয়া উৎহক হয়, পণ্ডিত গণ তাহাকেই লোভোৎপত্তির লক্ষণ বলিয়া
কীর্ত্তন করিয়াছেন ॥ ১৪৮॥

य भर्यास सार्विश ना हर, तारे भर्यास देवी-

শত্র শান্ত্রং ভথা তর্কমসূক্লমপেক্ষাতে ॥ ১৪৯ ॥ কৃষ্ণং স্মানন্ জনকাস্য এপ্রতং নিজসমীহিতং। ভত্তৎকথারভশ্চামো ক্র্যাবাসং এজে সদা॥ ১৫০॥

नम् बाँगाञ्जाधिकातिरमा द्वाजाश्चिकाञ्चनाभिश्वार निवर्षिरवय छानृभी ७किः देवसङ्क्ष्मिकृतिमञ्च किमयपिटेवसी एकिन्द्रग्राह देवसङ्क्षीक । खादवा । त्रक्तिः । एक्कस्ट च्रीकावन्ना । ने मरमाजाञ्चलकानाः खनरमासाद्वना खना हेलि ॥ ১৪৯ ॥

অথ রাগান্থপারাঃ পরিপাটীমার ক্রুমিভ্যাদিনা। সামর্থ্যে সভি ত্রজে শ্রীমন্ত্রস্থানাবাস্থানে শ্রীবৃক্ষাবনাদে শরীবেশ বাসং কুর্যাৎ ভয়ভাবে মনসা পীভার্য: ॥ ১৫০ ॥

ভক্তিতে অধিকারী হয়। এই বৈণী ভক্তিতে যাঁহারা অধিকারী ভাঁহাদের শাস্ত্র অনুকৃশ তর্কের অপেক্ষা করা উচিত। এতি ভাংশর্যা। বৈণী ভক্তি ও রাগানুগা ভক্তির প্রভেদ এই যে, শাস্ত্রের বিধি অনুসারে যে ভক্তন, তাহার নাম বৈণী ভক্তি। আর লোভপ্রযুক্ত বিধি মার্গে যে ভক্তন তাহার নাম রাগানুগা ভক্তি॥ ১৪৯॥

শ্রীকৃষ্ণকে এবং স্বীয় বাঞ্চিত তাঁহার প্রিয়তন ভক্তজনকে স্বরণ করত তত্তৎ কথার অপুরক্ত হইয়া সর্বদা ব্রজেতেই শান করিবে॥

ভাৎপর্য। সমর্থ হইলে শরীর দ্বারা ত্রজ ভূমিতে বাস করিবে, আর যদি সমর্থ না হয়, তবে কেবল মনোমধ্যে ত্রজ ভূমিতে ধাসের অভিনাধ করিবে ॥ ১৫ ১॥



সেবা সাধকরপেণ সিদ্ধরপেণ চার্জ হি।
তন্তাবনিক্ষুনা কার্য্যা ব্রজলোকামুসারতঃ ॥ ১৫১॥
ত্রেবণোৎকীর্জনাদীনি বৈধন্তকুদিতানিতু।
যান্যকানি চ তান্যত্র বিজ্ঞোনি মনীবিভিঃ ॥ ১৫২॥

সাধকরপেণ যথাবস্থিতদেহেন। সিদ্ধরণেণ অন্তশ্চিত্তিভাঙীইতংসেবোপ-বোপিদেহেন। তসা একস্থানিকাজীইসা শ্রীকৃষ্ণ প্রেটিসা বো ভাবো রভিরিশ্বেদ-স্তানিস্না। একশোকাত্তর কৃষ্ণপ্রেটকনান্তদমুগ্রাশ্চ তদমুগারজ: ॥ ১৫১॥ বৈধভক্তাদিতানি স্বযোগ্যানীতি জেমং॥ ১৬২॥

া সাধক রূপে অর্থাৎ যথাবস্থিত দেই দার। এবং সিদ্ধ রূপে অর্থাৎ অন্তল্চিন্তিত অভিমত তৎসেবোপয়ে।গি দেই দার। ব্রক্তবিত নিজাভীষ্ট কৃষ্ণপ্রিয় বর্গের ভাবলিপ্সূ হইয়া তাঁহা-দের অনুসরণ পূর্বক সেবায় প্রস্তু হইবে॥

এই স্থলে, নিদ্ধপ্রণালী অপুসারে, যিনি যে স্থীর অসু-গামী, তিনি তাঁহার আজ্ঞা গ্রহণ পূর্বক স্থাফদেবার প্রস্তুত্ত ছইবেন॥ ১৫১॥

বৈধী ভক্তিতে প্রবণ কীর্ত্তনাদি যে সকল ভক্তার কবিত হইয়াছে, পণ্ডিতগণ এই রাগানুগা ভক্তিতেও দেই দেই অসের উপধোগিতা কহিয়াছেন ম

তাৎপর্য। বৈধী ভক্তিতে যে সকল ভক্তাঙ্গ বলা ছইয়াছে ইহায় অর্থ এই, যাহার যে অঙ্গে অধিকার ভিনি সেই সেই অঙ্গ যাজন করিবেন॥ ১৫২॥



#### ভত্ত কামামুগা ॥

কামাসুগা ভবেত্ত ফা কামরূপাসুগামিনী॥
সম্ভোগেছাময়ী ভতম্ভাবেছাগ্রেতি সা দিধা॥ ১৫০॥
কিলিভাৎপর্যবেত্যের সম্ভোগেছাময়ী ভবেৎ।
ভদ্ভাবেছাগ্রিকা ভাষাং ভাষমাধুর্যকামিতা॥ ১৫৪॥

খামরপাসুগামিনী ভূঞা ভদাখ্মিকা ভক্তি: কানাভূগা ভবেং। সম্ভোগেচ্ছামরী কামপ্রাপ্তগা ওলা। ভবঙাবেচ্ছায়েতি তস্যাভ্যা নিজনিজাতীটারা বজ্ঞ-দেবল যো ভাব ভারিশেবপ্তর যা ইচ্ছা সৈবাস্থা প্রবৃত্তিকা মদ্যা: সেভি মুখ্য-কামান্থা তেবা। তথাচ দর্শিতং। ত্রির উর্গেক্তভোগেতাদি ॥ ১৫৩ ॥

'সভোগোহর সংযোগ: ● কেলিরপি স এব ভাবমাধুর্যস্য কামিতা বস্থাং সাঃ >#8 ঃ

#### অথ কামাসুগা॥

কামরপা ভক্তির অমুগামিনী যে তৃকা তাহার নাম কামামুগা ভক্তি। ইহা সম্ভোগেছামরী এবং তত্ততাবেছামরী-ভেদে
ছই প্রকার। তত্মধ্যে নিজ নিজ অভাই ব্রজদেবীদিগের ভাববিষয়িণী ইচ্ছা যে রাগামুগা ভক্তির প্রবর্তিকা ভাহাকেই মুগ্য
কামামুগা ভক্তি বলা যায় । ১৫০॥

এক্ষনে কেলি অর্থাৎ ক্রীড়া মাজেতেই সম্ভোগ শব্দের ভাংশ্যা, অভএব কেলিবিষধক তাৎপর্যাবতী যে ভক্তি ভাহার নাম দ্ভোগেচছামধী। আর স্বস্থেগ্রীদিগের ভাব-মাধুর্বা কামনাকেই তত্ত্তাবেচছাজ্মিকা কহে॥ ১৫৪॥

শংপ্রাপে ইতি পাঠায়য়ং।

শ্রীমূর্তের্নাধুনীং প্রেক্য তত্ত্ত্ত্রীলাং নিশম্য বা । ভদ্তবাকাজ্ফিনে। যে স্থান্তেরু সাধনভানগোঃ ॥ পুরাণে শ্রেরতে পান্মে পুংসামপি ভবেদিরং ॥ ১৫৫ ॥

यथा।

পুরা মহর্ষয়: সর্কে দগুকারণ্যবাদিন: !

শ্রীমৃর্জে: শ্রীক্ষণ প্রতিমারা:। মাধুরীং তংগেরসীভির্নি প্রতিমার্কণিটিঃ সহ লীলাদিমাধুগিবিশেরং প্রেক্ষা তন্মান্ততন্তাবাদিমাধুর্গো শ্রুতে ইতি কেবলং শ্রুবণ যৎ পূর্বমূক তন্ত তৃ জন্তা: প্রেক্ষণেছল তন্ত শ্রুবণত সাহায় মর্ল্ডাং মৃগতে ইত্যভিপ্রেত হিনা মূলতন্তক্রপলীলাদাক্র্তে:। তমরীলাশ্রবণত্ব তবংক্রেক্ষণং বিনাপি কার্য্যকর্মিত্যাহ তদিতি। অনুরোধিবিধকামানুগরো: তেত্ব সাধন্তা। অত্রব তরোর্ধিকারিণইতার্থ: । ১৫৫ ॥

শ্রীমৃর্ত্তি অর্থাৎ শ্রীকৃষণ প্রতিমার মাধুর্যা সক্ষর্ণন করিয়া অর্থাৎ প্রেয়সীবর্গের সহিত শ্রীকৃষণের যে সকল লীলা ভবিষ্যানী কথা প্রবণ করিয়া, বাঁহারা সেই ভাবাকাজ্জী হর, ভাঁহারাই এই দ্বিধি কামাসুগা ভক্তিতে অধিকারী, এই নিমিন্ত পদ্মপুরাণে লিখিয়াছেন যে, পুরুষদিগেরও এই কামাসুগা ভক্তি হইয়া থাকে ॥ ১৫৫॥

यथा भन्नभूतारण ॥

পূর্বে কালে দশুকারণ্যবাসী মহর্ষিগণ শ্রীরামচন্দ্রের মুর্তির মাধুর্য্য সন্দর্শন করিয়া তদপেকা অধিকতর লাবণ্যময় শ্রীক্ষ-কে সম্ভোগ করিতে অভিলাষ করিয়াছিলেন। অনুস্তর তাঁহারা

# দৃষ্ঠ্। রাশং হরিং ভত্ত ভোকুমৈছন্ ছবিগ্রহং॥ তে সর্বে জীত্বমাপলাঃ সম্ভূতাশ্চ গোক্লে।

পুরেতি । মহর্ষরোধন্ত শ্রীলোক্লছপ্রীক্ষপ্রেরসাহগতবাসনাঃ জন্তর সর্বাদিতার। তে চ রামং দৃট্য তভাগেশি ক্ষমরবিগ্রহং হরিং শ্রীক্ষণং ভাববেতার-মণি অংশ্রতিপাদকশান্তে বিবংপ্রসিদ্ধং। গোকুলে প্রেরসায়ে ভ্রা উপভোক্ত্রিক্ষন্ নমসা বরং বৃণুতে মা। তে চ সর্বে কর্ত্তকাদিব তম্মাদবচনেনির বরং কর্মাদির বেশাভারগোশীনাং গর্গ্তে ন্ত্রীদ্দমাপরাঃ সক্ষত্র গোকুলনারাতিবিখাতে শ্রীক্ষমান্ত্রিক্ষান্ত্রিক্ষাক্ষা হরিং তত্তোগুলি মনোহরং শ্রীক্ষমান্ত্রক কর্মান্ত্রক সংল্লাহ্রের স্কাভ্রাবিধান্ত সংপ্রাণ্য তত্তগুলন্তর্মের মুক্তা ভ্রাবিধান্ত

ত্রীত্ব লাভ করত গোকুলে জন্ম গ্রহণ করিয়া কামভারা শ্রীকৃষ্ণকে প্রাপ্ত হইয়া ভবার্ণিব হইতে নিমুক্তি হয়েন।

তাংপর্য। দণ্ডকারণাবাদি সহর্ষিদিগের এন্থলে গোক্লন্থ ক্রিক্ক প্রেয়দীদিগের অনুগত বাদনা। যংকালীন শ্রীরামচন্দ্র দণ্ডকারণ্যে বাদ করেন দেই সময় তত্তন্থ সহর্ষিগণ শ্রীরাম-চন্দ্রকে দর্শন করিয়া ইহা অপেকা অধিকতর হৃবিগ্রহ শ্রীকৃষ্ণ এই নিশ্চর করিলেন। পরে শ্রীরামচন্দ্রের নিকটে মনে মনে এই বর প্রার্থনা করিলেন যে, যে কোন রূপে স্ত্রীত্ব প্রাপ্ত হইয়া শ্রীকৃষ্ণবিগ্রহ উপভোগ করিতে পারি, কিন্তু শ্রীরামচন্দ্র এবিষয়ে কোন স্পন্টাক্ষরে বর নাদিলেও কল্লর্জতুল্য শ্রীরাম-চন্দ্রের অবচনেই \* বর জ্ঞান করিয়া দেশান্তরে স্ত্রীত্ব লাভ প্রাংসর গোদীগর্ম্ভে জন্ম গ্রহণ করেন, তদনক্তর বিবাহ নিবন্ধন গোক্লে সমাগত হইয়া সংকল্পমাত্র শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করিলেন,

 <sup>&</sup>quot;भोनः नग्रविगक्ताः" स्रोतः नग्रवित हिङ् ।

হরিং সংপ্রাপ্য কামেন ওতো মুক্তা ভবর্ণিবাদিভি॥ ১৫৬॥ রিরংসাং স্বর্ছ কুর্বন্ যো বিধিমার্গেণ সেবভে। কেবলেনের স তদা মহিষাত্মিয়াৎ পুরে॥ ১৫৭॥

विछि। अवर्ग् रगठाः कान्तिनिछ। मित्रीका (स्वतः ॥ ১८७ ॥

য ইতি প্ংলিক্তনে নির্দেশে :জনমাত্রবিক্রা স্ত্রী বা পুমান্ বেডার্ব:।
বিরংসাং ক্র্রিতি নৃত্ শীব্রুদেবী ভাবেজাং ক্র্রিতার্ব:, কিন্ত স্থাতি মহিবী-বিভাবস্ট স্থা ক্র্রিন নৃত্ দৈরিক্রীবন্তদস্ট ভবেভার্থনিধিমার্বেণিতি বল্লবীকাত্তন
ধানন্দেন মন্ত্রাদিনাপি কিমৃত মহিবীকাত্তধানন্দেরে ছেডার্ব:। কেবলেনেভি
বলাদিস্থ মলিক্লাপ্রহং বিনেতার্ব:। মহিবীবং ভবর্গান্ত পামিস্থানিদ্যি ভাব:। ভদেভি
ক্লাভিং বিল্পেনের নৃত্রাগান্ত্রাব্রিছের ভদা অভ্যাদ্রাদিভি ভাব:। ভদেভি
ক্লাভিং বিল্পেনের নৃত্রাগান্ত্রাব্রিছেরে ভাব:। ১৫৭ ॥

ভাহার পর তাঁহার। ভবার্ণব হইতে মুক্ত হয়েন।

ইহার প্রমাণ রাসলীলার ১ প্রথমাধ্যায়ে "অন্তর্গৃহ প্রভাঃ কাশ্চিং" ইত্যাদি শ্লোকে জানিতে হইবে ॥ ১৫৬ ॥

যিনি স্ঠ্রসণাভিলাষী হইয়া কেবল বিধি মার্গান্দুদারে দেবা করেন, তিনি দারকাতে সহিষীত প্রাপ্ত হরেন ॥

তাৎপর্য। লোকে "ব" এই পু:লিক নির্দেশ হৈছু ত্রী হউন, বা পুক্ষই হউন, উভনেনই গ্রহণ স্কানিতে ইইবেক। কেবল নমণেচ্ছা করে কিন্তু ভ্রমদেশীর ভাব গ্রহণ করিতে

# \*\*\*

#### ভথাচ মহাকেশ্রি।

স্থািপুজা মহাত্মানস্তপদা দ্রীরমাপিরে। ভর্তারক জগদেহানিং বাহুদেবমন্তং বিভুং॥ ইভি॥ ১৫৮॥ অপ সম্বন্ধানুগা।

শা সম্বন্ধাসুগা ভক্তিঃ প্রোচ্যতে সদ্ভিরাত্মনি। যা পিতৃহাদিসম্বন্ধমননারোপণাত্মিকা॥ ১৫৯॥

ভণলা বিধিমার্গেণ আর বিধিমার্গোপলফণতেন বাসনাদিভেদে। ছবি ব্যালা ১৫৮ ।

শিক্ত্যাদিসম্মান বন্ধনানং বিশেষ্চিম্বনং পুনন্তস্যাবোপণং স্থামিরভিসন্তং ভাষাবিদ্যোজ্য ব্যান ১৫৯ ॥

ইছে। করে না। "স্থষ্ঠ্য" এই শব্দ প্রয়োগ হেতু স্পান্ট রূপে মহিষীত্লা ভাবের গ্রহণ, সৈরিদ্ধীবং ভাব গ্রহণীয় নয়। বিধিমার্গে গোপীকান্তর গানিময় মন্ত্রাদি দারা উপাসনা করি-লেও প্রীনন্দনকে প্রাপ্ত হইবেক। ক্রিন্থিগানের কথা ত দুরে পরাহত। অভএব প্রীনন্দান্ত্রজকে প্রাপ্ত হইতে অভিনাম করিলে স্থ স্থ যুগেশ্বরীর অনুগামী হইয়া ভজনা করিলেই প্রাপ্ত ইরেন, ভদ্মান্তিরেকে কোন মতেই তাঁহাকে প্রাপ্ত হইবেন, নাম ১৫৭ ম

गराकृष्मभूबारन् विवार्षाक् ॥

মহাত্মা অগ্নিপ্ত্ৰগণও বিধিমার্গানুদারিনী দেবা বারা ক্রীয় প্রাপ্ত হইয়া, দেই বিভূ, ভাজও জগদেবানি, বাহ্নদেবকে প্রাক্তিক্কাপে প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। ১৫৯॥ লুকৈ বাৎসন্যস্থ্যাদে ভিক্তিঃ কার্য্যাত্র সাধকৈঃ। অজ্যেন্দ্রস্থানীনাং ভাবচেষ্টিতমুদ্রয়া । ১৬০ ॥ তথাহি শ্রেষতে শাস্ত্রে কশ্চিৎ কুরুপুরীস্থিতঃ।

ব্রদেক্তে। নতু ব্রক্তেদিধাতিমানেনাপীত্যথং। পিতৃথাদাতিমানোহি বিধা সম্ভবতি স্বত্র্বেন তৎপিত্রাদিভিরতেদভাবনরাচ। ত্রাস্তামসূচিতং ভগবদভেদোপাসনাব্রেষ্ ভগবহদেব নিতাবেন প্রতিপাদয়িধামাণেষু ভদনেন-চিত্যাং। তথা তৎপরিক্রেষু ভত্চিতভাবনাবিশেষেণাপরাধাপাতাং॥ ১৬০ ॥

অথ পূর্বনেবোচিতমিতি তথাহীতি। অধিষ্ঠানং প্রতিমাং। সিদ্ধাহজুদিজি বালবংস হরণলীলারাং তংগিতুনামিব সিদ্ধিকেরো। এবমেবহি ছান্দেসনং-

বাৎসল্য সখ্যাদিতে লুক যে, সাধকজ্জগণ তাঁহারা। ব্ৰেজ্জে ও স্থবলাদির ভাব ও চেফা দারা শ্রীকৃষ্ণেতে ভক্তি সংস্থাপন করিবেন॥

তাৎপর্য। পিভ্জাদি অভিমান তুই প্রকার, আমি রুক্ষের পিতা ইত্যাদি সভস্তরূরপে মনন, আর প্রীকৃষ্ণের পিত্রাদি তুল্য আপনাকে অভিমান। এই তুইয়ের মধ্যে পিত্রাদির সহিজ্ঞ তুল্য ভাবনা অত্যন্ত অনুচিত। কারণপ্রীকৃষ্ণের সহিত আপনাকে অভিন্ন জ্ঞান করিলে অর্থাং "আমিই কৃষ্ণ" এই রুপা মনন করিলে যাদৃশ অপরাধ জন্মে, তাঁহার নিত্যসিদ্ধা পরিবার গণের সহিত আপনাকে অভেদ জ্ঞানেও সেই রুপা অপরাধ হুইরা থাকে॥ ১৬০॥

ক্ষনপুরাণে শুনা যায় যে, হত্তিনাপুরস্থিত কোন এক বৃদ্ধ বৃদ্ধকি নারদের উপদেশাসুসারে প্রীনন্দনন্দনের প্রতি-

## चक्तित्रताम् जिल्हाः। तृस्ति। २ नहती

নন্দস্নোরধিষ্ঠানং তত্ত পুজতয়া ভজন্ ॥
নারদস্থাপদেশেন সিদ্ধোহভূদ্দবর্দ্ধকি: ॥ ॐ ॥
ভাতএব নারায়ণব্যহন্তবে ॥
পতি-পুজ্র-স্হস্ট্রাভ্-পিত্বিমাত্রবদ্ধরিং ।
বে ধ্যায়ন্তি সদোদ্যুক্তান্তেভ্যেহপীহ নমো নমঃ। ইতি ॥ ৬২॥
কৃষণতন্তক্তকারূণ্যমাত্রলাভৈকহেতুকা।

কুমার প্রোক্তদংহিতারাং প্রভাকররাজোপাথানং। অপুরোছিপ স বৈ নৈছেৎ পুত্রং কর্মান্ত ভিত্তন্। বাস্থদেবং জগলাথং সর্বাহ্যানং সনাতনং। অপেযোপনিষ-বেলাং পুত্রীকৃত্য বিধানতঃ। অভিষেচ্নিতৃং রাজা অরাজ্য উপচক্রমে। ন পুত্র-মভাধিত বান্ শাক্ষাভূতাজ্জনাদিনাদিতি। ইত উদ্ধিং ভগবদরণ্ড। অহং ভে ভবিতা পুত্র ইত্যাদি॥ ১৬১॥

শ্বহারিরপেক্ষহিতকারী মিত্রং বহবিহারীতি ছরোর্ভেন:। তথাচ তৃতীরে শ্রীক্পিলদেববাক্যং। বেষামহং প্রির আগ্না স্থত-চ, সথা গুরু: শ্বহুদো দৈব-মিটমিতি ॥ ১৬২ ॥

ক্লফেভিমাত্রপদক্ত বিধিমার্গে কুমচিং কর্মাদিসমর্পণমপি ছারং ভবতীতি

মাকে পুত্ররূপে ভজনা করিয়া দিদ্ধি লাভ করিয়াছিলেন, (যথা—অগ্রন্থীপে বাস্থদেবঘোষের আদ্ধকর্তা শ্রীগোপীনাথ বিগ্রন্থ)॥ ১৬১॥

**कांत्रम नातांग्रम्बुरस्टर ७ क्लिग्राट्डन ॥** 

যাঁহার। সর্বাদা যত্ন সহকারে ভগবান্ হরিকে পতি,পুত্র, হুহুৎ, ভ্রাতা, পিতা ও মিত্রবং ধ্যান করেন তাঁহাদিগকে প্রণাম করি॥ ১৬২॥

রাগামুগা ভক্তিলাভের প্রতি কারণ এই যে, ব্লফ এবং

পুষ্টিমার্গতরা কৈ শ্চিদিয়ং রাগান্ত্রেচ্যতে ॥ ১৬০ ॥ ॥ \* ॥ ইতি শ্রীভক্তিরসায়তসিক্ষো পূর্ববিভাগে সাধন-ভক্তিলহুরী দ্বিতীয়া ॥ \* ॥ ২ ॥ \* ॥

खिरिष्ट्रनार्थः आसाग देखि खायः ॥ ১৬०॥

॥ \* ॥ ইতি ঐভিক্কিরসামৃতসিন্ধৌ পূর্কবিভাগে বছরীচতুইদান্ধকে সাধন-ভক্তিবহরী দিতীয়া ॥ २ ॥ \* ॥

কুষণভক্তের করুণামাত্র। কোন কোন বিজ্ঞতম ব্যক্তি প্রেম-ভক্তির সাক্ষাৎ পুষ্টিকারিণী বলিয়া এই রাগামুগা ভক্তিকে পুষ্টিমার্গ বলিয়া কীর্ত্তন করিয়াছেন ॥ ১৬২॥

॥ \*। ভক্তিরদায়ত দিক্ষুর পূর্ববিভাগে সাধনভক্তিনারী विতীয়লহরী। \*।। ২।। \*।।

# ভক্তিরসাত্তিনিকুং। পূর্ব। ও লছরী

# অথ ভাবভক্তিঃ॥ শুদ্ধসত্ত্বিশেষাক্সা প্রেমসূর্য্যাংশুদাম্যভাক্।

অৰ্থ ভাৰে ভবিবিচাতে ৷ পুৰ্বং তাৰং ভকিসামানালকণে চেটারপা ভাৰরপা চেতি দ্বিবিধা ভক্তিৰাৰ্শতা। তত্ৰ চেষ্টারূপা দ্বিধা ভাবভক্তে: সাধনক্ষপা কার্যারপাত রুদাবভারা: অনুভাবনারী চ তয়ো: দাধনরপা পুর্বা দর্শিতা। উত্তরা রস প্রসঙ্গে দর্শবিষ্ঠাতে। অব ভাবরুপাচ বিবিধা রসাবস্থারাং স্থায়িনামী চ। ভত্তত পূর্বা দিবিধা ক্রোড়ীকতা প্রণয়াদিপ্রেমনামী রতাপরপর্বায়া প্রেমান্ত্ররপা ভাবনামীর। তদেবং সতি উত্তরা সঞ্চারিরপাপি রসপ্রসংক্ষ কর্শনি-ৰাতে সম্প্রতিত স্থায়ি ভাষসামানারপং প্রেমনায়া প্রণরাধিকমণি ক্রোড়ীকুর্মন র ভাপরপর্যায়ং স্থায়িভাবাত্মররণং ভাব- লক্ষ্মতি গুরুণত্বেভি। সাচ মহাতাব-পর্যামন্তদুর্দ্ধাবস্থাবাজ্ঞরে ভবিবাতী চাভিপ্রেন্ডা চাহ গুদ্ধস্বত্তি। অৱ গুদ্ধস্বং নাম বা ভগৰতঃ সর্বাপ্রকাশিকা অরপশক্তেঃ সংবিদাখা। বৃতিঃ। নতু মাগাবৃত্তি-বিশেষ:। বিরতং তেতং এভাগবতস্পর্ভন্য দিতীয়দলর্ভে প্রীবৈক্ষবভোষণাাং विजीवाधारम् छ । एकप्रवातामय । नाम छात्र या चक्र श्रमे क्रियुक्त खुल कर्णा । स्लामिनीमिक्किनी मःविद्धावा मर्कामःहि: हो। स्लामकाभकती मिला द्वि त्ना खगर्बाई ह है। विकृत्यानाष्ट्रनाद्व स्वामिनीनामी महामक्तिस्वीवनावतुक्तिः সমন্ত্রতভংসারাংশক্ষমিতাবগত্তবাং ভরো: স্মবেত্রো: সারত্ত্ব ভরিত্যপ্রিয়-क्रमाधिष्ठीनक-क्रमीमाञ्करनः क्रामम्बद्धान्त । स्नामिनीमातम् वामक्रमारेमाव ভাবদা পরমপারণামরূপে মোদনাঞ্চে নহাভাবে আমহজ্জননীলমণিমধিকতা बाक्षीविवावि। बाधिकायुव এवाटमा स्मान्त नवू मर्खकः। वः श्रीमान

## অথ ভাবভক্তি ॥

বিশেষ শুদ্ধদত্ত স্বরূপ, প্রেমরূপ সূর্য্যকিরণের সাদৃশ্য-শালী এবং রুচি অর্থাৎ ভগবংপ্রাপ্ত্যভিনাষ, তদীয় আফু-

## পূর্ব। এলহরী। ভক্তিরদায়তণিকু:।

## ক্লচিভিশ্চিত্রমাস্থ্যকুদর্শো ভাব উচ্চতে ॥ ১ ॥

क्लानिनीभरकः छविनामः शिद्धां यत्र है ि। खुर्गु भरन्त हाम्कृत्मान क्रकाम्-শীলনরপা সামানোন লক্ষিতা ভক্তিরেবার্যাত ইতার্থ:। সাতু যদাপি ধার্থ-সামান্যরূপা ব্যাথ্যতা তথাপতে চেষ্টারূপা ন গৃহতে কিন্তু ভাবরূপৈবধিধেয়ল্য ভাবস্য সাক্ষারি দিইছাং। বক্ষতে চ স্বর্মের ভাবমাত্রসা লকণং। শ্রীরেক্সির-বর্গসা বিকারাণাং বিধায়িকা:। ভাবা বিভাবজনিতাশ্চিত্তবৃত্তয় ঈরিতা ইতি য় চিত্তর ভয়শ্চাত্র প্রাকারাস্তরেণ চিত্তস। হিতর: । বিকারো মানসো ভাব ইভামর: । छर्थाेेे विकासांगानाः वाखिहातिगास्य शास्त्रित्वयाः (बाक्डियामागानाः हिन्नसा-স্থাক্তা ভাবাং প্রেমাত্রত্বেন বিশেষ।তাচ্চ। তত্ত চারমর্থ:। অসৌ সামান।তো অক্সিতা বা ভক্তি: সৈব নিজাংশবিশেষে ভাব উচ্যতে। স চ কিংকিংশ্বরূপস্তত্তাহ कुर्कमा खन्नभाकिका : कुक्तमद्वित्भाषा यः मध्यव्या छन्निछ। श्रिष्ठा श्रिक्ता विश्वास्था ভয়া নিতাসিদ্ধ: স্বরূপ: যদা স:। কিঞ্চ। ক্রচিভি: প্রাপ্তাভিলাবসকর্ত্তকামু-कृनगिष्टिनांस्त्रोहार्काञ्चिनादेवन्द्रिञ्जार्क्ज विकास व এবেতাাহ প্রেমেতি। স্থাত্ত রাচিরাত্দয়িবামাণাবছো গৃহতে। তত্ত ত তদংশু-সামাভাগিতি প্রেরা প্রাথমজ্বিরূপ ইতার্থ:, ভাব: সএব সাজাত্মা বুবৈ: প্রেম্ম নিগদাত ইতি বক্ষাতে অস্যাঃ প্রাকৃত্তং তাদশগুরুসরবিশেক্সাদিনীসাররূপত্ত মোক্তর্থস্যাপি ভিরন্ধারকত্বাং। প্রীভগণতে।হপি প্রকাশক রাদানলকরত্বাক্ত। অত্র প্রমাণসা বিশেষজিজ্ঞানা চেং প্রীতিসন্দর্ভো দৃশাঃ। তদেবং নিত্যতং-প্রিয়জনামাং ভাবে লক্ষিতে প্রপঞ্চর জ্ঞানামপি চিত্তবৃত্তি: আক্রভত্তজ্ঞ-

ক্ল্যাভিলাষ ও সোহার্দ ভাবাভিলাষ দারা চিতের স্লিগ্ধঙা কারিণী যে ভক্তি তাহার নাম ভাব ॥ তাৎপর্য। এন্থলে ইহাই বিবেচিত হইতেছে। পূর্বে দামান্যভক্তির লক্ষণে চেন্টারূপা ও ভাবরূপা ছুই প্রকার ভক্তি প্রদিশিত হইয়াছে। তন্মধ্যে চেন্টারূপা ভক্তি ছুই প্রকার, দাধনরূপা ও কার্যুরূপা, এই কার্যুরূপা ভাবভক্তি দুসাবস্থায় অনুভাব নামে কথিত হয়। এই ছুইয়ের মধ্যে দাধনরূপা ভক্তি প্রদর্শিত হইয়াছে, কার্যুরূপা ভক্তি অর্থাৎ অনুভবনালী ভক্তি রসপ্রসঙ্গে বর্ণিত হুইবে॥

অপর, ভাবরূপ। ভক্তি রসপ্রদঙ্গে স্থায়িনালী ও সঞ্চারিনালী বলিয়া তুই প্রকারে কথিত হয়। তল্মধ্যে পূর্ববা স্থায়িভক্তি প্রণয়াদি অঙ্গীকার করিয়া প্রেমনালী ভক্তি হয়, রতির
অপর পর্যায় ঐ স্থায়িভক্তিকে প্রেমালুর বলিয়া ভাবভক্তি
বলা বায়॥

তমধ্যে সঞ্চারিরপা ভক্তি রসপ্রসঙ্গে প্রদর্শিত হইবে।

একণে সামান্যরূপ স্থায়িভাবের প্রেম নামক প্রণয়াদির অঙ্গীকার নিবন্ধন রতির অপর পর্যায় স্থায়ভাবায়ুররপ ভাব,প্রদশিত হইতেছে। এই ভাব, মহাভাব পর্যায় প্রকাশ করিবে,
এই অভিপ্রায়ে ভাবের লক্ষণ বলিতেছেন। শুদ্ধসন্ত্ ইত্যাদি
লক্ষণে, শুদ্ধসন্ত্রের অর্থ এই সর্বপ্রকাশিকা শক্তির সন্থিৎ
নাম্মী রতি, সায়ায়তি বিশেষ নহে। ইহার বিস্তায় ভাগবতসক্ষর্ভের দ্বিতীয়দাদর্ভে ও বৈঞ্চবতোষণীর দ্বিতিয়াধ্যায়ে বর্ণিভ
আছে, সরপশক্তির কোন এক স্তিকে শুদ্ধসন্ত্র বিশেষ বলা
যায়॥

## পূर्व। ७ नहती। चित्रत्रगांग्रङ्गिन्।

তথাহি তজে ॥ ২ ॥ প্রেন্সস্ত প্রথমাবস্থা ভাব ইত্যভিধীয়তে। সাত্ত্বিকাঃ স্বল্পনাতাঃ স্থারতাঞ্গপুলকাদয়ঃ ॥ ৩ ॥ স্বাধা পদ্মপুরাণে।

ক্সপন্থ। তাদৃশী ভবভীতি ভেনৈব লক্ষিতঃ সাংশিতালমভিবিস্তরেণ। ১। তেছেবিরূপথ্যেব দর্শন্তি তথাহীঙি॥ ২।

সূত্রের ফলিতার্থ এই যে, যে ভক্তি সামান্যরূপে লক্ষিত হয়।
হিরাছে, তাহাই স্বীয় অংশবিশেষে ভাবনামে কথিত হয়।
যদি বল সেই ভাবের স্বরূপ কি ? তাহা শ্রীক্ষের স্বরূপ-শক্তিরূপ, শুদ্ধসত্ত্ব বিশেষাত্মা বলায় শ্রীক্ষের নিত্য প্রিয়-জন আধারে নিত্যদিদ্ধ স্বরূপ, ঐ ভাব রুচি অর্থাৎ স্বর্ক্তা-স্কুল্যাভিলাষ ও সোহার্দ্ধাভিলাষ দারা চিত্তের আর্দ্রতা সম্পাদ্দন করে, "প্রেমসূর্য্যাংশুদাম্যভাক্" বলাতে, তাৎকালিক উদয়াবস্থাপ্রাপ্র সূর্য্যকে বুঝিতে হইবেক, অর্থাৎ সূর্য্য উদিত্ত হইতেছেন এমন সমরে যেমন কিরণ অল্ল অল্ল প্রকাশ পায় তত্রেপ প্রেমের প্রথমাবস্থাকে ভাব বলা যায়, কারণ এই ভাব ক্রেম ক্রেম প্রেম দুশা লাভ করিবে॥ ১॥

এই বিষয় তন্তে বলিয়াছেন॥ ২॥ প্রেমের প্রথম অবস্থাকেই ভাব বলাধায়, ইহাতে অঞ্চ পুলকাদি সাত্ত্বি ভাব সকলের অক্সমাত্র উদয় হইয়াথাকে॥



ধ্যারং ধ্যারং ভগবতঃ পাদাসুজযূগং তদা।
ঈষদ্বিক্রিয়মাণাত্মা সার্শ্রদৃষ্টিরভূদসৌ ॥ ইতি ॥ ৪ ॥
শাবিভূমি মনোরভৌ ব্রজ্ঞী তৎস্বরূপতাং।

পূর্কব্যাথাানুসারেন ও সৈবে রতিপর্যায়সা ভাবসা প্রাণিঞ্চিকতংগ্রিয়জনের্
ক্লিছিলেয়ং দর্শন্তি আবির্ভ্রেতি ছাভ্যাং। অসৌগুদ্ধসহবিশেষরপা রতিমূলরূপদ্ধন মুথার্ত্তা ভদ্ধকালা সা রতিঃ প্রীক্লঞাদিসর্বপ্রকাশকতেন হেতুনা
ক্লেল্যাং ব্রজন্তী ভদ্বলা প্রকাশবন্ধানানা ব্রজনত্যাঃ ক্রন্তী। তথা
ক্লাংক্তেন পূর্কোর্বাবস্থাভাাং কারণকার্যারপেণ প্রীভগবদাদিমাধুর্যায় ভবেন
ক্ষাংশেনাম্বাদরপাপি যানি ক্লাদিরপাণি কর্মাণি কর্ত্ত্রীক্ষিতভ্যানি তেবামাম্বাদ্যা হেত্তাং সংবিদংশেন সাধকভ্যতাং প্রতিপদ্যতে প্রাপ্রেটি।
ক্লেদিনাাংশে নতু মন্ধং ক্লোদ্বন্ধী তিন্ধতীতার্বঃ। ব্রভ্রত ইতি ভদেতদেব বন্ধবিচারেণ নিবিধাতীতার্যঃ। ভূশব্যো বিশেষপ্রতিপন্তার্থঃ। আদিগ্রহ্ণাৎ ভৎপরিকর দীলাদ্যো গৃহত্তে ॥ ৪ ॥

## भग्नभूत्रांटन यथा ॥

ভৎকালীন রাজা অষ্ণীয় ভগবান্ শ্রীকুঞ্জের চরণযুগল পুনঃ পুনঃ ধ্যান করিয়া কিঞ্ছিৎবিকারাপর হওত অঞ্মোচন করিয়াছিলেন॥ ২॥

শুদ্ধ বিশেষ রূপা রক্তি মনোর্ব্রিভে আবিভূতি ইইয়া ভাহার সহিত একাত্মা প্রাপ্ত হওত স্বপ্রকাশরূপা হইরা সমাধিদশার ব্রহ্মসাক্ষাৎকারের ন্যার মনোর্ত্তিতে প্রকাশবৎ ভাসমান হয়েন, বস্ততঃ ঐ রতি আস্বাদস্বরূপা হইরাও ক্লফ্র-মাধ্র্যাদির অনুভবের প্রক্তি কারণ হয়েন॥ ৪ ॥ ষরপ্রকাশরপাপি ভাসদানা প্রকাশিবিং ।
বস্ততঃ ষয়মাষান্যরূপের রভিস্তদা ।
কৃষ্ণাদিকর্মকাষানহেতুক্বং প্রতিপদ্যতে ॥ ৪॥
সাধনাভিনিবেশেন কৃষ্ণতন্তক্রহোত্তপা ।
প্রসাদেনাভিধন্যানাং ভাবো বেধাভিজায়তে ॥
আদ্যন্ত প্রায়িকন্তত্ত দিতীয়ো বির্নোদয়ঃ ॥
তত্ত্ব সাধনাভিনিবেশজঃ ।
বৈধীরাগানুগামার্গভেদেন প্রিকীর্ত্তিঃ ।

অথাস্যা: প্রপঞ্গতভকেষ।ধির্ভাবনিদানমাহ সাধনেতি। অতিধন্যান্থ প্রাথমিকমহৎসঙ্গলাভমহাভাগগানাং। ভ্রাপ্রর্গে প্রমত্যে ফলা ভ্রেদিভাগেঃ, রহুগগৈতত্তপ্রা ন ধাতীভ্যাদেশ্য। বিচারবিশেষত্ত ভিক্সেক্তে দৃশঃ॥ ৬॥

উল্লিখিতা রতি প্রপঞ্গত ভক্তজনে আবির্ভাবের কারণ দেখাইতেছেন, মহৎসঙ্গবশতঃ যাঁহারা অভিশয় ভাগ্যবান্ তাঁহাদের সম্বন্ধে এই ছই প্রকায় হয়, এক সাধনে অভি-নিবেশ, দ্বিতীয় কৃষ্ণ এবং কৃষ্ণভক্তের অনুগ্রহ, ভন্মধ্যে সাধ-নাভিনিবেশক ভাব প্রায় সকলেরই হইয়া থাকে, আর দ্বিতীর (কৃষ্ণ এবং কৃষ্ণভক্তের অনুগ্রহজনিত) ভাব অভি বিরশ, অধাৎ প্রায়শই লাভ হয় না॥

তন্মধ্যে সাধনাভিনিবেশল যথা।। বৈধী ও রাগানুগা মার্গভেদে সাধনাভিনিবেশল ভাব সূই

প্ৰকাশ্যৰৎ অহত্রমানবদাখাদখন্ত গৈৰ জ্লাদিনী হৃতি ছাৎ খতঃ শ্বধন্ত গৈৰ ক্ষেত্ৰতি ভিতৰ্তি ভাগাখাঁৎ ক্ষাদাশু ভৰম্পতে ভূকেতাৰ: । লবুভোগাঁ ॥ ৪ ॥

ভিবিধঃ থলু ভাবোহত্ত সাধনাভিনিবেশজঃ ॥ সাধনাভিনিবেশস্ত তত্ত্ব নিষ্পাদয়ন্ রুচিং । হরাবাসক্তিমুৎপাদ্য রতিং সংজনয়ত্যসৌ ॥ ৫ ॥

তত্তাদ্যো যথা প্রথমক্ষমে।

ততাষহং কৃষ্ণকথাঃ প্রগায়তামন্ত্রাহেণাশূণবং মনোহরাঃ।
তাঃ শ্রন্ধান মেহনুপদং বিশৃণুতঃ
প্রিয়শ্রবস্থাস মমাভবদ্রতিঃ॥ ইতি ॥ ৬॥
রত্যা তু ভাব এবাত্র নতু প্রেমাভিধীয়তে।

অনুগ্রহেণ শ্রীকৃষ্ণকপেরং ভবতাশি শ্রোতব্যতি শাস্ত্রামুদারিতদাক্ষার্দ্ধণেশ মনোহরঃ রত্যংপাদিকাঃ শ্রদ্ধা পুনরামুদ্দিকীতি কারিকারাং ন দর্শিতা ॥৬ ॥

প্রকার হয়, তন্মধ্যে বৈধী সাধনাভিনিবেশজ ভাব সাধক ব্যক্তিতে রুচি উৎপাদন করিয়া এবং হরিতে আসক্তি জন্মাইয়া রুতিকে আবির্ভূত করে॥ ৫॥

তমাধ্যে আদ্য অর্থাৎ দাধনাভিনিবেশজ
ফথা প্রথমক্ষমে ৫ আ। ২৬ শ্লোকে॥

নারদ কহিলেন হে সত্যবতীনন্দন! দেই দাধুগণ প্রত্যহ
ক্ষেকথা গান করিভেন, ভাঁহাদিগের অনুপ্রহে দেই সকল
ননোহারিশী কথা আমি শুনিতে পাইতাম, প্রদ্ধাপ্রক
প্রত্যেক পদ প্রবণ করাতে প্রিয়প্রবা শ্রীকৃষ্ণে আমার রতি
উৎপন্ন হইল॥ ৬॥

এমলে রভিকে ভাব বলিয়া জানিতে হইবে, উহা কখাচ

মম ভক্তিঃ প্রবৃত্তেতি বক্ষ্যতে স যদ**াতঃ ॥** ি যথা ওতিরৰ ॥

ইত্থং শরৎপ্রার্ঘিকার্ছু হরে-বিশৃণুতো মেহকুপদং যশোহমলং। দক্ষীর্ত্তামানং মুনিভির্মহাত্মভি-ভক্তিঃ প্রবন্তাত্মরঞ্চন্তমোপহা॥

ङ्बीरम ह।

সতাং প্রদঙ্গাম্ম বীর্য্যদন্ধিদো-

্মম ভক্তি: প্রবৃত্তেতি ভক্তি: প্রবৃত্তায়রকৃত্তমোপহেত্যক্তা ভক্তিশব্দেন সংগ্রেমবাগ্রত ইতার্থ:। রতে: প্রথমাবস্থাৎ ভক্তেত্তহ্ৎকৃত্তবাৎ অতএব প্রেমস্থ্যা শুসামাভাগিতাত ভাবপ্রেমোন্তারতসামুক্তমিতি ভাব:॥ १॥

প্রেমবোধক হইবে না, কারণ পরবর্ত্তি শ্লোকে নারদ নিজেই বলিবেন "হরিকথা শুনিতে শুনিতে আমার ভক্তি প্রার্থ্ত হইয়াছিল"॥

ঐ প্রথমক্ষমে ৫ অ। শ্লোকে যথা॥

নারদ কহিলেন এই প্রকারে শরৎ এবং বর্ষা এই ছুই
ঋতু দায়ং, প্রাতঃ, মধ্যাহ্ন, এই ত্রিকালে মহাত্মা মুনিগণ
কর্ত্বক দংকীর্ত্তগোন হরির নির্মাল যশঃ, বিশিষ্ট রূপে প্রবণ
করাতে আমার মনে রক্তস্তমোনাশিনী স্থদ্ত্তমা ভক্তি উদিতা
হয়॥

তৃতীয়ক্ষজেতে ২৫ অ। ২২ ক্লোকে ও—
কপিলদেব কহিলেন হে মাতঃ ! সাধুদিপের সহিত গমাগদ

ভবন্তি হৃৎকর্ণরসায়না: কথা:।
তঙ্গোষণাদাখপবর্গবস্থানি
শ্রোরা রতিউক্তিরসুক্রমিষ্যতি ॥
পুরাণে নাট্যশান্তে চ ঘয়োস্ত রভিভাবদ্যো:।
সমানার্থতয়া হৃত্র ঘ্রাইমক্যেন লক্ষিতং ॥ ৭ ॥
ঘিতীয়ো যথা পালো।
ইত্থং মনোরথং বালা কুর্বতী নৃত্য উৎস্থকা।

মনোরপপ্রকিন্তামত রাগান্থা ভদানীং ভংশ্রীশৃত্তিপ্রভাবেশ ভস্যাং ভাদৃশতংশরিকরাণাং রাগক্তে:। তবৈবোকাং তরা তংপুর্কর। বহুবীখনামু শারীবু মন্যবাধিকপ্রীতিমান্। নৃত্যেতাসৌময়া সাদ্ধং কণ্ঠশ্রেষাদিভাবকাং, ইতি। প্রসন্দেহয়ং মৃত্যপার্মাতশেভত্তি। সবং ভবংশ্পরবঞ্চ তত্ত্রয়মহং কিল। ত্রিতত্ত্ব শ্লেশি সাপি রাধিক। মম বল্লতা। প্রকৃতে: পর এবাহং সাপি মছ্কিক্রিপণীতি

ছইলে উক্তরণ আমার বীর্যা প্রকাশিনী কথা উপস্থিত হয়, তাহা হৃদয় ও কর্ণের স্থাদায়ক, স্তরাং তাহার দেবন দ্বারা আশু আমাতে (ভগবান্ হরিতে) প্রান্ধা, রতি এবং ভক্তি ক্রমে ক্রমে উৎপন্ন হইরাখাকে॥

পুরাণ এবং নাট্যশাস্ত্রে রাজ ও ভাবের সমানার্থতা প্রযুক্ত এই ভক্তিশান্ত্রেও ঐ উভয় একরূপে কথিত হইল॥ ৭॥ বিতীয় (রাগামুগা সাধনাভিনিবেশক) ভাব—

ষ্থা পদ্মপুরাণে॥ **এই প্রকার ম**নোর্থ করত নৃত্যোৎস্কা বালা হরি

হরি প্রীত্যাত তাং সর্বাং রাত্রিসেবাত্যবাইনং ॥

অথ গ্রীকৃষ্ণতন্ত প্রসাদজঃ।

সাধনেন বিনা যস্ত সহদৈবাভিজায়তে।

স্থাবঃ কৃষ্ণকৃত্ত ক্রপ্রনাদজ ইতীর্যাতে॥

অত্র গ্রীকৃষ্ণপ্রসাদজঃ।

প্রদাদা বাচিকালোকদানহাদ্যিদধ্যে হরেঃ ॥ ৮॥

অত্র বাচিকপ্রসাদকো যথা নারদীয়ে।

ষ্হদেগী গদীরে শ্রীক ক্ষদ্য বচনাত্তথা ততৈবে। দেবী ক্রফমন্নী প্রাক্তা রাধিকা পর্বেব গা। সর্ববিদ্ধানী সর্বকান্তি:সন্মোহিনী পরেতি। বচনান্তরান্তি জন্মহাশক্তিরপত্মা প্রসিদ্ধান্না: শ্রীরাধান্ধা বিভৃতিরূপা বালাশক্ষেন মন্তব্যা। ক্রিছ স্বন্ধ: শ্রীরাধিকা তু তদ্যা: ফলাবস্থান্না: তাংস্থীং বিধান্ন তদ্যা: সাধ্যমিনিছিগতং
সর্ব্ধ: ক্রপনা এব মেনে ইত্যেবাভেদেন নির্দ্ধেশ কারণং জ্যেরং ॥ ৮ ॥

প্রীতি নিমিত্ত সমস্ত রজনী অতিবাহিত করিয়াছিলেন॥
অথ কৃষ্ণ ও কৃষ্ণভক্তপ্রসাদজ ভাব॥

সাধন ব্যতিরেকে সহসা যে ভাব উৎপন্ন হয়, ভাহাকেই কৃষ্ণ অথবা কৃষ্ণভক্তের প্রসাদজনিত ভাব বলিয়া উল্লেখ ক্রা যায় ॥

তমধ্যে কৃষ্পাদিজনিত ভাব যথা॥ বাচিকি, আলোকে দান ও হার্দি প্রভৃতি ভেদেে **প্রাকৃষ্ণের** প্রসাদ অর্থাৎ প্রসমতা তিনি প্রকা**র হয়॥** 

তন্মধ্যে বাচিক প্রদাদকভাব যথা——

সংবিশ্বনমূহ্মন্যা পূর্ণনিক্লসন্ত্রী সদা।
বিজেক্ত তব মধ্যস্ত ভক্তিরব্যভিচারিণী ॥
আলোকদানজো যথা কান্দে।
অদৃষ্টপূর্বামালোক্য কৃষ্ণং জাঙ্গলবাসিনং।
বিক্রিদ্যদন্তরাস্থানো দৃষ্টিং নাক্রন্ট মীশিরে॥
ভাদিং।

थागान चाखरता यः मा। म हार्फ है कि कथार ।। ।।

বাচা চরিতি বাচিকং স্বালোকসা দানং যত্ত স তদ্বারাবিভূতি ইতর্থ:। হৃদি ভবে হার্দা:। যত্ত্ব স্থান ভক্তিয়াদিনা পূর্বমূক্তং তদপাত জেয়ং। এবং কুলাবনাদিকস্বশি ভক্তেম্বর্ভবিয়ং॥ ১॥

## नांत्रमश्रुताद्य ॥

ভগবান নারদকে কহিলেন হে বিজেজ ে আমাতে তোমার পুর্ণানন্দময়ী, সর্ব্যঙ্গলশিরোমণি এবং অব্যভিচারিণী ভক্তি হউক ॥

> আলোকদানজ ভাব যথা॥ স্কন্দপুরাণে॥

জাঙ্গলদেশনিবাদী জনসকল অদৃউপূর্ব প্রীকৃষ্ণকে অব-লোকন করিয়া আর্দ্রচিত হইয়াছিল, কৃষ্ণাঙ্গ হইতে আর নয়ন ফিরাইতে সক্ষম হয় নাই॥

অথ হার্দ অর্থাৎ হাদয়জনিত ভাব যথা— অন্তর্গত যে প্রসাদ অর্থাৎ প্রসামতা তাহাকে হার্দ প্রসাদ বিদ্যা উল্লেখ করা যায়॥ ৯॥ যথা শুক্সংহিতায়াং।

মহাভাগবতো জাতঃ পুক্রস্তে বাদ্ধায়ণ ॥

বিনোপায়ৈরুপেয়াভূছিফুভক্তিরিহোদিতা॥

অথ তদ্তক্তপ্রসাদজো—

যথা সপ্তমক্ষদে।
গুণৈরলমসংখ্যেয় র্মাছাআং তদ্য সূচ্যতে।
বাস্তদেবে ভগবতি যদ্য নৈদ্বিকী রতিঃ॥

মহেতি ।উপায়েনৈব লভা শ্রীবিষ্ণৃত ক্তিবিনাপাথৈক দিওাভুং। অত্ত সাধনাস্তবনিষেধাং মহংপ্রগাদগাকপনাচ্চ ভগৰংপ্রসাদ এব লভাতে সচ হার্ছি এব। যতো গর্ভস্বলৈব তথা যন্ত্রীয়া অবণময়ী ভক্তিজাতা সাদর্শনভান ভবিভি নচ বাছিকজা ততো হান্দিলৈবেতাৰ্শীয়তে তবেতং ক্রম্বৈবর্তা ভ্রেষং ॥ ১০॥

### যথা শুকদংহিতায়---

হে বাদরায়ণ! তোমার মহাভাগবত পুত্র জন্ম এছণ্ করিয়াছেন, সাধন ব্যতিরেকে ইহাঁর হৃদ্যে বহু বহু সাধনলভা বিষ্ণুভক্তির উদয় দেখিতেছি॥

> কৃষ্ণভক্তপ্রসাদজ ভাব যথা— সপ্তম ক্ষন্ধে ৪ জ। ২৬ শ্লোকে।

নারদ যুধিষ্ঠিরকে কহিলেন হে রাজন ! ভগবান বাস্থদেবে বাঁহার স্বাভাবিকী রভি, সেই প্রহলাদের গুণের সন্থ্যা করে কাহার সাধ্য ?, আমি এই সকল বাক্য বিন্যাস হারা উঁহিছে মাহাজ্যের সূচনা মাত্র করিলাম ॥ নারদগ্য প্রদাদেন প্রফ্রাদে শুরুবাসনা।
নিসর্গ: দৈব তেনাত্র রতিনৈস্গিকী মতা॥
ভাহো ধন্যোহনি দেবর্ষে কুপরা যস্য তৎক্ষণাৎ।
নীচোহপুথেপুলকো লেভে লুককো রতিমচ্যুতে॥
ভক্তানাং ভেদতঃ সেয়ং রতিঃ পঞ্চবিধা মতা।
ভাগে বিবিচ্য বক্তব্যা তেন নাত্র প্রপঞ্জতে॥ ১০॥
ক্ষান্তিরব্যর্থকালত্বং বিরক্তিমানশূন্যতা।
আশোবদ্ধঃ সমুৎক্তা নামগানে সদা ক্রচিঃ॥

**छव मुनानि निज्ञानाह काश्विति** । ১১ ॥

নারদের প্রসাদজনিত প্রহলাদের যে শুভ বাসনা, তাহাই এম্বলে নিসর্গ, সেই নিসর্গ অর্থাৎ স্বভাবজনিত রতিকে নৈস্গিকী বা স্বাভাবিকী রতি বলাযায়॥

স্বন্দপুরাণেতেও বলিয়াছেন॥

হে দেবর্ষে! আপনি ধন্য, যেছেতু আপনার কুপায় অতি নীচ জাতি ব্যাধও সদ্যই অচ্যুত্তরণারবিন্দে রতি লাভ করিয়া-ছিল॥

ভক্তগণের ভেদবশতঃ এই রতি পাঁচ প্রকারে বিভক্ত হয়, এই পঞ্চ রতির বিষয় বিবেচনাপূর্বক পরে কথিত হইবে, একারণ এন্থলে তাহাদিগের বিশেষ বিবরণ বর্ণিত হইল না॥ ৯॥

বাঁহাদিগের ভাবের অঙ্কুর মাত্র জন্মিয়াছে, সেই সকল ব্যক্তিতে, কান্তি ১। অব্যর্থকালতা ২। বিরাগ ৩। মান-শ্ন্যতা ৪। আশাবদ্ধ ৫। সমুৎকুঠা ৬। নামগানে সর্বদা আদক্তিন্তদগুণাখ্যানে শ্রীতিত্তঘদতিত্বলে। ইত্যাদয়োহসুভাবাঃ স্থাজভাবাঙ্কুরে জনে ॥

তত্র ক্ষান্তিঃ।

কোভহেতাবপি প্রাপ্তে কান্তিরক্ষুভিডাল্পভা ॥ ১১ ॥

गथा श्रंथस्य ।

ভং মোপযাতং প্রতিযন্ত বিপ্রা

गना **ह (मर्वी श्रृ** इहिन्द्र शौरम।

দ্বিজ্ঞাপস্থীঃ কুহকস্তক্ষকো কা

ভং মেতি। প্রতিষম্ভ অঙ্গীকুর্বস্তা। ততো হেতোরীশে ধুতচিত্তং সন্তং মাং গঙ্গা দেবী নাঙ্গীকয়োতু ষম্মাদেবং শ্রীপেরীক্ষিতো মহাপ্রেমিত্বাৎ ক্ষান্তিরূপি

রুচি ৭। ভগবদগুণকথনে আসক্তি, ৮। এবং ভদীয় বস্তি-ছলে প্রীতি ৯। ইত্যাদি অমুভাব সকল প্রকাশ পার॥

তমাধ্যে কান্তি যথা n

কোভের কারণ উপস্থিত সত্ত্বেও যে ভাহাতে স্বক্ষুভিড-চিত্ততা ভাহার নাম ক্ষান্তি॥ ১১॥

প্রথমক্ষরে । ১৯ অ । ১৩ শ্লোকে মধা ॥

রাজা পরীক্ষিৎ কহিলেন হে বিপ্রগণ! আপনারা আমাতেশ শরণাগত বলিয়া জাতুন এবং আমি যে জ্ঞী ক্ষণ্ডচরণারবিক্ষে চিক্ত দলিবেশ করিয়াছি জানিয়া এই গঙ্গাদেবীরও ঐ রূপা প্রতীতি হউক, ঋষিক্ষারের প্রেরিত তক্ষক আদিয়া আমাতেশ দংশন করুক, ক্ষতি নাই, আপনারা বিষ্ণুক্থা গান করুন ॥ দশত্বশং গায়ত বিষ্ণুগাথাঃ॥
অব্যর্থকালত্বং যথা—
হরিভক্তিস্থগোদরে।
বাগভিঃ স্তবস্তো মনসা স্মরস্ত-

বাগ্ভিঃ স্তবস্তো মনসা স্মরস্ত-স্তম্বা নমস্তোহপ্যনিশং নতৃপ্তাঃ। ভক্তাঃ প্রবন্ধেত্রজনাঃ সমগ্র-মায়ুর্হরেরেব সমর্পগন্তি॥ ১২॥

মহতী দৃশাতে। তত্তাবরূপে প্রেমাকুরে ভাতে ওদকুরো জারত ইতি ভাব:। এবমন্য্রাপি॥ ১২॥

এই ম্বলে মৃত্যুর কথা শুনিয়া রাজা পরীক্ষিতের যে চিত্ত চঞ্চল হয় নাই ইহাকেই ক্ষান্তি বলে॥

> ত্মথ অব্যর্থকালত্ব যথা॥ হরিভক্তিস্কধোদায়॥

ভক্তজন নিরস্তর বাক্যধারা শুব, মনোমধ্যে শারণ ও শরীরধারা প্রণাম করিয়াও পরিভৃপ্ত হয়েন না, একারণ, জাশ্রুত্বল মোচন পুরঃসর সমস্ত পরমায়ু ভগবান্ হরিভেই সমর্পণ করিয়া থাকেন অর্থাৎ যাবজ্জীবন হরিসেবাভেই তৎপর হয়েন॥

এস্থলে খন্য বৈষয়িক ব্যাপারে প্রবৃত্ত না হইলে কেবল ভগবৎসেবায় নিযুক্ত হওনের নাম খাব্যর্থকালত। ১২॥

### অথ বিরক্তি:।

বিরক্তিরিজিয়ার্থানাং দ্যাদরোচকতা স্বরং ॥ ১৩ ॥

যথা পঞ্চম ॥

যে। হস্তাজান্ দায়ন্তান্ হৃহদ্রাজ্যং হাদিস্পৃশঃ। জহো যুবৈৰ মলৰহুত্ৰমংশ্লোকলালসঃ ॥

অথ মানশূন্যতা।

উৎকৃষ্টত্বেহপ্যমানিত্বং কথিতা মানশূন্যতা ॥ ১৪ ॥

বিরক্তিরিতি। অত্র কারণকার্য্যরোবিরক্তারোচকত্রোর্ভেলোকিরনো-ন্যাব্যভিচারিত্বাপেক্যা॥ ১৩॥

য: শ্রী চরত: ॥ ১৪॥

### অথ বিরক্তি।

সমুদায় ইন্দ্রিয়ার্থের অর্থাৎ শব্দ স্পর্শাদির প্রতিবে স্থাভা-বিকী অরোচকডা তাহায় নাম বিরক্তি॥ ১৩॥

যথা পঞ্চমক্ষন্ধে ১৪ আ। ৪০ শ্লোকে ॥

রাজর্বি ভরত জ্রীকৃষ্ণ চরণারবিন্দে লালসায়িত হইরা যোবনকালেই পুদ্র, কলত্র, মিত্র, রাজ্য, ইত্যাদি বিষয় মনোজ্যত্ব প্রযুক্ত দুস্তাজ হইলে বিষ্ঠার দ্যাম স্থান করিয়া পরিত্যাগ করিয়াছিলেন ॥

এখানে নিখিল ভোগ্য বস্তু উপস্থিত **থাকান্ন ভন্নতের বে** অরোচকতা ইহারই নাম বিরক্তি ॥

মানশুন্যতা ॥

আপনার উৎকর্ষপত্তেও যে অমানিত তাহার সাম মার্ক-পুন্যতা ॥ ১৪ ॥

#### যথা পাছে।

হরে রতিং বহরেষ নরেন্দ্রাণাং শিখামণিঃ। ভিক্রামটররিপুরে শ্বপাকমণি বন্দতে॥ অথ আশাবন্ধঃ।

আশাৰমো ভগৰত: প্ৰাপ্তিসম্ভাৰনা দৃঢ়া ॥ ১৫ ॥ যথা শ্ৰীমংপ্ৰভূপাদানাং।

ন প্রেমা প্রবণাদিভক্তিরপি বা যোগোহ্থবা বৈষ্ণবো-জ্ঞানং বা শুভকর্ম বা কিয়দহো গঙ্জাতিরপ্যান্ত বা ।

ত্রষ ভঙ্গীরথ: ॥ ১৫ ॥

বোগোহরাক:। তস্য বৈষ্ণবৃত্তং বিষ্ণুগানময়ত্বং স এবছি সুগ্রন্থ উচাতে। জ্ঞানং ব্রন্ধনিষ্ঠং শুভক্ম বর্ণাশ্রনাচারাদিরূপং স্ক্রভিস্তদ্যোগ্যতা হেতুঃ তক্ত

### যথা পদ্মপুরাণে॥

মহারাজ ভগীরথ নরেন্দ্রদিগের শিথামণি স্থরূপ ছিলেন, ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণে একান্ত রতি লাভ করতঃ ভিক্ষা নিমিত শত্রু-গৃহে গ্রমন,করিতেন এবং চণ্ডালপর্যান্ত নীচজাতির নিকটেও প্রণত হইতেন।

এ ছলে মহারাজ ভগীরথ স্বীয় উৎকৃষ্টত। দত্ত্বেও যে নীচ্ জাতিকে ৰন্দনা করিতেন ইহাই ইছার মানশ্ন্যতা॥

#### অথ আশাৰ্ম ॥

ভগণানের দৃঢ়তর প্রাপ্তি সম্ভাবনাকে আশাবন্ধ ৰলে। ১৫। তবিষয়ে শ্রীমংপ্রভূপাদের বাক্যই উদাহরণ যথা— আমার প্রেম নাই এবং প্রেমের কারণ যে ভাবনাদি হীনার্থাধিকসাধকে ত্বয়ি তথাপ্যচেহদ্যমূলা সতী হে গোপীজনবল্লভ ব্যথয়তে হা হা মদাশৈব মাং ॥ অথ সমুৎকণ্ঠা।
সমুৎকণ্ঠা নিজাভীষ্টলাভায় গুরুলুক্তা॥

বোগাদীনাং তৎপ্রপ্তিহেতৃত্বং ভক্তৃপবুক্তমা ক্বতত্বেন প্রইবাং। ভচ্চ বোগসাং
তৃ গীরে কাপিলেরামুসারেণ জ্ঞানস্য ব্রক্তৃতঃ প্রসারামা ইতি ব্রীগীতামুসারেণ
ভ লকর্মণন্চ, স বৈ প্ংসাং পরো ধর্মঃ, ইতামুসারেণ জ্ঞেরং। দদাশা মম অবমাত্রেছ্যা বাং প্রাপ্তঃ প্রবৃত্তসা যা সা, নতু ভবংপ্রেমা প্রবৃত্তসা বা আশা কাপি
ভূঞা সা। যতঃ অভ্নেদাং মুলং অম্বর্থকামত্বং বৃদাঃ সা। ভর্তি কিং করবাণি
ভ্রাহ হীনেতি। ভবভা সাপি প্রেমময়ী কর্তৃং শক্যত ইতি বিচার্য্য সৈব ক্রিক্ত
ইতি ভাবঃ। বাণমভ ইত্যক্র অস্যাতিত্ত্বমননাদনাদরকর্মকাচিত্ত্বং কর্তৃকা-

সাধন ভক্তি তাহাও নাই, ধ্যান ধারণাদি বৈক্ষবযোগেরও কোন অনুষ্ঠান নাই, এবং জ্ঞান বা শুভ কর্ম তাহারও কোন উদ্যোগ করি নাই, অধিক কি বলিব সমস্ত সাধনের মূল যে সজ্জাতি তাহাও আমাতে নাই, অভএব হে গোপীলনবল্লভ্রা! "তোমাকে প্রাপ্ত হইব" এই বলিয়া যে আমার আশা, সেঃ আমাকেই ব্যথা প্রদান করিতেছে॥

আমি ভগৰান্কে নিশ্চয় প্ৰাপ্ত হটৰ এই বলিয়া যে জাশা তাহার নাম আশাবন্ধ ॥

অথ সমুৎকণ্ঠা ॥

আপনার অভীক লাভের নিষিত্ত যে গুরুতর লোভ ভাহার নাম সমুৎক্ষা॥

## यथा कर्वाग्रट्छ।

আনআমদিত ক্রবারুণ চিতামক্ষীণ পক্ষাকুরে—

ভালোলামতুরাগিণোর্নরনয়েরের্দ্রিং মুদৌ জল্পিতে।

আতাআমধরামুতে মদকলামমানবংশীম্বনে—

ভাশান্তে মম লোচনং জ্ঞালিশোসুর্তিং জগন্মোহিনীং॥

অপ নামগানে সদা ক্রচির্যথা।

ব্যোদনবিন্দুমরন্দ্র্যান্দিদ্গিন্দীবরাদ্য গোবিন্দ।
তব মধুরস্বরক্সী গায়তি নামাবলীং বালা॥ ১৬॥

দিত্যনেন প্রাপ্তস্য পর স্থৈপদস্যাভাব:। তদিদং সর্কং দৈনেটনবোক্তমিতি রতাবেষোদাস্তং ॥ ১৬ ॥

মাধুর্যাদিপি মধুরমতিশরেন মধুর্মিতার্থঃ। মল্লথতা তস্য মল্লেখিংপাদ-

## যথা কণামূতে দ

যাহা ক্ষাৰণ জাযুগলে আনত, আফীণ পক্ষাকুরে রজিশীল, অমুরাগিজনরন্দের লোচন ঘয়ে চঞ্চল অরূপ, মৃত্র কথনে আর্দ্রীভূত, অধ্রামৃতে ঈষং ভাত্রবর্ণ এবং বংশীরবে মতহন্তী বিশেষ, সেই ব্রজশিশুর জগন্মোহিনী মূর্ত্তিকে দর্শন করিতে আমার নেত্রঘ্য সর্ববিদাই আশা করিতেছে॥

नाम गांदन मना ऋहि यथा॥

তে গোনিন । খদ্য বালিকা ব্যভাসুকা নেত্রন্তরে অঞ্চ-জল বিশর্জন করত জনীয় নামাবলী গান করিতেছেন॥ ১৬॥ তদ্গুণাখ্যানে আসক্তির্যথা কর্ণায়তে— মাধুর্যাদিশি মধুরং, মন্মথতা তদ্য কিমশি কৈশোরং। চাপল্যাদিশি চপলং, চেতো বত হরতি হস্ত কিং কুর্মঃ ॥

তদ্বসতিস্থলে প্রীতির্থা পদ্যাবল্যাং ॥

অত্যানীৎ কিল নন্দনন্ম শকটন্যাত্রাভবস্তঞ্জনং

বন্ধচ্ছেদকরোহপি দামভিরভূদদ্বোহত্ত দামোদরঃ।
ইত্থং মাথুরবৃদ্ধবক্তুবিগলৎপীযুষধারং পিবমানন্দাশ্রুধরঃ কদা মধুপুরীং ধন্যশ্চরিষ্যাম্যহং ॥ ১৮ ॥

কেশোতার্থ:। যরা। তদা কৈশোরমের মরাথতা মরাথদা ধর্ম ইত্যর্থ: ॥ ১৭ ॥ মধুপুরীং তহ্পলক্ষিত্মথুরামগুলমিতার্থ:। ব্রস্ত্র্মিতি বা পাঠ:॥ ১৮ ॥

তদগুণাখ্যানে আদক্তি যথা কর্ণায়তে॥
মাধ্র্য হইতেও মধ্র, চাপল্য হইতেও চপল **একিন্থের**মন্থেদর্মশালী কোন অনির্বচনীয় কিশোর ভাব আমার চিত্ত হরণ করিতেছে, হায়! আমি কি করিব।॥ ১৭॥

তদ্বসতিস্থলে প্ৰীতি যথা পদ্যাবলীতে ॥

এই স্থলে গোপরাজ নন্দের গৃহ ছিল, এই স্থানে জ্রীক্তমণ্ড ভঞ্জন করিয়াছিলেন, ভববদ্ধনচ্ছেতা দামোদর এই থানে রজ্জ্ দারা বন্ধ হইয়াছিলেন, এই রূপে রন্ধ মধুরাবাসির বদন বিগলিত বাক্যায়তধারা পান করিতে করিতে সঞ্জল নয়নে করে অজ্পানে বিচরণ করিয়া আমি ধন্য হইব ? ॥ ১৮॥ "

## षिठ ॥

ৰাক্তং মহণতেৰান্তল কাতে রতিলকণং ॥
মুমুক্পভানীনাঞ্চেবেদেশা রতিনহি ॥ ১৯ ॥
বিমুক্তাখিলত বৈধা মুক্তৈরপি বিমুগ্যতে।
বা ক্ষেনাতিগোপ্যাশু ভঙ্গুড্গাহ্পি ন দীয়তে ॥
সা ভুক্তিমুক্তিকামহাচ্ছুদ্ধাং ভক্তিমক্বিতাং।
হাদয়ে সংভ্ৰত্যেয়াং কথং ভাগৰতী রতিঃ॥

ভাষেং তদেক স্থিত্য বিতেশ কণাং মুধামিতাকং। যদি অনাস্থা সাকিবা ভাষণাভাষণা সাধিকাদে: সভাবেংপি বতিন্ম কৰোতাছে অপিচেতি। ৮০ শক্ষাক্ত ভূশকাৰ্থে। বাক্তমিতি যা অন্তৰ্মস্থতা আৰ্দ্ৰ হা সা। অন্যত্ত বাক্তং বিং স্কিলকণং ভদিব মুমুক্ প্ৰভৃতীনাং গ্ৰুমদি লক্ষাতে ভথাপি তেষু বতিন্সাং। ন সভবোতাৰ্থা। ততা হেতু: মুমুক্ প্ৰভৃতীনামিতোব ন হানাত্ত স্থাত অন্যত্ত স্কিবিতি সুক্ষাতে ইতি ভাবং॥ ১৯॥

হেতৃমেৰ বিশিবা ধর্ণপ্রতি। বিমুক্তেত্যাদিনা। ভ্তিমুক্তিকামখাৎ কণং

### আরও বলিয়াছেন॥

অন্ত:করণের স্লিগ্ধতাই রতিলক্ষণ, এই রতি যদি মুমুক্ষু-প্রভৃতিতে লক্ষিত হয়, তাহা হইলে উহা রতিপদবাচ্য হইবে না । ১৯।

মুক্ত পুরুষগণ নিখিল কাম বিসর্জন করিয়া যে রক্তিকে আবেষণ করেন, যাহা প্রীকৃষ্ণকর্তৃক অতিশয় গোপ্য এবং যে রভি ভক্তগণকেও সহসা দেওয়া যায় না ভুক্তি মুক্তি কাম হৈছে, বিশুদ্ধ ভক্তির অনধিকারি কর্মিও জ্ঞানিদিগের হৃদয়ে সেই ভাগবভী রভির কি রূপে সম্ভাবনা হইতে পারে ?॥

কিন্তু বালচমংকারকারী তচিচ্ছবীক্ষয়া।
অভিজ্ঞেন স্থানোধোহয়ং রত্যাভাসঃ প্রকীর্তিতঃ ॥
প্রতিবিশ্বস্তথা চছায়া রত্যাভাসো দ্বিধা মতঃ ॥ ২০ ॥
তত্র প্রতিবিশ্ব ॥
অপ্রশাভীফীনির্বাহী রতিলক্ষণলক্ষিতঃ ।

সা রক্তি: সম্ভবেত্তমাদের হেতোঃ সাধনগ্রমণি দে। যমাহ শুদ্ধাং ভক্তিমকুর্বতার্ মিতি শুদ্ধাং জ্ঞানকর্মাদামিশ্রাং ॥ ২০ ॥

তত্মানিক পাধিষমেব রতেমু থাপক পথং সোপাধিষমাভাসদং তচ্চ গোণা বৃত্তা প্রবর্তমান মনিতি প্রাপ্তে তদাভাসদা প্রতিবিধ্যাদি হৈবিধ্যমুদ্দিশা প্রতি-বিষং শক্ষমতি অপ্রমেতি। রাতলক্ষণলক্ষ্তি ইতি বাস্পাদ্যেক ষম্মাত্রদর্শনাং ভক্ষপত্মেন প্রতীয়মানোহলি রত্যাভাসং ভোগাপবর্গদৌথাংশব্য অকল্ডের্ডি প্রতিবিশ্বক ইত্যধয়:। ভোগাপবর্গদাত্যলক্ষণভগবলগুণনয়াবলম্বনাড্রোসাপবর্গ-লিক্ষোপাধিত্বং তৎপ্রতিবিধ্যমিত্যর্থা। তথাপাশ্রমাতীইনিকাহীতি মাহাত্মা-

ঐ রতি চিহ্ন দর্শন করিয়া অনভিজ্ঞ জনের চমংকার বোধ হয় সত্য, কিন্তু অভিজ্ঞ জন উহাকে রতির আভাদ বলিয়া কীর্ত্তন করিয়াছেন, অত্তর কর্মিও জ্ঞানিদিগেরও ঐ রূপ ভাব দেখিলে ভাহ্যকে রত্যাভাদ বলিয়া জানিবে।

রত্যাভাস তুই প্রকার, ছায়া এবং প্রতিবিদ্ধ ॥ ২০ ॥ তন্মধ্যে প্রতিবিদ্ধ রত্যাভাস যথা॥

যাহা শ্রেম ব্যতিরেকে অভীষ্ট দাধন করে, যাহা চুই একটা রাষ্পাদিরূপ রতিচিহ্নে লক্ষিত এবং যাহা ভোগ ও মোক্ষপ্থ প্রকাশ করে, এরূপ রত্যাভাদকে প্রতিবিশ্ব ত্ত্বাগাপবর্গদৌগ্যাংশবাপ্তকঃ প্রতিবিশ্বকঃ ॥ ২১ ॥
দৈবাং সন্ত ক্রণঙ্গেন কীর্ত্তনাদ্যসুদারিণাং ।
প্রায়ঃ প্রদর্গননাং ভোগমোক্ষদিরাগিণাং ।
ক্রোঞ্চিক্দি ভাবেন্দোঃ প্রতিবিশ্ব উদঞ্চতি

ভব প্রক্রিমাই ভোগমোক্ষাদিরাগিখাং দৈবাং ক্লাচিদেব নতু মৃতঃসম্ভল্পকেন কীর্ত্তনাদালালালাকি । এবদ্যান্তরালিক্ষা দেবাদিলির দিবালালাকৈ তদমুর্ত্তু থাং। ততঃ
প্রারং প্রমন্তরালালাক দিবালালাকৈ তত্তক্তরালালালাক ক্লাকি । সরলচিত্তানাং
কেরাঞ্চিং ক্লি ভালুক্টিরে ভত্তক্ররালালাল ভত্তকর্পের নতঃ ব্রস্তাহরক্ষ্ণইম্বাৎ
প্রেমেক্লুর্বেগারাক । ভংগভাবেকোঃ প্রতিবিশ্ব উদক্তি নতু স্বর্দাণ
ভত্তলিক্ষা লক্ষণোপাধিং বিনা ৬২ প্রতিবিশ্বসাগার্মনাং। প্রতিবিশ্বকার ন
স্কলপ্রদাণ ভত্তদেকৈক ভ্রণাক্ষনিকার। তত্তলিক্ষামান্তরালালাক প্রস্তৃত্তি ভর্লাকিক ভ্রাক্ষরিকার। বিভিন্নভ্রণগ্রাক্ষনভাত্তক প্রথম ক্লাক্রিকার ভ্রাক্ষরিকার ভ্রাক্ত ত্রাক্রিকার ভ্রাক্রিকার ভ্রাক্তির । তিনিক্রিকারণালাক ক্লাক্রিকার ভ্রাক্তির ভ্রাক্তির । তার্লিকার ভ্রাক্রিকার । বিভিন্নভাবনার ভ্রাক্তির ভ্রাক্তির । তার্লিকার ভ্রাক্রিকার । বিভিন্নভাবনার ভ্রাক্তির । ভ্রেকার বিভানিকার ভ্রাক্তির । ভ্রেকার সংক্রিকার ভ্রাক্তর । বিভানিকার দ্বানিকার ভ্রাক্তির । ভ্রেকার ভ্রাক্তির । ভ্রেকার ভ্রাক্রিকার দক্ষতের সংক্রির লগতের ভ্রাক্তর । বিভানিকার দক্ষরের । বিভানিকার দক্ষরের । বিভানিকার দক্ষরের দক্ষরের দক্ষরের প্রার্ক্তন্ত্রিকার ভ্রাক্তন্ত্রিকার । ভ্রাক্রিকার ভ্রাক্তির । ভ্রেকার দক্ষরের সংক্রির ভ্রাক্রিকার । ভ্রাক্রিকার । ভ্রেকার দক্ষরের সংক্রির ভ্রাক্রিকার । ভ্রেকার । বিভানিকার দক্ষরের সংক্রির ভালিকার । ভ্রাক্রিকার ভ্রাক্তির । ভ্রেকার ভ্রাক্রিকার । ভ্রাক্রিকার । ভ্রাক্রিকার । ভ্রেকার ভ্রাক্রিকার । ভ্রাক্রিক

## বলিতে পায়॥ ২১ ॥

ভোগ মোক্ষাদিতে অমুরক্ত ব্যক্তিগণ প্রায় প্রদম্ম চিত্ত
অর্গাৎ ভুক্তি মুক্তি স্পৃহাতে উংস্কচিত হইয়া যদি কদাচিৎ
অভানী লাভের নিমিত্ত শুদ্ধভক্তিতে অধিকারি ভক্তগণের
সঙ্গেতে কার্ত্রনাদির অমুক্রণ করেন, তাহা হইলে সম্ভক্তের
সঙ্গ প্রভাবে ঐ ভাগাবান্দিগের হৃদয়ে, পূর্ব্বাক্ত সম্ভক্তগণের
ক্রদ্যাকাশম্ভাবর্রপিচক্ষের প্রতিবিশ্ব উদয় লাভ করিয়া

ত্ব ক্রছনভঃস্থা, তংশংশগপ্রভাবতঃ ॥ ২২ ॥ স্থা ভাষা ॥

ক্ষুদ্রকোতৃহলময়ী চঞ্চলা জুঃথহারিনী।
রতেশ্চায়া ভবেং কিঞ্চিং তৎদাদৃশ্যাবলন্থিনী।
হরিপ্রিয়ক্তিয়াকালদেশপাত্রাদিদসমাং।
অপ্যাসুষঙ্গিকাদেয়া কচিদজেম্বণীক্ষ্যতে ॥

অথ ছায়েতি ! ছায়াশলেনায় কাভিয়চাতে । ছায়া ম্র্যাপ্রিয়া কাছিঃ
প্রাক্তিবিশ্বনাতপ ইত্যুবর্সা নানাধ্বর্গাং, যা চাল প্রতিচ্ছবিরেবাচাতে ।
তদাশ্চ কাঞ্জিদাভাসশল্পা তত্রচ প্রসিদ্ধাং তদেহদভিপ্রেতা ছায়াং লক্ষ্
দ্বি ক্ষ্ডেতি । ক্ষ্তকৌতৃহলজং । পার্মাথিকেহণি কৌতৃহলে তল্মিন্ নৌকিক্ষন্
মননাং । তথাপি প্রমাথিককৌতৃহলমগরতেতার যংকিঞ্জিবিরাভাসভএবেতি
ছায়াজ্মরেতি ভাব: । রঙেক্ষ্রাচ্ কিঞ্চিল্বপা সাত্রিপা তস্যা রতেঃ সাল্লাবিলক্ষিনী ভবেদিভিতু যোজনা, অভক্ষাম্ভাচকলাপি নতু প্রতিবিশ্বং দ্বিয়া
ভোগাদিরাগবং লৌকেককৌতৃক্সা ন্তির্বাভাবাং তথাপি বল্পপ্রভাবাদ্ধ্য
ছারিণী সাম্রতাপ্যা ক্রমান্ডমনীতি । নচার বিশেষলকণে ভোগাদিসক্ষাভাবাদাভাসগ্রস্য সামানালকণ্যাব্যাপ্রি: স্যাং কৌতৃহলাক্ষ্বস্য চ ভোগবিশেষ্কাং ন চার ভোগ্সম্কেন্ প্রতিবিশ্বতি ব্যাপ্তি: স্যাং, ক্ষ্ডেভ্যুনেনৈশ্ব

शंक ॥ २२ ॥

অথ ছায়া রক্যাভাগ ॥

ক্ষুদ্র কৌতুহল ময়ী, চঞ্চলা, দুঃথহ।রিণী, এবং কথঞিৎ রতির সদৃশা যে রতি, তাহার নাম চছায়া॥

ভগবন্ত क्रगत्नत व्यवन कीर्जनानि किया, जन्मसाका अप्रक्रि

কিন্তু ভাগ্যং বিনা নাসে ভাবচ্ছায়াপুনকতি ॥

যদভুদয়তঃ কেমং তত্র দ্যাত্তরেরতিরং ॥

হরিপ্রিয়জনসৈরে প্রদাদভরলাভতঃ ।

ভাবাভাদোহপি দহদা ভাবত্বমুপগচ্ছতি ॥

তিম্মিরেরাপরাধেন ভাবাভাদোহপ্রসূত্রমঃ ।

ক্রমেণ ক্রমাপ্রোতি থস্পূর্ণশনী যথা ॥ ২০ ॥

কিঞ্চ ॥

ভাবোহপাভাবমায়াতি কৃষ্পপ্রেষ্ঠাপরাধতঃ।

হরিপ্রিয়ক্রিয়াশীনাং স্থ্যাদ্ যুগ্পন্মিলনাদি তার্থঃ ॥ ২৩ ॥ অভাবং দ্বিধ্যৈয়বাপ্রাধ্যাধিকোন । এবং আভাস্তাং মধ্যমত্বেম

ভাগবং কাল, রুকাবিন মথুরা প্রভৃতি ভগবদ্ধাম এবং ভগবদ্ধক ইহাদিশের আনুষ্কিক যুগপং মিলন হেতু কখন কখন অজ্ঞ শ্যক্তিতেও রতির ছায়া লক্ষিত হইয়া থাকে॥

কিন্ত যে ভাবচ্ছায়ার উদয়েতে অজ্ঞান্ত ক্রাও ক্রমে ক্রমে মদল প্রাপ্ত হয়, সেই ভাবচ্ছায়ারূপ সোভাগ্য ব্যতীত ক্থনই উদিত হয় না॥

হরিপ্রিয়জনের অনুগ্রহ নিবন্ধন ভাবাভাগও সহসা ভাবত্ব প্রাপ্ত হয়। কিন্তু যদি সেই ভববন্তক্ত জনের নিকট অপরাধ হয়, তাহা হইলে উৎকৃষ্ট ভাবাভাগ (প্রতিবিদ্ধ) ও আকা-শক্ষ পূর্ণ চক্তের ন্যায় ক্রমে ক্রমে ক্রাণ হয়॥২০॥

আয়ও বলিয়াছেন॥

🕮 কুঞ্চের প্রিয়তম ব্যক্তিদিগের নিকট গুরুতর অপরাধ

আভাস হাঞ্চ শনকৈ নুনিজাতী য়তামপি ॥ ২৪ ॥
গাঢ়াগঙ্গাৎ সদায়াতি মুমুক্ষো স্থাতিন্তিতে।
আভাসতামসো কিন্তা ভজনীয়েশভাবতাং ॥ ২৫ ॥
অতএব কচিত্তেমু নবাভক্তেমু দৃশাতে।
ক্ষণমীশ্বভাবেহ্যং নৃত্যাদৌ মুক্তিপক্ষগঃ ॥ ২৬ ॥

ন্নজাতীয়তামল্লেন তত্ত ন্নজাতীয়তং বক্ষামাণানাং শাস্তাদিপকৰিধানাং অতোদিটেবিধানকে তারতমেনে জেয়ং ৫২৪ ৪

ভজনীয়োয ঈশস্ত্র ভাবোছভিমানো যদা ভারাং যাতি **অহংগ্রহোণাদ**-নামাবিশভীভার্থ: ॥ ২৫ ॥

ক্ষণমিত্যুপলক্ষণং ক্রচিচ্চিরমভিবাপা মৃক্তিওস্ত্র সল্লেপাসাষ্টি সামীপালক্ষণা

জিনালি ভোব অভাবত্ত প্রাপ্ত হয় অর্থাৎ একেবারেই বিনষ্ট হয়, মধ্যম অপরাধে ঐ ভাব আভাস এবং অল্লাপরাধে হীন জাতীয়তা প্রাপ্ত হয়॥

উক্ত-উদাহরণে শাস্ত্যাদি পঞ্চিধ অথবা অফপ্রকার রতি ইহাদের তারতম্যাসুদারে হান জাতীয় হয়॥ ২৪॥

স্প্রতিষ্ঠিত মুমুক্ষুতে গাঢ়তর আগক্তি হইলে ভাব ক্রমে আভাদ হয় অথবা অহংগ্রহরূপ-উপাদনায় প্রবেশ করে।

উক্ত পদ্যে অহংগ্রহোপ।দন অর্থ এই যে, আপনাতে যে ভঙ্গনীয়াদেবের অভিমান, তাহার নাম অহংগ্রহোপাদনা ॥২৫॥

এই জন্য কোন কোন নব্যভক্তে নর্ত্তনাদিতে ক্ষণিক অথবা দীর্ঘকালস্থায়ি— মুক্তিপক্ষ্ণামী এই ঈশ্বরভাব দেখিতে পাওসা যায়॥ ২৬॥ সাধনেকাং বিনা যশ্মিষকস্মান্তাব ঈক্ষতে।
বিদ্নস্থগিতসত্তোহ্যং প্রাগ্ভণীয়ং স্থলাধনং ॥ ২৭ ॥
লোকোত্তরচমৎকারকারকঃ সর্পাশক্তিদঃ ॥
যঃ প্রথীয়ান্ ভবেদ্ভাবঃ সতু ক্ষমপ্রসাদজঃ ॥ ২৮ ॥
জনে চেজ্জাভভাবেহপি বৈগুণামিব দৃশ্যতে।
কার্যা ভথাপি নাসুধা কুতার্থঃ সর্বথৈব সঃ ॥ ২৯ ॥

#### Cक्रवा n २७ f

সাধনেক্ষামিতি। সাধনানি পুর্বেষ্ঠ সাধনা ভিনিবেশক্ষ প্রসাদভক্ত প্রসাদক্ষণানি করণানি ভেষামীকাং শাস্ত্রাদিদ্বারা জ্ঞানং বিনা যদ্মিন্ ভাবো রভ্যাদিরীক্ষাতে নিচ্চীয়তে ভূমিন বুরাদিষিক প্রাগ্ভবীয়ং সাধনমূহং ॥ ২৭ ॥

মহু পূর্বং সাধনাভিনিবেশাদি সংয়ণাধুনাচ পুতনাদিদ্ধী ভ্রমভিব্রেভ্যাহ লোকেভি । ২৮ ॥

কৈওণাং ব'হতু রাচারতা ভদিবেতি তেন লিপ্রভাবাং। তথা চোক্তং।

সাধনজ্ঞান ব্যতিরেকে ভাকস্মাৎ যে কোন ব্যক্তিতে ভাবোদয় দেখা যায়, তাহার কারণ এই যে, ঐ ব্যক্তির জন্মা-ভারীয় স্থানররূপ সাধন ছিল, বিশ্ব বশতঃ স্থাতি থাকিয়া পরে উদিত হইল, ইহাই বিবেচনা করিতে হইবে॥ ২৭॥

গে রদ্ধিশীল ভাব লোকাতীত চমংকারকারী এবং সংবিশক্তিপ্রদ, তাহাকে কৃষ্ণপ্রসাদ বলিয়া জানিবে॥ ২৮॥

জাকভাব নাজিতে যদি বাহ্য ত্রাচারতার নাায় কোন প্রকার বৈশুণ্য দেখা যায় তথাপি তাহাতে অস্থা করিবে না, কারণ বিষয়ে অনাস্কি প্রযুক্ত উক্তঃ সপ্লাগভাব ব্যক্তি স্পাডোভাবে কুতার্থ॥ ২৯॥ যথা নারসিংহে॥

ভগণতি চ হ্রাবনন্যচোতভূশমলিনোহ'প নিরাজতে মনুষ্যঃ॥
নহি শশকলুষচ্ছনিঃ কদাচিভিনিরপরাভনতামুপৈতি চক্তঃ॥ ইতি॥ ৩০॥
রতিরনিশনিসর্গোঞ্জপানভ্রানন্দপুররূপৈর 1
উত্মাণমপি বসন্তি স্বধাংশুকোটেরপি স্বাদী॥ ৩১॥

অপ্ৰিত্ৰং প্ৰিকো বেত। দি কতাৰ্থহং চান জাতভাৰতাদেব ॥ ২৯॥

ভূশমলিনোঙণি স্ক্রাচারজেন বহিদুশি।মানোঙ্পি বিরাজতে। জ্ন্যাপরাভূ-ভত্রা অর্গ্রভল্লা শোভর এব। ব্রাণারেরনাগো নহীতি। লোকজ্যার-ময়ং লক্ষ্ম ভবালে শশস্তিভিম্নিত শ্রীহ্রিবংশোজেঃ। শশকল্যজ্বিয়েন বহিদুশিনোংপী ভার্যঃ। ৩০॥

উত্তরে ত্রাভিলাধরকৈ: অশাস্তরভাবং উক্তরং উল্লাসাত্মক ভাষানক্ষত্ম অনিশ্যের যো নিস্গাং অভাবত্তেন উঞ্চাচ সা প্রেরলতরানক্ষ্ণা চেডি বিগ্রহঃ। উফালং ত্রিধনানাস্পারিভাবানাং লক্ষণং॥ ৩১॥

## गथ। नृमिः इश्रुतारम ॥

যে সমুদা ভগবান্ হরিতে একান্তভাবে চিন্ত দ্রিবেশ করিয়াছেন, তাঁহার যদি বাহে অত্যন্ত তুরাচারতাও দেখা বার, তথাপি তিনি অন্তর্গত ভক্তিপ্রভাবে বিরাজ্ঞান হয়েন, যেমন পূর্ণচন্দ্র বাহ্দেশে মুগচিহ্নে কলক্ষিত হইলেও, কখন ভিমিরের নিকট পরাভূত হয়েন না ৩০॥

নিরস্তর উষণ্যভাবা হইয়াও প্রবশতর আনন্দর্মপির্ণুর্ণ রতি উষণ্ডা প্রকাশ করিলেও কোটি কোটি স্থাংশু হইতেও অন্দর স্নায়াদশালিনী বলিয়া স্থানিতে হইবে দু ॥ # ॥ ইতি ঐভিক্রিনায় ভানিমো পূর্ববিভাগে ভাব-ভক্তিলহরী তৃতীয়া॥ #॥

॥ • ॥ ইতি শ্রীভক্তিরসামৃ গদিদ্ধৌ পূর্ববিভাগে ভাব ছক্তিণহরী তৃ ভীয়া ॥ • ॥

উক্ত পদ্যের তাৎপর্যা, উত্তরোত্তর অভিলাষ বৃদ্ধি পাণ্যাতে রভির অশান্ত গ প্রযুক্ত উক্তত্ব, উল্লাস প্রদ বলিয়া রিভির আনন্দত্ব, উত্থা উদ্গীরণ করে অর্থাৎ নানাবিধ সংকারি ভাবে প্রকাশ করে॥ ৩১॥

॥ 🛊 ॥ ইতি পূর্ববিভাগে ভাবভক্তিলহরী ॥ 🛊 ॥

## অথ প্রেমভক্তিঃ॥

সমাজ্যস্থিতস্থান্তো মমস্বাভিশ্যান্ধিতঃ। ভাবঃ স এব সাজ্রাজ্যা বুধৈঃ প্রেমা নিগদ্যতে॥ ১ ॥ ষধা পঞ্চরাত্রে॥

অসন্যমতা বিকে। মমতা প্রেমদক্ষতা। ভক্তিরিত্যুচাতে ভীম্মপ্রহ্লাদোদ্ধবনারদৈঃ॥ ইতি॥

অথ ভাবমপ্তেলা প্রেমাণমাহ সমাগিতি। অত্র সাক্ষাত্মতং তারপালকণং অনাদ্যং তটস্লকণং ॥ ১ ॥

অত্র স্বমভমুদারদ।হরণমেবন্ধুত ইত্যাদি বক্ষামাণপ্রকারমেব জ্রেরং। মতা-স্করমণি যোজনারেণ সঙ্গমন্ত্রমাহ যথেতি। ভক্তিরত্র ভাবঃ ॥ ২ ॥

#### অথ প্রেমভক্তি॥

যাহা হইতে চিত্ত সর্পতোভাবে নির্দাল হয় এবং যাহা জাতিশয় সমতাসম্পন্ন এরূপ যে ভাব তাহা গাঢ়তা প্রাপ্ত হইলেই পণ্ডিতেরা তাহাকে প্রেম বলিয়া কীর্ত্তন করেন।

তাৎপর্য। সাধন ভক্তি যাজন করিতে করিতে গতি হয়, সেই রতি গাঢ় হইলে তাহাকে প্রেম বলে। চৈতন্যচরিতা-মৃত গ্রন্থে শিখিয়াছেন যথা, সাধনভক্তি হইতে রতির উদয় হয়। রতি গাঢ় ছইলে ভারে প্রেম নাম কয়॥ ১॥

#### यथा शकतात्व ॥

অন্যের প্রতি মমতা পরিহার পূর্নক ভর্মবানে যে স্মতা ভাহার নাম প্রেম, এই প্রেমকেই ভীল্ল, গ্রহ্লাদ, উদ্ধব এবং নারদেরা ভক্তি বলিয়া কীর্তন করিয়াছেন ॥ ভক্তি: প্রেমোচাতে ভীমসুবৈর্ঘত তু সঙ্গতা। সমুদ্রান্যসমম্বেন বর্জিভেডাত্ত যোজনা॥ ভাবোথো২ভিপ্রসাদোশঃ শ্রীহরেরিভি স বিধা।

তত্র ভাবোশ:।

ভাব এবান্তরসাণামসানামকুদেবর।।

শার্ক্ত: পরমোৎকর্ষ: ভাষোত্ম: পরিকীর্তিভঃ ॥ ২ ॥

ভত্ত বৈধভাবোখো যথা একাদশে ॥ ৩ ॥ একষ্তঃ স্বপ্রিয়নামকীর্ক্তা

লাভাসুরাগো ক্রন্তচিত্ত উচ্চে:।

বৈধ্যা নিবুজো বৈধঃ স চাসৌ ভাষকেভি ভছ্বঃ ॥ ৩ ॥ অকৈবৰু ইভি বৈধীসৰদান্তনিবু ভড়ং। প্ৰিনেতি ভাবোধড়ং। বেভি

আন্য সমন্ব বর্জিত যে সমতা তাহাকে ভীম প্রভৃতি ভাগৰভগণ প্রেমভক্তি বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন, সৈই প্রেম ভাৰোম ও ভগৰানের অতিপ্রসাদোম্ব ভেদে সুই প্রকার হয়।

তন্মধ্যে ভাবোত্থ প্রেম যথা॥

শন্তরঙ্গ ভক্তাল সকলের নিরস্তর সেবনদারা ভাব পরহোৎ-কর্ব প্রাপ্ত হইলেই ভাবোশ প্রেম বলির। কথিত হর ॥ ২ ॥

বৈধতক্তিসপ্লাত ভাৰজন্য প্ৰেম যথা

जकानमञ्जद २ च । ७৮ (ह्रांटिक ॥ ० ॥

পূর্ব্বোক্ত ভক্তাঙ্গ যাজনে অবশচিত ব্যক্তি লোকা চার-বহিত্ব হইনা স্থার প্রিয়ের নামকীর্তনে জাতাসুরাগ ও প্রথ-হানর হওত উন্মতের ন্যার উচ্চিঃস্বরে কথন হান্য, কথন হসত্যথো রোদিতি রোভি গারভূমোদবর্ত্যতি লোকবাছঃ ॥ ৪ ॥
রাগামুগীয়ভাবোখো যথা পারো।
ন পতিং কামরেৎ কঞ্জিলুক্মচর্যাহিতা সদা ॥
শ্রীকৃষ্ণগাথাং গায়তী রোমাঞ্চোম্ভেদলক্ষণা।
শক্ষিম্বস্তরে নিয়াং শ্রীকৃষ্ণপ্রিরণার্ডয়া ॥ ৫ ॥
অথ হরেরতিপ্রসাদোখঃ।
হরেরতিপ্রসাদোহয়ং সঙ্গদানাদিরাজনঃ ॥ ৬ ॥

মমভাবুককং। জাতামুরাগ ইভি তদভিশয়িত্বক জেবং ॥ ৪ ॥

ভাষের মৃতিং ধ্যারন্তীতি তস্যাং মৃত্তে পূর্বভাবো জাত আসীনিতি স্থাচিতং কঞ্চিদনাং পতিং ন কামবেং ন কামরতেতি গাচ্মমত্রা প্রেম দর্শিতং সিগ্ধা বভূবেতি শেষঃ ॥ ৫ গ

जनमान्यामि र्मा नः ॥ ७ ॥

রোদন, কথন আলাপ, কখন গান, কথনও বা বা**হুলোকের** ন্যার নৃত্য করিতে বাকেন ॥ ৪ ॥

রাগাসুগীর ভাবোখ যথা পল্মপুরাণে 🛭

সেই মন্বন্ধরে জ্রীকৃষ্ণের প্রির্বার্তার বিশ্ব হইরা প্রশাচর্য্যব্রত পরারণা অযুথী চন্দ্রকান্তি পুলকাঞ্চিত কলেবরে জ্রীকৃষ্ণগাখা গান করিতে করিতে সেই জ্রীকৃষ্ণমূর্ত্তিকে ধ্যান ক্ষম্ভ 
ক্ষম কাহাকেও পতি বলিয়া কামনা করেম নাই ॥ ৫ ॥

**অথ. হরির অভিপ্রসালোখ প্রেম** য়

क्षत्र वित्र योग मननानानिष्क्**रे विद्यानाः । (श्रा** 

## यदेवकामण्य ॥

তে নাধীত শ্রুতিগণা নোপাদিভমহন্তমাঃ।

অবতা তপ্ত রপদো মংশঙ্গামামুপাগভাঃ। ইতি ।

মাহাত্মান্যুক্তশ্চ কেবলশ্চেতি সু দ্বিধা । ৭ ॥

তত্রাদ্যো যথা পঞ্চরাত্রে।

মাহাত্মজান্যুক্তপ্ত স্তুদ্ধ সর্বতোহধিকঃ।

ভ ইতি। পুর্বোকেষ্ তে কেচিব্লিপ্রভ্রম:। তে চ মংগ্রাপ্তার্থ ন অধীধতা: শ্রতিগণা থৈ:। তথা অধায়নার্থ: নোপাসিতা মহন্তমা: তৎপারগা থৈ:। মংসঙ্গাদিতি। তেবাং সতাং মধ্যে প্রধানস্য মম সঙ্গাৎ প্রেমাণং প্রাপ্য মামুপাগতা ইতার্থ:। কিন্তু প্রিভগবতঃ স্বতন্ত্রেৎপি সতাং মধ্যে স্বর্থ গণনং বিনয়বভাবাদেব ক্রত্যিতি প্রীভগবৎপ্রসাদোখ এবায়ং জ্বেয়ঃ ৪ ৭ ৪

প্রশত ভগৈতে প্রেমা ভেদলয়মাহ মাহাত্মেতি। কেবলো মাধুর্যামাত্র-

यथा এकांग्राभ ३५ छ। ७ ८झारक ॥

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন হে উদ্ধব! গোপীগণ আমাকে পাই বার নিমিত্ত বেদাধ্যরন করেন নাই, মহতমদিগের সঙ্গ অর্থাৎ তীর্থ সেবন করেন নাই, ত্রেডাচরণ করেন নাই এবং তপ্স্যাও করেন নাই, কেবল আমার সংস্গদ্বারাই আমাকে প্রাপ্ত ইয়াছেন॥

অতিপ্রসাদোথ প্রেম তুই প্রকার, যথা, মাহাত্মজানযুক্ত এবং কেবল অর্থাৎ মার্যাধুমাত্র জ্ঞান যুক্ত ॥ ৭ ॥

মাহাত্মানবৃক্ত প্রেম যথা পঞ্চরাত্তে।। মাহাত্মাজান যুক্ত, হুদৃঢ় এবং সকল বিষয় হুইতে অধিক স্নেহো ভক্তিরিতি প্রোক্তম্বরা সাইট্যাদি নান্যথা ॥ শ ॥ কেনলো যথা ভবৈত্রব।

মনোগভিরণিচিছন। হরো প্রেমণরিপ্ল তা। অভিদন্ধিবিনিমুক্তা ভক্তিবিষ্ণুবশক্ষরী॥ ইভি॥ ৯॥ মহিমজামযুক্তঃ দ্যাধিধিমার্গালুদারিণাং। রাগানুগাভিতানান্ত প্রায়শঃ কেবলো ভবেং॥ ১০॥

कानवृक्त हे जार्यः ॥ ৮॥

অৱ পাঞ্রাত্তিকপদ। ছরমাহ । মাহান্মজ্ঞানসন্তাবাংশ এব নতু লক্ষ্ণাংশে॥ ৯ ॥

প্রারশ ইতি বৈধ্যংশযুক্তছেংপি ন কেবলঃ সা।দিত্য 🏂 👢 🦠

যে সেহে তাহাকেই ভক্তি বলা যায়, এতাদৃশী ভক্তি ব্যতীত সাক্তিাদি মুক্তি কখনই লক হয় না॥৮॥

(कंनन घर्था शक्तां खि।।

অভিদন্ধি শূন্য এবং প্রেমপরিপ্ল ত যে প্রীক্ষণে নির্বচিছন মনের গতি ভাহাকে ভক্তি বলা যায়, এতাদৃশী ভক্তিই বিষ্ঠুর বশকারিণী॥ ৯॥

বিধি মার্গানুকর্ত্তি ভক্তগণের যে অতিপ্রসাদে। ও প্রেস ভাহা মহিমজ্ঞানযুক্ত, আর রাগানুগান্তিত ভক্তগণের ধ্রেম প্রারশই কেবল অর্থাৎ মাধ্যাজ্ঞান যুক্ত ইইয়া পাকে॥

উক্ত উদাহরণে "প্রায়শই" বলার তাৎপর্য্য এই যে, বৈধী ভক্তির কোন অংশ যুক্ত হইলে কেবল প্রেম হয় না॥ ১০ ॥



আদে প্রদান ততঃ সাধ্যসেহিশ ভজনকিরা।
ততোহনর্থনিরতিঃ স্যান্ততো নিষ্ঠা ক্লটিভতঃ ॥
অথাসক্তিততো ভাৰস্ততঃ প্রেমাভ্যেক্তি।।
সাধকানাময়ং প্রেমঃ প্রান্তভাবে ভবেৎ ক্রমঃ ॥ ১৯ ॥
ধনাস্যায়ং নবঃ প্রেমা যস্যোম্মীলতি চেত্রি।
অন্তর্থনিভিরপাস্য মুদ্রা স্বর্গু স্বন্ধ্রমা ॥ ১২ ॥
অত্তবং শ্রীনারায়ণপঞ্জায়্রে যথা॥

ভত্ত বহুৰপি ক্ৰমেৰু সংস্থায়িক্ষেকং ক্ৰমমাৰ স্থাদাবিতি ব্ৰেন।
আদৌ প্ৰথমসাধুসদে শাল্পপ্ৰবিধানা শ্ৰন্ধ ভদৰবিধানা। ভভঃ প্ৰথমানস্তরঃ
বিতীয়া সাধুস্থা ভজননীতিশিক্ষানিব্ৰনা। নিঠা ততাৰিক্ষেণেৰ সাজতাং।
ক্ৰতিব্ৰতিশাৰা কিন্তু বৃদ্ধিপুৰ্বিকেনং, আসক্ৰিন্ত স্বাব্ৰদিকী ॥ ১১ ॥
অন্তৰ্বাণিতিঃ শাল্পবিদ্ধিঃ। কুলা প্ৰিপাটা ॥ ১২ ॥

প্রেমোদরের বহুতর ক্রম সত্ত্বেপ্ত প্রায়িক ক্রম কহিতে-ছেন যথা। প্রথমে প্রজা, তৎপরে সাধুসঙ্গ, তাহার পর ভঙ্গনক্রিয়া, তদনস্তর অনর্থনিবৃত্তি, তৎপরে নিষ্ঠা, তাহার পর ক্লচি, তৎপরে আসক্তি, তদনস্তর ভাব, তাহার পর প্রেম উদিত হয়। সাধকগণের প্রেমাবির্ভাবের প্রতি ক্রম এইরূপ নিরূপিত হইয়াছে ॥ ১১॥

ষে সকল ব্যক্তি ভাগ্যবান্ ভাঁহাদেরই চিত্তে এই নবীন প্রেম উদিত হয়, কিন্তু শান্তজ্ঞেরা সহলা এই নবীন প্রেমের পরিপাটী জানিতে পারেন না ॥ ১২ ॥

अवना नात्रम् भक्तार्व किशारहन-

# প্রান ও নহরী। ভক্তিরগায়ভদিন্তা।

ভাবোদ্ধভো হরে: কিকিন্ধ বেদ মুধনাদ্ধন: ।

সূ:ধক্ষেতি মহেলানি পরমানন্দ আপ্পুতঃ ॥

শ্রেদ্ধ এব বিলাসছাহৈরল্যাৎ লাধকেন্ধলি ।

অত্র স্বেগদরো ভেদা বিবিচা নহি শংসিতাঃ ॥

শ্রীনংপ্রভুপদান্তোলৈঃ সর্ব্বা ভাগবভায়তে ।

ব্যক্তীকৃতান্তি গুঢ়ালি ভক্তিসিদ্ধান্তমাধুরী ।

॥ ॥ ইতি শ্রীভক্তিরসায়তসিদ্ধো প্রবিভাগে প্রেমভক্তিদহরী চতুর্ধী ॥ ॥ ৪ ॥ ॥ ॥

স্থানি ক্ষাৰ্থ কৰি কি ক্ষাৰ্থ কৰি । কৰি কৰি । শান্তৰিভিহি বিশিক্ষণ আধিছাৰ লানি বিশ্ব প্ৰবাৰ্থকৈ । তেচ তাদৃশ চকানাং বহিবেৰ তৈজা ক্ষেত্ৰ নাজঃ। তেবামন্তৰ স্থান্থ তেপবংগ্ৰাপ্তা বাজিকতে এব। বংগাকৈং। নাজ্যভিকং বিগণসভাশি তে প্ৰসাদমিত্যাদি। কাষং তপঃ স্বাস্থিতি কিবিনি সংস্থা স্থাকিতে তাহিনি ব্যাদি স্থাকিত তাহিনি বিশ্ব বিশ্য

মহাদেব পার্বতীকে কহিলেন হে মহেশ্বরি! যে ব্যক্তি ভগবান্ হরির ভাবে উদাত হইয়া পরমানন্দে নিমগ্র হইয়া ছেন, তিনি আজ্বিষয়ক হংগ বা ছ্থা কিছুই জানিতে পারেন না।

স্থেছ প্রণয়দি প্রেমের বিলাস বলিয়া জতি বিরল, এ প্রযুক্ত প্রায়ই উক্ত স্মেহাদি সাধকগণে লক্ষিত হয়না, একারণ এধানে জার পৃথক্ করিয়া নির্দাণ করিলাম না॥

আমার প্রভূ শ্রীল সনাতন গোষামিপাদ নিজ ভাগবতায়ত প্রছে সমস্ত ভক্তিসিন্ধান্তের মাধুরী অভিগৃত হইলেও স্প্ট রূপে বর্ণন করিয়াছেন ॥



গোপালরপশোভাং দধদপি রঘুনাথভাববিস্তারী।
তুষাতু সনাতনাত্মা প্রথমবিভাগে স্থান্থুনিধেঃ॥
॥ #॥ ইতি শ্রীন্তিরসায়তসিম্বো রসোপ্যোগী স্থায়িভাবোৎপাদনো নাম প্রবিভাগঃ সমাপ্তঃ॥ #॥

ইতি শ্রীদ্ধিরসাম্ভদিয়ে। লহরীচত্র্যাহকে পূর্ব-বিভাগে পেমজ্জিলহরী চতুর্থী ॥ ॥।

গোণালেতি। শিষ্টমিদং। তার ক্ষাপাকে, প্রমুনাগভাষসা রঘুনাগভাষ বিস্তারী রঘুনাগাদীনাগণাবভারীভার্থ:। তাত্তপাসকানামভীইপুরাণারেতি ভাব:। আলো রুপামাহাম্মিতি বিব্যক্তিং। পাকে। অবর্গসা নামচভূইরমুদ্দিষ্টং। ভার বিতীয়ং শ্রীনদ্প্রস্থকচরণানাং নাম প্রথমত্তীয়ো:। চতুর্থে শ্রীমদ্রাক্ষ-চরণানাং। ভাব: শ্রীক্ষপ্রেমা॥

> ইতি তুর্গদক্ষনীনায়াণ শীভকিরসামূচসিকু-চীকায়াং পুশ্বিভাগং সমাপং ॥ • ॥

গোপালরপ শোভা প্রকটন করিয়াও যিনি রব্নাথের ভাব বিস্তার করিয়াছেন, সেই সনাতনাত্মা অর্থাৎ সচ্চিদানন্দ্ বিগ্রহ জীকৃষ্ণ এই ভক্তিরসাম্ভদিকুর পূর্ববিভাগে পরিভোষ্ লাভ কর্মন ॥

অথবা গোপালভট্ট এবং এরিপ গোস্বামির শোভা সম্পা-দন করত ভট্টরঘুনাথের ভাবকে ধিনি বিস্তার করিয়াছেন এরপ যে সনাতনগোস্বামী তিনি এই ভক্তিরসামুত্দিস্কুর পূর্ববিভাগে পরিতোধ প্রকাশ করুন॥ ১২॥

॥ \* ॥ ইতি শ্রীরামনারাণবিদ্যারত্বকুতব্যাখ্যায় ভক্তিরদায় গ্রিক্রিতাগ দমাপ্ত ॥ \* ॥

# দক্ষিণবিভাগঃ।

১ম লহরী।

——•:株:•——

প্রবলমনন্যাশ্রিয়াণা, নিষেবিতঃ সহজরপেণ।
ভাষদমনো মথুরায়াং সনাতনতকুর্জয়তি ॥
রুদায়তাকোর্ভাগেহস্মিন্, দ্বিতীয়ে দক্ষিণাভিধে।
সামান্যে ভাগবস্তক্তিরসন্তাবসুদীর্যাতে ॥

যিনি স্বাভাবিক অনন্যাত্র্যী রূপদ্বারা প্রবল রূপে নিষে-বিত, যিনি অঘাসুরকে সংহার করিয়াছেন, সেই স্নাভন (-নিত্য-)-মূর্ত্তি শ্রীকৃষ্ণ মধুরামণ্ডলে জয় যুক্ত হউন॥

শাধবা যিনি একান্তাপ্রিত অনুদ্ধ রূপকর্তৃক অতিশয় রূপে নিষেবিত এবং যিনি পাপনাশক, সেই সনাভননা গোস্বামী সর্বাদা মধুরামগুলে জয়যুক্ত হউন॥

রগায়ত সিস্কুর এই দিতীয় দক্ষিণবিভাগে শামান্য ভগন্তক্রির বর্ণিত ইইবে॥ জন্য পশু লহুৰ্য্যঃ স্থাবিভাগাখ্যাগ্রিমা মতা।
বিভীয়া স্বস্থভাবাখ্যা সৃতীয়া দান্ত্বিকাভিধা।
ব্যভিচার্য্যভিধা সুর্য্যা স্থায়িসংজ্ঞা চ পশুমী।
অধাদ্যাঃ কেশবরতের্লাক্ষভায়া নিগদ্যতে।
দামগ্রীপরিপোষেণ পরমা রসরূপতা ॥ ১ ॥
বিভাবৈরসুভাবৈশ্চ দান্তিকৈর্যাভিচারিভিঃ।
সাদ্যস্থং হুদি ভক্তানামানীতা প্রবণাদিভিঃ।
এষা কুষ্ণরতিঃ স্থায়ী ভাবো ভক্তিরদো ভবেং ॥ ২ ॥

বিশ্বাবৈরিতি। এবা প্রীক্ষরতিরেব হায়ী ভাব: দৈব চ ভক্তিরসো ভবেৎ।
কীদৃশী সতী ভত্তাহ বিভাবৈরিতি। প্রবণাদিভিঃ কর্তৃভিবিভাবাদিভিঃ
করবৈর্ভ জানাং হুদি স্বাদাত্মানীতা সমাক্ প্রাপিতা চমংকারবিশেবেশ পুষ্টেভাব:। স্বভিশ্চাত্তোপলক্ষণমেব। ভেন মহাভাবপর্যান্তঃ সর্ব্বোহশি প্রাফঃ।
ভাবা এবাংকর্ষরপ্রাৎ॥২॥

জ্বপর এই বিভাগে পাঁচটা গহরী আছে। যথা -- প্রথম বিভাব, বিভীয় অসুভাব, তৃতীয় সাত্ত্বিভাব, চতুর্থ ব্যক্তি-চারিভাব পঞ্চম স্থায়িভাব॥

অপিচ, লক স্বরূপা কেশবরতি, যাহা বিভাবাদিসামগ্রী দারা পরিপুষ্ট হইয়া পরম রসরূপতা প্রাপ্ত হয়, তাহাই এই বিভাগে ক্ষিত হইবে॥ ১॥

এই স্থায়িভাব স্বরূপ কৃষ্ণরতি বিভাব, অসুভাব, সাবিক ও ব্যক্তিচারি ভাব দ্বারা প্রবণাদি কর্তৃক ভক্ত জনের হৃদয়ে ,আসাদনীয়ত্ব রূপে আনীত হইলে, ভক্তিরদ বলিয়া কীর্তিভ হয়। ২।

# দকিণ। ১ বহরী। ভক্তিরদায়ত সিক্ষুঃ।

প্রাক্তন্যাধুনিকী চান্তি যদ্য সন্তুক্তিবাদনা।

এষ ভক্তিরদাস্বাদন্তদৈয়েব হৃদি জায়তে ॥ ০॥
ভক্তিনিধু তদোষাণাং প্রসন্থেজ্জলচেতদাং।
শ্রীভাগবতরক্তামাং রদিকাদঙ্গরিদণাং।
জীবনীভূতগোবিন্দপাদভক্তিস্থাপ্রায়াং।
প্রেমান্তরঙ্গভানি কৃত্যান্যেবাকুতিষ্ঠভাং।

যদ্যপি রতেরন্তিত্বনাধুনিকী বাসনাজ্যেব তথাপি রসতাপত্রী প্রাক্তনী চাবশাং মৃগ্যত ই চাহ।প্রাক্তনীতি ৮ প্রাগ্রন্তবাধুনিকী কলনাত্মির ভূতা চেতি মধ্যে তিরোধানাপেকরেব ভেদে। বিবক্তিঃ। ইদমপি প্রায়িকং। তাৎ-পর্যান্ত রভাতিশন্ত এব জ্ঞের:॥ ৩॥

পুনস্তসাং রসোংপত্তে সাধনং সহারং প্রকারকার ভক্তীতি চতুর্জি:। ভত্ত সাধনমন্ত্রভিত্ত হামিতাত্বং সহারং সংকারব্গলং। প্রকারত্ব রভিরিভালিকো ক্রের: নিধুতিলোব হালেব প্রসর্বং শুদ্ধাব বিশেষাবি ছাববোগাত্বং তততে জ্যোজ্ঞালত্বং

অপর এই ভক্তিয়স-আসাদ সকলের সম্বন্ধে হইতে পারে না, কারণ, যাহার জন্মান্তরীয় অথবা ইহ জন্ম সম্বন্ধীয় ভগবন্তুক্তি সন্থাসনা বিদ্যমান আছে, তাহারই হৃদয়ে ভক্তিরসের আসাদ উৎপন্ন হয়॥ ৩॥

আর, বাঁহাদের ভক্তিকর্ত্ক দোষ দকল ধোঁত হওয়াতে
চিত্ত প্রদান হইয়া উজ্জ্বল হইয়াছে, বাঁহারা শ্রীমন্তাগবঙে
অনুরক্তা, রিদিক জন দঙ্গে বাঁহাদের উল্লাস এবং বাঁহারা
গোবিন্দচরণারবিন্দের ভক্তিত্বথ সম্পত্তিকেই জীবন স্বরূপ
জানেন, প্রেমের অন্তর্গ কৃত্য সকলকেই বাঁহারা অনুষ্ঠান
করেন, সেই সকল ভক্ত জনের হাদরে সুইটা সংক্রারহারা

ভক্তানাং হৃদি রাজস্বা সংস্কার্যুগলোজ্জ্বনা
রতিরানন্দরূপৈর নীয়মানা তুরুদ্য তাং।
কুফাদিভির্বিভারাদ্যৈগ তৈরকুভবাধ্বনি।
প্রোঢ়ানন্দ্রমংকারকাষ্ঠামাপদ্যতে পরাং।
কিন্তু প্রেমা বিভারাদ্যেঃ স্বল্পনীতোহপ্যণীয়দীং।
বিভারনাদ্যবস্থাং তুদদ্য আস্বাদ্যতাং ব্রেকেং॥
তিত্র বিভারাদিদামান্যক্ষণং॥
বে কুক্ষভক্তমুরলীনাদাদ্যা হেতবে রতেঃ।

ভদাবিভাবাং সর্বজ্ঞানসম্পন্ন হং। অনু চ্বাধ্বনি গঠৈবিতি নতু লৌকিকরসকর সংক্রি সংক্রিনিবজ্ঞাপেক্ষেতি ভাবং। তত্র সভি কিছিতি প্রেরো বৈশিষ্টাং বিভাবনাদ।বহাং ভত্তদাবাদবিশেষ্যোগ্যভাষদ্বাং। এবং প্রণম্বহাদীনামণি জ্ঞোং। রতেরেবোংকর্মন্ত্রণা এত ইতি ভদ্গ্রহণেনৈব বিভাবৈরিদ্যাদিলকণে প্রবেশ ইভি ভাবং। অনীয়সীমণীতি যোজাং ॥ ৪॥

উজ্জ্বল হইয়া কৃষ্ণরতি অভিশয় রূপে বিরাজ করেন এবং ঐ রতি আস্বাদনীয়া হইয়া পরমানন্দ স্বরূপা হয়েন॥

অপর অমুভবাদি মার্গে কৃষ্ণাদি বিভাগ দ্বারা ঐ কৃষ্ণর তি পরমানন্দের পরাকাষ্ঠা প্রাপ্ত হয় অর্থাৎ প্রেমরূপে পরিণত হয়, কিন্তু ঐ প্রেম অল্ল বিভাবনাদি অবস্থা প্রাপ্ত হইয়া সদ্যঃ আবাদনীয় হয়॥

ু তন্মধ্যে বিভাবাদির সামান্য লক্ষণ যথা। কৃষণ, কৃষণভক্ত ও মুরলীনাদাদি যে সকল রতির কারণ কার্যাভ্তাঃ স্মিতাদ্যাশ্চ তথাকৌ স্কেভাদ্যা:।
নির্বেদাদ্যাঃ সহায়াশ্চ তে জ্বেয়া রসভাবনে।
বিভাবা অকুভাবাশ্চ সাত্ত্বিকা ব্যভিচারিণঃ ॥ ৪ ॥
তত্ত্ব বিভাবাঃ ॥ ৫ ॥
তত্ত্ব জ্বেয়া বিভাবাস্ত রত্যাস্থাদনহেত্বঃ।
তে দ্বিধালম্বনা একে তথৈবোদ্দীপনাঃ পরে॥

ত তুক্তমগ্লিপুরাণে ॥ বিভাব্যতে হি র গ্রাদির্যক্ত যেন বিভাব্যতে ।

তন বিভাবা লক্ষান্তে ইতি শেষ:॥ ৫॥

কেন ভদাহ তত্ত্ব জেরা ইতি। হেড়ুখ্মত্র বিষয়াশ্রয়**ছেনোছোধকছেনচ** জেয়ং তথিবাহ তে দিধা ইতি॥ ৬॥

স্বরূপ, এবং হাস্যাদি যে সকল রতির কার্য্য তথা স্তব্ধতাদি আট ও নির্কেদাদি, এই সকল যথাক্রমে বিভাব, অসুভাব সাত্ত্বিভাব ও ব্যভিচারিভাবরূপে কথিত হয়। রসনিষ্পতি-বিষয়ে এই চারিটীকে সহায় বলে অর্থাৎ এই চারিটী ব্যতি-ব্রকে রস নিষ্পান্ধ হয় না ॥ ৪ ॥

অথ বিভাব ॥ ৫ ॥

রতির আমাদনের কারণকে বিভাব বলে। এই বিভাব তুই প্রকার হয়, আলম্বন ও উদ্দাপন॥

यथा अधिशृतारण ॥

যাহাতে এবং] যাহা দারা রতি প্রভৃতি বিভাবনীয় (বিবেচনীয়) হয়, তাহার নাম বিভার । ঐ বিভার আশসন বিভাবো নাম দ দ্বেধালস্বনোদ্দীপনাত্মকঃ॥ ৬ ॥
তত্তালস্বনাঃ॥
কৃষ্ণেশ্চ কৃষ্ণভক্তাশ্চ বুধৈরালস্বনা মতাঃ।
রত্যাদিবিষ্যত্মন তথাধারতয়াপি চ॥
তত্ত্ব কৃষ্ণঃ॥

কৃষ্ণত কৃষ্ণভক্তাশেত তা আরং বিবেকং, যমুদ্দিশ্য রতিঃ প্রবর্ততে স বিষয়ঃ।
নচ শ্রীকৃষ্ণ এবাত্র। আবারস্ত রতেরাশ্রাঃ। সচাত্র র্যুলং রতেঃ পাত্রং গৃহতে
তরিঃসান্দেন হাধুনিকা অপি ভক্তাঃ রিশ্ধা ভবস্তি। সপুনং স্থাপরিবামাণমহারসপূর্বিস্তরীলাপরিকরগণ এব । অনাতাশ্রিমাণ হারুস্থারণ তদেবং দিবিধালম্বনালিভাচ ভরীলাপরিকরাদনোযাং ভস্মিন্ লীলাপরিকরগণেছিল পরমমুথামুধাাদিভরেযাংপরমমুথামুধাসা তু কেবলশ্রীকৃষ্ণালম্বনালিভা ক্রেরেভি।
রত্যাদেরিভালিশদালোণবক্ষামাণহাসাদরো গৃহীভাঃ। রভিশ্চাত্র সন্ধানীরৈব
ক্রেরা নতু বিজ্ঞানীরা অমুভবিভ্রুত্বংসংস্থারাভাবাৎ বিশ্বাধীরা প্রবরোধনী
চিদ্দুদীপন এব ভদাধারো ভবতি নদালম্বনং। কুল্পুরাং বিরোধী রভ্যাশ্রম
ইত্যপ্রিমান্ত্রান্ত্রণরের প্রেরাঃ র ৭ ॥

ও উদ্দীপনভেদে চুই প্রকার হয়। অর্থাৎ আলম্বন বিভাব ও উদ্দীপন বিভাব॥ ৬॥

তন্মধ্যে আলম্বন যথা॥

রতির বিষয় ও আধারতা রূপে কৃষ্ণ এবং ভক্ত এই তুইকে পণ্ডিতগণ আলম্বনরূপে কীর্ত্তন করেন। অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ ক্রতির বিষয়তা রূপে ও ভক্ত আধারম্বরূপে আলম্বন হয়েন। তন্মধ্যে কৃষ্ণ যথা। নায়কানাং শিরোরত্বং কৃষ্ণস্ত ভগবান্ স্বরং।

যত্ত নিত্যতয়া সর্কে বিরাজত্তে মহাগুণাঃ।

সোহন্যরূপস্বরূপাভ্যামিস্মিলালম্বনো মতঃ র ৭ ॥

ততান্যরূপেণ যথা ॥

হস্ত মে কথমুদেভি দবৎদে বংদপালপটলে রভিরত্র। ইত্যনিশ্চিভমভির্বলদেবো বিশ্ময়স্তিমিভমূর্তিরিবাদীৎ॥

হত্তেতি। অত্র শ্রীক্লকে ধা রতি: সা কথং বৎসপালপটলে উদেঙীতার্থ:। স্তিমিতং স্তর্মাণ: । ইবেতি বাক্যালকারে ॥ ৮॥

নারকগণের শিরোরত্ন স্বরূপ স্বয়ং ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ, বাঁহাতে মহা মহা গুণ সকল নিত্য বিরাজমান, তিনি আন্যরূপ এবং স্বরূপভেদে এই রতিতে আলম্বন হইয়া থাকেন॥ ৭॥ তম্মধ্যে অন্যরূপ যথা।

ত্রন্মাহনে প্রীকৃষ্ণ বালক ও বংগ রূপ ধারণ করার বলদেব বিশ্বয় প্রকাশ পূর্বক কহিলেন কি আশ্চর্য্য ! প্রীকৃষ্ণে আমার যে প্রকার রতি ছিল, সেই রতি পুনরায় কি প্রকারে বংস এবং বংসপাল সকলে উদিত হইল ? বলদেব এই ক্লপ নিশ্চয় করিতে না পারিয়া সহসা শুরু হইলেন ॥

> অথ স্বরূপ স্বরূপ ছুই প্রকার, আরুত এবং প্রকট॥

অথ স্বরপং ॥

ষ্মার্তং প্রকটঞেতি স্বরূপং কথিতংঘিধা॥

তত্তার্ভং দ

খন্যবেশাদিনাচ্ছন্নং স্বরূপং প্রোক্তমার্তং ॥ ৮॥

তেন যথা॥

মাং ক্রেছয়তি কিমুচৈচ—,
মহিলেয়ং দ্বারকাবরোধেহত্ত।
আং বিদিতং কুতুকার্থী,
বনিভাবেশো হরিশ্চরতি॥৯॥

প্রকটম্বরূপেণ যথ।॥

মামিতি শ্রীমত্দ্ধব বাকাং। উটেচরিতি। সর্বতঃ পরমং শ্রীহরিবোগাং যথা সাত্তবেভার্থ:। অত্র প্রমাণং যোগমায়াবৈভবদর্শনে যথা অবাক্তলিজং প্রাকৃতিত্ব স্থাপুরগৃহাদিয়ু। ক্রিজ্জর স্থাং যোগেশং ভক্তাববৃত্থ্যেরিত ॥ ৯॥

জ্বা বেশ হারা ভাচ্ছাদিত স্বরূপকে আর্ত্ত কহা যায়॥ ৮॥ আরত স্বরূপ যথা

এক দিবদ জীক্ষ ভারক। পুরীতে স্ত্রীবেশ ধারণপূর্বক কৈছিল প্রদর্শন করিতে লাগিলে উদ্ধব অবলোকন করিয়া কহিলেন আহা। ভারকা অবরোধে এই মহিলাকে অবলোকন করিয়া আমার হরিদর্শনে যজ্রপ স্নেহ উদিত হয় ভাহার নারে এ আমাকে স্নেহান্বিত করিতেছে। আমার নিশ্চয় বোধ হইল কৌতৃক প্রদর্শনার্থ হরিই বনিভার বেশ ধারণ পূর্বক বিচরণ করিভেছেন। ৯।

আরং কস্থাবিঃ কমলকমনীয়াক্ষিপটিমা
তমালশ্যামাঙ্গতাতিরতি তরাং ছাত্রিতশিরাঃ।
দরশ্রীবংসাক্ষঃ ক্রেদরিদরাদ্যক্ষিতকরঃ
করোত্যাচৈচমোদং মম মধ্রমূর্ত্তির্মধ্রিপুঃ॥ ১০॥
অথ তদগুণাঃ॥
আয়ং নেতা হরম্যাঙ্গং স্ব্সালক্ষণায়িতঃ।

অরমিতাপি তথাকাং। কমলৈরপি কমনীর:। অক্ষিণটিমা নেত্রো:
সোল্ব্যাতিশরো বসা স:। তমাণবং শামা শামতরা বিরাজন্তী অক্সা তাতির্বস্য স:। পাঠান্তরং তাক্রং। দর ঈবদ্যত্বাদেব নিরীক্ষা: শ্রীবংসরূপোছকো
শক্ষণং যত্র। অরি চক্রং দর: শুঝা তাবেতৌ করন্থাবন্ধকেন জেয়ে। অতিতরামিতি স্বর্তান্থিং। ১০ ৪

অথ তলাণ ইতি তত্ত খণা ছেধা নিরপাত্তে প্রাধান্যেনোপ্সর্জনত্ত্ব চ

শ্রীকৃষ্ণের স্বাভাবিক রূপ দর্শন করিয়া কহিলেন,
শ্রীকৃষ্ণের কি আশ্চর্যা রূপ!, ইহাঁর এীবা কসুদদ্শ, নেত্রসৌন্দর্যা এরূপ আশ্চর্যা, যে, কমলের কমনীয় মৃর্ত্তিকেও ক্ষয়
করিয়াছে, অপর অস তমালতুল্য অতিশা শ্যামবর্ণ, মস্তক
ছত্ত্রশোভিত, ঈষৎ শ্রীবংসের চিহ্ন, করে শহ্মচক্রীদি চিহ্ন
ইত্যাদি স্থন্দরাবয়ব হইয়া মধ্রিপুর মধুর মূর্ত্তি আমাকে
অভিশয় আনন্দপ্রদান করিতেছেন॥ ১০॥

व्यथ ब्रीकृष्कित्र छन ॥

নায়কস্বরূপ শ্রীকৃষ্ণের গুণ এই যে, ইনি স্বর্ন্যাঙ্গ। ১। সর্বা সলক্ষণায়িত। ২। রুচির। ৩। তেজস্বী। ৪। বলী-

# ভক্তিরসাম্ত্রিজুঃ। দক্ষিণ। ১ বর্ষী

ক্লচিরন্তেজ্ঞসা যুক্তো বলীয়ান্ বয়সান্থিতঃ।
বিবিধাছুতভাষাবিৎ সত্যবাক্যঃ প্রিয়ং বদঃ।
বাবদুকঃ স্থপাণ্ডিত্যোবুদ্ধিমান্ প্রতিভাস্থিতঃ।
বিদয় শ্চতুরো দক্ষঃ কৃতজ্ঞঃ স্থদূত্রতঃ।
দেশকালহুপাত্রজ্ঞঃ শাস্ত্রচক্ষুঃ শুচির্বশী।
স্থিরো দাস্তঃ ক্ষমাশীলো গন্তীরো ধৃতিমান্ সমঃ।
বদান্যো ধার্মিকঃ শ্রং করুণো মান্যমানকৃৎ।
দক্ষিণো বিনয়ী ব্রীমান্ শরণাগতপালকঃ।
স্থী ভক্তস্ক্রৎ প্রেমবশ্যঃ স্বিশুভক্করঃ।
প্রতাপী কীর্তিমান্ রক্তলোকঃ সাধুসমাশ্রয়ঃ।

**ফচিং হুর্মাঙ্গ**ড্মিতাাদিনা চেতি যত্ত প্রথমেন নিরূপাতে তত্ত তেযামূলী

शान्। १। वशमिश्व । ७। विविध असु ७ छ। साछ । १। मछावाका । ৮। श्रियम । ৯। वाव मृक । २०। छ मिछ । २२।
वृक्षियान्। २२। श्रिष्ठ । छ। विषय । २८। हजू । २१
मक । २७। क् इच्छः। २१। छ मृ छ छ। १৮। मिण का मछ भा छ छ।
। २৯। माछ ह क्कः। २०। छ हि। २२। व मी। २२। छ त । २०।
माछ । २८। का मौला। २६। श्रिष्ठ । २५। व्र छितान्। २१।
मगा २५। वमाना। २०। धार्मिक। २०। मृता । २०। कक्रम
। २२। योनायान कृ । २०। मिक्रि। २०। छ थी। २५। छ छ
छ । १०। भा ना श्रि। १०। मर्क छ छ द । १८। श्रिष्ठ । १८।

নারীগণমনোহারী সর্ব্বারাধ্যঃ সমুদ্ধিমান্।
বরীয়ানীশ্বন্দেতি গুণাস্তস্থানুকীর্ত্তিতাঃ।
সমুদ্রা ইব পঞ্চাশদ্ধু বির্বাহা হরেরমী ॥ ১১ ॥
জীবেম্বেতে বসস্তোহপি বিন্দু বিন্দু তথা কচিং।
পরিপূর্ণতয়া ভাস্তি তত্তিব পুরুষোত্তমে।
তথাহি পাদ্মে পার্বিত্যৈ শিতিকঠেন তদগুণাঃ।
কন্দর্পকোটিলাবণ্য ইত্যাদ্যাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ॥ ১২ ॥
অতএব গুণঃ প্রায়োধ্যায় বনমালিনঃ।

পনহং যত্ত্র বিতীয়েন তত্ত্রালয়নহং। তদেবং যত্ত্রালয়নপ্রকরণে বিতীয়েইনবাহ জায়মিতি। অয়ং শ্রীকৃষ্ণাধাো নেতা নায়কঃ॥১১॥

ক্চিদিতি। ভগবদমূগৃহীতেখিতেগ্ৰ মুখাতমাঙ্গীকৃতং। **অঙএৰ বিক্ষমণি** অনোয়ু তু তদাভাসখ্যেৰ জ্ঞোঃ॥ ১২ ॥

নারীগণ-মনোহারী। ৪৬। দর্কারাধ্যা ৪৭। সমুদ্ধিমান্। ৪৮। বরীয়ান্। ৪৯। ঈশর। ৫০। হরির এই পঞাশৎ গুণ, ইহঃ সমুদ্রের ন্যায় তুর্কিগাহ॥ ১১॥

এই সমস্ত গুণ যদি জীবগণে থাকা সম্ভব হয়, তবে ধে যে জীব ভগবানের অনুগৃহীত সেই জীব বিন্দু বিন্দু রূপে অব্দিতি করে, কিন্তু ভগবান্ পুরুষোত্তমে এই সমস্ত গুণ সম্পূর্ণ রূপে বিরাজ করিতেছে॥

পরস্তা, পদাপুরাণে ভগবান্ শিতিকণ্ঠ পার্বতীর প্রতি শ্রীকৃষ্ণের কন্দর্প কোটি-লাবন্যপ্রভৃতি গুণ সকল কীর্ত্তন করিয়াছেন॥ ১২॥ পৃথিব্যা প্রথমক্ষকে প্রথয়াঞ্চাক্রিনে ক্ষুটং॥ যথা॥

সত্যং শোচং দয়া কান্তিন্তাগিঃ সম্ভোষ আর্চ্ছবং।
শাসাদম ন্তপং সামাং ভিতিকোপরতিঃ প্রচন্তং।
জ্ঞানং বিরক্তি রৈশ্বাং শোর্যাং তেজো বলং স্মৃতিঃ।
স্থাতন্ত্রাং কোশলং কান্তিধৈর্যাং মার্দ্দবমেষচ।
প্রোগল্ভাং প্রশ্রমঃ শীলং সহ ওজো বলং ভগঃ।
গান্তার্যাং স্থৈরিমান্তিক্যং কীর্ন্তির্মানোহনহক্তিঃ।
ইমে চান্যে চ ভগবন্ধিত্যা যত্র মহাগুণাঃ।
প্রার্থ্যা মহত্বমিচ্ছন্তির্ন বিয়ন্তি স্মা কহিচিৎ॥ ১০॥

ধর্মার ধর্মকুপ: দেবং বোদয়ি চুমিত্যথ:। ক্রিয়ার্থোপ্পদ্স্য চ কর্ম্মণ স্থানিন ইতি শ্বরণাক্তত্থী ॥ ১৩ ॥

ষ্ঠ এব শ্রীমন্তাগণতের প্রথমক্ষে পৃথিবী ধর্মর পিদেবকে জানাইবার নিমিত্ত ভগবান্বনমালির ঐ সমস্ত গুণ স্পাইর পে বিস্তার করিয়া বর্ণন করিয়াছেন ॥

বণা, পৃথিবী কহিলেন, হে ধর্ম! যাঁহারা মহত্ব প্রাপ্তির ইচ্ছা করেন ভাঁহারা দত্য, শোচ, দয়া, ক্ষান্তি, ত্যাগ দন্তোষ, ঋজুনা, শম, দম, তপদ্যা, দাম্য, তিতিক্ষা, উপরতি, ত্রুত, জ্ঞান, বিরক্তি, ঐখর্য্য, শোর্য্য, তেজ, বল, স্মৃতি, স্বাতন্ত্র, কোশল, কান্তি, দৈর্য্য, মার্দিব, প্রাগল্ভা, প্রপ্রয়শীলদহ, ওজ, বল, ভয়, গান্তীর্য্য, হৈর্য্য, আন্তিক্য, কীর্ত্তি, মান ও অহকার শ্নাডাপ্রস্থিতি গুণদকল কখন পরিভ্যাগ করেন না ॥ ১০ ॥

### দক্ষিণ। ১ লহরী। ভক্তিরশামুভা

অথ পঞ্চণা যে স্থানংশেন গিরিশাদিরু॥ ১৪॥
সদা স্বরূপদংপ্রাপ্তঃ দর্বজ্ঞো নিতান্ চনঃ।
সচিদানন্দসান্দ্রাপ্তঃ সর্বাসিদিনিষেবিতঃ ॥ ১৫॥
অথোচান্তে গুণাঃ পঞ্চ যে লক্ষ্মীশাদিবর্তিনঃ।
অবিচিন্তা মহাশক্তিঃ কোটিব্রক্ষাগুবিগ্রহঃ।
অবতারাবলীবীক্তঃ হতারিগতিদায়কঃ।

অংশেন যথাসম্ভব স্বাংশেন গিরিশাদিষু গ্রীশিবাদিষু। স্বাদিগ্রহণাৎ কচিৎ বিপরার্দ্ধানে সাক্ষান্তগবদবতারপ্রকাদব্যা গৃহন্তে॥ ১৪॥

সচিদোনদেতি। শীভগবংপকে সচিদানদাশরপক তংসারেং বন্ধন্তরা-প্রবেশ্যঞ্চাঙ্গং যস্যাস ইতি বিগ্রহ:। শিবপকে, সচিদানদান শীভগবতা সারেং তারাত্মাং প্রাপ্তমঙ্গং যস্যাস:॥১৫॥

অথোচাতে ইতি যুগলং। সন্ধীশোহত পরবোমাধিনাথ: শ্রীনারারণ:। অ।দি শকানহাপুরুষাদয়োহপি গৃহতে। ততাবিচিন্তানহাশক্তিমং লন্ধীশে

অপর, শ্রীকৃষ্ণের অন্য পাঁচটী গুণ যাহা আংশিক রূপে সদাশিব এবং ব্রহ্মাদিতে বর্ত্তমান তাহাও কীর্ত্তন করি-তেছি॥ ১৪॥

যথা, দদা স্বরূপদংপ্রাপ্ত। ১। দক্তি । ২। নিভান্তর্ন । ৩। দ্যিদানন্দ্রসান্ত্রাঙ্গ। ৪। এবং দক্ষিদিছি নিষে-বিভ।৫॥১৫॥

অপর শ্রীনারয়ণাদির অনুবর্তী পঞ্চ গুণ কীর্ত্তন করি, অবিচিন্ত্য মহাশক্তি। ১। কোটি আহ্মণ্ড বিগ্রহ। ২। অব-তারাবলীবীকা। ৩। হতারিগতিদারক। ৪। ও আ্যারাম আত্মারামগণাকর্ষী ভাষী কৃষ্ণে কিলাছুভাঃ॥ ১৬॥ স্পাতৃভচমৎকারলীলাকল্লোলবারিধিঃ।

জেরং মহাপুরুষাদাব গারক র্ভাব। কোটিএক্ষাগুব্যাপী বিগ্রহো মদে। তি মধ ভদুপাধিত্বাং। যথা ব্ৰহ্মসংহিতায়াং। যদৈনকনি:শ্বসিতকালমথাবলম্বা জীবন্তি লোমবিলজা জগদ ওনাগা:। বিফুর্মহানু স ইহ্ যস্য কলাবিলেয়ে। গোবিলমিতি। অবভারাবলীবীজত্বং পূর্ব্বয়েছি য়োর্থ।সম্বর্মনাত্র চ। গতিঃ সর্গাদিরপোহর্থঃ। সূত্র ভগবন্দে যিগামন্যেন কেনাপি কর্মণা ন সম্ভবতীতি। যথোক্তং গীতাস্থ। ভানহং বিব চ: ক্রোন্ সংসাবেষু নরাধমান্। কিপামাজস্রমশু ভানাস্রীষেব হোনিষু। আহবীং যোনিমাপরা মুচা জন্মনি জন্মনি। মামপ্রাপোৰ কৌছের ভতে ৰান্তাশনং গভিমিতি। আত্মত্তীমগণাকর্ষিত্বং শ্রীমন্তিকুঠাকুভাদাবপি ড় তীয়কদাদিযু প্রসিদ্ধ:। ক্লে কিলাভুতা ইতি নরণীলানদ্ধেনৈর তত্ত-দানিভাবনাং। কিঞাঁ। অবৈচিয়েতি অবতারেতি চ স্বয়ং ভগ্রন্থাৎ স্বয়ং ভগবত্বেছণি জিজ্ঞাসা চেং কৃষ্ণসন্দর্ভো দুশাঃ। কোটীতি। ভানি ব্যাপ্যাপি বৈকৃষ্ঠাদি ব্যাপিত্বাং হতেতি। মোক্ষভক্তিপ্র্যান্তগতিদাত্ত্বাদ্ভতত্তং ভের:। ভদেবং প্রমব্যোদনাথাদীনতিক্রমা ক্লঞ্চদাব বিশ্বয়কারিছে স্থিছে ভব্ত নাম গিরিশাদিবংশেন ভত্তদগুণরং: কিন্ত স্বতরামেব শ্রীকৃষ্ণান্তবিধুন তেষাং বিশ্বয়কারিছমিতি ব্যঞ্জিতং। মথোক্তং। যুদ্মর্ত্তঃলীলোপরিক্মিতি গোপান্তপঃ কিমচরন্ যদমুধা রূপমিতি চ ॥ ১৬ ॥

जर्साङ्ट छ्छानिक स्नाहत्र वित्वहनीयः। स्र ज्लाछानि इत्य यहानाः

গণাক্ষী, এই পাঁচ গুণ জ্ঞীক্লফে অভ্তরপে বিরজিত ৷ ১৬ ৷ অপর, স্বাভূত চসংকারণীলা কলোল বারিধি। ১.৷

## দক্ষি।। > লহরী। ভক্তিরণাম্ভাগত্ম

অতুল্যমধ্রপ্রেমমণ্ডি তপ্রিয়মণ্ডলঃ।
ত্তিজগমানদাকর্মী মুরলীকলকৃজিতঃ।
অসমানোর্দ্ধরপঞ্জীবিস্মাপিতচরাচরঃ॥ ১৭॥
লীলাপ্রেম্বাপ্রিয়াদিক্যং মাধুর্য্যে বেণুরূপয়োঃ।
ইত্যদাধারণং প্রোক্তং গোবিন্দদ্য চতুক্টয়ং॥ ১৮॥
এবং গুণান্দতুর্ভেদা চতুঃষ্ঠিকুদাছ তাঃ।

#### भनार्था वहवीहिः ॥ ১१ ॥

ভানের চতুরো গুণান্ সংক্ষিপ্য দশ্যতি। লীলেতি প্রথম:। প্রেয়প্রিয়াণামাধ্যকমিতি তাদৃশপ্রিয়জনবিরাজমানত্মতার্থ:। তচে দিতীরে।
বেণ্মাধুর্য্যমিতি তৃতিয়ে:। রূপমাধুর্য্যমিতি চতুর্থ:। তদেবং নিরূপ্যাস্ত্রবিশেষাং প্রৌট্বাদেনাহ ইত্য- সাধারণমিতি। তদেবমিপ সির্মান্তত্মেদেংশীভাগেনী রুসেনোংক্র্যাতে কুফ্রপ্নিতি ষত্তং ততুপ্লক্ণ্মের ক্রেয়ং॥১৮॥

চতুর্ভেলা ইতি। তত্ত্র পঞ্চাশত্তমপর্যান্তঃ প্রমণঃ পঞ্চপঞ্চাশত্তমপর্যান্ত স্থিতিমপর্যান্ত স্তীয়ঃ চতুংবৃষ্টিপথান্ত শতুর্থইতি ভেলো বর্গঃ।

অতুল্য মধুর প্রেম-সভিত প্রিয়-মণ্ডল। ২। ত্রিজগন্মানসাকর্ষী মুরলীকলকুজিত। ৩। এবং অসমানোর্দ্ধরূপ শ্রীবিক্ষাপিত চরাচর। ৪॥ ১৭॥

অর্থাৎ লীলা ও প্রেম-দার। প্রিয়াগণের আধিক্য। বেণু-মাধ্র্যা, ও রূপ-মাধ্র্যা, গোবিন্দের এই চারিটী অসাধারণ গুণ ১৮। উক্ত চারি গুণ সহ প্রীকৃষ্ণের চক্তুঃষ্ট্রি গুণ ইহাদের লোদাহরণমেতেষাং লক্ষণং ক্রিয়তে ক্রমাৎ ॥

তত্র হ্রম্যাসঃ॥

ह्याच्याअम्बिर्वरणा यः खन्नमानः म कथार्ड ॥ ३०॥

यथा॥

মুগং চন্দ্রাকারং করন্ত নিভমুরুদ্বয়মিদং ভূকো স্তম্ভারম্ভো সনসিজবরেণ্যং করযুগং।

সোদাহরণমিতি। অনোদাহরণানি চতুর্তি: প্রমানৈ র্ল্জানি। শাস্ত্রেপ ভত্তাংপর্যেণ তদমুসারিমছাজন প্রসিদ্ধা তত্তদমুসারিমছারেন চ ভানি পুনবি বিধানি ভগণভরা চমংকারকরাণ মনুষলীলারা চেতি। তত্ত্ব ভগবত্তেই পিঁমছবালীলারা চমংকারকরবং। তথাপি মর্ত্তাানুবিধস্য বর্ণাত ইতি প্রপঞ্চনিত্রপঞ্চেইপীত্যা দনাবেন চ। বথৈব বর্ণিতং পৃথিবা সত্যং শৌচমিত্যাদিনা। বথা চাত্ত্বৈব দশ্বিষাতে। পশ্য বিদ্ধাগিরিতেহপিগন্ধিইমিত্যাদিভিঃ॥ ১৯॥

স্থানিতি যদ্যপি পুর্বাহ্নসারেণ চন্দ্রাদয় জন্য দৃষ্টান্তিতা লেশমপি নার্হস্তি ভাগাপ সাধারণলোকানাং তদ্বারা তন্দ্রহিমপ্রবেশখামেব তে দৃষ্টান্তি ভাঃ।
যত্ত্বসন্তরস্পরিকরৈরপি ভাদৃশং বর্গাতে তত্ত সাক্ষাৎ ভগবিভিভূতিরূপ-

# উদাহরণ ও লক্ষণ ক্রমশঃ প্রদর্শিত হইতেছে॥ তন্মধ্যে স্থরম্যাঙ্গ যথা॥

প্রশংসিতরূপে অঙ্গের যে সন্নিবেশ অর্থাৎ স্থগঠন তাহাকে স্থন্ম্যাঙ্গ বলে॥ ১৯॥

যথা, আহা! মুরারির কি আশ্চর্য্য মধুরিমা ক্ষুর্তি পাইতেছে, বদন চন্দ্রত্ব্য, উরুদ্ধ করিশুণ্ডের ন্যায়, ভুজ কবাটাভং বক্ষঃস্থলমবিরলং জ্যোণিফলকং
পরিক্ষামো মধ্যঃ ক্যু রক্তি মুরহস্তম ধুরিমা ॥
দর্শবসল্লক্ষণান্বিতঃ ॥ ২ ॥
ভবো গুণোত্থমক্ষোত্থমিতি সল্লক্ষণং বিধা ॥
তত্র গুণোত্থং ॥
গুণোত্থং স্যাদ্ গুণৈর্ঘোগো রক্ততা তুঙ্গতানিভিঃ ॥ ২০ ॥
যথা।
রাগঃ সপ্তস্থ হন্ত ষট্রপি শিশোরক্ষেলং তুঙ্গতা

ভলীলাপরিকরাশ্চন্তাদর এব দৃষ্টান্তিভা ইতি সর্বাত্ত জেয়ং। তদেভদ্বিত প্রট্রার তদপ্যনাহত্য কেবলাসুবাদেনৈবাহ অবিরলমিতাাদি। অবিরলমিতি স্থুলখাদি-ভক্তাবয়রকোন বিবেকুসশক।মিতার্থ:॥ ২০॥

রাগ ইতি শ্রীমনুজেবরং প্রতি কসাচিৎ স্বয়সো পোপ্সা বাভামিদং

যুগল স্তম্ভ সদৃশ, করদ্বর প্রশস্ত পদ্মসদৃশ, বক্ষঃস্থল ক্ষাট-তুল্য বিস্তৃত নিতম্বযুগল নিবিড়, মধ্যদেশ অতিকীণ॥

नर्यमहर्मशायित ॥ २ ।

শরীরে গুণোথ এবং অঙ্কোথভেদে সলকণ তুই প্রকার হইয়া থাকে ॥

তন্মধ্যে গুণোপ সক্লকণ যথা।
শরীরে উমতাদি গুণযোগকেই গুণোপ স**ক্লকণ কহা যার।**যথা—

শ্রীমান্ নন্দকে তাঁহারই কোন সমবয়ক্ত গোপ কৰিল [৩১] বিস্তারস্ত্রিয়ু থর্কাডা ত্রিয়ু তথা গম্ভীরতাচ ত্রিয়ু। দৈর্ঘ্যং পঞ্চন্থ কিঞ্চ পঞ্চন্থ সংপ্রেক্ষ্যতো সূক্ষ্মতা দাত্রিংশদ্বরলক্ষণঃ কথমসে গোপেয়ু সম্ভাব্যতে ॥

নপ্তস্থা নেতাস্তপাদকর তলপারধরোই জিহ্বানধের ষ্ট্স বক্ষ: স্করনধনাসিকা-কটিম্থের। তিবু কটিশলটেবক্ষ: । কেচিৎ কটিগানে পিরঃ পঠিস্তি। পুনস্তির জীবাজজ্বামেহনের। পুনস্তির নাভিত্মরসত্বের। পঞ্জ নাসাভ্জনেত্রহুজারুর। পুনঃ পঞ্জ ক্রেশলোমদ স্বাস্তিপর্স্থা। তথৈব মহাপুর্যলক্ষণে সামুদ্রক-প্রসিদ্ধে:। দ্বিভিন্নর্বাণি ভভরক্ষেত্রো গোপেভোছনোভোছিপি প্রেটানি

হে গোপরাজ! তোমার এই অঙ্গজের অঙ্গে যে হাত্রিংশৎ সলকণ দেখিতেছি, ইহাতে ইহার গোপগৃহে জন্ম হওয়া জতীব বিশ্বয়জনক বোধ হইতেছে, কারণ এই বালকের শরীরের সাত ছানে রক্তিমা, ছয় অঙ্গে ভুঙ্গতা, তিন অঙ্গে বিস্তার (পরিসর), তিন অঙ্গে গর্কিতা, তিন অঙ্গে গন্তীরতা পাঁচ অঙ্গে দীর্ঘতা এবং পাঁচ ছানে সূক্ষ্মতা অর্থাৎ নেত্র, পাদ, করতল, অধর, ওঠ, জিহ্বা ও নথ এই সাত অঙ্গে রক্তিমা। বক্ষঃ, কন্ধ্র, নথ, নাগিকা, কটি ও মুথ এই ছয় অঙ্গে ভুঙ্গতা (উচ্চতা)। কটি, ললাট, ও বক্ষঃ এই তিন অঙ্গে ভুঙ্গতা (উচ্চতা)। কটি, ললাট, ও বক্ষঃ এই তিন অঙ্গে থর্বতা। নাভি, স্বর, বৃদ্ধি এই তিনের গন্তীরতা। নাসা, ভুজ, নেত্র, হন্ম (কপোলের পর ভাগ) ও জামু এই পাঁচ অঙ্গে দীর্ঘতা। এবং অক্ (চর্ম্ম), কেশ, লোম, দন্ত, অঙ্গুলিপর্বর এই পাঁচ অংশ বিতা। এই বৃত্তিশ প্রকার মহাপুরুষের লক্ষণ॥

### অকেখং ॥

Cतथायसः तथात्रानि म्यानिकाखः कतानियू॥ २३॥

यथ।।

করয়োঃ কমকৃং তথা রথাসং। স্ফুটরেখা মরমাত্মজন্য পশ্য।

লক্ষণানি বসা সঃ। গোপেরু কথমিতি ভগবদবতারাদিছপোণাদৃশতীশ্রবণাদিছি ভাবঃ॥ ২১॥

করমেরিতি ক্যানিচ্ছৃদ্ধগোপা বচনং। উপলক্ষণানে বৈভানি চিছানি।
পদ্মপ্রাণাদিদ্টান্যান্যপাসাধারণনি জেয়নি। তানিচ যথা পদ্মপ্রাণে, প্রশোবাচ। শৃণু নারদ বক্ষামি পাদ্যোনিচ্ছলক্ষণং। ভগবংক্ষক্ষপ্রস্য হ্যানন্দক্ষনসাচ। অবভারা হৃদংখ্যাতাঃ ক্থিতা মে ত্বাগ্রভঃ। পরং স্মাক্ প্রবক্ষামি
ক্ষক্ত ভগবান্ স্বয়ং। দেবানাং কার্যাস্দ্রাধ্যধাণাঞ্চ তথৈবচ। আবিভূতিভ্ত
ভগবান্ স্থানাং প্রিয়চিকীর্ষয়া। যৈরেব জ্ঞায়তে দেবো ভগবান্ ভক্তবংস্কঃ।
তান্যহং বেদ নানোহেভি স্তামেত্মযোদিতং। যোড়লৈব তু চিছানি মরা
দৃষ্টানি তংপদে। পক্ষিণে চাই চিছানি ইত্রে সপ্ত এব চ। ধ্বলঃ প্রাং তথা

#### व्यक्तियं महाक्रम यथा।

হস্তাদিতে যে সকল রথাকাদি (চক্রাদি) রেখা ভাত্তি কেই অক্ষোথ সল্লক্ষণ কহা যায়॥ ২১॥

#### स्था ।

কোন রুদ্ধা গোপী গোপরাজকে সম্বোধন করিয়া কহি-লেন ছে বলবেন্দ্র! তোমার এই আত্মজের করছয়ে কমল ও চক্রের রেখা, তথা চরণছয়ে ধ্বজ, বজু, অকুশ, মীন এবং পদপল্লবয়োশ্চ বল্লবেন্দ্রধ্বজবজাকুশমীনপক্ষজানি ॥ ২২ ॥
অথ রুচিরঃ ॥ ৩ ॥
সৌন্দর্যোন দৃগানন্দকারী রুচির উচ্যতে ॥ ২৩ ॥
যথা তৃতীয়ে।

বক্তমন্থলো যব এবচ। স্বাভিককোর্মবোচ অষ্টকোণং ভবৈবচ। দৃশ্যস্থে বৈক্ষবশ্রেষ্ঠ দক্ষিণে ভগবংপদে। সপ্তানানি প্রবক্ষামি সাম্প্রভং বৈক্ষবোত্তম। ইক্ষচাপং ত্রিকোণক কলসং চার্মচক্রকং অম্বরং মংসাচিক্ষক গোষ্পদং সপ্তমং স্বৃত্তং। অক্লানোতানি ভো বিশ্বন্ দৃশ্যস্তে তু যদা কদা। ক্ষকাথাং তু পরং ব্রহ্ম ক্রেজাভং ম সংশরং। হরং বাথ ত্রয়ং বাথ চ্ছারং পঞ্চ চৈব চ। দৃশাস্থে বৈক্ষবস্রেষ্ঠ অবভাবে কণকনেভাদি। যোড়শক তথা চিক্ত শৃণু দেবর্ষিসপ্তম। অস্ক্রাচদিতান্তং। শান্তান্তরেষ্ ভাপনাাগ্মবারাহানির্। শক্ষচিক্রচ্ত্রাণি জ্বেয়ানি ॥ ২২॥

भीमार्गाण कोन्ना । २० n

বিধাতুরশ্বীক্ সভৌ কৌশনং ডদিহ জীক্ষসৌন্দর্যো কাংস্নোন গঙং

পক্ষজাদির চিহ্ন সকল স্পাফরপে দেদীপ্যমান রহিয়াছে অব-লোকন কর॥ ২২॥

অথ রুচির ॥ ৩॥

দেশির্ঘারা নয়নের যে আনন্দকারিতা, তাহাকে ক্লচির বলে॥২৩॥

যথা—তৃতীয় ক্ষন্ধে। ২ । ১০ শ্লোকে।।
ভগবান্ মনোহরগৃত্তি ধারণ করিয়াই ধর্মপুত্র যুধিন্ঠিরের

যদ্ধাসূনোর্ব রাজসূরে
নিরীক্ষা দৃক্সন্তায়নং জিলোকঃ।
কাৎ স্থান চাদ্যের গতং বিধাতুরুকাক্ স্থান্টে কৌশ্লমিত্যমন্ত ॥ ২৪ ॥

गथा व!---

অফানাং দমুজভিদগপক্ষানামেকস্মিন্ কথমপি যত্র বল্লনীনাং।
লোলাক্ষিত্রসরভিঙ্কি পপাত ভস্মামোখাতুং দ্যুতিমতি পক্ষিলাৎ ক্ষমাসীৎ॥

শ্রবিষ্টমিত্যমন।ত অষ্তৃৎ। তাদৃক্দেশাস্তম্ভূত্যেতৎ সর্কমিত্যর্থ:। অমংক্তেভি পাঠস্ত লিথনভ্রমাদেব ॥ ২৪ ॥

পृक्षत स्त्रमा न प्रियः कित्रपः वर्गित मा गर्भात (जामार स्वामा हत्रणः

রাজসূর যজে গমন করিয়াছিলেন, তথায় ত্রিভ্বনস্থ যে সকল লোক উপস্থিত হয়, তাহার। সেই নয়নানক্ষপ্রাপ রূপ নিরী-কণ করিয়া এই অনুমান করিয়াছিল যে, বিধাতার মনুষ্য-নির্মাণবিধয়ে যে নৈপুণ্য ছিল, তাহা বুঝি সমুদায় এই মূর্ত্তি নির্মাণেই পরিকীণ হইয়াছে॥ ২৪॥

অথবা ॥

দৈত্যারি শ্রীক্ষের আটটী অঙ্গ পক্ষজের অর্থাৎ মুখ, নেত্রযুগল, করন্ধন, নাভি ও চরণযুগণ এই অন্টাঙ্গের মধ্যে কোনও এক অঙ্গে বল্লবীগণের চঞ্চল লোচনরূপ অলিকূল পতিত হইরা ঐ অঙ্গত্যতিরূপ পক্ষ হইতে কোনক্ষমেই পুন-রুখান করিতে সমর্থ হইতেছে না॥ তেজদা যুক্তঃ ॥ ৪ ॥ তেজো ধাম প্রভাবশ্চেত্যচ্যতে দ্বিধং বুধিঃ ॥

ভত্ৰ ধাম॥

ट्ट प्राजानिर्ड त्यकाम ॥ २० ॥

যথ|ব|---

জাষরমণিনিকুরন্থং বিজ্বায়স্পি মরীচিকুলৈঃ।

হরিবক্ষণি রুচিনিবিড়ে মণিরাজ্যমুজুরিব ক্ষুর্তি॥

প্রভাবঃ॥

পুনরাহ মথা বেতি। অস্টানাং মুখনে অযুগক রযুগনাভিচরণযুগরপাশাং উপলক্ষশানি চৈতানি অন্যেষামকানাং ॥ ২৫ ॥

ত্বথ তেজগা যুক্ত ॥ ৪ ॥

ধাস ও প্রভাব এই হুইকে পণ্ডিতগণ ভেজ কৃহিয়া

ধাকেন ॥

তন্মধ্যে ধাম যথা।। তেজোরাশির নাম ধাম॥ ২৫॥ যথা।

কৌস্তভ মণিরাজ স্বীয় তেজোরাশিদ্বারা .সূর্য্যসমূহকে বিভূম্বিত করিয়া নিবিভূ রুচিকর হরিবক্ষে একটা নক্ষত্তের ন্যায় প্রকাশ পাইভেছে॥

অথ প্ৰভাব ॥

প্রভাবো হুপ্রধর্ষ । প্রভাব: সর্বন্ধিং স্থিতি: ॥

যথা---

দূরতন্তমনলোক্য সাধনং
কোমলাঙ্গমপি রঙ্গমঙ্গলে।
পর্বভান্তট-ভুজান্তরোহপ্যদৌ
কংসমঙ্গনিবহং স বিব্যথে॥
বলীয়ান॥ ৫॥

वलाग्रान्॥ ८॥

প্রাণেন মহতা পূর্ণো বলীয়ানিতি কথ্যতে॥

যথা---

পশ্য বিদ্যাগিরিতোহপি গরিষ্ঠং

অম্বরেতি। বদপোতদের তত্ত্বং তথাপি লোকিকলীবারক্ষার্থং স্থস্য তস্যচ তেলোগোপনমপি করোতি প্রীভগবানিতি স্থাদিতেজসামণি তত্ত্ব ভানং

হুর্দ্ধর্যতা ও সর্ববেশরাজয়কারি তেজকে প্রভাব ক**হে॥** যথা॥

যাহাদের ভূজান্তর শর্কতেদদৃশ দেই কংসমল্লগণ, যদিচ শ্রীক্ষণ্ডের অপ্পদকল কোমল তথাপি দূর হইতে তাঁহাকে অবলোকন করিয়াই ব্যথিত হইতে লাগিলে॥

ज्य वनीत्रान्॥ ए॥

যে ব্যক্তি অভিশন বনবান্ ভাছাকে বলীয়ান্ কছে ॥

যথা---

হে সথি! অবলোকন কর, গিরি-অপেকা গরিষ্ঠ অথচ উন্নত অরিফাহরকে পুগুরীকন্যন শিশুত (মৃষ্টীকৃত) তুল- দৈত্যপুদ্ধবমূদগ্রগরিষ্টং। ভূলথগুমিব পিণ্ডিতমারাৎ পুণুন্নীকনয়নো বিসুনোদ॥

यथा वा ।

বামস্তামরসাক্ষদ্য ভূজদণ্ডঃ স পাতু বঃ।
ক্রীড়াকন্দুকিতাং যেন নীতে। গোবর্দ্ধনো গিরিঃ॥ ২৬॥
বয়সান্থিতঃ॥ ৬॥
বয়সো বিবিধন্থেইপি সর্বভক্তিরসাশ্রয়ঃ।

জের'। নাহং প্রকাশ: সর্বস্যোগ্যায়াসমার্ছ ইত্যাত্যকে:। এবমনাত্রাপি। কৌস্তুভমণিরুড়,রিবেভি বা পংঠ:॥ ২৬ ॥

বংরাছত্র কৌমারপৌগগুকৈশোরাথতেরায়কং ক্রমপ্রাপ্তং জেরং তেনা-বিভসদৃশতর। লব্ধ ইতি ব্যস্তরতার্দ্রারপি প্রাণস্তঃমুক্তং। পশ্চাৎ সাদৃশায়ো-মুমুরিভাষর:। ব্যস ইতি। ধর্মাং সর্বে শুগাং সম্ভাত্মিভিতি ধর্মী পূর্ণাবির্ভাব ইতার্থং। যতঃ সর্বাভক্তিরসাশ্রয়:। অত্য সাধানাভক্তিরসে বর্গত ইতি

খণ্ডের ন্যায় দূরে নিক্ষেপ করিলেন॥

यथा वा ।

ওহে ভক্তর্ক ! পুগুরীকাক শ্রীকুক্ষের যে বাম ভুজাদণ্ড-কর্তৃক গোবর্জনপর্বতে ক্রীড়াকন্দ্কিত হইয়াছিল, সেই বাম-ভুজা তোমাদিগকে রক্ষা করুন ॥ ২৬॥

অথ বয়সাম্বিত। ৬।।

বয়দের কৌমারু, পোগগু ও কৈশোরাদি বিবিধ প্রকার ভেদ থাকিলেও সর্বভিত্তিরসাশ্রেয়, সর্বস্তগান্থিত ও নিত্যু ধর্মী কিশোর এবাত্ত নিজ্যনানাবিলাগবান্॥ ২৭॥ যথা—

ভদাত্বাভিব্যক্তীকৃতভক্ষণিমারস্তরভদং
শ্মিতশ্রীনিধৃতিক্ষুবদমলরাকাপতিমদং।
দরোদঞ্চপঞ্চাভগনবক্লামেছুরমিদং
মুরারেমাধুর্য্যং মনসি মদিরাক্ষীস্পয়তি॥ ২৮॥
বিবিধান্তভাষাবিৎ॥ ৭॥

বিবিধান্তুভাষাবিৎ স প্রোক্তো যস্ত কোবিদঃ। নানাদেশ্যান্ত ভাগান্ত সংস্কৃতে প্রাকৃতেযু চ ॥ ২৯ ॥

#### ८ वर: ॥ २१ ॥

ভথাপি শৃশারাখাসা মহারসসা ভূ পরমোধোধকং ভদিভ্যাশরেনার ভদান ভেতি। তৎকালস্ক ভদাস্বং স্যাদিভাষরঃ। ঈষদর্থে দরাব্যস্থমিভি চ ॥ ২৮ ॥ চকারঃ প্রাদিভাষামিশি গৃহাতি ॥ ২৯ ॥

ন্তন বিলাদবিশিষ্ট কৈশোর বয়সই জাকুঞের প্রশস্ত বয়স্ বলিয়া পরিগণিত ॥ ২৭ ॥

#### যথ |

সম্প্রতি ঐক্তাক্তের তারুণারেন্তের বেগ অভিব্যক্ত হট্যা। হাস্য শোভারার অমল পূর্ণচন্দ্রের দর্প ভিরস্কৃত করত ঈষৎ উন্নত কন্দর্পকলার মেত্র মদিরাক্ষীদিগের অর্থাৎ স্লিস্ক প্রক্রমনাক্ষীদেগের মনোমধ্যে হর্ষ বিধান করিতেছে॥ ২৮॥

# অৰ বিবিধাফুভভাবাৰিং 🗗 ৭ ॥

বে ব্যক্তি নানাদেশীর ভাষা ওথা সংস্কৃত, প্রাকৃত ও প্রাদির ভাষা দকলে হ্রপণ্ডিত ভাষাকে বিবিধায়ুত ভাষা-কিং কলা যায়॥ ২৯॥

#### যথা---

ব্ৰত্নযুবতিষু শৌরিঃ শৌরদেনীং স্করেক্তে প্রণতশিরদি দৌরীং ভারতীমাতনোতি। অহহ পশুষু কীরেম্বপ্যপত্রংশরূপাং কথমজনি বিদগ্ধঃ দর্ববিভাষাবলীষু ॥ সত্যবাক্যঃ॥৮॥ স্যান্নানুতং বচো যদ্য দত্যবাক্যঃ দ ভণ্যতে॥

ব্রজ্যুবভিদ্ধিত । ব্রজ্জ্বিদগ্ধর্দ্ধাব্চনং। অত্র শৌরিরিতি প্রাগরং ষক্ষদেব-সোভাদি শীগর্মবাজ্যারেণ তত্র ব্রজ্যুবভ্রোমুখাথেনোপলক্ষণানোর। ব্রজ্বাসিদিভাপি জ্বেয়ং। শৌরসেনীং তদ্দেশাং প্রাক্তবিশেষ্ক। প্রায়ন্তয়োরক্ষাং। সৌরীং দৈবীং সংস্কৃতরূপাং। পশুরু গোমহিষাদিয়ু। কীরেষু কাশ্মীর-দেশীগ্রস্থায়ু শুকেষু চ অপল্রংশরূপাং শৈশাচিকাথাপ্রাক্ক্তবিশেষভত্তম্বারং যথাসম্ভবং॥ ৩০॥

#### यथा ॥

কোন ব্ৰজন্থ বিদয় বৃদ্ধা গোপী কহিলেন, কি আশ্চর্য্য !
শৌরি শ্রীকৃষ্ণ ব্রজন্মবৃতিগণে শৌরসেনী (প্রাকৃত), প্রণত
দেববৃদ্দে সংস্কৃত, গোমহিষ্যাদি পশু তথা কাশ্মীরদেশীয়
মনুষ্য সকলে ও শুক প্রভৃতি পক্ষিবৃদ্দে অপভ্রংশরূপ পৈশাচী প্রাকৃতভাষা সকল বিস্তার ক্রিতেছেন, অতএব হে
গোপীগণ ! সর্বে প্রকার ভাষায় শ্রীকৃষ্ণ কি প্রকারে বিদশ্ধ
হইলেন॥

### \* সভাব|কা ॥ ► H

যাহার বাক্য নিখ্যা হয় না, ভাঁহাকে সভ্যবাক্য রলিয়া কীর্ত্তন করা যায়॥ यथा ।

পৃথে তনয়পঞ্চকং প্রকটনপ্রিষ্যামি তে রণাদ্বরিভমিত্যভূত্তব যথার্থমেবাদিতং। রবির্ভবতি শীতলঃ কুমুদবন্ধুরপ্যক্ষল— শুথাপি ন মুরাস্তক ব্যভিচরিষ্ণুক্রক্তিন্তব ॥ ৩০ ॥

যথা বা ॥

পূঢ়োছপি বেশেন মহীন্তরদা হরির্যথার্থং মগধেন্দ্রমূচে। সংস্ফীমাভ্যাং দহ পাগুবাভ্যাং মাং বিদ্ধি কৃষ্ণং ভবতঃ দপুছুং॥

ৰকামাণসভাপ্ৰতিজ্ঞত্বেন পৌনক্ল্ডামাশকাহি ধথাবেতি। সংস্ষ্ঠং মিলি-

#### যথা ॥

"হে পৃথে! (কুন্তি!) তোমার এইটা তময় রণক্ষেত্র হইতে প্রত্যানয়নপূর্বক তোমাকে অর্পণ করিব," হে মুরা-ন্তক! তোমার এই বাক্য যথার্থ হইল, কেন না রবি যদি শীতল হয়েন ও কুমুদবন্ধু (চন্দ্র) যদি উষণ হয়েন তথাচ কথন তোমার বাক্যের ব্যভিচার হয় না॥ ৩•॥

#### यथा वा ॥

শ্রীকৃষ্ণ আক্ষণবেশে গৃঢ় হইয়াও জরাসন্ধকে যথার্ছই কহিয়াছিলেন হে মগথেন্দ্র । এই ছুই জন পাওবের সহিত আমি তোমার দেই চিরশক্ত কৃষ্ণ, অবগত হও ॥ প্রিয়ম্বদঃ ॥ ৯ ॥

क्षत्व कुठालतात्पर्शल मास्त्रवामी व्यायमः ॥ ७३ ॥

शथ।॥

কুতব্যলীকেহপি ন কুণ্ডলীব্দ্র । স্থা বিধেয়া সয়ি দোষদৃষ্টিঃ । প্রবাদ্যমানোহদি স্থরাচ্চিতানাং পরং হিতায়াদ্য গবাং কুল্দ্য ॥ ৩২ ॥ বাবদূকঃ ॥ ১০ ॥

শ্রুতি প্রচোক্তিরখিলবাদগুণাম্বিতবাগপি।

18 CO 11 38

্পীড়াথেহপি বালীকং দাাদিতামরঃ ॥ ২২ ॥ জ্বাতি । শক্ষাধুরী দশিতা অধিলেতার্থপরিপাটী ॥ ২২ ॥

### **थिय़त्रम ॥ ৯ ॥**

শপরাধিজনের প্রতিও যিনি সাস্ত্রনা বাক্য প্রয়োগ করেন ভাষাকে প্রিয়ম্বদ বলা যায়। ৩১ ॥

ঘথা।

প্রীকৃষ্ণ কালিয় নাগকে কহিলেন হে কুগুলীন্ত ! আমি তোমাকে পীড়া প্রদান করিলেও তুমি আমার প্রতি দোষ দৃষ্টি করিও না, কারণ অমরার্চিত গোসকলের পরম হিতা-ভিলাবী হইয়াই তোমাকে উবাসন করিলাম। ৩২ ॥

বাবদূক॥ ১০॥ শ্রাবণপ্রিয় ও অধিল গুলাছিত অর্থাৎ অর্থ-পরিপাটী-যুক্ত हैि विधा निगमिट्डा वावमूटका गनौषि छि:॥ ११॥

জ্ঞাদেশ যথা—
ভামিন্টকোনলপদাবলিমঞ্লেন
প্রত্যক্ষরক্ষরদমঞ্জস্থারসেন।
সথ্যঃ সমস্তজনকর্ণরসায়নেন
নাহারি কস্য হাদয়ং হরিভাবিতেন ?॥ ৩৪ ॥
দ্বিতীয়ে। যথা—

অন্নিষ্টেতাাদিকং ব্রক্তেরোগির মহেক্সমণ ভর্গার্থ শীহরিবচন হত্মনকারাঃ ক্যান্টিরন্তিরনালনারাঃ স্থানীঃ প্রতি বচনং। তত্রান্তিইভাচ্চারণমাধুরী। প্রভাকরেতি বর্ণবিশেববিনালমাধুরী সমত্তেতি স্বর্মাধুরী। ৩২॥

প্ৰতিৰাদিভাদিকং শ্ৰীমহন্ধ বাকাং। অত্ন প্ৰতিবাদীভূপনাাসপৰিপাটী।

এই চুই প্রকার বাক্যকে পণ্ডিভগণ বাবদূক বলিয়া কীর্ত্তন করিয়াছেন॥ ৩০॥

তম্মধ্যে ভাবণপ্রিয় বাক্য যথা ॥

ব্রজরাজ নভাগণে প্রীক্ষকে ইন্দ্রমণ ভগ থাড়াবার্থ বিবিধ প্রকার বাক্য প্রয়োগ করিবে তত্ত্রভা কোন বিশক্তনের স্ত্রী প্র বাক্যছারা হৃত্যনা হইয়া আপনার স্থীদিগকে কহিল হে স্থীরন্দ! অদ্য গোপসভামধ্যে প্রীক্ষ হৃপান্ত কোমল পদাবলীছারা যাহা মনোজ্ঞ, ভথা প্রভাকরে অমন্দরণে স্থান প্রাবি ও সমস্ত জন গণের কর্ণ রসায়ন যে বাক্য প্রয়োগ করি-লেন, তদ্বারা কাহার হৃদয় অপহাত্ত না হয় ?॥ ৩৪॥

দিভীয় অর্থাৎ অধিবগুণায়িত বাক্য যথা।

প্রতিবাদিচিত্তপরির্ত্তিপট্ট্র্জগদেকসংশয়বিমর্দকরী।
প্রমিতাক্ষরাদ্য বিবিধার্থময়ী
ছরিবাগিয়ং মম ধিনোতি ধ্রিয়ং॥ ৩৫॥
স্থপাণ্ডিত্যঃ॥ ১১॥
বিদ্বামীতিজ্ঞ ইত্যেষ স্থপাণ্ডিত্যো দিধা মতঃ।
ছিদ্বানখিলবিদ্যাবিমীতিজ্জ্ঞ যথার্হকৃৎ॥ ৩৬॥
ভ্রমাদেশে যথা॥

জগদিতি যুক্তিপ্রিপাটী। প্রকর্ষেণ মিতানি অব্যর্থানি সপ্রমাণানি বা অক্রাণি ঘদ্যামিতি যাথার্থাপরিপাটী। বিবিধঃ নানোপহাসস্মাধানবিচিত্রোহর্ষো যস। । ধেতি প্রতিভাপরিপাটী দর্শিতা ॥ ৩৫॥

অধিলবিদ্যাবিদিভি শাল্লীয়জানমাত্রমুকং। যথাহ কুদিতি। তত্তাপি কর্ত্ত-বেয়ে নিশ্চয়জ্ঞানং দর্শিকঃ॥ ৩৬॥

উদ্ধব কহিলেন, যাহা প্রতিবাদিগণের চিত্ত পরির্ত্তন করণে পটু, যাহা জগতের অশেধ সংশগড়েদনকারী এবং যাহা পরি-মিতাক্ষর ও বিবিধ অর্থশালী সেই হরিবাক্য আমার অন্তঃ-করণকে অতিশয়রূপে স্থথ প্রদান করিতেছে। এ৫॥

অথ হুপাণ্ডিত্য॥ ১১॥

স্পাণ্ডিত্য নারক সুইপ্রকার বিধান্ এবং নীতিজ্ঞ।
স্থিনবিদ্যাবিদ্কে বিদান্ ও যথাযোগ্য কর্মকারিকে নীতিজ্ঞা
করে॥ ১৬॥

जगार्था विचान् यथा॥

যং স্থ্ পূর্বং পরিচর্ষ্য গোরবাহ পিতামহাদাসুধরৈঃ প্রবর্ত্তিতাঃ। কৃষ্ণার্পবং কাশ্যগুরুক্ষমাস্থত-স্তমের বিদ্যাদ্যবিতঃ প্রপেদিরে॥ ৬৭॥ যথা বা॥

আন্নায়প্রথিতার্য়া স্মৃতিমতী বাঢ়ং মড়কোজ্জল।
ন্যায়েনামুগতা পুরাণস্থল্য মীমাংসয়া মণ্ডিতা।

যং স্ট্ৰিড শ্ৰীনারদবাকাং কাশ্য: মধ্রবংশবং। কাশীদেশীয়েছিব সানী-প্রি: ॥ ৩৭ ॥

আনাবেতি সিন্ধচারণাদীনাং স্থাতি:। বিদ্যাপক্ষে আনাবৈশ্চতুর্ভিকেনৈ:। প্রণিতো বিস্তারিতোহবরো বৃৎপত্তির্বসা:। স্থাতির্মঘাদি:। শিক্ষা করো বাকরণং জ্যোতিষ ছন্দ এবচ। নিরুক্তঞ্চ নিরুক্তানি ষড়কানি মনীবিভি: :। নাারস্থকণার্ডা। পুরাণং প্রভাগবতাদি। মীমাংসা পুর্বোত্তররূপ। তদেত্বস্থান

নারদ কহিলেন, পূর্ব্বে ত্রন্ধাপ্রভৃতিরূপ মেঘণণ সগোরবে পরিচর্যা দারা যে কুফার্নব হইতে বিদ্যাসরিৎ প্রবর্তিত করিয়াছিলেন, সেই সকল বিদ্যানদী এক্ষণে সান্দীসনি ক্লশ পর্বত হইতে পুনরায় কফার্নবে পতিত হইল ॥ ৩৭ ॥

সিদ্ধ ও চারণগণ স্তুতিপূর্বক কহিলেন, হে পোবিন্দ ! বাঁহার চারি বেদে বিস্তৃত বৃদ্ধি, যিনি মন্বাদিস্মৃতিশাস্ত্রে মতি-শালিনী, যিনি ষড়কে অর্থাৎ শিক্ষা, কল্ল, ব্যাকরণ জ্যোতিষ,

<sup>‡</sup> ছনোংম্ট বাদিপ্রতিপাদনং। শ্রোতপ্রতিপাদনপর: কর:। শিকা বর্ণ-নির্বান্মিকা। নিককং অপুর্বার্থপ্রতিপাদকং। ব্যাক্ষণ্ড স্থাক ব্যাদিপ্রতি-শাদকং। জ্যোতিবং অধ্যানতদম্ভানকাশনিশায়কং।

ত্বাং লব্ধাবসরা চিরাদ্গুরুকুলে প্রেক্ষ্য স্বসন্থার্থিনং বিদ্যানামবধু\*চতুর্দশ গুণা গোবিন্দ শুক্রাষ্তে । ৩৮॥ ভিতীয়ো মথা॥

মৃত্যুক্তস্করমগুলে স্কৃতিনাং ব্দেশ বসন্তানিলঃ কন্দর্পো রমণীযু তুর্গতকুলে কল্যাণকল্পক্রফ্রনঃ।

সাবেণ চতুর্দশ গুণা: অন্ধানি বেদাশ্চন্তারো মীমাংসা ন্যায়বিন্তর:। ধর্মণান্তং
পুরাণক বিদ্যা হেতাশ্চতুর্দশ ইতি প্রমাণপ্রাপ্তা:। বধুপকে। আরায়: সংকুলারা। অন্ধরো বংশ:। স্মৃতির্মেধা। ষড়সানি শিরোমধাভাগৌ হস্তপাদৌ
চেতি ন্যাবো নীতি:। পুরাণা বৃদ্ধা: স্মৃত্যা স্বায়া যস্যাং তয়া মীমাংসয়
বিচারেণ মণ্ডিতা। শুরুর্জ পিত্রাদি:। সংকুলে বর্ত্তমানমিত্যর্থ:। চতুর্দশ
ভাষ্থিদায়িকা গুণা যস্যা ইতি ॥ ৩৮ ॥

মধুপুরীং নিজা মধ্নাং পতিরিতোব পাঠোৎত্র যোগাঃ। মহারাজৌচিতা-বর্ণনাং। অত্ত মধুপুরীমিতি পুরবর্গোপলকণ্ডেন ছারকাপি মধুনাং পুরী

ছন্দ ও নিক্লক্ত এই ছয় অন্দে উজ্জ্বলা, যিনি ন্যায় অর্থাৎ তর্কশান্তের অনুগামিনী, যাঁহার পুরাণ শান্তেই স্কৃদ্ এবং যিনিং
নীমাংদাশান্তে ভূষিতা দেই চতুর্দ্দশগুণশালিনী বিদ্যাবধূ অবসরলাভপূর্বক গুরুকুলে ভোমাকে স্বীয় সঙ্গার্থি দেখিয়া শুন
ক্রেষা করিয়াছেন ॥ ৩৮ ॥

### নীতিক্ত যথা॥

ত অজেজনেশন ভক্ষরমণ্ডলে মৃত্যুরূপ, পুণ্যবান্ জনসমূহে বনস্তানীল সদৃশ, রমণার্থেদ কন্দর্গ তুল্য, দরিন্তকুলে কল্যাণ ক্ষর্ম সন, বন্ধ্বর্গে: চন্ত্রম্বরূপ ও বিপক্ষপক্ষে কালায়ি ইন্দুর্য স্থানে বিপক্ষপটলে কালারিক দাকৃতি:
লান্তি সন্তিধুবন্ধরে। ব্রজপুরীং নীত্যা ব্রজেক্রাক্সজঃ॥
বৃদ্ধিমান্॥ ১২ ॥
মেধাবী সূক্ষধীশেচনিত প্রোচ্যতে বৃদ্ধিমান্ দিধা॥ ৩৯॥
ভত্ত মেধাবী ষধা॥
ভবন্তিপুরবাসিনঃ সদনমেত্য সান্দীপনেভাবোর্জগতি দর্শরন্ সময়মত্ত বিদ্যার্থিনাং;
সক্ষিগদমাত্তত: সকলমেব বিদ্যাকুলং
দধ্যে হৃদয়মন্দিরে কিম্পি চিত্তবন্ধাধবঃ॥ ৪০ ॥

ভবতীতি যোগর্ত্ত্যা বা বারকাশি জ্ঞেয়া॥ ৩৯॥ সমস্মাচারং দশ্যন্ শিক্ষন্। সমসাঃ সপথাচারকাশশিকাস্তসন্ধিদ ইভি অমস্মানার্থবর্গাৎ॥ ৪৫॥

ক্তদেম হইয়া নীতি দাবা অজপুরী শাদন করিতেছেন ॥
অথ বুজিমান্॥ ১২ ॥
বুজিমান্ ছুই প্রকার, মেধানী একং সূক্ষাবুজি॥ ৩৯ ॥
তক্মধো মেধানী যথা॥

শ্রীকৃষ্ণ অবন্তিপুরবাসি সান্দীপনি গুরুর গৃহে গমনপূর্বক কগভীতলে সমুদার বিদ্যার্থিগণকে আচার দেখাইবার জন্য শুরুর নিকট হইতে একবার মাত্র উপন্থিক হইয়াই নিথিল বিদ্যাকে হুদরমন্দিরে ধারণ করিয়া আশ্বর্ষা প্রদর্শন করাইডে লাগিলেন ॥ ৪০ ॥

## मृक्यधीर्यथा॥

যকুভিরন্নমবধ্যে। স্লেচ্ছরাজস্তদেনং ভরলভমিনি ভিস্মিন্ বিদ্রেশক্ষেব নেষ্যে। স্থানমনিজনিকাভিঞ্জনধ্বংসিদৃষ্টি-ঝ'রমুচি মুচুকুন্দঃ কন্দরে যত্র শেতে॥ প্রভিভাষিতঃ॥ ১৩॥ শদ্যো নবনবোল্লেখিজ্ঞানঃ স্যাৎ প্রভিভাষিতঃ।

यथ। भन्गांवन्ताः ॥

কণভূতে তরলং ভাপ্রং বস্তরাচ্চাদকপ্রকাশং তমো ধর তাদৃশে। মৎ-

## मृकाभीर्यथा॥

স্নেচ্ছরাজকে মথুনাপুরী অবরোধ করিতে দেখিয়া শ্রীকৃষ্ণ মনোমধ্যে বিবেচনা করিলেন, এত যত্নাণের অবধ্য, কোন উপার্থারা ইহাকে বিনাশ করা উচিত, মৃচুকুন্দ যে অন্ধকার পর্বাতকন্দরে নিদ্রিত আছেন, ইহাকে তথায় লইয়া গিয়া ইহার ঘারা তাঁহার নিদ্রা ভঙ্গ করি, তাহা হইলে ঐ মুচুকুন্দের দৃষ্টিমাত্রেই এ যথন ভন্মাভূত হইবে, অতএব পলায়নপূর্বাক তথার লইয়া ধাই॥

### প্ৰতিভাষিত ॥ ১৩ ॥

সদ্যই নব নব উল্লেখকারিজ্ঞানশালিকে প্রতিতাম্বিত কছে

শ্বং কোন প্রস্তাব উপস্থিত হইলে তৎক্ষণাৎ তাইাতে

শূতন শূতন উত্তর প্রদান করার নাম প্রতিভাগ

यथा भन्यावनोटल ॥

বাসঃ সম্প্রতি কেশব ক ভবতো মুগ্রেকণে নম্বিদং ' বাসং ক্রছি শঠ প্রকামস্ত্রগে ছদ্গাত্রসংসর্গতঃ। যামিন্যামুষিতঃ ক ধূর্ত্ত বিতমুমুক্ষাতি কিং বামিনী-

প্রবেশমাত্রেণ চঞ্চীভূততমসীতি বার্থ:। ভরলশুঞ্চলে থড়্গে হারমধ্যমণাবলি ভাক্রে ইভি বিশ্ব:। ঝরম্চীতি নিজাসোধ্যসামগ্রীণামুপলক্ষণং। তাশ্চ ভলীয়-যোগপ্রভাবাদ্যধাবসর্মেব জায়ত্ত ইভি জ্ঞেরং কিন্তুন নেত্রসা ক্ষমদর্শিদ্ধবৃদ্দেরপি ক্ষাবিচারিতং জাঞ্জিতং তেন চ সহ মান্যাপরামূশ্যে বস্তুনি প্রবেশিবৃদ্ধিবং ক্ষ্মধীষ্মুদাজ্তং ॥ ৪১ ॥

এক দিবদ প্রাতংকালে প্রীক্ষ প্রীরাধার নিকট আগমন করিলে প্রীরাধা জিজ্ঞানা করিলেন হে কেশব! সম্প্রতি ভোমার বাদ (বস্ত্র) কোথায়, এই প্রশ্নে প্রীকৃষ্ণ বাদশব্দের বস্ত্রার্থ পরিত্যাগ করিয়া বদতি সম্ভাবনায় উত্তর করিলেন, হে মুগ্নে! তোমার ঈ্ষণে অর্থাৎ ত্বদীয় নেত্রে আমার বাদ, পুনরায় প্রীরাধা কহিলেন, হে শঠ! আমি তোমার বদতির কথা জিজ্ঞানা করি নাই, তোমার বাদ অর্থাৎ বস্ত্র কোথায়? তাহাতেও প্রীকৃষ্ণ বাদ শব্দের গন্ধার্থ উল্লেখ করিয়া কহিলেন হে মুভগে! তোমার গাত্র সংসর্গ নিমিত্ত এই বাদ (গন্ধ) হইয়াছে, পুনশ্চ শ্রীরাধা জিজ্ঞানা করিলেন, হে ধুর্ভ! কোথায় শ্রামন্যামুঘিত: অর্থাৎ যামিনী যাপন করিলা প্রীকৃষ্ণ শ্রামন্যা, মুঘিত এই তুই পদ ভিন্ন করিয়া উত্তর করিলেন, প্রেয়া, মুঘিত এই তুই পদ ভিন্ন করিয়া উত্তর করিলেন, প্রিয়া, মুঘিত এই তুই পদ ভিন্ন করিয়া উত্তর করিলেন, প্রেয়া জত্মীন যামিনী কি কথন হরণ করিতে পারে, এই ক্রপ ছলপুর্ব্বক গোপবধুকে পরিহাদকারী প্রীকৃষ্ণ ভিন্নভাল

ভোবং গোপবধৃং ছলৈঃ পরিহসন্ কৃষ্ণ শিচরং পাতৃ বঃ॥
বিদয়ঃ॥ ১৪॥

কলাবিলাদদিশ্বাত্মা বিদশ্ধ ইতি কীর্ত্ত্যন্ত ॥

গীতং গুদ্ধতি তাওবং ঘটয়তি ক্রতে প্রহেলীক্রমং
বৈগুং বাদয়তে অভং বিরচয়ত্যালেখ্যমভ্যস্যতি।
নির্মাতি স্বয়নিক্রজালপটলীং দূতে জয়ত্মুসানান্।
প্রশোদামকলাবিলাসবসতিশ্চিত্রং হরিঃ ক্রীড়তি॥

চতুরঃ ॥ ১৫ ॥ চতুরো যুগপভ<sub>্</sub>রিসমাধানকুতুচ্যেওে গ ৪১ ॥ যথা ॥

ভোগাদিগকে রক্ষা করুন॥

विषया। 28 ॥

ি শিল্প বিলাসাদিতে যুক্তচিত ব্যক্তির নাম বিদগ্ধ।

স্থি। সন্দর্শন কর, জীকুঞ্চ, গীতনির্মাণ তাওব- (নৃত্য)-রচনা, প্রহেলীকথণ, বেণুবাদন, মালাগ্রন্থন, চিত্র কর্ম্ম অভ্যাস স্বয়ং ইন্দ্রজাল সকল নির্মাণ এবং উন্মন্ত ব্যক্তিদিগকে দূতে পরাজয় করত অভিশয় শিল্পকলার বস্তিস্থল হইয়া আশ্তর্ম ক্রেণ ক্রীড়া করিতেছেন॥

অথ চভুর ॥ ১৫ ॥ এক কালে অনেক কার্য্যের সমাধান কারিকে চভুর কহে॥ যথা ॥ পারাব ঐবিরচনেন গবাং কলাপং গোপাঙ্গনাগণমপাঙ্গতরঙ্গিতেন। মিত্রাণি চিত্রভর্গঙ্গবিক্রমেণ ধিম্মরিউভয়দেন হরিবিরেজে॥

प्रकः ॥ ১७ ॥

তুষ্করে ক্ষিপ্রকারী যক্তং দক্ষং পরিচক্ষতে।
যথা শ্রীদশমে॥

যানি যোগৈঃ প্রযুক্তানি শস্ত্রাণি চ কুরুদ্ধ । হরিস্তান্যচ্ছিনভীক্ষেঃ শগৈরেকৈকশস্ত্রিভিঃ॥ ৪২॥

পারাবতী গোপগীতি:। অবিষ্ট ভয়দেনেতি সর্বত্র যোজ্যং ॥ ৪২ ॥

স্থি! জ্রীক্ষের আশ্চর্য লীলা সন্দর্শন কর, গোপ-জাতীয় গীতিরচনাদ্বারা গাড়ীর্ন্দকে, অপাশ্বভঙ্গীদ্বারা গোপা-শ্বনাগণকে এবং অরিক্টন্তয়প্রদ বিচিত্র যুদ্ধ বিক্রমদ্বারা স্থী-গণকে এক কালীন হুথ প্রদান করত হরি অভিশয়রূপে। বিরাজ ক্রিতেছেন॥ ৪১॥

আগদক্ষ ॥ ১৬ ॥

যে ব্যক্তি তুঃগাধ্য কার্য্য শীদ্র সম্পাদিত করিতে পারে।
ভাহাকে দক্ষ বলে॥

যথা দশমে ৫৯ অধ্যায়ে ১০ স্লোকে ॥
তকদেব কহিলেন, হে কোনব্য! যোজ্গণ যে সকল
অন্ত শত্ৰ নিক্ষিপ্ত করিয়াছিল, জ্ঞীকৃষ্ণ ভীক্ষণরদ্বারা এক এক
করিয়া তৎসমুদ্যা ছেদন করিলেন ॥ ৪২ ॥

यथ। वा ॥

অঘহর কুরু যুগ্মীজ্য নৃত্যং মধ্যৈব স্থমিতি নিখিলগোপীপ্রার্থনাপূর্ত্তিকামঃ। অতসুত গতিলীলালাঘবোর্মিং তথাদে। দদৃশুর্ধিকমেতান্তং যথা স্বস্পার্যে। কুত্তঃ। ১৭॥

কৃতজ্ঞ: স্যাদভিজ্ঞো যং কৃতসেবাদিকর্মনাং। যথা মহাভারতে॥ খানমেতং প্রাবৃদ্ধং মে হৃদয়েনাপদর্পতি।

व्यधिकमञार्वः निःमः नप्तः यथा माछिषा नमृष्ठः ॥ ८०॥

হে অঘহর! "নামার দহিত যুগল হইরা নৃত্য কর" এই রূপে প্রত্যেক গোপী প্রার্থনা কবিলে শ্রীকৃষ্ণ তাঁহাদের কামনাপুরণার্থ এমত গতি লীলার ক্ষিপ্রভা বিস্তার ক্ষিয়াছিলেন যে, তাহাতে ঐ দকল গোপী স্বস্বপার্থেই শ্রীকৃষ্ণকে অবলোকন করিয়াছিলেন॥

क्टबा ११॥

কৃত দেবাদি কর্মাদকলের অভিজ্ঞ অর্থাৎ এ ব্যক্তি আমার এই প্রকার দেবা করিয়াছে, ইহা যিনি জানেন তাঁহাকে কৃতক্ত বলা যায়॥

যথা মহাভারতে।। শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, আমি রবর্তী থাকাতে ফ্রোপদী যে যদোগাবিন্দেতি চুকোশ কৃষ্ণা মাং দূরবাসিনং ॥ ৪০॥ যথা বা॥

> অনুগতিমতিপূর্বাং চিন্তরন্ধ কমোলে-রকুরুত বহুমানং শৌরিরাণার কন্যাং। কথমপি কৃতমল্লং বিস্মন্তরেব সাধুঃ কিমৃত সু থলু সাধুশ্রেণিচুড়াগ্ররত্নং॥

> > স্পূঢ়ব্ৰতঃ ॥ ১৮ ॥

প্রতিজ্ঞানিয়মৌ যদ্য সত্যো দ স্থদৃঢ়ব্রত: ॥ ৪৪ ॥

অমুগতিমিত্যকাতিপূর্কমিতি সাম্প্রতং মহাপরাধমপ্যচিত্ত রিভি ধ্বনার্থা । ৪৪ ॥

হে "গোবিদ্দ"! এই বলিয়া উচ্চস্বরে আমাকে আহ্বান করিয়াছিলেন, এই ঋণ আমার হৃদরে বৃদ্ধি পাইভেছে, কোন ক্রমে ক্ষীণ হইভেছে না॥ ৪০॥

#### যথা বা

জীকৃষ্ণ জাম্বানের অতি পূর্ববিলীন সেবা স্থারণ করিয়া ভদীয় কন্যার পাণিগ্রহণপূর্বক ঐ থাক্ষরাজকে বহুবিধ সম্মান করিলেন, কারণ সাধুজনের অত্যন্ত্র সেবা করিলে ভাহা বধন ভাহারা বিস্মৃত হরেন না, তথন সাধুজেণীর চূড়ায়ত্ব শ্রীকৃষ্ণ জাম্বানের ঐ সেবা কি প্রকারে বিস্মৃত ছইবেন ॥

## হুদৃঢ় ব্ৰভ ॥

প্রতিজ্ঞা ও নিয়ম এই ছুইটি যাহার সভ্য হয় ভাহাকে অনৃত ব্রত করে ॥ ৪৪ ॥

তত্ত্ব সত্যপ্রতিজ্ঞো যথা।
হরিবংশে।
ন দেশগন্ধর্বগণা ন রাক্ষদা
নচাস্তরা নৈবচ যক্ষপর্নগাঃ।
মন্ম প্রতিজ্ঞানপহস্তমুদ্যতা
মুনে সমর্থাঃ থলু সত্যমস্ত তে ॥ ৪৫ ॥
যথা বা ॥
স্থোনমাথ গুলপাগুপুত্রো
বিধান কংমারিবপারিজাতো ।

মুনে হে নাবদ ! সতাং শপথতগ্রোরিতামর: ॥ ৪৫ ॥
ইন্ত্রপক্ষে অপারিজাতবং পারিজাতরাহিতাং। পাওবপক্ষে অপগতশক্রসমূহ ছং। অথমিতি। অন । তিবু দ্বো পাপং পুণাং স্থাদি চেতামরকোষাং।
অথমতম্বাপামিতাাদৌ কিরায়াস্ত্রলাধিকরণডাদ্ধিপরত্বাপি অপশক্ষা

## তমুধ্যে সতাপ্রতিজ্ঞা যথা হরিবংশে ॥

পারিক্ষাতহরণে প্রীকৃষ্ণ নারদকে কহিলেন, হে দেবর্ষে ! কি দেব, কি গল্পনি, কি নাগ, কি রাক্ষস, কি অন্তর, কি যক্ষ, কি পন্নগ, ইহারা সকলেই আমার প্রতিজ্ঞা বিনফ্ট করিতে উদ্যত হইয়াছিল, কিন্তু কেহই সমর্থ হন্ন নাই, অতঞ্জব তোমার নিক্ট শামার এই প্রতিজ্ঞা সত্যই জানিবে ॥ ৪৫ ॥

#### যথা বা॥

জ্ঞীকৃষ্ণ বীরপ্রতিজ্ঞ। দফলার্থ ইন্দ্র ও অর্জ্জ্ন এই চুই জনকে অবলীলা ক্রমে অপারিজাত বিধান করিয়া অর্থীত নিজপ্রতিজ্ঞাং সফলাং দধান:
সত্যাঞ্চ কৃষ্ণাঞ্চ স্থগামকার্যীং ॥ ৪৬ ॥
সত্যানিয়মো যথা ॥
গিরেরুদ্ধরণং কৃষ্ণ হুদ্ধরং কর্মা কুর্বতা।
মন্তক্তঃ স্যাম তুংগাঁতি স্বব্রতং বির্তং ত্রা ॥ ৪৭ ॥
দেশকালস্থপাত্রজ্ঞঃ ডব্ডদ্বোগ্যক্রিয়াকুতী ॥ ৪৮ ॥

पृष्टेचार । उक्तानीनियां ग्राह्म । उक्ता

সভ্যনিরম ইতি সর্বাণতনত্বাৎ কাচিৎক্যা: প্রতিজ্ঞারা ভিদাতেৎসৌ। গিরেক্সকরণমিতি মহেন্দ্রবাকাং ॥ ৪৭ ॥

দেশকালস্থপাত্রজ্ঞ ইতি দেশকালগ্রহণং পাত্রার্থমের ক্বতং। আ ছঃ পাত্রগৈরাজ আধানাং বিবক্ষিতং। বভন্তাদৃশপাত্রাভাবে দেশকালধারপাকিঞিৎকর্মজ্ঞভি-প্রেডং। অতঃ স্থাকোহপাত্রব ক্বতঃ। অতঃ সমুদায়সাপেক্ষিত্যাদেক এব

ইন্দ্রকে পারিজাতশূন্য ও অজুনকে অরিশ্ন্য করিয়া সভ্য-ভামা ও দৌপদীর হুথ বিস্তার করিয়াছিলেন ॥ ৪৬ ॥

সত্যনিয়ম যথা ॥ ১৯ ॥

দেবরাজ কহিলেন, হে কৃষ্ণ! "আসার ভক্ত কথনও ছুঃ-থিত হয় না" এই যে ভোমার নিজ ত্রত, ভাহা গিরি- উদ্ধরণ-রূপ তুষ্ণর কর্মা সাধন করিয়া বিস্তার করিলে ॥ ৪৭ ॥

(म्भकामञ्भाजका ॥ २०॥

়ে ধে ব্যক্তি দেশ কাল পাত্র বিবেচনা করিয়া কর্মা করেন ্রক্টাহাকে দেশকাশহুপাত্রভা বলা যায়॥ ৪৮॥

#### যথা ॥

শরক্ত্যোৎস্নাতৃণ্যঃ কথমপি পরো নান্তি সময়স্থিলোক্যামাক্রীড়ঃ কচিদপি ন রুন্দাবন্যমঃ।
ন কাপ্যস্তোজাক্ষী ব্রজযুবতিকল্পেতি বিমূশশানো মে সোৎকণ্ঠং মুত্রজনি রাসোৎস্বরসে।
শাস্ত্রচক্ষুঃ॥২০॥

শান্ত্রামুদারিকর্ম। যঃ শান্ত্রচক্ষুঃ দ কথ্যতে ॥ ৪৯ ॥

গুণ উদায় ত:। অন্যত্ত দেশজ্জানিকা: পৃথগ্গুণা অণি ভবেষুরিভি বিবেচনীয়ং ॥ ৪৮ ॥

তথৈবোদান্ত । শর্দিতি। মণুরানামুদ্ধবং প্রতি ভগবভঃ স্বচরিতক্থ-নাতঃপাতি বাকামিদং॥ ৪৯॥

#### যথা গ

মথুরায় জ্রীকৃষ্ণ উদ্ধবের প্রতি আপনার আচরিত কথা বলিতে বলিতে কহিলেন সথে! শরজ্জোৎস্নাশালিনী রক্তনী-অপেকা উত্তম সময় নাই, ত্রিলোকীমধ্যে র্লাবনতুল্য রম্পীয় স্থান নাই এবং ব্রক্তযুবতীসদৃশী আর কোথাও পক্ষজাকী (পদ্মলোচনা কামিনী) নাই, অত্রব হে বন্ধো! এই নিশ্চয় করিয়া মৃত্যুক্তঃ রাসোৎসব বিষয়েই আমার মন অভ্যন্ত উৎক্তিত হইতেতে ॥

**判35季 || そ0 ||** 

ে যে ব্যক্তি "শাস্ত্রামুসারে কর্ম করে তাহাকে শাস্ত্রচকু করে॥ ৪৯॥

#### ঘঝা ॥

শভূৎ কংগরিপোনে ত্রং শাস্ক্রগেবার্থদৃষ্টরে । ব নেত্রাস্থপন্ত যুবতীর্ন্দোন্মাদায় কেবলং॥ শুচিঃ॥ ২১॥

পাবনশ্চ বিশুদ্ধশ্চেত্যচ্যতে দ্বিধঃ শুচিঃ। পাবনঃ পাপনাশী স্যাদ্বিশুদ্ধশুঃ ॥ ৫ • ॥ তত্ত পাবনঃ ॥

তং নিব্যাঙ্গং ভজ গুণনিধিং পাবনং পাবনানাং শ্রদ্ধা শুধ্যমতিরতিতরামুক্তমঃশ্লোকমোলিং।

অভূদিতি কস্যচিৎ পরিহাসোক্তিঃ। অথদৃষ্টরে অর্থস্য শুভাশুভজ্ঞানায় ॥৫০॥ তং নিব্যাজ্ঞমিতি প্রায়ো ধৃতরাষ্ট্র- প্রতি শ্রীবিহ্রোপদেশঃ। নামি চাভাস-দং। নামৈকং যদা বাচি স্মরণপথসভং প্রোত্তমূলং গভংবা শুদ্ধং বা, শুদ্ধবর্ণং

#### यथा ॥

কোন ব্যক্তি পরিহাসপূর্বক কহিল যে, কংসরিপুর শাস্ত্র-ক্সপ চক্ষ্ শুভাশুভ পরিজ্ঞানার্থ এংং নেত্রাস্থ্র কেবল যুবতি-রুদ্দের উন্মাদার্থই বিরাজ করিভেছে॥

## **ए** हिः ॥ २२ ॥

শুচি ছুই প্রকার পাকন ও বিশুদ্ধ, তশাধ্যে পাপনাশন-কারির নাম পাবন ও দ্যণাদিপরিত্যাগ কারিকেই বিশুদ্ধ কহিয়া থাকে॥ ৫০॥

ধৃতরাষ্ট্রের প্রতি উপদেশ প্রদানপূর্ণক বিত্র কহিলেন হে কুক্লবর i উত্তমংশ্লোকমৌল শ্রীকৃষ্ণ পাবন লকলেরঙ উদায়ন্তঃকরণকুহরে হস্ত যশ্লামভাণো-রাভাসোহপি ক্ষপয়তি সহাপাতকধ্বাস্তধারাং ॥ ৫১॥ বিশুদ্ধো যথা॥

কপটঞ হঠশ্চ নাচুতে, বত সত্রাজিতি নাপ্যদীনতা। কথ্মদ্য রূথা সামেস্তক! প্রমতং কৌপ্তভ্সথ্যনিচ্ছদি॥৫২ বশী॥২২॥

ৰাবহিত্রহিতং ভারমতে ব সভামিভাতুসারেণ জেয়ং ॥ ৫১ ॥

কণ্টমিতি স্থাজিতমুদ্দেশ। শ্রীমতন্ধন্স। সোংপ্রাসোক্তিঃ। প্রসভস্থ বলাং-কারো, ২ঠ ইতামরপাঠাং হঠ ইতি পুংসোব। প্রসভমিতি তু আর্শ আদিছেন সন্তবাং ॥ ৫২॥

পাবন, তাঁহাকেই তুমি প্রস্নাও বিশুদ্ধমতিদারা অকপটে ভাজনা কর, কারণ যদি তাঁহার নামরূপি সূর্য্যের আভাসমাত্রও একবার অন্তঃকরণে উদিত হয়, তাহা হইলেই পাপরূপ ঘোর ভিসির প্রবাহ একেবারে বিনষ্ট হইলে, অত্রথ হে রাজন্! তুমি ঐ শ্রীকৃষ্ণস্বোতেই অনুরক্ত হও ॥ ৫১ ॥

### विश्वक यथ। ॥

সজাজিত্কে উদ্দেশ করি আক্ষেপপূর্বক উদ্ধব কহিলেন, হে সামস্তক ! প্রীক্ষে ছল বা বল কিছুই দেখিতে পাই না এবং সত্তাভিতেও দীনতা দেখিতে পাই না, তবে কেন ভূমি কৌস্তভের সহিত র্থা স্থা (ব্যস্তা) করিতে ইচ্ছা ক্রি-ভেছা ৫২ ॥

वणी यथा ॥ २२ ॥

া জেভেন্তিয়ঃ প্রোক্তঃ।
যথা প্রথমে ॥
উদ্দামভাবপিশুনামলবস্তুহাদব্রীড়াবলোকনিহতোহ্মদনোহপি যাদাং।
সংমুহ্ চাপমজহাৎপ্রমদোত্রমস্তা
যস্যেক্তিয়ং বিমথিতুং কুহকৈর্ন শেকুঃ॥

উদানেতি। মদন: কামোহণি উন্তট্ চাবহু চকাভ্যাং নির্মাণ্যনাহরাভ্যাং হাষত্রীড়াবলোকাভাাং বিভ্রনজন্তিভাং নিহ্ন: তত্রহিমদর্শনেনাক্তার্থিকত ক্রভবারাদিবলোহভূং। অভএব সংমৃত্ চাপমজহাং। তত্র নিজার প্ররোগং নক্ষত এবেভার্থ:। তদেশং ক্রপলমং ধ্রুরপাক্তরক্তিভানি বাণা ইত্যাদিবল্য-হিমদর্শনার্য্য্রক্রমাত্রহ তথা ভূতা অণি প্রমদোভ্যাঃ প্রমদেন প্রক্রেরিপ্রান্তালাং নক্ষবিশেষেণ প্রমোৎকৃত্রিভাঃ অনুক্র এব যাঃ প্রভাহপুথেক্তর্ত্রেমবভাতালাং সামেজ্রা কৃত্রক ভাদৃশপ্রমাভ্যান্তন কপটাংশ প্রযুক্তঃ সন্তিঃ কটাক্ষাদিতি-বিস্থিত্র বিমথিতুং ন শেকুঃ কিন্ত ব্রেমাক্রপ্রেষ শেকুরিতি ৪ ৫০ ৪

ইন্দ্রিজয়কারিকে "বশী" বলিয়া উল্লেখ করা যায় ॥
যথা প্রথম ১১ অধ্যাছে ৩২ লোকে ॥
শ্রীক্ষের স্ত্রীরসুগণ ঘদিও অভিশন্ত প্রভাবশালী, উল্লেখ্য দিগের গন্তীরভাবসূচক মনোহর হাসা এবং সলক্ষম্ভাষ দর্শনে আহত হইয়া মহাদেবও মোহবশহঃ আপনার ধকুঃ পরিত্যাগ করিয়াছিলেন সত্যা, তথাচ তাঁহারা বিভ্রমাদিচেক্টানারা ডাঁহার স্থিরঃ॥ ২৩॥ আফলোদয়কুৎ স্থিরঃ॥

যথা ॥

নিৰ্দ্বেদমাপ ন বনজমণে মুরারি-নাচিন্তয়ন্তাসনমৃক্ষবিলপ্রবেশে । আহত্য হন্তমণিমেব পুরং প্রপেদে শ্যাত্দ্যমঃ কুতধিয়াং হি ফলোদয়ান্তঃ।

माखः॥ २८ ॥

স শান্তে। তুঃসহমপি যোগ্যং ক্লেশং সংহত যঃ।

यथा ॥

গুরুষণি গুরুবাসক্রেশমব্যাজভক্ত্যা

श्वित ॥ २०॥

কলোদয়পর্যান্ত যে কর্ম করে তাহাকে ছির কছে।

শীকৃষ্ণ সামন্তকাল্বেদণ নিমিত্ত বনভ্রমণে তুঃখিত অথকা
শাক্ষরাজ্ঞের বিলপ্রবেশে কোন চিন্তা করেন নাই, মণিগ্রহণ
করতই দারকার আসিয়াছিলেন, যেহেতু স্থিরচিত্ত ব্যক্তিরা
কলসাধনপর্যান্তই কার্য্যে উদ্যাহান্তিত হইয়া থাকেন।

व्यथ माख ॥ २८ ॥

উপযুক্ত ক্লেশ ছু:সহ হইলেও যিনি সহা করেন তাঁহাকে দান্ত বলে॥

খ্যপা ॥

জ্ঞীকৃষ্ণ কোমলাঙ্গ হইলেও অকপটভক্তিনিবন্ধন গুরুগৃহে

হরিরজগণদন্তঃ কোমলাকোহপি নায়ং। প্রকৃতিরতিত্বরহা হস্ত লোকোত্তরাণাং কিমপি মনসি চিত্রেং চিস্ত্যমানা তনোতি॥ ক্ষমাশীলঃ॥ ২৫॥

ক্ষমাশীলোহপরাধানাং সহনঃ পরিকীর্ত্তাতে ॥
যথা শিশুপালবধে মহাকাব্যে ১৬।২৫। ক্লোকঃ।
প্রতিবাচমদত্ত কেশবঃ, শপমানায় ন চেদিস্ভূতে।
অমুহুস্কুক্তে ঘনধ্বনিং, নহি গোসায়ুক্তানি কেশরী ॥৫০
যথা বা ॥

যামুনাচার্য্যন্তোতে ॥

বাদ রূপ গুরতর ক্লেশও গণনা করেন নাই, কারণ লোকা-তীত ব্যক্তি দিগের ছুরহা প্রকৃতি চিন্তামানা হ**ইয়া কি না** আশ্চর্য্য বিধান করিতে পারে॥

অথ ক্ষমাশীল ॥ ২৫ ॥

অপরাধ্যকল সহনকারি ব্যক্তিকে ক্ষমাশীল কর্হে ॥

যথা সহাকান শিশুপালবধে ১৬ সর্গে ২৫ শ্লোক ॥

চেদিপত্তি শিশুপাল পুর্নোক্ত প্রকারে শ্রীকৃষ্ণকে বহু বহু

নিন্দা করিলে শ্রীকৃষ্ণ তাহাতে কোনই উত্তুর করিলেন না,
কারণ, শিংহ মেঘগর্জন করিলেই ভাহার প্রতি হুমার কর্জ
প্রতিগর্জন করিয়া থাকে, কিন্তু শৃগালের ধ্বনিতে কর্পাভ্ত

यथाना यामूनाहार्याटकाटका।

রঘুবর যদভূত্ত্বং ভাদুশো বায়সদ্য व्यन इ डि महानुर्य हिमामा कृष । প্রতিভবমপরাদ্ধু মুম্ম দাযুদ্যদোহভূ-বিদ কিমপদমাগন্তস্য তেহন্তি ক্ষমায়াঃ॥

গম্ভী ে ル ২৬ ॥

ছুর্নিবোধাশয়ে। যস্ত্র স গম্ভার ইতার্য্যতে ॥ ৫৪ ॥

রন্দাশনে বরাভিঃ স্ততিভিনিতরামুপাদ্যমানোহপি।

त्रधूरति । भूनकृषाद्यशीममः भूक्षेत्राविकायास्य शरीवितानः नातिकृ ক্ষমাবকে। ঘনধ্যনাবসহনতানিতি বিচার্যাং। অংগ প্রতিভবমপর।ফুরিতাাদিন। त्रपुरतामभारकर्यः मर्लिङः ॥ ৫८ ॥

বুন্দাবন ইতি তৎস্ত্রতিবিশেষদ। স্পষ্টতার্থমূক্তং। রুপ্টক্রটো বেতি জ্ঞারুং

**८ इत्रु**वत ! यनि इस्त काक **अवः स**ग्रस्त छानुमा छङ्ग-ভর অপরাধ অর্থাৎ জানকার স্তনে চঞ্চাঘাত করিলেও সে প্রাণত হইবামাত্র তুমি তাছার অপরাধ মার্জ্জনা করিয়াছ, কিন্তু কে কৃষ্ণ ! তুমি অভিমৃগ্ধ, কারণ প্রতিহ্নদােই অপরাধ কারি শিশুপালকে যথন সাযুদ্ধা প্রদান করিয়াছ, তথন তোমার ক্ষমগুণের নিকট কোন্ অপরাধ যোগ্য হইতে পারে ? অর্থাৎ ভূমি দকলই মার্জ্জনা করিতে পার 🖟 🦠

অথ গস্তীর ॥ ২৬॥

ষাহার আশর (অভিপ্রায়—মনোগত ভাব) অভিশক্ত ছর্বেষ তাহাকে গন্তার বলে । ৫৪ ॥

यथा ॥

ব্রন্থাবনে উত্তর উত্তর স্তৃতিছার। জীকুফের উপাদনা

শিক্তোন হরিবিধিনা রুফ্টস্তফৌ হথবা জ্ঞাতুং॥
যথা বা॥

উন্মদোহপি হরিন ব্যরাধাপ্রণয়দীধুনা।
জভিজেনাপি রামেণ শক্ষিতোহয়মবিক্রিয়ঃ॥ ৫৫॥
ধৃতিমান্॥ ২৭॥
পূর্ণস্পৃহ\*চ ধৃতিমান্ শান্ত\*চ ক্ষোভকারণে॥ ৫৬॥
তত্তাদ্যো যথা॥

পূর্ণেতি। ধৃতিম নিঃসংযমনং ভদান্ তত্ত পূর্ণা সর্কাশৃহণীয়লাভাৎ ক্লভার্থা শুক্ষা যসাস পূর্ণাপৃহঃ। পূর্ণাপৃহতাকারণধৃতা। যুক্ত ইতার্থঃ। শান্ত ইতি পূর্ণ-শুহ্মাভাবেহণি ধৃতা। কোভাবাধে ইতার্থঃ॥ ৫৬॥

করিলে তিনি তুট বা রুষ্ট হইলেন জগদ্বিধাতা তাহা কিছুই জানিতে পারিলেন না॥

#### যথা বা ॥

শ্রীরাধার নব্য প্রেমায়তে শ্রীকৃষ্ণ উন্মন্ত হইয়াছিলেন কিন্তু আশ্চর্য্যের বিষয় এই যে, সর্বাজ্ঞ বলদেবও তাহা কিছুই জানিতে পারেন নাই, তাঁহা কর্তৃক তিনি অবিক্রিয় অর্থাৎ নির্ব্বিকার রূপেই লক্ষিত হইয়াছিলেন॥ ৫৫॥

অথ ধৃতিমান্॥ ২৭॥

যে ব্যক্তি পূর্ণস্পৃহ অর্থাৎ নিরাকাজ্য এবং ক্ষোভের কারণদত্ত্বেও শান্ত, তাহাকে প্রতিমান্ কছে॥ ৫৬॥

তন্মধ্যে পূৰ্ণস্পৃহ যথা॥

ন শক্তঃ শক্যো নাভুং ॥ ৫৫॥

স্বীকৃর্বন্ধপি নিতরাং যশঃপ্রিয়ত্বং কংদারিম গধপতেব ধপ্রসিদ্ধাং। ভীমায় স্বয়মতুলামদত্ত কীর্ত্তিং কিং লোকোত্তরগুণশালিনামপেক্ষ্যং॥ ৫৭॥ বিতীয়ো যথা॥

নিশ্বিদ্য দমবোষসূত্র। সন্ত্রেণ মুনিভিঃ স্তত্তস্য চ।

ত্বীকুর্বনিতি। পূর্ণস্থ্যমত্র লোকোত্তরগুণশালিখেন লক্ষাতে। তত্তচ সতি
ভীমার যশোদানে নিরুণাধিতয়া স্লিগ্রভাবত্বপি লভ্যতে। যদিনা সর্বেছপানো
গুণা জনার অরোচমানাঃ ত্বরুপাদ্ভশান্তি। তত্তশ্চোপসরমাত্তের্ ভুস্য নিরুণ পাধিতয়া স্লিগ্রেগ্র লব্ধে নিরুপাধিভকেষু স্লুতরামেব তাদৃশত্বং স্থাৎ তৎস্থধার্থ-মেব যশংপ্রিরত্বমপ্যন্তবভি। তেহি ভুদ্মশা অধিক্ষানন্দং যান্তি। তদেবং
স্থিতে তেরু নিজ্যশশ্চ সংক্রময়তি স ইভাত্তো যশঃ প্রিয়্রত্বছণি পূর্ণস্থ্তমেব দেবিদ্ধাত ইতি ॥ ৫৭ ॥

নিন্দিতসোতি। অতেদনেবোদাহরণং মতু সন্ত্রমেণেতাপি। পরত্র থলু গান্তীগ্যমেব লক্ষাতে। মুনয়ো হৃত্র ভক্তান্তংকুতক্তবাদ্তর্হিঃস্থাপ্রাপ্তিরত্যের।

শীক্ষ যশঃপ্রির ছইলেও মগধরাজ জরদক্ষে প্রদিদ্ধ অতুল কীর্ত্তি স্বয়ং ভীমদেনকেই দমর্পণ করিয়াছিলেন, যে-হেড় লোকাতীত গুণশালী ব্যক্তির কি—অপেক্ষণীয় ছইতে পারে ? ॥ ৫৭ ॥

কোভের কারণ সত্ত্বেও ক্ষান্ত যথা॥

মহারাজ যুধিষ্ঠিরের রাজসূয় যজ্ঞে দমঘোষ নন্দন শিশু-পাল শ্রীকৃষ্ণের নিন্দা করিল এবং মুনিগণ সন্ত্রমপ্রকাশপূর্ব্বক 'ভাঁহাকে শুব করিলেন কিন্তু শ্রীকৃষ্ণের আশ্চর্য্য ধৈর্য্য এই রাজস্থসদসি ক্ষিতীখরৈঃ কাপি নাস্য বিক্নতিবি তির্কিতা॥ ৫৮॥

मयः ॥ २৮॥

तांशरवयवित्रुरक्ता यः मभः म कथिरका दूरिः।

যথা জীদশমে॥

ন্যায্যো হি দণ্ডঃ কৃতকিল্পিষেশ্যিং— স্কবাৰতারঃ থলনিগ্রহায়

গান্তীর্বাধুত্যো: ধলু আবৃত্তবাংস্বাভানের ভেদ ইতি ॥ ৫৮ ॥

রিপোঃ স্থানামিতি। স্থা রিপুরয়মিতি যা ন বিষমদৃষ্টিস্বং কিন্ত তুলাদৃষ্টিরেব। যতো ন্যায়ান্যায়াভ্যামেব বিষমদৃষ্টিরসি তত্রানাগ্রস্থভাবস্য রিপোর্যদমং ধংসে তচ্চ ফলমেবামুশংসন্ ধংসে। আরত্যাপি মোক্ষাদিস্থপ্রাণণাং।
অভএব রিপুস্তরোম্ভলাদর্শিরং লক্ষং। লোকে পিতাদৌ তথা ছৃষ্টপুরশাসন-

যে, কোন কিতীশ্বরই জ্রীক্ষের বিক্তি লক্ষ্য করিতে সমর্থ ছইতে পারে নাই॥ ৫৮॥

অথ সম॥ ২৮॥

যে ব্যক্তি রাগ ও দেষ হইতে বিমুক্ত, পণ্ডিতগণ তাহা কেই সম কহেন॥

पर्भार ३७ व्यक्षारिश २० (श्रांटिक II

প্রণামান্তর নাগপত্মীগণ কহিলেন, হে ভগবন্! আপনি ধলদিগের নিগ্রাহ নিমিত্ত অবতার গ্রহণ করিয়াছেন, আমা-দের পতি কালিয় ধল, এ পাপ করিয়াছিল ইহার এরূপ দণ্ড ন্যায্য (সঙ্গত) ৰটে, প্রভো! শক্রতে এবং পুত্রে আপন- রিপোঃ স্থতানামপি তুল্যদৃষ্ঠি-ধ্ৎদে দনং ফলমেবাতু শংদন্ ৫৯ আ যথা বা ॥

বিপুরপি য'দ শুদ্ধো মণ্ডনীয়স্তবাদো যত্নর যদি তুফৌ দণ্ডনীয়ঃ স্থতোহপি। ন পুনরবিলভর্ত্ত্বঃ পক্ষপাতোজ্ঝিতদা ক্ষচিদপি বিষমং তে চেষ্টিতং জাদটীতি।

विमानाः ॥ २२ ॥

मानवीरत। ভবেদযञ्ज म वमारना। निगमार् । ७०॥

দৃষ্টেরিভার্থ: অনে বিপুর্জরাসক্ষস্তাদি:। কালিকাপুরাণে বরাহাবতায়ে ভাদৃ-গিতিহাসাৎ। স্থানেরকাসুরাদি:॥ ৫৯॥

রিপুরণীতি। শুক্ষ: কমি শিচন্যায়বিশেষে দোষরহিত ইতার্থ:। ছুইস্তদ্ধি-পরীত ইত্যর্থ:। পক্ষপাতোহত্র স্বাতন্ত্রেণ ক্যাচিৎ পক্ষ্যা গ্রহণং॥ ৬০ ॥

কার সমান দৃষ্টি, আপনি ভাল আলোচনা করিয়াই দণ্ড বিধান করিয়া থাকেন॥ ৫৯॥

যথাবা॥

হে যন্ত্বর ! রিপু যদি নির্দেষি হয়, তাহা হইলে তুমি তাহাকে ভূমিত কর, আর পুত্রও যদি দুফ হয় তথাপি তাহাকে ভূমি দণ্ড প্রদান করিয়া থাক, যেহেতু ভূমি অথিল লোকের ভর্তা, তোমার পক্ষপাত নাই, অতএব পুনরায় তোমার বিষমস্থভাব কি প্রকারে সম্ভব হইতে পারে ?॥

অথ বদান্য॥ ২৯॥

যে ব্যক্তি দানবীর অর্থাৎ অভিশয় দাতা, তাহাকে শাস্ত্র-কারেরা বদান্য বলেন॥ ৬০॥ ,था ॥

দৰ্শ্বাৰ্থিনাং শাঢ়মভীষ্টপূৰ্ত্ত্যা ব্যৰ্থীকৃতাঃ কংশনিসূদনেন। ব্ৰিধেন চিন্তামণিকামধেমু-কল্পদ্ৰুমা দাৱবতীং ভঙ্গন্তি॥ ৬১॥

যথাবা ॥

যেনাং শোড়শ পূরিতা দশশতী স্বান্তঃপুরাণাং তথা চাইট্লাইশতী বিভাতি পরিতন্তংসংখ্যপদ্মীযুদ্ধাং।

সর্বার্থিনামিতি বন্দিজনস্ততি:॥৬১॥ উক্তামেব দানক্রিয়ামেকদেশদর্শনিয়া পুষ্ণাতি যেঘামিতি। পুরিতরং

কংস নিস্দন শ্রীকৃষ্ণ সর্বাথি সকলের অর্থাৎ সর্বপ্রকার কামিব্যক্তিগণের অভিশানরপে অভীষ্ট পূর্ণ করিয়া চিন্তামণি, কামধেতু ও কল্লরক্ষদিগকে ব্যর্থ করিলেন, ভাষাতেই চিন্তা-মণিপ্রভৃতি লজ্জিত হইয়া দারাবতীকেই ভঙ্গনা করিজেলাগিল ॥ ৬১॥

#### यथा वा ॥

ঘারকানগরীতে শ্রীকৃষ্ণের মোড়শ সহস্রও এক শত অন্ত:
অন্ত:পুর সর্বতোভাবে শোভা পাইতেছে, ঐ সকল অন্ত:পুরের প্রত্যেক গৃহে পত্নীদকল বিরাজ করিতেছেন, শ্রীকৃষ্ণ
প্রতি অন্ত:পুরে প্রত্যহ সালক্ষ্ণতা, সবংসা, গৃষ্টি অর্থাৎ প্রথম
প্রসূতা গাভীগণের বন্ধ সংখ্যা অর্থাৎ ত্রয়োদশ সহস্র-

একৈকং প্ৰতি তেয়ু তৰ্ণকন্ত্ৰাং ভূষাজুষামশ্বহং গৃষ্ঠীনাং যুগপচ্চ বন্ধমদদাদ্যস্তদ্য বা কঃ সমঃ ॥ ধাৰ্মিকঃ ॥ ৩০ ॥

কুৰ্বন্ কারয়তে ধর্মং যঃ স ধার্মিক উচ্যতে ॥ ৬২ ॥

यथा ॥

পাদৈশ্চতুর্ভিভ্বতা রুষদ্য গুপুস্য গোপেন্দ্র তথাভ্যবর্দ্ধি। স্বৈরং চরদ্বেয় যথা ত্রিলোকী-মধর্মশস্পানি হঠাজ্জঘাস॥

ঙাণিভাষা রিটারা:। বুরুজা:। গৃষ্টানাং প্রথমপ্রতানাং বদ্ধং চতুরশীভাষ্টসহস্রাণি অবেশাদশ ১০০৮৪। প্রকারাস্তর্মেতৎ পদ্যং ত্যক্তং॥ ৬২॥

পালৈ শতুর্জিরিতা। দি ঘরং শ্রীনারদসা নর্মারচনং। কুর্বন্ কারয়ত ইত্য-

শীতি ১৩০৮৪ (তের হাজার চৌরাশী) করিয়া এককালীন দান করিতেছেন অতএব ভূৰণ্ডলে শ্রীকৃষণসদৃশ কোন্ব্যক্তি দানবীর হইতে সমর্থ হইবে ?॥

ত্মথ ধার্ন্মিক॥ ৩০॥

যে ব্যক্তি স্বয়ং ধর্ম যাজন করেন ও অন্যকে ধর্ম যাজন করান ভাঁহাকে ধার্মিক কছে॥ ৬২॥

যথা 🖁

নারদ পরিহাদপূর্বক শ্রীকৃষ্ণকে কহিলেন, হে গোপেন্দ্র!
তোমাকর্ত্ক চরণচতুষ্টয় সহকারে ব্য (ধর্ম) এরপ বর্দ্ধিত
ছইল যে, সে স্বেচ্ছাপূর্বক তৃণভোজন করিতে করিতে
হঠাৎ ত্রৈলোক্যে অধর্মারূপ তৃণ ভক্ষণ করিয়া ফেলিল ॥

যথা বা ॥
বিভায়মানেভঁবতা মথোৎকরৈরাক্ষ্যমাণেয় পতিধনারতং ।
মুকুন্দ ! খিন্নঃ হুরহুক্রবাং গণস্তবাবতারং নবমং নমস্যতি ॥ ৬০ ॥
শ্রঃ ॥ ০১ ॥

উৎসাহী যুধি শূরোহস্ত্রপ্রয়োগে চ বিচক্ষণঃ।

নয়োর্বজিক্রমেণোদাহরণে। ক্রেয়ে। যথাবেতাত্তত্ চার্থে বা শব্ম:। গোপেন্দ্রেভি লিষ্টং। গাং পৃথিবীং পাতীতি গোপঃ। গোপো ভূপে ইত্যমরনানার্থবর্গনাঠাং॥ ৬৩॥

#### যথা বা॥

হে মৃকৃন্দ! তুমি বহু বহু যজ্ঞ বিস্তার করিয়া নিরন্তর দেবগণের আহ্বান করিয়া থাক, এ নিমিত্ত দেবাঙ্গণাগণ পতি-বিয়োগে থিন্ন হইয়া তোমার নবমাবতার যে বুদ্ধমূর্ত্তি, তাঁহা-কেই তাঁহারা স্তব করিতেছেন অর্থাৎ তাঁহাদের অভিপ্রায় এই যে, ভগবান্ বুদ্ধদেব পৃথাতলে অবতীর্ণ হইয়া যজ্ঞবিধির নিন্দা করিবেন, একণে যদি সেই বিধি প্রচলিত হয়, তাহা হইলে যজ্ঞের অভাব প্রযুক্ত আর দেবগণের আহ্বান হইবেক না, স্তরাং আমাদের পতিবিয়োগরূপ তুঃথ একেবারে বিনিন্দ্র হইবে॥ ৬৩॥

### অথ শুর॥

युष्कविषद्य छेरमारी उ अञ्जञ्जद्यादम विष्ठक्रन, अहे इंहेरक

তত্তাদ্যো যথা॥
শৃথু দমরদরো বিগাহ্য কুর্বন্
বিষদরবিন্দবনে বিহারচর্যাং।
স্ফুরদি তরলবাহাদগুত্তওস্থমঘবিদারণ বারণেক্রনীলঃ॥

त्रि**औ**रशा गथा॥

ক্ষণাদক্ষেহিণীরকে জরাসন্ধদ্য দারুণে। দৃষ্টঃ কোহপ্যত্র নাদষ্টো হরেঃ প্রহরণাহিভিঃ॥

উৎসাহীতি। উদাহরণবৈচিত্রার্গমেকবৈদাব শ্রস্য বিধা নিরূপণং। 'এবং 'যথাহ'মুত্তরত্রাপি জ্ঞোহ। পৃথিতাাত্যদাহরণপদ্যে ভূক্ষিবদিত্যাদৌ অবিরল-

শুর বলা যায়।

**जनात्या** युक्तिनत्य छेश्माही यथा॥

হে অধ্বমন ! তুমি গজেন্দ্রের মত লীলা বিস্তার করিয়া সমরস্বরূপ বিস্তৃত সরোবরে আপনার তরল ভুজদগুরূপ শুগু-দ্বারা বিপক্ষরূপ পদ্মবনকে বিশেষরূপে মর্দ্দন করত অত্যস্ত ক্রুব্রিশীল হইতেছে হুইা তোমার উপযুক্তই বটে॥

অস্ত্র প্রয়োগে বিচক্ষণ যথা॥

শ্রীকৃষ্ণের কি আশ্চর্য্য অস্ত্রশিক্ষা, ক্ষণকালের মধ্যে মগ-ধাধিপতি জরাসদ্ধের ত্রয়োবিংশতি অক্টোহিণী দারুণদেনা ভদীয় অস্ত্ররূপ সর্পকর্তৃক দফ্ট হয় নাই, এমত কাহাকেও দেখিতে পাওয়া যায় নাই॥ করুণঃ॥ ৩২॥

পরতঃখাসহো বস্তু করুণঃ স নিগদ্যতে ॥ ৬৪ 🛭

যথা n

রাজ্ঞামগাধগতিভিম গধেন্দ্র কারা-তুঃপান্ধ কারপটলৈঃ স্বয়মন্ধিতানাং। অক্ষীণি যঃ স্থ্যময়ানি ঘুণী ব্যতানী-ছন্দে তমদ্য যতুনন্দনপদ্মবন্ধুং॥ ৬৫॥

যথা বা ॥

শৈবলগামিতি পাঠান্তরং যোগামিতি॥ ৬৪॥

রাজ্ঞামিতি নির্ধাণসময়ে প্রীভীমবচনং। স্বয়মিতি কর্মকর্ত্বদো†তকং। জুপ্তপ্স। করণা রণেতামর:॥ ৬৫॥

### অথ করুণ। ৩২ ।

যে ব্যক্তি পরত্বঃখ সহু করিতে না পারেন, তাঁহাকে করণ বলা যায় ॥ ৬৪ ॥

### यथा ।

ভীম প্রাণত্যাগ সময়ে কহিলেন, যিনি করুণা বিস্তার
পূর্বক মগধেন্দ্রের কারাবাসরূপ অগাধ ছঃখময় অন্ধকার সমূহে
স্বয়ং অন্ধীভূত নৃপতিগণের নেত্র সকল হুখময় স্বরূপে বিস্তার
করিয়াছিলেন, সেই যহনন্দনরূপ পদ্মবন্ধুকে (সূর্য্যকে)
বন্দনা করি॥ ৬৫॥

যথা বা॥ [৩৬] স্থালম্মনবারিতির্বিরচিতাভিষেক থি
প্রনাভরতরঙ্গতঃ কবলিতাজ্মবিস্ফূর্ত্তিয়ে।
নিশাতশরশায়িনা স্থানসিহিস্থতেন স্মৃত্যেঃ
সপদ্যবশবস্থানো ভগবতঃ কুপানৈ নমঃ॥
মানামানকুৎ॥ ৩৩॥

यान। यानक्षर ॥ २००॥ শুরুত্রাহ্মণরুদ্ধাদিপূজকো মান্যমানকৃৎ॥

यथा ॥

অভিবাদ্য গুরোঃ পদাস্কুঞং

আব্দ্রতি। ত্বস্তিংস্তেন কর্ত্তা যা স্থৃতিস্তন্য হেতোগ। ভগবতঃ কুপা ভাষ্যে নমঃ। কীদুল্যৈ। গুৱাভরত্তরঙ্গতো হেভোঃ ক্বণিতা আছিনো ভগ-

যৎকালীন গঙ্গাতনয় ভীত্ম প্রথরতর শরশয্যায় শ্রান হইয়া শ্রীক্ষকে স্মরণ করেন, তথনই শ্রীক্ষেরে শ্রীর অবশ হয় এবং তরিবন্ধন তিনি এরূপ কুপা বিস্তার করিয়াছিলেন যে, ভীত্মের ঐ অবস্থা দেখিয়া তদীয় নেত্র হইতে অশ্রুপাতও হইতে লাগিল, তাহাতেই শ্রীকৃষ্ণ অভিষিক্ত হওত ব্যস্ত হইয়া যাইতে যাইতে আজুম্বৃতি বিস্মৃতি হইয়াছিলেন, অত-এব সেই ভগবৎকুপাকেই নমস্কার করি॥

মান্যমানকুং॥ ৩0॥

ি যিনি গুরু, আহ্মণ এবং রন্ধগণের পূজা করেন, তাঁহাকেই মান্যমানকুৎ বলা যায়॥

यथा॥

শ্রীকৃষ্ণ প্রথমে গুরুচরণাম্বুজে অভিবাদন করিয়া তং-পশ্চমৎ পিতা ও অগ্রজের চরণে প্রণত হইলেন, পরে 5: क्यालकालिका ॥ विनशी॥

ঔদ্ধতাপরিহারী যঃ কথাতে বিনয়ীতাগো॥ যথা মহাকাব্যে শিশুপালবধে। ১০ সর্গে ৭ ল্লোকঃ ॥ অবলোক এব নৃপতেঃ স্ম # দূরতো রভদাদ্রথাদবতরীত্বমিচ্ছতঃ। অবতীর্ণবান প্রথমমাত্মনা ণ হরি-বিনয়ং বিশেষয়ভি সম্ভ্রমেণ সঃ॥ ৬৮॥

বর্ণদৃত:। পিশুনৌ থলস্চকাবিভামর: ॥ ৬৮ ॥

সকলেও অসুয়া প্রকাশ করেন না। অতএব এই কমলেকণ শ্ৰীকৃষ্ণ স্বীয় স্থালতায় অতিশয় নিৰ্মলচেত। হইয়াছেন। অথ বিন্ধী ॥

যে ব্যক্তি আপনার ঔদ্ধত্য পরিত্যাগ করেন, ওঁছাকে विनशी वला घाष्ट्र॥

যথা মহাকাব্য শিশুপালবধে ১০ সর্গে ৭ শ্লোকঃ॥ রাজসুন্ন যজার্থ দ্বারকা হইনত এক্রিফ ইন্দ্রপ্রশ্বে আদি-তেছেন এমন সময়ে মহারাজ যুধিষ্ঠির তাঁহার অভ্যর্থনা করি-ভেছেন ॥

রাজা যুধিষ্ঠির দূর হইতে জ্রীকৃষ্ণকে (কনিষ্ঠ পৈতৃত্ববেয় ভ্রাতাকেও) অবলোকন করিয়া বেগে রথ হইতে অবতরণ করিতে ইচ্ছা করিলে, জ্রীকৃষ্ণ সম্ভমপ্রকাশপূর্বক অগ্রেই রথ হইতে অবতরণ করিয়া কেবল আপন বিনয়কেই বিশেষ রূপে প্রকাশ করিলেন। ৬৮।

<sup>†</sup> প্রথমমাধনং, এতাবলি পাঠে।

পিতরং পূর্বজনপ্যথানতঃ। হরিরঞ্জলিনা তথা গিরা যতুর্দ্ধাননমৎ ক্রমাদয়ং॥ ৬৬॥

मिकिनेश ॥ २८ ॥

দেশিল্যদোগ্যচরিতো দক্ষিণঃ কীর্ত্তাতে বুধৈঃ ॥ ৬৭ ॥

यथा ॥

ভূত্যস্য পশ্যতি গুরুনপি নাপরাধান্ গেবাং মনাগপি কৃতাং বহুধাভ্যুষ্টপতি। আবিজরোভি পিশুনেরপি নাভ্যসুয়াং

বতঃ ক্রি: অয়মহমস্মীতি জ্ঞানং যসাগং তাদৃশৈয় ॥ ৬৬ ॥ সৌশীলোন স্বভাবেন সৌমাং স্থকোমলং চরিতং যসা ॥ ৬৭ ॥ ভৃত্যসোতি। সামস্তকং গৃহীয়া কাশ্যাং প্তমক্রুরং প্রতি শ্রীমছদ্ধবস্য

অঞ্জলিবন্ধন ও বাক্যদার। ক্রমশঃ যতুগণকে সাদরে নমস্কার করিলেন॥ ৬৬॥

व्यथ निक्ति। 98 ॥

যে ব্যক্তি স্বীয় স্থসভাবদারা কোমল চরিত্র হয়েন, পণ্ডিত-গণ তাঁহাকেই দক্ষিণ বলিয়া নির্দেশ করেন ॥ ৬৭ ॥

#### যথা 🏻

অজুর স্যামন্তক হরণপূর্ব্বিক কাশী প্রস্থান করিলে, উদ্ধব কহিলেন, প্রীকৃষ্ণের কি আশ্চর্য্য স্বভাব!, ভৃত্য যদি গুরুতর অপরাধে অপরাধীও হয়, তথাপি তাহার কৃত যে অত্যল্প সেবা তাহাকেই বহু করিয়া জ্ঞান করেন এবং পিশুন (খল) হ্রীং নি ॥ ৩৬ ॥
ভাতেহস্মররহস্মেইন্যৈঃ ক্রিয়মাণে স্তবেহথবা
শালীনত্বন সঙ্কোচং ভজন্ হ্রীমানুদীর্ঘতে ॥
যথা ল্লিতমাধ্বে ॥
দরেদঞ্চলোপীস্তনপরিসরপ্রেক্ষণভরাৎ

জ্ঞাত ইতি। অন্মররহস্যে ন্মররহস্যাভাবেহপানৈ।জ্ঞাতে স্বর্মের জ্ঞাতেন কিন্তু সংক্ষাত ভজন্। অথ বাজবেহপি ক্রিয়মাণে সক্ষোত ভজন্ দ্রীমান্দীর্যতে তএ হেতু: শালীনত্বন অধ্প্রভান্ধভাবেন শালীনবেন-অন্ধিগ্না স্বভাবেন বা ইতি তথৈবোদাহরতি দ্রোদক্ষদিতি। তথাহি তৎকোমলস্বদ্ধ্যা তয়েনাইর্ত্রেরির র্থিলগোপে: প্রভাবদ্ধ্যাত আরক্ষা স্ততি: শোর্যার্কনিবিক্ষম্য তথাবিধঃ সন্তর স্মহিমজ্ঞার ন্মির্মুখং রামং পুরোহগ্রহণ বিদ্যাতিন নমিতাস্যো মধুরিপ্রভাবি পরমোৎকর্ষেণ ভক্তহামে ক্রুবিভাবি:। তার কন্মাৎ ক কিল বিল্যতি ?, মিতমুখং দৃষ্টা নমিতাস্য ইত্যুৎপ্রেক্ষা তামিত্যপেক্ষারামুক্তং দ্রো-

## অথ হ্রীমান্॥ ৩৬॥

সার রহদ্যের অর্থাং কন্দর্পকেলির অভাবেও যদি অন্য কর্ত্ক জ্ঞাত হয় অথবা অন্য কর্ত্ক স্তব কৃত হইলে যে ব্যক্তি আপনার অধ্যতা হেতুক সঙ্কৃতিত হয়, পণ্ডিতগণ তাহাকে হ্রীমান্ বলিয়া উল্লেখ করেন॥

### যথা ললিভমাধবে॥

শ্রীকৃষ্ণ গোবর্দ্ধনধারণপূর্বক অবস্থিত হইলে গোপীগণ শ্রীকৃষ্ণের হস্তের প্রতি একদৃষ্টিতে অবলোকন করিতেছিলেন, ইতিমধ্যে ঐ সকল গোপীগণের স্তন পরিসর অর্থাৎ স্তনতট নেত্র গোচর হওয়াতে তদীয় হস্ত ঈষৎ কম্পিত হইতেছিল, করে । কম্পাদীষচ্চলতি কিল গোবর্দ্ধনিরি
তয়ারৈর রক্ত তিরখিলগোপৈঃ স্মিত মুখং
পুরো দৃষ্ট্রা রামং জয়তি নমিতাদ্যো মধুরিপুঃ ॥
শরণাগতপালকঃ ॥ ৩৭ ॥
পালয়ন্ শরণাপন্ধান্ শরণাগতপালকঃ ॥
যথা ॥

দঞ্দিতি। দরেভাদিলকণাং কম্পাদেগাবর্জনগিরৌ ঈষচলতি সতি। কিলেতুৎপ্রেকিত্বের, বস্তুতস্ত অনেন। রামাজ্ঞাততাদৃশনিজন্মররংসারেংপি শালীনহত্বেনের সন্তুতিও। ত্বেতি ধ্বনিতং। তদগ্রজরামদা তংক্তভদীয়ন্তনান্তদর্শনাঞ্সন্ধানস্যানৌচিত্যং। গান্তীর্যগুণেন চ প্রেকিভদলক্ষাতাদৃশত্তাবন্ধং।
প্রার্কেচ কিলেত্যক্তা ত্দর্গনেশংপ্রেকিত্যা ব্বমিতি ব্যাধ্যান্তরং নাদীকৃতং॥ ৬৮॥ ৯৯॥

ভাহাতে গোবর্দ্ধনও চলিত হইতে লাগিল, ইহা দেখিয়া গোপগণ ভয়ার্ত্ত হইয়া প্রীক্ষের স্তব করিতে আরম্ভ করিলে বলরাম সহসা হাস্য করিলেন, কিন্তু প্রীক্ষের মনোমধ্যে আশক্ষা হইল যে, অগ্রন্থ ব্যাধার আন্তরিক ভাব অবগত হইয়া থাকিবেন, অতএব এইরূপ অভিপ্রায়ে লজ্জাবিন্ত্রবদন প্রীকৃষ্ণ-জয়যুক্ত হউন॥

অথ শর্ণাগত পালক॥ ৩৭॥

যে ব্যক্তি শরণাপন্ন লোককে পালন করেন, ভাঁহাকে শরণাগতপালক বলা যায়॥ ় বিত্তাসং ত্ব্যত্ত সমরে কুতাপ্রাধোহণি।
বাল্যভ্রম্মনান্দ্র যদিক্ষরতি যাদবেন্দ্রোহ্য়ং ॥
স্থানী ॥ ৩৮ ॥

ভোক্তা চ তুঃখগদ্ধৈরপ্যস্পৃষ্ঠিশ্চ স্থা ভবেৎ ॥ ৬৯ ॥ ভতাদেয়া যথা॥

রত্বালস্কারকারস্তবধনদমনো রাজ্যরত্তাপোলভাঃ স্বপ্রে দন্তোলিপাণেরপি তুরধিগমং দারি ভৌর্যান্তিকঞা

রত্নেতি বন্দিজনস্থতিং। স্বপক্ষে শশিকলা স্থান্ধা নথাগ্রাণা বা। গৌর্বান্ধ একৈব শশিকলা চন্দরেথা। স্বপক্ষে কান্তসম্বন্ধীনি মনোহরাণি বা সর্বান্ধানি ভল্পন্তে যান্তাং। গৌরীত স্বকান্ধসান্দিসভাগিতি স্নেবেণ যুক্তজ্বমেব গৌরীগরিষ্ঠ-ওহে জুর ! তুমি সমরে অপরাশী হইলেও বিশেষরূপে ত্রান্দ পরিকাগে কর, কারণ শরণাপন্ন জ্ঞানের প্রতি এই যাদবেন্দ্র সদাই চন্দ্রতুলা আচরণ করিরা থাকেন অতএব তোমার কোন শক্ষা নাই ॥

অথ সুখী॥ ৩৮॥

যে ব্যক্তি ভোগী এবং যাহাকে ছুঃগের গন্ধমাত্রও স্পূর্শ করিতে পারে না এই ছুই ব্যক্তিকে স্থী বলে॥ ৬৯॥

जमारधा (जाशी यथा ॥

বন্দিজন স্তুতি করিয়া কহিলেন, হে যতুবর! তোমার যে সকল রত্বালস্কার দেখিতেছি তাহা ধনদ কুবেরেও মান-শিকী রাজ্যবৃতিদারা অলভা, ত্বদীয় দ্বারে যে সকল নৃত্য গীত হইতেছে, বক্ত্রণাণি ইন্দ্র ভাহা স্বপ্নেও অধিগম করিতে পার্শ্বে গোরীগরিষ্ঠাঃ প্রচুরশশিকলাঃ কান্তস্কান্ধভাঞ সীমন্তিন্যশ্চ নিত্যং যত্নবর ভূবনে কন্তদন্যোহন্তি ভোগী ॥৭০॥ দিতীয়ো যথা ॥

ন হানিং ন খ্লানিং ন নিজগৃহকুত্য-ব্যসনিতাং ন ঘোরং নোদ্যুশিং ন কিল কদনং বেভি কিমপি।

#### শ্বমিতি দর্শিতং ॥ ৭০॥

ন হানিমিতি যজপত্নী: প্রতি কন্যাণ্ডিং শ্রীগোপীরক্ষদ্ভা: ওক্রহবশাৎ ভাষণি গতাগতং কুর্বতা। রহস্যোক্তি:। ঘোরং ভয়হেতৃং। ততো ভয়স্ত সর্ব-থৈব নেতি ব্যঞ্জিত:। উদ্বৃণাং চিস্তাং সাঙ্গীরুতাঃ পূর্ণিতাঃ স্থলনঃ সহচর্য্যো যর ভাদৃক্ অনক্ষো যাসাং। অত্ত ভত্তব্যাকারে স্তাপি তত্ত্বজ্ঞানোক্রিন্সভব্তি

পারেন না। এবং যে সকল সীমন্তিনীর ( স্থলনী স্ত্রীর ) অস প্রচুর চন্দ্রকলার ন্যায় কমনীয় ও যাহারা গোরী অপেক্ষাও সরিষ্ঠা, নিরস্তর তাহারা তোমার পার্শ্বে অবস্থিতি করিতেছে, অতএব হে যাদ্বেন্দ্র ! স্থানমধ্যে তোমার সদৃশ আর ভোগী কে হইতে পারে ? ॥ ৭০ ॥

## ছঃথগদ্ধে অস্পৃষ্টি যথা॥

শীক্ষের কোন দূভী কজপত্নীদিগের নিকট গতাগতি করিতে করিতে সেহবশতঃ তাঁহাদিগকে কহিলেন, হে দ্বিজ-পত্নীগণ! কোন ছঃথের গন্ধও শীক্ষককে স্পর্শ করিতে পারে না, কারণ, না তাঁহার হানি আছে, না তাঁহার গ্রানি আছে না তাঁহার গৃহকার্য্য ব্যাপারেই ব্যদনিতা দেখিতে পাই, না তাঁহার ভয়ের হেতু কিছু লক্ষ্য হয়, না তাঁহার কোন চিন্তার

বরাদ্ধীকি: শঙ্গীকৃতস্ক্রদনঙ্গাভিরভিতে।
হরির্বানরণ্যে পরমনিশমুকৈবিবিরতি ॥
ভক্তস্ক্রহণ ॥ ০৯ ॥
হসেব্যো দানবন্ধুশ্চ ছিধা ভক্তস্ক্রমাতঃ ॥ ৭১ ॥
ভক্তাদ্যো যথা বিষ্ণুধর্মে ॥
ভূলদীদলমাত্রেণ জলদ্য চুলদ্য চুলকেন চ।
বিক্রীণীতে স্বমায়ানং ভক্তেভো। ভক্তবংদলঃ ॥ ৭২ ॥

ইভার্পান্তরসংক্রমিভবাচাধ্বনিনা তত্ম তত্রাবৈরগ্রাকারিপরমতেজবিশ্বমেব বিব-ক্ষিত্যমিতি জ্ঞেরং ॥ ৭১ ॥

ভত্তাল্যো যথা বিষ্ণুধর্ম ইত্যেব পাঠঃ। বিক্রীণীতে। মুছরপি বশীকরোভী-ভার্থ:॥ ৭২ ॥

বিষয়ই কিছু উপস্থিত হয় এবং কদন কাহাকে বলে ভাছাও ভিন জানেন না, কেবল অনঙ্গ-( কন্দর্প )-সেছিদের পরিপূর্ণা বরাঙ্গণাগণকর্ত্ব পরিবৃত হইয়া নিরন্তর রন্দাবনে বিহার ক্রিতেছেন।

অথ ভক্তস্ত্ৰং ॥ ৩৯ ॥ ভক্ত স্থান্ত্ৰ প্ৰকার স্থানের এবং দাসবস্কু ॥ ৭১ ॥ তন্মধ্যে স্থাস্যায় যথা বিষ্ণুধর্মে॥

ভক্তগণ যদি বিফুকে একদলমাত্র তুলগী অথব। এক গণ্ডুব মাত্র জল প্রদান করেন, তাহা হইলে ঐ ভক্তবংগল ভগবান্ ভক্তজনের সমীপে আপনার আত্মা বিক্রের করিয়া ধাকেন॥ ৭২॥

# দি গীয়ে! যথা প্রথমে॥ স্বনিগমমপহায় মৎপ্রতিজ্ঞা-মৃতমধিকর্ত্ত্বিবল্পতো রথস্থঃ।

সনিগম ইতান্তিসসময়ে শ্রীভীম্মবাকাং। স্থানিগমং শস্ত্রসন্নাসলক্ষণাং স্থপ্রতিজ্ঞানপহায়। তমেতং শস্ত্রং গ্রাহিনিগামীতি মংপ্রতিজ্ঞাং সভ্যাং কর্ত্ত্রং হবণ্ডাই হিপ্ ধৃত্তক: সন্ত্রাবতীর্ণপ্রতশ্চাবেশেন স্থালিতান্ত্রীয়প্তেনৈর চারিক্তবলত্রা চলন্ত্রী গোঃ পৃথিবী যেন ভাদৃশো তৃহা মাং হন্তমাভিমুখোন যঃ অগাৎ নত্ত্রীৎ স মে মুকুন্দো গতির্ভবিদ্বান্তরেশায়য়:। কঃ কমিব, হরিঃ সিংহ ইভ্রেবিতি বাক্যার্থ:। তদাবে তং প্রতি এতসা প্রসমিত্রঞার্জুনং প্রতি হুদ্দিব-বশামহদণরাধ্বতালি মন্নি পুরাতনং ভক্তিলেশাভাসং ভক্তিম্বনাসুসন্ধার য ইথং বন্ধুং স্থাহান্ত্রাহানিসহনেনাপি মন্নাহান্ত্রনলক্ষণং ব্যক্তিভ্রান্।

## দাসবন্ধু যথা---

## প্রথমক্ষকে ৯ অধ্যায়ে ৩৪ শ্লোকে।

শ্রীকৃষ্ণ প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলেন, কুরূপাণ্ডণদিগের যুদ্ধে কোন পক্ষে শস্ত্র গ্রহণ না করিয়া দাহায্যমাত্র করিবেন, আমা-রও দৃঢ় প্রতিজ্ঞা ছিল, ইহাঁকে অস্ত্র গ্রহণ করাইব, ইনি এম-নই ভক্তবংসল যে আপনার প্রতিজ্ঞা পরিত্যাগ করিয়া আমার প্রতিজ্ঞা অধিক সত্য করিবার নিমিত্ত রথ হইতে অব-ভরণপূর্বক আপনার পরমাস্ত্র চক্র ধারণ করেন এবং হস্তি-বর্গার্থ যেমন সিংহ ধাবমান হয় ভাহার ন্যায় আমার অভিমুখে ধাবমান হইয়া আসিয়াছিলেন। তৎকালে ইহাঁর অভিশ্য ক্রোধোদয় হওয়াকে মনুষ্যনাট্য (লীলা) বিশ্বত হইয়াছিলেন ্তিরপ্টরগোভায়াচ্চলদগুহ্ বিরিব হ্স্তনিভং গভোভরীয়: ॥ ৭০ ॥

প্রেমবশ্য: ॥ ৪০ ॥

প্রেমবশ্যা যঃ প্রেমবশ্যো ভবেদদৌ ॥

যথা জীদশমে ॥

সপুঃ প্রিয়স্য বিপ্রর্থে রঙ্গদঙ্গাতিনির্ভঃ।
প্রীতো ব্যম্কদ্বিক্দ্ লেক্রাভ্যাং পুক্রেক্ষণঃ ॥ ৭৪ ॥

যথা বা তক্তিব ॥

সোহরং স্কুদাসানাং সর্কাশৈব বন্ধুরং কুর্গাদিতি ভাব:॥ ৭০॥ প্রিয়হমাত্রেণ বশো নতু সেবাদাপেক্ষয়েতার্থ:॥ ৭৪॥

এ কারণ উদরস্থ সকল ভূবনের ভার বশত ইহাঁর প্রত্যেক পদে পৃথিবী কম্পিতা হয় এবং ক্রেণভরে ইহাঁর উত্তরীয় ধনন পথে পড়িয়া যায়॥ ৭৩॥

(2.31411 | 80 |

যিনি সেবা-অপেকা না করিয়া প্রিয়ভামাত্রেই বশীস্থ্ত হয়েন, তাঁহাকে প্রেমবশ্য বলা যায়॥

যথা শ্রীদশমে ৮০ অধ্যায়ে শ্রীদামচরিতে ১০ শ্লোকে।
শ্রীকৃষ্ণের প্রিয়দ্ধা শ্রীদাম ভাক্ষণের অঙ্গ স্পর্দে নিরু তি
( স্তুস্থ ) ও প্রীত হইয়া নেত্রদ্বর হইতে প্রেম্চিক্সরূপ বারিধারা মোচন করিতে লাগিলেন ॥ ৭৪ ॥

স্বমাতৃঃ বিশ্বগাত্রায়া বিস্তস্তকবরস্রক্ষঃ।
দৃষ্ট্বা পরিপ্রমং কৃষ্ণঃ কুপয়াসীৎ স্ববন্ধনে। স্বাধিতক্ষরঃ। ৪১॥

সর্বেষাং হিতকারী যঃ স স্যাৎ সর্বাশুভঙ্করঃ ॥ ৭৫ ॥

यथ।॥

কৃতা কৃতার্থ। মুনয়ো বিনোদৈঃ খলক্ষয়েণাথিলগার্মিকাশ্চ। বপুর্বিমর্দ্দিন থলাশ্চ যুদ্ধে

ভত্র প্রেম।তিশয়েন বশতোধিক্যমণি দর্শগ্রতি যথাবেতি ॥ ৭৫ ॥ কতা ইত্যান্তরাবস্থায়াং শ্রীমহন্ধবোক্তিঃ। মূনয়ো আত্মারামাঃ বিনোটদ-

শ্রীদশ্যে ৯ অধ্যায়ে ১৪ শ্লোকে॥

হে রাজন্! বন্ধনার্থ যত্ন করিতে করিতে যশোদার গাত্র ঘর্মাক্তু হইল এবং তাঁহার কেশপাশ হইতে পুস্পমালা বিশ্লিষ্ট হইয়া পড়িতে লাগিল, জননীর এই পরিশ্রম নিরীক্ষণ করিয়া শ্রীকৃষ্ণ কুপাপরবশ হইয়া নিজেই বন্ধনস্থ হইলেন॥

তাথ দক্তিভঙ্কর ॥ ৪১ ॥

যে ব্যক্তি সকলেরই হিতকারী ভাঁহাকে সর্ব**শুক্ষর বলিয়া** কীর্ত্তন করা যায়॥ ৭৫॥

#### যথা ॥

শ্রীক্ষের স্বধামগমনানন্তর উদ্ধাব কহিলেন, যিনি আপ-নার লীলাদ্বারা আজারাম মুনিগণকে এবং থলজনের ক্ষয় করিয়া ধার্মিক জনগণকে তথা সমরে দেহপাত করত পথ্যং হরিণা ব্যধায়ি॥ গুডাপী॥ মই ॥

প্রতাপী পোরুষোভূতশক্রতাপি প্রদিদ্ধিতাক্ ॥ ৭৬॥
যথা॥

ভবতঃ প্রতাপতপনে ভুবনং কৃষ্ণ প্রতাপয়তি। ঘোরাস্তরঘূকানাং শরণমস্তৃং কন্দরাতিমিরং॥ কীর্ত্তিমান্॥ ৪০॥

স্তদ্যিক গুণ প্রচারে:। আ ছারাম। শ্চ মুন্র ইত্যাদে: । ৭৬॥

প্রতাপরতি প্রকাশরতি সতি। উপনিষ্দ্রিশেষন্সিংইতাপনাাদিশব্দেষ্
ভবৈষ তপেরর্থ:। প্রকাশরতীতোর পাঠ:। পূর্বং দ্বিতিরের সর্বজেতী সতী ভগরত: প্রভাব ইতি লক্ষিত:। প্রতাপস্থ তংখ্যাতিরিতি ততো ভিদাতে য্পা-

ধলদিগকে কুতার্থ করিয়াছেন, অভএব সেই হরি হইছে কাহার না হিত হইয়াছে ?॥

প্রকাপী ॥ ৪২ ॥

যিনি আপনার পৌরুষরারা শক্রগণকে প্রতপ্ত করেন, ভাঁহাকে প্রতাপী বলা যায় ॥ ৭৬ ॥

#### ষথা ॥

হে কৃষ্ণ! তোমার প্রতাপরূপ তপন (সূর্য্য) ভুবনকে প্রকাশিত করিতে থাকিলে ভয়ন্তর দানবরূপি ছ্ক ( পেচক ) পণ কন্দর (পর্বতিহার) তিমিরকে শর্প গ্রহণ করিল ॥ ভ্রম্প কীর্ত্তিমান ॥ ৪৩ ॥ সাদগু গৈয়নির্ন্মলৈঃ খ্যাভঃ কীর্ত্তিমানিতি কীর্ত্ত্তিত যথা॥

ত্বদ্যশঃকুমুদবস্কুকে মুদী,-শুভভাবগভিতো নয়স্ত্যুপি।
নন্দনন্দন কথং কু নির্মানে; কুফভাবকলিলং জগজ্ঞয়ং॥৭৭
যথা বা ললিত্যাধ্বে॥

ভীতা রুদ্রং তাজতি গিরিজা শ্যামমপ্রেক্ষ্য কঠং শুল্রং দৃষ্ট্বা ক্ষিপতি বসনং বিস্মিতো নীলবাসাঃ।

নস্তরমের সাক্ষান্থানিশ্বলৈ: থাতিঃ। কীর্তিমানিতাত্র সাক্ষাণ্যাথ্যাতিরের কীর্তি-রিতি প্রতিপদ্যতে নতুসাক্ষামাতং তছং ॥ ৭৭ ॥

ভীতা রুদ্রনিত্যাদিকং কবিসময়াত্সারেণ নর্ম্ময়মেব নতু বস্ততঃ। বস্তত তেখাং তত্ত ভাগাদিকত্ব তদ্বশংশ্রবণাদেব। আভীরিকেতাত্ত আভীর্ত্নীয়েতি

যে ব্যক্তি স্বীয় নির্দাল সাক্ষাণো (যশে) বিখ্যাত হয়েন তাঁহাকে কীর্ত্তিমান বলিয়া কীর্ত্তন করা যায়॥

#### যথা 🤋

হে নন্দনন্দন! তোমার যশোরূপী কুমুদ্বস্কু (চন্দ্র) চতু-দিকে শুভ্রতা প্রকাশ করাইলেও কি প্রকারে ঐ চন্দ্র জগ-জ্বাকে কৃষ্ণভাব প্রাপ্তি করাইল ?॥ ৭৭॥

# যথা বা ললিভমাধবে॥

হে কৃষ্ণ! দেবর্ষি নারদ বীণাদ্বারা তোমার যশোগান করিতে প্রবৃত্ত হইলে, ক্রেরে কণ্ঠ নীলবর্ণ দেখিতে না পাইরা গিরিজা ভীতিবশতঃ তাঁহাকে পরিত্যাগ করিলেন, নীলবাসা হলধর স্বীয় বদন শুল্ল দেখিয়া তাঁহা পরিত্যাগ করিলেন. নিছ। অপয়তি ষমীনীরমাতীরিকোৎকা গীতে দামোদর! যশনি তে বীণয়া নারদেন॥ রক্তলোকঃ॥ ৪৪॥ পাত্রং লোকাসুরাগাণাং রক্তলোকং বিছ্ব্ধাঃ॥ ৭৮॥ যথা প্রথমে॥

> যহ্যস্থাক্ষাপদসার ভো ভবান্ কুরুন্মধুন্ বাথ স্তহ্দিদৃক্ষয়া। তত্রাক্ষকোটিপ্রতিমঃ ক্ষণো ভবে-

### পাঠান্তরং॥ ৭৮॥

ন কেবলং ক্ষণতাৰ ভাদুশো ভবেং। কিন্তু বিবাং বিনা যথাক্সো র্মোছোভকে তাবং আভীরিকা (গোপাঙ্গনা) সকল উৎস্থকা হইয়া তুগাল্রমে যমুনার নীর আবর্ত্তন করিতে আরম্ভ করিলেন, কি আশ্চর্য্য ? হে দামোদর! স্থদীয় যশঃকীর্ত্তনে ত্রিভূবনের পর্য্যন্ত ধাবল্য প্রাপ্তি হইল! ॥

### রক্তলোক॥ ৪৪॥

থিনি সমস্ত লোকের অনুরাগভাজন হয়েন তাঁহাকে রক্ত-লোক বলা যায়॥ ৭৮॥

यथा क्षश्रा >> अ। ৮ (ब्रांकि॥

হে কমললোচন! তুমি স্থলাণের দহিত দাকাৎ ক্রি-বার বাদনায় যাবৎ হস্তিনাপুরে অথবা মথুরায় গমন ক্রিয়া-ছিলে, তাবৎকাল, সূর্য্যাদয় না হইলে নেজেন্ত্রের অন্ধতা হৈতু যেমন ক্ষণকাল অসম্ভ হয়, তদ্রেণ আয়াদিশের এক এক দ্ৰবিং বিনাক্ষোরিব ন স্তবাচ্যুত ॥ ৭৯ ॥ যথা বা ॥

আশীস্তথ্য। জয় জয় জয়েত্যাশিরাস্তে মুনীনাং দেবশ্রেণীস্ততিকলকলো মেতৃরঃ প্রাতুরন্তি। হর্ষাদেবাষঃ স্ফুরতি পরিতো নাগরীণাং গরীয়ান্ কে বা রঙ্গস্থলভূবি হরে। ভেজিরে নাসুরাগং ॥

সাধুদমা**শ্র**য়ঃ॥ ৪৫॥

সদেকপক্ষপাতী যঃ স স্যাৎ সাধুসমাশ্রয়ঃ ॥

স্ত্রবৈৰ স্বদীয়ানাং নোহস্মাকং ভবেদিতার্থ: ॥ ৭৯ ॥

আশীরিতি রক্ষণতঃ কণিৎ বর্তমানপ্রোগং মূত্রভাসা কিং অত্নেজাহ কেবেতি। আনচ প্রথমোহানস্থরং প্রোক্ষভূত্যেন প্রস্থুকে ভেজিরে ইতি কোটি বৎসর তুলা কয়েই ক্ষপনীয় হইরাছিল, তে আচ্যুত ! আমরা তোমার, ইহাতে তোমার বিরহ অসহ হইবে বিচিত্র কি ?॥ ৭৯ ।

### যথা বা ॥

শ্রীকৃষ্ণ কংগের রঙ্গভূমিতে প্রবিষ্ট হইলে মুনির্দের বদন হইতে "জ্ঞাজয় জয়" ইত্যাকার আশীর্বচন উদ্গীর্ণ কিত লাগিল, দেবগণের স্তুতিরূপ কল্পনি প্রাচ্ছুত হই
ক্রিণাইতে লাগিল, অভ্নব ঐ শ্রীকৃষ্ণের প্রতি কেন না
সমুরাগভাজন ইয়াছিল গা

व्यथ माधूममाञ्चेष ॥ ८० ॥

যিনি সাধ্জন সকলের অসাধারণ প্রক্পাতী তাঁহাকে সাধ্-সমাশ্রেয় কছে ॥ যথা 1

পুরুষোক্তম চেদবাতরিষ্য
দূবনে হিসান্ন ভবান্ ভুবং শিবায়।

বিকটাস্থ্যমণ্ডলান জানে

স্ক্রনানাং বত কা দশাভবিষ্যৎ ॥ ৮০ ?

নারীগণমনোহারী ॥ ৪৬ ॥

নারীগণমনোহারী স্ক্রীর্ক্সমোহনঃ ॥ ৮১ ॥

যথা প্রীদশমে ॥

মাকুরাগং ভল্কীতি পাঠস্ত স্থাম:॥ ৮০ ॥

নারীগণ মনোহারীতি বথা শীলার্থে ণিনিস্তথৈব স্বাস্থীতাানে সৃষ্ট্ প্রযুক্তঃ ভতঃ স্বভাবেনৈব ভাদৃশ্যাং স্বামাঙ্গাদিনোহধিক এবারং গুণঃ। বথোক্তং শীবজ্ঞদেবীভিঃ। কৃষ্ণং নিরীক্ষা বনিভোংগবক্ষপশীলমিভি গণরুন্ধশন্ধান্তাম্ত্র ভাষাং সমূহবিশেব উচাতে। তেন ভত্তাবাধোগাত্ম নাতিব্যাপ্তিঃ॥৮১॥

### যথা #

হে পুরুষোত্তম! আপনি যদি পৃথিবীর মঙ্গলার্থ এই ভূবনে অবতীর্ণ না হইতেন, তাহা হইলে বিকট অভ্যুমগুল হইতে হাজন সকলের যে কি দশা উপস্থিত হইত ? আমি তাহা জানিতেও পারিতেছি না ॥৮০॥

অথ নারীগণমনোহারী ॥ ৪৬॥

যিনি হৃদ্দরীর্দ্দের মোহনকারী তাঁহাকে নারীগণ্যনো-হারি কহা যায়॥ ৮১॥

यथा नगरम ৯० व्यवहारच ১१ द्वारिक ॥

শ্রুতমাত্রোহপি যা স্ত্রীণাং প্রদন্থাকর্ষতে মনঃ। উরুগায়োরুগীতো বা পশ্যন্তীনাং কুতঃ পুনঃ॥ ৮২॥ যথা বা॥

ত্বং চুন্বকোহদি মাধব, লোহময়ী নৃনমঙ্গনা জ্বাভিঃ। ধাবতি ততন্তভোহদো ; যতো যতঃ ক্রীড়য়া ভ্রমদি॥

আৰু তএব স্ত্ৰীণাং স্ত্ৰীবিশেষাণাং শ্ৰুতমাত্ৰোংশি যো মনঃ প্ৰস্থাকৰ্ষতি স এব উক্লগালৈউক্তিবিশেষৈক্লধা গীতঃ সন্ তাসাং মনঃ প্ৰস্থাকৰ্ষতীতি কৃতঃ প্ৰৱিতি কিং পুনৰ্বক্তবাং স এবচ পশান্তীনাং তাসাং মনঃ প্ৰস্থাকৰ্ষতীতি কিন্তাং ৰক্ষবাসিত্যধঃ॥ ৮২॥

ভাদৃশশীলম্বমের দৃষ্টান্তেন স্পষ্টয়রাহ যথা বেতি। অঙ্গনানাং জাভিত্তদি-

যিনি নাম শ্রেবণমাত্র সহসা স্ত্রীগণের মনকে হরণ করেন, সেই উরুগায়োরুগীত অর্থাৎ দারিদাদিমহদ্যানের বহু প্রকারে কীর্ত্তনীয় শ্রীকৃষ্ণকে যে মহিষীগণ সাক্ষাৎ দর্শন করেন, তাঁহা-দিগের মন যে অপহত হইবে তাহাতে আর বলিবার কি আছে?, যাঁহারা ভর্তৃভাবে পাদসেবাদিদ্বারা প্রেমসহ্কারে জগদগুরুর পরিচ্যাা করেন, তাঁহাদিগের তপ্স্যা আর কি বর্ণন করিব॥ ৮২॥

### यथा वा ॥

হে কৃষ্ণ ! নিশ্চয়ই তুমি চুম্বকমণি এবং অঙ্গনা জাতি লোহময়ী, কারণ তুমি জৌড়া করিতে করিতে যে যে দিকে গমন করিতেছ অঙ্গনাগণও সেই সেই দিকে খাবমানা হই-তেছে, কারণ চুম্মক (অগ্নসাস্ত মণি) ও ঠিকু এইরূপ ! সর্বারাধ্য: ॥ ৪৭ ॥ সর্বেষামগ্রপ্রেয়া য: স সর্বারাধ্য উচ্যতে ॥ যথা প্রথমে ॥

মুনিগণনৃপবর্ষ্যসঙ্কুলে হস্তঃসদসি যুধিষ্টিররাজসূয এষাং ॥
অহ ণমুপপেদ ঈক্ষণীয়ো
মম দৃশি গোচর এষ আবিরাজা।॥
সমুদ্ধিমান্॥ ৪৮॥

মহাসম্পত্তিযুক্তো যে। ভবেদেন সমৃদ্ধিনান্॥ ৮৩॥

(चंबः ॥ ৮৩ ॥

चार मर्वताताधा ॥ ८० ॥

ধিনি সকলের অগ্রে পূজ্য তাঁহাকে সর্বারাধ্য কছে॥
যথা প্রথমে ৯ অধ্যায়ে ৩৮ শ্লোকে॥

যুখিন্ঠিরের রাজসূয় সভার মণ্যস্থানে মুনিগণে এবং রাজসম্তে সক্ষার্ত্তন হইয়াছিল, সেই সময়ে এই ভগবানই সকলের
আশ্চর্ষ্য রূপ দশনীয় হইয়া সক্ষেমীপে পূজা প্রাপ্ত হয়েন,
সেই এই জগদালা আমার সমকে বর্তনান, আমার কি ভাগ্য

चान्दर्धा नदर १॥

व्यथ मग्रक्तिगान्॥ ८৮॥

যে ব্যক্তি সহাসম্পতিশালী তাহাকে সমূদ্দিমান্ ব্রলিরা।
কীর্ত্তন করা যায়॥ ৮০॥

### যথা ॥

ষট্ পঞ্চাশদযত্ত্বভূবাং কোটয়ন্তাং ভদ্ধতে বৰ্ষন্তাটো কিমপি নিধয়শ্চাৰ্থজাতং তবামী।
শুদ্ধান্তশ্চ ক্ষুব্তি ন্বভিন্নিক্তঃ দৌধলকৈশ্ক্ষীং পশ্যস্বদমন তে নাত্ৰ চিত্ৰায়তে কঃ॥

যথা বিল্বসঙ্গলে॥

চিন্তামণিশ্চরণভূষণমঙ্গনানাং শৃঙ্গারপুষ্পাতরবস্তরবঃ হুরাণাং। রন্দাবনে ব্রজ্ঞধনং নতু কামধেতু-রন্দানি চেতি হুর্থসিমুরহো বিভূতিঃ॥

ষট্ পঞ্চাশদিতাত কোটর ইতি বছম্বং তত্তদবাস্তরভেদবিবক্ষয়া। তদিদং

#### যথা ॥

হে যতুবর ! যতুকুলোংপন্ন ষট্পঞাশং কোটি (৫৬ছাপান্ন কোটি লোক ভোমায় ভজিতেছে, তোমার সম্বন্ধে অফ নিধি নিরস্তর বর্ষণ করিতেছে এবং নবলকে লক্ষিত ত্বদীয় বিশুদ্ধ অতঃপুরালী স্ফুর্ত্তি পাইতেছে, অতএব হে মুরদমন ! ভোমার সম্পত্তি দেখিয়া কে না বিশ্মিত হয় ?॥

# অথবা বিল্লমঙ্গলে ( কৃষ্ণকর্ণামূতে ) ॥

হে কৃষ্ণ ! তোদার বৃন্দাবনের ঐশ্বর্যের কথা আর কি বর্ণন করিব, যে স্থানে পোপাঙ্গনাগণের চরণভূষণই চিন্তা-মণি, শৃঙ্গার অর্থাৎ বেশের উপযোগি পুপ্সময় বৃক্ষই পারি-আভ বৃক্ষস্বরূপ, ধেতু কামধেত্ব সদৃশ হইভেছে, অভএব কি আশ্চর্যা ! তোমার বিভৃতিত্বধ শিক্ষুস্বরূপ ॥ বরীয়ান্॥ ৪৯॥ সর্কোষামাভিমুখ্যো যঃ স বরীয়ানিভীর্য্যতে॥ যথা॥

ব্রহ্মত্র পুরবিষা দহ পুরঃ পীঠে নিষীদ ক্ষণং
তৃষ্টীং তিষ্ঠ স্থরেন্দ্র চাটুভিরলং বার্নাশ দূরীভব।
এতে দ্বারি কথং মুহুঃ স্থরগণাঃ কুর্বান্তি কোলাহলং
হস্ত দ্বারবতীপতেরবদরে। নাদ্যাপি নিম্পাদ্যতে॥

ञेश्रदः॥ ৫•॥

প্রকটনীলোদাহরণং উত্তরোদাহরণং তু প্রকটনীলাগতমণি তত আরভা নন্দ্র্যা

বরীয়ান্॥ ৪৯॥

যিনি সকলেরই মধ্যে অভিশয় মুধ্য ( শ্রেষ্ঠ ) ভাহাকে বরীয়ান্ বলিয়া কীর্ত্তন করা যায়॥

যথ। ॥

শিব ত্রক্ষাদি দেবগণ শ্রীকৃষ্ণদর্শনার্থী হইয়া দ্বারকার দ্বারদেশে উপস্থিত হইলে, ভাহাতে দ্বারপাল কহিল, ত্রক্ষান্!
আপনি মহেশ্বরের সহিত এই পাঠের উপরি উপবেশন করুন,
হে দেবেন্দ্র! আপনি আর স্তুতি পাঠ করিবেন না তৃষ্ণীস্তৃত
হইয়া অবস্থিতি করুন, হে বরুণ! আপনি এম্থান হইতে দুরীভূত হন, হে দেবগণ! আপনারাই বা কেন দ্বারে মৃত্যু হঃ
কোলাহল করিতেছেন, দ্বারকাপতির এখনও অবসর হইয়া
তিঠে নাই ॥

বিশেষর: স্বতন্ত্রশ্চ তুর্ল জ্যাজ্যশ্চ কীর্ত্ত ॥ ৮৪ ॥
তত্ত্ব স্বতন্ত্রো যথা ॥
কুষ্ণ: প্রসাদমকরোদপরাধ্যতেহপি
পাদাক্ষমেব কিল কালিয়পরগায় ।
ন ব্রহ্মণেদৃশমপি স্তবতেহপ্যপূর্বং
শ্বানে স্বতন্ত্রদ্বিতো নিগমৈতু তোহরং ॥ ৮৫ ॥
তুর্ল জ্যাজ্যে যথা তৃতীরে ॥

ই ভাদেক্ত দিক্ষরা প্রকটমপি ভবেদিতি জ্রেরং॥ ৮৪ ॥

ক্লফ ইতি। তমাং স্থানে যুক্তমেবারং স্বতস্ত্রিতভয়া নিগ্রৈফুর্ভ ইতার্থ: ॥৮৫॥

खन्नागाः बन्नामीनाः महर बहु । मीनाः वाशीमः । वानामाः त्वरेनव नाम-

ঈশর ছুই প্রকার, এক সংস্ত্র (সাধীন), দ্বিতীয় ছুল্ল-ভ্যান্তর অর্থাৎ কোন ব্যক্তি যাঁহার আদ্রা লভ্যন করিতে সমর্থ হয় না॥ ৮৪॥

তশ্বধ্যে সভস্তো যথা॥

কালিয়নাগ অপরাধ করিলেও প্রাকৃষ্ণ তাহার মন্তকে চরণচিক্ স্থরূপ প্রশন্ধতা বিস্তার করিলেন, ত্রন্ধা অপূর্ব স্ততি পাঠ করিতে থাকিলেও তাঁহার প্রতি কটাক্ষ নিক্ষেপও করি-লেন না। শ্রীকৃষ্ণের এরূপ ব্যবহার উপযুক্তই বটে, কেন না বেদে ঐ শ্রীকৃষ্ণকে স্বতন্ত্র বলিয়াই কীর্ত্তন করিয়াছেন ॥ ৮৫॥

তুর্ন জ্ব্যাজ যথা॥ ভূতীয়ে:২ **সং**গ্রায়ে ২১ স্লোকে॥ ষয়স্থনাম্যাতিশয়স্ত্রাধীশ: সারাজ্যলক্ষ্যাপ্তদমস্তকাম:। বলিং হরম্ভিশ্চিরলোকপালৈ: কিরীটকোটীড়িতপাদপীঠ:॥৮৬॥

যথা বা

নব্যে ব্রহ্মাণ্ডরন্দে স্কৃতি বিধিগণঃ স্ফুরে যঃ কুতাজো ক্রেবিঃ কালজীর্ণে ক্ষয়মবতসুতে যঃ ক্ষয়ায়াসুলিকঃ। রক্ষাং বিফুস্তরূপা বিদধ্তি তরুণে রক্ষিণাে যে ত্বদংশাঃ

মানত্বং তেন লক্ষীঃ তয়া ঈড়িতত্বং বন্দিতত্বং ॥ ৮৬॥

কৃতাজ্ঞ ইতি অঙ্গাকৃতাজ্ঞ ইতার্থ:। তামিনেব ব্রহ্মাণ্ডবৃদ্দে কালঞ্জীর্ণে সভি। তামিনের চ তরুণে সতি। ভারুনাপশ্চারির্দেশ: সাম্প্রভং বৃত্তবিজ্ঞাপ-নার্মান্যাশ্বধান:। স্থিরীভবন্ধিতাপেকরা। সন্তীতি সর্গাদিসময়ে পালনাদ্যাশস্য

উদ্ধব কহিলেন, ওহে বিহুর! সেই ভগবান্ স্বয়ং গুণত্রঁয়ের অধীশ্র এবং পরমানন্দস্করপ সম্পতিদ্বারা সমস্ত ভোগ
প্রাপ্ত হইরাছিলেন, অভএব তাঁহার সমান অথবা তাঁহাঅপেক্ষা প্রধান কেহ ছিল না, লোকপাল সকলও তাঁহার
অগ্রে আদিয়া কর (বা প্জোপহার) সমর্পণপূর্বক স্বস্থকিরীটাগ্রদ্বারা ভদীয় পাদপীঠের স্তব করিত ॥৮৬॥

### যথা বা ॥

হে কৃষ্ণ! "ব্ৰহ্মাণ্ড সৃষ্টি কর" এইরূপ ভোষার আজা প্রাপ্ত হইয়া বিধিগণ ব্রহ্মাণ্ড দকল সৃষ্টি করিছেছেন, বিনা-শের নিমিত্ত আজা প্রাপ্ত হইরা ক্লেগণ কালজীৰ ব্রহ্মাণ্ড- কংসারে সন্তি সর্কো দিশি দিশি ভবতঃ শাসনেহজাগুনাথাঃ॥ অথ সদাস্বরূপসম্প্রাপ্তঃ॥ ৫১॥

সদাস্বরূপদক্রাপ্তে। মারাকার্য্যাবশীকৃতঃ ॥ ৮৭ ॥ যথা প্রথমে ॥

এ उनी मनशी मात्र अकृ शिष्टा १ विकार देनः । न युकार ७ २ मना जारेष्ट्रां था वृष्टि स्वाधाना ॥

সম্ভাবাম্বরশাসনে সর্বাদা তে সম্ব্যের কিন্তু নবা ইত্যাদিবিশেবেণ অয়ং তু প্রাচুক্যেবৈধকাদিনি ভাষা ৮৭॥

ঈশসা সর্ক্রণীকারিশ: প্রীভগবত: এতদীশনং কিং তত্ত্বাহ মারাজৎ-ক্ষার্যাভ্যামবশীক্ষত্ত্মিতার্থ:। যদসাবপ্র্যামিত্রা অবতীর্ণত্ত্বা বা প্রক্রতৌ ক্ষিতেছিশি তস্যা শুণৈ: স্কাদিভিত্তংকার্যাস্চ ন ব্রাতে ন বিপাতে তত্ত্ব

চয়কে কর করিতেছেন এবং রক্ষকস্বরূপ ভোষার অংশ বিষ্ণু-গণ নব্য নব্য ব্রহ্মাণ্ডের রক্ষা বিধান করিতেছেন, অতএব ছে কংসারাতি শ্রীকৃষ্ণ। অজ্ঞাণ্ডনাথ (-ব্রহ্মাণ্ডপতি-) গণ তোষার আদেশে দিকে দিকে অবস্থিত আচেন ॥

व्यथं महायज्ञभमस्त्रीख ॥ ०১॥

বিনি মায়িক কার্য্যকলাপে বশীভূত না হয়েন তাঁহাকে সদাস্তরপদস্প্রাপ্ত বলা যায়॥ ৮৭॥

यथा প্রথমে ১১ অধ্যায়ে ৩৪ প্লোকে॥

পরমেশরের ইহাই ঈশরের যে, বুদ্ধি যেমন আত্মাকে আত্মদ্ধ করিয়া থাকিলেও আত্মার গুণে (আনন্দাদিতে) লংমুক্ত নহে ভাহার ন্যায়, তিনি প্রকৃতিসহ হইয়াও প্রকৃতির গুণে (স্থত্ঃখাদিতে) লিপ্ত হয়েন না ম

## मिर्काख्वः ॥ ৫२ ॥

পরচিত্তস্থিতং দেশকালাদ্যন্তরিতং তথা।
না জানাতি সমস্তার্থং দ সর্বব্যে নিগদ্যতে ॥ ৮৮ ॥
যথা প্রথমে ॥

যো নো জুগোপ বনমেতা তরস্তক্চছা-দুক্বাদশোহরিরচিতাদযুতা গ্রভুগ্যঃ॥

হেতৃ: অসংস্থা যে আয়েনো জীবা তেবেব স্থিতির ধিকারিভি:। তত্ত দৃষ্টাস্থো যথেতি। স্থা শ্রমা যসা: সা ভকানাং বৃদ্ধিশা ন লিপাতে তত্তং। তত্ত্বাৎ সদাত্মরূপসভাগে থং। স্বরূপশক্তিবিলাসলক্ষণরপ্তণাদাবাভিচারিত্বং মাথা-কার্যাবিশীক তত্ত্বিহের যাবং। তত্ত্তং শ্রাভিভি:। স্বাদক্ষ যাত্ত্বাধিভা-দিনা ॥ ৮৮॥

যোনো জুগোণেতি শীমদৰ্জনবাকাং। য: শীক্ষোহমাকং কৃচ্ছুং সর্বজ্ঞ-বাদেব জাবা বন্মেতা অমান্পাগুবান জুগোপ। কমাদুব্যাসসো হেতো-ব্দুরস্তং কৃচ্ছুং শাপময়ং তমাং। ছ্বাসস: কীদৃশাং, অবিরচিতাদুর্গোধন-

# मर्विष्ठ ॥ ८२ ॥

পরচিত্তে যাহা অবস্থিত এবং দেশকালের যাহা অস্তর্গত ইত্যাদি সকল যিনি জানিতে পারেন তাঁহাকে সর্বজ্ঞ বলা যায় ॥ ৮৮॥

यथा थाथरम ১৫ व्यक्षारम ১১ स्मारक ॥

যে তুর্বাস। মুনি দশ সহজ্ঞ শিষ্যের অত্যে ভাঁহাদের মহিত এক পঙ্ক্তিতে বসিঃ। ভোজন ক্রিতেন, আয়াদের শক্রগণ দেই তুর্বাসার তুরন্ত অভিশাপে আমাদিগকে নিজেপ শাকান্ধশিষ্টমুপ্যুক্ত্য যত্ত্ত্ৰিলোকীং
তৃপ্তামমংশু সলিলে বিনিমগ্ৰস্থাঃ ॥
নিত্যন্তনঃ ॥ ৫০ ॥
সদাকুভ্যমানোহপি করোত্যনকুভ্তবং ॥
বিক্ষায়ং মাধুনীভির্যাল প্রোক্তো নিত্যনূতনঃ ॥ ৮৯ ॥

প্রেরিহাদিতার্থ:। কীদৃশো ছর্কাসা:। যা অযুতসংখ্যানামগ্রাভুক্ তৈ: সহ বুধিষ্ট্রিরেণ মন্ত্রিতনে চ কামধুক্ স্থালায়সমাপকভোজনা দ্রৌপদ্যা ভুক্তং ন জ্ঞাভমিতি জ্বোঃ। ততঃ কুত্রাসৌ ছর্কাসা গতন্তবাহ সলিলে বিনিমগ্ন: অনহিত্রজ্ঞার যা সা সা তত্রাবশাকর হার্থ: চিরং স্থিতঃ ততঃ কিং কুতা জুণোপ ভ্রোহ। স্থানীলগ্নং শাকারশিষ্টমুপ্যুজ্যেতি। তবতু তস্য তত্প্যোজনং ততঃ কিং ভ্রাহ ব তত্ত্প্যোগাজেতোঃ ত্রিলোকীমপি জ্প্রামন্ত্র ছর্কাসাঃ কিং প্রাংশানিত্যর্থ: ৮৮৯॥

করিতে বাসনা করিয়াছিলেন, তাহাতে যিনি বনে গমন করিয়া ঐ ভয়ক্ষর ঋষির শাপারূপ মহতী বিপদ্ হইতে আমাদিগকে রক্ষা করেন অর্থাৎ যিনি আসিয়া আমাদের ভোজনপাত্তে সংলগ্নাবলিন্ট বংকিঞ্ছিং শাকাম্মাত্র নিজে ভোজন করিরাছিলেন, তাহাতেই মধ্যক্ষকালীন জিয়ার্থ জলে নিমগ্র মুনিগণ ত্রিলোকীকে পরিতৃপ্ত বোধ করিয়া পলায়ন করিয়াছিলেন ॥

অথ নিত্যনূতন ॥ ৫০ ॥

যিনি সর্বাণা অনুভ্যমান হইয়াও আপন মাধ্র্যাভারা অনুক্ভূতের ন্যায় বিসায় প্রকাশ করেন তাঁহাকে নিত্যন্তন কহা
যায়॥৮৯॥

যথা প্রথমে ॥

যদ্যপ্যসৌ পার্দ্বগতো রহোগতন্তথাপি তদ্যাক্ষিযুগং নবং নবং।
পদে পদে কা বিরমেত তৎপদাচলাপি যং শ্রী ন জহাতি কহিছিং॥ ৯০॥

যথা বা ললিতমাধবে॥
কুলবর তকুধর্মগ্রোবরন্দানি ভিন্দন

চলাপীতি। পূর্ণস্বরূপভদাভাসয়োরভেদাভিপ্রারেণাক্তং ভচ্চ বা থ্যন্ত্র আভাসমাত্রেণাপি স্থিরা ন ভবতি। সৈব স্বরূপেণ তত্ত্ব পরমন্থিরা ইভি ভন্মা-হাস্থ্যবিশেষদর্শনার॥ ৯০॥

মূল: প্রীকৃষ্ণমন্ত্ চবত্যা: প্রীর্লাবনেশর্যা: কুলেতি বাকামিদং। তত-শুজভাপ্রকর্ণবলায়বনবন্ধং গমাতে অতোধ্তাপ্।দাহরণ: কুভং। ছটাত্র কুলাগ্রভাগ:। দটাছেটাভির্মনেতি মাঘকাব্যাং (১। १৪)। কৃষ্ণা প্রাক্ষি

## यथ। প্রথমে ১১ অধ্যায়ে ২৯॥

যদিও শ্রীকৃষ্ণ পত্নীদিগের সমীপে সর্বাদাই থাকিতেন তথাপি তাঁহার চরণদ্বর প্রতিক্ষণ নূতন নূতন বোধ হইত, স্তরাং তদ্দর্শনে কোন্ অব্লার বিরতি হইতে পারে ? লক্ষ্মী স্থভাবতই চঞ্চলা হইয়াও তাহা ত্যাগ করিতে ক্থনই সম্প্রহৈতে পারেন না ॥ ৯০॥

## यथा वा लिलिक गांधरव ॥

বারদার শ্রীকৃষ্ণকে অনুভব করিয়াও বৃশাবনেশ্বরী কর্তি-লেন, হে স্বমুখি! অপ্রবর্তী এ কোন অপূর্ব্ব বিশ্বকর্মা, ইহার শিল্পনৈপুণ্য যে অভিশয় বিচিত্র দেখি, এ হেডু কুলাঙ্গনা- সুমুগি নিশিকদীর্ঘাপাঙ্গটকচ্ছটার্ভিঃ। যুগপদর্মপুর্বিঃ কঃ পুরো বিশ্বকর্মা মরকত্মণিলকৈর্গেষ্ঠিকক্ষাং চিন্টোঙি॥ ৯১॥ সচ্চিদানক্দসান্দ্রাঙ্গশোলাক্ষরিঃ॥ সচ্চিদানক্দসান্দ্রাঞ্জিচিদানক্ষনাকৃতিঃ॥ ৯২॥

ককা প্রকেঠি ইতামবনানাগনির্গাং। মরক্তমণিলকৈরিতি ততুলাং তদং শ্নাং তত্ত্বা মননাং। কিন্তু নাপ্র্রিরণ। তত্ত্ব হৃদ্রকর্মণো যুগণিরির্মানে ন তথা তাদৃগ্রাবির্দানি ভিনতি মরক্তমণিলকৈন্ত গোঠককাং চিনোতীত্তা-প্রয়োজনতভেদনেন ভেয়ং॥ ১১॥

্সদিতি সর্বাকালেদেশবাপেকরাং। যোহয়ং কালস্তমাতে বাক্তবদ্ধো চেঠা-মাক্রিণালাকং। ন চাম্বর বিহিথ্যোত্যাদি চ। চিনিতি স্থপ্রকাশত্বনাজ্জ্-তাং। তত্কং। পশাতোহজ্দা তংক্ষণাং বাদৃশান্তেতি। স্বত্র হি অজ্সা কর্ত্ত-ভাদিনির্দ্দোদ্শান্তেতি কর্মকভূপরোগং। ন চকুণা পশাতি রূপমদা যমেবৈয বুণ্তে তেন শভা স্থানে আহা বিরুণ্তে হন্ধ্ সামিতি

গণের ধর্মার পা পাষাণ্যমূহ স্থান্দ্র ও দীর্ঘ অপাঙ্গ টক্ষের (পায়াণবিদারণ অস্ত্রের) সূক্ষা এ ভাগদারা ভেদ করিয়া এক কালীন লক্ষ লক্ষ মরকভ্ষণি দিয়া গোষ্ঠপ্রকোষ্ঠ নিবদ্ধ করিতেছে॥ ৯১॥

मिकिनानमगानान ॥ ४८॥

চিদানলঘনাকৃতিকে গজিদানদদান্ত্রাঙ্গ কহা যার॥ তাৎপর্য্য। সং শব্দে সর্ব্বকাল সর্বদেশব্যাপী, চিৎ শব্দে স্বথাশ, স্ত্রাং অজ্জ, আনন্দশব্দে নিরুপাধি

### যথা দ

ক্রেশে ক্রমাৎ পকবিশে ক্রমং গতে
যদ্ ব্রহ্মেশি গ্রং স্থানস্ফুরং পরং—
ভদ্যপ্থিন্ কঃ পুরকো নরাকৃতিঃ
শ্যামেহিয়মামোদভরঃ প্রকাশতে॥ ৯০॥
যপা ব্রহ্মাংহিতায়ামাদিপুরুষরহৃদ্যে॥

জাতে:। আননেতি নিজপাণিপ্রেমাপ্পদস্কাংশছাং। কিমেওদন্ত্তনিব বাহেদেবেচথিলায়নীলাদি। আনলং এজণো রূপমতি জাতে:। শাস্তেতি তদিতরাম্পৃষ্টরূপহাং। তত্তকং। ময়া তত্তিদিং সর্বাং জগদবাক্তমূর্তিনা। মংস্থানি
সর্বাজ্তানি ন চাহং তেম্বস্তি হং। নচ মংস্থানি ভ্রানি পশা মে যোগমৈশার
মিতি। চিদানল্বনাক্তিরিভিচ তৎসমানার্থসিচ্দুকাপ্রাগশ্চাত ভত্তজ্পভেনোপ্লজিভ্রাল ক্রতং॥ ৯২॥

কুশে ইতি অনিদা অস্মিতা রাগতেষাভিনিবেশাঃ পঞ্চ কুশোঃ (ইভি পাত-জুলদ্শনি সাধনগদে ও হ'বং )। বাধ্যমার্থনিতি। ৮০॥

প্রেমাম্পাদের সর্ববিংশ, সান্ত্র শব্দে অন্যকর্তৃক অস্পৃক্তি॥ ৯২॥
যথা॥

ক্রমশং পঞ্চিণ ক্রেশ অর্থাৎ অনিদ্যা, অস্মিতা, রাগ, দ্বেষ ও অভিনিনেশ ক্ষা প্রাপ্ত হইলে কেবল যে ত্রক্ষা স্থা স্বয়ং ক্ষুর্ত্তিশীল হয়, তাহা আব্রণ করত অগ্রবর্তী এই নরাক্তি শ্যাম আমার আমাদ প্রকাশ করিতেছেন ॥ ৯০॥

মথা অকাশংহিতায় ভাদিপুরুষরহস্যে ॥

যদ্য প্রভ প্রভবতো জগদগুকোটিকোটিম্বশেষসম্থাদিবিভৃতিভিন্নং।
তদ্বক্ষ নিজ্বমনস্তমশেষভৃতং
গোবিন্দমাদিপুরুষং তমহং ভঙ্কামি॥ ৯৪॥
অতঃ শ্রীবৈষ্ণবৈঃ সর্বব্রুতিনিদর্শ নৈঃ।
তদ্বক্ষ শ্রীভগবতো বিভৃতিরিতি কীর্ত্তাতে॥ ৯৫॥

যা প্রভিতি। পূর্কাং যোজিতমন্তি তভক প্রভাবে যোজিতে বিভৃতিত্বমালি বোজিতং সাং। তথাচ ক্রি:। যায় পৃথিবী শারীরং মস্যাত্মা শারীরং
মস্যাবাক্তং শারীরং যাসাক্ষরং শারীরং সর্বভূতান্তরাত্মা দিব্যো দেব একো নারামণ ইত্যাদ্যা। যাত্মাং ক্রমতীতোহহমক্রাদ্য চোত্রম ইতি শ্রীভগবত্পনিষদক্ত
ভথা চৈকাদশে শ্রীভগবতা বিভৃতিপ্রসঙ্গ এব উক্তং। পৃথিবী বাযুরাকাশ আপো
জ্যোতিমহং মহান্। বিকারং পুরুবোহ্বাক্তং রক্তঃ সত্তং তমঃ প্রমিতি টীকাচ
পারং ব্রহ্ম চেত্যোয়া ৮৯৪॥

আত ইতি। যদাপোটে বর্জিশকোনাপি ভগবানের উচাতে। নির্বিশেষং ব্রহ্মতুপৃথক্ নালীক্রিয়তে। তথাপি মতান্তরমঙ্গীকৃত্য ভদিদং প্রোক্তমিতি ক্রেয়ং॥ ৯৫ চ

যিনি নিক্ষণ অর্থাৎ কলারহিত, নিরুপাথি, অনস্ত, সর্বান্য, এবং কোটি কোটি ব্রহ্মাণ্ডে পৃথিব্যাদি বিভূতিরূপে ভিন্ন সেই ব্রহ্ম যে প্রভাবশীলের অস প্রভা, তাদৃশ গোবিন্দ আদি-পুরুষকে আমি ভজনা করি॥ ৯৪॥

স্থতরাং প্রাতি ব্যাতি নিদর্শনদারা বৈষ্ণবগণ দেই ব্রহ্মকে ভগবান্ গোবিন্দের বিস্তৃতি বলিয়া কীর্ত্তন করেন ॥ ৯৫॥

তথাই যামুনাচার্য্যন্তোত্তে ।।

যদশুমপ্রান্তরপোচরক য
দ্রশোত্তরাণ্যাবরণানি যানি চা
প্রণাঃ প্রধানং পুরুষঃ পরং পদং
পরাৎপরং ব্রহ্ম চ তে বিভূতরঃ ।।

সর্বাদিদ্ধনিষেবিতঃ ॥ ৫৫ ॥

অবশাধিলসিদ্ধিঃ স্যাৎ সর্বাদিদ্ধনিষেবিতঃ ॥ ৯৬ ॥

যথা ॥

যদগুমিতি। অওসান্তরং মধ্যভাগো গোচরো বিষয়ে। যস্য তৎ সর্ক্ মিত্যর্থ:। দশেতি। দশ দশ গুণাণি উত্তরাণি উত্তরোত্তর প্রমাণানি বেবাং তানি যানি। পুরুষ: সমষ্টিজীব:। পরং পদং বৈকুঠং ব্রহ্মতু ভগবত এব কচি-দ্ধিকারিণি নির্কিশেষ্ড্রেনাবিভাববিশেষ:॥ ১৬ ॥

# যথা যামুনাচার্য্যন্তোত্তে ॥

হে ভগবন্! ব্ৰহ্মাণ্ড, ব্ৰহ্মাণ্ডান্তৰ্গত বস্তু, ক্ৰমশঃ দশগুণ বুদ্ধি পৃথিব্যাদি আবরণ সকল, সন্তাদি তিন গুণ, প্ৰকৃতি, পুরুষ, শৈকুণ্ঠ এবং পরাৎপর ব্ৰহ্ম ইত্যাদি সকল তোমারই বিস্তৃতি বলিয়া কার্ত্তন করা যায়॥

দৰ্কা দি দ্ধিনি যেবিভা। ৫৫ ॥

নিখিল দিদ্ধিগণ যাঁহার বশীপুত তাঁহাকে দর্বদিদ্ধিনিষে-বিত কছে ॥ ৯৬ ॥ দশভিঃ দিৰিসেখীভি, বুঁতা মহাদিৰণঃ ক্ৰমাদকী। অণিমাদয়ো লভন্তে; নাবসরং হারি কুষ্ণস্য ॥ ৯৭ ॥ অবিচিন্তামহাশক্তিঃ ॥ ৫৬ ॥ দিব্যস্থাদিকর্তৃহং অক্ষ্রদাদিসোহনং। ভক্তপ্রারন্ধিবংস ইত্যাদাচিন্তাশ্কিতা॥ ৯৮ ॥ ভক্ত দিব্যস্থাদিকর্তৃহং যথা॥

দশভি: অণুর্মির।দিভি: ক্রমাং ক্রমণ প্রাপ্য সেবিতা ইতার্থ:। সিদ্ধর-কৈতা একাদশক্ষে ভেরো: । ১৭॥

व्यामीष्ट्रायानि छीयः প্রথমমথ বিভূর্বংসভিদ্যানিদেহ।-

দিবোকু। তবো তবন্ন কম: । ব্ৰহ্মক দানী আদিশক এইণাং সন্ধ্ৰোহণি কোষ: । উত্তৰো তবজান প্ৰকৰ্ম কাল্পা ত্ৰাকাং । প্ৰায়ো মায়া তুমে ভর্জু-নানাা মেছপি বিমোহিনীতি । দিবাৰমৰ ব্ৰহ্মা গ্ৰহণামিপৰ্যান্তঃ ক্ৰেয়া বিধ্বংস ইতি বিধ্বংসন্মি গ্ৰহণ ॥ ১৮ ॥

**আদীজারা**দ্বিতীয় ইতানেন নরগীলামরছাং। প্রাং ভগ্রত্বাঞ্জক।তি

অণুর্মিগত্তাদি দশটী গিদিররপা স্থীকর্ত্ক স্বস্থ ক্রমপ্রাপ্ত স্থানিসাদি স্থায়ী সহাসিদ্ধি প্রীক্ষের দ্বারদেশে প্রবেশের স্ব-সর লাভ করিতেও সমর্থ হইতেছে না ॥ ৯৭ ॥

অধ অবিচিন্ত্যমহাশক্তি॥ ৫৬॥

ত্রক্ষাণ্ডের অন্তর্যামি পর্যান্ত দিব্য স্থৃষ্টি কর্তৃত্ব, ত্রক্ষা রুদ্রাদির মোহন এবং ভক্তজনের প্রারক্ষ থণ্ডন ইত্যাদিকে অবিচিন্তাশক্তি বলে ॥ ৯৮॥

তন্মধ্যে দিব্যসর্গাদিক উর যথ। ॥ নরলীলা প্রযুক্ত শনীরের ছায়াই যাংগর দ্বিতীয় হইয়াছে, মংশেনাংশেন চক্রে তদকু বহুচতুর্বছিতাং তেষু তেন'। ব্রত্তত্ত্বাদিবীতৈরথ কমলভবৈঃ স্তৃয়মানোহখিলাত্মা ভাষদ্রক্ষাওদেব্যঃ স্ফুট্মজনি ওতো যঃ প্রপদ্যে তমীশং ॥৯৯ বেজাক্ডাদিয়োহনো যথা॥

মোহিতঃ শিশুরুতৌ পিতামহো হস্তশন্তুরপি জুন্তিতো রণে।

তাংকালিকন্বাচ্চ পুর্ব্বপ্রতিজ্ঞাত্মন্তুত্ত্বমুদাহতং। এবমুত্তর্ত্তাপি। বৎস-ডিন্তাদিদেহানংশেনেতাের পাঠঃ। তদেতচ্চ অদাৈবইন্তৃতেইসা কিং মম ন ত ইতাাদাকুসারেণানিগ্যাং। প্রকারাম্বমেতৎ পদাং তাক্তং॥ ১৯॥

মোহিত ইতি বাণযুক্ষানস্তরং কলাচিং পারিজাতপ্রত্যানয়নায় ক্লতপৌঢ়ি-প্রলাপমিক্রং প্রতি শ্রীনারদসা হাসাবচনং। অনোতি। তস্য পূর্বপরাধ্যয়ো

সেই বিভু শীকৃষ্ণ প্রথমে অংশাংশদারা দংস ও বালকাদির দেহে রচনা কনিয়া তৎপশ্চাৎ ঐ সকল বংস বালকাদির দেহে আনক চভু সিভি মূর্ত্তি বিস্তার করিয়াছেন, তদনস্তর তত্ত্বজ্ঞান-পরিশূন্য অনেকানেক ত্রন্মাকর্তৃক স্তত হইয়া অথিলাত্মা শীকৃষ্ণ তত্তসংখ্যক ত্রন্মাণ্ডের সেব্য হট্যা প্রকাশ পায়েন অত্তব আমি সেই ঈশ্বের শরণাপ্র হই ॥ ৯৯॥

खकारुखानिस्मा**र**न यथा॥

একদা পারিক্সাত প্রত্যানয়ন করিবার নিসিত্ত ক্লডপ্রেটি-প্রলাপ ইন্দ্রের প্রতি নারদ হাস্য প্রকাশপূর্বক কহিলেন, হে মহেন্দ্র ! যিনি শিশুহরণ-বিষয়ে পিতামহকে মোহিত করিয়াছেন, যাঁহা কর্তৃক বাণযুদ্ধে শস্তু জ্ঞিত হয়েন, সেই যেন কংগরিপুণাদ্য তৎপুর:
কে মহেন্দ্র বিবুধা ভবদ্বিধাঃ ॥ ১০০ ॥
ভক্তপ্রারক্ষবিধ্বংগো যথা ॥
জীদশ্যে ॥

গুরুপুত্রমিহানী ৩ং নিজকর্মনিবন্ধনং।
আনয়স্ব মহারাজ মচহাসনপুরস্কৃতঃ॥ ১০১॥
আদিশব্দেন তুর্ঘট্যটনাপি যথ।॥ ১০২॥

#### ≷পি হ'চড:॥ ১٠٠ এ

নিজং তদীরং কর্মের তরিবরনং তর্মনে নিমিত্তং বসা তং। তহি কথং তংগ্রাম্বর্মকার্থিক্রমিতবাং ত্রাহ্ মছোসনেতি। ভক্তম্মস্য পিতৃসম্ধান্ত্রেমার ১০১॥

ছ্র্মট্যটনা নাম সীয়ত্রহাবস্থিতে: প্রকাশনং ॥ ১০২ ॥

কংশরিপুর জাতো জান্য তোমার মন্ত দেবতা দকল কোথা-কার কে ?॥ ১০০॥

> ভক্তপ্রারন্ধবিংবংস যথা॥ দশমক্ষকে ৪৫ অধ্যায় ৩৪ শ্লোকে॥

ভগবান্ যমরাজকে কহিলেন, আমার গুরুপুত্র নিজ কর্মের কারণ এখানে আনীত হইয়াছেন, হে মহারাজ! আমার আজ্ঞায় পুরস্কৃত হইয়া তাঁহাকে শীস্ত্র আনিয়া দাও॥

ইহার তাৎপর্য। যদিও তিনি নিজকর্মপ্রযুক্ত পরিগৃহীত হইয়াছেন তথাচ আমার আদেশে আনয়ন করিয়া দিলে ভোষার কোন দোষ হইবে না॥ ১০১॥

वानिनद-अयुक पूर्ववेघवेना यथा॥ ১०२॥

শবি জনিপরিংনী সুকুরাভীরভর্তু বি ভুরপি ভুজযুগোৎসঙ্গপর্যাপ্তমৃর্তিঃ ।
প্রকটিতবহুরূপো২প্যেকরণঃ প্রভুর্মে
বিয়ময়মবিচিন্ত্যানন্তশক্তিধিনোতি ॥ ১০০॥
কোটিব্রক্ষাগুবিগ্রহঃ ॥ ৫৭॥
শব্যাব্যাক্যাদগুটির্ক্ষাগুবিগ্রহঃ ॥

অপীতি শ্রীশুকদেববাকাং। অত্রচ অপি জনীতি। অজাহণি জাতো জগতঃ শিবায়েতি শ্রীমত্রন-বচনাদিভাঃ হুমুরাজীরভর্তুরিতি প্রাগরং বহুদেবসা কচিজ্ঞাতন্তবাত্মজ ই শাদিগর্গবাকাাং। স্বপ্রস্থিতির নােতি তু পাঠান্তরং বিভূবপি তরৈব মৃর্টা সর্বাং বাাপ্লুবল্লি শ্রীজননাদীনাং ভূজম্থোংসদেন পর্যাপ্তা অপূর্ণকেন প্রকাশমানা মৃর্টিগ্রা সঃ। নচাম্বন বিহিশ্যোতাাদেঃ প্রকৃতিভিতি। চিত্রং বতৈভদেকেন বপুরা মুগণং পৃথক্। গৃহেরু দাইসাহস্রং স্তির এক উলাব্রুলিতি শ্রীনার্দ্বাকাাং॥ ১০৩ ॥

অগণৈ।জগদভৈরাটো যুক্ত ইতাত কাহং তম ইতি দর্শনিষা মহাপৃত্ববছেংশি

শুক্দেব কহিলেন, বিনি জন্মরহিত হইয়া গোপরাজ নক্ষের তনয় হইয়াছেন, যিনি সর্প্রব্যাপক হইয়া জনন্যাশির ভুজয়ুয়েয়র অন্তর্গত ক্রোড় সদ্যে পর্যাপ্ত ভাবে অপূর্ণরূপে প্রকাশ পাইতেন এবং যিনি বহুরূপ প্রকটন করিয়াও এক-রূপী, দেই অবিচিন্তঃ অনন্তর্শক্তিশালী বিভূ শ্রীকৃষ্ণ শাসার বৃদ্ধিকে মোহিত করিতেছেন॥ ১০০॥

ভাগ কোটিব্ৰহ্মাণ্ডবিগ্ৰহ্মা ৫৭ ॥ ্ৰহ্মগণ্য জগদণ্ডযুক্ত বিগ্ৰহকে কোটি ব্ৰহ্মাণ্ডবিগ্ৰহ কছে: ইতি শ্রীবিগ্রহন্যান্য বিভূত্বনমুকীর্ত্তিতং ॥
তথা তত্ত্বৈব ॥
কাহং তথ্যে মহদহং খচরাগ্নিণাভূমন্থেষ্টি ভাণ্ডঘটনপ্রবিত্তিকায়ঃ।
কেদ্যিনাহ্বিগণিতা গুলুরাণুচর্য্যা-

সর্ব্বকাশুব্যাপিবিএহ্যণদাস লা প্রীক্ষত্বে কৈম্ভামানীতং তচ্চ সর্ব-বৈক্পুবাপিভাজ্জের । তগাপি তেভাস্ত্যা পৃথক্রমতার তুলং। যত্কং। মরা ভত্মিদং সর্ব্যিভাদি। কাহমিতি তু বাপারতে। ত্যা প্রকৃতিং মহৎ মহতবং ভ্রমণকার;, থমাকাশ, চরো বায়ু;, ভূ: পৃথী, সেয়ং ব্রক্ষাওথর্পরক্ষৈপবানাত্র মনতে অব ততো ভিন্নবেন নির্দেশ্র শিলাপ্ত্র্যা শ্রীরমিভিব**জ্জের:।** এতে: সংবেষ্টিতো যদওঘট: বন্ধাওঘট: ত্যা চ সমষ্টিজীবক্ষপোভিমানাহং ক চতুমুগিশ্রীরাভিমানিজেন স্থবিভ্রিকার্ত্রপশ্চ স্ক্রামহং ক। বিশেষণ্রো: কর্মার্যার । কিন্থিবেভাদিরগাসা তে তব মহিন্ধ ক। তত্র প্রসাণবন্তেষাং

ইহাই শ্রীবিতাহের বিভূষ কীর্ত্তন করা হইল ॥ যথা দশমে ১৪ অধ্যাথে ১১ শ্লোকে ॥

বিক্ষা কহিলেন, হে ভগবন্! প্রকৃতি, মহৎ, অহকার আকাশ, বায়ু, ডেজঃ, জল এবং পৃথিবী এই সকলে পরি-বেস্তিত যে অও ঘট তাহাতে 'আলপরিমাণে সপ্তবিভত্তিমাত্র পরিমিত আমার শরীর আমি কোথায়? আর ভোমার মহিন্মাই বা কোথায়? অতএব ব্রক্ষাগুবিগ্রহ বলিয়া আমি আপনাকে ঈশ্বর বলিতে পারি না। ব্রক্ষাণ্ড আমার শরীর মটে, কিন্তু এতাদৃশ অসংখ্য ব্রক্ষাণ্ডরূপ পর্মাণু সকলের

বাতাধ্বরোমবিবরস্যচ কে মহিত্বং ॥ ১০৪ ॥ যথা বা ॥

তবৈত্র স্থান্ড নাচাং স্থান ক্লভুন নৈশ্চান্ধি তং যোজনাকাং
পঞ্চাশংকোটথে বিক্তিপচিত মিদং যচ্চ পাতালপূর্ণং।
তাদৃগ্রক্ষা ওলক্ষাযুত পরিচয়ভাগেক কক্ষং বিধাতা
দৃষ্টং যদ্যাত্র বৃন্দাবনমপি ভবতঃ কঃ স্তান্ধে তদ্য শক্তঃ॥১০৫
স্থাবভারাবলীবাজং॥ ৫৮॥

চর্দাকু প্রমাণ্পকে বহিরস্কর্তা গ্রিক্কণা। ব্রহ্মাণ্ডপকে যথাকাল্মাবির্ভাবলয় ক্রপা। বাভাধ্বা গ্রাক্ষঃ। ভগ্বংপকে রোমনিবরঃ সুক্ষ্তমৈকদেশঃ। যত্তং বিষ্ণুপুরাণে। যদাাযুভাযুতাংশাংশে বিশ্বশক্তিরিয়ং স্থিতেতি ॥ ১০৪॥ ভদেতদেব রুক্ববিনে দৃষ্টাস্থেন দর্শবিতি যথা বৈতি ॥ ১০৫॥

পরিজ্ঞমণার্থ গবাক্ষণৎ তোমার অঙ্গের প্রত্যেক রোমবিবর, স্থানাং আমি অভিভূচ্ছ, আমাকে অনুকম্পা কর॥ ১০৪॥

#### যথাবা ॥

হে কৃষ্ণ ! যে একটী ব্ৰহ্মাণ্ড প্ৰকৃতি ও মহৎপ্ৰভৃতি তাল্পু সন্মিলিত, দেবনিকরের ভূবনসমূহে অকিত, পাকাশং কোটি যোজন কিতিমণ্ডলে খচিত এবং যাহা পাতালদ্বারা পানপূর্ণ, এমত অযুত লক্ষ ব্ৰহ্মাণ্ডের পারিচয় ভূমিস্বরূপ এক কক্ষরণোল বিধাতা যাঁহার রুদাবন দর্শন করিয়াছেন, তাদৃশ আপুনাকে স্তব করিতে কে সমর্থ হইবে ?॥ ১০৫॥

- अवज्ञातावनीवीअव्यथा॥ ए५॥

শ্বতারাবলীবীজ্ঞ্মবতারী নিগদ্যতে ॥ ১০৬ ॥
যথা গীতগোবিদ্দে ॥

ক্যোত্মজ্জরতে জগন্তি বহতে ভূগোলমুধিভ্ৰতে
দৈত্যং দার্মতে বলিং চল্মতে ক্ষত্রক্ষ্যং কুর্বতে।
পৌশস্তং জ্মতে হলং কল্মতে কার্য্যাত্মতে

অবতারীতি ভূমার্থমন্বর্থীরঃ সর্বেভ্যোহ্বতারিভাঃ পূর্ণকাং। এতে চাংশ-কলাঃ পুংসঃ রক্ষন্ত ভগবান স্থামিত্যকোঃ ॥ ১০৬ ॥

ত্রাভিসিদ্ধর্মাণনা প্রমশাস্ত্রনা শ্রীভাগবতবাকানা ত্রৈন্ব মহতি

যাঁহা হইতে অবতারসমূহ প্রকাশ পায় তাঁহাকে অব-তারাবলীবীজ বলা যায়। ১০৬॥

यथा गी जर्पावितम ॥

যিনি মংস্যারূপে বেদসকলকে উদ্ধার করিয়াছেন, কুর্মা-রূপে পৃষ্ঠদেশে জগংকে বহন করিয়াছেন, বরাহতকু পরিগ্রহ পূর্বক দন্তে ধরাকে ধারণ করিয়াছেন, বিদিংহ-মূর্ত্তিতে দৈত্য-রাজ হিরণ্যক শিপুর বক্ষঃস্থল বিদার্গ করিয়াছেন, বামনমূর্ত্তিতে আবিভূতি হইয়া বলিরাজকে ছলনা করিয়াছেন, পরশুরাম-রূপে করিয়াছেন, নামরূপে অবতীর্ণ হইয়া রাক্ষণাধিপতি দশাননকে সংহার করিয়াছেন, বলরাম-রূপে হল (লাগলকে) গ্রহণ করিয়াছেন, বুদ্ধশরীরে পশুদিগের প্রতি করুণা বিস্তার করিয়াছেন, এবং যিনি কল্পিরূপে জন্মান্পরিগ্রহ করিয়া ফ্লেছ্স্কলকে সংহার করিয়াছেন, শেই দশা-

মেচ্ছান্ম চূর্য়তে দশাক্তিকতে কৃষ্ণায় তৃভ্যং নমঃ ॥>०९॥
হতারিগতিদায়কঃ ॥ ৫৯ ॥
মুক্তিদাতা হতারীণাং হতারিগতিদায়কঃ ॥

য়থা ॥

পরাভবং কেনিলবক্তৃতাঞ্চ বন্ধঞ্চ ভীতিঞ্চ মৃতিঞ্চ কৃত্বা। পবর্গদাতাপি শিখগুমৌলে তুং শাত্রবাণামপবর্গদোহদি॥ ১০৮॥

त्नारकश्रे मिक्नर्भमञ्जी जाह ज्था श्री कार्गावित्स हे जि ॥ ১०१ ॥

মৃক্রীত্যপলকণং পৃতনাদিষু ভক্তিদাতৃত্বমপি জেরং। তদেবমপ্যক্তমনী ককে-কিলাভূতা ইতি ॥ ১০৮ ॥

বতাররূপ প্রকটনকারী শ্রীকৃষ্ণ তোমাকে নমস্কার করি॥১০৭ হতারিগতিদায়ক যথা॥

যিনি শক্রগণকে বিনষ্ট করিয়া মুক্তি প্রদান করেন তাঁহাকে হতারিগতিদায়ক বলে॥

यथ।॥

হে শিখণ্ডমোলে ! তুমি শক্রগণের প্রতি পরাভব, ফেনিল (ফেনাযুক্ত) বদন, বন্ধন, ভয় ও মৃত্যু বিধানপূর্বক পর্ব্য প্রদান করিলেও, অর্থাৎ পরাভবের প, ফেণিলবংক্তুর ফ, বন্ধনের ব, ভীতির ভ, এবং মৃতির ম, এই পঞ্চ পর্ব্য প্রদ ইইলেও, তাহাদিগকে মুক্তি প্রদান ক্রিয়াছু ? ১০৮ ॥

ি চিত্রং মুরারে জরবৈরিপকস্ত্রা সমস্তাদকুবদ্ধযুদ্ধঃ। 🦠 অমিত্রবুন্দান্যবিভেদ্য ভেদং মিত্রদ্য কুর্স্বন্নমূতং প্রয়াতি ॥১০৯ আত্মারামগণাকর্ষী ॥

আহারামগণা ক্ষীত্রে ত্রাক্তার্পমেবছি॥ शर्भा ॥

পূর্ণং পর্মহ সং মাং মাধ্বলীলামহৌষ্ধিন্তা ।

অমিত্রক্লান।বিভিদা ইলোব পাঠ:। প্রে মিত্র: পুর্যা: ॥ ১০৯ ॥ সারক্ষতাতকো ভক্তত দাবে গায়তীত্তকো সারকাণা পদাযুদ্ধমিত্তে:। ভক্তপক্ষে সেতি পুৰক পদং। পক্ষাস্তবে সারস্ কমলং। তত্ত্ব চাতকী-

তে মুরারে ! কি আশ্চর্ণোরে বিষয় ! দেব-বিপক্ষ অস্তর-ণণ দৰ্শভোভাবে তোমার সহিত যুদ্ধে উদ্যুক্ত হইয়াও শক্ত-দিগকে ভেদ না করত নিত্তের ভেদপুর্বিক অর্থাৎ সূর্য্যন্তল ভেদ করিয়া মোক্ষ লাভ করিয়াছে ॥ ১০৯॥

অথ আত্মারামগণাকর্মী॥ ৬০ ॥

আজারাম-গণাকর্ষির অর্থ স্পান্টই বোধ হইতেছে, অর্থাৎ चिनि छानिमिशक चाकर्षन करतन. उँ। हारक चाञ्चातामशना-कर्शी वना शास ॥

#### যথা ॥

कि भाष्ट्रशिव निवस !, जानि शुर्व अधीर मर्स विरात चाकाङ्मामृना अवर अत्रमश्रम इहेरल ७, माधरमत नीनाः

কৃত্বা বত সারঙ্গং ব্যধিত কথং সারসে তৃষিতং ॥ ১১১ অথ অসাধারণচতুক্ষে লীলা যথা ॥ ৬১॥ বৃহত্বাম্যে ॥

স্স্তি যদ্যপি মে প্রাজ্যা লীলাস্তাস্তা মনোহরাঃ। নহি জানে স্মৃতে রাগে মনেঃ মে কীদৃশং ভবেৎ॥

যথা বা 🛙

পরিস্ফুরতু স্থন্দরং চরিতমত্র লক্ষীপতে-স্তথা ভুবননন্দিনস্তদবতাররুদ্দদ্য চ। হরেরপি চমৎকৃতিপ্রকরবর্দ্ধনঃ কিস্তু মে

করণং তত্রাপি কমলে তৃষিতীকরণমিতি শ্লেষেহপি দিগুণীভাবাশ্চর্যামিতং॥১১০ সন্ত্রীভূাদাহরণদ্বরং পরমোৎকর্ষদর্শনার্থমেব লীলাবিশেষময়তয়া দর্শিতং ভদীয়লীলাসামান্যমিপি সর্ব্বোৎকৃষ্টভয়া শ্রীভাগবতাদৌ প্রাসিদ্ধামিতি তন্ত্রুন দর্শিতং। তথাহি শ্রীপরীকিদ্বাকাং। যেন যেনাবতারেণেতি যচ্ছণতো-

রূপ মহোযধি আমাকর্ত্ত আঁত্রাত (আসাদনীয়) হইয়া আমাতে ভক্তরূপে বিধানকরত ভক্তিরুসে তৃষিত করিল?॥১১০

> অথ অসাধারণ চারিটীর মধ্যে শীলা যথা॥ ৬১॥ রহন্বামনে॥

ভগবান্ কহিলেন, যদিচ আমার দেই সেই মনোহরলীলা-সকল প্রচুররূপে রহিয়াছে, তথাপি রাসলীলা স্মরণ হইলে আমার মন যে কি প্রকার হয়, তাহা আমি বলিতে পারি না॥ যথা বা॥

লক্ষীপতি নারায়ণের এবং জগদানন্দকারি তদীয় অব-তার সকলের চরিত্র স্থানররূপে স্ফুর্তি পাউক্, কিস্ত যাহা বিভর্তি হৃদি বিস্ময়ঃ কমপি রাসলীলারসঃ ॥ ১১ ॥ প্রেম্মা প্রিয়াধিক্যং ॥ ৬২ ॥ যথা শ্রীদশমে ॥

ষ্টাতি যন্তবানহ্নি কাননং ক্রেটি যুগায়তে স্বামপশ্যতাং। কুটিলকুন্তলং শ্রীমুথঞ্চ তে জড় উদীক্ষতাং পক্ষাকৃদ্দাং॥ ১১২॥

হবৈতারভিবিতৃফেতাদি চ। প্রাজ্যাঃ প্রচুরাঃ । ১১১ ।

আইতীত্যদাহরণমুৎকণ্ঠাদারা তদোধকং অনাত্রাশ্রবণাং। বিশেষোদাহরণানি তৈতানি জেয়ানি অহো ভাগামিত্যাদি নেমং বিরিঞ্চ ইত্যাদি ইথং সতাং ব্রহ্মস্থামূভ্তা। ইত্যাদি, নামং শ্রিয়োহক উ নিতান্তরতেঃ প্রসাদ ইত্যাদি হ ॥ >>২॥

ছরিরও আশ্চর্য্যরাশি বর্দ্ধনকারী দেই রাদলীলা রদ আমার হুদয়ে বিস্ময় ধারণ করিতেছে॥ ১১১॥

> প্রেমবশতঃ প্রিয়াধিক্য যথা॥ ৬২॥ শ্রীদশমে ৩১ অধ্যায়ে ১৫ শ্লোকে॥

হে প্রিয়! দিবদে যথন তুমি বুন্দাবনে গমন কর, তথন
তোমাকে না দেখাতে প্রাণিমাত্রের পক্ষে ক্ষণার্দ্ধকালও
যুগ্রহ অতিশয় তুর্যাপণীয় বোধ হয় এবং দিনাস্তে তুমি
প্রত্যাগত হইলে তোমার শোভন বদন অবলোকন করিয়া
নিমেষমাত্র ব্যবধানও অসহ্ হওয়াতে সেই সকল প্রাণির
নিকটে চক্ষুর পক্ষমকারী অর্থাৎ নেত্রবরক লোমনির্মাণকর্ত্ত।
ব্রহ্মা জড় বলি গণ্য হয়েন॥ ১১২॥

যথা বা ॥

ব্রহ্মরাত্রিততিরপ্যঘশত্রো
সা ক্ষণার্দ্ধবদগান্তব সঙ্গে।
হা ক্ষণার্দ্ধমপি বল্লবিকানাং
ব্রহ্মরাত্রিততিবদিরহেহভূৎ॥ ১১৩॥
বেণুমাধুর্য্যং॥ ৬৩॥
যথা তত্রৈব॥

সবনশন্তজুপধার্য্য স্থরেশাঃ শক্ত- সর্ব্ব-পরমেষ্ঠি-পুরোগাঃ।

ব্যাবানিং। তথৈব চাত্মতং শ্রীসামিচরণৈ। শশাস্ক সগণো বিশ্বিত্যেত্ত ব্যাবানিং। তথৈব চাত্মতং শ্রীসামিচরণৈ। শশাস্ক সগণো বিশ্বিত্যেত্ত ব্যাবানিং। তথেব চাত্মতং শ্রীসামিচরণৈ। শশাস্ক সগণো বিশ্বিত্যেত্ত ব্যাবানিং। তথেব চাত্যাং ক্ষপাঃ প্রেষ্ঠতমেনেত্যাদৌ শ্রীভগবদ্বাক্যং নির্বিবাদ-মেব॥ ১১৩॥

স্বনশন্তত্পধার্যোত্যাদান্তে নদান্তদা তত্পধার্যোত্যাদীনি চ জেয়ানি

### যথা বা॥

হে অঘনাশন! তোমার মিলনকালে বল্লবীগণের সম্বন্ধে বেল্লবাত্তি সকলও ক্ষণাৰ্দ্ধতুল্য গত হইয়।ছিল, হায়! এক্ষণে তোমার বিরহে ঐ বল্লবীর্ন্দের ক্ষণাৰ্দ্ধকালও ব্রহ্মরাত্তি সম্হের ন্যায় স্থণীর্ঘ ইইতেছে॥ ১১৩॥

বেণুমাধুর্য্য ॥ ৬৩ ॥ শ্রীদশমে ৩৫ অধ্যায় ৮ শ্লোকে ॥

গোপীগণ কহিলেন, হে যশোদে! তোমার তনয় স্বর দকল যথন উন্নয়ন করেন, তথন ইন্দ্র, রুদ্রও প্রক্ষপ্রভৃতি কবয় আনতকন্ধরচিতাঃ
কশালং যযুরনিশ্চিততন্তাঃ ॥ ১১৪ ॥
যথা বা বিদগ্ধমাধবে ॥
ক্রেম্বসুভূতশ্চমংকৃতিপরং কুর্বান্ মুহুস্তম্বুক্রং
ধ্যানাদন্তরয়ন্ সনন্দনমূপান্ বিস্মেরয়ন্ বেধসং ।
তৎস্ক্যাবলিভির্বলিং চটুলয়ন্ ভোগীন্দ্রমাঘূর্ণয়ন্
ভিন্দমণ্ডকটাহভিত্তিমভিতো বভাম বংশীধ্বনিঃ ॥ ১১৫ ॥

ভদ্বেণ্ণীতং স্বনশঃ বার্ষারং কশালং মোহং। অনিশ্চিতভ্তাঃ কিমিদ্মিতি নিশ্চেত্যশক্তাঃ ॥ ১১৪॥

ক্ষন্ধিতাত ফলরপণতেনৈব সর্বাত প্রাসরণম গুকটাহভেদশ্চ জের:। তত্ত ভূষুক্সচমংকারাদিনা দর্শিতং। অলোকিকমভাবহাং তচ্চোক্তং স্বন্ধ ইত্যা-দিনা। বিম্মেবয়নিভিত্ত বিশ্বয়ন্ত্রিভি পাঠ: শিষ্টা ॥ ১১৫॥

দেবেশ্বরণণ আপনারা স্থপণ্ডিত হইয়াও মোহ প্রাপ্ত হয়েন।
দে সময় গীতধ্বনি রাগে তাঁহাদের কন্ধর ও চিত্ত আনত হয়,
হৈ সতি। ঐ সকল দেবতার মোহের কারণ এই, তাঁহারা
দেই কল স্বরালাপের তত্ত অর্থাৎ ভেদের নিশ্চয় করিতে
পারেন নাই॥ ১১৪॥

यथा वा विमक्षमाध्य ॥

শ্রীক্ষরে বংশীধ্বনি মেঘদকল কে রোধ, তুষুরুকে আশ্চর্য্যান্তিক, দনন্দনপ্রভৃতি যোগিগণকে ধ্যান হইতে বিচ্যুত, বিধাতাকে বিশ্বয় প্রদান, উৎকণ্ঠার সহিত বলিকে খাল ও অনস্তদেবের শিরঃকম্প বিধানপূর্বক ব্রহ্মাণ্ডকটাহের ভিত্তি ভেদ করিয়া দর্বতোভাবে ভ্রমণ করিয়াছিল॥ ১১৫॥

রূপমাধুর্যাং॥ ৬৪॥ যথা তৃতীয়ে॥

যন্মর্ত্যলীলোপয়িকং স্বযোগ-মায়াবলং দর্শয়তা গৃহীতং। বিস্মাপনং স্বদ্য চ দৌভগর্দ্ধেঃ পরং পদং ভূষণভূষণঙ্গাং॥

যজপমিতি পুর্বেণাষয়:। স্বযোগমায়া স্বরূপভূতা অচিষ্কাশক্তি: তস্যা বলং দর্শয়তা এতাবদপান্তীতি তৎ প্রকটয়তা গৃহীতং আরুষ্টং জগত্যাং আনীতং প্রকটতমিত্যর্থ:। তদেবমেবজ্তং ভগবন্মতালীলোপয়িকমিতি তজ্লীলায়া অপি মাহাস্থাং তথাবিধমেব দর্শিতং। মর্তেবু লীলা মর্তালীলা তস্যামৌপয়িকং তৎসদৃশলীলাযোগ্যদিভূলাদিজাদিভিমনোহরমিত্যর্থ:। কিং বহুনা সর্বাকালাকেশত তজ্জপবেব রুরপি স্বস্য চ বিস্মাপনং তাদ্গমস্ক্র ভবাং যতঃ সৌত্রসর্ক্ষেণ পরং পদং পরমা প্রতিষ্ঠা। যং ধলু ভূষণস্যাপি ভূষণমঙ্গং যত্ত তাদৃশং ॥ ১১৬ ॥

# क्रभगाधूर्या यथा ॥ ७८ ॥

শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্ষন্ধে দ্বিতিয় অধ্যায়ে ১২ শ্লোকে ॥
উদ্ধব বিজুরকে কহিলেন, হে মহাশায় ! দেই মূর্ত্তি অতি
আশ্চর্য্য ছিল, ভগবান্ আপনার যোগমায়ার বল প্রদর্শন
করিয়া তাহা গ্রহণ করিয়াছিলেন সেই মূর্ত্তি মর্ত্যালীলার
উপযুক্ত এবং দোভাগ্য সম্পত্তির পরাকাষ্ঠা হওয়াতে তাঁহার
আপনারও বিস্ময়জনক হইয়াছিল, অধিকস্ত দেই মূর্তির
অঙ্গদকল এরূপ শোভন ছিল যে, ভূষণ সকলকেও ভূষিত
করিতে পারিত॥

গ্রীদশমে॥

কা স্ত্রাঙ্গ তে কলপদায়তবেণুগীতদন্মোহিতার্ঘাচলিতার চলেজ্রিলোক্যাং।
বৈর্ঘালক্যমোভগমিদঞ্চ নিরীক্ষ্য রূপং
বন্দোন্ধিজ-জ্রম মৃগাঃ পুলকান্যবিজ্রন্॥ ১১৬॥
যথা বা ললিতমাধবে॥
অপরিকলিতপূর্বিঃ কশ্চমংকারকারী
ক্ষুরতি মম গরীয়ানেয় মাধুর্যাপুরঃ।

অপরিকলিচেতি। মণিভিত্তৌ স্বপ্রতিবিশ্বলকাতিশরং স্ববপুশ্চিত্রং দৃষ্ট

দশমক্ষরের ২৯ অধ্যায়ে। ৩৭ শ্লোকে ॥

হে অঙ্গ ! কুলাঙ্গনাদিগের ঔপপত্যভাব নিন্দনীয় সত্য,
কিন্তু আপনার কল অর্থাং অক্ষুট মধুর শব্দময় অমৃতায়—
মান যে বেণুগীত, তাহাতে সম্মোহিত হইলে ত্রিলোকীমধ্যে কোন্ অবলা নিজধর্ম হইতে বিচলিত না হয় ? তাহাতে
মুগ্ধ হইয়া পুরুষেরাও স্বধর্ম হইতে বিচলিত হইয়া পড়ে।
অপর, আপনার ত্রৈলোক্য সোভগ এই রূপ নয়নগোচর
করিয়া কাহার বিসায় না হয় ? যে হেতু গাভী, হরিণ, পক্ষী
ও বৃক্ষদকলও পুলকে পূর্ণ হইল॥ ১১৬॥

যথ। বা ললিতমাধবে॥

এক দিবদ শ্রীকৃষ্ণ মণিভিত্তিতে স্বীয় মূর্ত্তিকে প্রতিবিশ্বিত
দর্শন করিয়া কহিলেন, আহা! আমার এ কি গরিষ্ঠ মাধুর্য্য
প্রবাহ স্ফূর্ত্তি পাইতেছে, এ প্রকার আশ্চর্য্যকারী মাধুর্য্য
পূর্ব্বে কখনও অবলোকন করি নাই কি আশ্চর্যের বিষয় এই

অয়মহমপি হন্ত প্রেক্ষ্য যং লুকচেতাঃ
সরভসমুপভোক্ত্ং কাময়ে রাধিকেব ॥
সমস্তবিবিধাশ্চর্য্যকল্যাণগুণবারিধেঃ।
গুণনামিহ রুক্ষ্স্য দিঙ্মাত্রমুপদর্শিতং॥ ১১৭॥
তথাচ জ্রীদশমে॥
গুণাত্মনস্তেহপি গুণান্ বিমাতুং
হিতাবতীর্ণস্য ক ঈশিরেহস্য।
কালেন যৈকা বিসিতাঃ স্থকল্পৈস্থূপাংশবঃ থে মিহিকা হ্যভাসঃ।

শ্রীভগবন্মনোরথ: প্রতিক্ষণং নবনবায়মানতন্মাধুর্যাছাৎ ॥ ১১৭ ॥

গুণা মনঃ স্বভাবা যদ্য প্রকটিত প্রাক্কতাতীত স্বাভাবিকান স্বগুণস্য তবাস্তাং তত্তলগুণানাং সমস্তানাং তথা প্রত্যেকমবাস্তর্বৃত্তিকোটীনাং গণনবার্ত্তা স্বস্য জগতো হিভাবতীর্ণস্য জগলাতানস্বজীবহিতায় তত্তলগুণৈকদেশমপাবতীর্ষ্য

আমি যাহাকে অবলোকন করিয়া লুব্ধচিত্ত হওত শ্রীরাধার ন্যায় সহর্ষে উপভোগ করিতে অভিলাষ করিতেছি॥

সমস্ত বিবিধাশ্চর্য্য কল্যাণরূপ গুণের সমুদ্র শ্রীক্ষের গুণ সকলের মধ্যে কিঞ্চিমাত্র প্রদর্শিত হইল॥ ১১৭॥

यथा मन्य > ८ व्यक्षातः १ (झारक ॥

ব্রহ্মা কহিলেন, হে দেব ! তুমি এই বিশের হিতার্থ গুণাবিক্ষার ক্রত অবতীর্ণ এবং গুণদকলের অধিষ্ঠাতা, তোমার গুণের বিশেষ বিবরণ দূরে থাকুক, "তাহা এই পরিমাণ" ইহা বলিয়াও গণনা করিতে কোন্ব্যক্তিসমর্থ হইবে ? ভগবন্! যে দকল নিপুণ ব্যক্তিকর্তৃক বছজন্ম ও বছকালে ভূমির নিত্য গুণো বনমালী, যদপি শিখামণিরশেষনেত ৄণাং।
ভক্তাপেক্ষিকমদ্য, ত্রিবিধহং লিখ্যতে ভদপি॥
হিরিঃ পূর্ণতমঃ পূর্ণতরঃ পূর্ণ ইতি ত্রিধা।
শ্রেষ্ঠমধ্যাদিভিঃ শকৈনাট্যে যঃ পরিপঠ্যতে॥ ১১৮॥
প্রকাশিতাথিলগুণঃ স্মৃতঃ পূর্ণতমো বুধৈঃ।
স্বাদ্বিব্যঞ্জকঃ পূর্ণতরঃ পূণ্যহল্পদিকঃ॥ ১১৯॥

প্রকটরতন্ত্রব যে তে গুণাংশান্তর তত্ত্র প্রকটি হান্তান পি গণ্যিতুং ক ঈশিরে ন কোহপীত্যর্থ:। তত্ত্ব সন্তাবনানিরাসার্থমাহ যৈবে তি । ১১৮ ॥

প্রকাশিতেতি। অরাথিগ্রমনার্যাণেক্যা জ্রেয়ং। ভক্তভকামুর্রপাধিকা-ধিকপ্রকাশাং। অদর্মতং পূর্বাণেক্যা চাণলহঞ্চ স্বপূর্কাণেক্যা তথানি পূর্ণতর্তাদ্বিমনাত্রাণেক্ষ্যা ॥ ১১৯॥

পরমাণু আকাশের হিমকণা এবং গগনস্থ নক্ষতাদির কিরণ পরমাণুরও গণনায় সমর্থ পরিগণিত হয়, ভাহারাও তোমার শুণ গণনায় সমর্থ নহে॥

অশেষ নায়কদিগের শিখামনি (শ্রেষ্ঠ) স্বরূপ বন্যালী যদিচ নিত্যগুণশালী, ভ্যাপি ইহাঁর ভক্তাপেক্ষিক তিন প্রকার গুণ লিখিভেছি॥

নাট্য শাস্ত্রে শ্রেষ্ঠ মধ্যাদি ভেদে হরি পূর্ণতম, পূর্ণতর ও পূর্ণ বিশিয়া সম্যক্রপে কীর্ত্তিত হয়েন॥ ১১৮॥

অধিলগুণ-প্রকাশক পূর্ণতম, তদপেক্ষা অল্লগুণ-প্রকাশক পূর্ণ, পণ্ডিত-গণ এই ত্রিবিধ্রূপে কীর্ত্তন করিয়াছেন॥ ১১৯॥

কুষ্ণস্য পূর্ণতমতা ব্যক্তাভূদেগাকুলান্তরে।
পূর্ণতা পূর্ণতরতা দারকামথুরাদিয়ু।
স পুনশ্চতুর্বিধঃ আদ্ধীরোদান্তশ্চ ধীরললিক্শ্চ মৃ
ধীরপ্রশান্তনামা তথৈব ধীরোদ্ধান্তঃ কথিতঃ।
বত্বিধন্তণক্রিয়াণামাস্পদভূতক্র পদ্মনাভক্ত।
তত্ত্রীলাভেদান্তিরুধান্তে নহি চতুর্বিবতা।
গন্তীরো বিনয়ী ক্ষন্তা করুণ; স্থাচুত্রভঃ।

ক্লফসোতি অৱ পূর্বতমতা চৈগ্যাগ্লাং। তাবং সর্জে বংসগায়াং।পশাতো-হজস্য তৎক্ষণাং। বাদৃশতে স্বন্ধান্যাং গীতকৌশেষবাস্থ উত্থাপ্যি মাধ্যা-গতা। নলঃ কিমকরে।গুজন ৬,য় এবং স্তেপিয়াদিয়ু। ক্লাগ্ণাচ।

অহো বকী ষং ভানকালড় উমিত্যালিল ভাৰেকামগ্ৰাদি ঘদি ন ব্ৰাসংখ্যতয়

গোকুল মধ্যে ভীক্ষেত্র পূর্বভন্তা, মধুরায় পূর্বভরতা এবং দারকায় পূর্বহৃত্যক হটালেছে।

দেই শীকুষ্য পুনরায় চকুলিলের পে ক্ষিত হয়েন। যথা-ধীরোদাত, ধীরললিভ, ধারপ্রশান্ত এবং ধারোদ্ধত ॥

যদি বল এক নায়কে চতু কিষে গুণ কি রূপে প্রকাশ
পাইতে পারে, তাহার উত্তর এই যে, ভগবান্ পদ্মনাভ বহু
বিধ গুণ ও ক্রিমার আস্পাদ স্করণ, মেই সেই লীলা ভেদে
চতু নিবিধতা বিরুজ হয় না অধাৎ লালাবশতঃ সকলই সম্ভবে॥
তথ্যগোধারোদ্ভি যথা॥

নে ব্যক্তি গন্তীর প্রকৃতি, বিনয়াখিত, ক্ষমাগুণশালী
( ৪২ ]

অক্তথনো গৃঢ়গকো ধীরোদাতঃ স্থল্বভৃৎ ॥ ১২ • ॥ যথা ॥

নীরম্মন্যমদপ্রহারি হসিতং ধোরেয়মার্ত্তাদ্ধৃততা নিবৃগ্ত্বতমুদ্ধ ভক্ষিতিধরোদ্ধারেণ ধারাক্রতিং। মধ্যুটিচ: কুভকি বিষেহপি মধুরং স্তত্যা মুহু র্যন্তিতং প্রেক্ষ্য ডাং মম তুর্বিতর্ক্যহৃদ্যং ধার্গীশ্চ নস্পাদতে॥ ১২২

প্ররোগঃ সমসংখাছেনাপ্ররোগাং কিন্ত যথাসম্ভবতবৈর কুজচিং ক্স্যাপি বিশেষদর্শনাং ॥ ১২০ ॥

ৰীরমিতি। মহেজবাকাং তত্র বীরক্ষনোতি পূঢ়গর্বতং ধৌরেরমিতি কক্ষ পানং নিবৃতিতে স্পৃত্রভানং উরতেতি স্থাবাত্তং । ময়ীতি কক্ষং জাতা ইতি বিনরিজমকখনক। ফ্রিডিকার্লরমিতি গভীরতং দশিতং। মম ধীরিতাাদি-বাদয়:॥ ১২১॥

করুণ, দৃঢ়ব্রত, আত্মলাঘাশুন্য, পূঢ়গর্বব, বীর এবং স্থাপর-দেহধারী ভাহাকেই ধীরোদাত কহাযায়॥ ১২০॥

#### यथ। ॥

যাঁহার হাস্ত বীরাভিমানিদিগের গর্মহরণ করে, যিনি আর্ত্রজনের উদ্ধার বিষয়ে ভারগ্রাহী, যিনি দৃঢ়প্রতিজ্ঞ, যিনি উদ্ধৃত ক্ষিতিধর (পর্বত) উদ্ধরণ-বিষয়ে ধীরাকৃতি, আমি অতিশার রূপে কৃতাপরাধ হইলেও যিনি মধুরাকৃতি, যিনি স্তবদারা বশীভূত হইরা থাকেন, তাদৃশ তুর্বিতর্ক্য হাদর আশ-নাকে অবলোকন করিয়া আমার বৃদ্ধি অথবা বাক্য কিছুই স্ফুর্ত্তি পাইতেছে না ॥ ১২১॥

গন্তীরন্থাদিদামান্যগুণা যদিৎ কীর্ত্তিতাঃ।
তদেতেমু তদাধিক্য-প্রতিপাদনহৈতবে।
ইদং হি ধীরোদাত্তন্ধং পূর্দেরঃ প্রোক্তং রঘূর্বহে।
তত্তক্তকানুসারেণ তথা ক্রঞে বিলোক্যতে॥ ১২২ ॥
বিধ ধীরল্লিতঃ॥

বিদয্কো নবভারুণ্যঃ পরিহাদবিশারদঃ। নিশ্চিন্তো ধীরললিভঃ স্থাৎ প্রায়ঃ প্রেয়দীবশঃ॥ ১২৩॥

গন্তীরভাদীতি। এতেবু ধীরোদান্তাদিবু তেখাং গান্তীর্যাদীনামাধিক্য প্রতিপাদনহেতবে। তদনান্ সর্কান্ গুণাহুপমদ্য সমুদ্যেনাবিভূ তানাং- তেখাং স্প্রক্তাপনার্থমিতার্থ: ॥ ১২১ ॥

প্রেরসীনাং প্রেমবিশেবযুক্তানাং ভারতমোন বণীভূত:। যথোক্তং। যা মা ভক্তন্ হুর্জরগেহশৃথ্যা: সংহৃত্য ভব: প্রতিবাজু সাধুনা। ইতি। অন্যারাধিতেঃ ন্নমিত্যাদি চ॥ ১২৩॥

এশ্বলে গম্ভীরত্ব।দি সামান্য গুণ সকল যাহা কীর্ত্তন করা হইয়াছে, ভাহা ধীরোদান্তাদি সকলে আধিক্য প্রতিপাদনের নিমিত্ত জানিতে হইবে॥

পূর্বতন পণ্ডিতগণ শ্রীরামচন্দ্রে ধীরোদাতত গুণ কীর্ত্তন করিয়াছেন, তত্তৎ ভক্তামুসারে শ্রীকৃষ্ণেতে সেই সকল গুণ দেখিতে পাওয়া যায় ॥ ১২২ ॥

# व्यथ बीतननिज ॥

যে ব্যক্তির রসিকতা, নবযৌবন, পরিহাসপটুতা ও নিশ্চিন্ততা প্রভৃতি গুণ সকল বিণ্যমান, তাহাকে ধীরললিত বলিয়া নির্দেশ কারাযায় এবং তিনি প্রায় প্রেয়সীর বশীভূত যথা ॥

নাচা সূচিতশর্কার বিকলা প্রাণাল ভারা রাধিকাং ব্রীড়াকুঞ্চিতলোচনাং বিরচ্যন্ত্রে স্থীনামসো । তত্তকোক্তহচিত্রকেলিমকরীপাণ্ডিতাপারং গতঃ কৈশোরং স্ফলীকরোতি কল্যান্ কুঞ্জে বিহারং হরিঃ॥ গোবিন্দে প্রকটং ধারলালিতত্বং প্রদৃশ্যতে। উদাহরন্তি নাট্যজ্ঞাঃ প্রায়োহ্ত্র মকর্থবজ্বং॥ ১২৪॥ বাচেতি। যজ্পত্রীসদৃশীঃ প্রতি ভত্তলীলাম্বরস্দৃত্যা বাক্যং॥ ১২৪॥

## इड्रेग्रा थाएकन ॥ ১२०॥

#### यथ। ॥

যজ্ঞপদ্ধী দদ্শীর প্রতি তত্ত্ত্ত্ত্রীলার অন্তরঙ্গ দৃতী কহিলেন আহে স্থারন্দ। এক দিবদ কুঞ্জমধ্যে শ্রীরাধা সহচরীমগুলে পরিবেষ্টিত হইয়া রহিয়াছেন, এমত সময়ে শ্রীকৃষ্ণ ঐ সভায় আনিয়া উপস্থিত হইলেন, পরে উপবেশন পূর্নক স্থীগণের আগে প্রাগল্ভ্য বচন দারা রজনীবিলাদ রভান্ত কীর্ত্তন করিতে লাগিলে, শ্রীরাধা লক্ষায় কুঞ্জিতলোচনা হইলেন ইতাবদরে শ্রীকৃষ্ণ তদীয় পয়োধর যুগলে বিচিত্র তিলক রচনার পাণ্ডিভ্য প্রদর্শন করত কুঞ্জমধ্যে কৈশোর বিহার স্ফল করিয়া-ছিলেন॥

শ্রীকৃষ্ণে প্রকট রূপেই ধীরললিতত্ব দেখাযায়, কিন্ত নাট্যশাস্ত্রজ্বরা ধীরললিতত্ব বিষয়ে প্রায় কন্দর্পকেই উদা-হুরণ ক্রিয়া থাকেন॥ ১২৪॥ অথ ধীরশান্তঃ ॥
শমপ্রকৃতিকঃ ক্লেশসহনশ্চ বিবেচকঃ।
বিনয়াদিগুণোপেতো ধীরশান্ত উদীর্ঘ্যতে ॥
যথা ॥
বিনয়মধুর্মৃর্তির্মন্থ বিশ্বেশস্ক তারো
বচনপটিমভঙ্গীসূচিতাশেষনীতিঃ।
অভিদধদিহ ধর্মাং ধর্মপুত্রোপকঠে

বিনয়মধুরমূর্ত্তিরিভাত বিনয়েন তংক্রেশসহন্ত্রমণি লক্ষাতে। যথোক্ত স্তবৈব তথা তদাবহার:। সার্গাণারিষ্বসেবনস্থাদৌ ভা-বীরাসনামুগমনস্তবন-প্রশাম:। স্লিগ্নেষ্ পাঞ্দু জগংপ্রণভিঞ্চ বিফোর্জকিং করোভি নৃপতিশ্বপার।

### অথ ধীরশান্তিঃ॥

যে ব্যক্তি শাস্তপ্রকৃতি, ক্লেশস্থিকু, বিবেচক ও বিন-য়াদিগুণযুক্ত পণ্ডিতগণ তাচাকেই ধীরশাস্ত বলিয়া কীর্ত্তন করেন॥

#### যথা ॥

ধর্মনন্দন যুধিষ্টিরের নিকট ধর্মকীত্তনকারি কংসবৈরি

শ্রীকৃষ্ণকে সন্দর্শন করিয়া বোধ হইল তিনি যেন সাক্ষাই
ছিলপতির ন্যায় প্রকাশ পাইতেছেন, আশ্চর্য্যের কথা কি
বলিব, বিনয় বশতঃ তদীয় মূর্ত্তি অভিশয় মধুর, চক্ষুর্যার
তারা মন্থর অথচ স্মিয় এবং বাক্ পট্টা ভঙ্গিরারা আশেষ
নীতি সকল সূচিত হইতেছিল।

পণ্ডিতগণ যুধিষ্ঠির প্রভৃতিকেও ধীরশাস্ত বলিয়া কীর্ত্তন

ষিজ্ঞপতিরিব সাক্ষাৎ প্রেক্ষাতে কংসবৈরী ॥

যুধন্তিরাদিকো ধীয়ে ধীরশান্তঃ প্রকীর্তি তঃ ॥

অথ ধীরোদ্ধতঃ ॥

মাৎসর্য্যবানহক্ষারী মায়াবী রোষণশ্চলঃ ।

বিক্ত্থনশ্চ বিষ্ণন্তির্থীরোদ্ধত উদাহতঃ ॥ ১২৫ ॥

যথা ॥

আঃ পাপিন্ জবনেন্দ্র দর্দ্দুর পুন ব্যাঘ্ট্য সদ্যন্ত্র্যা

বাসঃ ক্তিচিদন্ধক পক্তরজোড়েহ্দ্য নির্মীয়তাং ।

বিদে ইতি। অত্র শৃণ্রিতি পূর্বেণালয়:। বীরাসনং থজাহন্ততয়া স্থিতস্য বাত্রী আগরণং। নৃণতিঃ পরীকিং। উদাহরণে ধর্মপুত্রেপেকণ্ঠ ইত্যেৰ পাঠঃ॥ ১২৫॥

আঃ পাপিলিতি পতিকেরং বাাঘুটা বিনিবুভা। হেলেভালিনাত মারা-

## করিয়াছেন ॥

# অধ ধীরোদ্ধত।।

যে ব্যক্তি মাৎসর্যযুক্ত অহকারী, ক্রোধপরবশ, চঞ্চল এবং আত্মশাঘী পণ্ডিতগণ তাহাকে ধীরোদ্ধত বলিয়া উদা-হরণ করেন॥ ১২৫॥

#### যথা 🕪

শ্রীকৃষ্ণ কালজবনকে পত্র লিথিতেছেন, অরে পাপরূপি জবনেক্ত ভেক! এখনি নির্ভ হইয়া কোন অন্ধকৃপের পর্ত মধ্যে বাদস্থান নির্মাণ কর, এখানে কৃষ্ণনামক কৃষ্ণভুজগ স্থান আমি ডোকে গ্রহণ করিবার নিমিত্ত জাগরক রহি- হেলোন্তানিতদৃষ্টিমাত্রভাসিতব্রহ্মাণ্ডভাশু: পুরো জাগর্মি ওতুপগ্রহায় ভুজগঃ রুফোহত্র কুফাভিশু: ॥ ধীরোজতন্ত বিদ্বন্তিভী মিদেনাদির্দ্রুতাতে ॥ ১২৬ ॥ মাৎসর্য্যাদ্যাঃ প্রতীয়ন্তে দোষত্বেন যদপ্যমী। লীলাবিশেষণালি হামির্দোষেহত্র গুণাঃ স্মৃতা: ॥ যথাবা॥

অন্তোভারভর প্রণত্রজনদভান্তিং বিতম্মরে

#### বিভ্ৰণতং বস্তুত্ত তথাত্বাভাবাং ॥ ১২৬ ॥

লীলা বিশ্যোহত ভক্তরকণার ছ্টদমনরপ: তৎশালিছান্ত্রপ্রোগিছা-দিভার্থ:। আ: পাপিরিতাত ভক্তিরস্থাব্যক্তিসাশস্ক্রোদাহরণাস্তরং মাৎসর্যা-ভাসমরতক্রস্থেন দর্শরতি যথা বেতি। অস্তোভারভরপ্রশন্তইত্যের পাঠ:। পাঠান্তরে শত্তিনে সহ তৎপুরুষেহপি সাং। আড়ম্বর: সমারস্তে গ্রুগর্জিত-

য়াছি, আমার পরাক্রম জানিস্না, আমি অবহেলা পূর্বক উদ্ধিকে দৃষ্টি নিকেপ করিলেই ত্রহ্মণ্ড ভত্ম হইয়া যায়॥

় পণ্ডিতগণ ভীমদেন প্রভৃতিকে ধীরোদ্ধত বলিয়া কীর্ত্তন করিয়াছেন ॥ ১২৬॥

যদিচ মাংসর্ব্য প্রভৃতি রে।বত্ব রূপে প্রভীয়মান হুর ভথাচ লীলাবিশেষ শালিত্ব প্রযুক্ত এই নির্দোষ পাত্রে গুণ-রূপে পরিণত হয়॥

#### ঘথাবা ॥

আরে জ্রীণাম ক্রঙ্গ! (হরিণ) আমি জলদরাশির ভার-বাহি ন্ত্রাভূত জলদপুঞ্জের ভাত্তি বিস্তার করিতে করিতে খোরাড়ম্বরডম্বরস্থবিকটামুংক্রিপ্য হস্তার্গলাং।
তর্পারঃ পরবারণঃ সয়মহং লক্রোহস্মি ক্ষঞঃ পুরো
রে শ্রীদান কুরসগঙ্গরভুবো ভঙ্গং স্বমসীকুরু॥ ১২৭॥
মিথো বিরোধনোহপাত্র কেচিমিগলিতা গুণাঃ।
হরে নিরঙ্গুশৈখগ্যাৎ কোহপি ন স্থাদদন্তবং॥
তথা চ কোর্পো
অস্থলশ্চানগুশ্চিব স্থূলোহগুশ্চিব সর্প্রভঃ।
অবর্ণঃ সর্প্রভঃ প্রোক্তঃ শ্যামো রক্তান্তলোচনঃ।

ভূগারোরিতি বিশ্ব:। ভক্তত ঘোরো ভয়ানক আড়ধরদা ডধররাটোপো যদা
স: ১২৭ ।
প্রশ্বংস্থানা ইত্যাদিকং স্থাপরন্ গুণবৈচি রীং দর্শরতি মিণ ইতি।
হস্তার্গল (শুণু) উত্তোলন পূর্বিক গভার গর্জনকারি কুম্বনামক সুর্নিবার মহামতপ্রস্ক স্বং আদিয়া উপস্থিত হইলাম,
অত্তবে তুই রক্সভূমি হইতে ভঙ্গ (পরাজয়) অস্পীকার
কর ॥ ১২৭ ॥

এম্বলে যে সকল গুণ উক্ত হইল, তাহারা পরস্পার বিক্লেব হইলেও নিরকুণ ঐশ্বর্য প্রযুক্ত হরিতে কোনই অসম্ভব নহে, সকলই সম্ভব হইতে পারে॥

यथा कृर्याभूताए।॥

ভগবান্ হরি স্থাও নহেন, সূক্ষাও নহেন তিনি সর্বাথা অগুণ অথচ শ্যামবর্ণ ও রক্তান্তলোচন, ঐশ্ব্যা বোগ হেতু বিক্লফার্থকেও গ্রহণ করেন। শ্রম্যুয়েগান্তগনান্ বিরুদ্ধার্থে ছেন্টারতে ।
তথাপি দোষাঃ পরমে নৈবাহার্যাঃ রুমঞ্জন।
তথা বিরুদ্ধা অপ্যেতে সমাহার্যাঃ সমস্ততঃ । ১২৮॥
মহাবারাহে ॥
সর্বের নিত্যাঃ শাখতাশ্চ দেহান্তস্য পরাত্মনঃ।
হানোপাদানরহিতা নৈব প্রকৃতিজাঃ কচিৎ।
পরমানন্দসন্দোহা জ্ঞানমাত্রাশ্চ স্ব্রতং।
সর্বের স্ব্রত্থিঃ পূর্ণাঃ স্ব্রদোষ্ট্রেক্তিঃ॥
বৈষ্ণবৃত্তির ॥
ক্ষাদশমহাদোধ্য রহিতা ভগবত্তঃ।

নির্ছুশৈষ্বাং সক্ৰণীকারিখাৎ স্কাশ্রেষাদিতার্থ: । ১২৮ ॥ শাখ্ডা জগতি পুন: পুনরাবিভাবিন:। স্কাশুণৈরিতার অ্বাণেকিটিত-

যদিচ গুণসকল পরস্পারবিরুদ্ধ তথাপি পরস্পুরুষ ছরিতে দোষ উদাহরণ করিতে নাই, সকলের সমাধান করিয়া উদাহরণ করা কর্ত্তব্য ॥ ১২৮॥

# মহাবরাহপুরাণে ॥

ভগবান্ পর্যাত্মার যে সমস্ত দেহ তৎসমূদায় নির্দ্ধ ও শাখত অর্থাৎ পুনঃ পুনঃ আবির্ভাব বিশিষ্ট, সে সকলের সর্বতোভাবে পর্যানন্দস্বরূপ ও জ্ঞান্মর, সকলগুণে প্রিপূর্ণ ও সর্ব্ব-দোষে বর্জিত॥

মধা বৈক্ষৰভন্তে॥ ভগৰ্দিগ্ৰহ অফাদশ মহাদোধে বিৰ্দ্ধিত এবং ভাহা [ ৪০ ] সর্বৈশ্বপেয়ী সভ্যবিজ্ঞানানন্দর্রপিণী ॥ ১২৯ ॥
অফীদশ মহাদোষা বথা ॥
বিষ্ণুজামলে ॥
মোহস্তন্ত্রা ভ্রমো রুক্ষরসভা কাম উল্লণঃ ।

বিভি জের:। এতে চাংশকলাঃ পুঃস্ ইভাকে:॥ ১২৯ ।

নোহস্তক্ষেতি। ভক্তপ্রেমসন্থানন বেতে চ গুল্ধার কর। যথা। ততে ধ্বসানদৃত্তৈ তা পুলিনেহলি চ বংসলানিতালো মোহ:। কচিংত্তে পরবভরের নিব্দ্রামকর্ষিত:। রক্ষুলাশ্রায়: শেতে গোলোৎসলোপত্রণ ইভাানো ভক্তা বেল্প্রায়। তাণভিনু বৃত্মমন্ত্র্য ইভার ভা অনুস্থা লোকং মুক্লপ্রতীত-বহুবের সারোরি ভালে শ্রামন্ত্র্য ইভার ভা অনুস্থা লোকং মুক্লপ্রতি বহুবের সারোরি ভালে শ্রামন্ত্র হা লাম প্রেমসন্থাই বিনা রাজঃ। সভু নাজ্যের। উন্থা হংগল কামো লোকিকঃ। তথা প্রেমসন্থাই সচ নাজ্যের। বেশ্লভা চাকলাং। সাচ গুলো ঘণা। বংসার্কন্ কচিনসময়ে ইভালে। মনোহলি যথা। মনবিষ্ বিতলোচন ক্রিলিভালে। তথা ব্রামসর্যাং। লোকেশ্রানিনাং মোটারিবে। শ্রিসন্থা ভ্রম ইভালে। হিংসা তু কুটেব বছর। অনভাং। নাহং ভক্তিবানন্থ ইভালে। জরাসন্ধ্রনালো চ ক্রোধাহলি গ্রামন্ত্রানার হতালো। আবাসন্ধ্রনালো চ ক্রোধাহলি

# সকৈশর্ষ্যময় ও শত্য জ্ঞান আনন্দস্বরূপ ॥ ১২৯॥ অফীদশ মহাদোষ যথা॥

# বিষ্ণুজামলে ॥

মোহ, তদ্রা (থেদবিষয়ক শ্রাম) ভ্রম, রুক্ষরস, উত্থণ-কাম অর্থাৎ জুংধপ্রদ লোকিক কাম, লোলভা (চাঞ্চল্য) অন্তু, মাৎস্থ্য, হিংসা, থেদ, পরিপ্রাস, অসভ্য, ত্রোধ, লোলতা মদমাংসর্ব্যে হিংদা থেদপরিপ্রমে।
অনত্যং ক্রোধ আকাজনা অশকা বিশ্ববিজ্ঞাঃ।
বিষমন্বং পরাপেক্ষা দোষা অন্টাদশোদিতাঃ ই ভি.॥১০০॥
ইত্থং সর্ব্যাবভারেভতেতাহপ্যক্রাবভারিণঃ।
অজ্যেনন্দনে স্মন্ত্র্যাভর সরিতঃ॥১০১॥
তথাচ ব্রহ্মসংহিতায়ামাদিপুরুষরহৃদ্যে॥

কাপাদৃহাবিপিন ইতাদি। বিশ্ববিদ্রমোজগদাবেশ:। সচ ব্রহ্মানিভক্তস্ক্ষের
কাগংপালনেক্ষ্ময়:। বৈষ্মাং সমেছিং সর্বাভৃতের ন মে বেবাছিন্ত ন প্রিয়ঃ ।
ব্য়ে জন্মজ্বি তু মাং ভক্তাা ময়ি তে ভেষু চাপাছ্মিভ্যাদৌ। পরাপেকা চ। অহং
ভক্তপরাধীন ইত্যাদাবিতি। তত্মাং ক শোকমোছৌ সেহো বা ভর্ম্বা বেহজ্জসম্ভবাভাত্র মজ্জসন্তবা যে ভএব ন সন্তি নতু বিজ্ঞসন্তবা: ভেছ্পীতি মতং।
বিজ্ঞসন্তব্যন্ত ভেষ্ণ শ্রীভক্ষেবাদির তথ্মারি ভানম্বভাধিনোজির ইত্যাতৃক্তে:
ভগ্রংপ্রেমমোহাদৌ দৃষ্ট ইতি ১০০ ৪

পুর্কোজ্পূর্ণতমত্বং ব্যঞ্জন্ন পূসংহ্রতি ইখনিতি পুর্কোজ্ঞাকারেবেজার্ধ । ততত্তত্ত্বাৎপ্রসিদ্ধান্বভারিশো নানাবভারকর্ত্ত্বিহাবিজ্ঞাহিশি। আর প্রকৃতি । মাধুর্গান প্রাচ্র্গানেবেলজিটেরশ্বনিশি ক্রেমি গ্রেমি ১৩১ ॥

আকাজ্যা বিশ্ববিভ্রম অর্থাৎ ব্রহ্মাদি ভক্তসমন্ধ্রবশতঃ জগৎ— পালনেচহামর, বৈবমা ও পরাপেক্ষা অর্থাৎ পারের অপেক্ষা। করা, এই অফাদশ দোষ কথিত হইল॥ ১০০॥

এইরূপ সম্দায় আবতার হইতে প্রেষ্ঠ স্বাৰ্ভারকারি
মহাবিষ্ণু অপেকা অজেজনন্দনে ফ্লরমাধ্র্রানী ব্রিষ্ঠ হইল, ইহাতে ঐথর্যাও জানিতে হইবে॥॥ ১০১॥
যথা অক্সাংহিতায় আদিপুরুষরহৃষ্টে॥ ষদৈকনিখনি জকা নমধাবনখ্য
জীগন্তি কোমবিলজা জগদন্তনাথাঃ।
বিষ্ণুম হান্দ ইহ যদ্য কলানিশেষে।
গোবিলমানিপুরুষং তমহং ভজামি॥ ১০২॥
অথান্টাবসুকীর্ত্তান্তে দদ্যুণ্ডেন বিশ্রুডাঃ।
মঙ্গলানংক্রিয়া রূপাঃ সব্ভেদাস্ত পৌরুষাঃ।
শোভা বিলাদ্যে মাধুর্য্যং মাধল্যং স্থৈয়তেজনী।

ভদেবাই তথাচেতি। যগৈকনিখসিতকালমিতাত চ গোবিদ্দান্দ্রন চ ভত্ত প্রীর্জেজনন্দন এবোচাতে। স্থারতীরপি পালম্ভমিতাদিনা বেণ্ কণ্ড-মিতাদিনা চ বর্ণরং তগৈরে বর্ণনাং ভতত্তত্মহামাধ্যমিপি স্চিতং। ন তারং প্রীর্জিনা চ বর্ণরং তগৈরে বর্ণনাং ভতত্ত্মহামাধ্যমিপি স্চিতং। ন তারং প্রীনন্দনন্দনা এব মন্তবাঃ। গৌতমীয়ে দুশার্ণাহাদশার্ণরোব্যাখ্যামানেক-জন্মসিনাং গোপীনাং পতিরেব বা ।নন্দনন্দন ইত্ত ভিত্তবোক্যানিন্দইন ইভি বহুত্পার্থেল্পাইসাবাধসা প্রাবসারিধাং। সকললোকমঙ্গলা নন্দ্রোপ্রভাবিদ্যানিক্ষরণাচ্চ ॥ ১০২ ॥

স্বভেদাঃ অভকরণবৃত্তিবিশেষাঃ। মদণেতি। নদণেবরপশো গাড়তা

ষাঁহার এক নিশ্বনিত কাল অবশ্বন করিরা জগদওনাধ সকল জীবিত থাকেন, সেই মহাবিফুও যাঁহার কলাবিশেষ, এসত গোবিন্দ আদিপুরুষকে ভদনা করি॥ ১৩২॥

আনন্তর যাহা সদস্পত্ন রূপে বিশ্রুত এবং মন্ত্রলের আলক্ষার অরূপ পুরুষ সম্বন্ধীয় সন্তঃভদ কীর্ত্তন করিতেছি। যথা।
শোভা, বিলাস, মাধুষা, মাস্লা, হৈছা, তেজা, ললিত ও

লিতি দিয়িমি ভাতে সহভেদান্ত শৌক্ষা । তেওঁ । তত্ত্ব শোভা ॥

নীচে দয়াহধিকে স্পর্কা শোর্যোৎসাঙ্গে দক্ষতান স্থাপ ব্যক্তিমায়াতি যত্র শোভেতি তাং বিহঃ ॥ ১৩৪ ॥ যথা॥

স্বৰ্গধ্বংদং বিধিং হাত্ৰ জভুবি কদনং হাৰ্ছ বীক্ষাতি হুইটা। নীচানালোচ্য পশ্চালমুচিরিপুমুখান্ত কারুণাবীচিঃ। অপ্রেক্ষ্য স্বেন ভুল্যং কমপি নিজরুষামূত্র পর্য্যাপ্তিপাত্রং

#### ইভার্ব: ॥ ১৩৩ ॥

ত্তকাধিক ইত্যাধিকক্ষনা ইতার্থ: । যত্ত্র মঙ্গলালংক্রিয়ায়াং ॥ ১৩৪ ॥ তথাপি তৃর্জ্জনমুখ্যমেকং মার্মাত্ত্যাশস্থাহ অপ্রক্ষোতি ॥ ১৩৫ ॥

উদার্য্য এই সকল পুরুষদম্বনীয় সত্তভেদ॥ ১০০॥ তন্মধ্যে শোভা যথা॥

যে স্থানে নীচে দয়া, অধিকে স্পৰ্দ্ধা, শোষ্য, উৎসাহ দক্ষতা এবং সন্ত্য প্ৰকাশ পান্ন তাহাকে শোভা বলে॥ ১৩৪॥ যথা॥

ইত্রকর্ত্ক অতির্প্তি বারা জ্ঞজভূমির পীড়ন অন্দররূপে অবলোকন করিয়া জ্ঞীক্ষের ইচ্ছা হইল সর্গ বিন্তু করিয়া ফেলি, কিন্তু পশ্চাৎ নমুচিশক্র ইন্দ্র প্রভৃতিকে নীচ বিবেছনা করিয়া কার্লগুতরঙ্গে পরিপূর্ণ হইলেন, কারণ স্থীয় ক্রোধের পর্যাপ্তিপাক্র আত্মত্ল্য কাছাকেও দেখিতে না পাইয়া স্ভা-প্রভিত্ত হরি বন্ধুগণকে আনন্দ প্রধান করত মহাদ্রি গোবর্জন

বৃদ্ধানক্ষিষ্য মুদ্ধরত হরিঃ সভ্যসন্ধো নহাজিং ॥ ১৩৫ ॥
অপ বিলাসঃ ॥
বৃষভস্যের গন্তীরা গতি শ্বীরঞ্চ বীক্ষণং ।
লক্ষিভপ্ত বচে। যত্র স বিলাস ইতীর্যতে ॥ ১৩৬ ॥
যথা ॥
মল্লজেণ্য মবিনয়বতীং মন্থরাং নাস্য দৃষ্টিং
ব্যাধুশ্বানো দ্বিপ ইব ভূবং বিক্রমাড়ন্বরেণ ।
বাগারন্তে স্মিতপরিমলৈঃ কালয়ন্মঞ্চককাং
ভূকে রক্ষলপরিসরে সারসাকঃ স্বার ॥
মাধুর্যং ॥

ু বুষ ছসোতি গভৌ বীক্ষণে চ যোজাং ॥ ১৩৬ ॥ যতো মন্থ্যা নম্ৰভা বৈশ্বপ্ৰাাদিশ্না তভ অবাবিনশ্বতীভি । দ্বিশ<sup>্</sup>ইকে

**উভোলন** করিলেন ॥ ১৩৫ ॥

व्यथ विलोश ॥

যে স্থলে ব্যভের নাায় গন্তীর গতি, ছির নিরীক্ষণ ও সহাস্য কাক্য, ভাছাকে কিলাস কলা যায়॥ ১৩৬॥

য়খা ॥

পথানেত্র শ্রীকৃষ্ণ মল্লাঞানিতে বিনরশ্ন্য ছিরদৃষ্টি নিক্ষেপ পৃথিক বিক্রম ঘটাখারা হতির নাায় ভূকম্প বিধান করতঃ বাক্যারন্তে হারা পরিমলখারা সঞ্পূষ্ঠ কালন করিয়া অভ্যুক্ত শ্রক্তিক পরিস্বের গমন করিলেন॥

चय नाध्रह ।

# मिकिन । ५ नहेती । १ छक्तित्रनामुक्तिकुः ।

खनाय्राः ভरनम्य क ८०कोटनः न्यृहनीयका ॥ ५७१ ॥ यथा ॥

বরাষণ্যাসীনস্তটভূবমবইস্তরুচিভি:
কদস্যৈ: প্রালম্বং প্রবলিতবিলম্বং বিবচয়ন্।
প্রপন্নায়ামতো মিহিরছ্ছিভূম্ভীর্থপদ্বীং
কুরঙ্গীনেত্রায়াং মধুরিপুরপাঙ্গং বিকির্তি ॥
মাঙ্গল্যং ॥

মাঙ্গল্যং জগভামেন বিশ্বাদাস্পদতা মভা 🛭 ১৩৮ ॥

ভার বৃষ ইবেতি পাঠান্তরং ॥ ১৩৭ ॥

আ 1हेन्छ: স্কুবৰ্ণ:। প্ৰালম্বং ঋজুনবিমালাং প্ৰবলিতো বিলমো যার ওন্ধৰ্ণা স্যাত্ত্বাকেনৈব তত্ত্ব হিতি: স্যাদিতাভি প্ৰায়াদিতি ভাবঃ। পাঠান্তমন্ত্ৰ নাজুাপ্-যুক্তং ॥ ১৩৮॥

বে স্থলে চেফাদির স্পৃহণীয়তা হয়, ভাহাকে মাধুর্য্য বলে ॥ ১৩৭ ॥

#### যথা।

এক দিবল জ্রীকৃষ্ণ জ্রীরাধার দর্শন প্রত্যাশার যমুনার প্রশন্ত কুলে উপবেশন পূর্বক বিলম্ব যাহাতে হয় এমত ভাবে মর্পর্ণ কদমকুম্বন দারা ঋজুলম্বি-মাল্য রচনা করিছে-ছিলেন, ইতোমধ্যে কুরুদ্দীনেত্রা জ্রীরাধা সূর্যপুল্লীয় জ্বীর্থ পদনীতে আসিয়া উপস্থিত হইলে, মুর্রিপু ভাইার প্রত্তি ম্পান্ত নিক্ষেপ করিলেন।

অথ মাজলা ॥

যে ব্যক্তি জগতের বিশ্বাসন্থল ভূরিইট্রে সঙ্গল্য বলে॥১০৮॥ বপা ।

জনাবাং ন হরাবিতি ব্যপগতদারার্গলাঁ দানবা রক্ষী রুক্ষ ইতি প্রশান্ত ক্রনিডার ক্রীড়াস্থ রক্তাঞ্চ প্রবাঃ। সাক্ষী বেদ্ধি স ভক্তিনিডাবনতব্রাভাশ্চ চিন্ডোজ্বিভাঃ কে বিশ্বস্তর ন স্বদন্তির যুগলো বিস্তান্তিভাং ভেজিরে॥ হৈর্যাং॥ ব্যবসায়াদচলনং স্থৈর্যাং বিশ্বাক্সাদ্পি।

কৃষ্ণ ইতত সোহর্মিতি বা পাঠ:। প্রমত্তমনবহিতং যথা সাবেথা। রক্তা ইতি প্রমানরপক্তৃণর্ম:। কিলারামারোপতে। কিলাকতে বিসক্তাইভালীদ্ধা-বৈশিনার। ভকিব্বা কর্পদিলাশ্রমাতিং সদী বেতি ম্যাপাস্থ্যভিভানিত। বিশ্বিতা: ক্ষিতা ইতি বা তৃতীরশ্বরণঃ ৫১০৯ ॥

# यश्रा ।

হরিতে কোন অন্যায় নাই এই বিবেচনায় দানবগণ বারের অর্গল মোচন করিয়াছে, অর্থাৎ বারোদ্যাটনপূর্বক অব্যন্তি করিতেছে, কৃষ্ণ রক্ষাকর্তা এই জ্ঞানে দেববৃন্দ আমন্ত ভাবে জীড়াতৎপর হইয়াছেন, তিনি সাক্ষী স্বরূপ, ভৌক্তিমাত্র গ্রহণ করেন, এই বলিয়া ব্রাত্য অর্থাৎ দশসংস্থার হীন পুরুষ্ণণ চিন্তা ইইতে পরিত্যক্ত হইয়াছে, অত্ঞব হে বিশ্বস্তর ! জোমার চরণবুগলে কে না বিশ্বাস প্রাপ্ত হইবাছে ॥ সৈ্থ্য।

কাৰ্য্য বিশ্বাকুল হইলেও তাহা হইতে যে বিচ্লিত না হওয়া তাহার নাম হৈছিয়॥ यथी ॥

্প্রভিক্লেছপি সমূলে, শিলে শিৰারাং নিরং**ওঁ যার্থি ॥** ব্যল্নাদেব মুক্লো বিশ্ব্যাবলিনন্দনস্য ভুজান্ ॥ । তেজঃ ॥

সর্বাহিত্তাবগাহিত্তং তেজঃ সন্তিরুদীর্যাতে ॥ যথা শ্রীদশমে॥

মলানামশনিনৃ নাং নুরবরঃ স্ত্রীনাং স্মরো মৃর্টিমান্
বোপানাং স্বজনোহদতাং কিতিভুদ্ধাং শাস্তা স্বলিজোঃ শিশুঃ।

শূলহন্ত শিব এবং বিবদনা শিবা প্রতিকূল ভাব অবলম্বন করিলেও শ্রীকৃষ্ণ বিদ্যাবলিনন্দন বাণাস্থরের ভূজন্তল ছেদন করিয়া দিলেন॥

#### তেজঃ॥

সমুদায় লোকের চিত্তভাব পুর্পরিজ্ঞানকে পণ্ডিতেরা তেজঃ ক্ষহিয়া থাকেন॥

यथा मन्द्रि ८० व्यक्षात्य, ১८ ह्यांटक ॥

হে রাজন্! যে ভগবান্ মল্লিগের অশনি, মানবিশের
নরবর, যুবতীদিগের মূর্তিমান্ মদন, গোপদিথের বজন, অসং
নরপতিদিগের শাসন কর্তা, নিজ পিতা মাতার নিউট লিউ,
ভৌজপতি কংসের সাক্ষাৎ মৃত্যু, অবিষক্তানের পক্ষেত্রতা
ব্যারিখ্যাত, তিনি অগ্রস্থাহিত রুপ্রথ্য স্বাগত হুইরা

মৃত্যুর্ভোজপতে বিরাড়বিছুষাং তন্ত্বং পরং যোগিনাং । রক্ষীনাং পরদেশতেতি বিশিতো রঙ্গং গতঃ সাএজঃ ॥ যধা ॥

তেজো বুধৈরবজ্ঞাদেরস্থিকুত্বমূচ্যতে ॥ ১৩৯ ॥ যথা ॥

আক্রুষ্টে প্রকটং দিদগুরিষুণা চণ্ডেন রক্তরেল নন্দে চানকছুন্দুভে চ পুরতঃ কংসেন বিশ্বজ্ঞকা। দৃষ্টিং তত্ত্র স্থরারিয়তাুকুলটাসম্পর্কদৃতীং ক্ষিপন্

ভল কংসে স্থরারীশাং যা মৃত্যুরপা কুলটা তদাা: সম্পর্কার দৃতীরূপাং দৃষ্টিং

বিবিধ ভাবে প্রকাশমান হইলেন। অর্থাৎ ভগবাম্ শৃঙ্গারাদি সর্বায়সকদম্ব মূর্তি, পরস্তা রঙ্গমধ্যম হইয়া পৃথক্ পৃথক্ ভাবে ভিন্ন ভিন্ন ব্যক্তির নিকট ভিন্নভন্ন রূপে প্রকাশ প্রাইতে লাগিলেন, সকলের নিকট এক ভাবে প্রকাশিত হইলেন না॥

## व्यथ्या ॥

অবজ্ঞাদির অগহিষ্ণুভাকে পণ্ডিভগণ তেজ বলিয়া থাকেন ॥ ১ ১৩৯॥

#### যথা 🗈

রক্ষণে দর্শক রোকসকল কহিল বিশ্বটোহি প্রচণ্ড কংস সম্মুখে দণ্ড দিবার অভিপ্রায়ে নন্দ এবং বহুদেবের প্রতি আজোশ অর্থাৎ অরে কে আছিস্ ফুর্মতি নন্দকে বন্ধন কর, অসত্তম বহুদেবকে এখনি বধ করিয়া ফেল, এইবাক্য বলিতে থাকিলে, শীরুষ্ণ কংসের প্রতি দৈত্যগণের মৃত্যু- মঞ্চাপরি সঞ্কুদিষুরদৌ পশ্যাচ্যতঃ প্রাক্তি ॥ ললিতং ॥ শ্রুপার প্রচুরা চেন্টা ষত্র তং ললিতং বিছঃ ॥ ব্ধা ॥ বিধতে রাধায়াঃ কুচ্মুকুলয়োঃ কেলিমকরীং , করেণাব্যপ্রাত্মা সরভসমদব্যেন রনিকঃ। অরিন্টে সাটোপং কটু রুবতি সব্যেন বিহদ-মুদক্তোমাঞ্চং মচয়তি চ কুক্ষঃ পরিকরং ॥

किनन् टब्बबबिकाञ्चारवरेनव भार्डेटखबामकीहेः । नानन वर्गीानिननास सःमगा

শ্বরূপ কুলটা স্ত্রী সম্পর্কীরা দূতীরূপ। দৃষ্টি নিক্ষেপপূর্বক মঞ্চের উপরে কৃদিন ( লক্ষ্ণ) দিবার অভিপ্রায়ে গমন করি-তেছেন, দর্শন কর॥

# ললিভ 1

ে যে স্থলে প্রচুর রূপে শৃগারের চেক্টা **প্রকাশ পার** ভাহাকে বুলিত বলিয়া জানিবে॥

#### যথা ॥

ভাষিকরাজ জীকৃষ্ণ খিরচিতে কৌছুকের সহিত শক্ষিপ হস্তবারা জীরাধার কুচ্মুক্লে তিলকরচনা করিতেন, দর্শের সহিত অরিফীাহার কটু শব্দ করিতে বাক্ষিল নরোমাক ক্রেবরে ইাসিতে ইাসিতে বাম হস্তবারা কটিবন্ধন করিছে আবিলেন ॥ আত্মান্যপূৰ্বকারিছনে নার্যামিতি কীর্ত্তুতে ॥ যথা॥

বদান্য: কো ভবেদত্ত বদান্য: পুরুষোভরাৎ ॥
অকিঞ্নায় যেনাজা নিগুণায়াপি দীয়তে ॥ ১৪ ॥
সামান্যা নাশকগুণা: স্থিরভাদ্যা যদপ্যমী।
ভথাপি পূর্বভঃ কিঞ্জিবিশেষাৎ পুনরীরিভাঃ
অ্থাস্য সহায়া: ॥
অস্য গর্গাদ্যো ধর্মে যুযুধানাদ্যো যুধি।

मां शक्रवा वकाः ॥ ১৪० ॥

্পুর্বত আফলোদয়ত্বৎ হির ইত্যাদিতঃ কিঞ্চিদ্রশেষাং প্রশাসরপৌর-

জ্বাত্মসমর্পণকারিত্বকে ঔদার্য্য বলিয়া কীর্স্তন করা ধায়॥
যথা॥

বল নৈষি, পুরুষোত্ম হইতে অন্য কোন্ ব্যক্তি বদান্য ছইবে, যিনি অকিঞ্ন নিগুণি ব্যক্তিকেও আলুসম্পূৰ্ণ করিয়া থাকেন। ১৪০॥

া খদিত শিংগু শুভূতি সমান্য নায়কতাণ সকল শৈণিত ইইল, তথাপি শূৰ্ব হুইতে কিঞ্চিৎ বিশেষপ্ৰযুক্ত পুনৰ্বার নীয়কের শিন্য তণ সকল কীর্ত্তন করিছেছি॥

ं यंब ब्लीकृत्यक महाग्राम

প্রক্রকের ধর্মাদি বিষয়ে গর্গাদি ঋষিগণ সহায়, মূক-বিষয়ে যুষুণান ( সাত্যকি ) প্রভৃতি এবং মন্ত্রণাবিষয়ে উদ্ধবাদি

# मामिना । नर्मे । कक्तिनाम्करिक्रा



উদ্ধবাদ্যান্তথা মন্ত্রে সহমাঃ পরিকীর্তিভাগে ১৪৯ ।
অথ কৃষ্ণভক্তা: ॥
তন্তাবভাবিতখান্তাঃ কৃষ্ণভক্তা ইতীরিতাঃ ॥ ১৪২ ।
যে সত্যবাক্য ইত্যাদ্যা হ্রীমানিত্যন্তিমা গুণাঃ ।
প্রোক্তাঃ কৃষ্ণেহ্ন্য ভক্তেমু তে বিজ্ঞোমনীযিভিঃ ॥ ১৪০
তে সাধকাশ্চ সিদ্ধাশ্চ দিবিধাঃ পরিকীর্তিতাঃ ॥
তত্র সাধকাঃ ॥

ণাং। কুত্রাণি খতঃ পোষণাচ্চ পুন: সত্তভদেশীরিতা: ॥ ১৪১ ॥

ভদ্ধবৈতি। তেন সংক্ষাংক্টেন নিজাভীটেন ভাবেন রত্যাদিনিশেবেই ভাবিতঃ বাসিতং স্বাস্থাং বেষাং তে তথা সজাতীয়তদীয়নহাভজবিশেবা স্থালয়না ইতাৰ্থ:। স্থান্ত দুদীপনা ইতি ভাবঃ তথৈবোদীপনেম্বণি ভাজা গণীয়-ব্যক্তঃ ১৪২॥

विष्क्रमी विटमराय रक्कमा है जारनाश्मि यथामञ्चर रक्कमा है जार्यः ॥ ১৪० ॥

সহায়রূপে পরিকীর্তিত ॥ ১৪১॥

অথ কৃষ্ণভক্ত ।।

ক্ষেতাৰে ভাবিতান্তঃ করণকে কৃষ্ণভক্ত বদায়ার ॥১৪২॥ শ্রীকৃষ্ণবিষয়ে সভ্যবাক্য আদি ক্ষিয়া ব্রীমান্ পর্যন্ত যে দকল ৩৭ উল্লিখিত হইয়াছে, পণ্ডিতগণ কৃষ্ণভক্তে ভিন্তু দেই স্কুল গুণ কীর্ত্তন ক্রিয়াছেন ॥ ১৪০॥

কৃষ্ণভক্ত ছুই প্রকারে পরিকীর্তিত হয়েন সাধক এবং নিজ

উৎপদ্মতয়ঃ সম্ফ্ নৈর্বিদ্ধানসুপাগতাঃ।
কৃষ্ণনাকাৎকৃতে যোগ্যাঃ সাধকাঃ পরিকীর্তিতাঃ ॥
যথৈকদশে ॥
ক্রিখারে তদধীনেরু বালিশেরু ছিষংস্থ চ।
প্রেমনৈত্রীকৃপোপেক্ষা যঃ করোতি স মধ্যমঃ ॥ ১৪৪ ॥
যথা বা ॥

নিক্তাপ্যশ্রুজনোৎকরেণ ভগবছার্ত্তানদীজন্মনা ভিষ্ঠত্যেব ভবাগ্রিহেতিনিতি তে ধীমন্নলং চিন্তুনা। হুজ্যোমন্যমূতস্পৃথা হরকুপারুক্টেঃ স্ফুটং লক্ষ্যতে

ু ভট্ৰশিষ্ট্যং জ্ঞাপনার্থং ভক্তভেদান্দর্শয়তি তে সাধকা ইতি a ১৪৪ a ু পুরুষ্ঠ্য বিশ্বকারণাভাবমাশক্ষানাত্দাহণমাহ যথাবেতি । হেতি জ্ঞালা পক্ষে

ষাহাদের কৃষ্ণবিষয়ে রতি উৎপ্রশ্ন হইরাছে কিন্ত স্মাক্ রূপে বিদ্ন নিত্তি পাই নাই এবং কৃষ্ণসাক্ষাৎকার বিষয়ে যোগ্য, তাহারাই সাধক বলিয়া পরিকীর্তিত হয়॥

यथा ध्वकानरम २ ज्यशास्त्र ८० द्रशास्त्र ।

যিনি ঈশরে প্রেম, তদধীন ব্যক্তিতে মিত্রতা, অজ্ঞানের শ্রুতি কুপা এবং বিদেষির প্রতি উপেক্ষ। করেন, এইরূপ তেন দর্শন কন্য তিনি মধ্যম ॥ ১৪৪॥

যথাবা।

চে ধীমন্ ! উগবানের বার্তানদীজনিত অঞ্চললে সিক্ত ইইয়া উগায়ি শিখা যে বাকিবেক এমত ভিকায় কোন ফল নাই, গাত্রে যথন লোমসকলের নূজ দেখিতেছি, তথন

পৃথুরোমাণো মৎস্যা:॥॥ ১৪৫॥ অব মহাভকান্ দর্শরতি অব সিদ্ধা ইতি॥ ১৪৬॥

ভত্ত সাধনদিন্ধাঃ॥

শম্ত স্পৃহাহারী রূপার্ষ্টিশীল রুফামুদ তোমার হানরাকা-শের নিকটবর্ত্তি হইরাছে, বিঅমঙ্গলতুল্য সকলই সাধক বালিয়া কীর্ত্তিত হয়॥ ১৪৫॥

## অথ দিছ।।

যাহাদের কিছুমাত্র ক্লেশ অনুভব হয় না, সর্বাদা কৃষ্ণ-সম্বন্ধীয় কর্ম করে এবং যাহারা সর্বতোভাবে প্রেম সোধ্যা-দির আমাদবিষয়ে পরায়ণ, তাহারাই সিদ্ধ।

দিছ তুই প্রকার সংপ্রাপ্তদিছি রূপ দিছ এবং নিজ্যদিছ। তন্মধ্যে সংপ্রাপ্তদিছিরূপ দিছ বঁথা।

সাধনৰরা এবং ভগ্বৎকুলা বশতঃ সং**প্রাপ্ত**সিদ্ধিরূপ সিদ্ধ ছই প্রাকার॥ যক জ্ঞানিমিষায়মভাত্মন্ত্রা
দুরে যমা হু পরি নঃ স্পৃহণীয়শীলাঃ।
ভর্ত্তির্বিং অবশান: কবনাসুরালবৈক্লব্যবাষ্পর্কলয়া পুলকীকতাকাঃ॥ ১৪৬॥
যে ভক্তিপ্রভবিষ্ণুভাকবলিভক্রেশোর্মঃ ক্রেতে
দুক্পাতেহিপি ঘুণাং ক্তপ্রণতির প্রায়েণ মোকাদিয়ু।
প্রায়েণ্ডি ক্রেলিদ্রি বাহতীতিবং॥১৪৭॥

জন্মণ্যে সাধনদিদ্ধ যথা। তৃতীয়ে ১৫ অধ্যায়ে ২৫ স্লোকে॥

তে অনরর্ক ! যে সকল ব্যক্তি নির্ভ্<u>কারত্তে ভূলামা-</u>
তের অনেকাও অধিক বোলী তাঁহারাই নৈই বিকৃতি গ্রম করিতে লাবেন। তাঁহারা দেবত্তে হরির নির্ভ্র অনুধৃতি ক্যাতে এবমিণ প্রভাবশালী যে, যমত তাঁহাদিলের নিকট ঘাইতে অসমর্থ, তাঁহাদের ভাজির কথা কি বলিব পরস্পর বিনিয়া পরস্পার বশঃ কথনে এমত অমুরাগ প্রকাশ করেন বে, ভজ্জন্য অবশুভা ও বাস্পোদাম হওয়াতে অঙ্গ পুলকে পরিপূর্ব হয়। এই বিনিত্ত তাঁহাদের করুণাদিশীল সকলেরই

#### यथां वा

বাঁহাদের ভক্তিপ্রভাবদারা ক্লেশপরস্থার ক্লেভি (প্রস্তু) হইয়াছে, যাঁহারা ধর্মার্থ কাম মোক্ষ রূপ পুরুষ্ধি

480

তান্থেমপ্রসরোৎসবস্ত বান্তান্থ্যেক্তিনিধিতি সাত্ত তি ব্যুক্তঃ পূল । ধন্যামসমূর্যে । মার্কভেয়াদয়ঃ শ্রেক্তিঃ সাক্তি প্রাক্তিয়া প্রাক্তি প্রাক্তিয়া । প্রাক্তিয়া । প্রাক্তিয়া । প্রাক্তিয়া । প্রাক্তিয়া । প্রাক্তিয়া । বিশাসে । নাসাং বিজ্ঞাতিসংক্ষারো ন নিবাসো গুরাবপি । ন তপো নাজ্মীমাংসা ন শৌচং ন ক্রিয়াঃ শুভাঃ । ভ্রাপি স্থান্তমংশ্লোকে কুষ্ণে যোগেখরেখরে ।

চতুষ্টীয় চরণে প্রণত হইলেও তাহাদের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে ঘুণা বোধ করেন, যাঁহাদের উত্তরোত্তর র্দ্ধিশীল প্রেমোৎদবে অন্তঃকরণ প্রফুলিত হইতেছে, যাঁহাদের স্থান-ন্দাশ্রুদ্বারা বদনপ্রান্ত থোত এবং অঙ্গ পুল্কিত হইতেছে। সেই ধন্য সিদ্ধাণকে নফ্যার করি॥

পণ্ডিতগণ মাৰ্কণ্ডেয়াদি ঋষিগণকে সাধনৰারা দিদ্ধি প্রাপ্ত বলয়া নির্দেশ করিয়াছেন ॥

অধ কুপাসদ্ধ॥

যথা প্রীদশমে ২০ অধ্যারে ০৪ স্লোকে ।।
বাজ্ঞিক জালাণেরা কহিলেন কি আশ্চর্যা । এই অবলাদি
গের উপনয়নাদি সংস্কার হয় নাই, ইহারা জ্ঞাচর্য্যার্থ
গুরুকুলে বাস্ত করে নাই, ইহাদের তপদ্যা অথবা আজ্ঞাবিচার কিন্তা শৌচাচার অথবা সন্ধ্যোপদনাদি শুভ ক্রিরাভ
কিছুই নাই, তথাপি যোগেশ্বদিগের ঈশ্বর হয় ভগ্রান্

ভক্তিদূ ঢ়া নচাম্মাকং সংস্কারাদিমতামপি ॥ ১৪৭ ॥
যথা বা ॥
ন কাচিদভবদগুরোর্ভজনযন্ত্রণেইভিজ্ঞতা
ন সাধনবিধৌ চ তে শ্রমলবস্য গন্ধোহপ্যভূৎ ।
গতে।হসি চরিতার্থতাং পরমহংসমৃগ্যশ্রিয়া
মুকুদ্দপদপদ্ময়োঃ প্রণয়দীধুনো ধারয়া ॥ ১৪৮ ॥
কুপাদিদ্ধা যজ্ঞপত্নী-বৈরোচনি-শুকাদয়ঃ ॥ ১৪৯ ॥

তার ভগবদগুণকথক সংসক্ষকারণমন্ত্রতা সংস্কারাদীনাং প্রেমসানধন্ত্রক সাক্ষর্যাহ যথাতি। ন কাচিদিতি শ্রীশুকদেবমুদ্দিশা শ্রীনারদবাক্যং ॥ ১৪৮॥
ক্ষুপাসিদ্ধা যজ্ঞপত্নীতি। ষত্রকং । তবাপাততঃ প্রভীত্যপেক্ষরেতি

रक्किमामिक्षा यञ्चनश्रीकि । यश्कर । अयोगावकः व्यावाशिमकरशाब

উত্তম:শ্রোক শ্রীকৃষ্ণ, তাঁহার প্রতি ইহাদের দৃঢ়। ভক্তি হই-য়াছে, আমরা সংস্কারাদি যুক্ত হইয়াও লাভ করিতে পারি-লাম না ১৪৭॥

#### যথাবা ॥

শুকদেবকে উদ্দেশ করিয়া নারদ কহিলেন হে মুনে!
তুমি গুরুকুলে বাসপূর্বক গুরুদেবার্থ যন্ত্রণা ভোগ না
করিয়াই অভিজ্ঞতভা লাভ করিয়াছ, সাধনবিধিতে তোমার
শ্রেমলবের গন্ধমাত্রও দেখিতেছি না, কি আশ্চর্যা। যাহার
শোভা পরমহংসগণেরও প্রার্থনীয় সেই মুকুল্চরণপদ্মের
প্রেমন্থার প্রবাহদারাই কেবল চরিতার্থতা প্রাপ্ত হইসাছ ॥ ১৪৮॥

্ যজ্ঞপত্নী, বিরোচননন্দন বলি এবং শুক্দেব প্রভৃতি কুপালিছ ॥ ১৪৯॥ আপ নিতাসিদ্ধাঃ।

আসকোটিগুণং কুন্তে প্রেমাণং পরমং গতাঃ।

নিত্যানন্দগুণাঃ সর্বে নিত্যসিদ্ধা মুকুন্দবং ॥ ১৫ ।

যথা পালে শ্রীভগবংসত্যভামাদেবীসম্বাদেশ

অথ ব্রহ্মাদিদেবানাং তথা প্রার্থনিয়া ভূবঃ।

আগতোহহং গণাঃ সর্বের জাতান্তেহপি ময়া সহ।

এতে হি যাদবাঃ সর্বের মদ্যণা এব ভামিনি।

মুকুলবদেয় নিত্যানল গুণাস্থে নিত্যসিদ্ধা ইত্যময়:। নিতা । ত আনন্দস্বন্ধপাশ্চ গুণান্ত ছপলক্ষিতদেহাশ্চ বেযাং তে ইভি। তেযাং মুখালক্ষণমাহ
আত্মেতি। আত্মপ্রেমতোহিপি কোটিগুণমিতার্থ:। মধাপদলোপাং ॥ ১৫ ১ ॥

মংপ্রিরা ইতি অহমেব প্রিরো বেষাং ন তথাত্মাদর ইতার্থ:। আহো ভাগা-মহোভাগামিতি বিশ্বরাধিকো বীপ্রা। তেন ছয়েরের পদয়োর্ন পৌনক্ষজাঃ। অথবা নন্দগোপত্রজৌকসাং ভাগাং ভাগামহঃ প্রকাশকং যাবত্তাগিলোভর্জং-

## অথ নিত্যসিদ্ধ ॥

যাঁহাদের গুণ মুকুন্দের ন্যায় নিত্য ও **আনন্দস্বরূপ** এবং বাঁহারা আপনা অপেক্ষা শ্রীকৃষ্ণে কোটিগুণ প্রেম**বিধান** অরেন, তাঁহারা নিত্যদিদ্ধ ॥ ১৫০॥

भम्रभूदारः ভগবাन् e महाजामारमवीद मञ्चारम यथा ॥

ভগবান্ কহিলেন হে দেবি! ত্রুয়াদি দেবরুক্ত এবং পৃথিবী ইহাঁদের প্রার্থনায় আমি আগমন করিয়াছি আমার গণ সকলও আমার সহিত জন্ম গ্রহণ করিয়াছে, হে ভামিনি ! এই যে সকল যাদব দেখিতেছ ইহারা আমারই গণ, স্কুত্রক শ্বদা মংপ্রিয়া দেবি মতুল্যগুণশালিনঃ ॥
শ্বিদায়ে ॥
শহো ভাগ্যমহোভাগ্যং নন্দগোপত্রজোকদাং ।
যন্মিত্রং পরমানন্দং পূর্ণং ত্রক্ষ দনাতনং ॥
তত্তিব ॥
দেশুক্রকান্যাহিন্সিন দর্শেষাং নো ত্রজোকদাং ।

মিতার্থ:। অহো ইতি বিশ্বরে যদ্যশাদেষ্যাং বা ব্রহ্ম। খং মি এং।কীলৃশং। ব্রহ্ম
পূর্ণং মূর্ব্তপূর্ণানন্দ্রাং। অমূর্ত্তানন্দ্র তথা পূর্ণো ভবঙি তদপেক্ষরা শ্রীবিগ্রহদৈশে প্রচুরানন্দ্রাং। তথাচ। সংক্ষোভমক্রজ্যামপি চিত্ত ঘোরিতি ব্রহ্মজ্ঞানমিপুণানামপি চিত্ত সুসংক্ষোভস্চনাং। পুনং কীলৃশত্বং। ব্রহ্ম পরমানন্দং
পরম আনক্ষো যত্মাং। অমূর্ত্তানন্দাং মূর্ত্তানন্দ্রা পরমত্বং শ্রেষ্ঠত্বং উক্ত প্রকারসনক্ষাত্বাক্তেং। অভোষ্ত্র পূর্ণত্বং প্রমানন্দ্রক দ্বন্দ্র মূর্ত্তানন্দ্রেশকং।
অনাথা ব্রক্ষেতানেনির তত্ত্বমুপলভ্যেত কিমপরং ভয়োনি কিলেনের ব্রহ্মণো
বিশেষণক্ষমুক্তা মিত্রবিশেষণমাহ সনাতন্মিতি কীলৃশং মিত্রং সনাতন্থ নিত্যং

ইহাদের পরাক্রম দামান্য নহে, ইহারা দর্মদা আমার প্রিয় ও আমার তুল্য গুণশালী॥

শ্রীদশনে ১৪ অধ্যায়ে ৩০ শ্লোকে ॥
অহো নন্দগোপ এবং ত্রজবাদিদিগের কি আশ্চর্য্য ভাগ্য
শার্মানন্দরপী সনাতন পূর্ণব্রহ্ম তাঁহাদের মিত্র হইয়াছেন।।

দশমে ২৬ অধ্যায়ে ১০ শ্লোকে॥ শ্রীকৃষ্ণ গোবৰ্দ্ধনপূৰ্বত ধারণ করিলে গোপুগণ বিস্ময়া- নন্দ তে ভ্ৰম্মেই অন্যাপ্যে ভ্ৰম্যাপ্ত ক্ষা কথং ॥ ১৫১॥ সনাতনং মিত্রমিতি ভ্ৰম্যাপ্যেই পত্তিকঃ কথং । ক্ষেহোইসাম্বিভি হৈতেষাং নিভাপ্তেইস্থাগতং । ইভ্যুক্তঃ কথিকা নিভাপ্তিয়া যাদ্ববল্পভাঃ।

হৈকালিকমিতি বাবং যথা বং ত্ৰিকালসিদ্ধস্থা এলুলোকোহণীতি ভাৰঃ। যেন হি ত্যোং স্নাতনং মিজং অমসি অত এষাং ভাগাং কিং বজ্বামিতি ভাবঃ॥ ১৫১॥

সনাতনং মিএমিতীতোতাদৃশ্যোজনয়েতার্থ:। অনাথা সনাতন্পদ্-বৈর্থাং সাাং। পূর্ণতেনৈর তংগিছো:। যদিচ ব্রহ্মণো বিশেষণং তং সাাত্ত-থাপি মিএতা বৈশিষ্টাার্থমের তলিশিষ্য হ ইতি সমানমের। মনোরমং হংবর্শমিদং কুণ্ডলং জাত্মিতালে বথা কুণ্ডলনৈরে মনোরমহং সাধাং তত্তস্যাপীতি হাত্ম-সম্বর্গতনারিতাথ্যাকিপাতে। তদেব্যত্ত তত্মান্সচ্চরণং গোঠমিতাদাশি

পন্ন হইয়া নন্দের নিটক আগমন করত জিজাদা কৰিলেন,

হৈ নন্দ ! তোমার এই তন্যের প্রতি আমাদের সকল ব্রহ্মবাসির তুস্তাজ অনুরাগ এবং ইহারও আমাদের প্রতি
বাভাবিক সেহ কেন হইয়াছে, ইনি ত সকলের আক্রা

সনাতন গিত্র ও অসাংক্লে জন্ম এবং অস্মদানি সকলে সেহ ইত্যাদি বিশেষণ ছার। যাদব ও অজবাসিগণের নিজ্য প্রেষ্ঠতার উপলন্ধি হইতেছে, এজন্য যাদব ও গোপসকল নিত্যাদিক বলিয়া কথিত হইয়াছেন, বেদন লীলাবশৃতঃ সুবারি জন্মাদি গ্রহণ করিয়া থাকেন, উক্তেশ যাদব ও গোপ-

জ্বাং লোকিকবচেকা লীলা পুনরিপোরিব ॥ ১৫২ ॥
তথাহি পালোত্তরখণ্ডে ॥
যথা সৌমিত্রিভরতো যথা সক্ষর্ণাদয়ঃ।
তথা তেনৈব জায়ন্তে নিজলোকাদ্যদৃদ্দয়া।
পুনতেনৈব গাছন্তি তৎপদং শাশ্বতং পরং।
ন কর্ম্মবন্ধনং জন্ম বৈষ্ণবানাঞ্চ বিদ্যুতে ॥ ইতি ॥
যে প্রোক্তাঃ পঞ্চপঞ্চাশহ ক্রমাহ কংসহরেগুলাঃ।
তে চানো চাপি সিদ্ধেরু সিদ্ধিদহাদয়ো মতাঃ ॥ ১৫০ ॥

জৈয়ং। আংকা বিশেষজি জাদা চেং ক ফাদলভো দৃশ্য: ১৫২ ।
তেনৈৰ ভগৰতা সহ জায়তে যাদবায় ইতি শেষ:। যদৃদ্ধা বৈরিভেড্য-ময়ঃ ৰ ১৫৩ ।

দিগেরও লোকি চেফা জানিতে হইবে॥ ১৫২॥ যথা পদ্মপুরাণে উত্তরথণ্ডে॥

যেমন লক্ষণ, ভরত, ও সক্ষর্ষণ প্রভৃতি ভগবানের সহিত ক্ষম গ্রহণ করেন, তজেপ যাদব ও গোপগণ লীলা বশতঃ ভগবানের সহিত ক্ষম গ্রহণ করেন এবং পুনর্কার ভগবানের সহিত নিত্যধামে গমন করিয়া থকেন, অভএব বৈঞ্চবদিগের ক্ষম ও কর্মবন্ধন নাই॥

কংসরিপুর যে পঞ্চপঞ্চাশং গুণ ক্রমান্তরে কথিত ইইস্থাছে সেই সকল গুণ ও অন্যান্য সিদ্ধিপ্রদ্যাদি গুণ সকলও
দিশ্বগণে বিদ্যমান আছে ॥ ১৫৩ ॥

ভতাস্ত কীর্তিতাঃ শান্তান্তথা দাসস্তাদয়ঃ ।
সধায়ো,গুরুবর্গাশ্চ প্রেয়স্থশ্চেতি শক্ষণা ॥
ভাদীপনাত্ত প্রেক্তা ভাবমৃদ্দীপরন্তি যে ।
তেতু প্রীক্ষচন্দ্রস্য গুণাশ্চেম্টা প্রসাধনং ॥
শ্বিতাঙ্গদৌরভে বংশ-শৃঙ্গ-নূপুর-কম্বরঃ ॥
পদাক্ষ-ক্ষেত্র-তুলসী-ভক্ত-তদ্বাসরাদয়ঃ ॥
ভত্ত গুণাঃ ॥

গুণাস্ত ত্রিবিধাঃ প্রেক্তাঃ কায় বাগ্মানদাশ্রয়াঃ ॥ ১৫৪ ॥

অথ ভাবভেদেন তেষামেব ভেদান্তরাণ্যাহ ভক্তান্থিতি। অত দাসাদক্রে।
বিধা ভাবমরা: সাক্ষাং প্রাপ্তদাস্যাদর চ। তত্তোভরেষামেব সম্যগ্রাক্ষনখুম্ভিত
প্রেডং ॥ ১৫৪ ॥

শান্ত, দাসহতাদি, সথা, গুরুবর্গ ও প্রেস্কীগণ এই প্রাচ প্রকার কৃষ্ণভক্ত বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়াছেন॥

অথ উদ্দীপন॥

যাহারা ভাব প্রকাশ করে তাহাদিগকে উদ্দীপ্ন করে, তৎ সমুদায় যথা — প্রীকৃষ্ণের গুণ, চেইটা ও প্রসাধন অর্থাৎ কঙ্কতিকা প্রভৃতি, তথা হাদ্য, অসগন্ধ, বংশী, শৃঙ্ক, নুপুর, শছা, পদ্চিহ্ন, ক্ষেত্র, তুলদী, ভক্ত, ভদ্বাদর অর্থাৎ প্রকাশশী প্রভৃতি, উদ্দীপন বলিয়া কথিত হইয়াছে ॥

তন্মধ্যে গুণ যথা॥

কায়িক, বাচিক ও মানসিক ভোগে আৰু তিন প্ৰকার হয় ১৫৪ ॥

# ্তিত্র কারিকাঃ ।

্ বয়ংনৌদর্মারপাপি কায়িকা মুত্তাদরঃ ॥ ১৫৫ ॥

তথাঃ স্কলপ্রেবাস্য কায়িকাদ্যা যদপ্যমীন
ভেদং স্থার্শত্য বর্ণাস্তে তথাপুদ্দোপনা ইতি ॥
ভতত্ত্বা স্কলপদ্দ স্যাদালস্থনতৈব হি।
ভিদীপন্তমেৰ স্যাভূষণাদেন্ত কেবলং ॥ ১৫৬ ॥
ভবাহালস্থনতক ভবোদ্দীপন্তাপি চ ॥

বয়ংদৌল্বারপানি কারিক। গুণা মৃত্তাদরত কানিকা গুণা ইতথি: n>ecu ক্ষণীঃ স্বরপদেবেতি স্বরপদর্শবং স্বরপাদ্ধ: প্রনিষ্টা ইতাবং। ভ্রেম্বর্টাম্ভারত্বিক্তার্থক্বং স্থীকত্তাপচর্ব্যেতার্থং। বহা। শ্রীকৃষ্ণ: স্থানাল ইতি ক্রিম্বর্টাম্ভারতি ক্রিম্বর্টাম্ভারতি ক্রিম্বর্টাম্ভারতি ক্রিম্বর্টাম্ভারতি ক্রেম্বাস্থারি ক্রিম্বর্টাম্ভারতি ক্রেম্বর্টাম্ভারতি ক্রেম্বর্টাম্ভার্টাম্ভারতি ক্রেম্বর্টাম্ভারতি ক্রেম্বর্টাম্ভারতি ক্রেম্বর্টাম্ভারতি ক্রেম্বর্টাম্ভারতি ক্রেম্বর্টাম্ভারতি ক্রেম্বর্টাম্ভারতি ক্রেম্বর্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম্ভার্টাম

क्षमाः 'खनामाः विनिष्टेगानयनयावित्यस्य ग्रंटलयु खटनवनाःटलनानयनयः

# তশ্ৰধ্যে কান্ত্ৰিক যথা।।

্ধ বয়স্, পৌন্দৰ্যা, রূপ এবং মৃত্তা প্রভৃতিকে কায়িক বলে । ১৫৫.॥

শানিক প্রীকৃষ্ণের কারিক গুণ সকল সরপই বটে, ভথাপি ক্রেক স্থাকার করিয়া উদ্বীপন রূপে কবিত, হইয়াছে। অভ-ক্রেক্সক্ষীর স্ক্রপের লাল্মনতাই নিদ্ধ হয়, ক্রিছে ভূরণারিক। ক্রিক্সক উদ্বীশন্ত রুপ্তেই ব্যবহৃত হয়। ১৫৮॥

क्रिक् छनगरन जातंत्रम् छ छेकोन्यक्रेटन रुविङ्क्त ॥

# ত ত্রৈব বয়ঃ॥

বয়: কৌমারপোগণ্ডং কৈশোরমিতি ছব্রিধা ॥ ১৫৭ ॥
কৌমারং পঞ্চমান্দান্তং পোগণ্ডং দশমাবিধ।
আ বোড়শাচ্চ কৈশোরং যৌবনং স্যান্ততঃ পরং ॥ ১৫৮ ॥
উচিত্যান্তত্র কৌমারং বক্তব্যং বৎসলে রসে।
পৌগণ্ডং প্রেয়দি তথা ভত্তৎখলাদিযোগতঃ ॥
লৈষ্ঠমুজ্জ্বল এবাদ্য কৈশোরদ্য তথাপ্যদঃ।
প্রায়ঃ সর্বরসৌচিত্যাদত্রোদান্ত্রিয়তে ক্রমাৎ ॥ ১৫৯ ॥

#### প্রবর্ত্ততে ইতি ভাব: ॥ ১৫৭ ॥

কৌমারমিভ্যাদিকং দৃষ্টাস্তমাত্রং শ্রীক্বফেড় বিশেষো জ্বেদ:। যথা কালেনা-লেন রাজর্ষে রাম: কৃষ্ণশ্চ গোকুলে। অঘৃষ্টজামুভি: পদ্ভিবিচিক্রমভুরোজ্বসে-ভ্যাদিকং॥ ১৫৮॥

তত্র তত্তৎধেলাদিযোগতো যদৌচিত্যং যোগ্যভাতিশরক্তমাদিতি ত্রিম্বশি যোজনীয়ং। প্রায়ো বাহুলোন॥ ১৫৯॥

# তন্মধ্যে বয়স্যথা॥

বন্ধস্ তিনপ্রকার কৌমার, পৌগও ও কৈশোর ॥ ১৫৭ ॥ পাঁচ বংসর পর্যান্ত বন্ধসের নাম কৌমার, দশ বংসর পর্যান্ত পৌগও, পঞ্চদশ বংসর পর্যান্ত কৈশোর, তংপরে যোড়শ বংসর হুইতে যৌবন ॥ ১৫৮ ॥

ক্রীড়াভেদে বৎসলরদে কোমারবরস্ ও স্থারদে পোগও বর্দ উচিত হয়, কিন্ত মধুররদে কৈশোর বর্দই শ্রেষ্ঠ। শ্রীকৃষ্ণ প্রায় সর্বরিদাশ্রের বিলয়া ক্রমশঃ ঐ সকলের উলাহণ করিতেছি॥ ১৫৯॥ আদ্যং মধ্যং তথা শেষং কৈশোরং ত্রিবিধং ভবেৎ ॥
তত্ত্রাদ্যং কৈশোরং ॥
বর্গস্যোচ্ছ্রলতা কাপি নেত্রান্তে চারুণচ্ছবিঃ।
রোমাবলিপ্রকটতা কৈশোরে প্রথমে সতি ॥ ১৬০ ॥
যথা ॥
হরতি শিতিষা কোহপ্যঙ্গানাং মহেন্দ্রমণিপ্রিয়ং
প্রবিশতি দৃশোরন্তে কান্তির্মনাগিব লোহিনী।
সথি ততুরুহাং রাজিঃ সূক্ষ্মা দরাস্য বিরোতে

শিষাতে নিতামেকরপতয়া তিঠতীতি শেষং পরমপূর্ণাবন্থমিতার্থ:। তদেবং নিরুক্তিবলারক্রমাণেন চরমশক্রেনাপি তাদৃগবন্থং বাচনীয়ং। চরতি স্বাবির্ভাবোত্তরং সর্ববিলাং সঞ্চরতি নতু কৌমারাদিবয়াভিচরতি মা লক্ষীর্যন্তি। ১৬০॥

কৈশোর তিন প্রকার, আদি, মধ্য ও শেষ॥
তন্মধ্যে আদিকৈশোর যথা॥
প্রথম কৈশোরে বর্ণের অনির্বচনীয় উজ্জ্বলতা,
নেত্রাস্তে অরুণবর্ণ কান্তি ও লোমাবলীর প্রকাশ॥ ১৬০॥
যথা॥

কৃন্দলতা সীয় সখীকে কহিলেন হে স্থি! সম্প্রতি বন-মালির তন্তুতে আশ্চর্য্য শোভা স্ফুর্তি পাইতেছে অবলোকন কর, আহা! তদীয় অঙ্গসকলের শ্যামলতা ইন্দ্রনীলমণির শোভা হরণ করিতেছে, নয়নহয়ের অন্তে ঈষৎ লোহিতবর্ণ কান্তি প্রবেশ করিয়াছে এবং অল্ল অল্ল সূক্ষ্য লোমরাজি ফুরুতি স্থমা নব্যেদানীং তনো বনমালিনঃ ॥
বৈজয়ন্তী শিখণ্ডাদি-নটপ্রবরবেশতা।
বংশীমধুরিমা বস্ত্রশোভা চাত্র পরিচ্ছদঃ ॥
যথা শ্রীদশমে ॥
বর্হাপীড়ং নটবরবপুঃ কর্ণরোঃ কর্ণিকারং
বিভ্রছাসঃ কনকক্পিশং বৈজয়ন্তীক মালাং।
রন্ধান্ বেণোরধরস্থধয়া পূরয়ন্ গোপর্কৈশর্শারণ্যং স্পদরমণং প্রাকিশক্যীতকীর্তিঃ ॥ ১৬১ ॥

শিতিমা শামতাতিশয়:। তালবাাদিরয়ং। শিতী ধবলমেচকাবিভামর: r লোহিনী রক্তবর্ণা তদিদংতস্যাগ্রন্ত্রায়ায়া বচনং॥ ১৬১॥

উলাত হওয়াতে অপূর্ব সোন্দর্য্য প্রকাশ পাইতেছে॥

বৈজয়ন্তী, ময়ুরপুচ্ছাদি, নটবরবেশ, বংশীমাধুর্যা, বস্ত্র-শোভা এবং পরিচ্ছদদকলও উদ্দীপনরূপে কথিত হয়॥১৬১॥

यथा जीनगरम २३ व्य, ए स्थारक।

শুকদেব কহিলেন হে রাজন্! কি প্রকারে জীক্ষের সারণে অঞ্জাঙ্গনাদিগের মনঃ রুদ্ধ হইল বলি প্রাবণ কর। গোপীগণ মনে করিলেন শ্রীকৃষ্ণ নটবর শরীর ধারণ করিয়া স্বায় পদে অঙ্কিত রমণীয় রুন্দারণ্যে প্রবেশ করিলেন। তাঁহার মন্তকে ময়ুরপুচ্ছময় মুকুট, কর্ণছয়ে কর্ণিকার, পরিধানে কন-কবৎ কলিশবর্ণ বসন, গলদেশে বৈজয়ন্তী মালা। তিনি স্বয়ং অধরস্থা দিয়া বেণুরজ্ব পূরণ করিতেছেন, আর গোপাগণ চারিদিকে তদীয় কীর্ত্তি গনে করিতেছে॥ ১৬১ ॥

শরতাত্ত নখাগ্রাণাং ধনুরান্দোলিতা র্রুবাঃ।
রদানাং রঞ্জনং রাগচ্বৈরিত্যাদি চেষ্টিতং॥
যথা॥
নবং ধনুরিবাতনের্নাটদঘদিষো ব্রেযুগং
শমালিরিব শাণিতা নথররাজিরত্রে থরা।
বিরাজতি শরীরিণা ক্রচিরদন্তলেথাক্রণা
ন কা স্থি স্মীক্ষণাবদ্যুতিরস্য বিত্রস্যতি॥ ১৬২॥
অস্য মোহনতা যথা॥

নাথাগ্রাণাং থরতা রদানাং রঞ্জনমিতি তচ্ছোঞাবিশেষজ্ঞাপনার লোকরীতি-কথনমাঝে। তর তু সভাবত অব তাদৃশনথসৌষ্ঠবং শিথরমণিলাবণ্য-তিরকারিদস্তলাবণ্যং চাবির্ভবতীতি জ্ঞেরং। অতএবৈতে পরিচ্ছদমধ্যে ন পঠিতে ধন্নবী ইব আন্দোলিন্যো তরোজাবং ধনুবান্দোলিতা ॥ ১৬২ ॥

তীক্ষ নথাগ্র, চঞ্চল ভ্রাধন্ম ও চূর্ণ থদিরদ্বারা দম্ভ রঞ্জিত। ইত্যাদি চেম্টা দকলকেও উদ্দীপন বলে॥

#### যথা ॥

হে স্থি! অঘরিপুর আশ্চর্য্য মূর্ত্তি দর্শন কর, ইইার জার্গল ততুহীন কলপের নব ধতুর ন্যায় নৃত্য করিতেছে, নথপ্রেণীর অগ্রভাগ এরূপ খরতর যে, শাণিত শরসমূহের ন্যায় বোধ হইতেছে, দস্তসকল এরূপ অরুণবর্ণ দেখাইতেছে যে, জোধই যেন শরীর ধারণ করিয়া বিরাজ করিতেছে, শত্তএব ইহাঁকে দেখিরা কোন্ মুব্তি না জোসমুক্ত হয় ॥১৬২॥ প্রীক্ষের মোহনতা যথা।

কর্জুং মুগাঃ স্বয়মচটুলা ন ক্ষমন্তেহ ভিষোগং
ন ব্যাদাতুং কচিদপি জনে বক্ত্রমপুথে সহস্তে।
দৃষ্ট্রা তাত্তে নবমধুরিমস্মেরতাং মাধবার্তাঃ
স্প্রাণেভ্যন্তয়মুদস্জন্ন তোয়াঞ্জলীনাং॥
অথ মধ্যং॥
উরুদ্বয়দ্য বাহ্বোশ্চ কাপি শ্রীরুর্মসন্তথা।
মুর্ত্তেমধুরিমাদ্যঞ্চ কৈশোরে সতি মধ্যমে॥

কর্ত্মিতি বৃন্ধারা বচনং। তত্র প্রথমং তস্য সন্দেহং বিরচ্যোৎকঠাং বদ্ধরন্ত কারণং বনৈ কার্যামাহ পূর্বার্দ্ধেন। তত্ত কুত ইতি তৎপ্রশানন্তরং তমেব্ কারণত্বে বিনাস্য সমাগার্দ্ধস্তাহ তৃতীয়েন চরণেন। পুনশ্চ তহি কিং কুর্বস্তীতি সগলাদং তৎপ্রশানন্তরং তমতিব্যাকুলয়ন্তাহ চতুর্থেনেতি। যোক্ষনীয়ং অভিযোগ ভাবাভিব্যক্তিং॥ ১৬০॥

বৃন্দ। ঐক্তিকে কহিলেন হে মাধব! তোমার নব মাধ্য্যশালি হাস্য সন্দর্শন করিয়া মুগ্ধা গেপীগণ আপন মনোগত
ভাব প্রকাশ করিতে স্বরং অক্ষম হইতেছেন, কোন ব্যক্তির
শহিত আলাপ করিতেও সক্ষম হইতেছেন না। অধিক কি
বলিব এরপ পাড়িতা হইয়াছেন যে, স্বীয় প্রাণের প্রতি
তিন অঞ্জলি জল প্রদান করিয়াছেন অর্থাৎ জীবিতাশা একেবারেই বিসর্জন দিয়াছেন ॥

व्यथ मधारेकरभात ॥

মধ্যকৈশোরে উরুবন্ন, বাছবন্ন ও বক্ষঃস্থলের কোন জনি- ] ব্যচনীর শোভা, তথা মূর্ত্তির মধুরিমাদি প্রকশি পাইয়া থাকে ॥ যথা ॥

স্পৃহয়তি করিশু গুদেওনায়োরুযুগ্মং
গরুড়মণিকবাটীসখ্যমিচছত্যুর\*চ।
ভুজযুগমপি ধিৎসত্যর্গলাবর্গনিন্দামভিনবতরুণিন্নঃ প্রক্রমে কেশবস্য।
মুখং স্মিতবিলাসাত্যং বিভ্রমোত্তরলে দৃশো।
বিজ্ঞগন্মোহনং গীতমিত্যাদিরিহ মাধুরী॥
যথাই॥
অনন্দনয়চাতুরীপরিচয়োত্তরঙ্গে দৃশো
মুখাসুজমুদঞ্জিতস্মিতবিলাব্যাধরং।

#### यथा॥

শ্রীকুষ্ণের অভিনব তারুণ্যারস্তে তদীয় উরুদ্ধ করি শুণ্ডকে দণ্ড দিবার নিমিত্ত স্পৃহা করিতেছে, বক্ষঃস্থল গরুড়-মণি অর্থাৎ মরকতমণিনির্মিত কবাটের সহিত সথ্য বিধান করিতে বাসনা করিতেছে এবং ভুজযুগল অর্গলাবর্গকে নিন্দা করিতেছে, অতএব কেশবের কি আশ্চর্য্য শোভা ॥

মন্দ হাস্যস্ক্ত মুখ, বিলাদন্বিত চঞ্চল লোচন, তথা ত্রিজগন্মোহনকারী গীত। ইত্যাদি মধ্যকৈশোরের মাধুরী॥ -যথা॥

আহা ! প্রীকৃষ্ণের প্রথম তারুণ্যাবস্থায় কি আশ্চর্য্য মাধুর্য্য প্রকাশ পাইতেছে, তদীয় লোচনদ্বয় চঞ্চল হইয়া অচঞ্চলকুলাঙ্গনাব্তবিড়ম্বিদঙ্গীতকং
হরেন্তরুণিমাঙ্কুরে স্ফুরতি মাধুরী কাপ্যভূৎ ॥
বৈদগ্দীদারবিস্তারঃ কুঞ্জকেলিমছোৎদবঃ।
আরস্তো রাদলীলাদেরিছ চেইটাদি দোষ্ঠবং॥
যথা॥
ব্যক্তালক্তপদৈঃ কচিৎ পরিলুঠং পিঞাবতংগৈঃ কচিভরৈরবিচাতকাঞ্চিভিঃ কচিদদো ব্যাকীর্ণকুঞ্লোৎকরা।
প্রোদ্যন্মগুলবন্ধতাগুৰ্ঘটালক্ষোল্লদংশৈকতা
গেবিন্দন্য বিশাসর্ল্মধিকং র্লাটবী শংসতি॥ ১৬০॥

কলপ্তিলী চাতুর্য্যের পরিচয় প্রদান করিতেছে, হাস্যবিলাসযুক্ত অধরপল্লবে বদনপদ্ম শোভিত হইয়া রহিয়াছে,
তাঁহার সঙ্গীতের এ রূপ চমৎকার শক্তি যে, তদ্ধারা ধীরস্থভাব কুলকামিনীগণের পাতিব্রত্য ব্রত বিনষ্ট হইতেছে ॥

মধ্যকৈশোরের চেফা। যথা— রদিকতার সার বিস্তার, কুঞ্জক্রীড়ামহোৎসব এবং রাদলীলাদির আরম্ভ ॥

#### যথা॥

বৃন্দাবন কোন স্থানে স্থাপট যাবক যুক্ত পদ চিক্ত্ৰারা, কোন স্থানে লুণ্ডিত ময়ূরপুচ্ছের শিরোভ্ষণ ধারা, কোন স্থানে স্থালিত স্কুদ্রঘণ্টিকান্বিত শ্য্যাশালি কুঞ্জগৃহ ভারা এবং কোথাও বা মণ্ডলীবন্ধ তাণ্ডবঘটায় উৎফুল বালুকাভারা ভূষিত হইয়া গোবিন্দের বিলাসসকল সূচনা করিয়া দিতেছেন ॥ ১৬০॥

তমোহনতা যথা॥
বিদ্যামারামিং হৃদয়-রবিকান্তে প্রকটয়রুদ্দ্রন্ ধর্মেন্দুং বিদধদভিতো রাগপটলং।
কথং হা নস্ত্রাণং সথি মুকুলয়ন্ বোধকুমুদং
তরষী কৃষ্ণাভ্রে মধুরিমভরাকোহভূম্দয়তে॥
অথ শেযকৈশোরং॥
প্রবিভাহপ্যধিকোহকর্ষং বাদ্মঙ্গানি বিভ্রতি।
ত্রিবলিব্যক্তিরিত্যাদ্যং কৈশোরে চর্মে সতি॥ ১৬৪॥

বিদ্রাদিতি। অব্লং নভঃ। রাগোহত মারাগ্নিরং তৃঞাতিশয়: । ১৬৪ ॥

# মধ্যকৈশোরের মোহনত। যথা।।

হে স্থি। অক্সাৎ কৃষ্ণাকাশে এ কোন্ বেগবান্
মাধ্র্যপূর্ণ সূর্যাদেবের উদয় হইল, ইনি আমাদের ধর্মরূপি
চল্লকে অস্তমিত করিয়া সর্বভোভাবে রাগপটল অর্থাৎ
অনুরাগদমূহ বিধান করিতে করিতে দূর হইতে হাদয়রূপ
সূর্যাকান্ত মণিতে কামাগ্রি নিষেপপূর্বক জ্ঞানকুমুদকে
মুদ্রিত করিয়াদিলেন, অতএব হে স্থি! আমাদের আর
প্রাণের উপায় দেখিতেছি না।।

# चार (भवरेकरभात ।।

চরম কৈশোর প্রবৃত্ হইলে অঙ্গদকল পূর্বাপেকা অতি-শর উৎকর্ষ ধারণ করে এবং তাহাতে স্পাফ রূপে ত্রিবলি রেখা প্রকাশ পায়।। ১৬৪।। যথা॥ মরকভগিরের্গগুগ্রাবপ্রভাহরবক্ষদং

তকুতরণিজাবীচিচ্ছায়াবিড়ম্বিবলিত্রয়ং
মদনকদলীসাধিঠোকং স্মরাম্যস্থরান্তকং
তন্মাধুর্যাং যথা॥
দশাদ্ধিশরমাধুরীদমনদক্ষয়াঙ্গশ্রোমা
বিধুনিতবধুর্তিং ধরকলাবিলাসাস্পানং।
দৃগঞ্চলচমৎকৃতিক্ষপিতথঞ্জরীট-ছ্যুতিং

সাধিষ্ঠতং পরমাতিশারতং ॥ ১৬৫ ॥

#### যথা॥

বাঁহার বক্ষঃস্থল মরকত পর্বতীয় বৃহৎ পাষাণ খণ্ডের প্রভা হরণ করিতেছে, যাঁহার ভুজদ্ব ইন্দ্রনীলমণির শুদ্ধকে ন্যকার করিতেছে, যাঁহার তনুত্রিবলি যমুনার তরঙ্গমালাকে বিড়ম্বিত করিতেছে, এবং যাঁহার উরু রামরস্তা হইতেও পরম স্থলর দেখাইতেছে, দেই অস্ত্রান্তক শ্রীকৃষ্ণকে আমি চিন্তা করিতেছি॥

ष्वछा रेक्टभारतत बाधूर्या यथा॥

হে তরুণি ! পীতাম্বরকে সন্দর্শন কর, ইনি পঞ্চারের (কন্দর্পের) মাধুরীদমনদক্ষ অঙ্গশ্রী-দারা বধু গণের ধৈর্য্য বিনফ করিতেছেন, ইহার অঙ্গ শিল্পনৈপুণ্যের ক্রীড়াম্থান ইইয়াছে, নয়নাঞ্চলের চমৎকৃতি দারা ধ্রানের নৃত্যুগর্কা ধর্ম ক্ষুবভক্ষণিমোদসমং তক্ষণি পশ্য পীতাম্বরং॥
ইদমেব হরে: প্রাজ্ঞন ব্যোবনমূচ্যতে ॥ ১৬৫ ॥
তত্ত্ব গোকুলদেবীনাং ভাবসর্বস্থশালিতা।
অভ্তপূর্বকন্দর্পতন্ত্রলীলোৎস্বাদয়ঃ॥ ১৬৬ ॥
যথা॥
কাস্তাভিঃ কলহায়তে কচিদয়ং কন্দর্পলেথান্ কচিৎ
কীরৈরর্পয়তি কচিম্বিত্যুতে ক্রীডাভিসারোদ্যমং।

ভাবস্য যৎ সর্বস্থং সর্বোহপার্থন্তেন প্রশংসাবতা ॥ ১৬৬ ॥

আত্র কৈশোরে ভেদাশ্চতুদ্ধা বর্ণায়ে লক্ষণেন পরিজ্ঞানন চেষ্টিতেন মোহ-নভাবৈশিষ্টোন চ। তত্র যদাপি পরিজ্ঞাদীনাপি লক্ষণান্যের তথাপি বিশেষতভাষণ্যিভূমের পৃথক্ নির্দেশ:। তদেবমাদ্যকৈশোরে তানি শাষ্টান্যের মধ্যশেষয়োস্থ পরিজ্ঞাদ্য প্রায়ঃ সর্কাত্র সম্মান্তাৎ পৃথক্ নোক্তিঃ

হইতেছে অভএব ইহার হৃশর ভারুণ্যের কথা আর কি বলিব॥

পণ্ডিতগণ ইংকেই 'ছরির নবযৌগন বলিয়া কীর্ত্তন করিয়াছে ॥ ১৬৫ ॥

এই অস্ত্য কৈশোরে অজদেবী সকলের অপূর্ব্ব কন্দর্প-ফৌড়ারূপ লীলানন্দ ভাবসমুদায় প্রকাশ পাইরা থাকে ॥১৬৬ যথা॥

এই কুল্পরাক জীকৃষ্ণ কামক্রীড়ার বড়্গুণ ( সন্ধি, বিগ্রহ, গ্রমনাধন, আসন, ভেদ ও আজার) বিশিষ্ট হইরা অত্যুৎ-কৃষ্ট শুলাররাজ্য শাসন করিতেছেন, বধা—কোন স্থানে সধ্যা ভেদরতি কচিং স্মরকলাযাড়্গুণ্যবানীহতে
সন্ধিঃ কাপ্যসুশান্তি কুঞ্জনৃপতিঃ শৃঙ্গাররাজ্যোত্তমং ॥ ১৬৭॥
তন্মোহনতা যথা॥

মাধ্রী চ মোহনভারা এব কারণাবস্থা পৃথক কলিতা। সাচাল্যেহণি ব্যক্তিতাতি।
নবমধ্রিমন্মেরভামিভানেন নবং ধহুরিবাভনোন টলবছিবো জ্বুগমিভানেন
রক্ত্রান্ বেণােরধরস্থারা পুরর্ত্তিভানেন চ। মধ্যে চেষ্টাদিসােইবমিভি চেষ্টারা
লৈঠাং সৌইবমিভার্থ:। চরমেহণি চরমেহণি চাত্র গোকুলেভি মোহনভা।
ভন্মাৎ সৌইবমাধুর্যামাহনভানাং ভেদেহণাভেদনির্দেশঃ পরম্পরমবাভিরেকিভরাবগন্তবা:। অত্র সৌইবং ভলুরোযােগাালশাভাবিশেবং মাধুর্যাং ভেন
রেলচকভা। মোহনভাত্ ভরাহভবান্তবমাজিদাাকর্বিভেভি জ্বেরং। ভদেবং
প্রেক্রণার্থো বাাথাভে:। অভ্তপুর্কেভি চেষ্টিতমুক্রিইং। ভত্রচ সভি বর্থা
কান্তাভিরিভারিনা চেষ্টিহমুদাহরতি বাড্ভাগ ইভি। ক্রচিং শুকাররাজ্যোভমান্ত্রশাসনে ইভাব লভাতে। অত্র নীভিশান্তান্ত্রসারে। জ্বেরং। বথাকং।
সন্ধি নিপ্রহা বানমাননং বৈধমাশ্রং বড্ভাগ ইভি। অত্র কার্ভাভিরিভি
বিপ্রহং। কক্সেলিথানিভি বৈধং। ক্রীড়েভি বানং। সথোভাশেরং। সন্ধিভি
সন্ধি:। কুক্রপভিরিভাগনমিতি বট্কং ব্যক্তিভঃ। ১৬৭॥

শুক্ষরীসকলের সহিত কলহ উপস্থিত করিতেছেন, কোথাও শুক্পক্ষি-দারা নথচিহ্নরপ দৈব বিধান করিতেছেন, কোথাও ক্রীড়ার নিমিত্র গমনোদ্যত হইতেছেন এবং কোথাও বা স্থার সহিত সন্ধি ও আশ্রের বিধান করিতেছেন্ ॥ ১৮৭॥ শ্রীক্ষের মোহনত। যথা॥ কর্ণাকর্ণি স্থীক্ষনেন বিজনে দূহীস্তুভি প্রক্রিয়া
পত্যুর্বক্ষনচাতুরী গুণনিক। কুঞ্জপ্রয়াণে নিশি।
বাধির্য্যং গুরুবাচি বেণুবিরুতাবুৎকর্ণতেতিব্রতান্
কৈশোরেণ তবাদ্য কৃষ্ণগুরুণা গৌরীগণঃ পাঠ্যতে॥১৬৮॥
নেতুঃ স্বরূপমেণোক্রং কৈশোরমিহ্ যদ্যপি।
নানাকৃতিপ্রকটনাত্থাপুদ্দীপনং মতং॥ ১৬৯॥

অথ মোহনতামুদাহরতি তলোহনতা যথেতি। তদেবং তিছিপি কৈশোরেষু সামোটনব বিদ্যাদ প্রেরং। কর্ণাকর্ণীতি প্রণয়েন বিদ্যাদ প্রায়ন্তাং। পরস্পরং কর্ণেন কর্ণেন যুদ্ধং বৃত্তমিতার্থ:॥ ১৬৮॥

পুর্ব গুণা: অরপসিভাদিনা যং ভেদমঙ্গীরতা গুণানামূদীপনত্বং দর্শিতং তমেব কৈশোরমুপলকা স্থাপরংক্তেষাং স্বত উদ্দীপনত্বমেবেতি দ্রুল্যতি নেতৃ-রিতি। অরপধর্ম রাদ্যদাপি নেতুর্নায়কসা স্থারপমেব কৈশোরং তথাপি নানাক্তীনাং কৌমারপৌগঁগুকৈশোরাণাং যথাবসর্মেব প্রকটনাং প্রাকটাাৎ ক্ষেষাধাধর্মিণস্ত ভার ভ্রাহুগ্রহাৎ কৈশোরমপ্রদীপন্মেবেভার্থ:। আলঘনঃ খলু সর্বাহুগ্র এব। উদ্দীপনাস্ত কাদাচিৎকা ইতি॥ ১৬৯॥

ছে কৃষ্ণ ! অদ্য তোমার কৈশোরবয়ন্ গোপীগণের গুরুপদ্বীতে আরোহণ করিয়া তাঁহাদিগকে স্থীজনের সহিত কর্ণাকর্ণি, নির্জনে দূতীদিগকে স্তব করিবার রীতি, পতিবঞ্চনা বিষয়ে চাতুর্য্য, রজনীযোগে কুঞ্জগন্সনে অভ্যাস, গুরুবাক্যে বধিরতা ও বেণুধ্বনিতে উৎকর্ণতা, ইত্যাদি ব্রত স্কল্পাঠ করাইভেচ্ছে ॥ ১৬৮॥

যদিচ এন্থলে কৈশোর বয়স্কে নায়কের স্বরূপ বলিয়া উল্লেখ করা হইয়াছে তথাপি নানা রূপের প্রকটনবশত ঐ কৈশোর উদ্দীপনরূপে সম্মত ইইয়া থাকে॥ ১৬৯॥ বাল্যেইপি নবতারুণ্যপ্রাকট্যং শ্রুজনতে কচিং।
তন্নাতিরসবাহিত্বান্ধ রসইজরুদাছাতং॥ ১৭০॥
অথ সৌন্দর্যাং॥
ভবেৎ সৌন্দর্যামঙ্গানাং দন্ধিবেশো যথোচিতং॥ ১৭১॥
যথা॥
মুখং তে দীর্ঘাক্ষং মরকতত্তীপীবরমুরো
ভূজদ্বন্ধং স্তম্ভুনুতিস্থবলিতং পার্শর্যালাং।
পরিক্ষীণো মধ্যঃ প্রথিমলহরীহারিজ্বনং

শ্ররত ইতি। বাল্যেংশি ভগবান্ ক্ষণ্ডকণং ক্রপমাশ্রিত:। রেমে বিহারৈন বিবিধৈঃ প্রিয়র। সত্রাধ্যেত। দি বতরত্বাকরধৃতভবিষাপুরাণাদৌ। তরাতিরস্বাহিত্বাদিতি । ক্রস্যোগেনেব রসাঃ সম্পদাস্তে নেতরপেতি

তত্ত সৌন্দর্যাং স্থারম্যাঙ্গরপর্যায়ং॥ ১৭১ ॥

মুথমিতি লহর্যাত্র উত্তরোত্তরমাধুর্যাবিভাব:। জঘনশক: পুংস্কট্যত্র-ভাগেহপি যুক্তাতে। মহীতলং তজ্জঘনমিতি বিতীয়ককৈ বিরাড়,বর্ণনাং।

কোন স্থানে বাল্যাবস্থাতেও শ্রীক্ষণের নবতারুণ্য প্রকাশ হইয়াছে, শুনিতে পাওয়া যায় কিন্তু রসপোষক না হওয়াতে রস্জেরা তাহার উদাহরণ করেন নাই॥ ১৭০॥

অথ দৌন্দর্য্য॥

ष्यत्र मकरलत्र यथारयांत्रा मित्रदर्भारक दिनोन्नर्थेत वरल ॥५१०॥॥
यथा॥
'

হে কংসারে ! তোমার দীর্ঘ নয়নযুক্ত বদনগুল, মরকতমণি ক্বাটাপেকা সুল বকঃ, স্তম্ভদদৃশ ভূজধয়, স্থলর

ন ক্স্যাঃ কংসারে হরতি হৃদয়ং পক্ষদৃশঃ ॥ ১৭২ ॥ অধ রূপং ॥
বিভূষণং বিভূষ্যং স্যাদ্যেন তক্রপমূচাতে ॥ ১৭০ ॥
যথা ॥
কৃষ্ণস্য মন্তন্ততির্মণিকুগুলাদ্যা
নীতাক্সক্তিমলক্কতয়ে বরাজি ।
শক্তা বভূব ন মনাগপি ত্রিধানে
সা প্রভ্যুত স্থয়মনল্পমলক্কতাসীং ॥

**প্রথিম ললিভ:।** শ্রোণিকলকমিতি পাঠান্তর: ॥ ১৭২ ॥

বেনেতি তত্তং পোষ্যোগে।ন তাদৃশসৌন্দ্র্যাকাস্ত্যো: সম্বান্ধবিশে। বেশেতার্থ: ॥ ১৭৩॥

কৃষ্ণসোতি পশ্চার্ণস্কৃতা সতী শকা বভূবেতি ভাব:। বহ্নতে হি। আহৈরেবাভরণপটণী ভূষিতা দে।য়ি ভূষামিতি ॥ ১৭৪ ॥

পার্যযুগল, ক্ষীণ মধ্যদেশ এবং আয়ত সুল জঘন কোন্ পরজাক্ষীর হৃদয় না হরণ করে॥ ১৭২॥

#### অথ রূপ ॥

যাহার দারা অলঙ্কার সকলের শোভা সমধিক রূপে প্রকাশ পায়, তাহাকে রূপ কহে॥ ১৭০॥

#### মথা ॥

হে শোভনাঙ্গি ? মণিময় কুগুলাদি ভূষণসকল প্রীক্ষের আঙ্গে শোভার্থ নীত হইয়া কিঞ্মাত্র শোভা বৃদ্ধি করিতে সমর্থ হয় নাই, বরং আপনারাই অভিশয় রূপে শোভিত্ত ইয়াছিল। অথ মৃত্তা।

মুছ্ত। কোমলদ্যাপি সংস্পৃণ্যিত্তোচ্যতে ॥ ১৭৪ ॥ যথা॥

অহহ নবামুদকান্তেরমুষ্য স্থকুমারতা কুমারস্য।
অপি নবপল্লবদঙ্গানস্পরজ্য শীর্যন্তি॥ ১৭৫॥
যে নায়কপ্রকরণে বাচিকা মানসান্তথা।
শুণাঃ প্রোক্তান্তএবাত্র জেরা উদ্দীপনা বুধৈঃ॥
অথ চেটাঃ॥

চেক্টা রাসাদিলীলাঃ স্থ্যস্তথা ছুফীবধানমঃ ॥ ১৭৬ ॥

ষ্পপরতা নির্বিদা ছ:থিতীভুয়েতি বাবং বিবর্ণীভূরেতি বা ॥ ১৭৫ কিং বছনে ভাাহ;বে নাায়কেতি ॥১৭৬ ॥

## অথ মৃতুতা॥

• কোমল বস্তরও সংস্পর্শ অসহনকে মৃত্তা ক**হে ॥ ১৭৪ ॥** যথা॥

আহা ! নবখনশ্যাম এই স্থকুমার মঞ্জিক্ষের অঙ্গনকল এ রূপ কোমল যে, নবপল্লবের সংস্পর্ণমাত্রে ও বিবর্ণ হইয়া উঠিল ॥ ১৭৫॥

নায়ক প্রকরণে বাচিক ও মানসিক প্রভৃতি যে **দক্র** গুণ উক্ত হইয়াছে, পণ্ডিতগণ এ স্থলে তাহাদিগকে উদ্দীপন বলিয়া কীর্ত্তন করিয়া থাকেন॥

অথ চেক্টা ।

त्रामानिनीना अवः क्र्केवशानित्क त्रकों करत्॥ ১१७॥

ভত্ত রাদো যথা।
নুত্যদেগাপনিত্রনীকৃতপরীরস্তন্য রস্তাদিভিগীর্বাণীভিরনঙ্গরঙ্গবিশং সংদৃশ্যমানশ্রিয়:।
ক্রীড়াতাণ্ডবপণ্ডিত্রস্য পরিতঃ শ্রীপুগুনীকাক্ষ তে
রাদারস্তর্গার্থিনে। মধুরিমা চেতাংদি নং কর্বতি। ১৭৭॥
দুইবিধো যথা ললিত্রমাধবে।
শস্ত্রবিধে যথা ললিত্রমাধবে।
শস্ত্রবিধে নয়তি সন্দরকন্দরাস্তমানঃ সলীলমপি যত্র শিরো ধুনানে।

ৰ্তালেশপনি তথিনীতি। শ্ৰীৰজনে বীভিম প্রায়াং প্রেবিতা পত্তীয়ং ॥ ১৭৭ শৃষ্ট্রিতি। আঃ ইতি কোণে। কোণশচায়মন্যচিত্তং শ্রোতারং প্রত্যেব। আন্ত

### তন্মধ্যে রাস যথা।।

শ্রীক্ষের মথুরার অবস্থিতি কালে ব্রজদেবীগণ পত্রিকা প্রেরণ করিলেন, যথা—হে পুগুরীকাক্ষ ! তুমি নৃত্য ক্রীড়োর স্থাণি তা প্রাকৃষ্টির ক্রে সমরে রাসরসার্থী হইরা নৃত্য-শালিনী গোপনিত্যিনীগণেন সহিত আলিঙ্গন করিয়া-ছিলে, ক্রংকালে ব্রস্তা প্রভৃতি দেবীগণ অনঙ্গরেঙ্গ বিবশা হইরা তোমার শোভা দর্শন করিতেছিল। এক্ষণে সেই মধু-রিমা আমাদের চিত্ত আকর্ষণ ক্রিতেছে॥ ১৭৭॥

তুষ্টবধ ষথা॥ ললিতমাধবে॥

আঃ কি আশ্চর্যা !, যে র্যাহ্রন লীলাবশতঃ মস্তক কম্পিত করাতে দেবদেব শন্তু মান হইয়া ব্যকে মন্দ্রগিরির গুচা আঃ কৌ তুকং কলয় কেলিলবাদরিন্টং
তং দুন্টপুঙ্গবমদো হরিরুশ্যমাথ ॥
অথ প্রসাধনং ॥
কথিতং বসনাকল্প শুনাদ্যং প্রসাধনং ॥ ১৭৮ ॥
তত্ত্ব বসনং ॥
নবার্করশ্মিকাশ্মিরহরিতালাদিসন্ধিভং ।
যুগং চতুকং ভুয়িষ্ঠং বসনং ত্রিবিধং হরেঃ ॥
তত্ত্ব যুগং ॥
পরিধানং সসংব্যানং যুগরূপমুদীরিভং ॥ ১৭৯ ॥

স্যাৎ কোপ পীড়য়োয়িতি কোবকারা: ॥ ১৭৮ ॥
চতুক্মিতাতোত্তরীয়মাপ কলাচিজ্জেরং । বসনস্য বুগ্থাদিভেদা: সহক্ষ বিশেষোচিতথাং ॥ ১৭৯ ॥

মধ্যে স্থাপন করেন, কৌতুক দেখ, প্রীকৃষ্ণ **অবলীলাজেনে** দেই সুফী অরিফীকে বিনফী করিলেন॥

অথ প্রদাংন॥

বসন, সজ্জা ও ভূষণাদিকে প্রসাধন বলে ॥ ১ৄ৸ । । ত্রু বসন বলা ॥

অরণ, কুরুম ও ইরিতাল বর্ণ ক্রিশিষ্ট যুর, চতুক্ত ও ভূরিষ্ঠ ভেলে এরিক্ষের বদন তিন প্রকার হয়।

তমধ্যে যুগবদন যথা 👣

যথা স্তবাবল্যাং মুকুন্দাউকে ॥
কনকনিবহশোভানিন্দিপীতং নিতম্বে
তত্ত্পরি নবরক্তং বস্ত্রমিথং দধানঃ ।
প্রিয়মিব কিল বর্ণং রাগযুক্তং প্রিয়ায়াঃ ॥
প্রণয়তু মম নেত্রাভীউপূর্তিং মুকুন্দঃ ॥
চতুক্কং ॥

যথা॥ স্মেরাস্যঃ পরিহিতপাটলান্দরঞী-

ইখং বন্ধং দধান ইতি যহক্তং তৎ কথং তত্তাহ কনকেতি। কনকনিবহ-শোভানিন্দি বন্ধং নিত্তে, পরিদধ্যুরিটারব্যবাহ্লীকবস্ত। তহুফ্চিমসুরাগে-শাবিতাং বা প্রিয়ায়া ইতি বা পাঠান্তরং॥ ১৮০॥

# यथा खरावलीत्रमूक्नाखेटक ॥

সূকৃন্দ নিতঘদেশে স্বর্ণাশির শোভাহারি পীতবসম ও ততুপরি প্রিয়তমার অসুরাগযুক্ত দেহপ্রভার ন্যায় মৃত্তন রক্তবন্ত পরিধান করিয়া স্থামার ময়মের অভীফ পূর্ণ করি-তেছেন।

# চতুক বসন যথা॥

চঞ্ক (জামা) উঞ্জীষ (পাগ) তুদ্দবন্ধ (উদর বন্ধ)
এবং অন্তরীয়ক অর্থাৎ পরিধের, ইহাকেই বসন চতুক কহে॥
যথা।

**জ্রিক প্রটেল অর্থাৎ ঈবৎ** রক্তবর্ণ বসন পরিধানপূর্বক

শ্চনাঙ্গঃ পুরটক্সচোক্ষকঞ্চেন। উষ্ণীয়ং দধদৰূণং ধটীক চিত্রাং কংসারিবহিতি মহোৎসবে মুদং নঃ॥

খণ্ডিতাখণ্ডিতং ভূরিনটবেশক্রিয়ে। চিতং।
আনেকবর্ণং বসনং ভূয়িষ্ঠং কথিতং বুদৈঃ॥ ১৮০ ॥
যথা॥
আখণ্ডিতবিখণ্ডিতৈঃ শিতপিশঙ্গনীলাক্রাদৈঃ
পাটেঃ কৃত্যথোচিতপ্রকটগনিবেশোজ্জ্বলঃ।
আয়ং করভরাট্প্রভঃ প্রচুররঙ্গশৃঙ্গারিতঃ

সন্ধিবেশো রচনাকলভরাট্প্রভইতি কলভরাজইব প্রভা যসাস:। অথতিভবিথতিতৈরিতি বস্ত্রময়তত্ত্বদলঙ্কারভেদাং। যথা মথুরায়াং বানকেন,, দত্তমাদীদিতি জ্রেয়ং। শৃসারশকোহত কলভসাদৃশো ভতাপি বেশভয়া

অঙ্গে স্বর্ণবর্ণ উৎকৃষ্ট কঞ্ক, মন্তকে অরুণবর্ণ উফ্ডীয় ও উদর
মধ্যে বিচিত্র ধটী বন্ধন করিয়া হাস্য বদনে বিচরণ ক্রেড
আমাদের হুর্য বন্ধন করিতেছেন ॥

ভূগিষ্ঠ यथा॥

নটবেশের উপযুক্ত খণ্ড ও অথণ্ড নানাবর্ণ বসন সকলকে। পণ্ডিভগণ বসন ভূমিষ্ঠ বলিয়া থাকেন॥ ১৮০॥

যথা ॥

হে বিপুলনিত যেট্টা সেঘকান্তি এই মাধৰ, খণ্ড ও অৰ্থণ্ড শুকু পিঙ্গল, শীল ও অক্লণৰৰ্গ ৰজ্ঞ সকল যথাবোগ্য আৰু করেতি করভোক মে ঘনক্রচিমু দং মাধবঃ ॥
অথকল্পঃ ॥
কেশবন্ধনমালেপো মালাচিত্রং বিশেষকঃ ।
তাস্থূলং কেলিপদ্ম দিরাকল্পঃ পরিকীর্ত্তিহু ॥ ১৮১ ॥
স্যাজ্জ্বটিঃ কবরী চূড়া বেণী চ কচবন্ধনং ।
পাগুরঃ কর্ববুরঃ পীত ইত্যালেপস্ত্রিধা মতঃ ॥ ১৮২ ॥
মালা ত্রিধা বৈজয়তী রত্নমালা বনস্রজঃ ।

#### नकारक ॥ ১৮১।

জুটো ঘাটোপরি ধশিল:। কবরী পূষ্পদিনা কেশবেশ:। চূড়া উদ্ধবদাঃ কচা: বেণী পৃষ্ঠভাগে দীর্ঘভয়া কেশগুদ্দনং॥ ১৮২॥

বৈলয়ন্ত্ৰী পঞ্চৰৰ্থময়ী জাতুপ্ৰান্তলন্বিতা চ বনমালা পঞ্ৰপুশাময়ী পাদ-

ধারণ পূর্বক, শ্রেষ্ঠ করিশাবকসদৃশ বহুরঙ্গে স্থানাভিত হইয়া আমার হর্ষ বিধান করিতেছেন ॥

### অথ আকল্ল॥

কেশবন্ধন, আলেপ, মালা, [চিত্র, তিলক, তামূল ও ক্রীড়াপদ্ম এই সকলকে আকল্প বলে ॥ ১৮১॥

জৃট (গ্রীবার পশ্চাদ্দেশে কেশ বন্ধন) কবরী (পুষ্পাদি
ছারা কেশ বন্ধন ) চূড়া (উর্দ্ধবন্ধ কেশ) বেণী (পৃষ্ঠভাগে
লম্বিত কেশ বন্ধ) এই সকলকে কেশ বন্ধনবলে। শ্বেভ,
চিত্রবর্ণ এবং পীত, এই তিন প্রকার আলেপ হয়॥ ১৮২॥

মালা তিন প্রকার বৈজয়ন্তী অর্থাৎ পঞ্চবর্ণ পুষ্পনির্দ্মিত
স্মৃত্যুব্যন্ত লখিত মালা, রত্নমালা ও বন্মালা অর্থাৎ পত্র

অন্যা বৈকক্ষকাপীড়প্রালম্বান্য। ভিনা মতাঃ ॥ ১৮৫ ॥
মকরীপত্রভঙ্গাত্যং চিত্রং পীতনিতারুণং ।
ভথা বিশেষকোহপি ন্যাননাদূহং স্বয়ং বুবৈঃ ॥ ১৮৪ ।
যথা ॥
ভাস্থান্দ্রনাননেন্দ্রমলং ধান্মল্লানন্
ভাকিচ্ছেদলদং স্বয়্টযুস্ণালেপ্রিয়া পেশলঃ ।
ভুন্থোরঃস্থলিঙ্গল্ভালিকভাজিফুপত্রাস্থ্লিঃ

পর্যান্তলবিতা চ। পুনম নিজেবানাই অসা ইতি বৈকক্ষন্ত তংগ্রীস্যাদ্যভির্যাক্ ক্ষিপ্তমুরসি মালাং চূড়াবেইনমাল্যমাপীড়ং কণ্ঠাদৃজুপন্থি মাল্যং প্রালম্বং॥ ১৮০॥ ভথেতি পীতশীতারুণ ইতার্থ:। বিশেষকন্তিলকং॥ ১৮৪॥ অলিকং ললাটং প্রাস্থান: প্রভঙ্গ: অন্য তামূল ইত্যাদিব্যিক্রপঃ

পুষ্পাম্যী পাদ পর্যান্ত লখিত। মালা। মালার বিশেষ বিশেষ
নাম যথা — বৈকক্ষক অর্থাৎ বক্ষঃস্থলে বক্ষভাবে নিকিন্তঃ
নালা, আপীড় অর্থাৎ চূড়াবেইন মাল্য,প্রালম্ব অর্থাৎ কঠদেশ হইতে সরলভাবে লম্বিত মালা॥ ১৮০॥

শ্বেত, পীত ও অরুণবর্ণ মকরী পত্র নির্মাণাদি ও তিলক-রচনাকে চিত্র কহে। পণ্ডিতগণ এতন্তির অন্যান্যও স্বয়ং উদাহরণ করিবেন॥ ১৮৪॥

হে স্থি! শ্যামাঙ্গ মাধ্ব তামূল রাগ্রারা মুখচক্ষের আদি সম্পাদন পূর্বক, নির্মাণ অপ্রকাশ কৃষ্ণিত কেশ ও অনুষ্ঠ ক্রুম আলেপ শোভারার তথা বিশাল বক্ষে রক্তবর্ণ মালা ধারণ এবং ললাটে পত্র ভঙ্গ অর্থাথ তিলক হারা রঞ্জিত



শ্যামাপ্র তিরন্য মে স্থি দৃশোর্ত থে মুদং মাধবং ॥
অথ মণ্ডনং ॥
কিরীটং কুগুলে হারশ্চতুকী বলয়োর্দ্ময়ং ।
কেয়ুরন্পুরাদ্যক রত্নমণ্ডনমুচ্যতে ॥ ১৮৫ ॥
কাঞ্চী চিত্রা মুকুটমতুলং কুগুলে হারিহীরে
হারস্তারো বলয়মমলং চল্রচারুশ্চতুকী ।
রম্যাচোর্মির্ম্রিমপুরে ন্পুরে-চেত্যঘারে
রকৈরেবাভরণপটলী ভূষিতা দোগ্ধি ভূষাং ॥
কুলুমান্কিরত্ঞেদং বন্যগণ্ডনমীরিতং ।

সন্ দৃশোরাধারভূ তয়োমু দিং হগ্নে প্রপুরয়ভি ॥ ১৮৫ ॥

ভার: শুদ্ধমুক্তাময়: উর্মিরসুরীয়ক: নৃপ্রে চেতাঘারেরিতি অত্ত নৃপ্রেচেতি শৌরেরিতি বা পাঠ: : বলয়মিতাতোর্মিরিতাত্ত চ বহুত্বেহপ্যেকবচনং জাতি-বিক্লয়া সম্প্রো যব ইতিবত্তগাপি বহুতঃ বোধয়তোর। জাত্যা বাজীনাং

**্ট্রা আমার নয়ন**রয়ের আনন্দ দোহন করিভেছেন॥ অথ মণ্ডন॥

কিরীট, কুগুল, হার, চতুফী অর্থাৎ তক্তি, বলয়, অঙ্গুরী-য়ক, কেয়ুর ও নুস্পুরাদি এই সকলকে রত্নভূষণ বলে॥ ১৮৫॥

বিচিত্র ক্ষুদ্রঘণ্টিকা, তুলনা রহিতা মুক্ট, হীরক নির্পিত কুওল্বর, শুদ্ধ মৃক্তাহার, নির্পাল বলর, মনোহর চন্দ্র বিশিষ্ট চছুকী অর্থাৎ তক্তি, রমণায় অসুরীয়ক ও মাধুর্য্যপূর্ণ নূপুরবর ইত্যাদি ভূষণ সকল অঘণক্র জীক্ষণের অস শোভা দারা স্থান্ডা পূর্ণ করিতেছে ॥

্পুশোৰি দানা কৃত ভূষণকে বন্য ভূষণ কছে। গৈরিকানি

ধাতুকুগুঞ্চ তিলকং পত্রভঙ্গলতাদিকং ॥ ১৮৬॥
অথ স্মিতং ॥
যথা কর্ণামূতে ॥
অথগুনির্বাণরদপ্রবাহৈবিখণ্ডিতাশেষরদান্তরাণি।
অযন্ত্রিতোদান্তর্মাণ্বানি
জয়ন্তি শীতানি তব স্মিতানি ॥ ১৮৭॥
অথ দৌরভং যথা ॥
পরিমলদ্রিদেষা যদ্বন্তী দুমন্তাং।
পুলক্ষ্তি বপুর্নঃ কাপ্যপূর্ব্বা মুনীনাং।

বাজাখাং। অভএব জাতাাধ্যায়ামেকসিন্ বহুবচনমনাতরস্যামি**ভি পাণিনি-**স্অং ॥ ১৮৩ ॥

निर्वागः भवमाननः नीजानि मर्वजाभशावीनि ॥ ১৮१ ॥

ধাতুনির্মিত তিলককে পত্রভঙ্গ লতাদি কহা যায়॥ ১৮৬॥ 🤏 অথ স্মিত ॥

যথা কর্ণামূতে॥

ছে কৃষ্ণ। তোমার সর্বতাপহারি ঈষৎ হাস্য অথও পূর্ণানন্দ রসভরক দারা অন্য রসান্তর সকলকে দূর করিয়া অবাধে ধেন প্রধাসমূদ্র উলিগরণ করত বিরাজ করি-তেছে॥ ১৮৭॥

অঙ্গদৌরভ যথা॥

সূর্য্যোপরাগ সময়ে জ্রীকৃষ্ণ কুরুকেত্তে গমন করিলে ভদীয় অঙ্গ হইতে কোন অপূর্ব পরিমলবাহিনী গরিৎ চতু-

er.

মধ্রিপুরুপরাথে তদিনোদার মন্যে
কুরুভুবসনবদ্যামোদদিস্কুর্গ বিশ ॥
ভাগ বংশঃ ॥
ধ্যানং বলাৎ পরমহংসকুলস্য জিন্দন্
নিন্দন্ স্থামধুরিসাণমধীর শর্মা।
কন্দর্পশাসনধুরাং মুহুরেষ শংসন্
বংশীধ্বনির্জয়তি কংসনিস্দনস্য ॥
এষ ত্রিধা ভবেদ্বেণু–মুরলী–বংশিকেত্যণি ॥
ভত্র বেণুঃ ॥
পারিকাথ্যো ভবেদ্বেণুপ্ দ্বাদশাস্থলদৈর্ঘ্যভাক্ ।

কুকুভূবং কুকুকেত্ৰং। বিন্দুনমিভি পাঠো নেষ্টঃ॥ ১৮৮ ।

দিকে প্রবাহিত হইয়া অস্মদাদি মুন্গিণের বপু পুলকিত করত আমোদ সমৃদ্রে প্রবেশ করিল, অতএব বোধ হইল শ্রীকৃষ্ণ যেন মুনির্লকে আনল প্রদানার্থই কুরুক্তেতি গ্রান করিয়াছিলেন॥

#### ত্রথ বংশ।

কংস নাশন জ্রীক্ষের চঞ্চল বংশীধ্বনি বল পূর্ববিক পুরম হংগ্লিগের ধ্যান ভঙ্গ পুরঃদর অমূত মাধুর্যকে নিন্দা করন্ত বারম্বার কন্দর্প অভিশয় শাসন ঘোষণা প্রদান করিয়া সর্বো-পরি জয়যুক্ত হইতেছে ॥

বংশ তিন প্রকার, বেণু,ম্রলী ও বংশিকা॥ ভন্মধ্যে বেণু যথা॥ মাহা দাদশ অস্থা দীর্ঘ ও অসুষ্ঠ পরিমিত সুল ও ছয় স্থেল্য হস্ত মিত: ষড় ভিরেষ রক্ষৈ: সম্বিত: ॥
মুরলী ॥
ছন্তবয়মিতায়ামা মুথরক্ষ সমস্বিতা।
চতুঃস্বরচ্ছিদ্রযুক্তা মুরলী চারুনাদিনী ॥ ১৮৮॥
বংশী ॥
অর্জাকুলান্তরোমানং তারাদিবিবর!ফীকং।
ভতঃ সার্জাক্ষাত্র মুখরকুংতথাস্কুলং।
শিরো বেদাস্লং পুচছং ত্যেস্লং সাতু বংশিকা।
নবরক্ষ্য স্মৃতা সপ্তদশাসুলমিতা বুধিঃ ॥ ১৮৯॥

অধীস্পনতরং ছিদ্রোম ধাভাগতথোলানং ছিদ্রণ বিতারো বত্র তং.।
ততেহিকুলাতর ইতাত্র ততঃ সাধীস্বাদিনোর পাঠ:। সপ্তদশাক্লতাম্পপতে:। বোগাতাত ততোহস্বাতর ইতি পাঠে গ্রন্থিতা বহির্দাস্ক: তেরং।
তথাস্ব্নিত্র প্রমাণে বুগিতি মাত্রচোলুক্। অধ্যাস্বাদিশকাত সংখ্যাব্যর্তা।
মসুলেরিতি সমাসাত্তবিধানাং॥ ১৮৯॥

ছিদ্রযুক্ত তাহাাকে পাবিকাথ্য বেণু বলে॥ যুরলী যথা॥

যাহা দ্বিত্ত পরিমিত, মুখ মধ্যে রক্ষু এবং চারিটী স্বরের ছিত্রে সমস্বিত, তাদৃশ মনোহর শব্দ কারিণীর নাম মুরলী॥ ১৮৮ বংশী যথা॥

এক এক অঙ্গুলি ব্যবধানে অউছিদ্ৰ, দাৰ্দ্ধ অঙ্গুল অন্তরে মুখছিদ্ৰ, উপরিভাগে চারি অঙ্গুল, পশ্চাৎ ভাগে ভিন অঙ্গুল এবং গ্রন্থির পরভাগ অর্জ অঙ্গুল, সকলে নবছিদ্র সমন্থিত মুখদ্য অঙ্গুল পরিমিত বংশকে বংশী কতে ॥ ১৮৯॥ দশাঙ্গু লান্তরা স্যাচ্চেৎ সা তারমুধরস্কু রোঃ।
মহানন্দেতি বিখ্যাতা তথা সম্মোহিনীতি চ।
ভবেৎ সূর্য্যান্তরা সা চেত্তত আকর্ষিণী মতা।
আনন্দিনী তদা বংশী ভবেদিন্দ্রান্তরা যদি।
গোপানাং বল্লভা সেয়ং বংশুলীতি চ বিশ্রুতা।
ক্রমাম্মণিময়ী হৈমী বৈণবীতি ত্রিধা চ সা॥ ১৯০॥
অথ শৃঙ্গং॥
শৃঙ্গন্ত গ্রনং হেম নিবদ্ধাত্রিমপশ্চিমং।

দেশাকুলেত্যকুলীনাং বৃদ্ধির্ধরন্ত্রগহিতরন্ধ্রোন্তরাল এব জেয়া॥ ১৯০॥ প্রশম্ত বনমহিষ্পৃকং। উপলক্ষণঞ্চেং ক্রঞ্সারাদিশৃকাণাং। অগ্রিমো

ষদি সেই বংশীর মুখছিত ও স্বরছিত দশ অঙ্গুলি ব্যবধানে হয়, তাহা হইলে তাহার নাম মহানন্দা ও সম্মোহিনী; দ্বাদ-শাঙ্গুল অন্তর হইলে আকর্ষিণী, চতুর্দ্দশ অঙ্গুল অন্তর হইলে আনন্দিনী বলিয়া কথিত হয়, ঐ আনন্দিনী গোপসকলের প্রিয় এবং বংশুলী নামে অভিহিত হয়। বংশী ক্রমে মণিময়ী, হৈমী ও বৈণবী এই তিন প্রকার হয়। মণিময়ীর নাম সম্মো-ছিনী, স্বর্ণ নির্মিতার নাম ক্রমান্দিনী এই তিবিধ ভেদ॥ ১৯০॥

অথ শৃঙ্গ ॥

ষ্মগ্র পশ্চাৎ স্বর্ণদার। বন্ধ ও মধ্যভাগের ছিন্তে রত্নভূষিত

রত্মজালক্ষুরম্বর্গং মন্ত্রঘোষ। ভিশং স্মৃতং ॥ ১৯১॥
যথা ॥
তারাবলী বেণুভূজদমেন
তারাবলীলা গরলেন দফী।
বিষাণিকানাদপয়ো নিপীয়
বিষাণি কামং দ্বিগুণীচকার॥
নূপুরং যথা॥
ভাষমন্দনদ্য দথি নূপুরধ্বনিং
নিশম্য্য সন্তুতগভীরসন্ত্রমা।
ভাষমীক্ষণোত্রবলিতাপি নাভবং

ছগ্রভাগ: এবং প্রভিচম: ॥ ১৯১॥

তারাবলীনামী ভারদা উচ্চধ্বনে র্যা অধলীলা অর প্রযক্ষ: দৈব গ্রলং যদা তেন বিষাণিকা নাদসা প্রস্তমা ক্রপকং। প্রথমং তদারলশমকতয়াভীইবাৎ

মন্ত্রণা ধ্বনিকারি বনমহিষের শৃঙ্গকে শৃঙ্গ (শিঙ্গা) কহে॥১৯১॥

यथा ॥

ভারাবলী নাম্নী গেণী, উচ্চনাদ রূপ গ্র**লশালি বেণু** ভুজঙ্গ কর্ত্ত্ক দফ্ট হইয়া ভিছিষোপশমনার্থ বিষাণিকার (শৃঙ্গের) ধ্বনিরূপ তুশ্ব পান করিলেন। তাহাতে বিধের উপশম হইবে কি, পুনরায় দ্বিগুণ জ্বালা উপস্থিত॥

নূপুর যথা ॥

হে স্থি! অঘদমন শ্রীক্ষের নৃপ্রধ্বনি শ্রাবণ করিয়া অতিশয় সম্ভ্রম প্রযুক্ত দর্শনার্থ উত্তরলিতা হইয়াছিলাম, কিন্তু ছঃখের বিষয় এই যে, তংকালীন গুরুবর্গ অংগ উপস্থিত বহিরদ্য হস্ত গুরবঃ পুরংস্থিতা: ॥ ১৯২ ॥
কন্মুন্ত দক্ষিণাবর্ত্তঃ পাঞ্জন্যত্যোচ্যুত্তে ॥
যথা ॥
অ্যাররিপুবধ্টীক্রাণহত্যাবিলাদী
ব্রিদিবপুরপুরস্থার্ন্দনান্দীকরেহ্যং ।
ভ্রমতি ভূবনমধ্যে মাণবাধ্যাতধান্নঃ
কৃতপুলককদম্মঃ কন্মুবাজস্য নাদঃ ॥ ১৯ত ॥
পাদাক্ষঃ ॥
যথা শ্রীদশ্মে ॥

পূকাৎ প্রত্যুত্ত তেন তথ্য সাহায়াহিষাণীতি বিষ্তৃশাঃভাবানীতার্থ: ॥ ১৯২ ॥ কমুস্ত দক্ষিণাবর্ত ইত্যেব পাঠ:। জগহত্যেতি কৌতৃকেন নিন্দাবৎ প্রযুক্তং। নান্দীকরো মঙ্গলপাঠকর:। মাধ্বেনাগ্রাত: শকার্মানো দেহো যায়॥ ১৯০ ॥

থাকার বহিনিগত হইতে পারি নাই ॥ ১৯২ ॥

কমু ॥

দক্ষিণাবর্ত্ত শহুকে পাঞ্জন্য শহু বলা যায়॥ বথা॥

মাধৰ কর্ত্ক শব্দিত হইয়া পাঞ্জন্য শন্থরাজের ধ্বনি অন্তর্বধূদিগের গর্ত্তপাতনপূর্বক দেবস্ত্রীগণের মঙ্গল বিধান করত জনরন্দকে পুলকে পুরিত করিয়া ভুবনমধ্যে ভ্রমণ করিতে লগিল॥ ১৯০॥

> পদাক্ষ येथा ॥ जीवगरम ७৮ चास्त्रात २० स्मारक ॥

ভদ্দশ্নাহলাদবিবৃদ্ধনংভ্ৰমঃ
প্ৰেন্ধাৰ্ধবোমাশ্রুকলাকুলেক্ষণঃ।
রথাদবক্ষন্য স ভেষ্টেইত
প্রভাংস্যাহো ইতি॥
যথাবা॥
কলয়ত হরিরধ্বনা স্থায়ঃ
ক্ষুট্মমুনা যমুনাত্টীম্যাদীং।
হরতি পদত্তির্ঘদক্ষিণী ম
ধ্বজকুলিশাক্ষ্পপক্ষজাক্ষিতেয়ং॥
ক্ষেত্রং যথা॥

ভদ্দিতি। তংশব্দেন পাদার এবার্যাতে । ১৯৬॥

শ্রীকুষ্ণের চরণিচিহ্নদর্শনে যে আনন্দ জ্মিল, ভাহাতে আক্রুরের সন্ত্রম বর্দ্ধিত হইল এবং প্রেমহেতু গাত্রের রোম অঞ্চিত হইলা উঠিল। অপর অঞ্চকলান লোচনদ্বর আকুল হইয়া আদিল অভএত রর্থ হইতে উল্লুফন পূর্বক "কি আশ্চর্যা" এই বলিরা তুল্লভিতা ভাবিতে ভাবিতে ভাহাতে লুগান ক্রিতে লাগিলেন॥

### যথাৰা #

আহে স্থীগণ। আবলোকন কর, শ্রীকৃষ্ণ নিশ্চয় এই পথ দিয়া যমুনাকূলে গমন করিয়াছেন। তাঁহার ধ্রজবক্ত অঙ্কুশ ও পাল্লান্ধিত চরণচিক্ত সকল আমার নয়নদ্বয় হ্রণ করিতেছে ॥ হরিকেলিভুনাং বিলোকনং
বত দূরেহস্ত স্থৈত্প্ল ভিজিয়াং।
মথুরেত্যপি কর্ণপদ্ধতিং
প্রবিশন্ধান মনো বিনোতি নঃ ॥ ১৯৪॥
তুলনী ॥
যথা বিল্রমঙ্গলো
অগ্নি পক্ষজনেত্রমোলিমালে
তুলনীমঞ্জরি কিঞ্চিদর্থয়ামি তে ।
ভাববোধয় পার্থদারথেত্বং
চরণাজ্যে শরণাভিলাযিণং মাং॥ ১১৫॥
ভক্তঃ॥

ক্ষরবোধদ্বেত্যক্র পার্থসার্থিমেবেত্যথাং । ক্ষর্থসামি প্রাথিরে। প্রক্রৈ-পদ্মক্র পারায়ণমতে চুরাদিমাক্সো। ভয়পদিখাং ॥ ১৯৫ ॥

হার! পরম শোভারুক্ত হরিলীলার স্থানসকল দর্শন করা দূরে থাকুক, "মথুরা," এই শব্দটা কর্ণকুহরে প্রবেশ করিয়া আমাদের মনকে চঞ্চল করিল। ১৯৪॥

# यथा विद्यमक्रल ॥

হে কৃষ্ণশিরোভূষণ তুলদীমগুরি ! আমি তোমার নিকট কিন্দিৎ প্রার্থনা করিতেছি, অজুনের দার্থি প্রীকৃষ্ণের চরণ-পদ্মের শরণাভিলাধি আমাকে অবগত করাও॥ ১৯৫॥

ভক্ত যথা ॥

যথা চতুর্থে ॥
বিজ্ঞায় ভাবুত্তমগায়কিক্ষরাবভুদ্যতঃ সাধ্বসবিস্মৃতক্রমং ।
ননাম নামানি গৃণন্মধুদ্বিং
পার্যৎপ্রধানাবিতি সংহতাঞ্জলিং ॥
যথা বা ॥
স্থানা স্কুল্ডুজ্লুং ন্যুদ্য তুর্কে তবাংদে
স্মিত্তবিলসদপালং প্রান্ধণে ভাজমানঃ ।
নয়ন্যুগ্যসিঞ্চিত্ত্যঃ স্থাবীচিভিন্নঃ

উত্তমগায়: শ্রীমধুদ্বিট্ তদা কিন্ধরৌ তৌ বিজ্ঞায়। ভ্রাপি মধুদ্বি: পার্ষণ-প্রধানাবিতি বিজ্ঞায়। অভূাদতগুদাভিমুখোনোদাত উথিত: সঙ্গিতাদি

# চতুর্থে ১২ অধ্যায়ে ১৭ স্লোকে॥

শুব অন্তুত্দর্শন তুইটা পুরুষকে অবলোকন করিয়া ভগবান্ হরির কিঙ্কর বোধে তৎক্ষণাৎ গাত্রোপান করিলেন এবং
তাহার। মধুরিপুর প্রধান পার্ঘদ এই ভাবিয়া কুডাঞ্জালিপুটে
ভগবানের কেবল নাম গুলি উচ্চারণ করিতে করিছে প্রণাম
করিলেন। ব্যস্ততা প্রযুক্ত যথাবিধি পূজা করিতে তাঁহার
স্মরণ হইল না॥

#### ষথাবা ॥

হে স্বল ূ! বল দেখি যিনি তোমার ক্রেণিরি হস্ত বিন্যস্ত করিয়া ভূষিণ্য বিলাদান্তি অপাঙ্গ ভঙ্গিতে প্রাঙ্গণে বিরাজমান হইয়া আ্যাদের নয়ন্যুগলকে অমুত তরঙ্গে সেচন কথ্য সদ্ধিতত্তে কার্মান্তে ব্য়স্য: ॥
ভ্ৰাস্বো যথা ॥
অন্তা বহব: সন্ত ভগবৎপর্কবিষ্যা: ।
আন্তা বহব: সন্ত ভগবৎপর্কবিষ্যা: ।
আনাদয়তি মাং ধন্যা কুগুভাদ্রপদাকীমী ॥ ১৯৬ ॥
॥ \* ॥ ইতি ভক্তিরসাম্ত্সিকৌ দক্ষিণবিভাগে ভক্তিরস্যাম্যান্যনিরপণে বিভাব-শহরী ॥ \* ॥ ১ ॥ \* ॥

বেলাং। এব ইভি প্রকরণলভ্জঃ ॥ ১৯৮॥

॥ • ॥ ইতি দক্ষিণবিভাগে বিভাবলহয়ী প্রথমা ॥ • ॥

করিতেন, দেই তোমার বয়দ্য জ্রীকৃষ্ণ একণে কোথায় ॥

\* তদাদর যথা॥

অত্যাশ্চর্য্য ভগবংপর্ববাদর অনেক থাকিলেও ধন্য স্বরূপ ভাদ্রকৃষ্ণাইনী আমাকে আমেগ্রিত করিতেছে ॥

। \*। ইতি জীরামনারায়ণ বিদ্যারত্বকৃতব্যাখ্যায় ভক্তিরসামৃতিসিন্ধুর দক্ষিণবিভাগে ভক্তিরস সামান্যে বিভাবশহরী। \*। ১। ১।

্যথামুভাবাঃ 🖁

শমুভাবাস্ত চিত্তমভাবানামববোধকা: ।
তে বহিবি ক্রিয়াপ্রায়াঃ প্রোক্তা উদ্ভাষরাখ্যা ॥ ১ ॥
নৃভ্যং বিলুঠিভং গীতং ক্রোশনং ত্যুমোটনং ।
হুক্কারো জৃন্তণং খাসভুমা লোকানপেক্ষিতা
লালান্রাবোহটুহাস্চ ঘূর্ণাহিকাদ্যোহপি চ ॥ ২ ॥
তে শীতাঃ ক্ষেপণ্ডান্চতি যথাধাধ্যা দিধোদিতাঃ ॥
শীতাঃ স্থাগী তজ্ঞাদ্যাঃ নৃত্যাদ্যাঃ ক্ষেপণাভিধাঃ ॥ ৩ ॥

তেরু অনুভাবেরু কার্যাভ্তা: মিতাদাাে তেতানেন মিতমুক্তমের **অত্রাদ্য**-গ্রহণগৃহীতাৰ গণয়তি নৃত্যমিতি ॥ ২ ॥

গীতজুন্তালা ইতি জ্ভালাশেচতার্থ:।
লোকানপেকিতা লালাআবা জেয়া: পূর্বোকভাৎ শিতম্পি ॥ ৩ ॥

যাহারা উদ্ভাষর প্রযুক্ত চিত্তম্ব ভাবনকলের প্রকাশ এবং বাহে বিকারের ন্যায় দেখায়, তাহাদিগকে **অসুভাব** বলে॥

অনুভাবের কার্য্য যথা॥

নৃত্য, বিলুঠন ( স্থমিতে গড়াগড়ি দেওয়া ), গানজোশন, ( উচ্চরধ ) গাত্রমোটন, ( অঙ্গ মোড়া ) হুকার, জুন্তুণ, (হাঁই-তোলা ) দীর্ঘাদ, লোকাপেকাত্যাগ, লালাআব, অট্টহান, (অভিশয় শক্ষুক্ত হাদ্য ), ঘূর্ণা এবং হিকাদি এই সমস্ত বিকার দারা চিত্তস্থ ভাবসকলের অনুভাব হয়। এ

্র অমুভাব সকলের সমষ্টিতে নাম শীত এবং ক্ষেপণ। গভ জ্ঞা প্রভৃতিকে শীত এবং নৃত্যাদিকে ক্ষেপণ ববে॥ ০॥ ভত্ত নৃত্যং যথা।

মুরলী খুরলী স্থাকিরং

হরিবজ্রেন্দুমবেক্ষ্য কম্পিত: ।

গগণে সগণেশভিত্তিমধ্বনিভিন্তাণ্ডবমান্ত্রিভা হর: ॥
বিলুঠিতং ।

যথা তৃতীয়ে ॥

কচ্চিদ্বুধঃ স্বস্ত্যনমীব আত্তে
শ্বক্ত্বপুত্রো ভগবৎপ্রপন্ন: ।

যঃ কৃঞ্পাদান্ধিতমার্গপাংশু
স্বচেক্টত প্রেমবিভিন্তব্ধর্য: ॥ ৪॥

মুরলীপদেন তরালো লক্ষাতে থুরণী তদ্যা অভ্যাদ: । অভ্যাদ: খুরলী বোগোতি ত্রিকাণ্ডশেবাং ॥ ৪ ॥

### ভন্মধ্যে নৃত্য যথা॥

ভগৰান্ মহেশর, যাহাতে মুরলীর অভ্যাসবশতঃ অমুত ক্ষরণ হইতেছে ঈদৃশ হরিমুধচনদ্র সন্ধর্মন করিয়৷ ডিণ্ডিমবাদ্য-সহকারে গগণে গণেশের সহিত নৃত্য আরম্ভ করিলেন ॥

বিলুঠিত ষণা-ভৃতীয়ে ১ অধ্যায়ে ৩১ শ্লোকে ॥

উদ্ধানক বিছুর জিজ্ঞাসা করিলেন, হে সথে! বিদ্বান্ নিম্পাপ এবং ভগবানের শনগাপন মহাত্মা অক্রুর কুশলে আছেন ত ! ভগবান্ শ্রীকুকের প্রতি তাঁহার সদৃশী ভক্তি-যে, তিনি প্রেমবশতঃ ধৈর্যাবিহীন হইয়া তদীয় চরণান্ধিত প্রের ধুলার অবস্থিত হইয়াছিলেন॥ ৪॥ যথা বা ॥
নবামুরাগেণ ভবাৰশাঙ্গী
বনস্রগামোদমবাপ্য মন্তা ।
বঙ্গান্তা কঠিনে লুঠন্তী
গাব্রং স্থান্তী ব্রণয়াঞ্চকার ॥ ৫ ॥
গীতং যথা ॥
রাগডন্থরকরন্বিভচেতা:
কুর্বভী ভব নবং গুণগানং ।
বোক্লেক্স কুরুভে জলভাং গা
রাধিকাদ্য স্থলাং দুষদাঞ্চ ॥

ব্রণরাঞ্কার ব্রণবচ্চকার। বিন্মতোর্ক্ চেতি ব্রিধানাং । ৫ । দাগোহতুরাগঃ শীরাগাদিক। স্বদাং সহচরীণাং অভ্তাং ততঃ : দ্বদাং ক্লমং । ভলরোবি নিমরাং ॥ ৬ ।

### यथाया ॥

হে কৃষ্ণ ! ভোমার নবাসুরাগ বশত: শোভনাঙ্গী জীরাধা বিবশাঙ্গী এবং বনমালার সৌরভে প্রমন্তা হইয়া কঠিন ব্রজা-সণে সৃষ্ঠিত হওত গাত্রকে ত্রণময় করিয়াছেন ॥ ৫॥

# গীত যথা #

হে গোকুলেন্দ্র । অন্য অনুরাগণয়তে দত্তিভা জীরাধা ডোমার অভিনব গুণ গান করিয়া হৃত্ত্বর্গকে জড়তাপর ও পাবণাসমূহুকে জলময় করিভেছেন ॥ জ্যোশনং ॥

হরিকীর্ত্তনজাতবিক্রিয়ঃ

স বিচুক্রোশ তথাদ্য নারদঃ ।

অচিরান্নরিশংহশক্ষা।

দক্ষা যেন ধুতা বিলিল্যিরে ॥ ৬ ॥

যথা বা ॥

উররীকৃতকাক্রাক্লা, ক্ররীব অজরাজনন্দন ।

মুরলীর্তরলীকৃতান্তরা, মুহুরাক্রোশদিহাদ্য স্ক্রী ॥ ৭ ॥

তক্ষুমোটনং যথা ॥

ভরণীক্ষতান্তরেতি বিপ্রভারান্ত এব পাঠঃ ॥ ৭ চ

### ক্ৰোশন॥

ছরিকীর্ত্তনজনিত বিকারনিবন্ধন নারদ এরূপ উচ্চরব করিয়াছিলেন যে, তদ্ধারা 'অদ্য নৃসিংহ আবিভূতি হইলেন কি ?' এই আশক্ষা করিয়া দানবসকল ইতন্ততঃ ধাবমান হইয়া পুকারিত হইল ॥ ৬ ॥

#### यथावा ॥

হে ব্রজরাজনন্দন! এই বৃন্দাবনমধ্যে অদ্য জীরাধা ভোমার মুরলীরবে চঞ্চলচিত্রা হইয়া কাকু অর্থাৎ শোক-ভয়াদি ছারা ব্রবকার অঙ্গীকারপূর্বক কুর্রীপজিণীর ন্যার মুহুর্ছ: চিৎকার ক্রিভেছেন॥ ৭॥

তমুমোটন মুখা॥

কৃষ্ণনামনি মুদোপবীণিতে খ্রীণিতে মনসি বৈণিকো মুনিঃ। উদ্ভটং কিমপি মোটয়ন্ বপু-স্ত্রোটয়ত্যখিলয়জ্ঞসূত্রকং॥৮॥

বৈণবধ্বনিভিক্ত দুমদ্ধিয়ঃ
শঙ্করস্য দিবি হুস্কৃতিসনঃ।
ধ্বংসয়ন্ধপি মুহুঃ সদানবং
সাধুরন্দমকরোৎ সদা নবং॥ ১॥

মুদা হর্ষেণ উপবীণিতে বীণয়া উপগীতে সতি। অর্থাৎ স্বয়্রমেষ উদ্ধটং বথা সাত্তথা বপুমোঁ টাাৎ কিমপি অনির্বহনীয়ং যথা স্যাত্তথাধিল বঞ্চত্ত্তরত্তোটয়ভি॥৮॥

যথার্থকে সভ্স্কৃতিখন ইতি যোজাং। মুভ্রপীতি চ। সদা প্রতিক্ষণমের পরমানক্ষণানেন নবমিবাকরোদিতি চ। বৈরোধালঙ্কারার তু ধ্বংসরন্ধি ইতি দানবসহিত্মিতি বাাথোরং॥ ১॥

বীণাধারী নারদ আনন্দপূর্ব্বক পরিতৃপ্তচিত্তে কৃষ্ণনাম স্বরণ করিরা বীণাদারা গান করত কোন উৎকট রূপে গাত্ত মোটন ও সমুদার যজ্ঞসূত্র থণ্ড থণ্ড করিয়াছিলেন॥ ৮॥

## হুক্ষার যথা।

শীর্কফের মুরলীধানি শ্রবণ করিয়া ভাস্তবৃদ্ধি শক্ষর
গগনমগুলে এরূপ মুত্রুলি; তৃক্কার ধানি করিয়াছিলেন যে,
তদ্বারা দানবগণের বিনাশ ও শাধুদিগের আনন্দ উৎপন্ন.
ইইয়াছিল ॥ ৯ ॥

জুন্ত বথা ॥
বিজ্ তকুমুদবনেহ স্মিরুদ্যতিপূর্ণে কলানিধে পুরত: ।
তব পদ্মিনি মুখপদ্মং
ভজতে জুন্তামহো চিত্রং ॥ ১০ ॥
খাসভূমা ॥
উপস্থিতে চিত্রপটাসুদাগমে
বিরদ্ধতকা ললিভাখ্যাভকী ।

বিভৃতেতি। ক্লফণকে বিভৃত: কো: পৃথিবাা মুদামবনং পালনং বেন তথা ভশ্মিন্ পকে জ্ভামাণসাব্যঞ্জিকাং ভল্লত ইতি চিত্রমেব ॥ ১০ ॥

অৰুদাগম: পার্ট্। বাভুলো বাতগুল: স্যাচ্চোরবার্নি দামজ:। ঝঞা-

# জন্তুণ যথা॥

হে পশ্মিনি! সম্প্র কুম্দবনে পূর্ণচন্দ্রের উদর হও-রাতে ভোমার ম্থপদ্ম যে জ্ঞা ভলনা করিল, এ অভি আশ্চর্যা।

অর্থান্তরে। হে রাধে! নিখিল ভূমগুলের রক্ষণার্থ আবিভূতি পূর্ণকলানিধি ঞ্রীকৃষ্ণ সম্মুখে আগমন করায় তোমার
বদনপদ্ম যে জ্ঞা অর্থাৎ আলস্য ভক্ষনা করিল, ইহা অতিবিচিত্র ॥ ১০॥

### भीर्घशाम यथा॥

ললিতা নম্নী চাতকী বিচিত্ত বস্ত্ৰরূপ বর্ষাকাল বিবেচ-নায় অভিশয় ভ্ঞাবতী হইয়াছিলেন, কিন্তু নিখাসরূপ ঝঞা- নিশাসক থামক ভাপবাহিতং
কৃষণ যুদাকারম বীক্ষা চুক্ষু ডে॥ >>॥
লোকানপেকিতা॥
যথা দশমে॥
অহো পশ্যত নারীণামপি কুষ্ণে জগদগুরো।
ছরস্তভাবং যোহ বিধ্যম্ম ভূপোশান্ গৃহাভিধান্॥ >২॥
যথা বা পদ্যাবল্যাং॥
পরিবদ্দু জনো যথা তথায়ং
নকু মুখরোন বয়ং বিচারয়।মঃ।

নিলঃ প্রাব্বিকো বাসভো মলয়ানিল ইতি ত্রিকাণ্ডলেষদৃষ্ট্যা খাস এব বঞ্চা মকং প্রাবৃদ্ বায়ু: দৃগস্মিশ্রবাং প্রবল্ডাচ্চ। তেন অপবাহিতং নেজপণাদুরে কিপ্তং পটস্য পরিবর্তিছাং ॥ ১১ ॥

অহো ইতি বাজিকানামূকি: ॥ ১২ ॥

নির্বিশাম ভোগং করবাম। পর্যাটামেতি পাঠ: সক্ষতং ত্রিছাল বােডুত্তম-

বায়ু দারা কৃষ্ণাসুদাকার বসন দূরে নিক্ষিপ্ত দেখিয়া অভিশয় কুক্চিতা হইলেন॥ ১১॥

লোকাপেক্ষা পরিত্যাগ যথা॥

গ্রীদশমে, ২০ অধ্যায়ে ৩০ স্লোকে ॥

যাজ্ঞিক ত্রাহ্মণগণ কহিলেন, কি আশ্চর্য্য ! নারীদিশেরও জগদগুরু শ্রীকৃষ্ণে ছরস্তভাব (ভক্তি) অবলোকন কর, এই ভাবে গৃহসংজ্ঞক মৃত্যুপাশ সংছিল হয় ॥

यथावा भगावनीटक ॥

ছুনুধি লোকসকল যেধানে সেধানে নিশা করে করক,

হরিরদমনিরামদাতিমন্তা
ভূবি বিলুঠামনটাম নিবিশামঃ ॥ ১০ ॥
লালাজাবো যথা ॥
শক্ষে প্রেমভূজকেন দফঃ কফং গতো মুনিঃ।
নিশ্চলদ্য যদেত্দ্য লালা অব্তি ব্রুতঃ॥ ১৪ ॥
ভাইংদিং ॥
হাদান্তিলাংটুহাদোহয়ং চিত্রিকেপদন্তবঃ।

পুরুষবছবচনং ভূ পরমদঙ্গ হং। বয়মিত্যক্তত্বান্মতা ইতি পঠনীয়ং॥ ১৩॥

শঙ্কে প্রেমেতি। মুনিজেন প্রেমান্মানং নিশ্চলত্বরণাদিনা তত্ত জভূজ-ক্লণত্বং ॥ ১৪'॥

আট্টহাসম্য চেনং সক্ষণং। উৎফুলনাসিকারক মালোড়িভমুথেকণং। উদ্ধতং বিকৃতাকারং নাটোংটহসিতং বিছরিতি। বিপক্ষং প্রত্যাকৈপমর-

আমিরা তাহার কোন বিচার করিব না, হরির মদিরামদে অতিশয় মত হইয়া ভূমিতে লুগিত হইব, নৃত্য করিব এবং যথেষ্ট ভোগ করিব॥ ১৩॥

### नानाखाव यथा॥

আমার এইরূপ অনুভব হইতেছে যে, নারদম্নি কৃষ-প্রেমরূপ ভূজসদংশনে ক্ষপ্রাপ্ত হইয়া নিশ্চলভাবে রহিয়া-ছেন, এ কারণ ইহার মুখ হইতে লালাজাব হইতেছে॥ ১৪॥

## অধ অটুহান ॥

যাহা চিতের বিক্লেপ হইতে উৎপন্ন অথচ হাস্য হইতে পুৰক্, ভাহার নাম অট্টাস ॥

# प्राचित्र रस । महरी । जिल्लामा प्राचीता



যথা।
শক্ষে চিরং কেশ্বক্ষরস্য
চেতন্তটে ভক্তিশতা প্রফুলা।
যেনানিতৃগুন্থলমন্তহাসপ্রস্নশঞ্জাশ্চটুলং স্থালন্তি।
ঘূর্ণা যথা।
গ্রুবনন্তর্গাদধাতি বাত্যাং
নকু মুরলি ছিয় ফুৎকৃতিছলেন
কিময় মতরধা ধ্বনিবিঘূর্ণন্

তরা বদাপাট্টহাস: সর্ব্বত্রাপুত্র এব বর্ণাতে তথাপি স্বএব স্বপক্ষং প্রতিমেনি যানং তেন কেনচিৎ কোমলতয়াপি বর্ণয়িতুং শক্যতে। তত্র সতি ভক্তিনিক্ষা কানামবক্তাভাপকং ক্যাচিত্তভাগাট্টহাসং কশ্চিৎ তৎসপক্ষে। বর্ণয়তি শক্তে

#### যথা ॥

আমার এইরূপ অমুভব হইতেছে যে, রুঞ্চাসের চিত্তটে ভক্তিশতা প্রফুল্লা হইয়া থাকিবে এ কারণ ওঠাবর স্থলে অটুহাসরূপ মনোহর পুষ্পদকল স্থালিত হইতেছে।

# घूर्ग। यथा ।

হে স্থি মুরলি ! নিশ্চর বোধ হইতেছে অথরিপু ব্রীক্ত্রকা ফুৎকৃতিচ্ছলে ভোমার ঘূর্ণাবায়ু আধান করিয়াছেন, নমুকা তোমার এরপ ধ্বনি সম্ভব হইত না, একফ জোমার ধ্বনি বয়ং ঘূর্ণাগ্রান হইয়া একফ প্রকাশন ব্যাপীলিকে মুন্তি 93r

সধি তব বূর্ণয়তি-ব্রজামুজাকীঃ ॥ ১৫ ॥

হিকা যথা ॥

ন পুত্রি রচয়োগণং বিস্তন্ধ রোদমত্যুদ্ধতং
মুধা প্রিয়সথীং প্রতি স্বমশিবং কিমাশঙ্কসে।

হরিপ্রণয়বিক্রিয়াকুণতথা ক্রবাণা মুহ্তব্রাক্ষি হ্রিরিত্যসো বিতন্মতেহদ্য হিকাভরং ॥ ১৬ ॥
বপুরুৎফুল্লতা নক্তোদামাদ্যাঃ হ্যু পরেহপি যে।

#### हैं जि ॥ ३०॥

ন প্রীতি পৌর্ণমাদ্যা বচনং। সা চ তাদৃশভাবেত্যুজ্জলনীলমণাবের ব্যক্তাতে তত্তকাহমেবোপারং করিয়ামীতি ধ্বনিতং। অত্ত রোদনঞ্চোদ্ধতমিত্যেব পাঠঃ সভাঃ॥ ১৬॥

ৰপুরিতি বস্তুতস্ত্র বপুরুৎকুলত। পুলকদ্যৈবিভিশ্বের জ্ঞেয়:। রক্তোলগমশ্চ করিতেতে ॥ ১৫ ॥

### हिका यथा॥

পোর্ণমাদী কহিলেন, হে পুত্রি ! তুমি আপনার প্রিয়দণী শীরাধার প্রতি কি অমঙ্গল আশঙ্কা করিতেছ ? এ অমঙ্গল নহে, তুমি ইহাঁর প্রতি কোন ঔষধ প্রয়োগ করিও না উদ্ধত রোদন পরিত গে কর। হে বরাক্ষি! ইহা শ্রীকৃষ্ণপ্রেমের বিকার, শীকৃষ্ণ অদ্য হিকাভিশয়কে বিস্তার করিয়াছেন অত-এব আমিই হিকা নিধারণের উপায় করিতেছি॥ ১৬॥

অপর দেহের উৎফুল্লতা ও রক্তোলাম প্রভৃতি যে সকল ভাব আছে, তংসমুদায় অতি বিরণ প্রযুক্ত এন্থণে কথিত



অতীব বিরল্ভাতে নৈবাত্র শরিকীর্তিত। । ১৭ ॥ ।

॥ \* ইতি শ্রীভক্তিরসামূত্র দিক্ষেণ বিভাগে ভক্তিরস্-সামান্য-নিরূপণেহ মুভাবলহরী দিডীয়ার্রা \* ॥ ২॥ \*॥
অথ সাত্তিকাঃ॥

কৃষ্ণসন্ধিভিঃ সাক্ষাৎ কিঞ্চিন্না ব্যবধানতঃ ।
ভাগৈশ্চিত্ৰ মিহালোন্তঃ সন্ধৃষিত্যুচ্যতে বুধৈঃ ॥ ১ ॥
সন্ধানস্থাৎ সমূৎপন্না যে ভাবান্তেতু সান্ত্ৰিকাঃ।
স্মিগ্ধা দিগ্ধান্তথা ক্ৰুকা ইত্যমী ত্ৰিবিধা মতাঃ ॥ ২ ॥

#### **ट्यमग्रा।** २१॥

॥ \*॥ ইতি পঞ্লহর্য্যাত্মকে দক্ষিণবিভাগে অনুভাবলহরী ছিতীয়া॥ • ॥
সন্ধাদিতি কেবলাদেবেতি ভাবঃ। ততক নৃত্যাদীনাং সত্যপি সন্ধোৎপরত্বে
বৃদ্ধিপৃথ্যিকা প্রবৃত্তিঃ স্তন্তাদীনান্ত স্বত্এব প্রবৃত্তিরিত্যস্য লক্ষণস্য নৃত্যাদির্ ন
ব্যাপ্তিঃ॥ ২ ॥

### इहेल गा॥ १९॥

॥ \* ॥ ইতি শ্রীরামনারাগ্রণ বিদ্যারত্বকৃত ব্যাখ্যায় অমুভাব শহরী দ্বিতীয় ॥ \* ॥ ২ ॥ \* ॥

### অথ সাত্তিক 🛭

সাক্ষাৎ ঐক্ঞিসম্বন্ধি অথবা কিঞ্ছিৎ ব্যবধান হৈছু ভাষসমূহ দ্বারা চিত্ত আক্রান্ত হইলে পণ্ডিতগণ তাহাকে সন্ত্ব
বলিয়া থাকেন॥ ১॥

সত্ত হইতে উৎপন্ন যে সকল ভাব তাহাদিগকে সাত্তিক বলা যায় এই সাত্তিক তিন প্রকান, স্নিশ্ব, দিল্ল প্রবং ক্লক ॥ ২ জ্ঞ সিশ্বাঃ ॥

সিশ্বাস্ত সাজিক। মুখ্যা গোণাল্চেতি দ্বিধা মতাঃ ॥

তঞ্জ মুখ্যাঃ ॥

আক্রমান্মুখ্যমা রত্যা মুখ্যাঃ স্থাঃ গান্ত্বিকা অমী।
বিজ্ঞেয়ঃ রুক্ষণস্বন্ধঃ সাক্ষাদেবাত্র স্রিভিঃ ॥

যথা ॥

কুলৈমুকুলাম মুদ। স্কন্তী

ক্রজং বরাং কুল্বিড় স্বদন্তী।
বভুব গান্ধকরিসেন বেণো-

তত্র স্লিগ্ধা ইতি। এষাং লক্ষণং বন্ধ্যমাণামুসারেণ মুখ্যগৌণরত্যাক্রাস্তচিত্ত-ভবতমা জ্বেং। তদেবং সামান্যতঃ স্নিগ্ধানাং লন্ধণমপ্যায়াতং। উভস্কৈতর-রত্যাক্রাস্তচিত্তভবতমা স্লিগ্ধা ইতি॥ ৩॥

> তন্মধ্যে স্লিগ্ধ যথা ॥ স্লিগ্ধ দাত্ত্বি ভূই প্রকার গোণ ও মুখ্য ॥ তন্মধ্যে মুখ্য যথা ॥

মূপ্য ভাবধার। আক্রান্ত সাজ্বিকভাব সকলের নাম মুখ্য। পশুতিগণ্ট্রবলিয়া থাকেন, এই মুখ্য ভাবেই শ্রীকৃষ্টের সহিত সাক্ষাৎ সম্বন্ধ আছে॥

#### যথা ॥

কৃন্দবিনিন্দিতদন্তী শ্রীরধা, মুকুন্দের নিষিত কুন্দপুপ্তা-ছার। উৎকৃষ্ণ মাণা নির্মাণ করিতেছিলেন, এমত সময়ে বেণুর মধুর ধ্বনি শ্রবণ করিয়া সহসা নিষ্পান্দাঙ্গী হইয়া কহিলেন ॥ র্গান্ধবিকা স্পান্দনশূন্যগাত্তী ॥
মুখাঃ স্তঃস্থাহয়নিথাং তে জ্ঞেয়াঃ স্বেদাদখেহিপি চ ॥
অথ গোণাঃ ॥
রহ্যাক্রমণতঃ প্রোক্তা শোণাস্তে গোণস্ত্রা।
অত্র ক্প্রেদা স্বন্ধঃ সাহে কিঞ্চিব্যবধানতঃ ॥
যথা ॥
স্বিশোচনচায়কামুদে
পুরি নীতে পুরুষোভ্যম পুরা।
অতিভাত্রমুখী সগদগদং
নুশমাক্রোশতি গোকুলেশ্বরী ॥ ০ ॥

এই স্তম্ভ মুখ্য, এইরূপ স্বেদাদিকেও জানিতে হইবে ॥ অথ গোণ ॥

গোণরতি ধারা আক্রান্ত ভাব সকলকে গোণ বলা যায়, এই গোণভাবে কিঞ্চিং ব্যবধানে শ্রীকৃষ্ণের সহিত সম্বন্ধ ইয়া থাকে॥

#### যথা ॥

স্বীয় লোচন চাতকের মেঘ স্বরূপ পুরুষোভ্তম পূর্বে মধ্-পুরীতে নীত হইলে, পশ্চাৎ গোকুলেখরী মশোণা ক্রোধে তাত্রমুখী হইয়া গলাদ বাকে; নৃপতিকে তিরুষার করিছে লাগিলেন॥৩॥ ইমো গোণো বৈবর্গস্থরভেদো ॥
অথ দিশ্বঃ ॥
রিভন্নবিনাভূতৈর্ভাবৈদনিদ আক্রমাৎ।
জনে জাতরতো দিশ্বাস্তে চেদ্রতানুগামিনঃ ॥ ৪ ॥
যথা ॥
পুতনামিহ নিশম্য নিশায়াং
দা নিশান্তলুঠহন্তগাত্রীং।
কম্পিতাঙ্গলতিকা ব্রজরাজ্ঞী
পুত্রমাকুলমভিবি চনোতি॥ ৫ ॥

িবিতি গৌণভূতয়া জোধরত্যাক্রমণাদিতি ভাবঃ ॥ ৪ ॥ ্রনামিতি স্বাপ্লিকং চরিতং লক্ষতে নিশাস্তে তদ্যা লো**ঠনাশ্রুতেঃ । অত**-প্রবা**লাদোহে পু**ল্লদ্য প্রথমঃ তত্রাস্তিসান্দ**ুর্তেঃ স্ববিষয়মেব** ভয়ং জাতং॥ ৫ ॥

এই উদাহরণে, বৈবর্ণ্য ও স্বঃতেল এই তুইটা মোণ ॥ তথ দিয়া॥

ম্**ধ্য ও গোণ রতি ব্যতি**জ্ঞেকে জাতরতি জনে ভাবদার। খন আ**ক্রান্ত হইলে যদি ঐ ভাব র**তির অনুগামী হয়, তাহা ্লৈ তাহাকে দিশ্ম বলে॥ ৪॥

#### যথা ॥

একদা রজনীশেষে স্বপ্নাবেশেষ গৃহপ্রান্তে ভূমিভে লুগায়-নানা প্রকাতগাত্তী পুতনাকে অবলোকন করিয়া ত্রজেশ্বরী কম্পিতাদী ও ব্যাকুলচিতা হইয়া পুত্রের অস্বেষণ করিতে ক্ষাবিলেন ॥ ৫॥ কম্পো রত্যকুগামিত্বাদদে দিশ্ধ ইতীর্য্যকে ॥ ও ॥ অথ রুক্ষাঃ ॥
মধুরাশ্চর্যতেরার্ত্তোৎপ্রৈম্ বিস্ম্যাদি ভিঃ।
জাতা ভকোপ্যে রুক্ষা র তশুন্যে জনে কচিৎ ॥
যথা ॥
ভোগেকসাধ্যজুধা রতিগন্ধশূন্যং
সং চেষ্ট্রয়া হদ্যমত্র বিরুষ্তোহপি।
উল্লাসিনঃ সপদি মাধ্বকেলিগীতৈস্তম্যাক্ষমুৎপুল্কিভংগ্রুমধুরেস্তদাসী।॥

কম্প ইতি পূর্বস্ত কেবলভয়ানকদর্শনাজ্জাতেয়ং নতু স্ববিলোচনেভা । বৈবর্ণাদিরিব রতিমূল ইতি ভাবঃ ॥ ৬ ॥

জাতা ইতি ভক্তোহত্র জাতরতিঃ প্রকরণাং॥ ৭ ॥

রতির অনুগামী প্রযুক্ত এই কম্প দিশ্ধ বলিয়া কীর্তিত হইল ॥ ৬॥

#### তাথ কুক্ষ ॥

কখন যদি সধুব এবং আশ্চর্য ভগবৎকথার আনিদ্দ বিসায়।দি দ্বারা ভক্ত সদৃশ রভিশ্ন্য জনে ভাবোদয় হয়, ভাহা হইলে ঐ ভাবকে রুক্ষ বলা যায় ॥

#### যথা #

যে ব্যক্তি উল্লাসপূর্যক কেবল ভোগসাধন-তংপ্র স্থীয় চেন্টারারারতিশৃতা চিত্তকে আচ্ছন করিয়া রাখে, তাহা হইলেও মধুর সাধবলালাগীত তৎক্ষণাৎ ভাহার অঙ্করে উৎ-পুণ্কিত ক্ষিয়া দেয় ॥ ক্ষক এব রোমাঞঃ ॥

চিত্তং সন্থীভবৎ প্রাণে নাসাত্যানমূতিং।
প্রাণস্ত বিক্রিয়াং সচ্চন্দেহং বিক্ষোভয় তালং।
তদ। স্তন্তাদয়ো ভাবা ভক্তদেহে ভবস্তানী
তে স্তম্ভ স্বেদ-রোমাঞ্চাঃ স্বরভেদে। হথ বেপথু
বৈবর্ণা মঞ্জেশলয় ইতাকৌ সাত্তিকাঃ স্মৃতাঃ।
চত্ত্বার ক্ষাদিভূতানি প্রাণো জাত্বলম্বতে।
কদাচিৎ স্প্রধানঃ সন্দেহে চরিতি সর্বতঃ॥ ৭॥
স্তম্ভং ভূমিস্তিঃ প্রাণস্তনোভাঞ্জলাঞাঃ।

অন্তমিতি তওৱাবদ্য স্বভাবভেদ এবাত্র কারণং জ্ঞেরং॥৮॥

এই রোমাঞ্চেই রুক্ষ বলে॥

চিত্ত যথন সত্ত্তণাবলম্বা হইয়া মনকে প্রাণে সম-পণি করে এবং প্রাণ বিকারপর হইয়া অতিশয় রূপে দেহের কোভ উৎপাদন করে, তথনই ভক্তাদেহে স্তম্ভাদি ভাবসকল উদিত হয়

সান্ত্রিক ভাব আট প্রকার, যথা—স্তম্ভ, স্বেদ (দর্ম) রোমাঞ্চ, স্বরভেদ, কম্প, বৈবর্ণ অঞ্চ ও প্রলয়॥

কথন কথন প্ৰাণ, পৃথিবী, জল, তেজঃ ও আকাশ অব-শম্বন করিয়া থাকে এবং কথন স্থোধান অৰ্থাৎ বায়ু আশ্রয় করিয়া স্ক্তিভোতৰে দেৱে বিচরণ করে॥ ৭॥

প্রাণ যথন ভূমিশ্বিত হয়, তথন স্তস্ত, যথন জলাপ্রিত হয়, ভথন সঞ্চ যথন তেজঃস্থ হয়, তথন স্বেদ ( ঘর্ম ) এবং যুধুন তেজস্বঃ স্বেদবৈবর্ণ্যে প্রলায়ং বিয়দাব্রিতঃ।
স্বস্ত এব ক্রমাম্মন্দমধ্যতীব্রত্বভেদভাক্।
রোমাঞ্চকস্পবৈস্বর্ধ্যান্যক্র ক্রীণি ডনোত্যসোঁ ॥ ৮ ॥
বহিরস্তশ্চবিক্ষোভবিধায়িত্বাদতঃ স্ফুটং।
প্রোক্তান্মভাবতামীষাং ভাবত। চ মনাষিভিঃ॥ ৯ ॥
তক্র স্তস্তঃ॥
তক্রে স্বর্ধভয়াশ্চর্য্যবিষাদামর্ধস্ক্রবঃ।

অতঃ পুর্বোক্তাদ্ধেতোর্বহিরত্বক ক্টুমুকৈর্বিকোভবিধারিত্বাদি ত্যুদিত্যভাষরের তু ন তাদৃশনিত্যভিপ্রায়: । ভাবতা পক্ষেত্র, অনীবাং ব্যভিতারিত্যনের জ্ঞেরং॥৯॥ তত্ত ইতি । তত্তো মনসোহবস্থাবিশেষঃ । রাগাদিরাহিত্যনিত্যাদি কান্ত দেহস্ত । সচ তত্ত এব সাধিকানাং তত্তদেকনামতয়ান্তর্বহির্বাপ্য স্থিতহাৎ । কিন্ত পূর্বাং সুক্ষাবস্থঃ । উত্তর্ভ্ত্তাবস্থঃ । পূর্বাগ বোধক ইতি যথাক্রমং ধ্যোভাষাত্ব-

শাকাশাপ্রিত হয়, তথন প্রলয় (মৃচ্ছা) বিস্তার করে, আর যথন বায়ুতেই স্থিত হয়, তথন ক্রমশঃ মন্দ, মধা ও তাত্রছাদি ভেদ প্রাপ্ত হইনা রোমাঞ্চ, কম্প ও স্বরভেদ এই তিনটাকে বিস্তার করিয়া থাকে॥৮॥

এই সকল সাত্তিক ভাব স্পাইজ্বপে ৰাছ এবং অন্তরের ক্ষোভ বিধান করে, একারণ পণ্ডিতগণ ইহাদের অনুভাবছ এবং বাভিচারিছ বলিয়া কীর্ত্তন কারন॥ ৯॥

তশ্বধ্যে স্তম্ভ যথা 🛙

र्व, छव, चार्क्या, विवास अवः चमर्व वर्षा ८ द्वास रहेट

তত্ত্ব রাগাদির।হিত্যং নৈ শ্চল্যং শুন্যতাশয়: ॥
তত্ত্ব হর্ষাদ্যথা তৃতীয়ে ॥
যদ্যান্ত্রাগপ্পতহ।সরাসলীলাবলোক শতিশব্ধমানা: ।
ব্রজস্ত্রিয়ো দৃগ্ভিরন্থপ্রত্তধিয়োহ্বতন্ত্ব; কিলক্ত্যশেষা: ॥ ২০ ॥

ভাবন্ধং। তদেবং হর্ষাদিসন্তবে। ভাববিশেষঃ স্তস্ত উচাতে। তত্র রাগাদি রাহিত্যাদরো ভবস্তীতি যোজ্যং। এবমুত্তরক্রাপি। অত্র তুরাগাদীনাং রাহিত্যং যত্র তাদৃশং নৈশ্চলাং কর্ম্মেন্দ্রিয়ানাং। শৃশুত্বস্ত জ্ঞানেন্দ্রিয়ব্যাপারাণাং মনসন্ত ব্যাপরোহন্তি। প্রলব্ধে পুনস্তদেকলীনস্বামনসোহপি নাস্তীতি ভেদঃ॥ > ॥

স্তম্ভ উৎপন্ন হয়, স্তম্ভ হইতে বাক্যাদি রাহিত্য, নিশ্চলতা এবং শ্ব্যন্তাদি অর্থাৎ অভাবাদি প্রকাশ পায়॥

> তন্মধ্যে হর্ব হেতু স্তম্ভ যথা # তৃতীয়ে ২ অধ্যায়ে ১৪ শ্লে!কে #

উদ্ধব বিত্রকে কহিলেন হৈ মহাশয় ! একদা প্রজাহনাগণ তদায় সামুরাগ হাস্য পরিহাস ও লীলাবলোকনদারা
মানিনী হইয়া তাঁথাকে নিবারণ করিলে যখন তিনি গমন করেন
তখন তাঁথাদের নয়নের সহিত অন্তঃকরণ্ড তাঁহার পশ্চাম্তী
হইয়াছিল, তাহাতে তাঁহাদের স্ব স্ক ম্যা সমাপ্ত না হইলেও
তাঁহার নিশ্চেষ্ট হইয়া রহিয়াছিলেন ॥ ১০ ॥

ভরাদ্যথা ॥
গিরিস্মিউমার জিক কর্দ্ধং
পুনতঃ প্রাণপরার্দ্ধতঃ পর দ্বিঃ !
তন্যাং জননী স্বীক্ষ্য শুষ্যমধনা হস্ত বভূব নিশ্চলাঙ্গী ॥ ১১ ॥
আন্দর্য্যাদ্যথা শ্রীদশমে ॥
ততোহতিকুতুকোদ্ ভস্তি মিতিকাদশেন্দ্রিয়ং ।
ভদ্ধান্নাভূদজন্ত্রগীং পূর্দেব্যন্তীব পুল্লিকা ॥ ১২ ॥

প্রাণপরার্দ্ধতোহপি পরার্দ্ধমনস্তম্লাং পরমাধিকমিত্যর্থ:॥ ১১॥ ততঃইতি। কুতুকেতি অতিকুতুকেন উগ্তম্ৎসন্নচেষ্টং পুনস্তিমিতং প্রেমান দ্রীভূতঞ্চ একাদশেক্রিয়ং মনো যদ্য সং॥ ১২॥

### ভয় হেতু স্তম্ভ যথা॥

গিরিসদৃশ মল্লসমূহে অবরুদ্ধ প্রাণাপেক্ষা অর্ধিক প্রিয়তর শ্রীকৃষ্ণকে অগ্রে অগ্রেশিকন করিয়া দেবকাদেবী শুক্ষনগ্রনা হইয়াছিলেন॥ ১১॥

> আশ্চর্য্য হেতু স্তম্ভ যথা॥ শ্রীদশনে ১৩ অধায়ে ৫১ শ্লোকে॥

তদনন্তর প্রকা। সাশ্চর্য। বশতঃ দৃষ্টি পরিবর্ত্তন করিয়া অথব।
নিজবাহন হংসপৃষ্ঠে নিপতিত হইয়া নিশ্চন হইলেন। ঐ সকল
বালকের তেজে তাহার সমুদায় ইন্দ্রিয় নিস্তক্ষ হইল। ছে
রাজন্! ক্রন্ধাকে তত্রপ দেখিয়া ঐ সময় এইরূপ বোধ হইল
যেন ব্রঞ্গাধিষ্ঠাত্রী দেবীর সমাপে একটি চতুমুখী কনকপ্রাক্ষিয়া
বিহাাছে॥ ১২॥

ষণা বা ॥

শিশো: শ্যামস্য পশাস্তী শৈলমন্ত্ৰংলিহং করে।

তত্ত্ব চিত্র।পিতেবাণীলোগী পোষ্ঠনিবাসিনাং ॥ ১০ ॥

বিষাদাদ্যথা ॥

বক্সোদরদানবোদ্যে
পুনতঃ প্রেক্ষ্য বিশন্তমচ্যুতং ।

দিবিষন্নিকরো বিষপ্তমি ।

শুক্টং চিত্রপটায়তে দিবি ॥

শুমার্ঘ্যথা ॥

চিত্ৰাৰ্পিতেতি। চিত্ৰহাতাৰ্বৰ্পিতা অচিত্তবন্ধং প্ৰাপিতেত্য**ৰ্থঃ চিত্ৰায়মাণেতি** ৰা পঠিঃ॥১৩॥

চিত্রপটায়ত ইতি চিত্রস্থানীয়ানাং দিবিষদাং নিকর:় পটস্থানীয়তর। দৃশ্রতে ইত্যর্থ:। চিত্রততীয়তে ইতি বা প ঠ:॥১৪॥

#### যথাবা 🛊

শ্যান শিশুর হস্তে গগণস্পর্শি গোবর্দ্ধনকে অবশোকন করিয়া ত্রজবাসি সকল চিত্রপুত্তলিকার ন্যায় হইয়াছিলেন॥ ১৩॥ বিষাদ হেতু স্তম্ভ যথা॥

সম্মুখস্থ বকসহোদর অঘাস্তরের উদরমধ্যে **জ্রীরুষ্ণকে** প্রবেশ করিতে দেখিয়া স্বর্গে দেবতা সকল বিষাদযুক্ত হইয়া চিত্রপুত্তলিকার ভায় হইয়াছিলেন॥

অমর্বহেতু স্তম্ভ যথা ॥

কর্ত্ মিচ্ছতি মুরদ্বিষে পুরঃ
পত্তীমোক্ষমকৃপে কৃপীস্ততে।
সম্বরোহপি রিপুনিজ্জিয়ে রুষা
নিজ্জিয়ঃ ক্ষণমভূৎ কপিধ্বকঃ॥
অব স্বেদঃ ॥
সেবদো হর্ষভয়ত্তোধাদিজঃ ক্লেদকরস্তনোঃ ॥ ১৪ ॥
তত্ত হর্ষাদ্যধা॥
কিমত্ত সূর্যাতপমাক্ষিপস্তী
মুগ্গাক্ষি চাতুর্যমুরীকরোষ।
ভ্যাতং পুরঃ প্রেক্য সরোক্রহাকং

কিং জ্ঞাতং তত্রাহ কৃষ্পায়ুদেন ভিন্নাদীতি। জ্ঞানে 'হেডু:। পুর: সরোক্র-

কুপাশৃত্য কুণীনন্দন অশ্বথাশা অগ্রণ তি শ্রীক্ষের প্রতি বাণ মোচন করিতে ইচ্ছা করিলে, কপিধ্বল ( অর্জুন) রোষ-বশতঃ শক্র দমন করিতে ত্রান্থিত হইয়াও ক্পকাল চেক্টাশুন্র ইইয়া রহিয়।ছিলেন ॥

### অথ সেদ (বৰ্ম ) #

হর্ষ, ভয় ও ক্রোধানি জনিত শরীরের ক্লেদ অর্থাৎ আরু তা করণকে স্থেদ বলে॥ ১৪॥

### তশ্বধ্যে হর্ষ জনিত স্বেদ যথা।

হে মুগ্ধাক্ষি রাধে ! তুমি চাতুর্য্য অঙ্গাকার পূর্বক সূর্ব্যের আতপকে তিরস্কার করিতেছ কেন ? আমি জানিতে পারিলার সম্প্রত্ম কমপলোচন শ্রীকৃষ্ণের সন্দর্শনে কন্দর্পপীড়ার বর্ত্মাক্ত

83.08

বিশ্বাসি ভন্ন। কুন্থমায়ুধেন ॥ ১৫॥ ভ্রাদ্যথা ॥
কুতুক। দভিমন্যুগেশিনং
হরিমাকুশ্য গির। প্রগল্ ভরা ।
বিদিতাকৃতিরাকুলঃ ক্ষাদক্তনি বিশ্বতকুঃ সারক্তকঃ ॥ ১৬॥
কোধাদ্যথা ॥
সমীক্ষ্য শক্রং সক্রে। গক্র ক্রাকঃ ।
যজ্ঞসা ভক্ষাদ্তিকৃত্তি বা ক্রাং

ছাকং প্রেক্য স্বিন্নেতি॥ ১৫॥

অভিমন্থ্য: শ্রীরাধারা: পতিঅন্তঃ কাক্রেলাগ: । নাস্থন থলু ক্ষণারেভাক্তদিশা মারানির্দ্ধিততৎ প্রকৃতেরের পতিইন্সনে। রক্তক্তরামা শ্রীকৃষ্ণত্ত সৰ্ব্যক্ষে দাসবিশেষ: ॥ ১৬ ॥

**খনোপরিটানশি তিঠত** ইত্যক্ত সহজার্থে দ্রস্থিতভাপি নতু তল্লীলাং

### हहेर उहा १९॥

### ভয়তেতু সেদ যথা।

এক দিবন শ্রীকৃষ্ণ কোতুক নিমিত অভিমন্ত্য বেশ ধারণ করিয়াছিলেন, রক্তকনাম। ক্ষড্ভ ক্রিবাত দাল তিরকার করিয়া পরে "ইনিই শ্রীকৃশ্ব" ইয়া জান ত পরিয়া ব্যাকৃল-চিতে ক্রণকাল ঘর্মাক্ত দেহ হাইয় ভিল। ১৬॥

ক্রোধ্ছতু স্থেদ যথা॥

्रमुख्युष्टक निवस्ता स्थानमा इष्टिक्शक देखरक स्वरामानम

ঘনোপনিফাদিপি তিষ্ঠতন্তদ।
নিপেতৃরঙ্গাদ্যননারবিন্দরঃ ।
অথ রোমাঞ্চঃ ।
রোমাঞ্চোহয়ং কিলাশ্চর্যহর্ষোৎসাহজ্যাদিজঃ ।
রোমাঞ্চাদ্যমস্ত্র গাত্রসংস্পর্শনাদ্যঃ । ১৭ ॥
তত্রাশ্চর্যাদ্যথা ॥
ডিস্তুস্ত জ্তুাং ভজ্কতির্লোকাং
বিলোক্য বৈলক্ষরতা মুগানুঃ ।
বস্তুর গোষ্ঠেন্তকুটুস্থিনায়ং
তনুক্ষহৈঃ কুট্যাল্ভাপ্যস্তিঃ ॥ ৮ ॥

প্রবিষ্টক্ত ইত্যপিতু যোজ্যং বিরোধালঙ্কারেতু যোগ্য এব ॥ ১৭ ॥ বৈলক্ষ্যং বিশ্বয়ঃ। বিগকো বিশ্বয়াধিত ইত্যমরঃ॥ ১৮ ॥

করিয়া মেদোপরি অবস্থিত গোষা দ্বিত গরুড়ের দে**ং ইংতে ঘন** ঘন ঘর্মবিন্দু স⊅ল পতিত হইতে লাগিল॥

অথ রোমাঞ্চ 🛭

আশ্চর্য্য দর্শন, হর্ষ, উৎসাধ ও ভগাদি জন্য রোগাঞ্জ হয়, রোমাঞ্চ হইলে রোম সকলের উলাম এবং গাত্রসংস্পর্শনি ছিল্

**আশ্চর্য্য হেতু** রোমাঞ্চ যথা॥ ১ 🚡 .

বালকের জ্ন্তণ স।য়ে মুখ্যান কিলোকী (স্থা, মুর্নুন্ধ পাতাল, ) দর্শন করিয়া বিশ্বিতা ন গপত্নী রোমাঞ্চরার ক্রিক্রিক্তালা ১৮॥

হর্বাদ্যথা প্রীশদান ॥
কিং তে কৃতং ক্ষিভিতপো বত কেশবাজ্যি স্পার্শেৎসবোৎপুলকিতাঙ্গরুইর্বিভাসি।
অপ্যাজ্যি সম্ভব উরুক্রমবিক্রমান্না
আহো বরাহবপুষঃ পরিরম্ভণেন ॥
উৎসাহাদ্যথা ॥

কিং তে কৃত্মিতি। কেশবোহত শ্রীকৃষ্ণ:। অপীতি কিমর্থে। উক্রক্রমস্য বিক্রিমস্য বিক্রমাজরণবিন্যাসাদেখাহজিবু সম্ভব:। সোহপি কিনীদৃশ:। আহো কিছা বরাহ্বপুব: পরিরম্ভণেন য: স্পর্শোৎসব: সোহপি কিনীদৃশ: নহি নহীভার্ব:॥ ১ • ॥

## হর্ষহেতু রোমাঞ্চ যথা॥ শ্রীদশমে ৩০ অধ্যায়ে ৯ স্লোকে

শ্রীকৃষ্ণাশ্বেষণ-সময়ে গোপীগণ পৃথিবীকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন, হে ক্ষিতে ! তুমি কি অনির্মিচনীয় তপস্থাই করিয়া ছিলে, যে হেতু কেশবের চরণস্পর্শে তোমার উৎসব হইয়াছে, কেন না, লোমাবলীদারা রোমাঞ্চিত হইয়া শোভা পাইতেছ। ক্রিজ্ঞাসা করি ভোমার এই উৎসব কি সম্প্রতি চরণস্পর্শে উৎপন্ন দ্বধা পূর্বাবিধি ত্রিষিক্রমের পদে আক্রমণ হেতু হই-বাছে ! কিলা তাহারাও পূর্বে বরাহমূর্ত্তির আলিঙ্গনে জ্মিয়াছে॥

উৎসাহ নিমিক্ত রোমাঞ্চ যথা॥

শৃঙ্গং কেলিরণারস্তে রণয়ত্যঘমদিনে।
শ্রীদাম্মো যোদ্ধ কামদা রেমে রোমাঞ্চিত্রং বপুঃ ॥
ভয়াদ্যথা ॥
বিশ্বরূপংরমন্ত্তাকৃতিং
প্রেক্ষ্য তত্ত্র পুরুষোভ্তমং পুরঃ।
ভ্যক্ত্রেঃ সপদি শুষ্যদাননঃ
শিশ্রিয়ে বিকটকন্টকাং ভনুং ॥ ১৯ ॥
ভ্যথাস্বরভেদঃ ॥
বিষাদ্বিস্ময়ামর্ষ ভীহর্ষত্যাদিসন্তবং।
বৈস্বর্যাং স্বরভেদঃ স্যাদেষ গদ্যদিকাদিকৃৎ ॥ ২০ ॥

বৈশ্বর্যামিতি শ্বরভেদস্য পর্য্যায়ান্তরং। এবমন্যত্রাপি ॥ ২০ ॥

ক্রীড়াযুদ্ধ আরম্ভকালে অঘমর্দ্ধন শ্রীকৃঞ্চের শৃঙ্গধনি শ্রবণ করিথা যুদ্ধাকাজ্ফ। শ্রীদামের দেহ রোমাঞ্চিত হইয়া শোভমান হইয়াছিল ॥

### ভয়হেতু যোগাঞ্চ যথা ॥

সম্মুথে বিশ্বরূপধারি অন্ত্তাকার পুরুষে।তম **শ্রীকৃত্তকে** সন্দর্শন করিয়া শুক্ষবদন অর্জ্জ্ন তৎক্ষাৎ শরীরমধ্যে বিপরীত রোমাঞ্চ ধারণ করিয়াছিলেন ॥ ১৯॥

#### অথ সরভেদ॥

বিষাদ, বিশায়, ক্রোধ, আনন্দ ও ভয়াদি **হইছে ব্র**ভেদ হয়। গদগদ বাক্যকে স্বরভেদ কহে॥২০॥ ভত্র বিযাদাদ্যথা।।
ব্রেজরাজ্ঞ রথাৎ পুরো হারং
স্বথমিত। দ্ধিবশীর্গ জ্বয়া।
ভূিথমেণদৃশা গুরাবাপি
প্রথয়ন্তা। কিল রোদিতা স্থী ॥ ২১॥
বিস্মাধাদ্যথা শ্রীদশমে॥
শরৈরথাখার, বিমৃজ্য লোচনে
মুকুশমুদ্বীক্ষ্য বিন্ত্রকন্ধরঃ।
কুভাঞ্জালঃ প্রশ্রহান্ স্মাহিতঃ

স্বয়মিত্যস্তম্য নিবর্ত্তরেতি বাকাশেযঃ॥ ২১॥ ইলয়া ল্লা। ঐনত স্তত্বানিত্যর্থঃ॥ ২২॥

তন্মণ্যে বিশাদহেতু স্বর্গভেদ যথা।।
তি হৈ বছর।জি যশোদে। শগ্নে রথ হইতে হরিকে আপনিই নির্ত্ত করুন, এই বাক্য শেষ না হইতে হইতে মুগান্দা
শ্রীরাধা গুরুদমক্ষে লজ্জাবিস্ভিন্যক্ষিক স্বায় স্থাকে রোদন
ক্রবাইয়াছিলেন। ২১॥

বিস্ময়তেতু স্বৰভেদ যথা॥ শ্রীদশনে ১৩ অধায়ে ৫৯ শ্লোকে॥

ত্রক্ষা প্রণামানস্তর ধীরে ধারে গাত্রোত্থান করিয়া লোচনত্বয় মর্দন করিতে করিতে নতকষ্কর হইয়া ভগণানের প্রতি
কৃষ্টিনিক্ষেপ করিলেন এবং বিনীত ও বদ্ধাঞ্চলি হইয়া সমাহিত
চিত্তে কাঁপিতে কাঁপিতে গদাদ বচনে অর্থাৎ অস্ফুটস্বরে

# দক্ষিণ। ৩র লহরী। ] ভক্তিরসায়ভসিকুংশ

সবেপথুর্গদাদ দৈশতেলরা ॥
অমর্ষাদ্যথা তত্তিব ॥
প্রেষ্ঠং খিয়েতরমিব প্রতিভাষ্যাণং
কু ২ং তদর্থবিনি গ্রিতিস প্রকাম ।
নেত্রে বিমূজ্য ক্রদিটোপছতে স্মা কিঞ্চিৎ
সংরম্ভগদাদগিরোহক্রবতানুরক্তাঃ॥ ২২ ॥
হর্ষাদ্যথা তত্ত্বের ॥
হৃষ্যক্তমুক্তহোভাবপরিক্রিগাল্পলোচনঃ।

সাস্তাহক বঃ॥ ২০॥

আকু:ফার চরণপ্রান্তে স্তব আরম্ভ করিতে লাগিলেন। অমর্ষহেতু স্বরভেদ যগা।।

**এদিশমে ২৯ অন্যায়ে ২৭ শ্লোকে যথা ॥** 

গোপীগণ শ্রীক্ষারে প্রতি গতান্ত অনুরক্ত, তাঁহাণ নিমিত্ত সমস্ত কামনা পরিত্যাগ করিয়াছিলেন অতএব পার রোদনদারা উপহত স্ব স্বায়ন মার্জন কার্যা ঈষং কোপাণেশ হেতু গলাদ্বাক্যে প্রিয়তম শ্রীকৃষ্ণ, যি ন অপ্রিয়ের মত কণা ক হৈতে ছিলেন, তাঁহার প্রতি অনুরক্ত চিত্তে বাক্য প্রায়োগ করিছে লাগিলেন্ ॥ ২২ ॥

হর্ষহেতু স্বর্গেদ যথা।। শ্রীদশ্যে ৩৯ অণ্যায়ে ৪৮ গ্লোকে।।

জন্মধ্যে এইরূপ নিরীক্ণ কার্থা অফ্র জাতত্তে প্রীক্ত ইইলেন তাঁহার গাত্র পুশকে পরিপূর্ণ ইইল, ভাবে সার শরাক গিরা গদগদ্যান্তোয়ীৎ সন্ত্রমালস্বর সাত্তঃ
প্রথম্য মুর্দ্ধু বিহিতঃ কৃতাঞ্জলিপুটঃ শনৈঃ ॥ ২৩ ॥
ভাতের্যথা ॥
ত্বয়ার্পিতং বিতর বেণুমিতি প্রমাদা
ক্রম্থা মদীরিত্রমূদীর্ণ-বিবর্ণভাবঃ।
তুর্গং বন্ধুব গুরুগদগদরুদ্ধ কঠঃ
পত্রী মুকুদ্দ তদনেন সহারিতোহস্তি ॥

উদীর্ণেতি। নিষ্ঠায়াং ক্রৈয়াদিক-ঋ গভাবিত্যদ্য দীর্ঘদ্য রূপং। পত্রী পূর্ব্ববস্তরামা শ্রীক্লফদেৰকবিশেবং। হারিতঃ স্বানবধানেন নাশিতোহস্তীত্যর্থঃ ॥ ২৪॥

ও লোচন আদ্র ইইতে লাগিল। অতএব আমাদের শ্রীকৃষ্টই এতদ্রণ পর্মেশ্বর, ইংগ জানিয়া পর্ম-ভক্তি-সহকারে মস্তক-দ্বারা প্রণাম করিলেন। পরে সন্তুগ অবলম্বন পূর্বক কৃত। প্রলিপুটে ধারে ধারে গদগদবচনে স্তব করিতে লাগিলেন ॥২০॥

# ভগতে সুস্ব ভেদ যথা।

শ্রীকৃষ্ণের কোন সগা শ্রীকৃষ্ণকে কহিলেন স্থে! আমি তোমার পত্রীনাম। ভূতাকে বলিলাম, অহে তোমাকে যে বেণু অর্পণ করিয়াছি তাহা প্রভার্পণ কর, আমার এই কথা শ্রবণে পত্রীনামা স্থানীয় ভূত্য প্রমাদ।স্থিত হইয়া বিবর্ণভাব লাভ করিল এবং তৎক্ষণাৎ তাহার কণ্ঠরোধ হওয়াতে বাক্য গদাদ হইয়া নির্গত হইতে লাগিল, অতএব হে মুকুন্দ! পত্রীর অনবধানতা শ্রেষ্ক ভোমার বেণু হারিত ইইয়াছে ॥ অথ নেপথুঃ॥
বিত্রাসামর্ষ হিনিবে পথুগাত লোল্যক্ত ॥ ২৪॥
অত্র নিত্র দেন যথা॥
শঙ্কাচ্ দুলাধকাদ্বিক্রমং
প্রেক্ষ্য বিস্তৃতভূজং জিম্মক্ষয়া।
হা ব্রংজন্তনয়েতি কাদিনা
কম্পদমধন্ত রাধিকং ॥ ২৫॥
অমর্বেণ যথা॥
ক্ষাধিক্ষেপ-জাতেন ব্যাকুলো নকুলামুজঃ।
চকম্পে দ্রাগমর্বেণ ভূকম্পে গিরিরাড়িব॥
শঙ্ক্তিয়ত পদ্যে বিস্তৃতভূজমিত্যেব পাঠঃ॥ ২৫॥
ক্ষেত্রত পদ্যে ভূকম্পেনেব ভূধর ইতি বা পাঠঃ॥ ২৫॥
ক্ষেত্রত পদ্যে ভূকম্পেনেব ভূধর ইতি বা পাঠঃ॥ ২৬॥

অথ (বপথুঃ॥

বিত্রাদ, ক্রোদ ও হর্ষাদিদারা হৈ গাত্রের চাঞ্চল্য হয়, ত হার নাম বেপথু অর্থাৎ কম্প ॥ ২০॥

তন্মধ্যে বিত্তাসহেতু কম্প যথা॥

উৎকট পরাক্রমশালা শশুচূড় ধারণেচ্ছায় হস্ত প্রসারণ করিলে, শ্রীরাধা হা ত্রক্ষেত্রনয়! এইনাত্র বলিগা শতিশয় কম্পিতাক্ষা হইলেন॥ ২৫॥

কোধহেতু কম্প যথা

কৃষ্ণনিন্দা প্রবণে ব্যাকুলচিত নকুলামুদ্ধ সহদেব ক্রোধে অধীর হইয়া, ভূমিকম্পে গিরিরাজ যেমন কম্পিত হয়, তাঁহার ন্যায় কম্পিত হইতে লাগিলেন॥

হর্ষণ যথা।
বিহসসি কথং হতাশে, পশ্য ভণেনাল কম্পনাবি বি চঞ্চন্প্সনিলভং, নিবারর জলপতেন্তনাং।
অথ বৈবর্ণ।
বিষায়রে সভীতাদেবৈ বিশ্বিং বর্ণবিক্রিয়া।
ভাবিজ্বের মালিনকোশ্য লিয়াঃ পরিকীর্তিঃ॥ ২৬॥।
তত্র বিষাদাদ্র্যা।
শেকীকৃত:গিলজনং বিরহেন ত্রাধুনা।

খেতীক্তেতি। নোফৰশ্লা নাবালণীয়ে পোত নীপৰ জনবৰ্ণনে। খেতাঃ পুমাংদো গতদৰ্কজ্ঃথাশ্চকুন্ৰিঃ পাপক লং নৱাণানিতি। নদিত খেত্ৰীপপতেী চিতঃ শুকে ধৰ্মময়ে নি। পাৱলন্থেত লং বাতীভোলাদশপদ্যে টীকালাং

### হ্বহৈতু কম্প যথা॥

হে স্থি ! এই হতাশ ব্যক্তিকে কেন পরিচাস করিছেছ, দেথ অদ্য আমি ভয়ে কম্পনানা হইতেছি, স্নীপস্থ এই জুংখদ চঞ্চল ব্রজেন্দ্রনাকে নিবারণ কর ॥

### कथ देववर्ग ॥

বিষাদ, ক্রোধ ও ভাগাদি হইতে বর্ণ বিকারের নাম বৈবর্ণ। ভাবজ্ঞ ব্যক্তিসকল কছেন, ইংাতে মলিনতা ও কুশতাদি হইখা থাকে॥

তন্মধ্যে বিষদিহৈতু বৈবৰ্ণ্য যথা।। হে কৃষ্ণ ! এক্ষণে ভোমার বিরহে গোকুলবাদি জন গোকুণং কৃষ্ণদেবর্ষেঃ শেতদ্বীপজ্ঞাং দুধে॥ ২৭॥
রোষাদ্যথা ॥
কংশশক্রমভিযুঞ্জতঃ পুরা
িনীক্ষ্য, কংসসহজাকুলায়ুধান্।
শ্রীকল্যা স্থিতি শ্রাক্রষ্ণতঃ
প্রোলাদ্দ্রিভ্যান্তঃ ব্রোলাক্রিভ্যান্তঃ
ভীতের্যথা ॥
রক্ষিতের্গু জ্বনুলো বক্রার্থা

শ্বেততাং গুদ্ধরপতামিত্যকুসাংলে। খেতশাল্পা গুদ্ধমন্ত্রের ব্যাথ্যেরং। তদা তৃ শ্বেষকাব্যমেবেদং জেলং॥ ২৭॥

অভিযুঞ্জতঃ যুদ্ধার্থনিভিমুখেনে নিলিতঃ কংবসহজান্ কক্ষ ন্যাধোদীম্ পঞে-ত্যত্তিসোতি পঠিভ্যক্তঃ ॥ ২৮॥

কালিমা কর্ত্ত। বলবিপে।বিজ্ঞদ্য মুখেছবল্ল,ছবল্লন্দি উপিতাং ভীতিং উচি--

সকল খেতবর্গ হওয়াতে দেবর্ষি নারদের গোকুলকে খেতথাপ বলিয়া ভ্রম ২ইজে লাগিল॥২৭ ॥

রোমহেতু বৈবর্ণ্য যথা॥

পুননারীগণ কহিলেন স্থি হে, দেখ দেখ, কংসশক্র শ্রীকৃষ্ণের সহিত যুদ্ধার্থ সমাগত অস্ত্রধারি কংসসহোদর দিগকে সম্মুখে অবলোকন করিয়া কৈনিধভরে কল্দেবের বদন্চন্দ্র উদ্য়শীল চন্দ্রের ন্যায় অরুণবর্ণ হইয়া শোভা পাইতে লাগিল। ৮॥ ভয়হেতু বৈষ্ণ্য যথা॥

বকশক্র শ্রীকৃষ্ণ অবলীলাক্রমে গিরিরাজ গোবর্দ্ধন উত্তো-

পর্বতং বরমুদ্দ্য লীল্যা।
কালিমা বলরিপোমু থৈ
ভবন্ধ চিণামানদি ভীতিমুখিতাং ॥
বিষাদে শ্বেতিমা প্রোক্তো ধোদর্যাং কালিমা কচিং।
রোবে হু রক্তিমা ভীত্যাং কালমা কাপি শুক্রিমা॥ ২৯ ॥
রক্তিমা লক্ষ্যতে বাক্তো হর্ষোদ্রেকেহ'প কুত্রচিং।
অত্যাদার্শ্বতিক ছেন নৈরাস্থোদাক্ষতিঃ কৃতা॥ ৩০ ॥
ভাষাক্র্য

হর্ষ রে।যবিষাদাদ্যৈকত্রত নেত্রে জলোদগম:।

বান্ সূচিতবান্॥ ২৯॥

ष्मग्र बक्तिमः॥ ७०॥

নেত্রে জলোপাম: ইত্যয়ভেনেতি শেষ:। সান্তিকানামন্তর্হিব্কার-

লন করিয়া ব্রজনগুল এক। করিলে ইন্দ্রের মুখে কালিমা উৎ-পন্ন হইয়া ক্দীয় মানসিক ভয় প্রকাশ করিতে লাগিল॥

বিষাদনিমিত্ত বৈবর্ণা উপস্থিত হইলে শ্বেত, ধুসর ও কোন স্থানে কালিমা প্রকাশ পায়। আর রোষ হেতু বৈবর্ণ্যে-রুক্তিমা এবং ভয়তেতু বৈবর্ণো কালমা ও কোথাও শুক্লিমা প্রকাশ পাইয়া থাকে ॥ ২৯॥

শতিশয় হর্ষবশতঃ বৈষণ্য উপস্থিত হইলে কোন স্থানে স্পাফ্টরূপে রক্তবর্ণ প্রকাশ পায়, ইহা সর্বত্র হয় না বলিয়া-ইহার উদাহরণ দেওয়া গেল না॥ ৩০॥

#### অথ অভ্যে 🛚

हर्व, त्कांध ও विवानानिषाता विना श्रवरक्त त्नत्व स्य

হর্ষজেহশ্রুণি শীতত্বমেক্ষ্যং রোযাদিসম্ভবে।
সার্বিত্র নয়নক্ষোভ-রাগদংমার্জনাদয়ঃ ॥ ৩১ ॥
তত্ত্র হর্ষেণ যথা ॥

কোবিন্দপেক্ষণাক্ষেহণি বাষ্পপুরাভিবর্ষিণং।
উচ্চেরনিন্দদানন্দমর্বিন্দবিলোচনাঃ ॥ ৩২ ॥

রোষেণ যথা হ্রিবংশে ॥
ভশ্যাঃ হুস্রাব্বেভাগং বারি প্রণয়কোপ্রকং।

রূপত্বাৎ। এবমন্যত্রাপি ক্তেরং। নাসিকাশ্রবোহপ্যদ্যৈবাঙ্গবিশেষো ক্তেরং॥ ৩১॥ আনন্দ্রন্য বাষ্পপূরাভিবর্ষিত্তমেব নিন্দাত্তেন বিবক্ষিতং নতু শ্বরূপং। স্বিশেষণ-বিধিনিবেধৌ বিশেষণমুপ্সংক্রামত ইতি ন্যায়াৎ॥ ৩২॥

তদ্যা: শ্রীসত্যভামায়া: তত্র শোভাংশ এব দৃষ্টাস্ত: নতু শৈত্যাংশে॥ ০০॥

জলোকাম হয় তাহার নাম অশ্রু। হর্ষজনিত অশ্রুতে শীতগত্ব এবং ক্রেণাদিজনিত অশ্রুতে উষণ্ড সম্ভব হয়, কিন্তু সর্ব্ব প্রকার অশ্রুত্বে নয়নের ক্ষোভ অর্থাৎ চাঞ্চন্য, রক্তিমা এবং সম্মার্জনানি ঘটিয়া থাকে ॥ ৩১ ॥

তন্মধ্যে হর্ষনিমিত্ত অঞ্জ যথা॥

পদ্মাক্ষী রুক্ষিণী গোবিন্দ দর্শন নিবারক অশ্রুড সমূহ বর্ষণ-কারি আনন্দকে অভিশব্ধ রূপে নিন্দা করিয়াছিশেন॥ ৩২॥

রোষহেতু সঞ্ যথা॥

হরিবংশে॥

সত্যভাষার পদ্মপলাশ সদৃশ লোচনদ্বয় হ**ইতে বেখন নীহার** বিন্দু পতিত হয় তাহার আয় প্রণয়কোপ জনিত অঞ্জ পতিত কুশেশয়পলাশাভ্যামবশ্যায়জলং যথা ॥ ৩৩ ॥
যথা বা ॥
ভীমদা চেদীশবধং বিধিৎসোরেজেইশ্রুবিআবিরুষোপরক্তং ।
উদ্যম্মুথং বারিকণাবকীর্ণং
শাদ্ধাতিষা গ্রন্তামবেন্দ্বিস্থং ॥ ৩৪ ॥
বিষাদেন যথা শ্রীদশমে ॥
পদা হুজাতেন নথারুণশ্রিয়া
ভূবং লিখন্তাশ্রুভিরঞ্জনাসিতৈঃ ।

ভীমস্য মুথং রেজে উদ্যাদিন্দৃবিশ্বমিব। বিশ্বপদেন পূর্বন্ধং বোধ্যতে। পাঠা-স্তরাণি নেষ্টানি॥ ৩৪॥

পদা স্থাতেনেত্র কক্ষিণীতি শেষ:॥ ৩৫॥

### इंडेर्ड नांशिन॥ ००॥

#### যথাৰা ॥

শিশুপানকে মারিতে ইচ্ছুক ছইয়া ভীমসেনের জোধ-বিপন্ন মুথ, অঞ্জ-বারিবর্ষণ করিয়া জলকণব্যাপ্ত সন্ধ্যাকালীন পূর্ণচন্দ্রের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল॥ ৩৪॥

বিষাদহৈতু অঞ্চ যথা ॥

শ্রীদশ্যে ৬০ অধ্যায়ে ২৩ প্লোকে ॥

শ্রীকৃষ্ণের ব্যাক্য শ্রবণ করিয়া রুক্মিণী নথরূপ অরুণবর্ণ শোভাবিশিষ্ট হুকোমল পদম্বারা ভূমি খনন করত অঞ্জন সহ-কারে কৃষ্ণবর্ণ অঞ্জনারা কৃষ্ণাক্ত স্তনম্বাকে অভিবেক আসিঞ্চী কুরুমর্রাবিতোঁ স্তনে।
তন্থাবধামুখ্যভিচুংখরুদ্ধবাক্ ॥ ৩৫ ॥
অথ প্রলয়: ॥
প্রলয়: হুখচুংখাভ্যাং চেক্টা জ্ঞাননিরাক্তি: ।
তত্রাসুভাবা: কথিত। মহীনিপতনাদয়: ॥
তত্র স্থান্ধন যথা ॥
মিণন্ডং হরিমালোক্য লতাপুঞ্জাদতর্কিতং ।
জ্ঞপ্রিশৃন্যমনা রেজে নিশ্চনাধী ব্রজান্ধনা ॥ ৩৬ ॥
ছুংখেন যথা শ্রীদশমে ॥

काननित्राङ्गित्रज्ञानवरिनकनीनमनदः॥ ७७॥

করত তুংখেতে রুদ্ধকণ্ঠ হইয়া অধোমুখে অবস্থিতি করিতে। লাগিলেন॥ এ৫॥

অথ প্রলয় ॥

স্থ ছংখ নিবন্ধন চেষ্টা ও জ্ঞানশ্নো নাম প্রলয়, এই প্রলয়ে ভূমিনিপতনপ্রভৃতি অফুভারসকল প্রকাশ পাইয়। থাকে ॥

স্থত্তু প্রলয় যথ।॥

লভাপুঞ্জ হইতে হঠাৎ হরিকে মিলিত হইতে দেখিয়া অজাঈনা নিশ্চলাজী ও জ্ঞানশূন্য হইগা শোভা পাইতে লাগিলেন ॥ ৩৬ ॥

> ছু:খংক্তু প্রলয় যথ।॥ শ্রীদশ্যে ৩৯ অধ্যায়ে ১৪ শ্লোক ॥

অত্যাশ্চ তদমুধ্যান নির্ভাশেষর্ভয়ঃ।
নাভ্যকানধিমং লোকমাত্মলোকং গতা ইব ॥ ৩৭ ॥
সর্বে হি সন্ত্যুল্ছান্তাবা যদ্যুলি সান্ত্বিকাঃ।
তথাপ্যমীষাং সত্তিকমূলত্বাৎ সান্ত্বিকপ্রধা।
সন্ত্রুগ তারভ্যাং প্রাণতসুক্ষোভতারত্যাং স্যাৎ।
ভত এব তারত্যাং সর্বেষাং সান্ত্রিকানাং স্যাৎ।
ধুমায়িতান্তে জ্লিতা দীপ্তা উদ্দীপ্তসংক্রিতাঃ।
বৃদ্ধিং যথেভবং ষান্তঃ সান্ত্বিকাঃ স্থাণচতুর্বিধাঃ।

জন্যা: শ্রীহরেমূর্থুরা প্রস্থানে শোচন্তা: শ্রীগোপ্যা: তদমুধ্যানেতি নাভ্যজান-শ্লিজিংয়েন। নানা ভাবনা নিধিদ্ধা: আত্মলোকমাত্মজ্ঞপং স্থানিন্দ্রমাধি-মিতার্থ:॥ ৩৭॥

সর্বে থীতি। ভাব: অত্রান্তাবা:। সম্বেক মৃল্ডানিতি। সম্ভানস্মানিত্যক

হে রাজন্! অন্যান্য গোপীদিগের শীক্ষামুধ্যান বশতঃ
বক্ষুরাদি ইন্দ্রগণের অশেষর্তি নিরুদ্ধ হইল অতএব মুক্তচ্যাক্ত দিগের ন্যায় ভাঁহারা নিজ ২ দেহও জানিতে সক্ষম হইলেন না ॥ ৩৭॥

যদিচ সত্বমূল প্রযুক্ত সম্বায় ভাব সাত্ত্বিক তথাপি স্তম্ভাদি সকল সত্তমূল নিবন্ধন সাত্ত্বিক বলিয়া প্রসিদ্ধ । সত্ত্বের তার-তম্য প্রযুক্ত প্রাণ ও দেহে কোভের তারতম্য হয়, এই নিমিত্ত সকল সাইত্বিক ভাবেরই তারতম্য আছে। এই সাত্ত্বিক উত্ত-নোভর রাদ্ধ প্রাপ্ত হইয়া ধ্মায়িত জ্লাভ, দীপ্ত ও উদ্দীপ্ত এই চারিপ্রকায়হর। উক্র বৃদ্ধি বহুকাল ঝাপিছ, বহু দক্ষ দা ভূনিকালব্যাপিন্ধং বছবন্ধব্যাপিতাপি চা সক্রপণ তথোৎকর্ম ইতি বৃদ্ধি স্ত্রধা ভবেং ॥ ৩৮ ॥ ভত্র নেত্রাস্থ্রবিস্বর্য্যবর্জ্জানামের মুক্সতে । বছরের াপি শামীষাং তয়োঃ কাপি বিশিষ্টতা ॥ ৩৯ ॥ তত্রাজ্ঞাণাং দুর্গোচ্ছ ন্যকারিস্থমণদাত্তা । তথা তারাভিগৈচিত্রী বৈলক্ষণ্যবিধানিতা । বৈস্বর্য্যস্য তু ভিন্নতে কোঠাব্যাক্লতাদ্যঃ ॥ ৪০ ॥ ভিন্নতং স্থানবিজ্ঞাঃ কোঠ্যং স্যাৎ সন্মক্ততা ।

ব্যাথ্যাতমন্তি অমীষাং স্তম্ভাদীনাং সাত্মিকনামা প্রথা সাক্ষিকপ্রথা । ০৮ ।।

নেত্রেত্যত্রামীষিং স্তম্ভাদীনাং তম্মেন ত্রাষ্ট্রবর্ষ্যমোঃ । ০৯ ।।

অতিবৈচিত্রা অপি বৈলক্ষণ্যমতিশবং ॥ ৪ • ॥

স্থানবিত্রংশ ইতি যতো ঘর্ষরাদিশবাং স্থারিতি ভাবং । সমুক্ষ্ঠত্তে বঙ্

ব্যাপিত্ব এবং স্বরূরুপের উৎকর্ষ এই তিনপ্রকার হয়। ৩৮ । অঞ্চ ও স্বরভেদ বর্জন করিয়া স্তম্ভাহি ভাব সকলের সর্বাঙ্গ ব্যাপিত্ব আছে, কিন্তু অঞ্চ ওস্বরভেদের আরপ্ত কোন বিশিষ্টতা দেখা যায়। ৩৯।

ভদাধ্যে অশ্রু সকলের নেত্র স্ফাত চাকরণ শুক্লবর্ণনা, ভর্মা ভারার বিভিন্নতা, এই বৈল্ফণ্য বিধায়িত। আর স্বর্জেদের ভিন্নত প্রযুক্ত কঠরোধ এবং ব্যাকুলভা এই বিশেষ প্রভেদাধ্য ভিন্নতের অর্থ স্তানবিজ্ঞা অর্থাৎ কঠ ইইকে মর্বরাদি ৰাকুলত্ব নানোচনীগুপ্তনিলুপ্ত ।।
প্রায়ে ধুমায়িতা এব রুক্ষান্তিষ্ঠ বি সান্তিকাঃ।
সিন্ধান্ত প্রাথশঃ সর্বে চতুর্দ্ধিব ভবস্তামা।
মহোৎস্বাদিয়তেরু সন্দোষ্ঠীতাওবাদিয়।
বলস্তাল্লাসনঃ কালি তেরুক্ষা অপি কস্যচিৎ ॥ ৪১॥
স্বান্দ্দমৎকার্হেভুর্ভাবো ববো রতিঃ।
এতে ধি তদ্বি । ভাবার চমশ্বকারিত:প্রয়াঃ॥ ৪২॥

শক্ষে নোদতে ইতি ভাব:। নানোচ্চেতি প্রতিগবং তত্তরানাপ্রকারতেতি ভাষ: ৪৪১॥

ৰত্মাৎ সৰ্বানন্দচমৎকারহেতুঃ তত্মাদ্রতিরেব বরো ভাব ইত্যর্থঃ। পদ্যা-তেনাত্যুপাদেরতাশ্রমা ইত্যেব পাঠঃ॥ ৪২ ॥

শব্দ নির্গত হওয়। কোঠা শব্দের অর্থ সন্নক্ষতা অর্থাৎ কণ্ঠ হইতে শব্দ প্রকাশ না হওয়। তথা ব্যাকুল তের অর্থ নানা উচ্চনীচ অর্থাৎ কলেকণে নানা প্রকারতা, আর গুপু ও বিলুপ্ততা, এই সকল কল্কসাদ্বিক প্রান্ত ধ্যায়ত হইয়। অবস্থিতি করে। সিম্বভাব সকলও প্রান্ত চারিপ্রকার হইয়া থাকে। সংহাৎসবাদির অনুষ্ঠানে, সৎসঙ্গ প্রবং নৃত্যাদিতে উল্লান বিশিষ্ট হইয়া কোন সময়ে কোন ব্যক্তির কলভাব সকল ক্ষেত্ত হয় ॥ ৪১ ॥

রতি সর্বাদন চসৎকারের হেড়, এ কারণ রতিকেই শ্রেষ্ঠ ভাব বলা যায়, অতএব রুক্ষাদি ভাবদকল রতি ব্যতিরেকে চসৎকারিদের আশ্রেম হইতে পারে নাম ৪২ ॥ তত্ত্ব ধুমায়িতাঃ॥

অবিতীয়া অমী ভাবা অথবা দ'ৰতীয়কাঃ।

ঈষষ্যক্তা অপচ্ছোতুং শক্যা ধুমায়িতা মতাঃ॥

যথা॥

আকর্ণির্মহরামঘবৈ রিকীর্তিং

পক্ষা প্রমিশ্রবিরলা শ্রুহ পুরোধাঃ।

যক্ষা দরোচ্ছনিতলোমকণোল্মীষ্থ-

অমী ইতি। বছবচনমত্ত প্রতিব্যক্তি প্রাধান্যস্য বিৰক্ষা। তচ্চেতরেজরযোৰদ্দদৈয়কশেষাৎ। তেনহুনৌ স্তভোহদিতীয়ং স্বিতীয়ো বাসৌ রোমাঞ্জোহদিতীয়ং স্বিতীয়ো বা কম্পো বাসৌ চাদ্বিতীয়োহথবা স্বিতীয় ইতি গম্যতে।
অমী আলায়ভামিতিবং। ততশ্চামীয়ু যং কশ্চিদদ্বিতীয়ং স্বিতীয়ো
বা ভবদ্বি তার্থং। অপক্ষোত্মিত্যপক্তেন রত্যাত্যদাসীনেন ভাবেন হোতুং
গোপয়িতুং শক্যা ইত্যর্থং। রত্যন্তরন্ধভাবেন তু সমৃত্তরতীনামিশি দৃশ্বতে
নাক্রম্ম দালদাপ্রমাৎকণ্ঠান্দেবকীসূতে। নির্যাত্যগারাজোভত্তমিতি, স্যাধান্ধবি-

### তন্মধ্যে ধুমাগ্নিত যথা॥

যে ভাব স্বরং বা দ্বিতীয়ভাবের সহিত মুক্ত হইয়া অভ্যন্ত প্রকাশ পায় এবং যাহা গোপন করিতে পারা **যার, ভাহার** নাম ধুমায়িত ॥

#### मथा ।

যাগকতা পুরোহিত গর্গাচর্বায় অংশক্র আকুকের অর্থ-নাশিনী কীর্ত্তি ভাষণ করিয়া চক্ষ্মর পক্ষাত্র বিশ্বলব্দ্রভানিতা, গণ্ড পুলকিত ও ঘর্মায়িতনাদিকা বিশিষ্ট মুধার্মিক্ট্রারণ প্রসিদ্ধনাদি কম্বাহ মুখা aবিনদং॥ ৪৩॥ অব স্থানতাঃ॥

ভে ৰো ত্ৰয়ো বা যুগপদ্যান্তঃ স্ব গ্ৰুকটাং দশাং। শক্যাঃ কৃচেছুণ নিহ্নোতুং জ্বিতা ইতি কীৰ্তিতাঃ ॥ ৪৪॥ যধা॥

ন গুঞ্জামাদাতুং খভবতি করঃ কম্পত্রলো দুশৌ সাত্রে পিঞ্জং ন পরিচিমুতঃ সম্বরকৃতি।

#### ব্ৰিষ ইত্যত্ৰ। ৪৩॥

তে সাদ্বিকা ছো ত্রয়ো বা ভূতা॥ ৪৪ ॥

সম্বর্কতি বধাস্যাত্তণা ন গুঞ্জামাদাতুং প্রভবতীত্যাদিনা বিলম্বেন প্রভৰতি ইতি প্রাপ্তে.কম্পাদে: কচ্ছেন নিক্লোতুং শক্যম মায়াতং প্রার্থিত মপীতি পাঠআক্রাঃ ॥ ৪৫ ॥

### क्रिक्रोफ्रिलन ॥ ८०॥

### ৰথ জলিত।

তুই তিন সাত্ত্বিক ভাব যদি এক সময়ে উদিত হয় এবং তাহা যদি কফেইছেটে, শ্লোপন করিতে পারা যায়, তবেই তাহাকে স্থানত ক্রেড ॥ ৪৪ ॥

#### যথা ॥

কোন বয়স্ত গোপ, জ্রীকৃষ্ণকে কহিলেন সথে! বন হইতে ভোমান বংশীধানি কর্ণব্যের শেষদীমায় প্রবেশ করিলে আমার হস্ত কম্পিত হইয়া শীভ্র গুঞ্জা গ্রহণ করিতে পারে নাই, চক্ষু-মূর স্থান্ত্রপূচ্ছ চিনিতে পারিল না, এবং ক্ষমাবুর স্তর্কো পদ গপি ন গস্তং তব সথে বনাদ্বংশীধ্বানে পরিসরমবাপ্তে গ্রাবণয়োঃ॥ যথাবা ॥

নিক্লদ্ধং বাষ্পান্তঃ কথমপি ময়। গদগদ'গরে।
ছি য়া সদ্যো গৃঢ়াঃ দখি বিঘটিতো বেপথুরপি।
গিরিদ্রোণ্যাং বেণো ধ্বনতি নিপুণৈরিঙ্গিতমধ্যে
তথাপ্যহাঞ্চক্রে মম মন্স রাগঃ পরিক্রনঃ॥
অথ দীপ্তাঃ॥
•

প্রোঢ়াং ত্রিচভুর। ব্যক্তিং পঞ্চ বা যুগপদগভাঃ। সম্বরীভূমশক্যান্তে দীপ্তা ধীরৈরুদাহভাঃ॥

উরুষয় স্তস্ত হুইয়া একপদও গমন করিতে সক্ষম হুইল না, অতএব হে বস্ধো! তোমার বংশীর কি আশ্চর্য মহীয়সী শক্তি॥

#### যথাবা ॥

হে স্থি! গিরিগহ্বরে (সংস্কৃত্রন্যান্তক স্বরূপ) বেশুর শব্দ হইলে যদিচ আমি বাষ্প্রারি রোধ এবং লক্ষা নিবন্ধন গদাদবাক্য সকলকে গোণন করিলাম, তথাপি গাত্তকম্প নিবারণ করিতে পারি নাই, এ কারণ নিপুণ পরিজ্ঞন সকল আমার মনস্থিত ক্ষানুহাগ বিতর্ক করির।ছিলেন।

### অথ দীপ্ত॥

র্দ্ধিপ্রাপ্ত তিন চারি অথবা পাঁচ সাত্ত্বিক ভাব বাদি এক কালীন উদিত হয় এবং তাহা যদি সম্বরণ করিতে না পারা: যায় তাহা হইলে তাহাকে দীপ্ত বলে॥ चर्था ॥

ন শক্তিমুপনীণনে চিরমধন্ত কম্পাকুলো
ন গদগদনিকদ্ধনাক্ প্রভূত্তপল্লোকনে।
ক্ষমোহজনে ন বীক্ষণে বিগলদক্রপুরঃ পুরো
মধুদ্বিধি পরিক্ষুন্ত্যবশমুর্তিরাসীম্মুনিঃ ॥ ৪৫।
যথাবা ॥
কিমুম্মীলভ্যক্রে কুস্মঞ্বজো গঞ্জদি মুধা
সরোমাঞ্চে কম্পে হিমমনিল্মাক্রোশ্দি কুতঃ
কিমুক্তস্ত্রে বা বনবিহ্নণং দ্বিক্ষি স্থি তে

কিমিতি কথমিতার্থ:। কিং বিশ্রামাদি কৃষ্ণভোগিতবনে ভাগ্ডীরভূমীত্যাদিষু দর্শনাং। রাধে ইতি দধোধ্য তন্নাইন্নব তদ্যাঃ কৃষ্ণভাবত্ব্যঞ্জনরা তদ্ধেতুক-

#### যথা॥

নারদম্নি সম্মুথস্থ শ্রীকৃষ্ণকে সম্পর্ণন করিয়া এরপ বিধশাক্ত হুইয়া
পাড়িলেগ, বাক্য পদাদ হওয়াতে স্ততিপাঠ করিতে প্রণারিলেন
না, চক্ষুঃ অঞ্চপূর্ণ হওয়াতে দর্শনে অক্ষম হুইলেন ॥ ৪৫ ॥

#### অথবা ॥

হে স্থি! চক্ষুতে অঞ্চ উদ্ধ হওয়াতে র্থা পুষ্পর ক্ষে গঞ্জনা দিতেছ, গাত্র রোমাঞ্চিত হওরাতে শীতল বায়ুর প্রতি ক্ষেম আফ্রোশ করিতেছ, উরুস্তম্ভ প্রযুক্ত বনবিহারের প্রতি ক্ষেম বেষ করিতেছ, অতএব হে রাধে! স্বরভেদ তোমার নিরাবাধা রাধে বদতি মদনাণিং স্বর্গ্তিদা ॥
অণোদ্দীপ্ত'ঃ ॥
একদা ব্যক্তিমাপনাঃ পঞ্চাঃ সর্ব্য এব বা।
আরুঢ়া পরমোৎকর্ষমুদ্দীপ্তা ইতি কীর্তিতাঃ ॥ রূ৬ ॥
যথা ॥
অদ্য স্বিদ্যুতি বেপতে পুল্কিভিনিস্পন্দভামশ্রকৈধতি কাকুভিয়াকুলং বিলপতি মায়ত্যনাল্লাম্বভিঃ।
স্তিম্য গ্রেম্ব্রির্হ্ণ মুহুতি মুহুর্গোষ্ঠাণিবাদী জনঃ ॥

ম নাধিজং ক্টীকৃতং। নিবাবাধা জ্লেন নান্যথা কর্ত্তু শক্যা ॥ ৪৬ ॥ অত্বকন্তব্যক্তিতনে ত্রেষ্ ভিরত্তাৎ স্তবক্বদাচর্ডিভিমাতি তদংশেন পত্তা

মদন বেদন। প্রানাশ করিয়া দিতেছে॥ অথ উদ্দীপ্তা॥

এক দম য় যদি পাঁচ ছয় অথব। সম্দায় ভাব উদি ছ হইয়া পাম উৎ কর্ষ প্রাপ্ত হয়, তবেই তাগদিগকে উনীপ্ত বলি।। কীর্ত্তন করা যায়॥ ৪৬॥

#### যথা॥

হে পীতামর! অদা তোমার বিরহে গোক্লবাসী জনসকল ঘর্মযুক্ত, কম্পিত ও পুলকি গ অঙ্গদারা স্তম্ভ ধারণ,
আকুল হইয়া চাটুবাক দোরা বিলাপ, অনল্প উন্মতাধারা মান
এবং নেত্রামূধারা আদ্রীভূত হইয়া সম্প্রতি অভিশব মোধপ্রাপ্ত্
হইতেছে॥

### ভক্তিরসায়তসিক্ষা। দিকিণ। ৩য় লহরী ।

উদ্দীপ্তা এব সূদ্দীপ্তা মহাভাবে ভরস্ত্যমী।
সর্ব্বেএব পরাং কে।টিং সাদ্ধিকা যত্র বিজ্ঞ ॥ ৪৭ ॥
কিঞ্চ ॥
অথাত্র সাদ্ধিকাভাসা বিলিখান্তে চতুর্বিশাঃ।
রত্যাকালভবাত্তেতু সন্ধাভাসভবাত্তথা।
নিঃসন্ধাশ্চ প্রতীপাশ্চ যথাপুর্বমমী বরাং।

আৰ্দ্রীভবতি উড্ডামরংষ্থাস্যাত্তথা ॥ ৪৭ ॥

সাধিকাভাস ইতি সাধিকবদাভাসন্তে প্রতীয়ন্তে নতু বস্তুতস্তপ। ভবস্তীতি শব্দেনৈর লক্ষণমায়াতমিতীখং তদ্ভেদানের গণরতি চতুর্বিধা ইতি। রত্যে প্রতিবিধারে ছায়ারে চ সন্তি রত্যাভাসভবত্বং। মূদ্বিশ্বস্থাদ্যাভাসমাত্রাক্রান্তিভিত্বে সাদ্ধাভাসভবত্বং। মূদ্বিশ্বস্থাদ্যাভাসস্যাপি অন্তরাম্পর্শে বহিরপ্যম্পর্শে নিঃসন্বত্বং। প্রতীপাস্ত বিরোধিভাবভবত্বাৎ বেষ্যা এব ইতি ভাবঃ॥ ৪৮॥

সাত্ত্বিক ভাবসকল মহা ভাবের পরম উৎকর্ষ ধারণ করে এ কারণ উদ্দাপ্ত ভাবসকলই মহাভাবে সৃদ্দাপ্ত হয় ॥ ৪৭ ॥ আমারও বলি।

এইস্থানে চারিটা সাত্ত্বিভাগ নিখিত হইতেছে যথা— রুণ্যাভাসভব, সন্থাভাসভব, তথা নিঃসন্ত এবং প্রহীপ, কিন্তু এই সকল ভাব পূর্দা পূর্বি শ্রেষ্ঠ ॥

তাৎপর্যা। র'তর প্রতিবিদ্ধ হেতু রত্যাভাসভব, হর্ষ বিস্মাণদর রাদিধারা চিত্ত আক্রান্ত হইলে সন্ধালাবভব, হর্ষ বিস্মানাদর আভাসেরও অন্তর বাহ্য স্পার্শ না করায় নিঃসন্ত্ব, এবং বিরোধি ভাবজনিত বলিয়া প্রতীপ দেষের বিষয়ীভূত হইয়া শাকে॥ एखाम्राः ॥

মুমক্ষুপ্রমূখেরাদা রত্যাভাসাৎ পুরোদিতাং ॥ ৪৮॥ যথা॥

বারাণদীনিবাদী কশ্চিদরং গাহরন্ হরেশ্চরিতং। যতিগোষ্ঠ্যামুৎপুলকঃ দিঞ্তি গণ্ডধামীমেটিআঃ॥ ৪৯॥ অধ সন্তুভ সভবাঃ॥

মুদ্বিস্মান্দের।ভাসঃ প্রোদ্যন্ জা গ্রা শ্লেই কি । স্বাভাস ইতি প্রোক্তঃ স্বাভ্সভ্বাস্ততঃ ॥

বারাণদীতি। তত্র তন্নিবাদাদিনা মুমুক্স্বং গনাতে ॥ ৪৯ ॥
ভাবাক্রান্তচিত্তদাৈর সম্বত্তরা সঙ্কেতিতহানুদ্বিস্মরাদেরাভাদো যশ্মিংস্তচিত্তমিতি বক্তবো মুদাদ্যাভাদ এব স্বাভাদ ইত্যুক্তিস্তৎকারণভাতিশ্যবিক্ষয়া
আনুমু তিমিতিবৎ ॥ ৫ • ॥

তন্মধ্যে আদা অর্থাৎ রত্যাভাসভব যথা।।
পূর্ব্বোক্ত রত্যাভাস েতু মুমুকু এভৃতিতে রত্যাভাস হইয়া থাকে॥ ১৮॥

#### যথা ॥

বারাণদীনিবাসী কোন ব্যক্তি সম্প্রাসিদিগের সভায় হরি স্রিত্র গান করিতে করিতে পুশকাকুল কণেবর হইয়া অঞ্চ জল দারা গণ্ডদ্বয় সেচন করিতে লাগিলেন ॥ ৪৯ ॥

### সত্তাভাসভব যথা।

জাতিনিবন্ধন প্লথহনয়ে উদিত হর্ষ বিস্মাণির আভাসকে সম্বাভাস প্রযুক্ত সন্ধাভাস কহে॥

## ভক্তিরসামৃতসি্জঃ। [ দক্ষিণ। এর নহরী।

যথা।

জরম্মীমাংসকস্যাপি শৃণ্বতঃ কৃষ্ণবিজ্ঞাং।
হৃতীয়মানমনসো বভূবে পুলুকং বপুঃ॥ ৫০॥
যথা বা॥

মুকুন্দচরিতায় কপ্রসর্গর্ষণতে মণা
কথং কথনচাতুরী সধুবিম' গুরুণ বিতাং।

মূচুর্ত্তম দেখিনে। বিষয়িনোহপি যদাননা
দিশন্য বিজয়ঃ প্রভোদ ধ ত বাষ্পধারামনী॥ ৫১॥
অথ নিঃসত্তাঃ॥
নিস্গপিচ্ছিলস্বাতে ভদভ্যাসপরেহপি চ।

মুকুন্দেতি। অমী ইতি সদ্য এবাগতত্বং ব্যশ্বয়তি ॥ ৫১ ॥ উপরি শ্লথং অন্তঃ কঠিনং পিচ্ছিলং তদ্ধপরান্ন কুত্রাপি স্থিরং। শ্লথত্বং ত্বন্ধক্ষি-

#### गर्था ॥

কৃষ্ণলীলা আবণ করিতে করিতে (অরণজ্ঞ) প্রাচীন মীমাংসকেরও চিত্ত আনন্দিত হয়, এ নিমিত্ত তাঁহার বপুঃ পুনকে পরিপূর্ণ হইয়াছিল॥ ৫০॥

### যথাবা #

ে মুকুন্দ! লীলামুত বর্ষণকারি আপনার বাক্চাভুর্য মাধুর্যেরে মহান্ গণিমা কিরুপে বর্ণন করিব, অনধিকারি বিষয়ী লোক সকলও আমার মুথ হইতে আপনার লীলাশ্রবণ করিয়া চকু বাষ্প্রধারা ধারণ করিতেছে॥ ৫১॥

অথ নিঃসত্ত্ব ॥

স্বভাবৰশতঃ বা অভ্যাসবশতঃ পিচ্ছিল অৰ্থাৎ উপরি

সন্থাভাসং বিনাপি স্থাঃ কাপ্যশ্রুপুলকাদয়ঃ ॥ ৫২ ॥
যথা ॥
নিশময়তো হ'রচরিতং
নহি স্থত্ংগাদয়োস্য হৃদি ভাবাঃ।
অনভিনিবেশাজ্জাতাঃ
কথ্যস্ত্রপ্যাস্থা কং ॥ ৫৩ ॥

রপ্যকঠিনং তজ্ঞপদ্বাদ্যত্র ক্ত্রাপি সংসজ্জ্ঞ্মানমিতি ভেদং। তত্র সতি নিস-র্গেতি ব্যাথ্যায়তে। যং কোহপি নিসর্গপিচ্ছিলস্বান্তে। ভবতি সান্ধিকোদন্বার্থং ধা রণা বিশেষেণা ভ্যাসপুরোহপি ভবতি তন্মিন্ স্বাভাসং বিনাপ্য**স্পুলকাদম্যে**। ভবস্তি। বহিরস্তঃ কঠিনেষু তদভ্যাদেনাপি ন ভবস্তীত্যেবার্থং। সন্ধান্তাসং বিনাপি ইত্যস্য নিসর্গেত্যনেনার্থ্যে ধারণাবিশেষস্যাপেক্ষ্যস্য বিশেষণ্যাপাতার পৃথক্ ঘটক ইতি অত্রবাস্যোদাহরণং একমেবাক্রিয়াতেতি নিঃসন্ধানামেষাং সন্ধিকাভাস গণনাত্ত্তেরু সান্ধিকবনা ভাসন্তেই ইত্যপেক্ষন্ম। ৫২॥

নিশময়ত ইতি অনভিনিবেশাৎ পিচ্ছিণছারছি ভাবা জাতা: অনভিনিবেশন্ত ময়াস্য মুহুরেবাহুভূতোহস্তীতি ভাব:। তথা কথ্যস্ত্রমন্ত্রান্ত্রস্কের তথ-থ্যভাবিপরস্থাদেবেতি ব্যঞ্জিতং ॥ ৫০ ॥

কোমল, অন্তরে কঠিন, এমত হৃদয়ে সন্থাভাস ব্যতিকেক কোথাও অশ্রু পুলকাদি দেখা যায়॥ ৫২॥

যথা ॥

অনভিনিবেশ বশতঃ হরিচরিত্র প্রবণকারি ব্যক্তির হৃদরে স্থ জুঃখাদি ভাবদকল উৎপন হয় নাই, তবে কি প্রকারে ইহার নয়নে অবিরল জলধারা পাতত হইতেছে, বোধ করি অভ্যাসবশতই ঘটিয়াছে। ৫৩ ॥ প্রকৃত্যা শিপিনং যেষাং মনঃ পিচছলমেব বা । .
তেষেব সাত্তিকালয় প্রায়ঃ সংসদি কায়তে ॥ ৫৪ ॥
অথ প্রতীপাঃ ॥
হিতাদনাস্য কৃষ্ণস্য প্রতীপাঃ কুন্তুয়াদিভিঃ।
তত্ত্র কুদা যথা হরিবংশে ॥
ভাস্য প্রস্কৃরিতোষ্ঠস্য রাজাশ্যতিট্স্য চ।
বক্তাং কংস্প্য রোধেণ রক্তসূর্যায়তে তদা ॥

সংস্কোত্রত্যধন্ধ প্রায় ইতি শিথিলস্যান্যতাপি সম্ভবাং শিথিলং শ্লথং সংস্কৃতি মহোৎস্বকার্ত্তনসভারিং॥ ৫৪॥

কৃষ্ণস্য হিতাদন্যতা বৈরি প্রভৃতিষুকু ধ্যাদিভিহে ভূভিঃ সাধিকাভাদাঃ প্রভাপাঃ স্যুরিত্যর্থঃ। মানানন ইতি মুক্তিপ্রিয়ামিত্যাদিনা তন্মান্তীতন্তামেব শর্মান্তিবানিতি ধ্বনিতং। মানস্য : গোবিন্দমিত্যাদি পাঠান্তরপদ্যং ত্যক্তং ৫৫॥

- স্বভাবতঃ যাহাদের মন শিথিল অথবা পাচছল, মহোৎসব কীর্ত্তন সভায় প্রায় সেই সকল ব্যক্তিতে সন্থাভাস উৎপন্ন হয়। ৫৪ ॥

### অথ প্রতীপ ॥

শ্রীকৃষ্ণের শত্রু প্রস্তৃতিতে ক্রোধ ভয়াদি দ্বারা যে সাত্ত্বিকা ভাস হইয়া থাকে ভাহাকে প্রভীপ বলে n

> তম্মধ্যে ক্রোধ হইতে প্রতীপ যথা ॥ হরিবংশে॥

রক্তাধর এবং প্রক্ষূরিতোষ্ঠ কংসের মুখ তৎ কালীয় ক্রোধে রক্তবর্ণ সূর্বেরে নাায় প্রকাশ পাইতে লামিল ॥ ভাষেন যথা।

মানাননঃ ক্ষমবেক্যে রক্তে

সিবেদ সলস্থিভালগুক্তি।

মুক্তিপ্রিয়াং স্ফর্তু পুরো মিলস্ত্যামন্ত্যাদরাৎ পাদ্যমিগজহার॥

যথাবা॥

শ্রাচ্যমানে পুরতঃ পুরাণে
নিশম্য কংসস্য ভয়াভিরেকং।
পরিপ্রবান্তঃকরণঃ সমস্তাৎ
কশ্চিৎ পরিপ্রানম্থস্তদাসীৎ॥
নাস্ত্যর্থঃ সাত্ত্বিকাতাসকথনে কোহপি যদ্যপি।
সাত্ত্বিকানাং বিবেকায় দিক্ তথাপি প্রদর্শিতা। ৫৫॥

### **खग्रदश्रू श्राठी** भ यथा ॥

রঙ্গছলে জ্রীক্ষণকে সন্দর্শন করিয়া মানবদন মল্লের ললাট-রূপ শুক্তি অর্থাৎ ঝিসুক স্বেদজল ধারণ করিয়া অগ্রবর্তিনী মৃক্তিসম্পত্তিকে যেন অত্যাদর পূর্বক পাদ্য প্রদান করিল।

যথাবা॥

সম্মুখে পুরাণপাঠ হইভেছিল তাহাতে কংসের ভয়াতি-শ্যা শ্রেষণ করিয়া কোন ব্যক্তির স্বস্তঃকরণ চঞ্চল হওয়ার বদন মলিন হইয়া উঠিল।

যদিচ সান্ধিকাভাস কথনে কোন প্রনোজন ন।ই তথাপি সান্ধিক সকলের পরিজ্ঞানার্যউদাহরণ প্রদর্শিত হইল। ৫৫॥ ॥ \* ॥ ইতি গ্রীভক্তিরসাম্ত্রসিম্বে। দকিপ্রিছারে দুক্তি-রসসামাক্তনিরপণে সাজিকশহরী জ্ঞীয়া ॥ \* ॥

অথ ব্যক্তিচারিণঃ॥

অথোচ্যন্তে ত্রয়ন্ত্রিংশন্তারা যে ব্যক্তিচারিশঃ।
,বিশেগেণাভিমুখ্যেন চরন্তি স্থায়িনং প্রতি॥ ১॥
বাগঙ্গদত্বদূচ্যা যে জ্ঞেয়ান্তে ব্যক্তিচারিশঃ।
সঞ্চারয়ন্তি ভাবস্য গঙিং সঞ্চারিণোহ্পি তে॥ ২॥
উন্মক্তিন্তি নিমক্তন্তি স্থায়ন্ত্রবারিধা।

॥ • ইতি পঞ্চলহর্যাত্মকে দক্ষিণবিভাগে দান্ত্বিকলহরী তৃতীয়া ॥ ।
বাচা অঙ্গেন ক্রনেত্রাদিন। সংব্যান সংবাৎপদ্মেনাস্ক্ভাবেন স্চ্যা জ্ঞাপ্যাঃ ॥২॥
কুত্র কিংবং অমৃত্বারিধাবৃশ্বিদিতি পশ্চাদেব ধোন্ধনীয়ং ॥ ৩॥

॥ # ॥ ইতি শ্রীরামনারায়ণ বিদ্যারজুক্ত বাধ্যায় ভক্তি-রসামৃতসিন্ধুর দক্ষিণবিভাগে সাত্ত্বিকশহরী ॥ # ॥ ৩ ॥ # ॥ অথ ব্যভিচারী ॥

অনস্তর ত্রয়ন্ত্রিংশদ্যভিচারি ভাব, যাহা বিশেষতঃ প্রাধান্ত রূপে স্থায়িভাবে বিচরণ করে, তৎমমুদায় উল্লিখিত হই-তেছে॥ ১॥

বাক্য জ্রানেত্রাদি অস এবং সত্ত্বোৎপন্ন ভাবদারা যে সকল ভাব প্রকাশিত হয়, তাহারাই ব্যভিচারী। এই ব্যভিচারী সকল ভাবের গতি সঞ্চার করে বুবলিয়া ইহাদিগকে সঞ্চারি ভাবাঞ বলা যায়॥ ২॥

ব্যভিচারী ভাবসকল স্থায়িভাব রূপ সমৃতদাগনে নগ্ন-ভ্ট্রা

উর্মিবদ্শব্ধরহেন্তানং যাতি উদ্রাপতাঞ্চ তে ।
নির্বেদোহধ বিষাদো দৈতাং প্লানিশ্রমোঁ চ মর্বার্থনি ।
শঙ্কাজাসাবেগা উন্মাদাপশ্বতী তথা ব্যাধিঃ ।
মোহো মৃতিরালস্যং জাঙাং জীড়াবহিশা চ ।
শুতিরথ বিত্কচিন্তামতিপ্পত্যো হর্ষ উৎস্কৃত্বক ।
উগ্রাম্বাস্থাশ্চাপল্যকৈব নিজা চ ।
শুতির্বাধ ইতীমে ভাবা ব্যভিচাবিশং সমাধ্যা জাই ॥ ৩০ ॥
তত্র নির্বেদঃ ॥
মহার্তিবিপ্রযোগের্বান বিবেকাদিকল্লিতং ।
শ্বামানন্ত্রেণাত্র নির্বেদ ইতি কথ্যতে ।

সন্বিবেকে হিত্রাকর্ত্তবাসা কৃতত্বে কর্ত্তবাসা চাকৃতত্বে শোচনময়ো জেয়:॥ ৪॥

তরঙ্গের আরু স্থায়িভাগকে বর্দ্ধিত করে, একারণ ইছারা স্থায়ি-ভাবের স্থ্যাপ ভবিও প্রাপ্ত হইয়া থাকে॥

নির্দেদ, বিষাদ, দৈত্য, প্লানি, শ্রম, মদ,গর্ম, শঙ্কা, ত্রাস, আবেগ, উন্ম দ, অপস্থাতি, ব্যাধি, মোহ, মৃত্যু, আলস্তা, জাড্যু, ত্রীড়া, অবহিত্যা, অর্থাৎ অকারণগোপন, স্মৃতি, বিতর্ক, চিন্তা, মতি, প্রতি, হর্ম, উৎস্কতা, উগ্রতা, অমর্য্য, চপলতা, নিদ্রা, স্কৃত্তি ও বোধ এই ত্রয়স্ত্রিংশৎ ভাবকে ব্যভিচারী বলে॥ গা

क्यार्था निर्द्यम ग्रथा॥

মহাত্রংখ, বিপ্রযোগ অর্থাৎ বিচ্ছেদ, ঈর্যা, সম্বিবেকাদি ক্ষিত অর্থাৎ অকর্ত্তন্যের করণ এবং কর্ত্তব্যের অকরণ নিমিত্ত শোচনা এবং নিজ অপসান, এই সকলেতে নির্বেদ হইন্না ধাকে ॥

च्या विश्वास्टिववर्गारेयमात्रियमिकाव्यः ॥ क তত্ত্ব মহাৰ্ত্ত্যা যথা॥ হস্ত দেহহতকৈঃ কিমমীভিঃ भानिरेजिरिकनभून करेनगई। धिंह का निवन एम विषयहरू। সং কুটুমিনি হঠাজভুহবাম॥ বিপ্রযোগেন যথা॥ অসক্ষাত্মাধ্বমা ধুরীণা-মপুষ্পিতে নীরসভাং প্রয়াতে। রুক্দ।বনে শীর্য্যতি হা কুতোহদো

न हेि विषय्भि वह्वानः अन्यतमार्वादारकि शानिनित्रवनारमञ्ज्यतेक-: বিভাত তু বহুজন্মতাপেক্ষা 🛭 ৫ ।

धारे निर्द्यत हिसा, चाक, देववर्ग, रेमना अवः मीर्च निया-সাদি হইয়া থাকে ॥ ৪ ॥

তশাধ্যে মহাছঃখ নিমি । নির্কেদ যথা।

তে গৃহকুটু স্থিনি যশোদে ! হায় ! আমাদের পুণ্যরহিত धारे एक एमराक भागन कतिता कि रहेरत ? आहेम आमता বিষাগ্নিযুক্ত কালিয়হুদে শীস্ত্র আত্মদেহকে আহুতি প্রদান করি॥

वित्र ह निर्द्यम यथा॥

মাধব মাধ্র্যের অপ্রাপ্তি হেতু রক্ষাণন পুষ্পাহীন বিশীর্ণ হইরা নীরসহ প্রাপ্ত হউলে, হ.য়! কুষ্ণ কোধার এই বলিয়া

প্রাণিভ্যপুণ্যঃ স্থবলো বিনেকঃ ॥ ৫ ॥

যথাবা দানকেলিকে মুদ্যাং ॥

ভব্তু মাধবজন্ত্রমশূণ তোঃ
প্রবণয়োরলমপ্রবণিম ম ।

তমবিলোকরতোর বলোক নিঃ

দ্রথ বিলোকনয়োশ্চ কিলানযোঃ ॥ ৬ ॥

ঈর্ষায়া যথা হরি বংশে ॥

সত্যাদেবীবাকাং ॥

তেতাতব্যা যদি তাবং দা নারদেন তবাগ্রতঃ ।

ত্র্ভগোহয়ং জনস্তত্র কিমর্থমনু শন্তিঃ ॥

অপ্রবশিরিত্যাক্রোশেন॥ ৬॥ সা ক্রিনী। অরং মরকণ॥ ৭॥

পুণ্যরহিত স্থবলরূপ ভ্রমর তথা হইতে প্রস্থান করিল। ৫ ।
যথাবা দানকেলিকোমূদীতে

হে স্থি! মাণবের গুণানুবাদ প্রবণ না করায় **আমার** কর্ণবারে ব্ধিরতাই ভাল এবং উাহাকে দর্শন করিতে না পাও-যায় আমার লোচনবয়ের অস্কন্থই ভাল॥ ৬॥

> ঈর্ষ্যাহেতু নির্বেদ যথা।। ছরিবংশে সভ্যভাষা দেবীর বাক্য যথা।।

হে কৃষ্ণ ! নারদ যদি তোমার অত্যে ক্রিণীর প্রংশ সা ক্রিতে লালিগেন, তাহা হইলে মাদৃশ এই ছুর্ভাগ্য অনের ক্থায় প্রয়োজন কি ? ॥ সন্ধিবেকেন যথা প্রীদশনে ।
মনৈষ কালোহজিত নিক্ষলো গতো
রাজ্যপ্রিয়োমদ্ধ শদস্য ভূপতে: ।
মত্যাত্মবুদ্ধেঃ স্থতদারকো শভূঘাসজ্জনা সং ছর ন্ত চিন্তা । ৭ ॥
অনগলনপি প্রোচ্য নিকেদং প্রথমং মুনিঃ।
মেনেহমুং স্থ নিংং শান্ত ইতি জল্পন্ত কেচন ॥
অথ বিষাদঃ॥

কেচনেতি। স্বমতে তু শাস্তরসে শাস্তাখ্যায়া রতেরেব স্থায়িভাবত্বাৎ। অত্র নির্বেদস্য প্রথমোক্তিন্ত মুখনবচনামুবাদরপত্মাদিতি ভাবঃ॥৮॥

সদিবেক অর্থাৎ অকর্তব্যের করণ এবং কর্তব্যে**র অকরণ** নিমিও নির্বেদ যথা॥

**बी मगरम ७> व्यक्षारम २० (क्षारक** 

হে অজিত! কেবল অন্য লোক সংসারে পি তিত হইতেছে এমত নহে, আমিও এইরপ হইতেছি, দেহেতে আমার আত্ম-বুদ্ধি আছে, অতএব তুরন্ত-চিন্তা-ছারা পুত্র কলত্র কোষ,ভূমি প্রভৃতিতে রাজ্যশ্রী-ছারা উমদ্ধমদ হইয়াছি, আমারও কাল বিফলে গত হইল ॥ ৭ ॥

ভরতমুনি প্রথমে নির্বেদকে অমঙ্গল বলিয়াই কীর্ত্তন করিয়াছেন, কিন্তু কোন কোন পণ্ডিত ইহাকে শাস্তরসে শাস্তর্যাধ্যা রতির স্থায়িভাব বলিয়া কীর্ত্তন কবিয়াছেন॥

অথ বিষাদ ॥

ইন্টানবাপ্তিপ্রারককার্য্যাদিদ্ধিবিপদ্ধিতঃ।
অপরাধাদিহ পিস্তাদ্মুতাপে। বিষপ্তা ॥
অত্যোপায়দহা নামুদ্ধি শিচন্তা চ রোদনং।
বিলাপশাদ্ধৈ নির্ম্থনোয়াদ্যোহিপি চ ॥ ৮ ॥
তত্রেফানবা প্তেতা যগা ॥
জরাং যাতা মূর্ত্তির্মন বিবশ তাং বাগপি গতা
মনোর্ত্তিশ্চেরং স্মৃতিবিধুর আপদ্ধতিমগাং।
অযধ্বংদিন্ দূরে বদতু ভবদালোকনশনী
মনা হন্ত প্রাপ্তোন ভদনকচেরপ্রবদরঃ ॥
প্রারককার্য্যাদিদ্ধের্য্য ॥

বিধুরতা রহিতত্বং ॥ ৯ ॥

ইফবস্তুর ভাগাপ্তি, প্রারক্ষকার্য্যের অসিদ্ধি, বিপ**ত্তি এবং** অপরাণাদি হইতে যে গ্রু হাপ জন্মে তাহার নাম বিষাদ ॥

এই বিষাদে উপার ও সহাধ্যের অনুসন্ধান, চিন্তা, রোজন, বিলাপ, শ্বাস, বৈবর্ণ্য ও মুখলোষাদি হইয়া থাকে॥ ৮॥

তন্মধ্যে ইফ্টবস্তুর অ্পাপ্তিনমিত বিধাদ যথা।

হে অঘনাশন জ্রীকৃষ্ণ ! আমার শরীর করা গ্রন্থ, শাক্ত ও আমা এবং মনোরতিত স্মৃতিরহিত হইয়াছে, আপনার দেশন রূপ শনীও দুরে বাস করিতেছেন, হার ! এ যাবং আমি পাশ-নার ভদ্ধনক্ষতিরও অবসর প্রাপ্ত হইলাম না ঃ

প্রারক্তার্য্যের অসিজিকে নির্কের यहा

# ভক্তিরসাহিত্সিদ্ধঃ। ধকিশ। চর্য পর্বরা

বথে ময়ান কেন্দ্রমানি কিশান্তানি
যদ্দেন তৈবি রিচিতা নংমালিকা চ।
যাবস্কুল কলি হস্ত নিধী গতে, সা
হা তাবদেব তরসা বিররাম নিজা ॥ ৯॥
বিপত্তের্যথা ॥
কথমনায়ি পুরে ময়কা হত:
কথমসো ন নিগৃহ্ছ গৃহে ধৃত:।
অমুমহে। বত দান্তবিধৃন্তদো
বিধুন্নিতং নিধুমত্র বিধিৎসতি ॥ ১০॥
অপরাধাদ্যথা শ্রীদশ্মে ॥

কথমনারীতি জীত্রজেক্রবচনং ভচ্চ মঞ্চানামত্যুচ্চছেন দ্রেছপি দর্শনসম্ভ-বাং। বিধুরিতং ছ:খিতং বিধিৎসতি কর্জুমিচ্ছতি। হরিরিত্যাদি পাঠান্তরং দং ॥ > ॥

আদ্য আমি অপ্নযোগে পুপাচয়ন করত যত্ন-সহকারে বন-মালা রচনা করিয়া যেই মুকুল হুদয়ে সমর্পণ করিব, হা কন্ট। হঠাৎ সেই সময়েই আমার নিছে।ভঙ্গ হইল ॥ ৯ ॥

विश्विष्टिंड्जू वियान यथा ॥

শোপরাল নন্দ কহিলেন হায়,! কেন আমি পুজকে গৃহে অবরোধ করিটা রাখিলাম না কি কারণ সঙ্গে করিয়া মধুরায় লইখা আ'সলাম, এই কৃষ্ণচন্দ্রকে কুবলয়াপীড় হস্তিরূপ রাহ্ ক্লেশ দিতে ইচ্ছা করিতেছে॥ ১০॥

অপরাধহেতু বিবাদ যথা॥ জ্রীদশনে ১৪ অধ্যায়ে ৯ স্লোকে॥ পশ্যেশ মেহনার্য্যননন্ত আদ্যে
পরাত্মনি ত্বয়পে মাগ্নিমায়িনি।
মাথাং বিতত্যেক্তিত্মাত্মবৈত্নং
হুহং কিয়ামৈচ্ছমিবার্চিরগ্নো॥ ১১॥
যথাবা॥
স্থামন্তক্ষহং ভূত্বা গতো গোরাস্থানন্তকং।
করবৈ তরণীং কাংব ক্ষিপ্রো বৈতরণীমন্তু॥ ১২॥

অর্থাঃ স্কুজনস্তস্য ভাব আর্থাং অতস্তবিপরীতং দৌর্জন্যমনার্থাং। কিন্তং আল্লনস্তব বৈত্তবং বাহাল্পানিকিত্ং। অস্ত্রুং মঞ্মহিদ্যিত্যক্তো। নদেবঞ্চে-ভূহিকো দোষস্তত্তাহ দুনাহাল্মাং দুষ্টুং তত্তাপি মায়াং বিত্তা দুষ্টুং কিয়ান্ কো বরাকোহহমিতার্থঃ। কিয়বে দৃষ্টান্তঃ অগ্নৌ অর্চিরিবেতি॥ ১১॥ স্থানস্তক্ষরিত্তা। কাংবেতাত্ত্তু কিংবেতি পঠিঃ সভাঃ॥ ১২॥

ব্রন্ধা কহিলেন হে ঈশ! আমার দৌর্জন্য দেখুন, আপনি অনন্ত, আদ্যা, পরমাত্মা, মায়াবিদিগেরও মোহনকারী, জামি আপনার প্রতি স্বায় নায়া বিস্তার করিয়া আত্মের্থর্য নিরীক্ষণ করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলান। অহো! য়দ্রেপ অয়ি হইতে উত্থিত অয়িশিথা অয়ির প্রতি কোন কার্য্যকর হয় না, তাহার তায় আপনার প্রতি ঐরপ করিতে গিয়া আমি কিঞিংকর হয়য়াও উঠিতে পারি নাই॥১১॥

যথাবা ॥

স্থানাজক-মণি হরণ করিয়া ভয়ানক বমের মুখে পতিত হইলাম, এখন বৈতরণীতে সাকু কিপ্ত হইরা উদারার্থ কাহা-কেই তরণী করিব॥ ১২॥ অথ দৈন্যং ॥

তুঃগত্রাসাপরাধাদ্যৈরনোর্জিন্যস্ত দীনতা ॥

চাটুকুন্মান্দ্যমালিন্যচিন্তাঙ্গজড়িমাদিকৃৎ ॥

তত্র তুঃখেন যথা শ্রীদশ্যে ॥

চিরমিছ বুজিনার্ভস্তপ্যমানোহস্তাপৈরবিত্যধড়মিত্রো লক্ষশান্তিঃ কথঞিৎ ॥

শরণদ সমুপেতস্ত্রৎপদাক্তং পরাত্ম
র ভ্যুমুতত্যশোকং পাহি মাপর্মশি ॥ ১০ ॥

অনৌর্জিতানাম্মনাতিনিরুপ্টতামননং। চাটুস্তম্ময়ী যাক্রা। হৃদয়স্য মাশ্দ-মুপাটবং মালিনান্সাচ্চাং চিস্তা নানাভাবন। ॥ ১৩॥

### অথ দৈন্য ॥

তুঃপ ত্রাস ও অপরাধাদি হইতে যে দৌর্বল্য হয় তাহার নাম দৈল, এই দৈন্যে চাটু, সদয়ে ক্ষুগ্নতা, মলিন্তা, চিন্তা এবং অঙ্গের জড়ত। হয়॥

> তন্মধে। তু.খহেতু দৈন্য যথা॥ শ্রীদশ্যে ৫১ অধ্যায়ে ৩৯ শ্লোকে॥

মৃচুকুশ কহিলেন প্রভো! আমি কর্মফলে চিরকার প্রাড়িত আছি, আবার তাহারই বাসনায় সন্তপ্ত হইয়াছি তথাপি ছর রিপু (ছয় ইন্দ্রিয়) তৃক্ষাশূন্য হয় নাই, কথঞিং দৈববশতঃ শান্তিলাভ হওয়ায় আপনার পাদপদ্ম যাহা অশোক, ভাভয় ও অমৃত, তাহা প্রাপ্ত হইলাম। হে শরণদ! হে আজান্! হে ঈশ! আমি আপদে ব্যাপ্ত, আনাকে রক্ষা করুন॥ ১৩॥

ত্রাদেন যথা প্রথমে।
অভিন্তবভিমামীশ শরস্তপ্রায়সঃ প্রভা।
কাসং দহতু মাং নাথ মা মে গর্ভো নিপাত্যতাং॥ ১৪ ॥
অপবাদেন যথা শ্রীদযমে॥
অতঃ ক্ষমস্বাচুতে মে রজোভুনো
হজানতস্ত্রপৃথগীশ্যানিনঃ।

পরীক্ষিরাত! তং গর্ভস্থিতং শ্রীক্ষণদেবায়ামর্হিসক্তে মত্বা স্বস্তু তত্তাবোগাং মত্বা ভদ্রাকার্থং নিবেদয়তি অভিদ্রতীতি। তপুমগ্রিয়ুবিয়রং আয়সং লৌহশলাং যদা সং॥ ১৪॥

অজো জগংক র্ভাহ্মিতি মদেন গাঁচ ত্যোকপেণ অন্ধী ভূতনেত্রস্য অতম্বৎ পুগ্গীশ্যানিনঃ অন্যত্র প্রভূষন্যহেন বর্ত্তগানেহিপি এয়েহিনত্বকম্পাঃ কথং নাল

## ত্রাসহেতু দৈন্য যথা॥

প্রথমক্ষনে ৮ অধারে ৯ গ্রেকে॥

উত্তর। কহিলেন, হে প্রাভো! জগন্ত শল্যযুক্ত এই শর আমার অভিমুখে বেগে অংসিতেছে, হে নাথ! এ আমাকে যদৃজ্যাক্রমে দগ্ধ করুক তাহ'তে খেদ নাই, আমার গর্ভটী যেন নিপাত না করে॥ ১৪॥

অপরাধ তেতু দৈন্য যথা॥

শ্রীদশমে ১৭ অধ্যায়ে ১০ শ্লোকৈ॥

ব্রনা কণিলেন হে অচ্চ! আসি রজোগুণে উৎপন্ন হইয়াছি একারণ অজ্ঞ, সূত্রাং "অসি জগৎ কর্ত্ত।" এই ফো মন, সাহা প্রগাঢ় তিমির স্বরূপ, তাহাতে আধার নেত্রস্ক আজাবলেপান্ধতমোহস্ক চক্ষুষএয়েহতুক স্পোন্ধ মায় নাথ গানিতি ॥
আদ্যেশব্দেন লজ্জ্যাপি যথা তত্ত্বৈব ॥
মানয়ং ভোঃ কৃথাস্তান্ত নন্দগোপস্ত হং প্রিয়ং।
জানী মোহঙ্গ ব্রজশ্লাদাং দেহি বাসাংসি বেপিতাঃ॥ ১৫॥
অগ গ্লানিঃ॥

ওজঃ দোমাত্মকং দেহে বলপুষ্টিক্বদ্যা তু।

বান্দাস ইত্যেবং। নমু পর্মেটিনস্তব দাস্যং কিমর্থং ততাহ : মরির ভেগবতি নিমিত্তে মদেক প্রাপ্তার্থমিত্যর্থঃ॥ ১৫॥

ওজঃ শুক্রাদপুত্রকটো ধাতুবিশেষঃ॥ ১৬॥

আন্ধীভূত হইরাছে, অতএন তোন। ০ইতে পৃথক্ ঈশ্বর আছেন এইরূপ নানিতেছি। প্রভো! "এ ব্যাক্ত অহাত্র প্রভুত্বরূপে বর্তুমান হইলেও আমারই ভূত্য অতএব এ আমার অনুকম্প-নীয়" মনে ক্রিয়া আমাকে ক্ষমা ক্রুন॥

> আদিশব্দপ্রযুক্ত লজ্জানিনিত দৈন্য যথা। শ্রীদশ্মে ২২ অধাধ্যে ১০ শ্লোকে।

গোপীগণ কহিলেন সংহ কৃষ্ণ ! অতায় কর কেন, আমরা জানি তুমি নন্দগোপতনয়, ওজের শ্লাঘ্য এবং আমাদের প্রিয় আমাদের বস্ত্র সকল দাও, এই দেথ অ মরা কাঁপিতেছি॥১৫॥ অথ গ্লানি॥

দেহে বল ও পুষ্টিকারী, যাহার অধর্চাতৃ দেবতা চন্দ্র, সেই ওজঃ অর্থ শুক্র হইতে কোন উৎকৃষ্ট ধাতুবিশেষ, ক্ষয়াচ্ছুনাধির ত্যা দৈর্ম । নির্নি প্রাণ তা ।
কম্পাপজা ডাবৈবর্ণা-কাশ্য গ্রমণা দক্ষ ॥ ২৬ ॥
তত্র প্রমেণ বথা ॥
আঘূর্মিনি বলয়ে । চ্ছুল প্রকোষ্ঠা
গোষ্ঠা ন্তম পুনিপুকীর্ত্তিনি তিতে। ষ্ঠী
লোলাক্ষী দ ধিক লদং বিলোড়য়ন্ত্রী
কৃষ্ণার ক্রম হর নিঃসংগ্রম্ভুণ ॥

লোলাকীতি মধ্রিপুকীর্তিগানে খালপ্রতিত আশক্ষরা। নিঃসহা বিব্ শাকী॥ ১৭॥

শ্রম, মনঃপীড়া ও রত্যাদি ৰাগা শহার ক্ষা হইলে যে ছু-দি-লতা জন্মে ভাগার নাম গ্লানি ॥

ইহাতে কম্প, অপ্নের জড়তা, বৈবর্ণা, কুশতা এবং নয়নের চাপল্যাদি হইয়া থাকে॥ ১৬॥

তন্মধ্যে শ্রমংছ প্লানি যথ।॥

একদিবস শ্রীরাধা গোকুলমধ্যে শ্রীকৃশ্বের নিমিত্ত দর্ধি মহন করিনেছিলেন, তৎকালে তাঁহার হস্তম্থ মণিমর উল্লেখন বলয় সকল ঈষৎ ঘূর্ণিত ও মধুরিপুর নামকীর্ত্তনে ওষ্ঠত্বয় নর্ত্তন করিতেছিল, শ্রীরাধা মনে করিলেন আমি যে শ্রীকৃশের গুণ কার্ত্তন করিতেছি, পাছে শ্বশ্রুগা শুনিতে পান, এই আশ্বাস্থা দর্শিকলশ বিলোড়ন করিতে করিতে গ্রমভরে বিশাঙ্গা হইয়া পড়িলেন।

যথাবা।।
গুল্ফিকুং নিরুপাগং বনস্রজং
চারুপুস্পপটলং বিচিন্নতা।
ছুর্গমে ক্রমভবা ি ছুর্পল।
কাননে ক্ষণমভূন্যুগক্ষা। ॥ ১৭ ॥
সারসব্যভিকরেণ বিহীনা
ক্ষণজীবনতথোচ্চলহংসা।
মাধ্যাদ্য বির্ভেণ ত্রামা
শুধাতিয়া সর্গী শুচিনের॥ ১৮॥

সা তবাবে তারয়ঃ। ক্ষরসঃ স্থাং ব্যতিকর আসঙ্গঃ। পক্ষে সার্যানি পশি-বিশেষাঃ। পশানি চেত্যেকশেষাং। শুচিস্থ্যমাষাত্ইত্যমরঃ॥ ১৮॥

### यथावा ॥

একদিবদ মৃগাক্ষা জীরাধা শ্রীকৃষ্ণার্থ নিরুপন বনমালা প্রস্থান করিবার অভিলাষে তুর্গম কাননের মধ্যে গমন করিবা-ছিলেন, তথায় মনোহর' পুষ্পাদকল চয়ন করিতে করিতে অতিশয় ক্লান্তিপ্রযুক্ত তিনি ক্ষণকাল তুর্বল হইয়াছিলেন ॥১৭ মনঃপীড়া নিমিত প্রানি যথা॥

হে মাধব! গ্রীস্মকালে দারদ এবং হংসবিরহিত সরো-বর যেমন শুক্ষ হুয়, তাহার ন্যায় তোমার বিরহে অদ্য তোমার মাতা যশোদা শুক্ হইতেছেন ॥ ১৮ ॥ রত্যা যথা রসস্থাকরে ॥

অভিপ্রযক্ত্রেন রতান্ততান্তা

ক্ষেণ তল্পাদবরোপিতা সা।

আলম্য তল্যেদা, করং করেণ
জ্যোৎনা কুতানন্দমাপ ॥
অথ প্রান্থঃ ॥

অথবন্ত্যরতাত্যথঃ থেদঃ প্রান্নই তার্যাতে ।

নিল্রাম্বেদাগসম্দি গ্রাম্যাদিভাগনো ॥

অলিকং গৃহাগ্রকুটিমং॥ ১৯॥

## রতি নিমিত গ্লানি যথা॥ গুসস্থাক**রে**॥

রতিক্রীড়ার অবসানে শ্রীরাধা শয্যা হইতে যে **অবতরণ** করিবেন এমত শক্তি ছিল না, যত্নপু**র্বক শ্রীকৃষ্ণ শয্যা হইতে** অবভারিত করিলে শ্রীরাধা স্বীয় হস্তদ্বারা তণীয় হস্ত অব-লম্বন পূর্বক জ্যোৎস্নাশালি গৃথা**এবর্ত্তি কুটিম অর্থাৎ চাঁদনি** প্রাপ্ত হইয়াছিলেন॥

তাথ শ্ৰেম॥

পথ, নৃত্য ওরমণাদি জনিত খেদকে শ্রম বলে। এই শ্রম নিদ্রা, ঘর্ম্ম, অঙ্গগ্রহ, জুম্ভা অর্থাৎ হাঁই এবং দীর্ঘাসাদি ইইয়া থাকে॥

তনাধ্যে পথভ্ৰমণনিমিত্ত শ্ৰম যথা॥

ত্ত্রাধ্বনো যথা ॥
কৃতাগসং পুত্রসমুব্রজন্তী
ব্রজাজিরান্তর্জারাজ-রাস্কী
পরিস্থালংকুন্তলবন্ধনেয়ং
বভূব ঘর্মাাসুকর্মিন্ডান্ধী ॥
নৃত্যাদ্বেপা ॥
বিস্তীর্ব্যোভরলিতহারমঙ্গণারং
সঙ্গীতোমুপমুথরৈর তিঃ মুক্ত দুঃ।
অফিদ্যাদর চিত্রন্দ্রপূপর্বা
কুর্বাণস্তনভূবি তাওবানি রামঃ॥
রতাদ্বেখা॥

শীক্ষ অপরাধ করিয়া পালইতে লাগিলে ব্রজরাজ-রাজ্ঞী যশোদা পুর্বারে পশ্চাৎ পশ্চাৎ ব্রজাঙ্গণে ধারিকানা হইয়া-ছিলেন, তরিবেননে তাঁহার কেশবন্ধন ুঁআলুগায়িত এবং ভাঙ্গ সকল ঘর্মাসুসিক্ত হইয়াছিল ॥

नुडारर्जु लाग गणा ॥

শ্রীক্ষের পর্কোপলক্ষে সঙ্গতিকারি স্থল্পাণে পরিরত হইরা যমুনাতটে অঙ্গভঙ্গি সহকারে বলদেব তাণ্ড্র রচনা করিলেন, তৎকালীন তাঁহার কণ্ঠস্থ হার আন্দোলিত এবং শরীর হইতে ঘর্মবারি সকল আব হইতে লাগিল।

রতিহেতু শ্রম যথা॥ শ্রীদশমে ৩৩ অধ্যায়ে ২০ শ্লোকে॥

## এমজিবু। স্বৰ্থ লছরী। } ভঞ্জিরসায়্তসিকুই।

শ্রীদশমে॥

তাসং রতিবিহারেণ গ্রাস্তানাং বদনানি সঃ। প্রামৃত্রৎ করুণঃ প্রেল্পা শস্তমেনাক্স পাণিনা॥

व्यथं मनः ॥

নিবেকহন উল্ল'সো মদঃ স বিনিধো মতঃ।
মধুপানভবোহনক্স-নিক্রিয়াভনকোহপি চ।
গত্যক্ষবাণীস্থানন-দৃগ্ ঘূর্ণারক্তিমাদিক্ত্ ॥
তত্র মধুপানভবে। যথা ললিতমাধবে
বিলে ক মু বিলিল্যিনে মৃপ্পিপীলিকাঃ পীড়িডাঃ।
পিনিম্ম জগদস্তকং নমু হরিঃ ক্রুধং ধাস্যতি

হে রাজন্! গোপসকল র তিক্রীড়ার প্রান্ত হইলে শ্রীকৃষ্ণ কৃপাতিশয়ত। হেতু প্রেমপ্রকাশপূর্বক স্বীয় শুভ কর-তল দিয়া তাঁহাদের বদন মার্জন করিয়াছিলেন ॥

### অথ মদ ॥

জ্ঞাননাশক আহ্লাদের নাম মদ। এই মদ ছুই প্রকার হয়, মধুপামজনিত ও কন্দর্পাবকারাতিশরজনিত। ইহাতে গতি, অগও ব'কের স্থানন, নেত্রবুর্ণা এবং রক্তিমাদি হইয়া ধাকে ॥

> তশ্যংধ্য মধুপানজনিত, মদ, যথা— ললিতমাধ্বে ॥

মধুপানজনিত মদে মুক্তকেশ হলধর কহিলেন আরে নৃপ-পিপালিকাদকল! তোরা পীড়িত হইরা কোন্ গর্ত্তে লুকা-দ্বিত হইলি, অরে শচীর জীড়ায়ুগ ইন্দ্র ! ভূই কেদ হাস্ত শচীগৃহকুরক রে হসসি কিং ছমিত্যুমনরু দেতি মদড়স্বরশ্বলিতচ্ড্মত্রে হলী। ১৯ গ
যথাবা প্রাচাং॥
ভঙ্গ-ভ্রমতি মেদিনী লল-লক্ষতে চন্দ্রমাঃ।
ক্রি-কৃষ্ণ ব-বদা জ্রুডং হছ-ছমন্তি কিং বৃষ্ণয়ঃ।
মি-সীধু মুমুন্র্রু মে পপপ-পানপাত্রে স্থিতঃ
ক্রমন্ত মালত্রে সংখ্যা হসতি গায়তি।
উত্তমন্ত মালত্রেত মধ্যা হসতি গায়তি।
ক্রিষ্ঠঃ ক্রোণ্ডি স্বৈরং প্রক্ষং বক্তি রোদিতি।

ভন্ত-ভ্ৰমতীতি পদাং তথা গৃহএব স্থিতগা তত্ৰ কল্পনাৰ বচনং জ্বেন্থং । বাস্ত-বৰ্ষে শ্ৰীক্ষাদীনাং সকোচাপত্তে: । মদখালতমিত্যতং প্ৰাণিতীত্ৰাধাহিৰ্যাং।

করি: ছিদ্ আমি প্রকাণ চুর্ণ করিতে উদ্যত হইয়াছি, হরি ইহাতে ক্রোধ করিবেন না ॥ ১৯ ॥

ষথানা প্রাচীনদিগের মত।

হে ক্ষা। শীঘ্র বল পৃথিবা কি ঘূর্ণিত হইতেছে, চন্দ্র কি লক্ষিকার হইয়া পড়িলেন, অবে যতুগণ তোরা হাল্য করিতে-ছিল্ কেন ? আমার পানপাত্রস্থিত কদম্বপুপাঞ্চাত মদ্য পরি-ত্যাগ কল্প, এইরূপে নিজগৃহে থাকিয়া মদস্থবিতে আলাপকারী

हलशत (जाम'रावत कलागि विधान करून ॥

উত্তম ব্যক্তির মন্ততা জন্মিলে সে শ্রন করে, মধ্যম ব্যক্তি ক্ষান্ত পান করিয়া পাচেক এবং কনিষ্ঠ ব্যক্তি হৈছোক্ষমে নিষ্কারকাক্য প্রয়োগ ও রোজন করিয়া পাচক। জন্মণাদি মদোহ পি ত্রিবিধঃ গ্রোক্তস্তরুণাদি প্রভেদতঃ ।।

তত্র নাত্যপযোগিত্বাবিস্তার্যা নহি বর্ণিতঃ ॥।

অনঙ্গবিক্রিয়াফরজো যথা ॥

ব্রজপতিস্ত্তমতো বীক্ষা ভুগ্নীভবদ্ ক্র

ভূমিতি হদতি রোদিত্যাদাগন্তদ ধাতি।

প্রলপতি মুহুরালীং বন্দতে পশ্য রুদেদ

নামদনমদাদ্ধা হস্ত গান্ধবিক্রেয়ং ॥।

অথ গর্বঃ ॥।

সৌভাগারপতারুণা-গুণদর্বে।ভূমাপ্রায়েঃ ।।

ইউনাভাদিনা চান্যহেলনং গর্বা স্থাতে ॥ ২০ ॥

আকরণঞ্জে নাত্যাদৃতং করিবাতে মদোহপি ত্রিবিধ ইত্যাদিনা॥ ২০॥।

অবস্থ ভেদে মদ তিনপ্রকার হয়, এস্থলে অভিশয় উপযোগিতা। না থাকায় ভাহার বিস্থার করা হইল না॥

কন্দৰ্পনিক্ৰিগতিশ্ব জনিত মদাযথ। ॥

হে বৃদ্দে আশ্চর্য্য দর্শন কর, জ্রীরাধানের মদন্যদে অন্ধা হইয়া অগ্রে জগনিদনকে গবলোকন করন কথাত জামুগ কুটিল, কথান জ্ঞান হাসং, কথান রোদন, কথান বদন , আছোদন, কথান প্রণাপ এবং কখনা মৃত্যু তঃ স্থীদিগকে । বন্দনা ক্রিতেছেন ॥

### অবধ গৰ্শি॥

সোভাগং, রূপত রুণ্য গুণ, সংগ্রেডণ আত্রর এবং ইষ্ট--কন্তুলাভানিধাগা অন্যের অবস্তাকে গর্বক করে॥ ২০॥ ভত্ত সোল্লু ঠবচনং লীলাকু ভরদায়িতা।
আংকেকা নিহ্নবে: ২নগ্যে বচনা শ্রবণাদ এঃ ॥ '২১ ॥
ভত্ত সৌভগোন যথা বিল্লমগলে ॥
হস্তমুং কিপ. যানে শহদি বলাৎ কুন্ধ কিমভুতং।
হালয়, দযদি দির্যাদি পৌক্রয়ং গণয়ামি তে ॥
রূপ ভাক্রণ্যেন যথা॥
যাস্যাঃ অভাবমধুর ং পরিষে । মূর্ত্তিং

निक्रवः श्वाज्ञिश्रायाद्यप्तर्भावनः ॥ २১॥

হস্তমুৎক্ষিপ্যতি ন স্বার্থ: প্রধানং তাদক্ প্রেমন্ত্রদাত্ত হাইস্যেব যোগ্যত্তাং পর্বসামুপপত্তে:। স্কুতরাং তু তন্মবেদৃশপরিহাসস্সেতি কিন্তু ব্যক্ষাপ্রধান-মেব অর্থান্তরসংক্রমিত্রাং ৬ চে যদি মাধ্যদাসীন তাং গতোহসি তথাপি ছাং ন তাজামীতি ॥ ২২ ॥

এই গর্কে সে:ল্লুগ্রন, লালাবশতঃ উত্তর না দেওখা, নিজাঙ্গ দর্শন, স্বাভিপ্রায়গোপন এবং অন্যেব বাক্য না শুনা ইত্যাদি হইয়া থাকে ॥ ২১॥

> ওশ্বধো গৌভাগ।নিনিত গর্বব যথ।॥ বিল্লমঙ্গলে॥

হে ক্লন্ধ! বলপুথিক আমার হস্ত ছাড়াইয়া গমন ক'রলে ইং। আশ্চর্যা নহে, যদি আমার হৃদয় হইতে যাইতে পার জনেই ভোমার পৌক্ষ গণনা করিব॥

রূপতারুণ হেতু গর্ব যথা॥ ছে কৃষ্ণ : ঘাঁহার অভাবমধুরা মূর্ত্তির সেবা করি॥

## দক্ষিণ। ৪র্থ লহরী। । ভক্তিরসামৃত সৈকু:।

ধন্য। বভূব নিতরামপি ধৌবন দীঃ ।

সেয়ং স্থমি ব্রজনধূশ এভুক্ত মুক্তে
দৃক্নাত্যাচর হু কুফা কণং সগী মে ॥
গুল্ফস্ত গোনাঃ কুস্ত মৈঃ স্থান্ধিভিদ্যানি কামং ধু বানণীয়কৈঃ ।
নিদান তে কিন্তু সতৃষ্ণমগ্র ও ব্রজং ।
ক্রেণ্ডা মদীয়াং হু দি বিস্মিতঃ ব্রজং ।
সর্বোভিমান্ত্রেণ যথা শ্রীদশমে ॥
ভথা ন তে মাধ্ব ভাবকাঃ ক্চিদ্

তথেতি পূর্ব্বাণবিরোধে যথ। বং মূর্যস্তথাহং নেতিবং। यद्या। কিঞ্চেত্র্যর্থ:

যোগন-জ্রী নিতান্ত ধন্ত ছইয়াছে, সেই আমার সধী জ্রীরাধা,
শত শত গোপবধ্র সঙ্গ করিয়া পরিত্যাগ করিয়াছ যে তুমি,
তেথানার প্রতি কি প্রকারে দৃক্পাত করিবেন ॥
শুণহেতু গর্বব যথা॥

গোপগণ যথেক রূপে রুমণীয় স্থান্ধিকু স্মনারা মাণা গ্রন্থ করুক, কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ সভ্ । হইয়া বিস্মান প্রকাশপূর্বক অগ্রে মন্নিমিত মালা হৃদয়ে ধারণ করিয়া থ'কেন॥ ২২॥

সর্পোত্তমাশ্রা ২ইতে গর্ব্ব যথা॥

গ্ৰীদশমে ২ অধায়ে ২৭ শ্লোকে॥

ব্ৰহ্মা কহিলেন হে মাধৰ! যে সকল বাজি আপনকার ভক্ত, আপনাতেই সৌহৃদ বন্ধন ক্রিয়া পাকেন, তাঁছাদের জ্বপৃত্তি মার্গান্তি। বিদর্শ্তি নির্ভয়া বিনায়কানীকপ্রমুদ্ধস্থা প্রভোগ ২৩ ॥।
ইক্টনাভেনংযথা ॥
বন্দাবনেক্রাভনক্র পরমং প্রসাদ
মাসাদ্য নন্দি ংমতি মুক্তিকজাতোহালি।
আশংসতে মুনিমনোরথর তিয়্লগাং
বিকৃতিনাথকরু গামপি নাদ্য চেতঃ ॥
অথ শঙ্কা ॥
স্বীয় তৈবিগাৰ গাধানেঃ পরক্রেয্যাদি ১ন্তথা ।

चचाञ्चलन রিমান্ন পান্নস্তীতি তাৎপর্য্যার্থ: মার্গাদিপি পুনমূর্গ্যাৎ॥ ২০॥ . বৃন্দাবনেক্রেতি যথা মধুবাবান্নকলৈয়ের্ক্তিঃ॥ ২৪॥

অ একের ভায় এরপ তুর্গতি হয় না, ভাঁহারা আপনা কর্ত্ব অ ভরকিত হইয়া নির্ভয়ে বিল্লকারি নিকরের অধিপাত দি গর মস্তকোপরি ভ্রমণ করিয়া বেড়ান অর্থাৎ সকল প্রকার বিল্লকে জয়করিয়া ফেলেন ॥ ২৩॥

### ইউলাভহেতু গর্বব ষথা ॥

মধুরান্থ তস্তুবায় কহিল হে রুদাবনেন্দ্র: আপনার পরম অনুগ্র প্রাপ্ত হওয়াতে আমি সানন্দচিত্তে অতিশয় উদ্ধত হ ইয়াছি, মুনিগণের মনোরতিবারা অন্বেষণীয় বৈকুঠনাথের কালোর প্রতিবাধনা করিতেছে না॥

অথ শকা॥ ্বাঞ্চোৰ্না বিদ অপরাধ এবং পরের ক্রুরভাদি হইতে, স্থানিটোৎ প্রেক্ষণ থকু সা শক্ষে গু জি জী গু কে ॥

অত্রাস্থানিব পর্যানিক প্রেক্ষালী নতাক ওঃ ॥ ২৪ ॥

তত্র চোর্যানিক পা ॥

স্তর্গকং ডিন্ত চলস্থ কং জরন্

সদস্তমন্ত রু ৯ সন্ত শন্ত বা ।

তিরে ভিবিষ্টা হনিতঃ সমীক্ষতে ॥

যথাবা ॥

স্থান্ত কং হন্ত ব্যক্ত মহিং

হিন্ত চ্নু ব্যক্ত প্রাতঃ ।

হরিতঃ হরেঃ সকাশাৎ পুনহ রিতো দিশ: ॥ ২৫॥

যে আপনার অনিউ দর্শন তাংকে শক্ষা বলে। এই শক্ষার মুখশোষ, বৈবর্ণ, দিক্নিগ্রীক্ষা এবং লুকায়িত হওন প্রস্থৃতি হুইয়া থাকে॥ ২৪॥

তন্মধ্যে চৌর্যাহেতু শঙ্কা যথা

পদ্মবে। নি ত্রন্ধা দন্ত পূর্বক সদ্যোপত বংস বালক সকল হরণ করিয়া হরির নিকট হইতে তিরোহিত হইতে ইচছা করিবেন এবং শঙ্কাবশতঃ তংকালীন তাঁহার অফনেত্র। আটন দিকের প্রতিপ্রিত হইতে লাগিল।

ুব্ধাবা ॥

অক্র মনে মনে কছিলেন হারা! আমি যথন স্বৰ্গ প্রদর-কারি সামস্তক মণি হরণ করিয়া গোপুনভাতে পুরদৈশে আগ্রমন শব্দানদ্যাপি তদেব কর্ম্ম
শর্মাণি চিত্তে মম নির্কনিত্তি ॥
অপরাধাদ্যথা ॥
ভদনধি মলিনোহসি নন্দপোক্টে
মদবধি বৃষ্টিমচীকরঃ শচীশ।
শূলু হিতমভিতঃ প্রপদ্য কৃষ্ণং
প্রিমেনিশঙ্কমলং কৃষ্ণ অনৈক্রাং ॥ ২৫ ॥
পরক্রোর্য্যেণ যথা পদ্যাবল্যাং ॥
প্রয়েতি ন তথা ম্যার্ভিযুক্তঃ
সহচরি বল্লবচন্দ্রবিপ্রয়োগঃ ।

কটুভিরিতি তদানীমসম্ভবমপি ক্ষেহ্মাত্রেণাশকতে। অনিষ্টাশকীনি বন্ধু শুদ্ধানীতি ভাষেন ॥ ২৬ ॥

ক্রিয়াছি, এই কারণে সেই নিন্দিত কর্মা অদ্যাপি আমার চিত্তে স্থাসকল ভেদ করিয়া দিতেতে॥

অপরাধহেতু শক্ষা যথা॥

আহে শতীপতি ইন্দ্র ! যে অবধি তুমি নন্দর্গোষ্ঠে রৃষ্টি করিয়াছ, সেই আবধি তোমার মলিনত। জন্মিয়াছে, অভএব হিত বলি আগ্রন্থ কর, তুমি সর্ব্বোতোভাবে জ্রীকৃষ্ণচরণারবিন্দে প্রপন্ন হইয়া নির্বিশঙ্কচিতে এক্রা সম্পৎ সম্ভোগ কর॥ ২৫॥

পরকোর্য্য অর্থাৎ পরের নিষ্ঠ্ রতা হেতু শঙ্কা যথা॥ পদ্যাবলীতে॥

ে সংচরি! তীব্র শহরমণ্ডলে পরিবৃত শহরপতি কংসের মধুরানগরে শ্রীকুফের বাস যেমন আমার রাধা

## मृष्मिन् । हर्थ नर्त्रौ । } *चक्रि*त्रमाञ्चितिङ्कः।

কটুভিরস্থরমপ্তলৈঃ পরীতে
দক্রপতের্ন গরে যথাদ্য বাসঃ ॥
শক্ষ। তু প্রবরস্ত্রীণাং ভীরুত্বাস্তর্মকৃত্তবৈং ॥
অথ ত্রাসঃ ॥
ত্রাসঃ কোভো হৃদি তড়িদেবারসত্বোগ্রনিকনৈঃ
পার্শব্যালম্বরোমাঞ্চকম্পস্তস্ত্রভ্রমাদিকৃৎ ॥
অথ তড়িতা যথা ॥
বাঢ়ং নিরিড়য়া সদ্যস্তড়িতা তাড়িতেক্ষণঃ ।
রক্ষ কৃষ্ণেতি চুক্রোশ কোহতিপ গোপীস্তনদ্ধরঃ ॥

বিস্তার করিতেছে, তাঁহার বিরহ আমার পীড়া বি**ন্তার করি-**ভেছে না ॥

উত্তম স্ত্রীদিগের ভীক্ষভাব প্রযুক্ত শক্কা ভন্নকারিণী হইয়া থাকে ম

### অথ ত্রাস ॥

বিছ্যুৎ, ভয়ানক প্রাণি, এবং প্রথম শব্দ হ**ইতে হদরে** যে কোভ জন্মে তাহার নাম ত্রাস ॥

এই ত্রাসে পার্শস্থ বস্তুর আলম্বন, রোমাঞ্চ, কম্প, ক্তম্তু, 'এবং ভ্রমাদি হইয়া থাকে॥

জন্মধ্যে বিছ্যুৎ হুইতে ত্রাস যথা।

কোন গোপধালক অতিশয় নিবিড় ভড়িৎছারা ভাড়িভ নেত্র হইয়া "হে কৃষ্ণ রকা কর" এই বলিয়া উচ্চ শব্দ করিয়াছিল ॥ শব্রিরোথে তু ভূপাতবিক্রোশভ্রমণাদয়ঃ।
ব্যত্তগতিকম্পাক্ষিমালনাঞাদয়ে।ইয়ি জ ॥
বাতকেইকার্তিক্ষিপ্রগতি দৃদ্ধার্জনাদয়ঃ।
বৃষ্টিজো ধাবনজ্জ গাত্রসক্ষোচনাদি কং।
উৎপাতে মুখবৈবর্ণ বিস্ময়োৎকম্পিতাদয়ঃ।
গাজে পলায়নোৎকম্পত্রাসপৃঠেক্ষণাদয়ঃ।
অরিজো বর্মাশস্তাদি-গৃহাপসরণাদিকং ॥
ভূত্র প্রিয়দর্শনজো যথা॥
বেক্ষা বৃন্দাবনাৎ পুত্রমায়ান্তং প্রস্কৃতন্তনী।

অভ্যুথানাদি হয়। অপ্রিয়োথ আবেগ হইতে ভূমিপতন,
চীৎকার শব্দান্ত ভ্রমণাদি হয়, অগ্নিশনিত আবেগে ব্যতিব্যস্ত
গতি, কম্পা, নয়নমুদ্রণ ও অক্র প্রভৃতি হইয়া থাকে। বায়্ভ্রমিত আবেগে অভাববণ, ভ্রেতাহণ এবং অক্সাকোচনাদি হয়।
উৎপাতজনিত আবেগ হইতে মুখবৈবর্ণ্য, বিস্ময় এবং উৎভূমানাদি হয়। গজজনিত আবেগ হইতে প্রায়ন উৎকম্পা
ভারম ও প্রশাহি বিরীক্ষণাদি হয়। শক্রজনিত আবেগ হইতে
ক্রাম ও প্রশাহি এহণ এবং গৃহ হইতে অপ্যারণ অর্থাৎ স্থানান্তর
গমন প্রভৃতি হইয়া থাকে।

ত্রমধ্যে প্রিয়দর্শন জনিত আবেগ যথা॥ বুলাবন হইতে পুত্র জীক্ষ আগমন করিলেন দেখিয়া সঙ্গা পুলকৈরাসীদাক্লা গোক্লেশ্বরী ।
প্রিয়প্রবণজো যথা প্রীদশনে ॥
প্রেয়প্রবণজো যথা প্রীদশনে ॥
ক্রেয়াচুতেমুপায়ান্তং নিত্যং তদ্দর্শনোৎস্লকাঃ ।
তংকথাক্ষিপ্রমনসো বভূবুর্জ।তসম্ভ্রমাঃ ॥ ২৯ ॥
ক্রিয়েশনিজো যথা ॥
ক্রিমিদং কিমিদং কিমেতত্তিচরৈতি ঘোরধ্বনিঘূর্ণিতা লপস্তী
নিশি বক্ষদি বীক্ষ্য পৃতনায়া

কিমিদমিত্যাদাবিতি লপস্তীতাময়:॥ ৩০

প্রিয়প্রবণ হইতে আবেগ যথা শ্রীদশমে ২৩ অধ্যামে ১৩ শ্লোকে॥

ছে রাজন্! বিপ্রথনিতাদের চিত্ত কৃষ্ণকথাতেই আক্ষিপ্ত ছিল, তাঁহারা নিত্যই প্রীকৃষ্ণ দর্শনার্থ উৎস্ক থাকিতেন, তিনি সমীপে আগমন করিয়াছেন, শুনিবামাত্র অভিশন্ধ ব্যক্ত হইয়াছিলেন॥ ২৯॥

অপ্রিয়দর্শন জনিত আবেগ বথা।।
রজনীযোগে ঘোরতর উচ্চধ্বনি আবণ করিয়া একি একি
বলিতে বলিতে যশোলা পৃতনার বক্ষঃস্থলে স্বীয় পুত্র শ্রীকৃষ্ণেক দেখিতে পাইলেন কিন্তু কি ক্যারেন গুপায়ান্তর ন্ত্ৰনমং ভাম্যতি সন্ত্ৰমান্যশোদা। । ৩০ ॥
ভাশিমা পুলুং ক্ৰেট হোন্তটান্তে
মহীজয়োৰ্শ ধ্যুগমূজনৈতা।
আভার-রাজ্ঞা হৃদি সন্ত্ৰমেণ
বিদ্ধা বিধেয়ং নাৰদাক্ষকার । ৩১ ॥
ভাগিকো যথা।
ধীৰ্য গ্ৰাজনি নঃ সমস্তত্ব্হুদাং ত্বাং প্ৰাণক্ষামণিং
গ্ৰায় গৌন্বতঃ সমীক্যা নিবি:ডু।তেই ন্তুমন্তৰ্বনে।

নিশম্ ইতাস্য নিরম্পদাস্য ঘটনা রৌদ্রসে উত্তিষ্ঠ মৃঢ় ইতাক কার্যা॥৩৯ গ্রা গোসমূহ:॥ ৩২ এ

শা দেখিয়া কেবল ব্যস্ত সমস্ত হইয়া ঘূরিয়া বেড়াইতে লাগি-লেন॥ ৩০॥

অপ্রিয় প্রবণজনি 🔊 আবেগ যথা॥

স্বীয় পুত্র শ্রীকৃণ্ড ভার্যমল।জ্জুনের মণ্যবন্তী হই থা রহিয়া-ছেন এই বাক্য শ্রেব-মাত্র গোপরাক্ষী যশোদা উদ্ধিদিকে নেত্রপাতপূর্বক সম্ভ্রমে ব্যগ্রহিত হই য়া কি করিখেন কিছুই স্থির করিতে পারিশেন না ॥ ৩১॥

অগ্লিজনিত আবেগ যথা।

হে পিঞ্চ্ড়! অবলোকন কর, এই দাবানল অথওধননি কনত উচ্চ শিধার দারা স্থারদীর্ঘিকা মন্দাকিনীর তরঙ্গুচয়কে আচমন করিতেছে, অতএব হে কৃষ্ণঃ গৌর-বশতঃ গোসমূল, বহিং পশ্য শিখণ্ডশেশরথরং মুঞ্চরখণ্ডধ্বনিং
দার্ঘাভিঃ হুরদীর্ঘিকাসুল-ছরীমচিতিরাচামতি ॥ ৩২ ॥
বাকজো যথা।
পাংশু গার্রকেকে ে বিহুদ্দি কিকুঠোন্মাথিশোটার্যপুঞ্জে
ভাণ্ডীরোদ্দণ্ডশাথা ভুজততিয়ু গতে ভাণ্ডবাচার্য্যচর্য্যাং।
বা এরাতে করাযক্ষয়তরশিগরে শার্করে ঝাৎ করীফো
কোণ্যামগ্রেক্য পুত্রং ব্রজপতিগৃহিণা পশ্য সংবংজ্রমীতি ॥
বর্ষজো যথা জীদশ্যে॥

পাংথিত্যাদি খেচরাণাম্জিঃ। শার্কর ইতি সিক্তাশর্করাভ্যাঞ্চেত মত্ব্যীর ব প্রত্যয়াৎ শর্করাবতীত্যর্থ:॥ ৩০॥

প্রাণরক্ষার মণিস্বরূপ তোমাকে অবগত হইয়া নিবিড় বনমধ্যে অবস্থিতি করিতেছে এবং আগরা যে তোমার স্থল্ আমা দেরও বুদ্দি অতিশয় চঞ্চণ হইয়াছে॥ ৩১॥

বায়ুজনিত আবেগ যথা।

আকাশচারী দেবগণ কহিলেন দেখ গগনমণ্ডলে ধৃপিধ্বজ্ঞ উভটান হইয়া বলের সহিত বৃহৎ ২ রক্ষ উৎপাটন পূর্বক ভাণ্ডীরতক্রর স্থাবি শাখারূপ ভূজ সকলে নৃত্যাচার্য্যচর্য্যা আচরণ করিতে থাকিলে, এচও শব্দকারি চক্রবায়ুরূপ ভূণাবর্ত আসিয়া শ্রীক্ষকে হরণ করিয়া লইয়া গেল, এদিকে ব্রজপতিগৃহিণা যশোদা ক্ষিতিপৃষ্ঠে স্বীয়পুক্র শ্রীকৃষ্ণকে দেখিতে না পাইয়া সন্ত্র্যবশ্ভঃ ইতন্ত ভঃ ভ্রমণ করিতে লাগিলেন ॥

রৃষ্টিনিমিত আবেগ যথা॥ শ্রীদশমে ২৫ অধ্যায়ে ১১ শ্লোকে॥ অত্যাসারাতিবাতেন পশবো জাতবেপনাঃ।
গোপা গোপ্যশ্চ শীতার্তা গোবিন্দং শরণং ষযুঃ॥ ০০॥
যথাবা॥
সমযুক্তকরকাভিদ স্তিশুগু সপিগুঃ
প্রতিদিশমিহ গোর্চে রৃষ্টিধারাঃ পতন্তি।
অভনিয়ত যুবানোহপ্যাকুলাস্বস্ত বালঃ
স্কুটমিন তদগানামাস্মভূনি বিযাহঃ॥ ০৪॥
উৎপাতজো যথা॥
কিতিরতিবিপুলা টলতাক স্মা-

আগারাদিতি তত্ত্রৈব বৃষ্টিপ্রাণ্ডৌ গোবর্দ্দনপর্যন্তগমনত্ত পুনর্ভাগুরিমাপিতা ইতিবং ॥ ৩৪ ॥

ষটিভি অধুনৈবাটিভবানিতার্থ:। টল টুল বৈক্লব্যে ইতি ধাতুগণ:। উত্থাইত্য-

অ রান্ত বারিধারা পতন ও প্রবল হর পবন বহনে সমন্ত পশু কাতর কলেবর এবং গোপ ও গোপীগণ শীতে সাতিশয় অ র্ভ হইয়া গোবিন্দের শরনাপন্ন হইল॥ ৩০॥

### অথবা ॥

এই গোষ্ঠের চতুর্দিকে বৃহৎ শিলা বৃষ্টির সহিত হস্তির শুণুত্ব্য অলধানা পতিত হইতেছে, যুবা সকলও আকুল হইয়া বাইতে পারতেছে না, তুমি ত বালক কিরুপে ঘাইবা। কদাচ গৃহ হইতে গমন করিতে ইচ্ছা ক্রিও না॥ ৩৪॥

উৎপাতজনিত আবেগ যথা ॥ যশোদা সক্তৰ প্ৰকাশপূৰ্বক কহিলেন হায়! অক্সাৎ তুপরি ঘুরন্তি চ হন্ত ঘোরমুক্তাঃ।
মম শিশুরহিদ্যিতার্কপুত্রী
তটমটতীত্যধুনা কিমত্র কুর্যাং॥
গাজো যথা॥
অপসরাপদর ত্বরা গুরুমুন্দরস্থলর হে পুরতঃ করী।
অদিমবীক্ষণতন্তব নশ্চলং
হৃদয়মাবিজতে পুর্যোধ্যাং॥ ৩৫॥
গজেন তুইসত্থোন্যা পশাদিরুপলক্ষ্যতে॥ ৩৬॥

নেনাকালেংপি সৃ্ধ্যগ্রহণং ধ্বনিতং যেনাদ্ধকারে দিনেংপি তা দৃ**খাতে যুর** ভীমার্ভশক্ষোরিতি ধাতুগণঃ॥ ৩৫॥

সহমন্ত্ৰী তু জন্তুৰ ইত্যমননাৰ্নাৰ্থাৎ হণ্টসৰ ইত্যুক্ত: ॥ ৩৬ ॥

এই বিশাল পৃথিবী কম্পিতা হইতেছে, গগনমগুলে উল্লাসকল ইতস্ততঃ ঘূর্যা বেড়াইতেছে, আমার শিশুপুত্র বিষদ্ধিত যম্নাহুদে গমন করিছে, আমি এখন কি করি। গজনিমিত আবেগ যথা।

মথুরাপুরীস্থ স্থাগণ কহিল, হে জলধরস্কর ! শীঅ স্থানা-স্তরে গমন কর, স্থানান্তরে গমন কর, সন্মুখে গুরুতর গজ অবস্থিত রহিয়াছে, তোমার মৃত্ নিরীক্ষণদারা আমরা যে পুর্যোধিত আমাদের চঞ্চল-হৃদ্য উদ্বেজিত হইতেছে॥ ৩৫॥

গজশব্দ প্রয়োগ হেতু অন্য জুফীপ্রাণি বোটকাদিকেও জানিতে হইবে ॥ ৩৬ ॥ যথা বা ॥ চণ্ডাংশোজৰগাৰ শটাগ্ৰান্ট্ৰী

চণ্ডাংশোস্তরগান্ শটাপ্রনটনৈরাহত্য বিদ্রাবয়ন্ দ্রাগন্ধকরণঃস্থরেন্দ্রস্থাং গোষ্ঠোদ্ধৃ তৈঃ পাংশুভিঃ । প্রত্যাসীদতু মৎপুরঃ স্থররিপুর্গব্যাদ্ধমব্যাকৃতি-দ্র্যান্থিত মুহুরত্র জাপ্রতি ভূজে ব্যপ্রাসি মাতঃ কথং॥ স্থরিকো যথা ললিতমাধ্বে ॥ স্থান্তালভূরোন্নতির্গিরিত্টীবক্ষাঃ ক যক্ষাধ্যঃ॥

চপ্তাংশোরিত্যাদর্থ: মাতৃরচনামুবাদ:। গর্মাদ্ধমিতি ক্রিযারা: বিশেষণং কর্জ্ ধর্মস্যাপি তস্য তস্যামুপচারাং॥ স চ তৎ প্রত্যাসদনস্য মদেনাতি বৈশ্লব্য বিব করা। দ্রাঘিষ্টে ততোহপি দীর্ঘতমে মুহুর্জাগ্রতি তিম্বিশ্লম্বন্দমনার সাবধানে সতীত্যর্থ:। সর্বারিষ্টহরেহ্তিতি বা পাঠ:॥ ৩৭॥

### যথা বা ॥

শ্রীকৃষ্ণ যশোদাকে কহিলেন, মাতঃ! শটাতা কম্পনদারা সূর্য্যভুরঙ্গণকে বিদারিত এবং গোঠোদ্ধৃত ধূলিদারা দেবেন্দ্র হুলোচনাদিগকে অন্ধ করিয়া গর্কান্ধ হয়।কৃতি কেশীদানব, আমার সম্মুখে প্রত্যাসম হউক, আমার হুনীর্ঘবাছ জাত্রত রহিয়াছে, অতএব আপনি ব্যগ্র হইবেন না॥

> শক্ৰজনিত আবেগ যথা— ললিতমাধবে ॥

ভ্রজেখরীর সমবয়কা কোন গোপী কহিলেন হায়! যাহার স্থুল ভাল্ডক্রমূদৃশ স্থদীর্ঘবাহু এবং গিরিতট তুল্য বিশালবক্ষঃ সেই এই বকাধম শন্ধচুড় কোথায়, আর বাল-ভ্যালাস্কুর তুল্য কারং বালতমাল কন্দলমূত্র: কন্দর্পকান্তঃ শিশুঃ।
নাস্তন্যঃ সহকারিতা পটুরিহ প্রাণী ন জানীমহৈ
হা গোষ্ঠেশ্বরি কীদৃর্গদ্য তপসাং পাকস্তবোশ্মীলতি ॥ ৩৭ ॥
যথা বা তত্ত্বের ॥
সপ্তিঃ সপ্তীর্থ ইহবথঃ কুঞ্জরঃ কুঞ্জরো মে
তৃণস্তৃণো ধনুকতধনুর্ভোঃ কুপাণী কুপাণী।
কা ভীঃ কা ভীরয়ময়মহং হ। তর্গধং তর্গবং
রাজ্ঞঃ পুত্রীবত হত হতা কামিনা বল্লবেন॥ ৩৮ ॥
আবেগাভাস এবায়ং পরাশ্রয়ত্যাপিচেৎ।

্রথ ইহ রথ ইতি ধয়ুকুত ধয়ুরিতি চ ছিকুক্তিঃ কিস্তন্যোন্যস্য বচনুং ॥ ৩৮ ॥ আবেগেড্যুন্তরত বাক্য নায়কোৎকর্ববোধায়েতি তথাবিধাঃ ক্লয়া নায়ুক্

কোমল কন্দর্পস্থলর শিশুই বা কোথায়, অপর এই ব্রজে অন্য কোন স্থলক সাহায্যকারী প্রাণীওনাই, অভএব হে গোর্চেশ্বরি! অদ্য ভোমার যে কি তপস্যাসকলের ফল উন্মালিত হইতেছে, তাহা জানিতে পারিলাম না ॥ ৩৭ ॥

যথাৰা ললিতমাধ্বে ॥

সমস্বরে প্রীকৃষ্ণ রুম্বিণীকে হরণ করিলে রাজগণ পরস্পার বলিতে লাগিলেন আমার হস্তা, অশ্ব, রথ, তুণ, ধনু, এড়গ ইত্যাদি সকল রহিয়াছে, ভয় কি, ভয় কি, এই আমি চলিলাম তোমরাও শীঘ্র আইস, হায়! কামুক গোপকৃষ্ঠক রাজপুঞ্জীর হরণ হইল ! ॥ ৩৮॥

যদিচ এই আবেগাভাগ পরাশ্রের তথাপি নারকের উৎকর্য

নায়কোৎকর্ষবোধায় তথাপ্যক্ত নিদর্শিতঃ ॥
অথোমাদঃ ॥
উন্মাদো হৃদ্ভ্রমঃ প্রোঢ়ানন্দাপদ্বিহাদিজঃ।
অত্তান্তিংলো নটনং সঙ্গীতং ব্যর্থচেষ্টিতং।
প্রলাপ ধাবন ক্রোশ বিপরীত ক্রিয়াদয়ঃ ॥
তত্ত্ব প্রোঢ়ানন্দাদ্যথা বিস্তমঙ্গলে ॥
রাধা পুনাতু জগদচুতেদত্তিত্তা
মন্থানকং বিদধ্তী দ্ধিরিক্তপাত্তে।
তস্যাঃ স্তনস্থবক চঞ্চল-লোচনালি-

পকীদৈর্জিতা ইতি শ্রমণাৎ ভক্তানাং হর্ষেণ রতিরুদীপ্তা স্যাদিত্যেতদর্থ মিত্যর্থ:॥ ৩৯॥

বোধের নিযিত্ত এম্বলে প্রদর্শিত হইল। অথ উম্মাদ॥

অতিশয় আনন্দ, আপদ এবং বিরহ। দিজনিত হন্তুমকে উন্মাদ বলে। এই উন্মাদে অট্টহাদ নটন, দগীত, ব্যর্থচেন্টা, প্রলাপ, ধাবন চীৎকার, এবং বিপরীত ক্রিয়াদি হইয়া থাকে তন্মধ্যে অভিশয় আনন্দহেতু উন্মাদ যথা॥

বিল্লমগলে ॥

সেই শ্রীরাধা জগৎ পবিত্র করুন, যিনি শ্রীকৃষ্ণের প্রতি চিত্ত সমর্পণ করিয়া দধিশূন্যপাত্তে মন্থনদণ্ড বিধান করিয়া-ছিলেন, এবং শ্রীকৃষ্ণও শ্রীরাধার স্তনকৃস্থমে লোচন ভ্রমর দে বৈ হিপি রুদ্ধহন গো ধবলং ছুদোই ॥ ৩৯ ॥
আপদো যথা ॥
পশ্নপি কৃতাঞ্জলিন মতি মান্ত্রিকা ইত্যমী
তর্নপি চিকিৎসকা ইতি বিষৌঘধং পুচহতি।
হুদং ভুজগভৈববং হরিহরি প্রবিষ্টে হনৌ
ব্রজেন্দ্রগৃহিণী মুহুর্ভ সময়ীমবস্থাস্কতা ॥ ৪০ ॥
বিরহাদযথা শ্রীদশমে ॥
গায়ন্ত্য উচ্চেরমুমেব সংহতা

পশুনপি ক্বতাঞ্জলিরিত্যক পুর্কের্ প্রশান্ত ঘলপরাভবার। উত্তরের প্রশান্ত বিষনাশনায়েতি জ্ঞোঃ॥৪০॥

গারস্তা উচ্চৈরিতাত্র তু এবমেবোরাদো বোজনীয়ঃ পুরুষং খনায়কং পপ্রচ্ছুঃ

নিকেপ করিয়া বিস্মৃত ক্রমে র্ষদোহন করিতে প্রার্থত হয়েন, অতএব তিনিও জগৎ পবিত্র করুন॥ ৩৯॥

আপদ হইতে উন্মাদ যথা॥

কি খেদের বিষয়? শ্রীকৃষ্ণ কালিয়গুদে প্রথিষ্ট হইলে ব্রজ্ঞেন্ত্রগৃহিণা মশোলা ভ্রমময়া অবস্থা লাভ করিয়া রক্ষ সক-লকে যন্ত্রজ্ঞ বিবেচনায় বারস্বায় অঞ্জলি বন্ধনপূর্বক প্রশাম এবং ভ্রুকনিকরকে চিকিৎসক জ্ঞানে ঔষধ জিজ্ঞাসা করিয়া-ছিলেন॥ ৪০॥

বিরহনিমিত্ত উন্মাদ যথা ॥ শ্রীদশমে ৩০ অধ্যায়ে ৪ শ্লোকে ॥ গোপীগণ উচ্চৈঃস্বরে শ্রীকৃষ্ণেরই গানু ক্রিতে ক্রগ্রিতে বিচিক্যুক্রশান্তক্ষর বিদ্নালন ।
পপ্রচন্থ বাকাশবদন্তরং বহি
ভূতিরু সন্তং পুরুষং বনস্পতীন্॥ ৪১॥
উন্মাদঃ পৃথগুক্তোহয়ং ব্যাধিষ গুর্ভারপি।
যত ত্র বিপ্রশান্তাদে বৈচীত্রাং কুরুতে প্রাং।
অধিরতে সহাভাবে সোহনত্বমুপাগতে।
অবস্থান্তরমাপ্তোহদো দিব্যোন্মাদ ইতার্য্যতে॥ ৪২॥
অধাপন্মারঃ॥

্প্তঞ্চ ভূজেনু ছাৰব্ৰজনমেৰ্ আকাশবদন্তবং বহিশ্চ সন্তং সাক্ষাদ্বিৰ সম্ভয়া ক্ৰুবন্তং পঞ্চছু: তাদৃশ ক্ৰুবিশ্চ তাদাং প্ৰেমবিলাদ বিশেষাদেব। বনলভান্তৰৰ আমিনি বিশ্বুং ব্যঞ্জন্ত ইভিবং ভূজ, ঘহিঃ ক্ৰুবণং দ্বতঃ অন্তন্ত নিক্টাং ভেজ ব্যক্তুমাদ-বৃজ্ঞাহনিজ্ঞিয়েখণি প্ৰশ্নে যোগ্য ইতি॥ ৪১॥

তত্ত্ব ভেষু ব্যাধিষু তেষাং মধ্য ইভ্যৰ্থ:॥ ৪২ ॥

এক বন হইতে অন্য বনে গমন করত তাঁহারই অবেষণ কনিতে লাগিলেন, আর যিনি আকাশণৎ দকল ভূতের অন্তরে অধস্থিত এবং বাহিরেও বর্তমান, রক্ষগণের সমিধানে সেই মহাপুরুষের কথা জিজ্ঞাসা করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ৪১॥

ব্যাধিজনিত উন্মাদ পৃথক্রপে বর্ণিত হইয়াছে, অপের বিপ্রলম্ভে অর্থাৎ বিয়োগ অবস্থায় যে উন্মাদ, অভিশয় বিচিত্রতা বিধান করে, ভাংগাই অধিরাচ মহাভাবে মোহনত্ব প্রাপ্ত হইয়া অবস্থান্তর লাভ করত দিব্যোন্মাদ বলিয়া ক ওত হয়। ৪২॥ ছঃথোশ খাতু বৈষম। ছিন্তুতশিত জবিপ্লবঃ ।

অপস্মানোহক্ত পতনং ধাবনাক্ষেতি নজ্ঞাঃ ।

কম্পাঃ কেশক্রতির ভিকেপবিক্রোশনাদয়ঃ ॥ ৪৩ ॥

যথা ॥

ফেণায়তে প্রতিপদং ক্ষিপতে ভুলোর্দ্মি
মাঘূর্ণতে লুঠতি কুজতি লীয়তে চ।

অহা তাবদ্য বিরহে চির্মস্থ্রাক্স
বেলের ব্যিতিল ক্রজরাক্স-রাজ্ঞী ॥

আন্ফোটনং সমাগঙ্গবার্থা॥ ৪৩॥

ফেণায়ত ইতি শ্রীরাধায়া: সন্দেশ: বেলা স্যাতীরনীরয়োরিত্যমর:। ব্রজে রাজতে যা রাজ্ঞী সেতার্থ:॥ ৪৪॥

তুঃথোৎপদ্মধা তুরিষমাদি গনিত চিত্তের যে বিপ্লব (বিনাশ) তাগর নাম অপস্থার ॥

এই অপস্মারে ভূমিপতন, ধাবন, আংকোটন ( অঙ্গ ব্যথা ) ভ্রম, কশ্প, ফোডাব, বাহুক্তিপণ এবং উচ্চশব্দদি হইয়া থাকে ॥ ৪৩॥

#### यथा ॥

মর্থাস্থ শ্রীকৃত্তের নিকটে শ্রীরাণা বলিয়া পাঠাইলেন, যে হে যহপ্রেষ্ঠ ! তোমার মাতা ব্রজনাঞ্চ-রাজী যশোদা তোমার চির্নিবিরতে কাল্য ইওলতে সমুগ্র জীরের স্থায় সর্বনা জাঁহার মুথ্র কেণ্ডাব ইইলেছে এবং কাল্য ক্থান তিনি ধার্ত্তরাক্ত ক্ষেপ্ন, চক্রবং, ভূমিলুঠন ও উচ্চশন্দ করিতেছেন এবং কথন কথন বা নিস্তব্ধ হইয়া অব্যথিত করিতেছেন ॥ যথা বা ॥

শ্রুহা হস্ত হতং হ্বয়া যতুকুলোভংসাত্র কংসাহারং

দৈতান্তস্য হৃত্ত হলঃ পরিণতিং ঘোরাং গতঃ কামপি ।
লালাফেন কদম্চ্মিতমুখপ্রান্তস্তরঙ্গভূজো
ঘূর্ণমর্ণন সীল্লি মণ্ডুলভয়া ভ্রাম্যমবিশ্রাম্যতি।
উন্মাদবদিহ ব্যাধি বিশেষোপ্যেষ বর্ণিতঃ।
পরাং ভয়ানকাভাসে যথ করোতি চমৎকৃতিং॥
অথ ব্যাধিঃ॥
দোমোদেকবিয়োগালৈয়ব্ধিয়ো যে জ্রাদয়ঃ।

ইত্ত তথপ্রভাবোভাবো ব্যাধিরিত্যভিধীয়তে।

#### যথা বা ॥

হে যতুকুলভূষণ! তোমা কর্তৃক কংসাস্থর হত হইগাছে শুনিয়া ভাগার কোন স্থল্ দৈত্য ভয়ানক বিকারাপন্ন হইগা সাগরতীরে ভ্রমণপূর্বক মুখে ফেণ্স্রাব এবং গাহুদ্ধ উৎক্ষেপণ করত খুর্ণিত হইতেছে, অশ্যাপি নির্ভ হইল না॥

এম্বলে এই ব্যাধি বিশেষকে উন্মাদের ন্যায় বর্ণন কর। ছইবে, যেহেতু ভ্রানক রসে ইহার চমৎকারিত্ব আছে॥

### অথ ব্যাধি॥

শতিশা দোষ এবং বিচেছদাদিছারা যে জ্বাদি উৎপন্ন হয় তাহাকে বাাধ বলে কিন্তু এক্ষলে ততুৎপন্ন ভাবকেই বাধিবলা যাধ॥

এই ব্যাধতে তম্ভ অঙ্গু শিবিলভা খাস, উত্তাপ এবং

অত তথ্য স্থাপত বাসেনিস্থানী ।
বধা ॥
তথ চিন্নবির্হেণ প্রাপা পীড়ামিনানীং
লগচুক-কড়িনানি গ্রাপিডানাস্থলানি ।
বাসতপ্রন-বাটী-খাটিউজাগ্রাটং
লুঠতি ধরণিপুঠে গোঠবাটীক্ট্রং ॥
তথ্য মোহং ॥
মোহো হল্ট্ডা হর্ষাবিল্লেষান্তর্যধা ।
বিষাদাদেশ্চ তত্ত্ব স্থাদেহত্য প্রনং স্থা ।

मुरना खित्रकः खनगर छवा निएम्ड के जानवः नं

वणांशाक्रमणः शामिष्ठि कीववामी। अवक् नक्तवाक्रमणः स्टेशशादेश : शामित्र

थानि প্রভৃতি হইয়া থাকে ॥ ৪৪ ॥

যথা ॥

হে রক্ষ ৷ সম্প্রতি তোমার চিরবিরত্তি অধ্ববাসির্থন পীড়িত হইলা শরীরে সন্তাপ এবং জড়ত। ধারণ করিরাত্তিন, এবং নাসারজে, খাসমালে বহন করতে কেবল ধরণীসূত্তি স্কিত ইইচেচ্ছেন ॥

#### चिष (मार्ड B

र्वत, विट्या, उन्न धनर विशामानि वेहें एक बरेनमें देन ब्रिकेट वर्षाद त्याय मृन्यका काराज नीम त्यार । धरे त्यादेश सुनि-गर्कन, व्यवस्थितम्, खर्मन ध्वरः निरम्ध्यका स्वयंति होस्स তত্ত্ব হ্বাদ্যথা প্রীদশমে ॥
ইতি স্ম পৃষ্টঃ সচ বাদরায়ণিভংসারিতানস্তহ্বতাথিলেন্দ্রিয়ঃ ॥
কুচ্ছাং পুনল কিবহিদ্ শিঃ শনৈঃ
প্রত্যাহ্ তং ভাগবতোত্তমোত্তমং ॥ ৪৫ ॥
ঘণা বা ॥
নিরুচ্ছ্বিতরীত্যো বিঘটিতান্মিপক্ষাক্রিয়া
নিরীহ্নিণিলেন্দ্রিয়াঃ প্রতিনির্ত্চিদ্ত্রঃ ॥

পছা: আন জু জাণবাটুটন নাসিকোচ্যতে। গোষ্ঠবাটীতি বাটো বাজজ্মি:।
ৰাটীতি সমস্বিৰক্ষা ॥ ৪৫ ॥

নিক্ষ্পিতেতি নিৰ্গতা: উচ্চ্পিতানাং রীতয়: প্রচারা বাভ্য: শালভঞ্জী

তদ্মধ্যে হর্ষহেতু যথা॥ শ্রীদশমে ১২ অধ্যায়ে ৪১ শ্লোকে॥

ছে ভাগবতোত্তম শৌনক! রাজা পরীক্ষিৎ যে ভগবান্
ভানতের স্মরণ করাইয়াছিলেন্, তাঁহা কর্তৃক যদিও শুকদেবের অধিল ইন্দ্রিয় অপহৃত হইল, তথাচ ঐ প্রকার জিজ্ঞা
দিত হওয়াতে কথঞিৎ বহিদ্ প্রি লাভ করিয়া ধীরে ধীরে
ভাহার প্রতি বলিতে লাগিলেন॥

যথাবা ॥

কুরুক্তে নির্দ্ধন প্রদেশে জ্রীকৃষ্ণকে অবলোকন করিয়া শাস, নিমেষ, চেষ্টা ও জ্ঞানরহিত হুইয়া ত্রজন্ত্রীসকল স্বর্ণ- মবেক্ষ্য ক্রেমণ্ডলে রহসি পুণ্ডরীকেক্ষণং
ব্রজামুজদৃশো হভজন্ কনকশালভঙ্গী প্রিয়ং॥ ৪৬॥
বিশ্লেষাদ্যথা হংসদৃতে॥
কদাচিৎ খেদায়িং বিঘটায়িতুমন্তর্গতমসে
সহালীভিলে ভে তরলিতমনা যামুনতটীং।
চিরাদস্যাশ্চিতং পরিচিতকুটারাকলনাদরস্থা তন্তার স্ফুট্মথ স্বুপ্থেং প্রিয়েশ্যী॥
ভ্যাদ্যথা॥
মৃক্দ্দ্যাবিদ্ধত্বিশ্বরূপং
নিরূপয়ন্ বানরবর্ষ্যকেতৃঃ।

প্ৰতিমা ৷ ৪৬ ৷

অত্ৰ কুটারো লভাগৃহং ভদবকণনাৎ স্থ্ৰেন্তলাড়াৎ প্ৰিয়স্থীৰ **ষা** "

প্রক্রিমার ন্যায় অবস্থিত রহিলেন ॥ ৪৬ ॥ বিচ্ছেদহেতু নোহ যথা॥

হংসদূতে ৷৷

কোন এক দিবদ গ্রীরাধা সখীগণ সমভিণ্যাহারে অস্তর্গন্ত শ্রীকৃষ্ণবিরহাগ্রিকে উপশম করিবার নিমিত্ত চঞ্চল মনে যম্নাতটে গমন করিয়াছিলেন, কিন্তু তত্ত্বস্থ পরিচিত-ক্রীড়া কুটীর দর্শন করায় গভীর নিদ্রার মোহরূপা প্রিয়স্থী স্পৃষ্ঠিঃ মুম্বি উহার চিত্ত আচহাদন করিয়াছিল ॥

ভয়হেতু মোহ যথা ॥

জ্ঞীক্ষণ বিশ্বরূপ প্রকটন ক্রিলে তদবলোকনে ক্রিশ্রেজ

-

कत्रात्रिकार शृंद्रकः श्वेत्रकः न गां खिरः शृंख्यिति वित्र ॥ विद्यानाम्यथा श्रीनगाम ॥ कृष्यः महोवकश्रखः मृक्त्रा तागानस्याह्णकाः । बण्द्रितिस्यागीव विना श्वागः विद्यालयः ॥ ४१ ॥ भगानाजाण्यश्रास्य णाः मर्वरेजव मृत्वा । कृष्णकृष्ठितिस्यस्य

**শবস্থা মোহরূপা সা চিত্তং তন্তার আচ্চাদিতবভী 💵 ৪৭ ॥** 

শাস্ত প্রাপ্তমোহস্য ভগবন্তক্রস্য ক্লক্ষ্- বিবিশেষখিতি স্বাপ্রবং। তং বিমা ভাৰমানামনবিহিতে:। তথা চোকং। তৎসারিতানস্বস্থতাথিলৈ ক্লিক্ট ইছি। ক্লিক্ট বহিন্দু বিবেশপ্রাধানোন প্রান্ধ্যে মোহস্কর্ ভিলোপপ্রাধান্যেন ক্লেকঃ। শাহএব যোগে হ্রাচতে হাত্র হৃদ্ধ্যো দক্তঃ। মূহ বৈচিত্রে ইতি ধাতৃ-

ষ্পৰ্জন মতিশায় মোহপ্ৰাপ্ত হয়েন, এমন কি ভয়বশতঃ হস্ত হইতে গাণ্ডীব স্থালিত হইয়াছিল, তাহাও তিনি জানিতে পালেল-নাই॥

বিষাদহৈত্ মোহ যথা॥ জ্রীদশমে ১১ অধ্যায়ে ২৭ স্লোকে॥

ছে রাজন্। রামাদি বালকগণ জ্রীরুক্ষকে মহাবকের মুশ-এত হইতে দেখিয়া সেই রূপ অচেতন হইলেন, যজ্রপ প্রাণ-শুভিরেকে ইন্দ্রিয়গণ বিচেতন হর ॥৪৭॥

क्रमण्ड दमाद्याच हरेल (मरूलशंख दिस्त ममूनाव

ন কদাপ্যত্ত লীয়তে॥

অথ মৃতিঃ॥

বিষাদব্যাধিসংত্রাস-সংপ্রহারক্লমাদিভিঃ।
প্রাণত্যাগো মৃতিস্তস্থামব্যক্তাক্ষরভাষণং।

বিবর্ণগাত্ততাশাসমান্দ্যহিকাদয়ঃ ক্রিয়াঃ॥

যথা॥

অমুল্লাস্থাসা মৃত্রসরলোভানিতদৃশোবির্ণুস্তঃ কায়ে কিমপি নববৈবর্গমভিতঃ।

হরেন মিাব্যক্তীক্তমলঘুহিকালহরিভিঃ।

প্রজন্তঃ প্রাণান্ জহতি মথুরায়াং স্কৃতিনঃ॥ ৪৮॥

যথাবা॥

बबारतय जनर्वजातिकः॥ ८৮

বিশারণ হইয়া যায় কিন্তু কথন কৃষ্ণক্তৃতি লগ্ন হয় না।।
অধ মৃতি।।

বিষাদ, ব্যাধি, ত্রাস, প্রহার এবং গ্রানিপ্রভৃতি ছারা বে প্রাণভ্যাগ, তাহার নাম মৃতি। এই মৃতিতে অস্পাই বাক্ষ্যু দেহবৈবর্ণ্য, অলমাস এবং হিকাদি হইয়া থাকে॥

যথা॥

স্কৃতিশালী মণুরাবাদিগণ জন্ন খাদ, উতাননরন জনং বিবর্ণগাত্ত হইরা অস্পন্ত রূপে শ্রীকৃক্ষের নাম উচ্চারণ প্রকৃষ্ণ প্রাণত্যাগ করিতেছেন॥ ৪৮॥

যথাৰা ॥



বিরমশলঘুকতো দেবাষঘুৎ কারচক্রা কণবিঘটিত-তাম্যদ ষ্টিখদ্যোতদীপ্তি:। ছরিমিহিরনিপীতপ্রাণগাঢান্ধকারা ক্ষামগ্ৰদক্ষাৎ পুত্ৰাকালর।তিঃ ॥ ৪৯ ॥ প্রায়ে।হত্র মরণাং পূর্বা চিত্তরতিমু ভিম্ তা। মুতিরতামুভাব: স্যাদিতি কেনচিত্রচাতে। কিন্তু নায়কবীর্যার্থং শত্রে) মরণসূচ্যতে ॥ ৫ • ॥ व्यथानगः ॥

ছুংকারো ঘুকশকঃ॥ ৪৯॥

প্রান্ন ইতি প্রথমমর্দ্র। মৃতিরক্রেতি বিতীয়ং। কিছিতি তৃতীয়মিতি ক্রম:। অত্র প্রাণতাগেদ্য ভাবতা ভাবাদপরিত্বলোহ প্রায় ইতি। মৃতি: প্রাণতাগি-স্ক্রামুভাব: স্যাৎ। কেনচিদিতি স্বর্থেবেত্যর্থ:। তত্রচ পুতনাবর্ণনে বিশেষা-দপরিত্বারাহ কিখিতি ॥ ৫০ ॥

কালরাত্রি রূপা পূতনার প্রাণস্বরূপ গাঢ়ান্ধকার কৃষ্ণ-দূর্য্য কর্ত্তক নিপীত হইলে, উহার ঘূকপক্ষীর শব্দুল্য কণ্ঠ-ধ্বনি ও খন্যোত সদৃশ দীপ্তিশালি দৃষ্টি ক্ষণকাল মধ্যে তিরো-হিত হইয়াছিল॥ ৪৯॥

মনণের পূর্ব্ব চিত্তর্ত্তিকেই প্রায় মৃতি কহা যায়, কোন কোন পণ্ডিত অমুভাবকেই মৃতি কছেন, কিন্তু নায়কের শরাক্রস নিমিত্ত শত্রুতে মরণ উক্ত হইয়াছে॥ ৫০ ॥

অথ বালস্ত ॥

সামর্থাপে সদ্ভাবে কৈরাকুমুখতা হি যা।
তৃপ্তিপ্রমাদিসভূতা তদালসামুদীর্ঘাতে।
অব্রাঙ্গতাংশ জ্ঞাচ কিরাঘেষেহাইকিমর্দনং।
শ্যাসনৈকপ্রিষতা তন্ত্রী নিদ্রাদ্যোইপি চ॥
তব্র তৃপ্তের্যথা॥
বিপ্রাণাং নস্তথা তৃপ্তিরাসীদ্যোবর্দ্ধনোৎসবে।
নাশীর্বাদেইপি গোপেন্দ্র যথা স্যাং প্রভবিষ্ণুত্তা॥ ৫১॥
প্রমাদ্যথা॥
স্বর্চ্চু নিঃসহতকুঃ স্ক্রলোইভূৎ
প্রীত্রে মম বিধায় নিযুদ্ধং।

সম্ভাবে আগ্রাহেণ সমৃদ্রাব্দ্রিক শক। হে ॥ ৫১ ॥
স্থানী নিঃসহত্বং কিঞাদিশি কর্তুমক্ষত্বং। সহসাহ্বয়ভাষুমিতে । বিশ্বং বাচযুদ্ধ । ৫২ ॥

তৃপ্তি ও শ্রমাদি নিবন্ধন সামর্থা সত্ত্বেও যে কার্য্য না করা ভাহার নাম ভালস্য। এই আলস্যে অলমোটন, ভূভা (ই।ই) কার্য্যের প্রতি হেষ, চক্ষুমর্দন, সামন, উপৰেশন, ভ্রা ও নিদ্রা প্রভৃতি হইয়া থাকে॥

তম্মশ্যে তৃপ্তিহেতু আলস্য যথা॥

হে গোপেন্দ্র । অংসরা ত্রাহ্মণজাতি, আমাদের আশী-বিশি করিতে যাদৃশী তৃপ্তি, গোবর্দ্ধন্যাত্রায় তদ্ধপ নাই॥৫১ শ্রমহেতু আলস্ত যথা॥

শ্রীকৃষ্ণ স্থাদিগকে কহিলেন আহে বয়স্তগণা আমার প্রীতির নিমিত স্থল আমার সহিত বাহ্যুদ্ধকরিয়া বিষশ মোটরস্তমভিতো নিজ্পন্থং
মাহবায় সহসাহারতামুং ॥ ৫২ ॥
অথ জাড়াং ॥
জাড়ামপ্রতিপত্তিঃ স্থাদিন্টানিন্টপ্রতাক্ষণৈঃ।
বিরহাদ্যেশ্চ তন্মোহাৎ পূর্ববাবস্থাপরাপি চ।
অত্যানিমিষতা ভূফীস্তাব-বিশারণাদরঃ।
সত্রেইঞ্চেত্যা যথা শ্রীদশমে ॥
গাবশ্চ কৃষ্ণমুখনির্গতবেণুগীতগীয়ুবমুত্তভিত্বর্পুটিঃ পিবস্তাঃ।

শ্বপ্রতিপত্তিবিচারশূন্যতা। তৎ লাডাং মোহাৎ পূর্কাবস্থাপারাপ্যবস্থা

তকুত্তে অঙ্গমোটন করিতেছে, অতএব তোমরা উহাকে আর যুদ্ধার্থ আহ্বান করিও না॥ ৫২॥

অথ জাড্য॥

ইফ ও অনিফোর এবণ, দর্শন এবং বিরহাদিজনিত বিচার শূন্যতা নাম জাডা, ইহা মোহের পূর্ববিস্থা ও পরাবস্থা। এই জাড্যে অনিমিয়নয়ন, ভূফীস্তাব ও বিস্মরণ প্রভৃতি হয়।

ভন্মধ্যে ইফশ্ৰবণ জনিত জাড়া যথা॥

**बीनगरम २२ व्यक्षारम २० (झारक ॥** 

গোপীগণ পরস্পার কহিলেন, এই সকল গাভী উন্নমিন্ত কর্ণপুট ঘারা শ্রীক্ষেত্র বদনারবিন্দ-বিনির্গত বেণুগীতামূত কাল করিতে করিতে এবং এই সমস্ত শাবক স্তমক্ষরিত ক্ষীর-কাল মুখে করিতে করিতে বিস্তৃতক্রির হইনা পড়িতেছে,

## पंक्ति। हर्व सहजा। छक्तित्रशास्क्रीनक्ः।

শাবা: স্মৃতস্তনপন্ন: কবলা: স্মৃতস্থব্যোবিন্দাগাল্যনি দৃশাক্রকলা: স্পৃশৃদ্ধ্য: ॥ ৫৩ ॥ ॥
আনিউক্রত্যা যথা ॥
আকলয্য পরিবর্তিতগোত্তাং
কেশবদ্য গিরমপিতিশল্যাং ।
বিদ্ধারীরধিকনির্নিসিদাক্ষী
লক্ষ্যণা ক্রণমবর্তিত ভূফীং ॥
ইত্টেক্ষণেন যথা শ্রীদশ্যে ॥
ব্যোবিন্দং গৃহ্মানীয় দেবদেবেশ্যাদৃত্ত: ।

বধা তাদৃশীভাৰ্য:। শুসা শুভদ্ধবাৎ ৮ ৫৩ ॥ গোঞা নাম ইতি ৪ ৫৪ ॥

ইহার কারণ এই বোধ হয় ইহারা দৃষ্টি পথদারা মনোমধ্যে যেন শ্রীকৃষ্ণকে আলিঙ্গন করিতেছে তাহাতেই ইহাদের লোচনে অঞ্চলেশ দৃষ্ট হইতেছে॥ ৫৩॥

অনিষ্টশ্রবণহেতু জাড়া ষথা॥

অন্যনামে আহ্বান করায়, শেলতুল্য ব্যথাপ্রত জীকুমের ৰাক্য প্রবণ করিয়া লক্ষণা অস্থিরচিতে নিমেষশূন্য হইয়া কণকাল তুষ্ণীস্ভূতহইয়া ক্লিলেন॥

> ইন্টদর্শননিমিত জাড়া কথা ॥ শ্রীদশ্যে ৭১ স্বধ্যায়ে ৩৫ সোঁকে ॥

কালা যুধিন্তির দেবদেব গোবিশকে স্থাদর পূর্ব গৃত্ত আনন্তন করভঃ আহ্লাদে হভবুত্তি হইয়া উছার পূজা বিষয়ে শকার্য্যেণ যথা।

শ্বনাগিত মা শির: কুখা
বদনক ত্রপয়া শচীপতে।
মধ্য কল্পত্রুং নচেচ্ছটীং
কথমগ্রে মুখমীক্ষািষ্যাদি॥
স্তবেন যথা॥
ভূরি-সাদ্গুণ্যভারেণ স্ত্যুমানস্ত শোরিণা।
উদ্ধবস্ত ব্যুরোচিফ ন্মীভূতং ওদা শির:॥
শ্বন্তর্যা যথা হ্রিবংশে স্ত্যুদেবীবাক্যং॥

ত্মবালিতি শ্ৰীক্ষণ্য বাকাং শিরোহবাক্। মন্ত্রীভূতং বদনকাবাক্ বচন-ক্ষিতং ॥ ৫৮ ॥

### অকার্যামমিত লজ্জা যথা॥

প্রীকৃষ্ণ কহিলেন অহে শচীপতে! তুমি লজ্জ। প্রযুক্ত এখানে মস্তক অবনত ও বদন বচনশূন্য করিও না, এই শারিজাততরু গ্রহণ কর, নতুবা কি রূপে শচীর নিকট মুখ দেখাইবে॥

### खेवनिभित्त लक्डा यथा॥

ক্রিক ঘথন বহুং সদগুণ উল্লেখ করিয়া উদ্ধবের প্রাণংসা করিতে লাগিলেন, তথন ক্রমশঃ উদ্ধবের বদন অবনত হুইরা ক্রপুর্বব শোভা ধারণ করিয়াছিল॥

> অবজ্ঞাহেতু লজ্জা যথা॥ ইরিবংশে সভ্যভামার বাক্য॥

বদস্তকু হুমৈশ্চিত্রং সদা রৈবভকং গিরিং।
প্রিয়া ভূড়া প্রিয়া ভূড়া কথং দ্রক্ষ্যামি তং পুনঃ ॥ ৫৮ ॥
অথাবহিথা ॥
অবহিথাকারগুপ্তি ভবেস্তাবেন কেনচিং।
অত্রাঙ্গাদেঃ পরাভূত্যহানস্থ পরিগৃহনং।
অন্যত্রেক্ষা র্থা চেফা বাগ্ভঙ্গীত্যাদয়ঃ ক্রিয়াঃ ॥ ৫৯ ॥
তথা চোক্তং ॥
অমুভাবপিধানার্থোহ্বহিথস্তাব উচ্যতে ॥ ৬০ ॥

কেনচিম্ভাবেন ভাবপারবভোন হেত্না আকারদা গোপাভাবাম্ভাবদা শুখি: কুত্রিমভাবাস্তরবাঞ্জনয়া করণরপয়া নম্বরণং যদ্মিন্স তদ্প্রীজ্বারপো ভাবোহ্বহিখা ইতার্থ: ॥ ৫৯॥

অহুভাবেতি। অহুভাৰপিধানার্থো ভাবোহবহিত্মদুচাতে॥ ৬০॥

রৈবভক পর্বতি সর্বাদা বসস্ত কুস্তমে মনোহর বটে, কিস্তু যখন আমি প্রিয়া হইয়া অপ্রিয়া হইলাম, তখন পুনরাম্ন কি রূপে এ পর্বতি অবলোকন করিব ?॥ ৫৮॥

অথ অবহিথা ॥

কোন কৃত্রিম ভাবদারা গোপনীয় ভাবের অমুভাব সন্থ-গণ করাকে অবহিত্থা কহে। ইহাতে ভাব প্রকাশক অপাদির গোপন, অন্যদিকে র্প্তিপাত, র্থাচেন্টা এবং বাগ্ভঙ্গী প্রভৃতি হইয়া থাকে ॥ ৫৯॥

প্রাচীনদিগের মত এই যে, অসুভাবের সংগোপক ভাবকে অবহিখা কছে॥ ৬০॥ ভত্ত জৈক্যোন যথা শ্রীদশনে ॥

সভাজয়িবা তমনগদীপনং

সহাসলীলেক্ষণবিভ্রমক্রবা।

সংস্পার্শনেনাক্ষকতা জ্রি হস্তয়োঃ

সংস্তত্য ঈষৎ কুপিতা বভাষিরে ॥

দাক্রিণ্যেন যথা ॥

দাত্রাজিতীসদনসীমনি পারিজাতে

নীতে প্রণীতমহসা মধুস্দনেন।

দ্রাঘীয়সীমপি বিদর্ভভুবস্তদের্যাং

কৈলোৰ মতিকেটিলোনহেতুমা

তন্মধ্যে কটিলতা নিমিত্ত অবহিত্যা যথা ॥ শ্রীদশমে ৩২ অধ্যায়ে ১৪ শ্লোকে॥

হে রাজন্। সেই সকল গোপীর ঈক্ষণ হাস্য লীলায় হুশোভন এবং জ্র বিলাস্থিজ্ঞমে বিভূষিত। তাঁহারা অনল-দীপন সেই শ্রীক্ষণের কর ও চরণ স্বীয় ক্রোড়দেশে স্থাপন পূর্বক সম্মান মারা সেবা ও তাব করিয়া ঈষৎ কোপাবেশে ক্রিডে লাগিলেন।

माकिगानिमिख व्यवहिष्या यथा॥

কৌতৃককারী শ্রীকৃষ্ণ সত্যভাষার গৃহসীয়ায় পারিশ্বান্ত জ্বরু রোপণ করিলে বিদর্ভরাজ ছহিতা ক্লিনীর যদিচ স্থণীর্ঘ ক্রিয়া উৎপদ্ধ চইয়াছিল, তথাপি ভাঁহার স্থশীশভাষিবদ্ধৰ সোশীল্যতঃ কিল ন কোহপি বিদাশ্বভ্ৰ ॥

ত্রিয়া যথা প্রথমে ॥
তমাল্মকৈদ্ ষ্টিভিরস্তরাল্যনা
ত্রন্তভাবাঃ পরিরেভিরে পতিং।
নিরুদ্ধনপ্রশেষ্থনে বিশেষ বিশ্বভাবীনাং ভ্রুবর্য বৈরুবাৎ ॥
কো রুষস্থতি তং গোঠে ভুজসক্লপালিকা।
দৃতি যত্র স্মৃতে মূর্ত্তি ভীত্যা রোমাঞ্চিতা মম ॥ ৬১ ॥

ব্ৰদাতি কাময়তে। লক্ষণং দা ব্ৰদান্তীতিবং\*। কুলক্ষী কুলপালিকা ৬১-॥

কৈছই তাহা জানিতে সমর্থ হয় নাই॥
লঙ্জানিমিত্ত অবহিত্থা মধা॥
প্রথমক্ষকে ১১ অধ্যায়ে ২৮ ক্লোকে॥

মহিনী সকলের অভিপ্রায় অভিশয় তুজের, তাঁহারা দূরহইতে আগত পতিকে দর্শনের পূর্বেই মানোদ্বারা আলিঙ্গন
দিলেন, পরে দৃষ্টিগোচর হইলে দৃষ্টিদ্বারা আগ্রেষ করিলেন,
অনস্তর স্থীপণতী হইলে পূক্রদারা আলিঙ্গন করিলেন।
অপর লজ্জাবশতঃ যদিও তাঁহারা অশ্রুজল নিরোধ করিয়ান
ছিলেন তথাপি বৈবশ্যহেতু তাহা পতিত হইতে লাগিল ॥৬০

কেটিল্য ও লজ্জা নিমিত্ত অবহিত্যা যথা ॥

হে দৃতি ! সেই গোষ্ঠলম্পটকে কোন স্ত্রী কামনা করিয়া মাকে, বাঁহাকে স্মানণ হওয়ায় ভীতিবশতঃ আমার এই ভকু লোমাঞ্চিত হইয়াউটিল ॥ ৬১॥

 <sup>&</sup>quot;मचनः ना वृषनाकी मरशंकः भीविषाननः"ना द्वनिथा देखि कविणाया ।

সোজন্যেন যথা ॥ ৬২ ॥
গৃঢ়া গান্তীর্যদম্পদ্ধির্ম নোগহ্বরগর্ভগা ।
প্রোচাপ্যস্থা রক্তিঃ ক্ষেত্র প্রবিতর্কা পরেরভূৎ ॥
গৌরবেণ যথা ॥
গোরিন্দে হ্যবলমুগৈঃ সমং হৃছন্তিঃ
স্কোনিস্মিঃ ক্ফুটমিহ নশ্মনিশ্মিমাণে ।
আন্ত্রীকৃত্রদনঃ প্রনোদমুগ্ধো
যত্ত্বন স্মিত্রমণ সংবর্ষার পত্রী ॥ ৬৩ ॥

সৌজনোনেতি। দাক্ষিণাং মতেঃ কারণং সার্ল্যং সৌজনাত্ত বৈধালজ্জাদিযুক্তম্বিতানধ্যাত্তিদং ॥ ৬২ ॥

মনোগন্ধরগর্ভগা অভায়গুপা মা রতিঃ সা প্রৌঢ়াপি গান্তীর্যাসম্পত্তি-পূর্চা সভী ছবিতর্কাভূং॥ ৬৩॥

## त्नीजनारहरू यथा॥ ७२॥

শ্রীরাধার কৃষ্ণ বিষয়ে প্রগাঢ় অনুরাগ থাকিলেও সে অনুরাপ গান্তীর্য্য সম্পত্তি দারা মনোরূপ গুলার পর্ত্তগামী হইয়াছিল, এ নিমিত্ত অন্য কেহ ভালা লক্ষ্য করিতে পরে নাই।।
গৌরবনিমিত্ত অবহিত্যা মধা।।

্ হাস্তবদন স্থবল প্রভৃতি স্কান্তাণের সহিত গোবিন্দ ক্ষান্তাক্ষরে পরিহাস আরম্ভ করিলে পত্রিনামা তদীয় ভৃত্য আমোদ মুগ্ধ হইরা বদন অবনত কর্ত যতুসহকারে হাস্য বংবরণ করিয়াছিলেন ॥ ৬৩ ॥



८रुप: कन्छिद्धर्वर कन्छित्को। नाः कन्छम त्यानेबः। इकि कार्यक्रकाखे विनित्यानः मर्बोकारक।

এই ছলে কোন ভাবতে ভূ, কোন ভাব গোণা এবং কোন ভাব গোণন, এইরপে ভাবতারের নিয়োগ দেখা যায়, এইলৈ প্রায় গকল ভাবের এক বা অনেক রূপে তেত্তি, গোণনত্ব ও গোণাত্ব গর্জব হয় ॥

ভাৎপর্যা। "সভাজবিদ্ধা তমনদদীপনং" ইত্যাদি দশমকরীয় ৩২ অধ্যাবের ১৪ প্লোকে জৈল্যা অর্থাৎ কৃটিলতা হেডু,
কেন না ঐ জৈল্যা নিজবাক্যকারা ব্যক্ত করা দোষ, এ নিমিত্র
ক্রেলা বৃদ্ধির কোটিলা অর্থাৎ ভাষিলাস্থারাই প্রকাশ

হইল। এই পদেয় গোপাভাব অসুয়া ও অন্ধ্র, স্বহুৎ কুলিতা
ক্রেই পদ্ধারাই ইহা প্রকাশ পাইল। গোপন অর্থাৎ যদ্ধারা
ভাষকে সম্মন্ করা বায়। সংরক্ত এবং তাই ইহালারা ছাই

# হেতৃত্বং গোপনত্বঞ্চ গোপ্যত্বকাত্ত সম্ভবেৎ। প্রায়েণ সর্বভাষানাকেকশোহনেকলে।হলি চ # ৬৩ ॥

ভদাত্তিকরিভাগে বিশ্বজাবেতু:। ছয়ভভাবেত্তি সভোগাবেণা বসো পোশো লোশনত্তানিলোগেল প্রভাগিনের মুভাগিন: তথাপাঞ্চলবো গোপন পাছত-হালা পরিরস্কপেন সভোগরসাব্রক্ত, পুজুটিভট্রজীমাজাত্তক:। ভজ পার্ত-বুংক্রমেণার্বজ্ঞসভায়। প্রথম দৃষ্টিভিততোধ্সুরাত্মনা ভঙ্গ আছুলৈ: পরি-ব্রেভিরে ইতি। কা ব্রসাভীভাগে। কৈলামার্প তস্যাং ভাতাবিক্ষিতি বেতু-বের পোপাের হবা:। বচননাআভাবি । ভীতির্বোপনী। গুড়েভাবে সৌজনার বেতুর্গহাঃ। গৌবিক ইভালে সৌরবং বেতুং। বর্মাআভাবিভা ম্বভির্বোপনী। ভাপনং পোপাবিভি॥ ৬৪:।

প্রকাপ। "সহাসনীলেকণবিভ্রমজ্ঞনা" ইহার দ্বারা কৃটিনভাষর ভাব অভিব্যক্ত হইল। সকল স্থানেই গোপনরূপ ভাব কৃত্রিম। সাত্রোজিতী এই পদ্যে কৃত্রিনীর মভিমর দান্দিণাভাবহৈতু, ঈর্ষা, গোপাভাব, শৈথিলা অর্থাৎ কৃত্রিম সদ্যবহার দ্বারা হর্ষাভাব গোলন। প্রথমক্ষীর "ভ্রমান্ত্রটিজনিভ্যাদি" পদ্যেবিলজ্জা হেতু তুরস্ত ভাবদকে সন্ত্রোগাধ্য রস গোপার, আঞ্চনিরোধ দ্বারা ভাব গোপন॥

শকা র্ষক্রতী" এই পদ্যে তাঁছার স্বাভাষিক কোটিল্যহেতু, হর্ষ গোপ্য, ভয় গোপন। "গৃঢ়গ্রহ্ম" ইত্যাদি পদ্যে দৌজন্য হেতু। গোবিন্দ ইত্যাদি পদ্যে গোনুর হেতু। স্তু, এই স্থানে, প্রভ্যাভাশ গোপন, চাঞ্চ্যা, গোপ্য ॥ ৬৪ ॥ ৰথ সৃতি: ॥

ষা ভাহ প্রাকৃত্তার্পপ্রতিঃ সদৃশেকরা।
দৃঢ়াছ্যাসাদিনা বালি সা স্মৃতিঃ পরিকীর্ত্তিতা।
ভবেদত্র শিরংকপ্রে। জ্লেনিকেপাদ্রোহণি চ।
ভত্ত সদৃশেকরা বধা।

বিলোক্য স্থাননভোদনভোক্তবিলোচন। স্থানং আরং মুকুন্দ তাং আরং বিক্রমমন্ত্র ॥ ৬৫॥
দুঢ়াভ্যাদেন ধর্ণ। ॥

্প্রণিধানবিধিমিদানীমকুর্বভোছণি প্রযাদভো ছবি যে। ছরিপদপক্ষরযুগলং, কচিৎ কদাচিং পরিক্ষুরতি॥ ৬৬ ॥

প্ৰীভিন্নতাসুসদ্ধানং ॥ ৬৫॥

প্ৰমানতভাৱেভোকপদ্ৰবত:। উপদ্ৰবাদিতি বা পাঠ: ॥ ৬৬ n

অথ স্মৃতিঃ॥

সদৃশ বস্ত দর্শন অথবা দৃঢ় অভ্যাস জনিক পূর্বামুক্ত অর্থের বে প্রতীতি অর্থাৎ জ্ঞান, তাহার নাম স্মৃতি। এই স্মৃতিতে শির:কম্প এবং জ্ঞাবিক্ষেপাদি হইয়া থাকে। তথ্যধ্যে সদৃশদর্শননিমিত স্মৃতি যথা।

হে সুকুন্দ ! পথাক্ষী শ্রীয়াধা শ্রামবর্ণ করবা অবংশাক্ষ করিয়া ভোমাকে বারফার স্মরণ করিয়াছিলেন, ভাহাছেউই ভাহার কামবিকার অমুভব হইয়াছিল। ৬৫॥ দূঢ়াভ্যাসনিমিত স্মৃতি যথা॥

वाणि क्षेत्रोपनगढः मतार्थित ना कतिरमे टकाबाड रकान नमरत इतिशानशमानुगम वामात्र संगरत के छिनीन **43** 9

আথ বিতর্কঃ ॥
বিমশাৎ সংশ্যাদেশ্চ বিতর্ককৃত্ উচ্চাকে ।
এয ক্রেকেপণলিবোহসুলিদকালনাদিকৃৎ ॥ ৬৭ ॥
তত্ত্ব বিমদাদ্যথা বিদয়মাধ্যে ॥
ন জানীয়ে মৃদ্ধু শচুতমপি শিখ্যঃ যদ্ধিকং

বিমর্শে। হেতুপর। মণঃ। ধ্যা। পর্কটেডাছরং বহিনান ধ্যাবিতি। সংশরঃ কোটিবরং পুশ্রিবেডিন্ত্রশক্তং জানং যথা খাগুরা পুরুরো বেচিঃ। আদিগ্রহণার অভিনিংগুর বিরুদ্ধে বিশ্বাসান, যথা শুকের রজন্তবিভি। জ্যান্তর্গার জন্তবিভি। জ্যান্তর্গার জন্তবিভি। জ্যান্তর্গার জন্তবিভি। জ্যান্তর্গার বিচারে স্বিতর্ক উচাতে ইভার্থঃ। জ্যার হেতুপরামর্শানস্তরং বিচারো বাগারিগ্রহণং, যথা ধুনপরামর্শানস্তরং যত্ত ব্যাধ্বিতি যথা মহানস ইতি। জ্যাবহিন্যানিভেত্রাক্ষণো নির্ণরোধ্য জ্যাবিজ্যান্তর্গার বিচারো হেতুপরামর্শঃ। জ্যাবিশ্রাসান্তর্গার স্বাচিদ্বাতে ইন্তি। জ্যাবহিন্যানিভারক স্বাচিদ্বাতে ইন্তি। জ্যাবিশ্রাসানভারক স্বাচিদ্বাতে ইন্তি। জ্যাবিশ্রাসান

ন জানীয় ইভি। অত্ৰ ব্যাণ্ডিগ্ৰহণঃ পুৰ্পূপ্ৰাত্মভাবেন ভেরং। উদীভাষিতি

東京 からら 男

### ভাগ বিভৰ্ক ॥

বিমর্শ অর্থাৎ হেডু পরামর্শ এবং সংশয়াদি নিমিত্ত যে ভর্ক উপস্থিত হয়, তাহাকে উহ কছে। এই উহতে ক্রেক্সেপ এবং শিরঃ ও অসুশিচালনাদি হইয়া থাকে ॥ ৬৭ ॥

> ভদ্মশ্যে বিসশহৈতু বিতর্ক যথা॥ বিদক্ষমাধ্যে॥

মধ্মরত কহিলেন, বহো। ভোমার মঞ্জ ছুইছে বে সাইব্যুদ্ধ স্ত্রত প্রতিত হইয়াছে, ভাষাও ভূষি কর- ন কঠে বন্ধাব্যাং কলয়ি পুরস্তাং কৃতন্পি।
ভদূরীতঃ বৃন্ধাবনকুহরলীলাকলভ ছে
ব্দুটং রাধানেত্রভ্রমরবরবীর্ব্যোন্নতিরিয়ং॥ ৬৮॥
সংশয়াদরধা॥
আসৌ কিং ভাপিছো নহি যদমলশ্রীরিহ গতিঃ
পরোদঃ কিংবায়ং ন যদিহ নিরক্ষো হিমকরঃ।
ভগুণোহারভোদ্ধ রমধুরবংশীধ্বনিরিজো

জ্ঞাত জন্ম নির্দ্দেশক দাবহিখাথ গুনার্থনের ক্বতঃ নজুবস্কুতঃ। তক্ত স্থি ভালিদমসোদি ভানিবেলিকে ইতি বিতর্ক এব পর্যব্জতি। এবমুক্তর্কাণি জ্ঞান শিকাত চস্ত্র । আন্ত্রাধেতি নির্দান প্রকর্ণবলাং॥ ৬৮॥

জসাবিভাদি বিচারেণ পূর্বং সংশর এবাসীদিতি সমাতে সোধরং তার্লিছোঁ বা প্রোদে। বা মুকুলো বৈতি কক্ষণো স্মাঃ। তঃপিঞ্চস্য বাভ্যাদিনা দোলাকঃ বাক্তারূপা বংকিঞ্চিলাতিঃ প্রাতীয় চাং নাম। ইক্তু অবলালীঃ স্পাইটিব স্তিটিঃ

গত নহ এবং এই মাত্র কঠে যে মালা অর্পণ করিয়াছিলে ভাহাও কি তুমি জানিতেছ না ? অতএব হে বৃদ্ধর-গুড়া বিলাদি মাতক ! আমি নিশ্চয় জানিয়াছি শ্রীরাধার নেত্ররপ অধ্যযুগলই তোমাকে এ রূপ বিহবল করিয়াছে॥ ৬৮॥

সংশয়হেতু বিভর্ক যথা॥

হে দ্বি! এ কি ত্যাল বুক না, তাহা হইলে ইহার এ রূপ নির্মাল শোভা এবং গ্যনশক্তি হইবে কেন। ভুরে কি মেঘ! না তাহাও হইতে পারে না, যেহেতু ইহাতে নিক্লফ চক্র দেখিতেছি। অভ্যান হে বিধুমুখি! নিশ্চয় ত্রণং মুর্কন্যন্তের্বিধুমুখি মুক্লো বিহরতি।
বিনির্ণান্ত এবারং তর্ক ইত্তিরে পরে র ৬৯ র
অথ চিন্তা ॥
ধ্যানং চিন্তা ভবেদিন্তানাপ্ত্যনিষ্টাপ্তিনির্শিতং ।
খানাধামুখ্য-ভূলেখ-বৈশ্রেণিরিন্ত হা ইহ ।
বিলাপোন্তাপকুশতাবাঙ্গাদিন্যাদ্যোহপি চ ॥
ভত্তেন্টানাপ্ত্যা যথা জ্ঞীদশ্যে॥

ভৰা প্ৰোদে স্তপ্তধার্ভদাত কল্ডী হিনকর: সভবভূ। ইহ ভূভর্থাণি নিক্রী শক্তঃ স্প্রতীর্ভ ইতি নুস্চ সচেত্যর্থ:॥ ৬১ ॥

গ্যানমত বিচার: ০ ৩জ নিজেইানাপ্রেড্যাদিলকণ চে**জিডা ক্থাডে**বংশাক্থানমিক্যাদিনা ৫ ৭ ০ ৪

শোধ ছইতেছে যাগার মধ্ববংশীধ্বনিদারা ত্রিভূবন বিশোদ্ হিত হয় সেই মুকুদ্দই এই পর্সভাগ্রে বিহার করিভেছেন ॥

কোন কোন পণ্ডিভের মত এই সে, নিশ্চয়করণের পর

কৈ হইয়া থাকে ॥ ৬৯॥

वन हिसा॥

অভিলয়িত বিষয়ের অপ্রাপ্তি ও অনভিলয়িত বিষয়ের আপ্রি নিবন্ধন যে ভাবনা তাহার নাম চিন্তা। ইহাজে নিঃখাল, অধোবনন, ভূমিনিলারণ, নিজাশ্ন্যতা, বিলাপ, ভিডাগ, রুশতা, বাজ্প এবং দৈন্য প্রভৃতি হইয়া থাকে।
তথ্যধ্যে অভিলয়িত বিষয়ের অপ্রাপ্তি নিবন্ধন

- किला राषा ॥ -

কৃষা মুধান্যৰশুচঃ শ্বনেন শুব্যবিশ্বাধরাপি চরণেন ভূবং লিথস্তঃ।
অত্যৈক্ষণাভ্যসিভিঃ কৃচকুকুমানি
ভকুমু কস্তা উক্ত ভূগভাঃ ক্ষ ভূকীং॥ ৭০ ॥
অরভিভিরভিক্তম্য ক্ষানা প্রদোব্যদোষ্ধীঃ॥
কথমপি চিরাদধ্যাদীনা প্রঘাণমঘান্তক।
বিধুরিভমুখী ঘূর্ণভাস্তঃ প্রস্তুব চিন্তুরা।

আদোষ্ধী: তজ্ৰপৰাং সৰ্ম্মলাপি লিখ্য ভাষা কিষ্ত স্থীতাৰ্থ:। প্ৰসাধ-

# প্রদেশমে ২৯ অধ্যায়ে ২৬ স্লোকে I

জ্বীক্ষের মূপে অপ্রিয় বাক্য শ্রেণ করিয়া গোণীনিগের গুরুত্র তুংগ জমিল, অভএব শোক হইতে উলাভ নিশাল দারা যাহাতে বিষফল তুল্য অধর শুক্ত হইতে ছিল, ভাদৃশ বদন অবন্ত করিয়া তুফীস্তৃত হইয়া রহিলেন, কেবল চরণ্-দারা তুমি বিলিথিত ও অঞ্জলে কুচকুষ্ণ প্রকালিক করিছে লাগিলেন, ঐ জশ্রু দারা নয়নের কজ্জল থোক হইয়াছিল ॥ ৭০ ॥

## যথা বা ॥

হৈ স্থনাশন! তোমার স্মিগ্রন্থভাবা জননী ভোমার চিন্তার কুলা ও বিষল্প হইলা বিরতিসমূহ সহকারে কৃতি স্থেট কথকিং প্রদোব কাল অভিক্রেন করিলাছেন এবং বছ-ক্ষণ লাবং স্থ্যার সংলগ্ন বেলিকার উপার-উপার্শন করিলা অন্তরে ঘূর্বিতা ইইভেছেন। স্মৃত্ত্বৰ ক্লি স্থান্ট্র্যা! হে কিমহত গৃহং জীড়াপুক জনাপ্য বিস্থানৈ ন ৭ ট ন ।
আনিষ্টাপ্তা যথা ॥
গৃহিনি গহনরান্তলিচন্তবোজিদ্রনেত্রা
ক্রপন্ন ন মুখপলাং তপ্তবালার্লেন ।
নূপপুরমন্তবিন্দন্ গান্ধিনেয়েন সার্জং
তব ক্রডমহমেব জাক পরাবর্ত্ত্যামি ন
অথ মতিঃ ॥
শাস্তাদীনাং বিচারোপ্যর্থনিদ্ধারণং মতিঃ ।

ঞ্জিকং গৃহত্বারাগ্রনথবেদিকারপং। অব চ ( প্রবাণশত্বে ) নকারভ মুদ্ধমান্ত-ত্বেব বছুনাং মতং । ৭১ ॥

স্থান সামে সাম ন মুখপন্ন তপ্ৰাম্পানেলেডাৰ পাঠ:। জ্ৰাৰ্চ্ প্রাম্প্রিয়ানী চানানিটশ্ৰাত্ সৰ্বাধান কৰিবল প্রামিবাকলারিত ভাব:। ভ্ৰমান-বিষয়ে ভাবারাক্রিয়ান করিবল ক্ষেত্র ক্ষান্ত ভাব:। ভ্ৰমান-বিষয়ে ভাবারাক্রিয়ান করিবল ক্ষান্ত ভাবারাক্রিয়ান করিবল করিব

জ্ঞীড়ালুকা। তুমি জন্ম গ্ৰহ বিস্মৃত হটনা রছিনার্চন ৭১॥ জনিউপ্রাধি নিমিত চিন্তা যথা।

প্রজন্ম নক্ষ কহিলেন, হৈ গৃহিণি ! তুমি নিবিড় চিন্তার উলিমনেরে হইলা তথা বাজাগমূহে মুখপলাকে অলিতবুক করিও না, আদি অক্রুবের সহিত রাজপুরী গমন করিয়া শীঅ ভোষার পুক্তকে আনম্ভন করিডেছি ॥

ব্যপ্ন মতি॥

শাস্ত্রাদির বিভারোধনাম কর্যনির্ভায়ণটো মাডি করে। ইয়াতে সংশায় ও উল্লেখ্ন ভেট্ন করিব। কর্মা, শিক্তা- चित्र कर्जवरक्ष नः भः भग्न सम्प्रास्त्र ।

উপদেশ শচ শিষ্যাণা মূহাপোহাদ য়ে । হিং ॥ হং ॥ ।

যথা পাল্মে বৈশাধমাহাজ্যে ॥

वाমেহাম চরাচন্ত্র জগততে তে পুরাণাগমা∸
ভাং ভানেবহি দেবভাং পর্মিকাং জল্ল ক্ষ্যামিন ।

সিদ্ধান্তে পুনরেক এব ভগবান্ বিষ্ণুঃ সমন্তাগমন ।

ব্যাপানেমু বিবেচনব্য ভিকরং নীতে ষ্ নিশ্চীয়তে ॥ ৭০ ॥

বানেহারেতি। সর্বপুরাণাগমরূপমহাবাক। সা স্যাধিচারাযোগাপুরুষান্ প্রতি
থগুশো বদকীত্যর:। বজঃ সিদ্ধান্ত ইত্যাদি। স্যাপারা রুঢ়াদিল্ডর:।
বিবেচনং বিচার:। বাতিকর আসক তঃ নীতের তল্পাণারের নঃ সিদ্ধান্ত
ক্রিরেক এব ভগবারিশ্চীরতে। চরাচরা ক্রনাত্রে চাত্র মৃত্যা এব মন্ধ্যাধিকারিহাং শাস্ত্রাঃ এ ৭৩ ॥

দিগকে উপদেশ দেওয়া এবং তর্ক বিতর্কপ্রভৃতি হইয়া থাকে॥ ৭২॥

যথা পালে বৈশাখনাহ েক্সা ॥

যে সকল শান্তে ভগবান্ বিফুর মাহাত্মা বর্ণন নাই, মেই
সেই পুরাণ ও ভদ্তসকল চরাচর জগতের মোহের নিমিত্ত হ্য়
এরং ভাঁহারা কল্পর্যান্ত সেই সেই দেবভাকে প্রেষ্ঠ ব্লিয়া
কীর্ত্তন করে করুক। কিন্তু সমুদায় আগ্যের রুচিপ্রভৃতি
রক্তি সকলে বিচার প্রসন্ধ উপস্থিত হইলে, সেই রুঢ়াদি
রক্তিতে যে সিদ্ধান্ত নিস্পান হইল ভাহাতে এক ভগবান্
বিফুই শারাধ্যরণে নিশিন্ত হইগুরা। বুওনা,

ৰথা বা শ্রীদশসে ॥

प: নান্তদশুস্নিভিগদিতাসুভাবআত্মাজ্বদশুস্নিভিগদিতাসুভাবআত্মাজ্বদশুস্নিভিগদিতা বুডোইনি ।

হিছা ভবস্তুৰ উদীরিভকাল বেগধ্বস্তাশিষোই জ্বনাকপতীন্ কুডোইনের ॥ ৭৪ দ

অথ ধৃতি: ॥

ধৃতি: তাৎ পূর্ণভাজ্ঞানত: থাভাবোত্তমান্তিভি: ।

খং নাছেতি। কীরোদমথনাচরিতনিজচরিতমহুসন্ধার প্রীক্ষরিণাহ। পূর্ব-পূর্বমেবেদং ময়। নিশ্চিতমিত্যপলকরিত্ব তাত নাজদগুরু সর্বসলস্বাজিলাব রহিতখং গমন্তি। সলাং সংজ্যারতে কাম: কামাৎ ক্রোখেহিজিলারতে ইত্যাদি॥ ৭৪::

कारनन कर्ग्यमञ्चल्य एथ। कर्ग्यरमञ्जलम त्या कःशाकायत्वम छथा

# यथाया क्रिमणरम ७० व्यथारक ०৮ स्मिरिक ॥

ক্রণীদেবী কহিলেন বিষয়বাসনাশূন্য মুনিগণ কর্তৃক ভোষার মাহাত্ম্য কথিত হইয়াছে এবং তুমি লগতের আজা ও আত্মপর্যস্ত দান করিয়া থাক, এ নিমিত্ত ভোষার জ্রাবি-ক্লেপে উদিত কালবেগে নফীনঙ্গল, ত্রক্ষা ও স্বর্গপতি ইন্দ্র প্রভৃতিকে পরিত্যাগ করিয়াও আমি ভোষাকে বরণ করি-যাছি, অন্যের কথা আর কি বলিব ?॥ ৭৪॥

### অৰ বৃতি॥

জ্ঞান, ছঃখাভাব ও উত্তম বস্তুপ্রান্তি অথাৎ ভগবৎস্থ-জীয় প্রেম লাভ দারা সনের যে পূর্বভা (লচাঞ্ল্য) ভাহার অপ্রাপ্তাতীতন্তীর্থানভিসংশোচনাদির । ৭৫॥
তত্র জ্ঞানেন যথা ভর্ত্তরে: বৈরাগ্যশতকে ৫৬ শ্লেকিঃ॥
অশ্লীমহি বয়ং ভিক্ষামাশাবাসে। বসীমহি।
শন্লীমহি মহীপৃঠে কুববীমহি কিমীশ্বরৈ:॥ ৭৬॥
তুঃখাভাবেন যথা॥

भाक्ति क्यारकतिगृहक्षकान्त्रि

উত্তমসা ভগৰৎসৰ্কিত্যা প্রমপুক্ষার্থণা প্রেয়: প্রাথাচি হা পূর্ণণা মনসো ২চকাল্যং সাধুভিবিত্যর্থ: ॥ ৭৫ ॥

অশ্লীমহীতাত্র ভগবংসক্ষি জ্ঞানসাহার্যাং। ঈর্বরৈ রাজাদিভিঃ ॥ ৭৬ ॥ গোঠমিভি শ্রীগোঠমহেক্সবাকাং। পরঃ পরার্গাঃ পরাগতে।হসি সর্বসংখ্যা

নাম ধৃতি। ইহাতে অপ্রাপ্ত ও অতীতনক অর্থাৎ যাহা পূর্বেনক হইয়া গিয়াছে সেই বিষয়ের নিমিত ছঃথ হয় না॥৭৫॥

ভন্মধ্যে জ্ঞান দারা ধৃতি যথা বৈরাগ্যশভকে ৫৬ সোকে।
ভর্ত্বির বাক্য।

ভগবৎ সম্বন্ধি জ্ঞান লাভ করিতে পারিলে যদি ভিক্ষার ভোজন করিতে হয় সেহ ভাল, যদি বিবসনে থাকা বার সেহ উত্তম, এবং যদি ভূমিতলে শয়ন করিয়া থাকিতে হয় ভাহাও শ্রেষ্ক্রম, তথাপি ঐম্ব্যাশালি রাজাদিগের সেবার প্রয়োজন নাই॥ ৭৬॥

> সুংখাভাব নিমিত্ত ধৃতি যথা।। ংগাপরাজ নন্দ কহিলেন আমার গোষ্ঠ লক্ষ্মীদেবীর

গাবন্দ ধাবন্তি পরং পরার্দ্ধা।
পুত্রন্তথা দীব্যকির্দ্ধা
উপ্তি ম্যাভূদস্ হমেধিদৌখ্যে ॥
উত্তমাপ্ত্যা যথা ॥
হরিলীলাহ্নধাদিদ্ধোস্তট্মপ্যধিতিষ্ঠতঃ ।
মনো মন্ন চতুর্বর্গং তৃণায়াপি ন দন্যতে ॥ ৭৭ ॥ ।
অথ হর্ষঃ ।
অঞ্জীকৌকণলাভাদিজাতা চেতঃ প্রদন্মতা

ই ভার্মা কথা ড ওজ্জাঙা ত নাহ প্রস্তারেতি। যেন প্রকারেণ তত্তজ্জারতে তেইনব প্রকারেশ দিবাকর্মা পুজে। দীবাতীতার্প: স্কৃত্যি ম'মাভূদিতাত্রাভৃত্যিমর-তঃখধবংসো বাজিতঃ ॥ ৭৭ ॥

প্রসরতা প্রকাশ: প্রফুলতেতি যাবং ॥ ৭৮ ॥

ক্রীড়াগৃহ রূপে বিরাজ্যান এবং পরার্দ্ধের অধিক সংখ্যা পরিমিত গোসকলও চতুর্দ্ধিকে ধাৰমান হইতেছে, তথা তৃক্র্মা পুত্রও গৃহে ক্রীড়া করিভেছে অতএব আমি গার্হস্ত তৃথে পরিতৃপ্ত হইয়াছি ভাষাতে প্রয়োজন নাই॥

উত্তমপ্রাপ্তি নিমিত প্রতি যথা

্ আমি হরিলীলা রূপ হুধাসমুদ্রের তটে অবস্থিতি করি-তেছি, স্থতরাং আমার মন ধর্মাধ কান মোকরূপ চতুর্ব-গকে ভূণতুল্য জ্ঞান করে না॥ ৭৭॥

ত্ৰ হৰ্ম ।

व्यक्तीरिवर्गन व नावानि वनिष्ठ हिट्डत क्ष्मग्रहात नाग दर्श।

হর্ষঃ স্থানিহ রৌমাঞ্চঃ স্বেদোহক্রমৃণফুরতা।
আবেগোন্মানজড়তান্তথা মোহানয়েহিপি চ ॥
তত্তাভীটেক্ষণেন যথা শ্রীবিষ্ণুপুরাণে ॥
তে । দৃষ্ট্বা বিকদরক্রদরজঃ দ মহামতিঃ ॥
পুলকাঞ্চিত্রস্রাক্রনাক্রদর্শান্ত ।
অভীষ্টলাভেন যথা শ্রীদশমে ॥
তত্তিকাংসগতং বাহুং ক্ষুক্তোংপলদৌরভং ।
চন্দনালিপ্রকান্তার হুষ্টরোমা চুচুন্ব হ ॥ ৭৮ ॥
অথেৎস্বক্যং ॥

ইহাতে রোমাঞ্চ ঘর্ম, অঞ্চ, মুখপ্রফুল, ছরা উন্মাদ, জড়তা এবং মোহপ্রস্থাত হইয়া থাকে ॥

> তন্মধ্যে অভীষ্টদর্শন জন্য হর্ষ যথা॥ বিষ্ণুপুরাণে॥

হে মুনে! মহামতি অক্তুর রামক্ষণকে দক্ষনি করায় তাঁহার বদনপদ্ম প্রফুল্ল ও দক্ষিত পুলকাঞ্চিত হইয়াছিল॥ অভীফলাভ নিমিত্ত হর্ষ যথা॥

**জীদশমে ৩৩ অধ্যয়ে ১২ শ্লে**ণকে॥

সেই রাগম ওনীতে কোন গোপী আপনার ক্ষান্ত্রিক শীক্ষের বাই (যাহাতে উৎপালের গোরভ এক চন্দ্র লিপ্ত ছিল) আন্ত্রাণ করিয়া পুলকাকুল কলেবরে তদীর গান্যগুলে চুম্বন প্রদান করিলেন। ৭৮॥ '

काथ खेर छ कर H

কালাক্ষয়মোৎস্ক্যমিকেকাপ্তিক্র্রাদ্ভি:।

মুখলোব পরা চিন্তা নিশালন্থিরতাদিক্র ॥

ভারেক্টেক্সাম্পূর্বা বঁথা জ্ঞীদশদে॥
প্রাপ্ত নিশমা নম্বলোচন্পানপাত্রমৌহস্কাবিশ্লনিক কল্লক্ষ্যমাণ।

সদ্যো বিস্কা গৃহক্ষ পতীংশ্চ ভরে

জেইং যরু যুবিভয়ং সা নরেক্রমার্যে॥

कालाक्रमणः कांगराभनातामगम्बर्णः ॥ १३ ॥

অভীষ্ট বস্তুর দর্শনস্পৃহ। ও প্রাপ্তিস্পৃহ। নিমিন্ত যে কালবিলন্ত্রে অসহিফুতা, ভাহাকে ঔৎস্ক্য বলে। ইহাতে মুখলোষ, স্বরা, চিন্তা, দীর্ঘ-নিখাস এবং স্থিরতাদি হইয়া থাকে ॥

> ভন্মধ্যে ইফার্শন নিমিত্ত স্পৃত্য যথা॥ জ্ঞানশমে ৭১ অধ্যায়ে ২৯ স্লোকে॥

শ্রিক ধারকা হইতে ইক্সপ্রশ্বে আগমন করায় তত্ত্ব স্বভিগণ নয়নের পানীর বিষয় শরুপ শ্রীকৃষ্ণের আগমন বার্ত্তা শ্রেণ করায় উৎস্কৃতা নিবন্ধন তাহাদের কেশ ও পরিধেয় বসনের বন্ধন শ্লথ হইরা পড়িল, আনন্দে শিথিলী ক্বত বন্ত্র ও কেশ শন্ধন করিতে করিতে গৃহকর্ম এবং শ্যায় পতিকে প্রেণ নাগ করত দর্শনার্থ রাজমার্গে গমন করিতে লাগিল।। যথা বা ন্তবাৰল্যাং॥
প্রাকৃতিনিজবাসং স্মিন্ধবেণুপ্রণাদৈক্রতিগতিহরিমারাং প্রাপ্য কুল্পে স্মিতাকী।
শ্রবণকুহরকণ্ডৃং তম্বতী নঞ্জবক্তা
স্বপরতি নিজদান্তে রাধিকা মাং কদা মু॥
ইন্টাপ্তিস্পৃহা যথা॥
নর্গ্র-কর্মান্তর্গা স্থীগণে
দ্রাঘ্যত্যঘ্ররাগ্রতঃ কথাং।
গুচ্ছক-গ্রহণ-কৈত্রাদ্রো

#### যথাবা ॥

শ্রীকৃষ্ণ বংশীবাদ্যভারা স্বীয় অবন্ধিতি প্রকাশ করিলে হাজবিকসিতনয়না শ্রীরাধা ফ্রতগতি কুঞ্গৃহে গিয়া শ্রীত্বক্ষণে দেখিতে পাইলেন, ভাহাতে ভাঁহার এরপ হর্ষোদ্ম হইয়াছিল যে ভদানা ভিনি কর্ণকৃহরের কভ্যুন বিস্তার করিতে লাগিলেন, আহা! সেই শ্রীরাধা করে আমাকে স্বীর দাজ্যে নিযুক্ত করিবেন॥

ইউপ্ৰাপ্তিনিমিত্ত স্পৃহা মথা স্তৰালীতে ॥

পরিহাসকুশন স্থীগণ শ্রীকৃষ্ণের অত্যে কথা বিস্তার করিলে শ্রীকৃষ্ণ পুসান্তবক গ্রহণচ্ছলে ক্রতগতি গুহারাদেশে গমন করিলেন।

#### अब क्रिया है।

चनताम् । इक्कानिकानिक (क्रांश्रंक देशका तर्र,

গহারং ক্রতপাক্তিমং ধরো ॥
আগোগ্রাং ॥
আগাগ্রাং ॥
আগাগ্রাংক্তিলালিজাতং চণ্ডত্বমূগ্রতা ।
নধবন্ধনিরংকম্পভং সনোকাড়নাদিকং ॥
ভাত্রাপরাধাদ্যথা ॥
আলু তি সয়িবভুজলীগর্ভবিশ্রাংদিকীলো
বিরচয়তি মদীশে কিল্লিষং কালিয়োহপি ।
ভ্রভুজি বত কুলাং জাঠরে বৌষড়েনং
সপদি দক্ষহন্তঃ কিন্তু লোবাছিভেমি ॥
ভুক্তিতো ষ্থা ॥
প্রভাবত বির্ধানামগ্রিমস্থাগ্রপুজাং

ইহাতে বদ, বন্ধ, শিনঃকম্পা, ভং দন ও তাড়নাদি হইয়া। খাকে॥ "

তদাধ্যে অপরাধ্হেতু উগ্রতা যথা॥

কালিয় শ্রীকৃষ্ণকে দংশন করিলে গরুড় ক্রোধভরে অধীর হইয়া কহিলেন, কি আশ্চর্যা! যাহার প্রতাপে ভুজসীগণের গর্ভপাত হয় সেই আনি উপস্থিত থাকিতে কালিয় আমার প্রভুর প্রতি অনিষ্টাচরণ করিল অতএব ইচ্ছা হয় ক্ষণকাল মধ্যে হিশাক জাঠরানলে আহুতি প্রদান করি, কিন্তু দৈত্যারি যদি রুষ্ট হয়েন এই করে সমর্গ হইতেছিন।॥

प्रक्रिकिनिम्ब अहा स्था।

ধে ব্যক্তি, অভিশয় কীর্ত্তিশালী দেনাগ্রগণ্য দৈত্যারির ক্ষুগ্রপুদ্ধা সহুক্রিতে সমর্থ না হয়, আনি ভাহার বিস্তৃত নত- নহি দমুজরিপোর্যঃ প্রেট্ কীর্তেরিলোজুং।
কটুতর্যসদভোদ্ধতরে চি ম রাদে

শিরসি পূথুনি তদ্য ন্যুদ্যতে দ্বাপাদঃ॥ ৭৯॥
ব্ধা বা॥
রতাঃ কিল নৃপাদনে কিভিপলক্তুকোজ্বিতে
থলাঃ কুরুকুলাধমাঃ প্রভূমজাগুকোটিল্মী।
হহা বত বিভূজনা শিবশিবাদ্য নঃ শৃণ্ভাং
হঠাদিহ কটাক্ষয়স্তাথিলবন্দ্যসপ্যভূতেং॥
অধামর্যঃ॥
অধিক্ষেপাপমানাদেঃ দ্যাদ্মর্ঘোহ্দহিস্কুতা।

বভা ইতি কটাক্ষম্ভি কুটিশদৃষ্টিৰিষমীকুৰ্মতি অবজানস্ভীতাৰ্থ: । ৮০ ॥

কের উপর প্রচণ্ড যমদণ্ড অপেকাও উত্রভর এই বামপাদ নিকেপ করি॥ ৭৯॥

#### वशावा ॥

শিব শিব। লক্ষ লক্ষ ক্ষিতিপালগণ যে রাজাসন উপ-ভোগ করিয়া পরিত্যাগ করিয়াছেন, এই সকল কুরুকুলাধম তুর্জনেরা সেই রাজাসনে উপবেশন পূর্বক আজি আমানিগকে শুনাইয়া শুনাইয়া কোটিব্রহ্মাণ্ডের প্রস্তু ও সকল জনের বন্দনীয় প্রীকৃষ্ণের প্রতি ছল ক্রমে হঠাৎ কটাক্ষপাত করিতেছে, হায়! ইহার তুল্য আর বিভ্ন্থনা কি ?॥

### अथ अमर्घ।

ভিরকার এবং শপ্সানাদি জন্য অস্থিস্তার নাম অম্থ্র [ ৬৫ ] ভত্ত স্বেদঃ শিরংকম্পে। বিবর্ণছং বিচিন্তনং ।
উপারারেষণাক্রোশবৈমুখ্যোভাড়নাদরঃ ॥
ভত্তানিক্ষেপাদ্যথা বিদন্ধনাধ্যে ॥
নির্দোতানামখিলধরণীমাধুরীশাং ধুরীণা
কল্যাণী মে নিবসতি বধৃঃ পশ্য পার্শে নবোঢ়া।
অন্তর্গোঠে চটুলনটয়য়ত্ত নেত্রিভ্রভাগং
নিঃশক্ষম্বং ভ্রমদি ভবিতা নাকুলত্বং কুতো মে ॥ ৮০ ॥
অপমানাদ্যথা ॥
ক্ষম্মান্বন-ভস্কর ! জ্ঞান্মগৈহি কিং চাটুভি—

ভারাধারেতি ত্রীরাধা স্বচয়'ত ৮৮১ ॥

ইহাতে ঘর্মা, শিরঃকম্পান, বিষর্ণতা, চিন্তা, উপায়াম্মেশ, আফোশ, বিমুধতা ও তাড়না প্রভৃতি হইগা থাকে ॥ তম্মধ্যে অধিক্ষেপ নিমিত্ত অমর্য যথা —

विषक्षमाध्य ॥

জটিলা কহিল কৃষ্ণ ! নিনীক্ষণ কর, যাহার রূপমাধুর্য্যে নিথিল জগতের মধুরত। তিরছত হইতেছে, সেই নধোঢ়া বধু আমার পার্শে অবহিত রহিয়াছে এবং তুমিও এই গোকুল মধ্যে মনোহর নেত্রপ্রান্ত নৃত্যু করাইয়া নির্ভয়ে অমণ করিতেছ, স্বতরাং ইহাতে আমার ব্যাকুলতা না হইবে কেন ? ৮০॥

অপমান নিমিত অমর্য যথা।। আহে কদম্বনভক্ষর। তুমি শীত্র এন্থান হইতে প্রস্থান র্জনে ভবতি মন্বিধে পরিভবো হি নাতঃ পরং।
স্থা ব্রজমুগীদৃশাং সদসি হস্ত চন্দ্রবিদী
বরাপি বদযোগ্য়া স্ফুটমদৃষি ভারাখ্য়া ॥
আদিশবাদঞ্চনাদপি যথা খ্রীদশমে ॥
গতিস্ভাস্থ্যাজ্যত্বান্ধবা—
নতিবিদন্তবোদগীত্বোহিতাঃ
কিতব যোষ্ডিঃ কস্তাকেন্দিশি ॥

কর, আর চাটুবাক্যে প্রয়োজন নাই, মাদৃশ জনে ইহার তুল্য পরাভব আর কি আছে ? হায় ! চন্দ্রাবলী প্রধানা হটলেও তুমি কি প্রকায়ে ব্রজহরিণলোচনা দিগের সভায় স্পাইক্রপে অযোগ্য রাধা নাম দ্বারা তাহাকে দূষিত করিয়াছ ॥

> আদিশক প্রযুক্ত বঞ্চনানিমিত্ত অসর্য বংগা॥ জীদশমে ৩১ অধ্যায়ে ১৬ শ্লোকে॥

কৃষ্ণ !তেমার অদর্শনে অতুল তুংথ এবং দর্শনে পরম হথ প্রত্যক্ষে নিরীক্ষণ করিয়া পতি, পুত্র, জ্ঞাতি, জ্রান্ত্র, বান্ধব সম্দার পরিত্যাগ করিয়া আমারা তোমার সমীপে আমি-রাছি। হে অচ্যত ! তুমি আমাদের আগমন কারণ জান, ভোমারই উচ্চ গীতে আমরা মোহিত হইয়ছি। হে কিতব ! রাত্রিকালে স্বয়ং আগতা এবস্থিধ যোষিৎদিগকে ভোমা ব্যতিরেকে কোন্ পুরুষ পরিত্যাগ করে ? অর্থাৎ কেইই করে না। অধাসুৱা ॥

বেষং পরোদরে হসুরা স্থাৎ সৌভাগ্যগুণ দিভি:।
ভব্রের্যানাদরাকেশা দোষারোপো গুণেষ্ঠিয় ॥
ভাপরতিন্তিরো বীকা ক্রেৰোর্ভসুরভাদয়: ॥
ভব্রান্যসৌভাগ্যেন যথা পদ্যাবল্যাং ॥
আ গর্কমুদ্ধ কপোলতলে চকান্তি
কৃষ্ণ সহস্তলিখিতা নবমঞ্জরীতি।
ভান্যাপি কিং ন স্থি ভাজন্মীদৃশীনাং
বৈবী ন চেন্তব্যতি বেপথুরস্তরায়:॥

## অথ অসুয়া।।

সৌভাগ্য এবং গুণাদি দ্বারা পরের উন্নতি বিষয়ক বেদ্ধ করার নাম অসূয়া, ইহাতে ঈর্ধা, অনাদর, আক্ষেপ, গুণ-সকলে দোষারোপ, অপবাদ, বক্রদৃষ্টি ও জ্রাকৃটিল প্রভৃতি হইয়া থাকে॥

> তন্মধ্যে অনোর গৌভাগ্যনিমিত্ত অসূয়া যথা পদ্যাবলীতে॥

স্থি! শ্রীকৃষ্ণ সহস্তে তোমার কপোলদেশে তিলক লিথিয়াছেন বলিয়া তুমি গর্বিতা হইও না, ইহাদের মধ্যে অন্যের কি আর এরূপ সেভিন্য হয় নাং তিলক লিথিতে লিথিতে তদীয় সোন্দর্য্যে মুগ্ধ ছইয়া শ্রীকৃষ্ণের হস্তকম্পন রূপ বিদ্ন যদি শক্তে না হয়, তাহা ছইলে অন্যেও সৌভাগ্যবতী ছইতে পারে অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ ভোগা অপেকা অন্যের সৌন্দর্য্য দর্শনে মুগ্ধ ছইয়া পড়েন, স্তরাং এরূপ লিখিতে সমর্থ ছয়েন না॥ যথাবা শ্রীদশমে॥
তক্ষা অসূনি নঃ কোভং কুর্বস্তাকৈঃ পদানি বং।
বৈকাপছত্য গোপীনাং ধনং ভুঙ্ কেেইচুতোধরং॥
তব্যন যথা॥
ব্যাং পরাজ্ঞরং প্রাপ্তান্ কুষ্ণপক্ষান্ বিজিত্য নঃ।
বলিষ্ঠা বলপক্ষাদেচদ্ব্রলাঃ কে ততঃ কিতোঁ॥
অথ চাপলং॥
রাগদ্বোদিভিশ্চিত্তলাঘবং চাপলং ভবেং।
তত্রাবিচারপাক্রয়স্বছলাচরণাদয়ঃ॥

যথাবা জ্রীদশমে ৩০ অধ্যায়ে ২৬ ক্লোকে॥
অন্য গোপীগণ কহিতে লাগিলেন, হে স্থাইন্দ! সেই
রমণীর এই সকল পদচিহ্ন আমাদের অভিশয় তুঃথ জ্ঞুমাইভেছে, কারণ সে একা গোপীদিগের স্ক্রিয়া
নির্জনে জ্রীকুষ্ণের অধ্যক্ত্র্ধা পান করিতেছে॥

গুণহেতু অসূয়া যথা॥

আমরা ক্ষণেক, স্বয়ং পরাজয় প্রাপ্ত হইয়া র**হিয়াছি,** আমাদিগকে জয় করিয়া যদি বলদেবের পক্ষ ব**লিন্ঠ হর,** ভাহা হইলে এ ভূমণ্ডলে ভূসলি আর কে হইবে॥

তাথ চাপল॥

রাগ ও দেয়াদি নিমিত চিতের যে শযুতা ভাহার নাম চপলতা। ইহাতে অবিচার, নিষ্ঠুর বাক্ষা ও বিচ্ছেলচারিভা প্রভৃতি হইরা থাকে॥ ভত্ত নাগেণ যথা খ্রীদশমে॥
খেডাবিনি স্বমজিভোদ্ধনে বিশ্বর্জান্
গুপ্তঃ সমেত্য পৃতনাপতিভিঃ পরীতঃ!
নির্দ্মথ্য চৈদ্যমগধেশ—বলং প্রস্থ
মাং রাক্ষদেন বিধিনোদ্ধ বীর্যাশুক্ষাং॥
খেবেণ যথা॥
বংশীপুরেণ কালিন্দ্যাঃ সিদ্ধুং বিন্দুত্ব বাহিতা।
শুরোরপি পুরো নীবীং যা ভ্রংশয়তি স্কুক্রবাং॥ ৮১॥
স্বর্থ নিদ্রো॥

ভন্মধ্যে রাগনিমিত্ত চপলতা যথা॥ শ্রীদশ্যে ৫২ অধ্যায়ে ৩৩ শ্লোকে॥

হে অজিত। কল্য বিবাহের দিন, অতএব তুমি প্রথমে গোপনে বিদর্ভে আগমন পূর্বক পরে সেনাপতিত্বে পরির্ভ হইয়া চৈদ্যাধিপতি ও মন্ধ্রাজের বল সমুদায় নির্মন্থন করত হঠাৎ বীহ্য স্বরূপ শুক্ত ছার। রাক্ষ্য বিধান অনুসারে আমাকে বিবাহ কর॥

ৰেষ নিমিত্ত চপলতা যথা

বংশী কালিশীর প্রবাহ দারা সমূদ্রে গিয়া প্রবেশ করুক, যে হেডু ঐ বংশী শুরুজনের সম্পে স্ন্রীগণের নীবীবন্ধ, মোচন ক্রিয়া দেয়॥ ৮১॥

অথ নিজা 🛭

চিন্তালস্ত- নিদর্গ-ক্লমাদিভিশ্চিন্তমীলনং নিদ্রা।
তত্তাক্সভঙ্গ-জ্ঞা-জাড্য-শ্বাদাক্ষিমীলনানি স্ত্যঃ ॥
তত্ত চিন্তরা যথা ॥
লোহিতারতি মার্তত্তে বেণুধ্বনিমশৃণ্ভী।
চিন্তরাক্রান্তহৃদয়া নিদক্রো নন্দগেহিনী॥
আলদ্যেনন যথা ॥
লামোদরদ্য বন্ধনকর্মভি----রতিনিঃসহাক্লন্তিকেয়ং।
দরণিঘূর্ণিতোত্তমাক্রা

চিত্তপা শীলনং বহিবু ভাভাব: ॥ ৮২ ॥

চিন্তা, আলদা সভাব ও শ্রমাদি ধারা চিত্তের যে মীলন অর্থাৎ বাহ্তবৃত্তির অভাব তাহার নাম নিদ্রা, ইহাতে আঙ্গ-ভঙ্গ, জ্ডা, জড়তা, নিখাদ ও নেত্র নিমীলন প্রভৃতি হইরা থাকে ॥

**जन्मरक्षा हिन्छ। निश्चित्र नि**ष्ठा यथा॥

সূর্যদেষ লোহিওবর্ণ হ'ইলে বেণুধানি প্রবণ করিতে না পাইয়া নন্দপত্নী যশোদা চিন্তাকুল চিত্তে নিদ্রায় অভিত্ত হুইলেন।

আলভনিসিত নিদ্রা যথা॥

যাহার অপলতিকায় কিছুমাত্র সহু হর না, টেস্ট ত্রতে-শরী যশোলা জীকুঞ্চক বন্ধন করাতে, তাঁহার সন্তক্ত ঘূর্ণিত কৃতাঙ্গভঙ্গা অজেখনী ক্ষুন্তি॥
নিদর্গেণ যথা॥
অথহন তব বীর্যাপ্রোষিতাশেষচিন্তাঃ
পরিহৃতগৃহবাস্তদ্বারবদ্ধাসুবদ্ধাঃ।
নিজনজনিহ নাত্রো প্রাঙ্গণং শোভয়স্তঃ
হুখনবিচলদগাঃ শেনতে পশ্য গোপাঃ॥
কনেন যথা॥
সংক্রোন্তধাতুচিত্রা স্থনতান্তে গা নিভান্তভান্তাদ্য।
বক্ষদি নিক্ষিপ্রাস্থা হবে বিশাখা যয়ে নিজাং॥ ৮২॥
যুক্তাদ্যক্তৃতিমাত্রেণ নির্বিশোষেণ কেনচিৎ।

নশু পূর্বং চিত্তমীলনং নিজেত্যক্তং সাচ তমোগুণেন চিত্তবৃত্তিকৈপৈৰ ও অঙ্গসকল বিবশ হইয়াছিল ॥

স্বভাব নিমিত্ত নিদ্রো যথা।।

হে অঘনাশন! তোমার পরাক্রমে অশেষ চিন্তা দ্রীভুত হওয়ায় গোপগণ গৃহছার বন্ধনের অনুরোধ পরিত্যাগ করি-রাছে এবং রজনীযোগে স্বীয় স্বীয় প্রাঙ্গণ স্থাপাভিত করত বিশ্চলাকে স্থাপে শরন করিয়া রহিয়াছে, অবলোকন কর।

खमरहणु निजायथा।

বিশাধা আল্য সম্ভোগান্তে কৃষ্ণাঙ্গ ধৃত গৈরিকাদি ধাতু দারা চিত্রিতা হইয়া ভদীয় বক্ষান্তলে অসনিকেপ পূর্ব্বক হথে নিদ্রা যাইভেছে। ৮২ ॥

कितिरण्त कारत (व क्लानकरण क्लिक्टक्क क्लिक्टिक्टिक

ৰন্মীলনাৎ পুৰে। হৰন্থা নিজা ভক্তেৰু কথাতে ॥ ৮৩ ॥ তথ্য হুপ্তি:॥

প্রাসিদ্ধা সাচ পরমন্ত কানাং ন সন্তথিত গুণাভিত চিত্ত ৰাং। তহি কেন তদাবুরিরিরং নিজা তথাই বুক্তেতি। আলা শ্রীকৃষ্ণসা উত্তমন্ত কানাং তগবংসমাধি রূপের নিজা নতু প্রাকৃতী বুজাত ইতি ভাবং গুণাতী ভভাবছাং। যথোকং গান্ধড়ে। জাগ্রংম্ব রুপ্রেরু বোগস্থসা চ যোগিন:। যা কাচিমানসো বুলি: সা ভবেদচাত প্রামা। অভএব শ্রীকৃসা ফুনিম্ব হাফ্মীলনাং প্রোধ্ব হৈব নিজোচাতে নতু জ্মীলনমাতং। বভু প্রাং চিত্তমীলনং নিজেত্যুক্তং তৎ ধ্বাপাভত এব নিবোধারেতি ভাবং॥ ৮৩॥

নিজারা এবাবস্থাবিশেষে সংজ্ঞান্তরমাহ হৃপ্তিরিভি। বিবিধো ভাবো ভাবনা

হামীলনের অর্থাৎ চিত্তর্ভিশ্ন্যের পূর্ব্ববিস্থাকে নিদ্রাবলে।
তাৎপর্য্য। নিজা তমোগুণ ভারা চিত্তের চেকটা শূন্য
রূপে প্রাণিদ্ধ আছে কিন্তু ইহা একান্ত ভক্তে সন্তব হয় না,
কারণ ভক্ত সকলের চিত্ত গুণাতীত, যদি বল তবে নিদ্রা
হর কেন, ভাহার উত্তর এই, প্রীক্ষেত্রর উত্তম ভক্ত সকলের
ভগবৎ সমাধি স্থরূপকেই নিদ্রা বলা যায়, নতুবা প্রাক্তি
নিদ্রা ভক্তে সন্তব হয় না। এই বিষয়ে গরুড় পুরাণের বচন
এই বে জাগ্রৎ স্বপ্ন ও স্বয়ুপ্তি দশায় যোগযুক্ত যোগির যে
কোন মনের বৃত্তি,ভাহা অচ্যুতাপ্রয় হইয়া থাকে, এই কারণে
ভগবত্তের প্রাকৃতী নিদ্রা নাই, তবে যে দেখা যায় ভাহা
কেবল ভগবৎসমাধি মাত্র॥৮০॥

অণ হুপ্তি॥

হৃতি নিত্রা বিভাষা স্যান্ত্রানার্থাকুভবাজ্মিকা।
ইন্দ্রিয়োপরতি-খাস্কনেত্র-সংমীলনাদির ৭ ॥ ৮৪ ॥
যথা ॥
কামং তামরসাক্ষকেলিরভিতঃ প্রাতৃক্কৃতা শৈশবী
দর্পঃ সর্পাতেন্তদ্দ্য তরসা নির্দ্ধির যুতামূল্প রঃ ॥
ইত্যুৎস্বপ্রগিরা চিরাদ্যত্সভাং বিস্মান্ত্রয়ন্ স্মান্তর্যান্ত্রস্কুলরং নিদ্রাং গতো লাঙ্গলী॥ ৮৫ ॥

ৰদ্যাং সা বিভাষা ন কেবলং তাদৃশী অপিতৃ নানার্থেত্যাদি বিশিষ্টা চ অভন্ত-বিধিব নিজা স্থান্থিঃ স্থপ্ন উচাতে ইত্যর্থ: ॥ ৮৪ ॥

কেলিবিভতি: ক্রীড়াবিভার:। কেলিরহিভ ইতি পাঠন্চ সক্ষত:। কেলি
শক্ষা স্ত্রীত্মপি দৃশ্যত ইতি। তথাজুমাণতিধর:। রক্ষছারাচ্ছুরিভজনধাবিভানে রাধাকেলীপবিমল্ভর্ধানমৃচ্ছ্ মুরারেরিভি। বহুসভাং ভল্ভঃসভাবামিনং কির্ভুম্পি বহুগণং বিভাগরংশ্চ ॥ ৮৫॥

নানা প্রকার চিন্তা ও নানা বিষয় অনুভব স্বরূল নিদার নাম হাপ্তি অর্থাৎ স্থা। ইহাতে ইন্দ্রিরের অবসমতা, নিশাস ও চক্ষু নিমীলনাদি হইয়া থাকে॥ ৮৪॥

#### যথা ॥

হে পদ্লোচন ! তুমি বাহুকির দর্প থর্ব করিয়া সম্পূর্ণ রূপে বাল্য ক্রীড়া বিস্তার করিয়াছ, এই রূপ স্বপ্ন বাক্য দারা বলদেব যতুগভাকে বিস্মিত ও হাদ্যযুক্ত করিয়া নিখাদ বেগ দারা ঈষৎ উদরের তরঙ্গ বিস্তার করত হৃথে নিজা বাইডে-দাগিলেন ॥ ৮৫॥ অথ বেধিঃ ॥

অবিদ্যানোহনিদ্রাদেধ্ব ংসোম্বোধ: প্রবৃদ্ধতা ॥ ৮৬ ॥ ভতাবিদ্যাধ্বংসতঃ ॥

व्यविन्राध्वः मर्ला ८वारमा विरन्तान्यश्वः मतः ।

অশেষক্রেশবিজ্ঞান্তিস্বরূপাবগমাদিকুৎ॥ যথা॥

প্রবৃত্ত জানাবির্ভাব: ॥ ৮৬ ॥

শবিদাধ্বংসত ইত্যাত্র বোধস্বস্পদার্থলক্ষিত্র তংগদার্থলক্ষিত্র চ জ্ঞানং স্বরূপবিগমন্তরে রভেদজানং বিদ্যা তেরু নিদিধাাসনরপং সাধনং প্রথমং নিদিধাাসনং জন্মাদবিদ্যাধ্বংসন্ততঃ ক্রমাং পদার্থবিষ্কানং ভতন্তরে রিজেদ্জানমিতি ক্রমে। জ্ঞেনঃ অবিদ্যাধ্বংসতো যো বোধঃ স বিদ্যোদ্যপুরংসরো ভ্রতি সচাপেবক্রেশবিশ্রান্তি র্যত্র ভাদৃশস্বরূপবিগমাদিকুত্তবতীত্যয়ঃ। আদি প্রহণাত্তকাববোধকুত্বতীতি জ্ঞেনঃ। এবস্থৃতো বোধঃ থলু কেবাঞ্চিত্তকিসহারো ভ্রতীতি সঞ্চারীভার্থঃ। ব্রহ্মভূতঃ প্রসন্মান্তি শ্রীগীভান্তাঃ ॥ ৮৭ ॥

## অথ বোধ ॥

অবিদ্যা ( অজ্ঞান ) মোহ ও নিদ্রাদির ধ্বংস জন্য হে প্রবৃদ্ধতা অর্থাৎ জ্ঞানাবির্ভাব তাহার নাম বোধ॥ ৮৬॥

অবিদ্যাধ্বংসনিমিত্ত বোধ যথা॥

অবিদ্যা ধ্বংস হইলেই বিদ্যা শক্তিকে অগ্রে করিয়া। বোধের উদয় হয়, এই বোধ অশেষ ক্লেশের নির্বার্থ এবং জীব ও পরমেশ্বর তত্ত্ব বোধ করায়॥ বিন্দন্ বিদ্যাদীপিকাং শ্বস্ত্রপং
বৃদ্ধা সদ্যঃ সত্যবিজ্ঞানরূপং।
নিম্প্রভূহন্তং পরং ত্রক্ম মূর্ত্তং
সাম্রানন্দাকারমন্বেষয়ামি॥
মোহধ্বংসতঃ॥
বোধো মোহক্ময়াচ্ছকগদ্ধস্পাদরিসেইরেঃ॥
দৃগুন্মীলনরোমাঞ্চধরোপানাদিক্তবেং॥৮৭॥
তত্র শব্দেন যথা॥
প্রথমদর্শনরূত্রপ্রথাবলীক্বলিতেন্দ্রিয়র্তিরভূদিয়ং।

ইয়ং শ্রীরাধা। অঘভিদ ইতি পূর্মতা পরত চারিতং ॥ ৮৮ ॥

আমি বিদ্যাদীপকে লাভ করত সত্য বিজ্ঞান রূপ স্বীর স্বরূপকে অবগত হইয়া নির্বিছে সেই মূর্তিমান্ পরত্রক্ষাকে অস্থেষণ করি॥

(मोर स्वंश्माद्यु द्यांध ग्या ॥

মোহ বিন্ত হইলে শব্দ, গদ্ধ, স্পাৰ্শ ও রস্থারা ভগনি-বয়ক জ্ঞান হয়। ইহাতে রোমাঞ, চক্ষ্ উন্মালন ও পৃথিবী হইতে উত্থানাদি হইয়া থাকে॥

ভন্মধ্যে শব্দনিমিত্ত বোধ যথা।।

শ্রীরাধা প্রথম শ্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিয়া যে স্থপমূহ জ্বতু-ভব করিয়াছিলেন, তাহাতেই তাঁহার ইন্দ্রিরের রুত্তি সকল বিলুপ্ত হইয়াছিল, পরে ললিডা যথন ত্রদীর কর্ণে কৃষ্ণনাম অঘতিদঃ কিল নাম্যুদিতে শ্রুণতো ললিতয়োদনিমীলদিহাকিণী ॥ ৮৮ ॥ গদ্ধেন যথা ॥ আচরমঘহরেণ ত্যাগতঃ শ্রুন্তগাত্রী বনভূবি শবলাঙ্গী শাস্তনিশাসর্তিঃ। প্রাকৃততমুরেষ। পাংশুপুঞ্জাত্দশ্বাৎ ॥ ৮৯ ॥ স্পর্শেণ যথা ॥ অসে পাণিস্পর্শো মধ্রমস্ণঃ কন্স বিজয়ী

অচিরমিতি। কদাচিৎ পরিহাসপূর্বক-শ্রীকৃষ্ণান্তর্দ্ধানে চরিতং ॥ ৮৯ ॥

কীর্ত্তন করিলেন তথনই তিনি (ললিডা) লে।চনম্বয় উশ্মীলন করিয়াচিলেন ॥ ৮৮ ॥

গন্ধনিমিভ বোপ যথা॥

স্থি ? একদা ঐক্সি পরিহাস ছলে ঐরাধাকে কছি-লেন প্রিয়ে ? আমি তোমাকে পরিত্যাগ করিলাম এই বলিয়া অন্তর্দ্ধান হইলে ঐরাধা তৎক্ষণৎ ক্ষণ্ড্যাগ নিমিন্ত বিবর্ণা হইয়া বনভূমিতে পতিত হইয়াছিলেন এবং তৎকা-লীন তাঁগের নিখাসম্ভ একরপ শান্ত হইয়াছিল, অনন্তর বন্মালার প্রেরণীল সৌরভে পুল্কিভাঙ্গী হইয়া ঐ দেশ শাংশুপুঞ্চ হইতে গাত্রোখান করিলেন॥৮৯॥

স্পার্শনিমিত বোধ যথা॥ স্থি ! এ কোন্ ব্যক্তির হস্তস্পার্শ, ইহা যে অভিশন্ন মধুর বিশীর্ষ্যাঃ সৌরীপুলিনবনমালোক্য সম যা।
ছরস্তানুদ্ধ প্রসভমভিতো বৈশসম্মীং
ক্রেন্তং মুর্চ্ছামন্তঃ দথি স্থপ্রাীং পল্লবয়তি ॥ ৯০ ॥
রসেন যথা ॥
অন্তর্হিতে হয়ি বলাকুজ ! রাদকেলো
শ্রেন্তান্তর্হিজনিক দথী বিদংজ্ঞা
ভাস্বলচর্বিভমবাপ্য ভবাস্থ্রাক্ষী
নাস্তং ময়া মুথপুটে পুলকোজ্জ্লাসীং ॥

মধ্র: শ্বভাবাদেবানন্দ্রায়ক: মস্পন্ধচো গুণত: কোমলা। প্রবন্ধতীকি শ্রহমানসামীপো বর্তমানবল্ব: ॥ ১০ ॥

ভাষু লেষু যচ্চবি তিং তদবাপ। সম্ধাবিবক্ষা ষ্ঠা। স্ক্ৰিক্তং **মুখ্যমু প্ৰতি**-প্ৰা গৌরী, ভাষু লমপিতিমূল্প্ৰত্যা চিচেত। ইতি পাঠা**স্থ**া ১১ ॥

এবং সর্বময়ী, আমি ষমুনাপুলিনস্থ বন অবলোকন করিয়া বিশীর্ণ হইতেছিলাম এমত সময়ে ঐ স্পর্শ বলপূর্বক পীড়া-ময়ী তুরস্ত মূচ্ছাকে বিন্তু করিয়া স্থময়ী মূচ্ছাকে অঙ্ক্রিত করিয়াদিল॥ ১০॥

## রসনিসিত্ত বোধ যথা॥

হে বলামুজ ! তুমি রাসক্রীভায় অন্তর্জান হইলে প্রিয়স্থী
কৃতলে পতিত হইয়া জ্ঞানশূন্য হইয়াছিলেন, পরে আমি
তোমার চর্বিত ভাষ্বপ্রাপ্ত হইয়া তদীয় মুখপুটে অর্পন
করিলে তাহাতেই পদান্যনা পুলকাকুল কলেবর হইয়াছিশেন ॥

নিদ্রাধ্বংগতঃ ॥
বোধো নিদ্রাক্ষয়াৎ স্বপ্প-নিদ্রাপুর্তিস্বনাদিভিঃ
অত্রাক্ষি-মর্দ্দনং শয্যামোক্ষোহঙ্গবলনাদয়ঃ ॥
তত্র স্বপ্রেন যথা ॥
ইয়ং তে হাসপ্রী বিরমতু বিম্ঞাঞ্জামিদং
ন যাবদ্ধায়ৈ স্ফুটমভিদ্ধে ছচ্চটুগতাং ।
ইতি স্বপ্রে জল্লন্ডাচিরমববুদ্ধা গুরুমগে
পুরো দৃষ্ট্বাণিরী নমিতমুধ্বিদ্ধা মুত্রভূৎ ॥
নিদ্রাপূর্ত্তা যথা ॥

নিদ্রাধ্বংদনিমিত্ত বোদ যথা।।

স্বপ্ন, নিদ্রার পূর্ণতা ও শব্দাদি ঘারা নিদ্রা ক্ষর হ্**ইলে,** বোধ হয়, ইহাতে চক্ষুমর্দন, শ্য্যাত্যাগ এবং **অঙ্গবলন** অর্থাৎ গাত্রমোড়া প্রভৃতি হইয়া থাকে॥

তশ্বধ্যে স্বপ্নহৈতু বোধ যথা॥

অহে কৃষ্ণ ! তুমি আর পরিহাস করিও না ক্ষান্ত হও,
বস্ত্রাঞ্চল ত্যাগ কর, নতুবা আমি নিশ্চয় বলিতেছি র্দ্ধার
নিকট তোমার এই চপলতা প্রকাশ করিব, স্থপ্লে এই কথা
বলিতে বলিতে শ্রীরাধা অকস্মাৎ জাগরিত হইয়া সন্মুখে
গুরুজন অবলোকন করত শজ্জার বদন অবনত করিয়া
রহিলেন॥

্ নিদ্ৰাপূৰ্ণহৈতৃ বোধ যথা।

দূতী চাগান্তদাগারং জঞ্জাগার চ রাধিকা।
তূর্ণং পুণ্যবন্তীনাং হি তনোতি ফলমুদ্যসং ॥
স্থানন যথা ॥
দূরান্তিনাবয়নিদ্রামরালী র্গোপস্থ ক্রেবাং।
সারক্ষরক্ষদং রেজে বেণুবারিদগর্জিতং।
ইতি ভাবান্তর্যন্তিংশং কথিতা ব্যভিচারিশং।
ক্রেষ্ঠমধ্যকনিষ্ঠেষ্ বর্ণনীয়া যথোচিতং।
মাংসর্ব্যোন্তেগদক্তের্যা বিবেকো নির্গন্তথা।
ক্রৈব্যং ক্ষমা চ কুতুকমূৎক্তা বিনয়োহ্পি চ।
সংশয়ো ধার্ট্রমিত্যাদ্যা ভাবা যে স্থাঃ পরোহ্পি চ।

যথন গৃহে দূতী আদিয়া উপস্থিত হইলেন শ্রীরাধাও তথনি জাগরিত হইরাছিলেন, যাহা হউক পুণ্যবভীদিগের উদ্যুম শীঘ্রই ফল সাধন করে॥

भक्टरू दाध यथा ॥

ক্রন্তরঙ্গরে মুরলীরূপ বারিদ গর্জন গোপফুন্দরীদিগের নিজ্ঞারূপা হংগীকে দুরীকুত করিয়া বিরাজিত হইয়াছিল॥

এই ত্রেমন্ত্রংশৎ ব্যক্তিচারি ভাব কথিত হইল, উত্তম, মধ্যম ও কনিষ্ঠ ভেদে উক্ত ভাব সকলকে যথাযোগ্য বর্ণন করা কর্ত্তব্য ॥

সাৎসর্য্য, উদ্বেগ, দম্ভ ঈর্যা, বিবেক, নির্ণয়, বিক্লবতা, ক্ষমা, কোতৃক, উৎকণ্ঠা, বিনয়, সংশয় ও ধৃইতা প্রভৃতি বৈ সকল অভিনিক্ত ভাব আছে, ভৎসমুদায়কেও পূর্ব্বোক্ত

# দকিণ। ৪র্থ বছরী। ভবিতরশায় চলিছা।

উক্তেম্বন্ত করীতি ন পৃথক ছেন দর্শিতা: ॥ ৯১॥
তথাহি ॥
অসূরারান্তমাং সর্যায় তাদেহপুদ্ধেগ এব তু।
দন্ততথাবহিত্থারামীর্যামর্ষে মতাবুড়ো।
বিষেকো নির্নিশ্চমো দৈন্যে ক্লৈব্যং ক্লমাপ্নতো।
তংক্তের কুতুকোংগে লজ্জায়ং বিনয়তথা।
সংশ্রোহন্ত ভবেত্তে তথা ধার্ম্য ক্লাণ্ডে।

অত্যায়ামিত্যাদিযু পরোদয়ে বেষো মাংসর্যাং স এব গুণেছপি দোষারোপ-ণায়ামব্যভিচারিছাদত্মেতি। তভিদাদিতিঃ সহসা ভরং তাসং তথাসহি-ফুত্বমূরেগ ইতি। আকারগুপ্তিরবহিখা। দক্তত্সতঃ স্থীয়েতসম্বস্থ ব্যঞ্জনং তথাত্ত্রমণি কণ্টময়মিতি। প্রাণ্রাধাসহন্মমর্বঃ প্রোংক্র্যাস্থ্ন-

ভাব সকলের অন্তর্বর্তি জানিতে হইবে, এ কারণ আর পৃথক্ উদাহরণ করা হইল না॥ ৯১॥

উক্তার্থের প্রমাণ।

অদ্থাতে মাৎদর্য্য অস্তত্ত আছে, কারণ, পর প্রীতে দেষ করার নাম সাংদর্য্য, আর পরওণে দোষারোণের নাম অদ্যা, স্তরাং মাংদর্য্য ও অদ্যা এই তুইয়ে পরস্পর ভেদ নাই। অপর বিহ্যুদাদি নিমিত্ত সহদা যে ভয় হয় তাহার নাম ত্রোদ এবং ঐ ত্রোণে অদহিকুতার নাম উদ্বেগ অতএব ত্রোদের মধ্যেই উদ্বেগ অস্তত্ত হইয়াছে। আকার গোপনের নাম অবহিত্থা এবং শীয় উত্তমতা প্রকাশের নাম দন্ত, এই উভয়ই কপ্রময়, স্বতরাং অবহিত্থাতে দন্ত অন্তর্ত হইয়া রহিয়াছে। এবাং সঞ্চারিভাবানাং মধ্যে কণ্চন কস্তাচিৎ।
বিভাবশ্চাসুভাবশ্চ ভবেদত্র পরস্পারং।
নির্কেদে তু যথেষ্যায়া ভবেদত্র বিভাবতা।
অসুয়ায়াং পুনস্তস্থা ব্যক্তযুক্তাসুভাবতা।
উৎস্কর্যং প্রতিচিন্তায়াঃ কথিতাত্রাসুভাবতা।
নিদ্রাং প্রতি বিভাবত্বমেবং জ্রেয়াঃ পরেহ্পামী।
এষাঞ্চ সাহিকানাঞ্চ তথা নানাক্রিয়াডতেঃ।

দীধা। তদেতত্ভ্যমণাসহনাক্সমিতি। অর্থনির্দ্ধারণং মতিতদেব নির্ণর:।
ভসা কারণং বিচারস্ত বিবেক:। সোরং কারণ্যায়াতাবহুম্মুত ইডি ।
আাল্মনাভিনিক্সটভামননং দৈনামহুংসাহ: কৈবাং। তত্তু তদক্সমেবেডি।
মনসোহচাঞ্চাং ধৃতি:। ক্ষমাতু সহিফ্রং তদক্সমেবেডি। কাল্যাপনারা

পরের অপরাধ অসহনের নাম অমর্য, পরের উৎকর্ষ অসহনের নাম ঈর্যা। এই উভয়ই অসহা কর্প, হাডরাং অমর্যে ঈর্যা। অন্তর্ভ হইয়াছে। অর্থ নির্দারণের নাম মতি ও মতির নামই নির্পার, নির্পারের কারণ বিচার এবং বিচারের নামও বিবেক, হাডরাং নির্পারেতে বিবেক অন্তর্ভু ত হইয়া রহিয়াছে। অপর আপনাতে নিকৃষ্ট জ্ঞানের নাম দৈন্য এবং অমুৎসাহের নাম কৈব্য, হাডরাং দৈন্যে কৈব্য অন্তর্ভু আছে। মনের অচাঞ্চল্যের নাম গ্রন্থি এবং সহিষ্ণুতার নাম ক্ষমা, হাডরাং ক্ষমা গ্রন্থ অন্তর্ভু বিহাছে। কাল্যাপনে অসমর্থতার নাম গ্রির অন্তর্ভু ত রহিয়াছে। কাল্যাপনে অসমর্থতার নাম প্রতর্গ এবং আশ্চর্য্য দর্শনের নাম কুতুক, কোন সময়ে কুতুকও ঔংহ্বের কারণ হয়, এ নিমিত্ত ঔৎহ্বক্যে কুতুক

কার্য্যকারণভাবস্ত জ্ঞেয়: প্রায়েণ লোক ত:। নিন্দায়াস্ত বিভাবস্থং বৈবর্ণ্যামর্যয়োর্মতং। অসুয়ারাং পুনস্তস্তাঃ কথিতৈবামুভাবতা।

মসমর্থন্থমোংস্কাং আশ্চর্যাদর্শনেছে। কুঠুকং ভচ্চ কচিত্তৎকারণাভ্তাস্থ-স্থাভং স্যাহৎকণ্ঠাচ ভটসাৰ সন্মাবদ্ধেতি। লজ্জারামপি বিনয় আৰম্ভক-

অস্তত্তি আছে। উৎস্কোর সূক্ষাবস্থার নাম উৎকণ্ঠা, স্তরাং উৎস্কো উৎকণ্ঠাও অস্তত্তি আছে। লক্ষাতে বিনয়ের আবশ্যকতা, একারণ লজ্জাতে বিনয় অস্তত্তি আছে। সংশয় তর্কের অস্তত্তি, ধৃষ্টভার পরেই চপশতা হুইয়া থাকে, স্তরাং চপল্ডায় ধৃষ্টভা অস্তত্তি আছে॥

উক্ত সঞ্জি ভাব সকলের মধ্যে যে সমূলার ভাব অস্ত-ভূতি আছে তাহাদের মধ্যে কেহ কাহারও সম্বন্ধে প্রক্রার ভাব ও অমুভাব হইয়া থাকে॥

নির্কেদে অসুগার যে রূপ বিভাবতা হয়, পুনরার অসু-য়াতেও নির্কেদের অমুভাবতা যুক্ত হইয়া থাকে । অপর ঔৎস্থক্যের প্রতি চিন্তার অমুভাবতা এবং নিদ্রার প্রতিও ঐ রূপ চিন্তার বিভাবত হয়, এই রূপে অন্যান্য ভাবেরও কানিতে হইবে॥

এই সকল সান্থিক, তথা নানাবিধ ক্রিয়ার পরস্পর কার্য্য কারণ ভাব প্রায় লোকব্যবহারাসুসারে জ্বেয় হয়॥

নিন্দায় বৈষণ্য ও অমর্ষ এই ছুইয়ের বিভাবন্ধ, আবার অদুরাতে ঐ নিন্দায় বিভাবতা কথিত হয়। সংমোহ ও প্রহারস্য বিভাবত্বং সংমোহপ্রলয়ে ।প্রতি । উগ্রাং প্রত্যমুভাবত্বথেবং জ্রেয়াঃ পরেহণি চ ॥ ৯২ ॥ ত্রাস- নিদ্রা-শ্রমালস্য-মদ্ভিত্বোধবজ্জিনাং। সঞ্চারিণামিহ কাপি ভবেদ্রত্যসুভাবতা॥ ৯০॥ সাক্ষাদ্রতের্ন সম্বন্ধঃ ষড়ভিস্তাসাদিভিঃ সহ।

ইতি। বিমশ্রক: সংশ্রানম্বরভাবীতি চাপলঞ্চ ধার্টনিম্বরং। ভাবীতি। এথেমে প্রপ্রেষাং প্রবেশো ভাব্যতে॥ ৯২ ॥

মদ্ভিৎ মধুপানজো মদভেদ: রভানুভাবতা রভিকার্যারং 🛊 ৯০ 🛭

শুল ভে ত্রাসাদয়ো ন কণাচিদ্রতিমতাং শ্রীক্ষণজ্জায়য়ে । তসা ভদ্রকশ্রন্থারতে নিবার জুয়মানস্থাং। কিন্তু বিরোধ্যাদিতা এব তে লাম্বস্তে। তেভা
কর তেরামন্ত্র্মনানস্থাং। ত ১ শচ সাক্ষাদিতি যথা হর্ষাদয়ে ভাবাং কেবলং
শ্রিক্ষণ বিভাবীক্রতা জায়য়ে তথা ত্রাসাধয়ে ন। কিন্তু বিরোধ্যাদিসম্বলিতমিতি কেবলায়া রতে ন সম্বন্ধ:। কিন্তু কিরোধ্যাদিগত ভন্তন্তাবসাপীতি
প্রশ্বর্মা ভন্তংসম্বন্ধা রতে: স্বন্ধ: স্যাদিত্যর্থ:। কিন্তু ত্রাসাদ্রো

প্রলয়ের প্রতি প্রহারের বিভাবত এবং উত্তার প্রতি ঐ প্রহারেরই অসুভাবতা। এই রূপ অন্যান্য ভাবকেও জানিতে হইবে॥ ১২॥

ত্রাস, নিদ্রা, শ্রম, আলস্য, মধ্পানজন্য মন্তভা ও অজ্ঞান নতা প্রভৃতি সঞ্চারি ভাবের কোন স্থানে রতি অফুভাবতা অধাৎ রতির কার্য্য হইবে॥ ৯০॥

ঐ ত্রাশাদি ছয়টার সহিত রতির সাক্ষাৎ সম্বন্ধ নাই

স্থাৎ পরম্পারয়া কিন্তু লীলামুগুণতাকুতে ॥ ৯৪ ॥
বিতর্কমতিনির্বেদপুতীনাং স্মৃতিহর্ষয়োঃ !
বোধভিদ্দৈনুস্প্রীনাং কচিদ্রভিবিভাবতা ॥ ৯৫ ॥
পরতন্ত্রাঃ স্বতন্ত্রাংশুচতুকোঃ দক্ষারিলো দ্বিধা ॥
তত্র পরতন্ত্রাঃ ॥
বরাবরতয়া প্রোক্রাঃ পরতন্ত্রা অপি দ্বিধা ॥ ৯৬ ॥
তত্র বরঃ ॥
দাক্ষাদ্যবহিতশেচতি বরোহপ্যেম দ্বিধাদিতঃ ॥

ভয়াদীনামপুণেলকণানি। স্থাপরাধাদি সম্বলনময়। তেহপি স্থায়িতি ॥ ৯৪ ॥ বোধভিৎ অবিদাক্ষেজাে বোধ:। বিতৰ্কাদীনাং রতের্বিভাবভেতি পরস্বারা জ্ঞােয়ং। শ্রীকৃষ্ণামুভবসৈাব সাক্ষান্তভংকারণদ্বাং ॥ ৯৫ ॥ পরতন্ত্রা মুখাগোণরাভবশাঃ স্বতন্ত্রান্তবিপরীতা ইতি জ্ঞােয়ং॥ ৯৬ ॥ অতা বর ইতি জাবৈত্যকত্বং। তসাচ লক্ষ্ণং রসদ্বসাে বােহলদ্বং প্রাপ্রোভি

কিন্তু পরস্পারায় লীলার অফুগামী হইবে॥ ৯৬॥

বিতর্ক, মতি, নির্বেদ, ধৃতি, স্মৃতি, হর্ষ, জ্ঞানতা, দীনস্থ সুষ্থি ইত্যাদি ভাব সকলের কোন স্থানে রুজি বিভাবত্ব হইয়া থাকে॥ ৯৫॥

সঞ্জীরভাব তুই প্রকার হয়, পরতন্ত্র এবং স্বতন্ত্রে॥ তমাধ্যে পরতন্ত্র বধা॥

বর ও অবর ভেদে অর্থাৎ শ্রেষ্ঠ কনিষ্ঠ ভেদে পর্ডস্র ভাবও ছুই প্রকার হয়॥ ৯৫॥

ভন্মধ্যে বর পরতন্ত্র যথা। শাক্ষাৎ এবং ব্যবধান ভেদে বর পরতন্ত্রও ভূইরূপে কথিত হ্য়। তত্ত্ব সাক্ষাং ॥
সুখ্যানের রভিং পুঞ্চন্ সাক্ষাদিত্যভিধীয়তে ॥ ৯৭ ॥
যথা ॥
ভনুক্রহালী চ তমুশ্চ নৃত্যুং
তনোতি মে নাম নিশম্য যদ্য ।
অপশ্যতো মাধুরমণ্ডলং ত —
ছ্যুর্থেন কিং হস্ত দুশোষ্ব্রেন ॥
সাক্ষাদেষ মির্থেদঃ ।

স ররো মত ইতি ভেরং। বক্ষামাণাধ্বরলকণাত্সারেণ ॥ ১৭॥

ভতুকহানী চেতি। মাথুরমণ্ডলগিদৃকা চেনং শ্রীভগবদ্রতিমধার। তত্মাৎ সাক্ষাজভিষেৰ পুঝাতীতি ভাব: ৮৯৮॥

### তন্মধ্যে দাকাং যথা॥

যে ভাব মুখ্যরভিকে পুষ্ট করে ভাহাকে সাক্ষাৎ বলা বায় ॥ ৯৭ ॥

#### यश!॥

হার ! যাহার নাম শ্রেণমাত্রেই আমার লে:মাবলী ও তনু নৃত্য বিস্তার করিতেছে সেই মথুরাম্যওলকে যে চকু অবলোকন করিল না, তাহাতে প্রয়োজন কি ? #

উক্ত পদ্যে মথুরামণ্ডল দর্শনেচছা ভগবং। রতিশ্বরূপ। এ কাবণ দাক্ষাং রতিকে পুষ্ট করিল॥

अ यह निर्द्ध मार्का ६ छात्।

# দকি।। ৪র্থ লছরী ভক্তিরদায়ত নিষ্কু:।

শথ ব্যবহিতঃ॥
পুক্ষাতি বো রতিং গোণীং সভু ব্যবহিতো মতঃ॥
যথা॥
পিগস্ত মে ভুজহন্দং ভীমণ্য পরিঘোপমং।
সাধবাক্ষেপিণং তুন্তং যং পিনস্তি ন চেদিপং॥ ৯৮॥
নির্বেদঃ ক্রোধ্যশ্যহাদয়ং ব্যবহিতো রভেঃ।
অধাবরঃ।

নিৰ্বেদ ইতি ক্ৰোধে। ২ত্ৰ ক্ৰোধরতিঃ সচ রৌদ্রসস্য গৌণস্য স্থারি ইতি গৌণীপ্যেষণং। ক্লিফুরআর্জুনঃ॥ ৯৯॥

## অথ ব্যবহিত অর্থাৎ ব্যবধান॥

যে ভাষ গৌণী রভিকে পুষ্ট করে তাহাকে ব্যবহিত বলিয়া জানিতে হইবেক॥

## यथा ॥

আমি ভীম, আমার বাহুত্বর পরিঘ সদৃশ, ইহার। যথন কুষণ্ডেবকারি তুই শিশুপালকে পেষণ করিতে সমর্থ হইল নাতখন এ ভুজন্মকে ধিক্র ৯৮॥

এ ছলে ক্রোধের বশীভূত প্রযুক্ত এই নির্বেদকে রভিন্ন ব্যবহিত জানিতে হইবে। উক্ত পদ্যে ক্রোধকেই ক্রোধ-রভি বলা বায়, ক্রোবরতি গৌণ রৌদ্র রুদের ছায়িভাব, ইহা গৌণী রভিকে পোষণ করিল। রসদ্বস্থাপ্যক্ষমগচ্ছনবরে। মতঃ॥

যথা॥
লেলিহ্যানং বদনৈর্জলন্তি—
র্জগন্তি দংষ্ট্রা ফ্রুটক্তমাকৈঃ।
অবেক্ষ্য কৃষণ প্রতিবশ্বরূপং
ন সং বিশুস্থান স্মরতি স্ম জিষ্ণুঃ॥ ৯৯॥
খোরক্রিয়াদ্যকুভাবাদাচ্ছাদ্য সহজাং রতিং।

বোরেতি। ততঃ সাপরিচিত্তদীরবোররূপাৎ সর্বভ্রুণাশস্কাময়ং ভ্রমেব 'কেবলং নিভূ ভয়বতি:। রূপং মহতে বহু বজুনেত্রসিত্যার্ভ্য দৃষ্ট্রা লোকা: প্রবাথিতান্তথাহ্নিতি ভ্রাক্যাদ্রতেরত্যস্তান্ত্র্ত্ত:। স্থানে স্বী-কেশ তব প্রকীঠা। জগং প্রস্থাত্যসূর্জ্যতে চেত্যাদিকং অবস্থাভেদাঃ।

যে ভাব ছুইটা রদের অঙ্গত্ত প্রাপ্ত হয় না, তাহাকে অবর বলা যায়॥

### राभा ॥

ষাহাতে স্থপায় রূপে দন্ত সকল গর্জন করিতেছে এমত বদন সমূহ দারা জগদাসাদনকারি জাজ্জ্বল্যনান প্রত বিশ্বরূপ কৃষ্ণকে সন্দর্শন করিয়া অর্জ্জ্বের বদন শুষ্ক হইয়া গেল এবং তংকালীন তিনি আপনাকেও জানিতে পারেন নাই অর্থাৎ ভয়ে আত্ম বিস্মৃত হইয়াছিলেন ॥ ৯৯ ॥ ভয়ানককার্যাদির অনুভব হেতু সহজ রতিকে আহ্ত করিয়া যে তুর্বার ভীতির আবির্হাব হয়, তাহার নাম ভয়া-

ছুৰ্বারাবিরভৃত্তীভি মোহেছিয়ং ভীৰণভভঃ ॥ ১০০ ॥
ভব সতন্ত্রাঃ ॥
সদৈব পারতন্ত্রোহপি কচিদেষাং সভব্রতা ।
ভূপাল-দেবকদ্যেব প্রস্তুরনা কর্মাহে ।
ভাবভৈরতিশৃত্যান্চ রত্যমুস্পর্শনন্তবা ।
রভিগন্ধিন্চ তে তেখা সভন্ত্রাঃ পরিকীর্ত্তিভাঃ ॥
ভত্র রভিশ্নাঃ ॥

আছো পৌণরতেরণি নালছং॥ >००॥

অধ পতে প্রাইতি এবু প্রতরের প্রথমদা রতিশুনাসা প্রাচন্ত্রং বাক্তমেনঃ অনাগরদাপি তদেবাজয়তি সদৈবেতি। এখাং মধ্যে ক্ষৃতিং কয়োশ্চিদিতি রভাক্সপর্শনরতিগক্ষোঃ সদৈব পারভল্লাংপী চার্বঃ। কর্প্রহে রাজ্ঞোহংশ-গ্রহণে বিবাকে বা। জন্যরা তিক্তাং প্রাপ্তালাজোহিশি তাগিন্ আমাতরি। অধিকাং দুখাত ইতি ॥ ১০১॥

बीन (बाह ॥ ১००॥

#### ৰাধ ৰাজন্ত ॥

পুর্বোক্তভাব সকলের স্প্রদা পরাধীনত অর্থাৎ জান্য ভাবের অপেক্ষিত হইলেও কোন কোন সময়ে ইহাদের অত-জ্ঞা হইরা থাকে, বেমন রাজকর্মচারিগণ তত পরাধীন হইলেও কখন কখন রাজক গ্রহণ বা বিবাহাদি কালে কাধীন হয় ভজ্ঞপা

ভাৰজ্ঞ দকল রতিশুন্য, রাক্যসুস্পর্শ, এবং রতিগন্ধি এই ভেদে শতস্ত্রকে ত্রিবিধ রূপে কীর্ত্তন করেন॥

ভশ্বধ্যে মভিপুন্য যথা 🖟 🦠

জনের রতিশ্ন্যের রতিশ্ন্যে ভবেদশো ॥
তথা প্রীদশনে ॥
ধিগ্জন্ম নিস্ত্রেরদযন্তিজিগ্রেতং ধিগ্রহজ্ঞতাং ।
ধিক্ কুলং ধিক্ ক্রিয়াদাক্ষ্যং বিমুখাবে ছথোক্সে ॥১০১
অত্র স্বত্রো নির্কেশ: ।
রত্যসুম্পার্শন: ॥
যঃ স্তো রতিগক্ষেন বিহীনোহপি প্রশক্ষ: ।

সংবিদ পারতছোৎপীতি পূর্মমূকং উত্তরত বং ঘতো রতিপছেলেতি।

রতিশ্ন্যজনসকলে রতিশ্ন্যভাব হইয়া থাকে ॥
বথা শ্রীদশমে ২০ অধ্যায়ে ৩২ ক্লোকে ॥
বাজ্ঞিক প্রাক্ষােন কহিলেন শুক্র, সাবিজ্ঞী এবং দীক্ষা
এই ভিন প্রকার আমাদের যে কম হইয়াছে, সেই ত্রিবিধ
জন্মকে ধিক্, আমাদের প্রক্ষাচর্যাকেও ধিক্, বস্তুজ্ঞভাকেও
বিক্, কুলকেওধিক্, কর্মদক্ষতাকেও ধিক্, কারণ আমরা
সধােক্ষ ভগবানে বিমুখ। এক্ষণে নিশ্চয় বোধ হইতেছে
ভগবতী মায়া বোগিদিগেরও মোহজনিকা, যে হেতু আমরা
ব্যাহ্মণ, সকল বর্ণের গুক্ত, আমরাও আপন বিষয়ে মুশ্ধ হইলাম ॥ ১০১॥

এখনে নির্ফোদকে স্বতন্ত্র বলিতে হ**ইবে ॥**রত্যকুম্পর্শন যথা ॥
বে স্বয়ং রভিগন্ধপূন্য হইরা প্রসঙ্গাধীন পশ্চাৎ র**ভিক্রে** 

পশ্চাদ্রতিং স্পৃশেষের রত্যকুষ্পর্শনো রক্তঃ ॥
বধা ॥
গরিষ্ঠারিষ্টকারৈর্বিধুরা বধিরায়িতা ।
বা কৃষ্ণ পাহি পাহীতি চুক্রোশান্তীরবালিকা ॥ ১০২ ॥
অব ভাসঃ ॥
বাত্যক্তিঃহিপি তদ্যকং রতিগন্ধি ব্নেক্তি সঃ ॥

ভাদেবং পরস্পরবিরোধপরিহারমুদাহরণেন দর্শমতি গরিছেতি। তর্জাভীর-বালিকাথাতভাঃ সর্কদৈর তজতিপরভন্তবাবহুং বর্ত্ত এব। সংগ্রভাক্সা-ভ্রমানকদর্শনেন স্বভন্ত এব আসো লাভ ইতি ভাবঃ। বাজিকেরু রতিজ্ঞারৈষ নতুরতিরিভি রতিশ্নাহুং জ্ঞেরং॥ ১০২॥

খঃ স্বাচল্লোহণি রতিগদ্ধং তলেশং বানক্তি স রতিগদ্ধিরিভাষর: উলা-

## স্পৃত্র ভাহাতে রত্যসুস্পৃত্র বলা যায় ॥

रावा ॥

ভয়ানক বুবাহ্ণরের গর্জনে বিকল এবং বধির **হইরা** হা ক্ষা করা কর, রক্ষা কর এই বলিয়া গো**পবালিকা চিৎ-**কার করিতে লাগিলেন॥ ১০২॥

এম্বলে ত্রান প্রকাশ পাইল, এই ত্রান পশ্চাৎ কৃষ্ণ-রভিকে স্পর্শ করিয়াছে॥

অধ রতিগন্ধি॥

বে খতস্ত্র হইয়াও রভিগন্ধকে প্রকাশ করে ভারায় নাম বৃদ্ধিকা

आधावा चलीजि॥ ১००॥

মধা ॥
গীভাংশুকং পরিচিনোমি ধুতং ছয়াকে
সঙ্গোপনায় নহি নপ্তি বিধেহি যত্বং।
ইত্যার্য্যা নিগদিতা নমিভোতনাকা
রাধাবগুঠিতমুখী তরসা তদাসীং ॥১০০॥
ভত্ত লজ্জা ॥
আভাসঃ পুনরেতেষামস্থানে বৃত্তিভো ভবেং।
শাতিকলামনেচিত্যসন্থানত্বং বিধোদিতং ॥ ১০৪॥

ংরংশ চার্বাায়া শুসা। মহারাগেণৈব শীকৃষ্ণবিষর্কনপুনিমর্পণলালসারাস্তাদৃশ-শ্বেন মপুনাণি তর্কি হায়াঃ অরহদো জ্ঞাতেহণি লাজাজ্য় হয়া নপুনা রতের্গদ্ধ-বাঞ্চনেতি জ্ঞেরং। যথা ধর্মাদেশ জ্বনে তসা। মহারাগ এব কারণং ভ্রথা

আভাস ইতি তদেবমূজন্য তেখামাভাসসং হিধাছং দশ্রিজুং আজ্বানসঃ হিধাছং ধশ্রতি প্রতীতাহেনি ৪ ১০৪ ৪

#### यणा ॥

নপ্তি ! ভূমি যে পীতবদন পরিধান করিরাছ ইছা আসি চিনিতে পারিয়াছি, অতএব আর গোপনবিবরে যতু করিও না, আর্য্যা এই কথা বলিলে খ্রীরাধা মস্তক অবনত করিরা সহসা বস্ত্রাঞ্চল ছারা বদন আছোদন করিলেন॥ ১০০॥

এ স্থলে লজ্জা পশ্চাৎ কৃষ্ণরভিকে স্পর্শ করিল ॥ . -

উক্ত ভাব সকলের অস্থানে প্রয়োগ ইইলে ভাহার নাম আভাগ। ঐ অস্থান প্রাতিকুল্য ও অনৌচিত্য রূপে ছুই প্রকার হয়॥ ১০৪॥ ভত্র প্রতিকেল্য ॥
বিপক্ষে বৃত্তিরেতেষাং প্রাভিক্ল্যমিতীর্যান্তে॥
যথা ॥
গোপোহ্প্যশিক্ষিতরণোহিপ তমশ্বদৈত্যং
হত্তি সা হত্ত মম জীবিতনিবিশেষং।
ক্রীড়াবিনির্জিতন্তরাধিপতেরলং মে
চুক্রীবিভেন হতকংস-নরাধিপস্থা॥ ১০৫॥
যথা বা॥

অথান্থানসম্মান্তেষাং হিধাসং দর্শরতি ভব্রেত্যাদিনা। অত্র পর্মস্য ইত্যক্তেন বিপক্ষে প্রতিকুলে ॥ ১০৫ ৪

তম্বব্যে প্ৰাতিকূল্য যথা॥ ্উক্ত ভাৰ সকলের বিপক্ষে রুত্তি হইলে তাহাকে প্রাতি-

্ৰুল্য বলে॥

#### यथ।॥

আসার প্রাণসদৃশ অখাকৃতি কেশিলৈত্যকে ধধন রণ বিষয়ে অশিক্ষিত গোপে বিনষ্ট করিল, তথন আমিট্র জীড়া করিতে ২ দেবরাজকে পরাজ্য করিয়াছি, সেই হও কংশরাজের তুর্জীবনে প্রয়োজন কি ?॥১০৫॥

এইস্থলে নির্কেদের আভাসমাত্র প্রকাশ হইল।
যথায়া॥

पूथ्ण जनम्यः त कानित्या भार्षक्षमि । नाष्ट्रेत्यानयः । छा कर्ष किमियासुङः स्नान्तः यान पूर्थ स्नामी महार्णाट्य ॥ > > ॥ व्यान्यायाः ॥ व्यान्यायाः ॥ व्यान्यायाः ॥ व्यान्यायाः ॥

ভুজুত ইন্ধ্যক্তেরং প্রতি কংসদ্য বাকাং॥ ১০৬॥

আনৌ হিত্যে সাংবাগা ছক্ত ভাবং সমানার্থ হমের। বর্ণনারামনৌ হিভাগে-১লভাগমণি ভত্ত প্রবেশ রিড্ং ভদেত ভেদররং ক্লভমিতি বিবেচনীরং। ভত্ত ভির্বাপালিয়ণি পর্কাদীনামস হাজ্যের। ভথাপি প্রাণিয়াতের ক্লভাপি সভা-বিভাইৰ ভত্তংক্ষরাঞ্জনার স্থাঃ। ক্ষ্বিবাদাদরত ভবত্তে বেভাভ তব ভেষঃ

কংস! অজুরকে ভিরস্কার করিয়া বলিল, অরে মূর্থ। বে ব্যক্তি একটা কলচর ঢোঁড়া সাপবিশেষ কালির নাগকে দমন এবং লোপ্ত্রণণ্ডের সদৃশ গোবর্দ্ধন পর্বতকে উত্তোলন করিয়াছে বলিয়া সেই ব্যক্তিতে অগদীখরত্ব অর্পণ করিয়া-ছিন্, ইহা হইতে সার অস্তুত কর্ম কি ! ॥ ১০৬॥

এম্বলে অসুরা প্রতিকৃন ভাব #
অথ অনৌচিত্র ॥

শ্বসভ্যতা ও শ্বোগ্যতারণে প্রনিচিত্য ছই প্রকার হয়, কিন্তু শ্রাণি দ্রব্যে শ্বসভ্যতা ও পশ্বস্যাদিতে প্রোগ্যতা শুপ্রাণিনি ভবেদান্যং তির্ব্যাদির চাজিদং॥
ভত্র প্রাণিনি যথা॥
ভারা ন যক্ত সম্মনপুগেসেবিতাভূথ
ক্ষেনে হস্ত মম তস্য বিগস্ত জন্ম।
না খং কদশ্ববিধুরো ভব কালিয়াহিং
মুদুন্ করিষ্যতি ছরিশ্চরিতার্থতাং ডে ॥
ভাত্র নির্বেদ্যা॥
ভিরশ্চি যথা॥
ভাবিনেহতু কং পক্ষী
কক্ষামপ্রো মুমান্য দেধ্যুদ্য।
ভিত্তাপি তাক্যিপকং

क्रियक वेखानिटस्वरः ॥ ५०**१** ॥

প্রকাশ পার ॥

তন্মধ্যে অপ্রাণিতে অনৌচিত্য যথা ॥

বে ব্যক্তি শ্রীকৃষ্ণের ছায়াকে এক্যারও আশ্রে ক্ষে
নাই ভাদৃশ আমার জীবনকে বিক্। হে কদম্য তুমি কান্তর
হইও না শ্রীকৃষ্ণ কালিয়সপ্তিক লন্ধন করিয়া অচিয়ে ভেক্সার্
চরিন্তার্থতা বিধান করিয়েন য

পক্ষিবিষয়ক অনৌচিত্য যথা #

গরুড় কহিলেন আমি অভিপরিত্র, এমত পদ্ধী ক্তে আছে বে, সে আমার সভূপ হইতে সমর্থ হইবে ? কার্থ শ্রীষ্ট্রম গরুড়ের শক্ষ পরিজ্ঞান করিরাই ভাষ্যার পাক ভক্ষা ভকতে পক্ষং ছরির্যায় ॥ ১০৭ ॥

অত্ত গ্রন্থা ॥

বহুমানেষ্থপি দদা জ্ঞানবিজ্ঞানমাধুনীং ।

কদম্বাদিষু সামান্যদৃষ্ট্যাভাসম্বন্যুচ্যতে ॥ ১০৮ ॥
ভাবানাং কচিছুৎপত্তি-সন্ধি-শাবল্য-শাস্তরঃ ।

দশাশ্চতত্র এতাবামুৎপতিস্থিহ সম্ভবঃ ॥

বথা ॥

মগুলে কিমপি চন্তুমরীচে-

বহুমানে খিতি। জ্ঞান্মত্র ওওজ্ঞাত্যুচিঙং বিজ্ঞান্মণি ভতঃ কিঞ্চিলেক বিশিষ্টং। মনুষাবজ্ঞানে সতি তেভাছণি রহুস্ফৌড়াদীনাং গোণমে ভত্জিভিঃ স্যাং। কেবলেন হি ভাবেন গোণো সাবো নগা মুগা ইভোকাদশ-পদাদিতেখি ভাবং ক্ষয়তে সচ সামান্যাকার এব নতু স্বিৰেক ইভি মন্ত্ৰাং। ভদেওদাহ সামান্যদৃষ্টোভি। নির্কিবেকেন জ্ঞানেন স্তেল্ভার্যং॥ ১-৮ ঃ

ভাৰানামিতাস্য চকুৰ্ণচরণে উংপত্তিত্বিদ সম্ভব ইত্যেব পাঠ: ॥১০৯ ॥

### कदिर्वन ॥ ১०९॥

এছলে গর্বের জনৌচিত্য প্রকাশ হইল। সর্বেদা জ্ঞান ও বিজ্ঞান মাধুরী বহনকারি কদয়াদি স্থক বিষয়ক সামান্য দৃষ্টিকে আভাস বলে॥ ১০৮॥

কোন কোন স্থানে ভাব সকলের উৎপত্তি, সন্ধি, শাবল্য ও শাস্তিরূপ চারিটা দশা হইরা থাকে কিন্তু এই সকল দশার উৎপত্তিকে সম্ভব বলে॥

বথা ॥

नूर्वाव अन (लाहिक वर्ग, इहेट्न च त्भामा अमृद्ध (तव्भानिः

লে হিতারতি নিশন্য বশোদা।
বৈণবীং ধ্বনিধুরামবিদুধে
প্রভ্রেবন্তিমিতকঞুলিকানীং ॥
অত্র হর্ষোৎপত্তিঃ ॥
বপা বা ॥
ছরি রহদি মিলস্তাং সংজ্ঞ্সন্যাস্ভ্রাপুষেদি দথি তবালী দেখলা পশ্য ভাতি।
ইতি বির্তরহদ্যে মাধ্বে কৃঞ্জিভ্জ্জদুর্শমন্ভু কিরন্তী রাশ্বিকা বং পুনাতু ॥ ১০৯ ॥
ভাত্তাসুয়োৎপত্তিঃ ॥
ভাষ্য দ্বিঃ ॥

প্রবণ করিয়া স্বেদজনে কঞ্লিক। আর্দ্রীভূত করিয়াছিলেন॥

এম্বনে হর্ষের উৎপত্তি হইল॥

বথা বা ॥

নথি! তুমি প্রাভঃকালে নির্দ্ধনে মিলিত হইলে তোমার প্রিয়দখী মেথলা, বিলাদবিক্ষেপে ভুগ্না হইয়া বিরাজ করি-তেছে অবলোকন কর। মাধব এই প্রকারে রহস্য বিস্তার করিলে শ্রীরাধা তাঁহার প্রতি জ্রক্টীর সহিত যে বক্রদৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়াছিলেন, ঐ বক্রদৃষ্টিই তোমাদিগকে প্রিত্ত করেন। ১০৯॥

এছনে অস্মার উৎপত্তি হইল॥

অথ সহ্মি॥

(১৯)

সরপয়ে ভিনেমের্কা দক্ষিং স্যান্তবিয়েয় ফুডিং র তত্র সরপয়েঃ দক্ষিং॥ সক্ষিং স্বরপয়েন্তত্র ভিন্নহেতু অরোর্ম তঃ॥ ১১০॥ যথা॥ রাক্ষদীং নিশি নিশম্য নিশান্তে গোকুলেশগৃহিণী পতিতাঙ্গীং। তৎকু চোপরি স্তব্ধ হসন্তং হন্ত নিশ্চল করুং ক্ষণমাদীং॥ অতানিতেই উ-সংবীক্ষা কৃতরোজা ডারোয় গুতি॥

অব। হয়োংপতিরিতি পরিহাসেন নিজোৎকর্ষং বাঞ্চয়ভি। **এ রুফে স**-প্রশাসকের্যাং ॥ ১১০॥

রাক্ষনীমিতি পূর্ববং স্বাপ্লিকং চরিতং। হরিবংশামুস্তং বা॥ ১১১॥

সমান রূপ অথবা ভিন্নরূপ ভাবদ্বয়ের পরস্পার মিলনের নাম স্ক্রি॥

তন্মধ্যে সমান ভাবছয়ের সন্ধি ষথা॥
ভিন্ন ভিন্ন কারণ জন্যই সন্দ্র রূপ ভাবছয়ের মিলনে
সন্ধি হয়॥ ১১০॥

यथ।॥

রাত্রিতে রাক্ষদীর অঙ্গ পতিত হইয়াছে এবং ভাহার স্থানের উপর পুত্র হাস্য করিতেছে, নিশাবসানে এই কথা শ্রাবণ করিয়া ব্রজরাজগৃহিণী য**ে।দা ক্ষণকাল স্তম্ভিত হই**য়া-ছিলেন।

এই স্থানে অনিক ও ইফ দর্শনহেতু জড়তাদ্বয়ের মিলন ইটল।। শথ ভিন্নবোঃ॥
ভিন্নবোহে তুনৈকেন ভিন্নোপুগপজাতয়োঃ॥
ততৈত্বিহতুজযোর্যথা॥
তুর্বারচাপলোহয়ং, ধাবনন্তব হিশ্চ গোষ্ঠদায়।
শিশুরকৃত শিচন্তীতি, ধিনোতি হৃদয়ং হুনোতি চ মে॥>>>
তত্ত হর্ষশক্ষয়োঃ।
ভিন্নহেতুজয়ো র্যথা॥
বিল্দন্তমবেক্ষ্য দেবকী, স্তমূৎফুল্লবিলোচনং পুরঃ।

স্তম্ৎফ্লেতাাদৌ গলদস্তক রদংসমঙ্গজমিতি বা পাঠ:। হ**র্য: থবনেন** ললবলো ভবতীতি প্রথমপাঠেতু তস্যা ঐথর্যজ্ঞানস্য **ভ**ুণো**দলকম্ৎক্**র-

অথ ভিন্ন ভাবদয়ের সন্ধি॥

এক কারণজনিত অথবা ভিন্ন কারণজনিত ভাবদ্বয়ের পরস্পার মিলনে সন্ধি হয়॥

তশ্বধ্যে এক কারণজনিত ভাবদ্বরের দক্ষি যথা। যশোদা কহিলেন এই শিশুর চপলতা অতিশার তুর্বার, এ নিরন্তর গোকুলের অন্তর ও বাহে ধান্মান হইতেছে, যাহা হউক ইহার এই নির্ভয় দেখিয়া আমার হৃদয় অতিশার ব্যথিত ও কম্পিত হইতে লাগিল॥ ১১১॥

> এস্থলে হর্ষ ও শঙ্কা এত তুভয়ের সন্ধি॥ ভিন্ন কারণজনিত ভাবদ্বয়েরসন্ধি ষ্পা॥

দেবকী দেবী প্রফুল্ললোচনক্রীড়াপর সন্তানকে তথা বলিষ্ঠ মলনওলীকে অথো অবলোকন করিয়া চুকুর্বরে প্রকামণি মল্লমগুলীং, হিমমুক্তঞ্চ জলং দৃশোর্দধে॥
অন্ত হ্র্যবিষাদয়োঃ দক্ষিঃ॥
একেন জায়মানানামনেকেনচ হেতুনা।
বহুনামণি ভাবানাং দক্ষিঃ স্ফুটমনেক্ষ্যতে॥ ১১২॥
ভব্তিকহেতুলানাং যথা॥
নিরুদ্ধা কালিন্দীভটভূবি মুকুন্দেন বলিনা
হঠাদন্তঃস্মেরাং ভরলভরভারোজ্জলকলাং।
অভিব্যক্তাবজ্ঞামরুণকৃটিলাপাসন্থ্যমাং
দৃশং নশ্যন্তাস্থিন জয়ভি ব্যভানোঃ কুলমণিঃ॥ ১১০॥
অত্ত হ্যোহিস্কা-গ্রহাম্যানাং সন্ধিঃ।

বিলোচনত্বং হ্রায় সালিভি সমাধেয়ং ॥ ১১২ ॥

তরলে ভাগিনে হৈ কলে বাজি: । কৃটিলেত। নেনাপুরায়া: ৫ ১১০॥

শীতল এবং উঞ্চ জল ধারণ করিলেন।।

এ স্থলে হর্ষ এবং বিষাদের দক্ষি হইল॥

এক কারণে অথবা বহু কারণে সম্ভূত বহু ভাবের সন্ধি
ক্ষান্তই অবশোকিত হইয়া থাকে॥ ১১২॥

তমধ্যে এক কারণজনিত বহু ভাবের দক্ষি যথা।।

যিনি কালিন্দাত টবর্তি বনভূমিতে বলিষ্ঠ মুকুন্দকর্তৃক
অবক্ষম হওয়াতে ঐ মুকুন্দের প্রতি অন্তরে ঈঘং হাস্য এবং
বাহে চঞ্চল অথচ উচ্জল তারা দ্বারা স্পষ্টরূপে অবজ্ঞা
বিস্তার কারি অরুণবর্ণ কুটিল অপাদ শোভায় স্থাণোভিত
নয়ন নিক্ষেপ করিয়াছিলেন, সেই ব্যভাকুল্যণি শ্রীরাধা

কয়িযুক্তা হউন॥ ১১৩॥ এ স্থলে হুৰ্য, ঔংস্কান্য, গৰ্মন, ক্ৰোধ এবং অসুয়া এই অনেকহেতুজানাং সন্ধিঃ।
পরিহিতহরিহারা বীক্ষা রাধা সবিত্তীং
নিকটভূবি তথাতো তর্কভাক্ স্মেরপন্মাং।
হরিমপি দরদুরে স্থামিনং তত্ত্ত চাদীন্মহিদ বিনতবক্ত্র প্রস্কুরন্ মানবক্ত্রা॥ ১১৪॥
অত্ত লজ্জা-মর্য-হর্ম-বিয়াদানাং সন্ধিঃ॥
অত্ত শাবলাং॥

পরিহিতহরিহারেতি চ চরিতং কলাচিং শ্রীব্রজেশবরগৃহে মহোৎসবে সংভাবা। যদাপি হারস্থলানীং তদা বৈশ্রৈ: স্বদ্ধ এব তণপি তদা শ্বতএব সক্ষোচান্তথা ভাবিতমিতি শভাতে। পরিহিতো ধূতো হরিহারো বয়া সা। বিতরীক্ষণাঠত তাক:। হাদিধুতে ভাবেন পরিচিতে ভাবি পাঠান্তরং তাকং শহুদার্যবিটাদৌ বাছান্তরোগি কালা ১১৪॥

## সকলের সন্ধি হইল॥

इहेन ॥

অনেক কারণজনিত ভাবদকলের দল্ধি যথা॥
কোন এক দময়ে ব্রজরাজগৃহে মহোৎদব উপস্থিত হইল
শ্রীরাধা শ্রীক্ষের পরিহিত হার কণ্ঠদেশে ধারণ করায় ঐ
হার হাদয়পর্যান্ত লন্ধিত হইয়াছিল, তদ্দর্শনে দমীপস্থ স্থামর
সম্মুখবর্তিনী জননীকে হাস্থবদনা দেখিয়া শ্রীরাধা ভর্ক করিভেছিলেন, এমন সময়ে অদুরে শ্রীক্ষে এবং ঐ মহোৎ-সবে দমাগত স্বীয় স্বামি অভিমন্ত্যুকে অবলোকন করিয়া দহদা বিনত ও মানবদনে স্ফুর্তি পাইতে লাগিলেন॥ ১১৪॥ এ হলে লক্তা, ক্রোধ, হর্ষ ও বিয়াদের একত্রে মিলন

#### অথ শাঘলা॥

শবলত্বং তু ভাবানাং সংমৰ্দ্দঃ স্যাৎ পরস্পারং। যথা॥

শক্তঃ কি নাম কর্ত্ব্যু সশিশুরহহ মে মিত্রপক্ষানধাক্ষীদাতিষ্ঠেয়ং তমেব দ্রুত্তমথ শরণং ক্যুত্তরেতন্ন বীরাঃ।
আং দিব্যা মলগোষ্ঠী বিহরতি সকরেণোদ্ধারাদ্রিবর্ষ ক্র্য্যামদ্যৈর গন্ধা ভ্রজভূবি কদনং হা ততঃ কম্পতে অত্র গর্কবিষাদদৈন্যমতি-

স্মৃতি-শহা-মর্ব ত্রাসানাং শাবল্যং ॥

পূর্ব্বপূর্বস্য ভাবসা কিঞ্চিদবশেষাৎ শবলবং ॥ ১১৫ ॥

ভাব সকলের পরস্পার সম্মর্দের নাম শাবলা।
কংগ কহিল দে বালকটা কি করিতে পারে, ভাহার ত
কিছুই শক্তি নাই। পরক্ষণে জানিল যে, দে আমার সমুদার
মিত্রপক্ষকে সংহার করিষাছে, তবে কি করি, শীঘ্র গিয়া
ভাহার শরণাগত হই, কোন বার এ প্রকার কার্দ্য করিতে
সমর্থ হয় নাই, পরে স্মরণ করিল, আমার ত বলিষ্ঠ বলিষ্ঠ
মল্লগণ বিহার করিতেছে ভয় কি ? পরে জানিতে পারিল
দেও ত সামান্য বলবান্ নয়, হস্তদ্বারা গোবর্দ্ধন উত্তোলন
করিয়াশিল, তবে কি করি, আমি এখনি র্ন্দাবনে গিয়া পীড়া
দিতে প্রেরত হট, হায়! ভাহাই বা কিরূপে করিব, ভাহার
ভয়ে যে আমার হদয় কম্পিত্র হটতে লাগিল॥

এই উদাহরণে গর্মন, বিষাদ দৈন্য, মতি, স্মৃতি, শঙ্কা, ক্রোণ ও ত্রাস এই আট্টী ভাবের পরস্পার সম্মর্দ হইল॥ যথাবা ॥

ধিক্ দীর্ঘে নয়নে মমাস্ত মথুরা যাভ্যাং ন সাঁ প্রেক্ষ্যতে
বিদ্যেয়ং মম কিঙ্করীকু শনুপা কালস্ত সর্বাহ্বয়ং ।
লক্ষ্মীকেলিগৃহং গৃহং মম হহা নিতাং তকুঃ ক্ষীয়তে
সন্মন্যেব হরিং ভজেয় হৃদয়ং রুদ্যাট্রী কর্ষতি ॥
ভাত্র নির্বেদ গর্বন-শঙ্কা-প্রতি-বিষাদ-মত্যোৎস্ক্রক্যানাং
শাবল্যং ॥

#### यशीयां॥

কোন গৃহী ব্যক্তি কহিল হায়! আমার এই স্থানীর লোচনদ্বর মথুরা দন্দর্শন করিতে ইচ্ছা কবিতেছে না, অতএব ইহাদিগকে ধিক্, আমার বিদ্যাও দামান্য নয়, এই বিদ্যা
দ্বারা নৃপতি কিন্ধরদদৃশ হইয়া রহিয়াছেন, কালকেও তুর্বল
দেখিতেছি না, দে দকলকেই আকর্ষণ করিবে এবং আমার
গৃহকেও লক্ষীর ক্রীড়াভবন দেখিতেছি, অর্থাৎ দর্মদাই
গৃহে লক্ষী বিরাজ করিতেছেন, হা কফা! এ দম্পতিই বা
কে ভোগ করিবে, তন্মু যে দিন দিন ক্ষীণ হইতে লাগিল,
তবে এখন কি করি, গৃহে বিদ্যাই হরিভজন করি, হায়!
ভাহাও যে করিতে পারিতেছি না, বুন্দাবন আমার চিত্তকে
আকর্ষণ করিতে লাগিল॥

এই উপাহরণে নির্বেদ, গর্বন, শকা, ধৈর্যা, বিষাদ, ছতি। এবং ওৎস্থক্য এই ভাবের সম্মর্দ হইল॥ অব শান্তি: ॥

অত্যার্ক্র্য ভাবস্য বিলয়: শান্তিরুচ্যতে ॥ ১১৫ ॥

বিধুরিতবদনা বিদূনভাসন্তমঘহরং গহনে গবেষয়ন্তঃ।

মুত্রুকল-মুরলীং নিশম্য শৈলে
ব্রেজশিশবঃ পুলকোজ্জ্বলা বস্তুবঃ ॥

অত্য বিষাদশান্তিঃ।

শব্দার্থরসবৈচিত্রী বাচি কাচন নাস্তি সে।

যথাকথঞ্চিদেনোক্তং ভাবোদাহরণং পরং॥ ১১৬ ॥

গবেষয়স্তো মৃগয়ন্ত:। মৃতকলেভাদিরের পাঠ ইষ্ট: ৫ ১১৬ ॥

## অথ শান্তি॥

যে ভাব অতিশয় উৎকট হয়, তাহার বিনাশের নাম শাস্তি॥ ১১৫॥

#### ষ্থা ॥

ব্ৰজ্বশিশুগণ প্ৰীক্ষের অদর্শনে স্নানবদন এবং বিবর্ণ হইয়া বনমধ্যে তাঁহাকে অস্থেষণ করিতেছিলেন, ইত্যবস্থে পর্বতে মৃত্যধুর মুনলীরব প্রবণ করিয়াই তাঁহাদের অঙ্গ-সমুদার পুলকে পরিপূর্ণ হইয়া উঠিল ॥

**बहे छेनाहत्र**न विवासनत्र भाखि इहेल ॥

যদিচ আমার বাক্যে শব্দ, অর্থ ও রদের বিচিত্রতা নাই, ভথাপি কেবল এই সকল ভাবের উদাহরণ নিমিক্ত কথঞ্জিৎ উদাহরণ করিলাম। ১১৬॥ ত্ত্রয়ন্ত্রিংশদিমেইটো চ বক্ষান্তে স্থারিনশ্চ যে।
মুখ্যা ভাবভিধান্ত্বেকচত্বারিংশদমা স্মৃতাঃ।
শরীরেন্দ্রিরবর্গন্য বিকারাণাং বিধায়িকাঃ।
ভাবাবির্ভাবজনিকাশ্চিত্রবৃত্তর ঈরিকাঃ।
কচিং স্বাভাবিকো ভাবঃ কশ্চিদাগস্তকঃ কচিং।
যস্ত স্বাভাবিকো ভাবঃ স ব্যাপ্যান্তর্বহিঃ স্থিতঃ॥ ১১৭ ॥
মঞ্জিচাদ্যে যথাদ্রব্যে রাগস্তব্যয় ঈক্ষাতে।

অটো হাসাদর:। সহা সামান্যভক্তিরপত্কে ইভি মুখাপদেন সাহিক। ব্যাবর্ত্তি: ৫১১৭॥

ভশার ইতি অবরবার্থে সয়ট্। নামমাত্রেণেতি যথা কথঞিং সরস্মাত্রেশে-ভার্থ: ॥ ১১৮ এ

ত্রয়ন্ত্রিংশং ব্যভিচারী ভাব এবং হাস্য প্রভৃতি সাভটী ও একটা মুখ্য যাহা স্থায়িভাবে বর্ণিত হইবে, এই সম্পায়ে একচছারিংশং ভাব হইয়া থাকে। এই সকলকে মুখ্য ভাব বলা ষায়, ইহারা শরীর এবং ইন্দ্রিয়বর্গের বিকার বিধান করে এবং ভাবের আবির্ভাব হইতে জন্মায় বলিয়া চিত্তের রন্তিরূপে কথিত হয়। কোন ভাব কোন স্থানে স্বাভাবিক এবং কোনভাব কোন স্থানে আগস্তুক হয়। তুন্মধ্যে যে স্বাভাবিক ভাব দে অন্তর এবং বাহ্য ব্যাপিয়া অবস্থিতি করে॥ ১১৭॥

যেমন মঞ্জিষ্ঠাদি দ্ৰব্যে তন্ময়বৰ্ণ সহজেই চক্ষুতে, লক্ষিত হয়, সেইরূপ এস্থানে নামমাত্রেই বিভাবের বিভাবতা উপ- অত্র স্থান্নাসমাত্রেণ বিভাবস্য বিভাবতা।

এতেন সহজেনৈষ ভাবেনামুগতা রক্তিঃ।

একরূপাপি যা ভক্তেবিবিধা প্রতিভাত্যসোঁ॥ ১১৮॥
আগস্তুকস্ত যো ভাবঃ পটাদো রক্তিমেব সঃ।
তৈস্তৈবিভাবৈরেবায়ং ধায়তে দীপ্যতেহপিচ।
বিভাবনাদিবৈশিষ্ট্যান্তকানাং ভেদতস্তথা।
প্রায়েণ সর্বভাবানাং বৈশিষ্ট্যান্তিবিধং মনঃ।
মনোহনুসারাদ্যাবানাং তারতম্যং কিলোদ্য়ে॥ ১২০॥

थीय्राक नामारक ॥ ১১**৯**॥

বিবিধানাং শান্তাদীনাং সমস্তানামের ভক্তানাং মনো বিবিধং ভবতি জ্জ ছেতুঃ বৈশিষ্ট্যাৎ গরিষ্ঠ্যাদিবৈধিধাং ১২০ ॥

লিকি হয়। রতি একরূপা হইলেও ভক্তভেদে বিবিধ প্রকারে প্রতিভাত হয়॥ ১১৮॥

যে রূপ বস্ত্রাদিতে রক্তবর্ণযোগ করিলে সেই বস্ত্র রক্ত-বর্ণ দেখায়, আগস্তুক ভাবও দেই প্রকার, পূর্ব্বোক্ত বিভাবাদি দ্বারা অর্পিত ও উদ্দীপিত হয়॥

বিভাবাদির বৈশিষ্ট্য এবং ভক্তের ভাববশতঃ প্রায় সকল ভাবের বিশিষ্টতা উৎপন্ন হয়॥ ১১৯॥

শাস্ত, দাস্প্রভৃতি বিবিধ ভক্তের বিশিষ্টতা হেতু ওাঁহা-দের মনও বিবিধ প্রকার এবং মন অনুসারে ভাব সকলের উদয়বিষয়ে তারতম্য হইয়া থাকে ॥ ১২০॥ চিত্তে গরিষ্ঠে গঞ্জীরে মহিষ্ঠে কর্ক শাদিকে।
সম্যন্তদালিতা দিনামী ন লক্ষ্যন্তে ক্ষুটং জনৈঃ।
চিত্তে লঘিষ্ঠে চোতানে কোদিষ্ঠে কোমলাদিকে।
মনাগুলীলিতা দিনামী লক্ষ্যন্তে বহিক্ত্রণাঃ॥ ১২১॥
গল্পিঃ স্বর্ণপিণ্ডাভং লঘিষ্ঠং তুলপিণ্ডবং।
চিত্তযুগ্মেহত্র বিজ্ঞেয়া ভাবস্য প্রনোপ্যা।
গন্তীরং সিন্ধুব্চিত্যুত্তানং পল্ললাদিবং।
চিত্তব্যেহত্র ভাবস্য মহাজিশিখ্রোপ্যা।

छत्तवार **ठिटल गतिर्छ हे** छा। दिना । अभी छावाः ॥ ১२১ ॥

ভাবসা প্রনোপ্রেতি। প্রনেহধিকরণে সাদৃশামিতার্থ: । কিন্তু দীপেনেভেন বোপনেভি ব্লামাণ্রী ছা তৃ ছীয়াছেনৈর প্রনেন সমাসো নতু সপ্তমাস্তেনেভি গ্রন্থ কামতি প্রায়ো লক্ষাতে। তৃতীয়া চ ন সহার্থরোপে মন্তব্যা পুজেশাস্ত

চিত্ত গরিষ্ঠ অথবা গন্তীর কিম্বা মহং বা কর্কশ হইলে ঐ সকল ভাব সমাক্রপে উন্মীলিত হইয়া থাকে, কিন্তু লোকে ঐ সকল ভাব জানিতে পারে না। অপর, চিও লঘু অথবা তরল কিম্বা ক্ষুদ্র বা কোমল হইলে ঐ সকল ভাব অল্ল উন্মীলিত হয় এবং লোকে ভাহা স্পাইরপে জানিতে পারে॥ ১২১॥

গরিষ্ঠ মন স্বর্ণিণ্ডের মত, এবং লখিষ্ঠ মন তুল-রাশির ন্যায়, কিন্তু ঐ চিত্তদ্বয়ে ভাবের প্রনের ছুল্যতা জানিতে হইলে, অর্থাৎ ওরু চিত্তকে চঞ্চল্ করিতে পারে না, কিন্তু লঘু চিত্তকে চঞ্চল করে। অপর গন্তীর চিত্ত সমুদ্রের ছুল্য এবং তরল চিত্ত পল্ললাদির মত, এই ছুই প্রকার চিত্তে শান্তনাভং মহিষ্ঠং স্থাৎ কোদিষ্ঠস্ত ক্টীরবং।
চিত্তযুগ্মেহত্র ভাবদ্য দীপেনেভেন বোপমা।
কর্কাণং ত্রিবিশং প্রোক্তং বক্তং স্বর্ণং তথা জতু।
চিত্তত্রেহত্র ভাবদ্য জ্যো বৈখানরোপমা॥ ১২২॥
অত্যন্তক্ঠিনং বক্তমক্তশ্চন মার্দিবং।
ঈদৃশং তাপদাদীনাং চিত্তং তাবদ্যবক্ষ্যতে।

হাতিবং সমাসোন সাহ। তুলাবৈধরতুলোপমালাং তৃতীয়ানাতরস।মিত্যরতু পদৃশবচনাভামিশি তুলোপমা শকালাং প্রত্যাক্তং ভাষাবৃত্তী। উপমাজী-স্বস্যেক্তজ্ঞসা স্ত্রীমুধং তুলেতি তুলাবৈধিরতুল্জে: সদৃশবচনাভ্যান্ত ভাজাং কৃতীয়া ন প্রাপ্নেটোব। তথাং কাশিশালা ভূত্তে ইতিবদ্ধিকরণ এব ক্ষরণমার বিব্যাক্তি তহঃ কত্ত্কবণে চ কুলা বহুলামিতি সমাস্ত স্থাতি ভিতৰ

ভাপসাদীনাং ক্নিষ্ঠশান্তভ্জাদীনামিতার্থ: "১২০॥

মহাপদাতের শৃঙ্গের ন্যায় ভাবের উপমা অর্থাৎ বৃহ্ৎ পর্বা-তের শৃঙ্গ সমুদ্রে নিমা হইতে পারে কিন্তু পল্লে অর্থাৎ গর্ত্তের জলে নিমায় হয় না। মহিষ্ঠ চিত্ত নগরের তুলা এবং কুদ্র চিত্ত কুটার সদৃশ। এই চিত্তে প্রদীপ অথবা হস্তার ন্যায় ভাবের উপমা, অর্থাৎ নগরে হস্তা বা প্রদীপ থাকিলে কেছ ভাহা লক্ষ্য করিতে পারে না, কিন্তু কুটারে ভাহা অনায়াসেই লক্ষ্য হয়। ক্রণ ভিন প্রকার, বজ্, স্বর্ণ ও জ্তু (লাকা) এই তিন প্রকার কর্মণ চিত্তে ভাব অগ্রিসদৃশ॥ ১২২॥

বজ্ঞ নিতান্ত কঠিন, কথন তাহা মৃত্ হয় না, তাপস দিগের চিত্তিও এই রূপ কঠিন কোমল হয় না। স্বৰ্ণ আগ্নির স্বভিশয় উভাপে দ্রবীভূত হর, স্বৰ্ণিয় চিত্ত গুরুত্র ভাবে স্বর্ণং দ্রবতি ভাবাগ্রেস্তাপেনাতিগরীয়সা।
জতু দ্রবত্বমায়াতি ভাপলেশেন সর্কতিঃ॥ ১২০॥।
কোমলক ত্রিধিবোক্তং মদনং নবনীতকং।
অমৃতক্ষেতি ভাবোহত্র প্রায়ঃ সূগ্যাতপায়তে।

মদনং মধ্চ্ছিইং তত্র গ্রিষ্ঠানিতিকেন সহ ল্থিষ্ঠবানিত্রিকং বাভিচারি নারেণাবিক্রেপবিক্রেপরোহে তুরায় নিরূপিতে কর্ক্র শহকোমলওবিত্রে মুখ্য হারিভাবেনাদ্রবদ্রবরাহে তুরার নিরূপিতে তত্র চ গরিষ্ঠ বং অরার্থস্পর্লিপ্রেপ তিন্দ্রিরিক্তরা যং কিঞ্চিন্দর্থেনাচালালভাবরং ল্যিষ্ঠতং কিঞ্চিন্ধর্থস্পর্লিপ্রেক্তরা যংকিঞ্চিন্দর্থেনা চালালভাবরং। অরু গরিষ্ঠকর্ক শরোভাবিষ্য সমাগুলীলনং নাম তল্মিন্ বোগাতৈর জ্রেয়া গরিষ্ঠতানিভাগং নিরুদ্ধ বহিঃ প্রকাশরাং। অভ্রুব বক্ষাতে। কিন্তু স্কুই মহিষ্ঠত্বিভাগি গন্তীরত্বং অতি বহর্থ স্পর্লিভয়া ত্রোপাামলম্পর্লিভয়া মহতাপার্থেনাদৃশাক্ষোভলভাবত্বং ত্রিপরীত্রমুদ্ধানত্বং মহিষ্ঠত্বং বহর্বপ্রেশিতিয়া মহতাপার্থেনাদৃশাক্ষোভলভাবত্বং ত্রিপরীত্রমুদ্ধানত্বং মহিষ্ঠত্বং বহর্বপ্রেশিত্রিছা মূলার্থাস্পর্লিভয়া ক্রেক্রেলান্ত্র বিক্রপাত্বং বা। মনংপক্ষে ভেক্রেলান্ত্র নাম এক হিমারেন্দ্রিরাত্রকত্বং ক্লোনিত্রমার্থপ্রেলিভয়া তত্তনার্ত্রণ স্বাক্ত্রতার্থং। পল্লক্রীররোঃ কিঞ্চিন্দান্তির্যাতন্ব ভাবাতাং ভেনঃ অত্তরভাবত্বং। পল্লক্রীররোঃ কিঞ্চিন্দান্তির্যাতন্ব ভাবাত্বন্ ক্রিঞ্চিত্র প্রত্রান্তর্কর ক্রিঞ্চিৎ প্রতিক্রায়ত্বন ভাবিত্র রাঃ। তদেবং গরিষ্ঠত্বালি ব্রাতিকেহংপাবং ভেন্তাঃ ক্রেলা ক্রিক্রের্যাঃ। তদেবং গরিষ্ঠত্বালি ব্রাতিকেহংপাবং ভেন্তাঃ ক্রের্যাঃ। তদেবং গরিষ্ঠত্বালি ব্রাতিকেহংপাবং ভেন্তাঃ ক্রের্যাঃ ভাবত্বির গ্রাঃ। তদেবং গরিষ্ঠত্বালি ব্রাতিকেহংপাবং ভেন্তাঃ ক্রের্যাঃ সভ্রত্ব

আর্দ্রীভূত হয়। আর জতু বেমন অগ্নির অল্ল উত্তাপে সর্বতোভাবে দ্রবীভূত হয়, তদ্রপ চিত্ত ভাবের অল্লভার আর্দ্রীভূত হইয়া যায়॥ ১২০॥

কোমল ভিন প্রকার যথা মধু, নবনীত ও অমৃত, এই তিন প্রকার চিত্তে ভাব, সূর্ষ্যের আতপ সদৃশ। তল্মধ্যে মধু ও দ্রবেদত্রাদ্যযুগলমাতপেন যথাযথং ॥ ১২৪ ॥
দ্রবীভূতস্বভাবেন সর্ববৈদ্যায়তং ভবেৎ।
গোবিন্দপ্রেষ্ঠবর্গাণাং চিত্তং স্যাদ্য়তং কিল ॥ ১২৫ ॥
ক্ষণ্ণভক্তবিশেষস্য গরিষ্ঠত্বাদিভিগু বৈঃ।
সমবেতং স্বিদামীভিদ্বি বৈত্রবিগ মনো ভবেৎ ॥ ১২৬ ॥

की नामिएश्रकः ॥ ५२०॥

ন্দ্রবীভূতমিতাত ভূ বাভিচারিণ এব বৈচিত্রীকারকা ইতি ভাব: ॥

ক্ষণ ভক্তেতি অত্ত গরিষ্ঠবাদিকং শ্রীক্রণ-সম্বন্ধন এবার্থান্তরসাবেশেন জ্যেরং। এত দৈপরীত্যাদিনা লঘিষ্টভাদিক সপি। কর্ম শিং তুরক্ষ দৈশ্যা জ্ঞানাদিনা। মাধ্যাজ্ঞানমেবহি স্নেহম্ৎপাদয়তি তলু যং প্রনশ্চমংকারমাত্রকরমিতি দশমটিয়ন্যামিথং সভাং রক্ষ হথায়ভূ লা ইত্যাদে ব্যাথাতে। শ্রীক্রঞ্চমন্বনিনঃ অর্থান্তরক্ষ ভবতি। মনঃ থলু পতঃ সম্বন্ধ লাত্ত্বেন সর্ক্ষেমবিশিষ্টিন্যর গ্রুত্ত ভাবান্তরকৈরের বিশেষ আরোপাতে। তে চ ভাবা দ্বিধাঃ। প্রাক্তা ভাগবভাশ্টেত। তার ক্লিষ্ঠাধিকারাণাং প্রাক্তা এব গরিষ্ঠভাণে তৈতবঃ। শ্রেষ্ঠাধিকারিণাং তু ভাগবভা এব। তেলামুল্যহেত্ত্ ভাবাপেক্ষা সর্ক্ষ্থিপ ন্নেন্নাঃ। স্থায়ভাবতারতমাৎ সর্ক্ষ্য ক্ষায়তমাং স্বতাচ ম্বর্ণাদীনাং যথোভ্রম্ত্রমা। যৌ চ বাভিচারি ভাবাদ্বিশেশবিক্ষেপৌ তর্যান্ত্র যথা স্থায়িভাবমের প্রশংসা কিন্তু তত্র গরিষ্ঠভাণে হেতৃরেক একো ভাবং স্বাভাবিকঃ বিক্ষেপহেতুঃ পরম্পরভাগন্তকো জ্ঞোঃ। ১২৬ ॥

নবনীত যথাবিধি আতপ সংযোগে গলিয়া যায়॥..১২৪॥

শ্বাড়ত বেমন স্বভাবতঃ সর্প্রদাই দ্রবীভূত, তদ্রূপ গোবি-ন্দের প্রিয়ত্ম ভক্তের চিত্ত স্বভাবতই অমৃতসদৃশ ॥ ১২৫ ॥

বিশেষবিশেষ কৃষ্ণভক্তের পূর্ব্বোক্ত গুণ সমুদায়ে অথবা ছুই তিন গুণে মন সর্বাদা সমবেত হইয়া থাকে ॥ ১২৬ ॥ কিন্তু স্থ চুৰ্ ছিত্ত ভাবো বাদুম্পাগতঃ।
সাৰ্ব্য কারমেদেদ চিত্তং বিক্ষোভয় ভালং॥ ১২৭॥
যথা দানকেলিকোমুদ্যাং॥
গভীরে। ২প্রশ্রান্তং তুর্ধিগমপারো ২পি নিতরামহার্যাং মর্যাদাং দুধদ্পি হরেরাস্পদ্মপি।

নতু গরিষ্ঠাদে) বিক্ষেপে। মাভূলাম বজেতু জবতা কদাচিল্লান্ডোৰ সাচ ভারিমাত্রকতেত্যুক্তং তহিতিও কথং ভক্তচিক্তবেন গণাতে ভতাই কিন্ধিতি। ভাবোহত মুথাত্রা স্বান্ধী বিবন্ধিত:। প্রদঙ্গাদনাশ্চ সর্বপ্রকারমেবেতি ও্রধি বিশেষযোগেন হীরকস্যাপি জ্বীভাবায় যোগান্থাও॥ ১২৭॥

তত্র দিলার্শনং ষথেতি। সভাং স্থোমপক্ষে গন্তীরত্বং তাবৎ স্বত্তব প্রেম গোপনহেতু: স্যাৎ স্বমর্থাদত্বং ধার্ট্রগরিহারায় ক্রন্তিমত্যা। অথ ত্রধিগম পারত্বং নামানস্করণত্বং তচ্চ তদ্ধেতু: স্থাং যদা যদা যো গুণো দৃশ্যতে তদা ভলোবালোকিকভয়া লোকচিত্তাবরবাং। তথা হ্রেরাম্পদত্মপি তদ্যোপনায়

কিন্তু স্থায়িভাব সকলব উৎকর্ম লাভ করিলে সর্ব্ব প্রকার চিত্তকেই ক্ষুব্ধ করিতে পারে, কারণ ঔষধবিশেষের সংযোগে হীরকেরও দ্রবীভূত হওয়ার যোগ্যতা আছে॥ ১২৭॥

যথা দানকেলিকৌম্দীতে ॥

প্রেম সমূহের উদয় হইলে সাধু সকল আপনাদিগের রিজ ও বিকারকে স্থগিত করিতে পারেন না, যেমন চন্দ্র উদিত হইলে সমুদ্র আপনার রিজ ও বিকার সম্বরণ করিতে পারে না তদ্রপ। সমুদ্রের সাধর্ম্য এই যে, সমুদ্র অপ্রান্ত ও গভীর অর্থাৎ অবিগাহ্য ও তুরধিগম পার অর্থাৎ পারের অধিগম করা অসাধ্য এবং নিরন্তর ঘাহার সীনা অর্থারণ করা যার না, সতাং স্থোমঃ প্রেগণুদেয়তি সমগ্রে স্থগরিতুং বিকারং ন স্ফারং জলনিধিরিবেন্দৌ প্রভবতি ॥ ১২৮॥ ॥ ॥ ইভি শ্রীভক্তিরসামৃতদিক্ষৌ দক্ষিণবিভাগে ভক্তি-রদসামান্যনিরূপণে ব্যভিচারিলহরী ॥ ॥ ॥ ৪॥ ॥ ॥

ক্রিতং তৎ ফ্রে: স্থাবাপর্যাবহিবি কারার নাতিসপ্পাত ইতি সিকুপকে। হরেরাম্পদক্ষেশি তদ্যান্দ্রশনাদিকারো হরে: শ্যানলীলোপযোগিভয়া স্বপু-শ্রুষা তস্যা কিরণগণবাধিরিতি জ্যোয়ং ॥ ১২৮॥

॥ • ॥ ইতি শ্রীহর্গম সঙ্গমনী নামাং ভিক্তিরসামৃতসিজ্টিকায়াং পঞ্লহ্র্যা-অকদক্ষিণবিভাগে রতিসামান।নিরপণে ব্যভিচারিলহরী চতুর্থী ॥ • ॥

ঐ সমৃত চন্দ্রোদয়ে আপনার বিকারও সম্বরণ করিতে পারে না, তজ্ঞপ সাধ্যগুলী কৃষ্ণচন্দ্রের আম্পেদ ধারণ করিরা আপনাদের বৃদ্ধি ও বিকার সম্বরণ করিতে সমর্থ হইতেছেন না॥ ১২৮॥

॥ # ॥ ইতি জ্রীরামনারায়ণবিদ্যারত্বরুত ব্যাথ্যায় ভক্তি-রসামৃতদিক্ষুর দক্ষিণবিভাগে ব্যভিচারি ভাবসর চতুর্থ লহনী। সম্পূর্ণ হইল॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ অপ স্থায়ী ভাবঃ॥

অবিরুদ্ধান্ বিরুদ্ধাংশ্চ জ্বান্ যো বণতাং নয়ন্।
হ্বনাজেব বিরাজেত স স্থায়ী ভাব উচ্যতে॥ >॥
হায়ী ভাবোহত্র স প্রোক্তঃ শ্রীকৃঞ্চবিষয়া রতিঃ॥
মুখ্যা গোণীচ সা দ্বেধা রস্ট্ডেঃ পরিকীর্ভিতা॥ ২॥
তিত্র মুখ্যা॥

শুদ্ধদত্ত্বিশেষাত্মা রতিমু খ্যেতি কীর্ত্তিতা। মুগ্যাপি দ্বিবিধা স্বার্থা পরার্থা চেতি কীর্ত্তাতে॥

चिनिक्कान शमानीन विककान टकाधानीन म जायः साम्री उठाटक ॥ > ॥

ু স্থারিভাবনের পূর্বতোছধিকত্বন বোধরিত্যাই স্থারীতি। যা প্রীক্ষকবিষয়া রতিঃ সএব স্থায়ী ভাবঃ পূর্বং প্রোক্তঃ সম্প্রতি তু কিঞ্চিদ্ধিকত্বেনাপি ৰক্ষাত ইতার্থঃ। তবৈধবাহ মুখোত্যাদিনা সা গৌণী রতিরচাতে ইতারেশ গ্রহেন॥২ ঃ

ভদ্ধসন্থৰিশেষাত্মা প্ৰেমপ্ৰ্যাংশুদামান্তাগিত্যত বা লক্ষিতা সেত্যৰ্থঃ ॥ ৩ ॥

## অথ স্থায়ী ভাব॥

হাস্যপ্রভৃতি অবিরুদ্ধ এবং ক্রোধ প্রভৃতি বিরুদ্ধভাব সকলকে বশীভূত করিয়া যে ভাব মহারাজের ন্যায় বিরাজ করে তাহাকে স্থায়ী ভাব বলে॥ ১॥

এ স্থলে শ্রীকৃষ্ণবিষয়া রতিকেই স্থায়ী ভাব বলা যায়, মুখ্য ও গোণভেদে ঐ রতি তুই প্রকার হয়॥ ২॥

### ত্যাধ্যে মুখ্যা রক্তি-যথা 🛚

শুদ্ধনৰ বিশেষরূপ যে রতি তাহাকে সুখ্যা বলে, মুখ্যা রতিও স্বার্থ ও পরার্থভেদে চুই প্রকার হয় ॥ ভত্ত সাধা।

অবিক্র কৈ: স্ফুট: ভাবৈ: পুঞান্ত্যাত্মানমেব বা।
বিক্র কৈর্ত্থশক্মানি: সা স্বাধা কবিতা রতি: ॥

অবক্র বিক্র ক সংক্চন্তী স্বয়ং রতি:।

যা ভাবমমুগৃহাতি সা পরাধা নিগদ্যতে ॥

ভদ্ধা প্রীতিত্তথা স্বয়ং বাৎসল্যং প্রিয়ভেড্যসোঁ।

স্বপরাথৈব সা মুখ্যা পুনঃ পঞ্চবিধা ভবেৎ ॥ ০॥
বৈশিষ্ট্যং পাত্রবৈশিষ্ট্যাৎ রতিরেধোপগছতি।

বৈশিষ্ট্যমিতি। অত্ন পাত্ৰত্বং প্ৰতিবিষমণাবিবক্ষিতং বৈশিষ্ট্য এবস্থ ভাত-পৰ্বাং ভত্তবিশেষণভোগদেব স্থিতিভেদো নামভেদদেত্যৰ্থ:॥৪॥

## ভন্মধ্যে স্বার্থা মুখ্যা রতি যথা॥

অবিরুদ্ধ ভাবদকল দারা আপনাকে যে স্পান্টরূপে পোষণ করে এবং বিরুদ্ধ ভাবদকল দ্বারা যাহার গ্রানি উৎ-পদ হয়, তাহাকে স্বার্থা রতি বলা যায়॥

অথ পরার্থা মুখ্যা রতি।

যে রতি স্বয়ং সঙ্কুচিত হইয়া বিরুদ্ধ ও অবিরুদ্ধ ভাবকে গ্রহণ করে তাহাকে পরার্থা মুখ্যা রতি বলে॥

পূর্বোক্ত মুখ্যা রতি স্বার্থ এবং পরার্থ রূপে শুদ্ধা, প্রীতি, স্থ্য, বাৎসলা ও প্রিয়তা,ভেদে পুনব্বার পাঁচ প্রকার হয় ॥৩

এই রঙি পাত্রের বৈশিক্টাপ্রযুক্ত বিশিক্টতাপ্রাপ্ত হয়, যেমন প্রতিবিশ্বিত সূর্য্য ক্ষটিকাদি দ্রব্যদকলে উৎকর্ষ লাভ যথাক : প্রতিবিশ্বাস্থা স্ফটিকাদির বস্তুর ॥ ৪ ॥
তত্র শুদ্ধা ॥
সামান্যাসোঁ তথা স্বচ্ছা শান্তিশ্চেত্যাদিয়া ত্রিধা।
এষাঙ্গকম্পতানেত্রামীলনোমীলনাদির । ৫ ॥
তিত্র সামান্যা ॥
কিঞ্চিত্রিশেষমপ্রাপ্তা সাধারণজনস্য যা।
বালিকাদেশ্চ কুষ্ণে স্যাৎ সামান্যা সা রতি র্মতা ॥ ৬ ॥

শুদ্ধা কেবলা অভ্যন্তর্বকামারে: প্রীত্যাদ্যাদ্বাদ্বিশেষৈরস্মবেতেত্যুর্থ:। সেয়মাদিমা শুদ্ধা তিখেতি তিপ্রোহত্র ত্যারা ইত্যর্থ:॥ ৫॥

তত্ত্ব সা প্রীত্যাদিত: পৃথক্ পঠিতবেন তং তং বিশেষমপ্রাপ্তা ক্রক্ষবিষয়া ভূজা রতি: কিঞ্দিন্যমণি স্বচ্ছারূপং শান্তিরূপমণি বিশেষং প্রাপ্তা স্তী সামাপ্তা নামী মতা। তত্ত্বিশিষ্টোন স্বচ্ছা ইতি শান্তিরিতি চ নামী ভাং। সামাপ্তা ভূ সাধারণজনাদৌ পৃথক্ সাাং সর্বতি চান্ত্রতা ভাদিত্যর্থ: ॥ ৩ ॥

### করিছা থাকেন তজ্ঞপ॥ ৪॥

ভন্মধ্যে শুদ্ধা যথা।।

সামান্যা, স্বচ্ছা এবং শাস্তি ভেদে শুদ্ধা তিন প্রকার হয়। এই শুদ্ধা অঙ্গকম্পন এবং চক্ষু মীলন ও উদ্মীলনাদি করিয়া খাকে ॥ ৫ ॥

ভদ্মধ্যে সমিন্যি যথা ॥

সাধারণ জন এবং বালিকাদির সম্বন্ধে শ্রীকৃষ্ণ বিষরে স্বদ্ধা বা শান্তিরূপ কিঞ্চিৎ বিশেব প্রাপ্ত না ত্ইরা থে স্বন্ধি উৎপন্ন হয় তাহাকে সামান্যা বলে ॥ ৬ ॥

যথা ॥

অস্মিনাথুরাবীথ্যামূদয়তি মধুরে বিরোচনে পুরতঃ ।
কথর দথে অদিমানং মানসমদনং কিমেতি মম ॥ ৭ ॥
ঘথা বা ॥
ত্রিবর্ধা বালিকা দেয়ং বর্ষীয়িদ সমীক্ষাতাং ।
যা পুরঃ কৃষ্ণমালোক্য হৃদ্ধুবিত্যভিধাবতি ॥ ৮ ॥

ষানসমদনং যন্ত্রিনানমেতি। তং কিম্মিন্ মধুরে বিরোচনে উদয়তি সতীতি। তম্মানের হেতো বিভিক্তি ইতার্থা। হেওন্তর্ত্ত ন পশ্যাম ইতি ভাবা। মঞ্চ ভাবেন ভাবল্ফণমিতি ইত্র সপ্রমী॥ ৭॥

ত্রিবর্ষী বালিকা দেয়মিতি। অত্ত ত্রিবর্ষেতি ওমধিটো ভূতো ভূতো ভাষী বেভাধিকতা ভূতাবৈর্বর্ষালুক চেতি কত্যা ঠিয়া খসাচ ক্রো বা চিত্তবভি মিতামিতানেন লুক্। ত্রীন বর্ষান্ ভূতান্ অসভ্যা বাধিবতীত্যাণ:। ত্রিবার্ষিকী বালিকেয়মিতি বা পাঠা কালাক্ত ক্রিভি শৈষিক্বিধানাং বর্ষসাভনবাতীত্যাভরপদবৃদ্দেশ্চ ক্রিবৃ বর্ষেণ্ ভ্যা বিদ্যোনেতার্থ:। তত্র ভব ইভাসা হি তথৈবার্থ:। ত্রিব্যী য়ৈতি পাঠভাকে:। স্থী রিসি হে বৃদ্ধে ৫৮॥

সথে! বল দেখি এই মথুরার মার্গে মধুর সূর্য্য অগ্রে উদিত হইলে আমার যে মান্স চল্র মৃতু হয় তাহার কারণ কি । । ৭॥

### ম্থা বা শু

হৈ ৰূদ্ধে! তিবৰ্ষবয়সা বালিকা অত্যে জীক্ষকে অব-লোকন করিয়া ভ্রুরস্ক্রিক ধাৰ্মানা হইতেছে, অবলোকন কর্মানা স্বচ্ছা॥ তত্তংসাধনতো নানাবিধভক্ত-প্রসঙ্গতঃ। সাধকানাস্ত বৈবিধ্যং যাস্তী স্বচ্ছা রভির্মতা॥

যদা যাদৃশী ভক্তে দ্যাদাসক্তিন্তাদৃশং তদা। রূপং স্ফটিকবং ধতে স্বচ্ছাদেগ তেন কীর্তিতা॥

যথা ॥

অথ স্কছামাহ তন্ত দিতি দ্বাভাগে। তবাপর্গো ভ্রমতো যদা ভবেদিতাদিব্
ভক্ত প্রদক্ষিত বৃতিবীলক্ষপত্বাৎ নানাবিধভক্তানাং প্রদক্ষতন্ত্রচ জলদেকাদিক্ষপাত্ত ব্যাধনতঃ সাধকানাং বৈবিধাং যাজীতি তৃ পূর্ব্বাক্তা ভ্রমাথাই
বৃতিঃ স্বচ্ছা মতা। বৈবিধাকারণমাহ যদেতি ক্ষপং স্কৃতিকবন্ধন্ত ইতি নানাভাবধারণাংশ এব দুষ্ঠান্তঃ নতু প্রতিবিশ্ববেহণি ধ্যাবন্দ্রতেরের প্রকর্মপ্রাপ্তথাব্দ।
ভক্তাভাগত চাল্যান্ত ছাবানামাগ্রমাথায়ি হাৎ অত্রবাগ্রাতো বক্ষ্যানিভ্রমাণে
ভাগিদিগংশ্রবৈতি বক্ষ্যাণিং চাত্র স্ক্রছতে তেষাং স্মাক্ সম্পর্কো
লাইটি অনাচান্ত থিয়াং আফান্বিশেষাভাবেনানিষ্ঠিত চিত্রানাং। ১।

#### তাথ সচছা॥

নানাবিধ ভক্তের সঙ্গহেতু সেই সেই সাধনদারা মাধক-সকলেরও বিবিধয় হয়, একারণ এম্বলে পূর্বে**বাক্ত তথা রক্তি** স্বচ্ছা বলিয়া সম্মত হয়॥

সাধকের বিবিধত্বের প্রতি কারণ এই যে, যথন যে প্রকার ভক্তে রতির আগজি হয়, স্ফটিকমণির ন্যায় তথন সেই প্রকার ভাব ধারণ করে, এ মিনিত ইহার নাম স্বচ্ছা রতি ॥ ক্ষিচিৎ প্রভুরিতি স্তবন্ধ্বন সিত্রমিজ্যান্নন্ন কিচত্তনগমিত্যবন্ধ্বন কান্ত ইত্যুল্লসন্। কিচিয়নিদি ভাবরান্পরম এব আংত্রেত্যা-বভ্ছিবিধনেবরা বিবিধর্তিরার্য্যো দ্বিজঃ ॥ ৯॥ আনাচান্তিধিয়াং ততন্তাবনিষ্ঠা স্থান্বে। আর্য্যাণামতিশুদ্ধানাং প্রায়ঃ স্বচ্ছা রতির্ভবেং ॥ অথ শান্তিঃ ॥

মত আগাণাং ততভাত্তমাত্রপৃষ্ঠ। এবর্তমানানাং। কা ব্রাক্ত ইত্যাদৌ ছি আগাচন্তিতশব্দম শালীয়মার্গব্দেব বিবক্ষিতং॥ ১৬॥

কোন শ্রেষ্ঠ ব্রাহ্মণ কখন ভগবান্কে প্রভু বলিয়া স্তব, কখন বন্ধু বলিয়া পরিহাদ, কখন তনয় বলিয়া রক্ষা, কখন কাস্ত বলিয়া উল্লাদ এবং কখন পরমাত্মা বলিয়া মানসিক চিন্তা এইরূপ বিবিধ দেবাছারা মানদিক বৃত্তিও বিবিধ প্রকার প্রকাশ করিয়াছিলেন॥ ৯॥

সেই সেই ভাবনিষ্ঠা রূপ স্থ্যগারে বিশেষ আয়াদশুনা চিত্ত অভিত্যক্ক আর্য্যদিগের প্রায় স্বচ্ছা রতি হইয়া থাকে। অথ শান্তি।

ে ননোনধ্যে যে নিবিবিক্সক অর্থাৎ সংশ্বাদিরাহিত্য ভাষাকে শ্ম বহা যায়॥

## দকিব। ৫ম বহরী ভক্তিরশামুত দিয়ুঃ।

তথা চোক্তং ॥
বিহায় বিষয়োন্মুখ্যং নিজানন্দস্থিতির্যতঃ ।
আজানঃ কথাতে দোহত্র স্বভাবশম ইত্যুস্থে ॥ ১০ ॥
প্রমাজ্যত্যা কৃষ্ণে জাতা শাস্তীরতিম তা ॥
বেদবর্ষিনীণ্যা গীতে হরিলীলামহোৎসবে ।
সনকদ্য তনো কম্পো ব্রহ্মাকুভবিনোহ্প্যভূৎ ॥ ১১ ॥

অথ শাস্ত্যাথাাং রকিং লক্ষন্ শনং লক্ষিত্বা তত্পলক্ষিতাং লক্ষ্মতি প্রায় ইতি। মূক্তানামণি সিদ্ধানামিতি ন্যায়েন প্রায় এব শনপ্রধানানাং পক্ষনাত্মত্মা বিদ্ধানি প্রকিটিয়া বিদ্ধানি প্রকিটিয়া বিদ্ধানি প্রকিটিয়া বিদ্ধানি প্রকিটিয়া স্বায়িষ্ট বিভিন্ন বিদ্ধানি বিদ্ধান

এই বিষয়ে প্রাচীনগণের উক্তি॥

বৈষয়িক উন্মৃণতা অর্থাৎ বিষয়বাসনা পরিত্যাগ করিয়া
যাখা হইতে মনের আনন্দ হয়, তাহার নাম শম সভাব॥ ১০॥
প্রায় শমপ্রধান ব্যক্তিদিগের পরমাজ্ঞানে শ্রিক্তে
মমতাগন্ধবিবর্জিত শালি রতি উৎপন্ন হইয়া থাকে॥

যথা ॥

দেবর্ষি নারদ বীণাদ্বারা হরি**লীলা মহোৎসব গান করিলে** সনক শ্লুষি ব্রহ্মানুভবী হইলেও তাঁ**হার ভমুতে কম্প উপ**-স্থিত হইরাছিল॥ ১১॥ যথাবা ॥

হরিবল্লভদেবরা সমস্তা—

দপবর্গাস্কুভবং কিলাবধীর্যা।

ঘনস্থন্দরমাত্মনোহপ্যভীক্তং
পরমং ব্রহ্ম দিদৃক্ষতে মনো মে॥

অগ্রতো বক্ষ্যমাণৈস্ত স্থাদৈঃ প্রীত্যাদিসংশ্রহিঃ।
রত্তেরদ্যা অদম্পর্কাদিরং শুদ্ধেতি ভণ্যতে॥

অব্ধ ভেদত্তরী হৃদ্যা রতেঃ প্রীত্যাদিরীর্যুতে।

গাঢ়াসুকুলতোৎপর্মা মমত্বেন সদাপ্রিতা॥

কৃষ্ণভভ্তেম্বন্থ্যাহ্য-স্থি-পূজ্যেম্বুক্রমাৎ।

ত্রিবিধেয় ত্র্যী প্রীতিঃ স্থ্যং বৎদলতেত্যুগো॥

আত্মনোহপীতি। আত্মানং ব্রহ্মরূপমতিক্রমোর্গ:॥ ১২॥

#### गथा वा ॥

হরিবল্পভ অর্গাৎ বৈষ্ণবদেবা দ্বারা সর্প্রবিভাবে মোক স্থুখ পরিত্যাগ করিয়া আমার মনঃ স্বীয় অভীক্টদেব খেঘকান্তি হরিকে দেখিতে অভিলাষ করিতেছে।

অত্যে বক্ষমাণ প্রীত্যাদি আপ্রিত স্বাদ দ্বারা এই রতির অসম্পর্ক হেতু ইহাকে শুদ্ধা বলিয়া উল্লেখ করা যাগ।

অপর প্রীতিপ্রস্থৃতি ভাবত্রর দার। রতির হৃদয়গ্রম তিন প্রকার ভেদ আছে, এই ভেদত্রের গাঢ় আকুক্ল্যে উৎপন্ন এবং সর্বদা স্বেহ্কে আশ্রেয় করিয়া থাকে॥

ঐ ভেদত্রয় ক্ষভ করেশ অমুগ্রহের পাত্র, সধা এবং গুরু-জন এই ভিনে ক্রমে প্রীতি, স্থা ও বংদলরূপ হইয়া থাকে ॥ অত্ত নেত্রাদিফুলছ-জ্পুণোদযূর্ণনাদয়:।
কেবলা সঙ্গলা চেত্তি দ্বিধেয়ং রভিত্রিয়ী ॥
তত্র কেবলা ॥
বিত্যস্তরদ্য গল্পেন বর্জিতা কেবলা ভবেং।
ত্রজাসুগে রদালাদৌ শ্রীদামাদৌ বয়দাকে।
তবে চ প্রজনাথাদৌ ক্রমেণের ক্লুরত্যদৌ ॥ ১২ ॥
অথ সঙ্গলা ॥
এবাং দ্যোন্তর্যাণাংবা দ্বিপাত্ত সঙ্গুলা।
উদ্ধবাদৌচ ভীমাদৌ মুখরাদৌ ক্রমেণ দা ॥ ১০ ॥

অথ সন্ধুলেতি। এবাং ভেদানাং মধ্যে জাত্র সংস্কারস্থিতিং অচ্ছায়াং তৃত্ত কভাব ইতি ভেদা। মুথরানামী কাচিন্ধা শীরকেখাগা ধাতীতি লোকপ্রসিদ্ধি। স্বিপাত ইতি ধর্মধর্মিণোরভেদোপচারাং ॥ ১৩ ॥

ইহাতে নেত্রাদির ফুল্লম্ব, জৃন্তণ ও উদযূর্ণন প্রভৃতি হয়। এই রতিত্র্যী কেবলা ও সঙ্কুলা ভেদে তুই প্রকার হইয়া থাকে ॥ ভন্মধ্যে কেবলা যথা॥

শন্যরতির গন্ধশ্ন্য হইলে ভাহাকে কেবলা বলে, এই কেবলা ক্রমে ব্রজামুগ রসালাদি ভৃত্যবর্গে, শ্রীদাসাদি স্থা-গণে, এবং নন্দপ্রভৃতি গুরুজনে ফুর্টি পাইয়া থাকে॥ ১২॥ অথ সঙ্কুলা॥

পূর্ব্বোক্ত প্রীতি প্রভৃতি ভাবত্রয়ের মধ্যে তুই বা তিনের একত্র সন্মিলন হইলে তাহাকে সঙ্কুলা বলা যায়। এই সঙ্কুলা ক্রুনে উদ্ববলি, ভীমাদি ও ব্রজেশ্রীর ধাত্রী মুধ্রাদিতে প্রকাশ পার ॥ ১৩ ॥ ষণ্যাধিক্যং ভবেদ্যত্র স তেন ব্যপদিশ্যতে॥ ১৪॥ তত্র প্রীতিঃ॥ স্থান্তবন্তি যে নুনোস্থেহসুগ্রাহ্যা হরের্মতাঃ। আরাধ্যন্তান্থিকা ভেষাং রতিঃ প্রীতিরিতীরিতা!

তেন ভাবেন ৰাণদিশাতে যথা স্থাভাবভাগপুান্ধৰো দাস্ত্ৰেন ॥ ১৪ ॥

শব্দং প্রীহরে: ন্না ন্নভাডিমানমন্ত্রতিযুক্তা ইতার্থ:। আরাধ্যথং আরাধ্যাংস্মিতি জ্ঞানমান্ত্রা স্থান্তর প্রীতিশব্দ প্রয়োগ: পূর্বত: প্রীতিশ্বদ
বৈশিষ্টাং পারিভাবিক:। অন্যতন্ত্র প্রীতিভক্তিবিপর্যায়েণ প্রয়ুক্তাতে। অমুগ্রাহা
ইত্যাণি স্থানিতি পূর্বতো বৈশিষ্টাপেক্ষরাভণাতে তত্রেভার্দমণি তথা ব্যাথ্যার
প্রীতিত্বনের বিশেষেণ দর্শরতি হি যথাং তত্র শ্রীক্রফে বছর প্রাপ্তো সকোচনং
নিয়ম:। অনিয়মে নির্মকারিণী পরিভাষা। তয়া অসৌ আরাধ্যত্বাত্মিকা প্রীতিন্
নামী রভিন্ততোহনাত্র প্রীতেশুজনবতেং সংহারিণী তত্র তত্থাং জাভায়ামনত্রে
সা মশাভীভার্থ:। তত্তোহনাত্র যদি স্থারদা তৎসম্বন্ধেনর মন্তব্যতি ভাব:।
উদাহরণেহণি কুত্রচিদক্তর গমনেহণি মন্ত্র্মযোর প্রীতির্ভবেল্পনাত্র পুংসীতি
বিবক্ষিতং স্থাণিকু জনাদণি বৈশিষ্ট্যমন্ত্রীতি ভেলো ক্ষেয়: ৪ ১৫ ॥

বাহার যে ভাবের আধিক্য থাকে, তাহাকে দেই ভাষা-ক্রোন্ত বলা যায়। যেমন উদ্ধবে সংগ্রভাব থাকিলেও দাসত্ত্রে প্রাধান্য বলিয়া অমুগ্রাহ্ বলা যায়॥ ১৪॥

ভশ্বধ্যে প্রীতি যথ। ॥

যে ব্যক্তি আপনা হইতেই ন্নে হয় তাহাকে হরির অমু-বাহের পাত্র বলাযায়। তাহাদের রতি, ইনি আরাধ্য এই জ্ঞানস্বরূপা এবং আরাধ্যে আযুক্তি বিধান করে ও অন্যক্ত ভত্রাসক্তিক্দন্যত্র প্রীতিসংহারিণী ছসে।।
যথা মুকুন্দমালায়ং॥
দিবি বা ভূবি বা মমাস্ত বাসো
নরকে বা নরকান্তক প্রকামং।
ভবধীরিতশারদারবিন্দো
ছরণো তে মরণেহলি চিন্তানামি॥ ১৫॥
ভাথ স্থাং॥
যে স্থান্তলা মুকুন্দদ্য তে স্থায়ং স্তাং মতাঃ।
সাম্যাবিপ্রস্তরশৈষাং রতিঃ স্থামিছোচ্যতে।

তুলা: তুলাভাতিমানময়রতিযুক্তা ইতার্থ: । ততঃ সাম্যাং শ্রীক্লকেন সঁহা পরম্পরং সমভাবহাদ্ধেতোবি শ্রন্তমযন্ত্রণ রূপরতি প্রকাশয়তি যা র**তিঃ না** 

প্রীতি বিনষ্ট করিয়া দেয়, এ কারণ এই রভিকে প্রীতি বলে।।
যথা মুকুন্দমালায়॥

হৈ নরকান্তক ! স্বর্গে অথবা পৃথিবীতে কিম্বা নরকৈ আমার বাদ হউক ভাহাতে কোন তুঃথ নাই, কিন্তু মরণ কালেও ভোমার শরৎকালীয় ভারবিন্দ নিন্দাকারি চরণপদ্ম চিন্তা করিব॥ ১৫॥

#### ভাথ সথ্য॥

যাহারা মুকুন্দের তুল্য, সংসকলের মতে ভাহারাই স্থা, স্থাদিগের রতি বিখাসরূপা, একারণ এ ছলে এই রতিকে স্থা ধ্লিয়া কীর্ত্তনক্রা পেল। এই রতিপরিহাস এবং প্রহাদ- পরিহাদ গ্রহাদাদি কারিণীয়মযন্ত্রণা॥ ১৬॥
থণা॥
মাং পুল্পিতারণ্যদিদৃক্ষয়াগতং
নিমেষ-বিশ্লেষ বিদীর্শ-মানসাঃ।
তে সংস্পৃশন্তঃ পুলকাঞ্চিত্রগ্রিষা
দ্রাদহংপৃন্বিক্য়াদ্য রেমিরে॥ ১৭॥
থণা বা॥

স্থাম্চাতে বিশ্রন্তরপত্তমের বির্ণোতি পরিহাসেতি ॥ ১৬ ॥

মামিতি ব্ৰহ্মণা হতানাং বালকানামন্ত্ৰোচনম্মী নিশি শ্ৰীকৃষ্ণসা ভাৰনা।
মধুবায়ামুদ্ধবং গুতি তেন কথনং বা। ত ইতি বংসসন্তালনাৰ্থং যে সংৰ্ক্ত্ৰিশি
ময়া এপ্ৰধিতা ইতি ভাৰঃ ॥ ১৭॥

## কারিণী অতএব ইহাকে অযন্ত্রণা বলে॥ ১৬॥ যথা॥

দ্রহ্মা বালকগণকে অপহরণ করিলে রজনীযোগে জীকৃষ্ণ চিন্তা করিতে করিতে কহিলেন, হায়! আজি আমি রন্দাবনে গোচারণ করিতে করিতে পুল্পিত কানন অবলোকন করিতে গিয়াছিলাম, তৎকালে বয়স্য বালকগণ আমার নিমেষকাল বিচ্ছেদে ব্যথিত চিন্ত হইয়া দূর হইতে আমি অত্যে স্পর্শ করিব, আমি অত্যে স্পর্শ করিব, এই বলিয়া পুলকাঞ্চিত কলেবরে আমাকে স্পর্শ করত বিহার করিয়াছিল॥ ১৭॥ ঘণা বা॥ শ্রীদামদোবি লিদিতেন ক্তোহদি কামং
দামোদর স্থমিছ দর্পধুরাদরিদ্রঃ।
সদ্যস্ত্রয়া তদপি ক্থনমেব কৃষ্ণ।
দেবৈ ব্রিয়ে ত্রয়মদায়ি জলাঞ্জলীনাং॥ ১৮॥
অথ বাংসল্যং॥
শুরবো যে হরেরস্য তে পূজ্যা ইতি বিশ্রুতাঃ।
অনুগ্রহম্যী তেষাং রতিবাঁৎসল্যমূচ্যতে।
ইদং লালনভব্যাশীশ্চিবুকম্পর্শনাদিকং॥

শ্রীদামেতি। দেবৈর রাজারমানস্য তব মহিবীরূপায়ে। সংখ্য ইতি বা

শুরবো শুরু ছাভিমানমগরতি যুক্তা:। বংসং বক্ষো লাভি নিজালালোরু স্থ-ভীতি বংসলা: পি রাদয়: এে হাং ভাবো বাংসলং। যথোকং ভূতীয়ে দেবস্থৃতি-মধিক ভা। বনং প্রবিজ্ঞান পত্যাবপত্যবিরহাতুরা। জ্ঞাতত ছাপাভ্রতী বংসে গৌরিব বংসলাইতি ॥ ১৯ ॥

হে দামোদর ! তুমি জ্রীদামের বাছবলে আপনার দর্পকে যথেই রূপে দরিদ্র করিলেও তথাপি সদঃ আত্মশাঘা প্রকাশ করত স্বীয় লড্জারপা রাজমহিষীকে অঞ্জলিত্রয় প্রদান করিয়াছ॥ ১৮॥

### অথ বাৎসন্য ॥

হরির গুরুত্বাভিমানময় রতিযুক্ত মানবগণই পূজ্য বলিয়া বিখ্যাত এবং তাঁহাদের অনুগ্রহময়ী রতির নাম বাৎসল্য। এই বাৎসল্যে লালন, মাঙ্গল্যাসম্পাদন, আশীর্কাদ ও চিবুকস্পার্শ প্রভৃতি হইয়া থাকে॥ যথা॥
গ্রাসি যরিরভিসন্ধিনিরোধ । জঃ
কংসদ্য কিন্তরগনৈগিরিতোহপুদের গ্রঃ।
গাস্তত্র রক্ষিত্রসদৌ গহনে মৃত্রে
বালঃ প্রযাত্যবিরতং বত কিন্তরোমি॥
যথা বা॥
স্তমস্থিভিঃ সুতন্তনী
চিবুকাগ্রে দধতী দয়ার্দ্রধীঃ।
সমলালয়দালয়াৎ পুরঃ
স্থিতিভাজং অজরাজগেহিনী॥ ১৯॥
ভাধ প্রিয়তা॥

#### যথা ॥

অকারণ বিরোধকারি কংসের পর্বতি অপেকাও গুরুতর কিঙ্করগণ গোসকল হরণ করিয়াছে শুনিয়া আমার মৃতু বালক গোগণ রক্ষা করিবার নিমিত অবিরত বনে গমন করিতেছে, হায়! এখন আমি কি করিব।

यथा वा ॥

গৃহাএবর্ত্তি পুত্রকে অবংশাকন করিয়া স্তন্তনী অজরাজ-গৃহিণী যশোদা দয়ার্ক্তিতে অঙ্গুলিদার। ঐ পুত্রের চিবুক ধারণ করত লালন করিতে লাগিলেন॥ ১৯॥

অথ প্রিয়তা॥

## দক্ষিণ। ৫ম লহরী ভক্তিরদাম্ভণিবাং।

মিথোহরে মুর্গাক্ষ্যাশ্চ সম্ভোগস্যাদিকারণং।
মধুয়াপরপর্যায়া প্রিযতাদ্যোদিতা রতিঃ।
অস্যাং কটাক্ষজ্রকেপপ্রিয়বাণীস্মিতাদয়ঃ॥
যথা গোবিন্দবিলাসে॥
চিন্মুংক্তিত্মনসো, বাধামুরবৈনিণোঃ কোহপি।
নিভ্তনিরীক্ষণজন্মা, প্রত্যাশাপল্লবো জয়তি॥ ২০॥

হরেমু গাক্ষাণ্চ মো মিপ: সম্ভোগ: স্মরণদর্শনাদাষ্ট্রবিধ:। তক্তাদিকার ধং বা মৃগাক্ষা রতি: সা প্রিরতাগণ কথিতেতি যোজাং। ভক্তাশ্রয়ায়া: শ্রীকৃষ্ণবিষয়ায়া প্রব রতে রসামানতর। নির্দিশভোং। ভক্তবিষয় শ্রীকৃষ্ণরতেত্ত ভরোদ্দীপনতাং। গ্রিয়ায়া ভাবং প্রিরতেতি নিককে: । ত্তরোগ্রণবিচনসোভি পুরত্বং। তত্তং কাত্রবিভরে। তগর্শনাত্র জাতিসংজ্ঞানি বিক্রি: ক্রিয়তে। তেন পাচিকারাঃ পাচকর্মিভাদি। সাচ মধুরাপরপর্যায়েতি মধুরানামীভার্থ:। চির্মিভাদি বক্ষামাণ্যলাহরণক্ব একাংশেন জ্যেরং॥ ২০॥

হরি এবং মৃগাকী রমণীর পরস্পার স্মরণদর্শন প্রভৃতি কাইবিধ দজোগের আদিকারণের নাম প্রিয়তা। এই প্রিয়তার আর একটি নাম মধুরা। ইহাতে কটাক্ষ, জ্রাকেপ, প্রিয়বাক্য এবং হাস্যপ্রভৃতি হইয়া থাকে॥

যথা গোবিন্দবিলাসে॥
চিরকাল উৎকণ্ঠিতমনা রাধা শ্রীমাধ্বের নির্জননিরীক্ষণজনিত প্রত্যাশা পালব যুক্ত হউক ॥ ২০ ॥

যথোত্তরমদে স্বাদবিশেষোল্লাসময্যপি।
রতিব সিনয়া সাদ্বী ভাষতে কাপি কস্যচিৎ ॥ ২১ ॥
ইতি মুখ্যা ॥
অথ গোণী ॥
বিভাবোৎকর্মজো ভাববিশেষো যোহসুগৃহতে।

তদেবং পঞ্চিবধাং রতিং নিরূপ।শিকতে। ন্যাসাং রতীনাং ভারতম্যং সামাং বা মতং। তারাদো সর্কোষেকরৈব প্রবৃত্তিঃ সাাং। দিতীয়েচ কসাচিং ক্চিং প্রবৃত্তি কিং কারণং তার্ছ যথোত্তরমূত্তরক্রমেণ সাদী অভিকৃতিতা। নম্বত্ত বিবেকা কতমং সাাং নির্কাশন একবাসনো বহুবাসনো বা। তারাদারোরনাতরস্বাদাভাবাদিবেক্তৃত্বং নু ঘটত এব। অস্তাস্য চ রসাভাষিভাপর্যাবসানারাতীতি
স্তাং। তথাপোক্রাসন্স্য এভন্ষটতে। রসান্তর্সাপ্রতাক্ষ্মের পি সৃদ্ধরস্ব্যোপ্রানেন প্রমানেন বিস্তৃশ রস্যাত্ সাম্প্রী পরিপোষাপরিপোষ্ট্রদর্শনাদম্মানেন
C6তি ভাবং॥ ২১ ৪

তদেবং মুখ্যা সপরিকরং সমাপ্য গৌণীমাহ অণেতি। বিভাবত্তমাত্রা-লম্বন্ধং। ভাৰবিশেষসৈয়ৰ তত্ত্ব তাক উমুপলভ্যমানত্বাৎ সংকৃচভ্যোবেতি

উত্রোত্তর আফাদশালিনী ও বিশেষ উল্লাসময়ী ফাদ-রিশিষ্ট হইয়া কোন ফানে কাহার স্থক্ষে প্রকাশ পাইয়া থাকে॥২১॥

॥ \*। ইতি নুখ্যা।। \*।।

অথ গোণী রতি।।

সকোচমগ্ৰী রতি দারা বিভাব অর্থাৎ আলম্বন জনিত বে কোন ভাব বিশেষ স্বয়ং প্রকাশ পায়, তাহার নাম

# निक्त। एम लहेती। चक्तित्रमामुख्निक्रः।

সংক্চন্ত্য। স্বয়ং রত্যা সা গোনী রতিরুচাতে।
হাসো বিস্ময় উৎসাহঃ শোকং ক্রোধো ভ্রং তথা।
ছুগুস্সা চেত্যসোঁ ভাববিশেষঃ সপ্তধোদিতঃ ॥ ২২ ॥
অপি কৃষ্ণবিভাবস্থমান্যমট্কস্য সস্তবেৎ।
স্যাদেহাদিবিভাবস্থং সপ্তমাস্ত রতের্বশাৎ ॥ ২০ ॥
হাসাদাবত্র ভিয়েছপি শুদ্ধসন্ত্রিশেষতঃ।

সা রভিরিতি ভাব: অনুগৃহতে প্রকটাক্রিয়তে সা গৌণী রভিরতাতে ইতি।
সোহপি ভাববিশেষো রভিরতাতে কিন্তু সা মঞ্চা: ক্রোশস্থীতিবৎ গৌণী ঔপচারিকীভার্থ: ॥ ২২ ॥

অপীতি বিভাবস্থালয়নত্ব । রতেমুধ্যায়া বশাদাদাষট্কস্য হাসাদি-ভর্মধান্তম্য ক্লংকিভাবস্থাপি সন্তবেৎ ভস্য তস্যাপি বোগাল্যাদ্থ রভের্নাদেব সপ্তমা জুগুপারাস্ত দেহাদিবিভাবস্থমের সন্তবেৎ নতু ক্লংকিবিভাবস্থমের সন্তবেৎ নতু ক্লংকিবিভাবস্থামের সন্তবেৎ নতু ক্লংকিবিভাবস্থমের সন্তবেৎ নতু ক্লংকিবিভাবস্থামের সন্তবেৎ নতু ক্লংকিবিভাবস্থামের সন্তবেৎ নতু ক্লংকিবিভাবস্থামের সন্তবেৎ নতু ক্লংকিবিভাবস্থামের সন্তব্য ক্লংকিবিভাবস্থামের সন্তবেৎ নতু ক্লংকিবিভাবস্থামের সন্তব্য ক্লিবিভাবস্থামের সন্তব্য কলিবিভাবস্থামের সন্তব্য কলিব

শুদ্ধসন্থবিশেষ ভঃ স্বার্থীয়া রতেঃ। পরার্থীয়ান্তস্যা এব পরার্থন্থ প্রাপ্তায়াঃ ॥ ২৪ ॥

গোণী রতি। হাস্য, বিশায়, উৎসাহ, শোক, ক্রোধ, ভয় এবং জুগুপ্সা অর্থাৎ নিন্দা এই সাত প্রকারকে ভাব বিশেষ বলা যায়॥ ২২॥

মুখা রতির ঋধীন প্রযুক্ত হাস্যাদি ভরপর্য্যন্ত এই ছয়টা ভাব দারা প্রীকৃষ্ণের আলদ্ধনত্ব সম্ভব হয়, আর সাধারণ রতির অধীন বলিয়া সপ্তমী যে জুগুপদা তাহাতে প্রীকৃষ্ণের আলদ্ধনত্ব হইতে পারে না, তাহাতে কেবল দেহাদিমাত্ত্বের আলম্বনত্ব সম্ভব হয়॥২৩॥

ষার্থা রতি হইতে হামাদি ভাব সকল ভিন্ন হুইলেও

পরার্থয়ো রতের্যোগান্তবিশব্দঃ প্রযুক্তরতে ॥ ২৪ ॥
হার্সোত্তরা রতির্যা স্যাৎ সা হাসরতিরুচ্যতে ।
এবং বিস্মারত্যাদ্যা বিজ্ঞেরা রত্যশ্চ ষট্ ।
কঞ্চিৎ কালং কচিন্তক্তে হাসাদ্যাঃ স্থারিতাসমী।
মত্যা চারুক্তা যান্তি তল্লীলাদ্যমুসারতঃ ।
তীয়াদনিয়তাধারাঃ সপ্ত সাময়িকা ইমে ॥ ২৫ ॥
সহজ্ঞা অপি লীয়ন্তে বলিষ্ঠেন তিরস্কৃতাঃ ॥ ২৬ ॥

ভদেবং পৌণীনাং রতীনাং হাসাদয় এব সংজ্ঞা: । পরার্থারান্ত হাসরত্যাদর ইন্ড্যাহ হাসোত্তরেভি ॥ ২৫ ॥

সহজা অপীতি ধৰি সহজা: স্থান্তথাণীতার্থ:। বলিষ্টেন রত্যুত্থ-ভদ্বিরোধি-

পরার্থা রতি যোগ হেছু ঐ হাদাদিতে রতিশব্দ প্রয়োগ চ্ইয়া থাকে॥ ২৪॥

ধে রতির উত্তরে হাস্য আছে তাহাকে হাসরতি বলা যাম, এই প্রকার বিস্ময়াদি ছয়্টী রতিতে রতিশব্দ জানিতে হইবে অর্থাৎ যে রতির উত্তরে বিস্ময় আছে তাহাকে বিস্ময়-য়তি বলৈ, এইরপ হাস্যপ্রস্তি সমুদায় গৌণী রতি॥

হাসাদি তত্ত্লীলার অমুগারে রতিছারা মনোহরত্ব লাভ করিয়া কোন সময়ে কোন ভক্তে স্থায়িত্ব প্রাপ্ত হয়, এ নিমিত্ত এই সাভটীর ধারাবাহিকত্ব নাই এবং ইহারা সময়বিশেষে প্রকাশ পায়॥ ২৫॥

महत्र **वर्षाः क्**डःनिष भावत विद्यापि जावबाता वित-

কাপ্যব্যভিচরন্তী দা স্বাধারান্ স্বস্ত্রপতঃ।
রতিরাত্যন্তিকস্থায়ী ভাবো ভক্তজ্পনেহ্থিলে।
হ্যারেডদ্যাদ্বিনা ভাবান্তবাঃ দর্বে নির্বকাঃ॥ ২৭॥
বিপক্ষাদিযু যান্ডোহ্পি ক্রোধাদ্যাঃ ছায়িতাং দদা।
শভন্তে রতিশূন্যন্বান্ন ভক্তিরদ্যোগ্যতাং॥ ২৮॥
অবিরুদ্ধরপি স্পৃকী ভাবৈঃ দঞ্চারিণোহ্ধিলাঃ।

#### ভাবেনেতি শেষ:॥২৬॥

রতিরের স্বরূপেণ স্বাধারান স্বরাভিচরস্তী অনতিক্রামন্তী স্বাভ্যন্তিক-হাব্যাখো ভাব: স্যাব। স্বাধারাদিতি পঞ্চম্যন্তো বা পাঠঃ॥ ২৭॥

রতিশূনারান্ততিরিক্তথাং। রত্যাতাসস্যাপি সম্ভাবনা নাজীতি ভরিংরা-বিভাবিতার্থ:॥ ২৮ ॥

যেন স্টা লীয়তে ভ্দা বিক্ষরণাতেরবিক্টেররপি স্টা ইভি। নঞ্ ভিন্ন ক্রমে অত্যাপ্রশা রাজদারা ইভিবৎ বিক্টমরণাস্টাঃ কালবাবধানেন সভো

## স্কৃত হইয়া লয় প্রাপ্ত হয়॥ ২৬ 🏾

যে রভি সীয় স্বরূপদারা আপনার আধারকে অভিক্রেম না করে, সেই রভিই নিখিল ভক্তজনে আভ্যন্তিক স্থায়িভাব বলিয়া পরিণত হয়। এই ভাব ব্যক্তিরেকে সন্মুদার ভাব নির-্ র্থক ॥ ২৭॥

বিপক্ষাদি গত হইয়া ক্রোধাদি ভাব সর্বাদা স্থায়িত্ব প্রাপ্ত হয়, কিন্তু রতিশ্ন্য বলিয়া ভক্তিরদে দোগ্য হইতে পালে না॥ ২৮॥

নির্বেদাদি অথিল সঞ্চারী ভাবসকল অবিক্লম্ভাবসমূহ-দারা অস্পৃষ্ট হইলেও বিলয় প্রাপ্ত হয়, কথন স্থায়িত্ব প্রাপ্ত নির্দ্রেদাদ্যা বিলীয়ন্তে নাইন্তি স্থায়িতাং ততঃ ॥ ২৯ ॥
ইত্যতো মতিগর্কাদিভাবানাং ঘটতে নহি।
স্থায়িতা কৈশ্চিদিফাপি প্রমাণং তত্ত্ব তদ্বিদঃ।
সপ্ত হাদাদ্যন্ত্বতে তৈতিউনীতাঃ স্থপুইতাং।
ভক্তেযু স্থায়িতাং যান্তো ক্লচিরেভ্যো বিতশ্বতে ॥
তথা চোক্তং ॥
অফানামেব ভাবানাং সংস্কারাধায়িতা মতাঃ।
ভত্তিরক্ষতসংস্কারাঃ পরে ন স্থায়িতোচিতাঃ ॥

६लि नीयस हे डार्थः॥ २५ ॥

নৰিদমকাক্ষমুভব্বিক্লং ততাহ প্ৰমাণং তত্ত্ব ত্ৰিদ ইতি। ত্ৰিদো ভ্ৰ ভালাং ॥ ৩০ ॥

### ह्य ना ॥ २२ ॥

এই হেতু মতি ও গর্কাদিভাব সকলের স্থায়িত্ব ঘটে না, যদি কেহ তাহার স্থায়িত্ব অভিলাষ করেন, তাহা হইলে তদ্বি-ষয়ে ভরত মুনির মত থাকা আবশ্যক।

হাদানি সাতটী পূর্ব্বোক্ত বিভাগানি ভাবসমূহ-দ্বারা পুষ্ট হইয়া ভক্তসকলে স্থায়িত্ব লাভ করত দেই সকল ভক্তে ক্রচি বিস্তার করে॥

## প্রাচীন দিগের মত যথা॥

শুদ্ধ পঞ্চাব মুখ্যত্ব প্রযুক্ত এক এবং হাদাদি সাত, এই আট ভাব সংস্কারের স্থাপক, এই আট ভাবদারা অন্যান্য ভাবের সংস্কার তিরস্কৃত হওয়াতে ভাহাদের স্থায়িত্ব উচিত ইয় নাম তত্ত হাসরতিঃ॥

চেতো বিকাশো হাসঃ শ্যাদ্বাথেশেহাদিবৈক্তাং।
অদৃগ্বিকাস-নাসেষ্ঠিকপোলস্পন্দনাদিক্ং॥ ৩০॥
কৃষ্ণসন্ধিচেক্টোপঃ স্বয়ং সংক্চদাত্মনা।
রত্যানুগৃহ্মাণোহয়ং হাসো হাসরতির্ভবেং॥ ৩১॥
ঘণা॥

পূর্কং হাসোত্তরে তাাদিনা হাসাদারে তায়া রতের্হাসর তাাদী তিসংজ্ঞ রম্কং।
সংপ্রতি হ রত্যারোপিত হেন স্বীয়ধর্মেণায়গৃহমাণবাদ্ধাসাদয়োহপি রত্যাদিনা
বাবছিরস্থ ইত্যাহ ক্ষেতি। হাসো রতিরিব হাসরতিরিতি পুরুষব্যান্তই তিবৎ
সমাস:। পূর্বা হাসরতিরিতি শাকপার্থিবাদি:। সঙ্ক্রদায়্মনা রত্যায়গৃহ্মাণ
ইত্যে হেতুমাহ ক্ষেস্বন্ধিচেষ্টোথ ইতি। তচ্চেষ্টাক্রত্থবিশেষেণ ব্যাপ্তরেজি
ভাব:। যত্ত্র ক্ষেবিরেগিচেষ্টাবৈরূপোথ: স্যান্ত্রাপি ভাবিতরাশক ক্ষ্মন্দেইনর হেতু: স্যাদিতি। এবমনাক্রাপি যোজাং॥ ত১॥

### **ज्यारधा हामति** यथा॥

বাক্য, বেশ ও চেন্টাদির বিকৃতি প্রযুক্ত চিত্ত বিকাশকারী হাস্য হয়, ইহাতে স্বীয় নেত্রের প্রকাশ এবং নাসা, ওষ্ঠ ও কপোলের স্পন্দনাদি হইয়া থাকে॥ ৩০ ॥

এই হাদ কৃষ্ণদ্যদ্ধি চেফী দ্বারা উৎপন্ন এবং স্বয়ং দক্ষোচ-ময়ী রতিকর্তৃক অনুগৃহীত হইয়া হাদরতি বলিয়া কৃথিত হয়॥ ১১॥ ময়া দৃগপি নার্পিতা স্থম্মী দিয়া তুভ্যং শপে
সথী তব নির্মাণা তদপি মে মুখং জিঅতি।
প্রাাধি তদিমাং মুধা চছলিতদাধুমিত্যুচ্যতে
বদত্যজনি দৃতিকা ছদিতরোধনে ন ক্ষমা॥ ৩২॥
অথ বিস্মারতিঃ॥
লোকোতরার্থিকীকাদে বিস্মান্টতবিস্তৃতিঃ।
অত্র স্থানেত্রবিস্তারদাধৃক্তিপুলকাদয়ঃ।

শরা দৃগপীতি বনমধো দেবপূজাব্যাজেন দধ্যাদীন্যবতার্য্য পূপাদ্যবচয়মার্থমিততত ক্রেড শ্রীষ্ তামু দধিদমীপে রহিদ দধিরকার্থং রক্ষিত দূতী প্রাপিতয়া
করাচিলীলারমান্য তস্য প্রীকৃষ্ণ্য কর্মাদাগতাং বামাং স্থীং প্রতি ছলে। ক্রিঃ।
জরতীতি বিধ্রতি পাঠে। নেইঃ। কিন্তু সুম্থীত্যেব পাঠঃ। ভয়ানকেন হাসাাজ্বাদনাং ॥ ৩২ ॥

চিত্তস্য বিস্তৃতিঃ কিমিদমিতি নানাগতিঃ চেতোবিকাশো হাস ইতাত্র

স্মৃথি! তোমার শপথ করিয়া বলিতেছি আমি দ্বির প্রতি দৃষ্টিমাত্রও নিক্ষেপ করি নাই, তথাপি তোমার এই নির্ম্লুভ্জা দখী (রাধা) আমার মুখের আঘ্রাণ লইতেছেন। অভএব ছলপূর্দাক মিথ্যা দাধ্তাপ্রদর্শন-কারিণী ইহাঁকে নিবারণ কর, শ্রীকৃষ্ণ এই কথা বলিলে, দূতী আর হাস্য সংব্রণ করিতে পারিলেন না॥ ৩২॥

অথ বিস্ময়রতি॥

অলো।কক বিষয় দর্শনে চিতের যে বিস্তার, তাহার নাম বিসায়। ইহাতে নেত্রবিস্ফার, সাধৃত্তি ও পুলকাদি হইয়া

# पक्ति। एम लहती छक्तितर्गाम् छिन्सूः।

পূর্ব্বোক্তরীত্যা নিষ্পান্ধঃ স বিস্মান্থর তির্ভবেৎ ॥

যথা ॥

গবাং গোপালানামপি শিশুগণঃ পীতবদনো

লসচ্ছীবংসাঙ্কঃ পৃথুভুক্ত চুকৈ মুক্ত কৈ চিঃ।

কৃতকোত্রারস্তঃ সবিধিভিরক্তা গোলিভিরলং

পরব্রক্ষোলাদান্ বহতি কিমিদং হন্ত কিমিদং ॥ ৩০ ॥

অথোংসাহরতিঃ ॥

সেইন্দী সাধুভিঃ শ্লাঘাফলে যুদ্ধাদিকর্মণি।

সত্রা মানসাসক্তিক ংসাহ ইতি কীর্ত্ততে ॥

বিকাশস্থ প্ৰকাশ ইভাৰ্ণঃ ॥ ৩০ ॥

যুদ্ধাদিক শ্বনীতি আদিপদেন যুদ্ধ-দান-দয়া-ধর্ম । এব গৃহন্তে। স্বাভীষ্টকর্ম্মনীতি বা পঠে: ৩৪॥

পারেক। পূর্বেবাক্ত রীতিক্র**মে বিস্ময়রতি নিষ্পান হয়।** য়েপা॥

ব্ৰহ্মা, গো এবং গোপদিগের শিশুগণকে পীতবসন, শ্রীবং-সাস্ক, বিশাল ভুজচভুউয়ে শোভমান এবং বহু বহু ব্ৰহ্মাণ্ডনাথ বিধিগণকর্ত্ব অতিশয় রূপে স্তৃয়মান হওত পরব্রহ্মান শ্রীকাশ প্রকাশ করিতে দেখিয়া, হায় ! একি একি এই বলিয়া বিশিক্ত হইয়াছিলেন॥ ৩৩॥

## অথ উৎসাহরতি n

সাধুগণ কর্ত্ত যাহার ফল প্রশংসিত হয় এরূপ যুদ্ধাদি কর্ম্মে ত্বরার সভিত যে ত্বিরতর মনের আসক্তি তাহার নাম উৎসাহ। ইহাতে কালের অনপেক্ষণ অর্থাৎ কালাপেক্ষা না কালানপেকণং তত্র ধৈর্যত্যাগোদ্যমাদয়ঃ।

দিদ্ধঃ পূর্ব্বাক্তবিধিনা দ উৎদাহরতির্ভবেৎ।

যথা ॥

কালিন্দীতউভূবি পত্রশৃদ্ধবংশীনিকাশৈরিহ মুখরীকৃতাম্বরায়াং।

বিস্ফুর্জন্মঘন্যনেন যোদ্ধুকামঃ

শ্রীদামা পরিকর্মুদ্রটং ববদ্ধ ॥ ৩৪ ॥

অথ শোকরতিঃ ॥

শোকস্থিটবিয়োগাদ্যৈশ্চিত্রেশভরঃ স্মৃতঃ ।

বিলাপ-পাত-নিশ্বাদ্য- মুখ্পোষ্য- ভ্রমাদিকৃৎ।

চি একেশতর হৈতি প্রিয়া নাশভাবনাময়তাৎ প্রমাতিশায়িচিওক্লেশ-করা, ধৈর্যাত্যাগ এবং উদাম প্রভৃতি হয়। পূর্বেরাক্ত বিধানে সিদ্ধ হয় বলিয়া ইহাকে উৎসাহ রতি বলে॥

यथा ॥

কালিন্দীতটভূমিতে পত্র, শৃঙ্গ ও বংশীর ধ্বনি হইতেছিল, ভূদ্ধারা গগণমগুল শকায়খান হইলে, অঘদমন শ্রীকৃষ্ণের শহিত যুদ্ধ করিতে ইচ্ছা করিয়া গর্জ্জনপূর্বক শ্রীদাম দৃঢ়রূপে শরিকর (কটিদেশ) বর্ষান করিলেন॥ ৩৪॥

অথ শোকরতি ॥

ইউবিয়োগ নিমিত চিতের যে ক্লেশাতিশার তাহাকে শোক বলে। ইহাতে বিলাপ, পতন, নিখাদ, মুখশোষ ও ভ্রমানি উৎপন্ন হয়, পূর্বোক্ত প্রকারে দম্পন্ন হইলে ইহা

## দকিণ। ৫ম লহরী। ভক্তিরগায়তিশিক্তা।

शृद्यीक्वविधित्वाग्रः निषः (भाकत्रिर्ज्द्य ॥ यथा की मन्द्रम् ॥ ক্লদিত্যমু নিশম্য ভত্ত গোপ্যো ভূশমনুরক্তধিয়োহ্ শ্রুপূর্ণ মুখ্যঃ। রুরুত্বরুপলভ্য নন্দসূত্রুং প্রন উপারতপাংশুবর্ববেগে ॥ ৩৫ ॥ যথা বা चरलाका क्नीस्वास्त्रिङ् তনয়ং প্রাণসহস্রবল্লভং। হৃদয়ং ন বিদীর্ঘাতি দ্বিধা

ইতার্থ: ॥ ৩৫॥

অবলোকে। তি শ্রীরজেখর: স্বয়মের সং নিক্তি॥ ৩৬॥

শোকরতি হয়॥

यथा औषभाष्म १ काशास्त्र २२ (आहरू ॥

অনেকক্ষণ পরে যথন প্রনের ধূলিবর্ষণ বেগ উপরত হইল, তথ্য গোপীগণ রোদনের ধ্বনি শ্রেবণ করিয়া বাস্তে সমস্কে নন্দনকে দেখিতে না পাওয়াতে সম্ভণ্ডচিত্ত তথা অঞ্চল্পল পূর্ণমুখ হইয়া আর্ত্তিষ্বরে রোদন আরম্ভ করিলেন ॥ ৩৫॥

যথা ॥

यामाना (माकाकून हिट्ड कहितन, महत्व लानारभक्कां व প্রিয়তম তনয়কে যথন কালিয়নাগের ভোগদারা বন্ধনগ্রস্ত দিগিমাং মর্ত্যতনোঃ কঠোরতাং ॥
অথ ক্রোধরতিঃ ॥
প্রাতিকূল্যাদিভিশ্চিতজ্বলনং ক্রোধ ঈর্য্যতে ।
পারুষ্য ক্রকৃটীনেত্র-লোহিত্যাদি-বিকারকৃৎ ।
এতং পূর্ব্বোক্তবর্থ সিদ্ধং বিছঃ ক্রোধরতিং বৃধাঃ ।
বিধাহসৌ কৃষ্ণতদ্বৈরিবিভাবত্বন কীর্ত্তিগা ॥ ৩৬ ॥
তত্র কৃষ্ণবিভাব। যথা ॥
কণ্ঠদীমনি হরেছা তিভাজং
রাধিকামণিসরং পরিচিত্য ।

কঠেতি। অম শক্রমনাায়া: কটিশায়া: ক্রোণ: ত্রীরুঞ্রতিমূলকছেনাপি

দেখিয়া আমার হৃদয় দ্বিশা হইয়া বিদীর্ণ হইল না, তথন মর্ত্য-দেহের কঠোরতাকে ধিকু॥

অথ জোধরতি ॥

প্রতিকৃল ভাবদারা চিতের যে জ্লন তাহাকে ক্রোধ কহে। ইহাতে কঠোরতা, জ্রক্টী এবং নেত্রলোহিত্যাদি বিকার হইয়া থাকে। পূর্বোক্ত রূপে সম্পন্ন হইলে পণ্ডিত-পণ ইহাকে ক্রোধরতি কহেন॥

এই ক্রোধরতি কৃষ্ণবিভাব এবং কৃষ্ণবিভাবও বৈরিবিভাব-ভেদে হুই॥ ৩৬॥

ভন্মধ্যে কৃষ্ণবিভাব যধা॥ ্দ্রীকুষ্ণের কণ্ঠদেশে শ্রীরাধার তেজোময় মণিছার চিনিডে তং চিরেণ জটিলা বিকটজ্রভঙ্গভীমতরদৃষ্টি দদর্শ। ৩৭ ॥
তব্ধিরিবিভাবা যথা ॥
অথ কংসদহোদরোগ্রদাবে
হরিমভূদ্যেতি তীব্রহেতিভাজি।
রভ্গদিলিকাম্বরে প্রলম্বদ্বিতা হভূদ্ ক্রকুটীপ্রোদ্রেখা ॥
অথ ভয়রতিঃ ॥
ভয়ং চিত্তাভিচাঞ্চল্যং মস্কুঘোরেক্ষণ।দিভিঃ।

সম্ভবতি শ্রীক্ষণস্থাপি মঙ্গলকামনরা স্থবধ্সম্বন্ধনিবর্তনাং। এবং স্ক্রী ভেমঃ॥ ৩৭॥

অধ কংসেতি। হেভিরন্তঃ জালাচ। অলিকং ললাটং ॥ ৩৮ ॥

পারিয়া জটিলা বিকট জ্রভঙ্গে ভয়ঙ্কর দৃষ্টিতে শ্রীকৃষ্ণকে **অ**ব-লোকন করিতে লাগিল॥ ৩৭॥

## कृष्णदेवित्रविভाव यथ। ॥

রঙ্গক্ষেত্রে কংগ সহোদর কন্ধন্যগ্রোধ প্রভৃতির তীত্রশ্বালাশালি বনাগ্লিতে শ্রীকৃষ্ণকে পরিবেষ্টিত দেখিয়া প্রলম্বদ্ধেরী
বলদেবের ললাটরপ গগণে ক্রকুটীস্বরূপ মেঘ্রেণী প্রকাশ
পাইয়াছিল ॥

### অথ ভয়রতি॥

অপরাধ ও ঘোর দর্শনাদিদ্বারা চিত্তের অভিশয় চাঞ্চল্যের নাম ভয়, ইহাতে স্বাক্সগোপন হৃদয়শোধ, পলায়ন এবং ভ্রম- আত্মগোপন-হচ্ছোষ-বিদ্রবন্তমণাদিক্ত ।
নিষ্পান্ধং পূর্ববিদিদং বুধা ভয়রতিং বিছঃ ।
এষাপি ক্রোধরতিবদ্বিবিধা কথিতা বুধৈ: ॥
তত্র কৃষ্ণবিভাবজা যথা ॥
যাচিতঃ পটিনভিঃ সামন্তকং
শৌরিণা সদসি গান্ধিনীস্তঃ ।
বন্ত্রগূচ্মনিরেষ মূচ্দীত্ত্র ভ্রাদধরং ক্লমং যথো ॥
ছুক্টবিভাবজা যথা ॥
ভৈরবং ক্লবতি হন্ত গোক্লদারি বারিদনিভে র্বাস্থরে ।
পুত্রগুপ্রিরভবদু ক্লেখরী ॥ ৩৮ ॥

ণাদি হইয়া থাকে। পূর্ববং নিষ্পন্ন হইলে পণ্ডিতগণ ইহাকে ভয়রতি বলেন। ইহাও ফোধরতির ন্যায় ছুই প্রকার হয়॥ তন্মধ্যে কৃষ্ণবিভাগজনিত ভয়রতি যথা॥

শ্রীকৃষ্ণ চাতুরী দ্বারা সভামধ্যে অক্রুরকে স্যুমস্তক্ষণি ঘাট্রা করিলে অক্রুর ঐ মণি বস্তাচ্ছাদন করিয়া ভ্রান্তবৃদ্ধি ও শুক্ষবদনে ক্লেশপ্রাপ্ত হইয়াছিলেন॥

ত্বুফী বিভাবজনিত ভয়রতি যথা॥

যারিদ সদৃশ ব্যাহ্রর গোকুলের ছারে ভয়কর গর্জন করিলে, পুত্র রক্ষায় যত্নবতী ব্রজেশ্রী কম্পিতমূর্ক্তি হইয়া-ছিলেন॥ ৩৮॥ অথ জুগুপা রতিঃ॥
জুগুপা স্যাদহৃদ্যান্ত্ৰাচিত্ৰনিমীলনং।
তত্ৰ নিষ্ঠীবনং বক্তুকূণনং কুৎসনাদয়ঃ।
রতেরমুগ্রহাজ্জাতা সা জুগুপা রতির্মতা॥
যথা॥
যদবধি মম চেতঃ রক্ষপাদারবিদ্দে
নব নব রস্থামমুদ্যেতং রক্তমাদীং।
তদবধি বত নারীসঙ্গমে স্মর্থ্যাণে
ভবতি মুখবিকারঃ হৃষ্ঠ্ নিষ্ঠীবন্ধু॥ ৩৯॥

বক্তুকুণনং মুধ্যা কুটিলীকরণং॥ ৩৯॥

## অথ জুগুপ্সা রতি॥

নিন্দিত বিষয় হইতে চিত্তের যে সক্ষোচ তাহার নাম জুগুপ্সা। ইহাতে নিষ্ঠীবন ( থুঁতু ফেলা ) মুখ কুটিলীকরণ এবং কুৎসন প্রভৃতি হইয়া থাকে॥

রতির অনুগ্রহ হইতে উৎপন্ন হয় বলিয়া **ইহাতে জুগুপা।** রতি বলে॥

#### यथ।॥

যে অবধি আমার মন নব নব রসের আলয় স্থারপ ঐক্ষি চরণারবিশে রমণ করিতে উদ্যত হইয়াছে, সেই স্বধি নারী-সঙ্গম স্থারণ হওয়ায় আমার মুথবিক্তি ও নিষ্ঠাবন ছই-তেছে॥ ৩৯॥ রভিত্বাৎ প্রথমৈকৈব নপ্ত হাসাদয়ন্তথা।
ইত্যক্ষী স্থায়িনো যাবদ্রসাবস্থাং নসংশ্রিতাঃ॥ ৪০॥
চেৎ স্বতন্ত্রাস্তর্ম স্থাস্থান্তর্ম ব্যভিচারিণঃ।
ইহাকৌ সাত্ত্বিকাশৈচতে ভাবাথ্যান্তানসংখ্যকাঃ॥ ৪১॥
কৃষ্ণাস্থমান্তা গাভী ত-প্রোচানন্দময়। অপি।
ভাস্তামী ত্রিওণোৎপন্ন-স্থপ্তঃখময়া ইব।

প্রথমা মুখ্যা যাবদিতি রসাবস্থায়াং তুরসা এবোচান্তে ইভার্থ: ॥ ৪০ ॥

অতস্ত্রা: স্থাযাক্ষর্যা রসাত্মতামাগতাশেচন্ত্রে পূরণা বভিচারিণস্ত্রন্ত্রিংশং ।
ভানা উনপ্রধাশং ভংসংখ্যকা: ॥ ৪১ ॥

কৃষ্ণাধ্মাদিত।স্যায়মর্ব:। কৃষ্ণকুরণময়হাদ্গাদয়স্তাবদপ্রাকৃতস্থ্মরা এব কিন্তু তদ্বরাং বিবাদাদয়ক্ত তাদৃশস্থ্যমা এব বক্তবাা:। ছংখ্মরজেন তেহাং

রতি প্রযুক্ত এক মুখা রতি এবং হাদাদি সাত, এই আটটী স্থায়িভাব রদাবস্থাকে আপ্রেয় করে না॥ ৪০॥

যদি স্থায়িভাবের অঙ্গরূপে রগব্তা প্রাপ্ত হয়, তাহা হইলে তেত্রিশটা ব্যভিচানী এবং এই আটটা ও সাত্ত্বিক আটটা একত্র মিলিভ হইয়া ভাবসংজ্ঞা লাভ করত উনপঞ্চাশৎ সংখ্যক হয়॥ ৪১॥

এই উনপঞ্চাশৎ ভাব কৃষ্ণস্ফূর্ত্তিময়ত্ব প্রবৃক্ত গুণাতীত এবং অভিশয় আনন্দময় হইলেও ত্রিগুণোৎপন্ন স্থুখ ছুংখ বিশিষ্টের ন্যায় প্রকাশ পাইয়া থাকে॥

এই সকলের মধ্যে লড্জা, বোধ এবং উৎসাহালি সাত্তি-কের ন্যায় তথা গর্কা, হর্ষ হৃপ্তি ও হাসাদি রাজসের ন্যায় ভত্ত ক্ষুব্ৰন্তি ছীবোণে। শোহাদ্যা: সাৰিকা ইব। তথা রাজদবদার্শ-হর্ষ-স্থাতি-হুদাদয়:। বিষাদদীন তামোহ-শোকাদ্যন্তামিদা ইব॥ ৪২॥ প্রায়ঃ স্থেময়াঃ শীকা উষ্ণা জুঃখময়া ইহ।

ক্রণত্ত ভদপ্রাপ্তাদিভাবনাকপেণোপাধিনোপাদানেনৈব জায়তে ক্ষক্রণত্ত তিত্র নিমিত্রমারং ভক্তানামারভাগে তৎপ্রাপ্তাদয়ভাবশ্যকা এব প্রাপ্তাশি মৃচ্ জাতের ভদ্বানাকপিলোপাধেরপাদানস্যাপগমান্ধ্রিস্য পোবগাচ্চ বৃভ্কাদিবিকি বাদাদরোহিপি স্থময়ত্তেনৈব ক্রেছীতি ভ্গেময়াইব নতু ছংশময়াঃ। তেচ ভক্তগতে স্থত্থে অভকানাং বিশ্তবোৎপদ্ধে এতে ইতি প্রতীত্যাম্পদে ভবভঃ বস্তুতন্ত্র ন তাদৃশে। যপোক্তমেকাদশে। কৈবলাং সান্ধিকং জ্ঞানমিভাগদৌ মন্নির্ভং নিশ্রণিং স্থতমিতি ॥ ৪২ ॥

প্রাম্যে বিভর্কে শীতা হর্ষাদয়:। উন্ধা বিষাদাদয়:। রতে: স্বত উষ্ণয়স্ক উৎকঠা শকা প্রাণাভয়াং। যথোক্রং। অদৃষ্টে দর্শনোংকঠা দৃষ্টে বিচ্ছেদ্

এবং বিমাদ, দীনতা, মোহ ও শোকাদি তামদের ন্যায় প্রকাশ পাইয়া থাকে ॥ ৪২ ॥

এ স্থলে শতিষরপা হর্যাদি ভাব প্রায় স্থময় এবং উষ্ণ স্বরূপ বিষাদাদি ভাব প্রায় হুঃখময় হয়, কিন্তু আশচর্য্য এই যে উষণা রতি নিবিড় প্রমানন্দ স্বরূপ॥

তাৎপর্য্য, রতিতে উৎকণ্ঠা এবং শক্ষার প্রাধান্য বলিয়া। স্বভাবতই রতির উষণ্ড হয়।

এই বিষয়ে প্রাচীনদিগের বাক্য এই যে, হে ভগবন্! ভোমাকে দেখিতে না পাইলে দর্শনোৎকণ্ঠাউৎপন্ন হয় এবং দেখিতে পাইলে বিচ্ছেদের ভয় জন্মে, অভএর ভূমি দর্শন ও চিত্রেয়ং পরমানন্দদান্ত্রাপুরঞা রতির্মতা ॥ ৪০ ॥
শীতৈর্ভাবৈ বলিঠেন্ত পুষ্টা শীতায়তে হৃদৌ ।
উন্ফেল্প রতিরত্যক্ষা তাপয়ন্তীব ভাদতে ।
বিপ্রলম্ভে ততো হৃঃখভরাভাদকৃত্চতে ॥ ৪৪ ॥
রতির্দিাপি কৃষ্ণান্যঃ শ্রুতিরবগতৈঃ স্মৃতিঃ।

ভীকতা নাদুষ্টেন নদুষ্টেন ভবতা লভাতে স্থমিতি॥ ৫০॥

শীতৈভাবৈ: শীতায়তে হর্ষাদিভি: সহাভেদং প্রাপ্রোতীতার্থ:। উক্টেরিজি স্বস্যাত্যক্ষভাবার স্বয়ং তাপয়তি কিস্কুকৈরিদাদাদিভিভিতিবর্তুক্ষেব সতী তাপয়ন্তীব ভাসতে প্রতীয়তে বিয়োগাত্যখানাং তেষাং গুণা এব তস্যাসারোপাস্ত ইতার্থ:। যথাযোগরাজাদ্যাহরয়ং বহুগুণমৌষদং তত্ত্বপুণ্রুবারিবেজি
ভাব:। আভাসভ্যাদাস্তয়োরস্থায়িশাৎ বিয়োগলক্ষণমূপাধিমধ্যেব মধ্যেহনাথা
প্রতীয়মানজাৎ ॥ ৪৪ ॥

মুখাগোণীবিভেদেন বিধা অভিনয়াদৌ ক্লফভাদিনাবগতৈ:। যদ্ভি:

অদর্শনে কোন কালেই স্থথ প্রদান কর না॥ ৪০॥

উফা রতি বলিষ্ঠ শীতাদি ভাব দারা পুষ্ট হইয়া শীতা হয় অর্থাৎ হ্রাদির সহিত অভেদ প্রাপ্ত হয় এবং উফা রতি অত্যন্ত উফত্তের অভাব প্রযুক্ত হয়ং তাপ দিতে পারে না, কিন্তু বিষাদাদি অত্যুক্ত ভাবের সহিত মিলিত হইলে অত্যু- ফের ন্যায় হইয়া তাপ প্রদান করত প্রকাশ পাইয়া থাকে। অপর এই উফা রতি বিপ্রলম্ভে তুংখাতিশয়ের আভাস মাত্র কারিণী হয়॥ ৪৪॥

म्था ७ (गीगास्त ति इरे थाकात इरेलिस अस्निशांकि

তৈৰি ভাষাদিতাং যদ্ভিন্ত দ্বেষ্ট্র রেশা ভবেং।

যথা দধ্যাদিকং ক্রব্যং শর্করামরিচাদিভিঃ।

সংযোজনবিশেষেণ রসালাথ্যো রসো ভবেং।

তদত্র সর্বথা সাক্ষাং কুফাদ্য কুভার দুতঃ।

প্রোচানন্দ চমংকারো ভক্তৈঃ কোইপ্য কুরস্যতে।

স রত্যাদিবিভাষাদ্যেরেকীভাষময়োইপি সন্।

অপ্রতক্তিদশেষশ্চ তত্ত দেতো ভবেং।

যথাচোক্তং॥

প্রতীয়্যানাঃ প্রথমং বিভাষাদ্যান্ত ভাগশঃ।

গচ্ছভো রস্ক্রপত্বং মিলিতা যান্ত্যুপগুতাং।

প্রাপ্রছি: । ৪৫ ।

স্থলে ক্ষাদি কপে শ্রুত, অবগত এবং স্মৃতদারা বিভাবাদি প্রাপ্ত হইয়া ঐ রতি ক্ষতক্তে রদস্করপ হয়। যেমন দধ্যাদি দেব্যে শর্করা ও মরীচাদি ভাগ বিশেষে সংযোজন হইলে রসালা নামে রদ হয়। দেই রূপ এখানে কৃষ্ণাদির সাক্ষাৎ অমুভব হেতু ভক্তগণকর্ত্ব সর্বা প্রকারে কোন অন্তুত গাঢ় আনক্ষ চনকার রস আস্থাদনীয় হয়। ঐ রস রতি এবং বিভাবাদির একভাবস্বরূপ হইলেও দেই দেই বিভাবাদির প্রকাশহেতু ততংবিশেষ রূপে জ্যের হয় ॥

এই বিষয়ে প্রাচীনদিগের মত যথা॥ প্রথমে বিভাগদি ভাব ভিন্নভিন্ন রূপে প্রতীয়মান হয়,পরে একত্র মিলিভ হইলে অথগু রসরূপত্ব প্রাপ্ত হইয়া থাকে, যথা মরীচথগুদেরেকীভাবে প্রপানকে।
উদ্ভানঃ কদ্যচিৎ কাপি বিভাবাদেন্তথা রদে। ইতি।
রতেঃ কারণভূতা যে কৃষ্ণকৃষ্ণপ্রিয়াদয়ঃ।
স্কন্তাল্যাঃ কার্যভূতাশ্চ নির্ব্বেদাদ্যাঃ সহায়কাঃ।
হিছা কারণকার্য্যাদিশব্দবাচ্যত্ব্বত্ত তে।
রসোহোধে বিভাবাদিব্যপদেশত্ব্যাপ্রয়ুঃ॥ ৪৫॥
রতেন্ত তত্ত্বদান্থাদ্বিশেষায়াতিযোগ্যতাং।

রতেন্বিতি। স্পট্ট ভার্থমেবোক্তদাপেপেবাদোহয়ং বিভাবস্থ ইতিতাব বাচিটে সতেন্ত তত্তদান্দাবিশেযায়াতিযোগ্যতাং কুর্মন্তীতি পরতাপ্যেবমুলেয়ং॥ ৪৬॥

অর্থাৎ এক রসস্বরূপ হইয়া যায়, যেমন মরীচও শর্কুরা পানীয় দ্ব্যে একত্র মিশ্রিত হইলে কোথাও কাহারও সম্বন্ধে অন্য রূপ রস আস্থাদনীয় হয়, তদ্রুপ বিভাবাদির রস্বিষ্য়ে আস্থাদ বিশেষ হইয়া থাকে॥

যে সকল রতির কারণ স্থরূপ কৃষ্ণ এবং কৃষ্ণভক্তাদি, কার্য্য স্থরূপ স্তম্ভাদি ও সহায় রূপ নির্বেদাদি, ইহারা সকল কার্য্যকারণ শব্দ বাচ্যাদি পরিভাগে করিয়া রদকালীন বিভা-বাদি আখ্যা প্রাপ্ত হয় ৪৫॥

যে সকল ভাব রতির তত্তৎ আস্বাদ বিশেষে অতিশয় যোগ্যতা বিধান করে, পণ্ডিতগণ ভাহাদিপকে বিভাব নামে কীর্ত্তন করেন। ৪৬॥ তাঞ্চানুভাবয়ন্তান্তন্তন্তন্তনা স্থাদনির্ভরণ ।
ইত্যক্তা অনুভাবান্তে কটাক্ষদ্যাঃ স্বান্ত্রিকাঃ ॥ ৪৭ ॥
সঞ্চারয়ন্তি বৈচিত্রীং নয়ন্তে তাং তথাবিধাং ।
যে নির্ফোদ্যয়ে ভাবান্তে তু সঞ্চারিলো স্কাঃ ॥ ৪৮ ॥
এতেষান্ত তথাভাবে ভগবংকাব্যনাট্যয়োঃ ।
দেবামাত্রং পরং হেতুং কেচিত্তৎপক্ষরাগিণঃ ॥ ৪৯ ॥
কিন্তু তত্র স্তুত্তর্কগাধুর্যাভুতসম্পদঃ ।

ভাং বিভাবিতাং রতিমমূভাবরদ্ধি অন্তম নদাশ্বাদনির্ভরাং তর্দ্ধি কুর্বান্তী উ শ্বরতেক্তক্তন্ত্রপোতিবিকাশাৎ ॥ ৪৭ ॥

তথাবিধাং বিভাবিতামমূভাবিতাক ॥ ৪৮ ॥ তথাভাবে বিভাবাদিখে ॥ ৪৯ ॥ অন্যা: শ্রীভগবংসহস্কিন্যা। অধং বক্ষামাণ: প্রকার: ॥ ৫০ ॥

অপর যে দকল সাত্ত্বিক কটাক্ষাদি ভাব পূর্ব্বোক্ত বিভা-বিতা রতিকে যনোমধ্যে আস্বাদাত্তিশয় অনুভবকরায়, একা-রণ তাহাদিগকে অনুভাব বলে॥ ৪৭॥

যে সকল নির্কেদাদি ভাব বিভাবিতা রতিকে সঞ্চার করে এবং বিচিত্রতা প্রাপ্ত করায় এ নিমিত্ত ভাহারা সঞ্চারী ভাব বলিয়া সম্মত হয় ॥ ৪৮ ॥

ভগবংসম্বন্ধীয় কাব্য নাট্য শাস্ত্রাপুরাগিগণ সেবাকেই পরম কারণ বলিয়া থাকেন অর্থাৎ যে ব্যক্তি যে ক্লপ দেবা করে ভারার সম্বন্ধে সেবারূপ ভাবোদয় হয়॥ ৪৯॥

किछ अञ्चल भडकी अछुड गांधुरी मण्लाम्भानिमी अह

রভেরদ্যাঃ প্রভাবে হিয়ং ভবেৎ কারণমূলমং ॥ ৫ • ॥
মহাশক্তিনিলাসাত্ম। ভাবোহিচিন্তাস্থরপভাক্ ।
রত্যাপ্য ইত্যয়ং যুক্তো নহি তর্কেণ বাধিতুং ।
ভারতান্ত্যক্তিরেষা হি প্রাক্তনৈরপুদোহতা ॥
যথোক্তমুদ্যমপ্রিণি ॥
ক্ষিচন্ত্যাঃ খলু যে ভাবা ন তাংস্তর্কেণ যোজ্যেৎ ।

নমু দেবতাগুররভিবদেবেয়মপি সংক্ষিনিবদ্ধত্যাপি রস্কং নাপদোভ কিমৃত তাং বিনেতাশিক্ষাহ মহাশকীতি। হলাদিনীবিলাসরপঃ অভএবাচিস্তা-শ্বরপভাক্ যা থলু মোক্ষানন্দমপি ভিরম্বরোতি শ্রীভগবন্তমপ্যানন্দরভীতি ভাষ:। নহি তর্কেণ বাধিতুমিতি। কিন্তু শ্রীভাগবতাদিশাল্লামুদার্যামুভবেনৈব গ্রহীতুং যুক্ত ইত্যর্থ:। তকেণাবাধে হেতুমাহ। ভারতাহাক্তিরেয়া হি প্রাক্ত-নৈরপুদোক্তেতি। প্রাক্তনিঃ শারীরকভাষাকারদিতিঃ শাল্লবিদ্রিঃ। শাল্লকেদং। এবং ব্রতঃ শ্বপ্রিয়নাম কীর্তা। ভাতান্তরাগো জভচিত্তীকৈঃ। হসভাগো রোদিতি রৌতি গারত্ান্মাদবন্তাতি গোক্তবাহা:। কচিজ্ঞ্নস্তাত্তিস্থা ক্রি-দ্বামিত নন্তি বিদ্যালোকিকাঃ। নৃহ্যন্তি প্রায়ন্ত্যন্ত্রশীল্মপ্রাক্ষং ভবন্তি তৃথ্যীং প্রমেত্য নির্বৃত্যি ইত্যাদি। ৫১॥

ভগবদিষয়া রভির বক্ষামাণ প্রকার উত্তম্কারণ হয়॥ ৫ • ॥

হ্লাদিনী শক্তির বিলাদ রূপ হেতু এই অবিচিন্ত্য স্বরূপ বিশিষ্ট রতিনামক ভাবকে তর্কদারা বাধিত করা উপযুক্ত নছে কারণ শারীরিক ভাষ্যকার শাস্ত্রজ্ঞীমৎ শঙ্করাচার্য্য প্রভৃতি পণ্ডিতবর্গপ্র ভরতাদি মুনির উক্তি উদাহরণ করিয়াছেন॥

উদ্যমপর্কে উক্তি যথা॥

শ্চিতা ভাব সকলকে তর্ক খারা যোজনা করিবে না।

প্রকৃতিভ্যঃ পরং ষচ্চ তদচিন্ত্যদ্য লক্ষণমিতি ॥ ৫১ ॥
বিভাবতাদীনানীয় কৃষণাদীমাঞ্লা রতিঃ।
এতৈরেব তথাভূতৈঃ স্বদম্ধরতে স্ফুটং।
যথা সৈবেব সলিলৈঃ পরিপূর্য্য বলাহকান্।
রঞ্জালয়ো ভবত্যেভি রু ফৈতৈতেরেব বারিধিঃ॥ ৫২ ॥
নবে রভ্যক্ষরে জাতে হরিভক্তদ্য কদ্যচিৎ।
ুবিভাবহাদিহেভূত্বং কিঞ্জিৎ দ্যাৎ কাব্যনাট্যয়োঃ ৫০ ॥

প্রভাবমের বিরুণ্যেতি বিভাবভাদীনিতি শেষ:। তথা ভূতৈর্বিভাবাদিছং প্রাক্তিঃ ॥ ৫২॥

তহি কিবানাটায়ো বৈৰিষ্ধিং সাতিত্ৰাহ নৰ ইতি । **হরিভক্তস্য কসাচিৎ** কাৰ্যাদাৰ্থচ-ধ্বিবিজ্ঞা। ইতাদিকরণে সম্মাধিবক্ষা। তত্ৰ হ্**বাট্ডায়কাৰ্যনাটায়ো** বিভাৰতাদিকারণৰং সাাং ওচ্চ কিঞ্ছিৎ স্যাৎ। জাত্ৰতৌ তু প্ৰকা<mark>রাত্তরস্যাপি</mark> যথা তৎকারণক ন তথেতা গং ॥ ৫ত ॥

যাহা প্রকৃতির পর অর্থাৎ অপ্রাকৃত তাহার নাম অচিন্তা ॥ ৫১॥
মনোহরা রতি কৃষ্ণাদিকে বিভাবতা প্রাপ্ত করাইয়া ঐ
কৃষ্ণাদি বিভাবের সহিত স্পান্টরূপে আপনাকে বর্দ্ধিত করে।
যেমন রত্বাকর আপনার সলিল দ্বারা মেঘ সকলকে পূর্ণ
করিয়া পরে ঐ মেঘ সকলের র্ক্ট জলের সহিত আপনাকে
বারিধি রূপে বিধান করে, তদ্ধেপ ॥ ৫২॥

যদি বল কাব্য নাট্যের ব্যর্থতা হইল, ভাহার সমাধান এই যে, কাব্যাদির অর্থ চর্দ্রণাভিজ্ঞ কোন হরিভজের নৃত্তন রত্যকুর উৎপন্ন হইলে তৎসম্বন্ধে হ্য্যাঞ্জিত কাব্য নাট্যের বিভাবাদি কিঞ্ছিৎ কার্য শ্বরূপ হয়॥ ৫৩॥ হরেরীষচ্ছুতিবিধে রসাস্বাদঃ সতাং ভবেং।
রতেরেব প্রভাবোহয়ং হেতৃন্তেষাং ভথাকুতো ॥ ৫৪ ॥
মাধুর্য্যাদ্যাপ্রায়েনে কৃষ্ণাদীংস্তমুতে রতিঃ।
ভথামুভূরমানান্তে বিশুর্ণাং কুর্বতে রতিং।
ভাতস্তস্য বিভাবাদিচতৃক্ষ্যা রতেরপি।
ভাত সাহায়কং ব্যক্তমিথোহজন্মনবেক্ষ্যতে ॥ ৫৫ ॥

তহি কথমার চ্চাবেষ তত্ত দপ্রয়োজকং সাাং নেতাহ হরেরিত। ঈষং শতিবিধাবলি সাাং। তাজাং তত্ত্ব প্রপ্রাজকং সাাং নেতাহ হরেরিত। ঈষং শতিবিধাবলি সাাং। তাজাং তত্ত্ব প্রসায় করামেরেতি ভাবঃ। শ্রীহল্মদাদীনাং নিতামের রামায়ণশ্রবণ প্রসিদ্ধে:। নৈষাতিহ:সহা ক্রামিতাদি শ্রীপরীকি ৎপ্রভৃতিবচনাং। তব কথামৃতং তপ্রজীবনং কবিভিরী ড়িত মিতি শ্রিবজ্ব দেবীনামভিলাঘাচ্চ। নচ তেন বিনা তেয়ু তত্ত্বপত্তিন সভাবোত্তা শক্ষাহ তেষাং কারণাদীনাং তথাকুতে বিভাবতাদি প্রাপণে হেত্রুরং প্রেণিক্রতে: প্রভাব এব সাাং॥ ৫৪ ॥

ভমুতে প্রকাশরতি॥ ৫৫ ।

ভবে কি প্রকালে আরেড় ভাব সকল কাবা নাট্যাদির কারণত্ব না হইবে, উত্তর এই যে, হরির ঈষং প্রবণ মাত্রে সংসকলের রসাস্বাদ হয়, রুফাদির বিভাবত্তাদি নির্বাহে রতিরই প্রভাব হেতু হইয়া থাকে॥ ৫৪॥

রঙি মাধ্র্যাদির আশ্রের প্রযুক্ত কৃষ্ণাদিকে প্রকাশ করে এবং কৃষ্ণাদিও অসুভব গোচর হইয়া রতিকে বিস্তীর্ণ করিয়া থাকেন। অতএব বিভাবাদি চতুষ্টয় এবং রঙি এই উভয়ের এফ্রেন নিরন্তর সহায়ত্ব দুষ্ট হয় ॥ ৫৫॥

কিন্তেত্বাঃ প্রভাবাংপি বৈরূপো সতি কৃঞ্জি। বৈরূপাস্ত্র বিভাবাদেরনৌচিত্যমূদীর্য্যতে ॥ ৫৬ ॥ অলোকিক্যা প্রকৃত্যেয়ং স্ক্রেরহা রসন্থিতিঃ। যত্র সাধারণতয়া ভাবাঃ সাধু ক্রুরস্তামী। এষাং স্বপরসম্বন্ধনিয়মানির্ণয়ো হি যঃ।

বিভাবাদেরিতি বিভাবোহত শ্রীকৃষ্ণ হক্তবিশেষঃ শ্রী**কৃষ্ণত তদাদেংবিরূপাসম্প**ন্ যুক্তবিস্থাং ॥ ৫৬॥

অথ তাদৃশীরতিরের প্রাচীনভক্তানাং ভাবৈ: সহার্কাচীনানাং ভাবান্
সাধারণামানয়তি যেন রসন্থিতিরপি তাদৃশী স্যাদিতাাহ অলৌকিক্যেডাদিনা
প্রতিপদতে ইতাবেন। ভাবা অয় বিভাবাদয়ো রত্যাদয়ৼ । ষহকং। ব্যাপারোহতি বিভাবাদেশায়া সাধারণী ক্ষতি:। ভংপ্রভাবাং প্রস্যাসন্ শাঝোধিপ্রবনাদয়:। উংসাহাদিসমুদ্রোধ: সাধারণাভিমানত:। নৃণামপি সমুজাদিলজ্মনাদে ন জ্যাতি। সাধারণোন রত্যাদিরপি তহং প্রতীয়তে। পর্স্য য়
পরস্যেতি মমেতি ন মমেতি চ। ভদাস্বাদেবিভাবিদেং পরিছেদোন বিদ্যতে।
ইতি প্রবনাদয়ত্যাদৃশতে হাং রত্যাদেরপি সাত্মগত্বেন গ্রীড়াতক্ষাদিতির্ভবেং।
পরগত্বেন রস্তান স্যাদিতি ভাবং। মুনিবাকোত্বভোগাংশঃ স্বয়্মক্যেবেত্য-

রতির বিরূপতা ঘটিলে তদীয় প্রভাব সঙ্কৃচিত হয় কিন্তু কৃষ্ণভক্ত এবং ঐক্রিয় রূপ বিভাবাদির বৈরূপ্য উপযুক্ত হয় না, স্থভরাং তাঁহাদের সঙ্কোচ নাই॥ ৫৬॥

অলৌকিকী প্রকৃতি দারা এই শ্বন্থরহা রদস্থিতি হর, যে রদস্থিতিতে দামান্যাকারে স্পান্ট রূপে ভাব দকল স্ফৃত্তি পাইয়া থাকে। এই ভাব দকলের স্বরূপ দম্বন্ধের যে অনির্ণর,



সাধারণ্যং তদেবোক্তং ভাবানাং পূর্বসূরিভিঃ॥
তত্ত্বং প্রীভরতেন॥
শক্তিরস্তি বিভাবাদেঃ কাপি সাধারণী ক্বতোঁ।
প্রমাতা তদভেদেন স্বং যয়া প্রতিপদ্যতে॥ ৫৭॥
তুঃগাদয়ঃ ক্ষুরস্তোহপি জাতু স্বীয়তয়া হৃদি।
প্রোঢ়ানন্দচমৎকার-চর্বাণামেব তন্বতে।
প্রাশ্রেজয়াপ্যতে জাতু ভাক্তঃ স্থাদয়ঃ।

ভেদাংশ এবতু বিভাবাদে: শক্তিরিতি ভাব: ॥ ৫৭ ॥
অনামণি ক্ত্রহতাং দৃশ্যতি হংখাদয় ইতি ঘাতাাং । তাদৃসা নির্ণয়েহণি সঙি
মদা হংখাদয়: শীয়তাণি ক্বলি বদাচ স্থাদয়: পরাশ্রতয়াণি ক্রন্তি ভদাশীতি বোজাং। হংখাদীনাং প্রোটানন্প্রাণগন্ত হংখাদিশান্তিপ্রক্মায়ভ্যাং
ক্থাদয়ন্তর সমৃত্তা ইতি তৎ কাবাারত মুখাদাসংক্রেণাভ্রতসা তৎ শ্রবণাদিসম্বেহণান্তরহুস্কানং বর্ত্ত এবেতি যথা শ্রীসীতাহরণাদাবিত্যভিপ্রায়ঃ। তয়

ুপুর্বি পণ্ডিভাগণ ভাহাকে সাধারণ বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন॥ ভরতমুনির উক্তি যথা॥

ক্রিয়াতে বিভাবাদির কে।ন সাধারণী শক্তি আছে, প্রমাণ কর্ত্তা ঐ শক্তি দ্বারা বিভাবারি সহিত আপনাকে অভেদ রূপে প্রতিপন্ন করেন॥ ৫৭॥

কদাচিৎ যদি হৃদয়নধ্যে চুংখাদি স্বীয় রূপে স্ফূর্ত্তি প্রাপ্ত হয়, তাহা হইলে ঐ ছুংখাদি গাঢ় আনন্দ চন্দ্রকারের চর্বনিকে বিস্তার করে, আর কমাচিৎ যদি হৃদ্যে পরাপ্তায় হৃদরে পরমানক্ষদক্ষে। হৃমুপচিষ্বতে ॥ ৫৮ ॥

সন্তাবশ্চে দ্বিভাবাদেঃ কিঞ্চিমাত্রস্য জায়তে ।

সদ্যশ্চ হৃতীয়াক্ষেপাং পূর্ণ তৈবোপপদ্যতে ॥ ৫৯ ॥

কিঞ্চ ॥

রক্তিঃ স্থিতাসুকার্য্যের লোকিক হাদিহেতুভিঃ ।

চেৎ। ন বিনা বিপ্রক্তেন সংস্থাগঃ প্রটিমগ্রত হতি নোপ্রদাতে ॥ ৫৮॥

তস্যা রতেরনামপি প্রভাবং দর্শরতি প্রীক্ষণণীলাপরিকরগতবিভাবাদেঃ কিঞ্চিনাত্রস্যাপি সন্থাবদেওজ্ঞায়তে আধুনিক তত্তংস্বাসনভক্তানাং হাদাবির্জ্ঞ-বৃত্তি তদা বিভাবান্থভাবসাল্লিকস্কারিণ ইতি চতুইয়স্যাবিদ্যমানস্যাক্ষেপাৎ ক্ষোর্বাং পূর্ণতৈবোপ্পদ্যতে সিধ্যতীত্যর্থঃ॥ ৫৯॥

তদেবং মনসা তদস্ভিবিত্নাং রসমুপপাদ্য সাক্ষান্তদস্ভবিত্নাং রসমুপ পাদরিষারভাগানবাদেন বিরোধিমভম্থাপয়তি রতিরিতি। নাটাজ্ঞা ইত্যপ-লক্ষণং কাব্যমাত্রজানাং। তেচ লৌকিকা এব ভেষাং রসোংপত্নৌ তিবিধ-জনাং পরিকরাং দৃশাকাব্যে ভাবদক্ষার্যা নলাদয়ঃ অন্বর্তারো নটাত্তদ্দ্র-ষ্ঠারং সামাজিকাং তথা প্রব্যকাবেট জন্মেণ তে প্রোভবাবক্ষোভারং। ভ্রো-ফ্কার্যান্তব্যার রসনিশিতিং ন তে মনাজে লৌকিকতাং পারিমিতাাভ্রানি

রূপে স্থাদি ক্র্ত্তি প্রাপ্ত হয়, তাহা হইলে ঐ স্থাদি পরমা-নদ্যের সন্দোহকে ব্দ্ধিত করে॥ ৫৮॥

শ্রীকৃষণীলা পরিকর গত বিভাবাদির যদি কিঞিমাত্তে রও সন্তাব দম্পন্ন হয় অর্থাৎ যদি আধুনিক ওত্তবাদনাযুক্ত ভক্তের হৃদয়ে সন্তাব আবির্ভাব হয়, তাহা হইলে তৎকাণাৎ বিভাব, অমুভাব, সাত্ত্বিক এবং সঞ্চারী এই চতু্নীরের স্ফুর্কি হেতু ঐ সন্তাব সিদ্ধ হইয়া থাকে॥ ৫৯॥

লোকিক হেতু প্রযুক্ত অসুকরণ কার্ব্যে রভির স্থিতি হইকে।
[ ৭৬ ]

রসং স্যান্নেতি নাট্যজ্ঞা যদাত্যু ক্রমেব তৎ ॥ ৬০ ॥ অলোকিকীত্বিরং ক্রফরতিঃ সর্বাদ্ভুতাভূতা। যোগে রসবিশেষত্বং গচ্ছত্যেব হরিপ্রিয়ে।

সম্ভাবাদ্য। নচামুকর্ত্বক্ত্রোজীবিকার্থং তত্তদমুকরণাং। কিন্তু দ্রষ্ট্রোজো রসং
মন্যন্তে তেষাং নিবন্ধচা হুর্যোণ তত্তচ্চরিত স্যালৌকিক থাদি প্রাপ্তে:। তত্তচ সব্ধসনেবের। নচ জরনী মাংসকাদির। তবেত দত্যুপগছ্রোহ যুক্তমেবেতি। কিন্তু
লোকাতীনানস্ত গুণাঃ শ্রীরামসীতাদ্যোহপি যারজা মুকার্যাদিয় প্রবেশ্যন্তে তত্ত্ব
যুক্তমিতি ভাব:। তথামু কর্ত্বক্রোর্যদিস্বাসনহং স্যাতদা তেষাংবা কথং ন
স্যাদিতি চ॥ ৬০॥

অথ তবৈর সমতাত্কার্য্যাদিষপি রসমুপপাদ্যতি অলৌকিকীবিতি মোক্ষানন্দ্যাপি তিরস্কারিত্বাং সর্বানন্দমূল্য শ্রীভগবতোংপ্যানন্দকত্বাং সর্বেতি শ্রীভগবংপ্রাত্ত্তাবান্তরাণাং রতিতোংপি প্রমাধিক্যাং। তচ্চ স্বয়ং শ্রীক্বঞ্চন তদ্বস্করেণচ যার্ক্তালাপিরিকরিত্যাদ্যক্তবাং। হরিপ্রিয়ে সাক্ষান্তদক্তবি তিরি তল্লীলাপরিকরে রতেঃ প্রমাশ্রারে। নমু ত্ংধময়বিরোগে তেষাং কথং বসঃ স্যাৎ রস্যা প্রমানন্দময়তাং তত্রাক বিয়োগেত্বিতি। অভ্তানন্দবিবর্ত্তবং শতঃ প্রমানন্দসক্রপত্বাং সক্ষানন্দ্যশূল শ্রীভগবদাল্যন্ত্রান্ত প্রগাঢ়ার্ত্তিরাভাসতং বিয়োগে জ্ঞানপরিণামত্বংধস্য তস্যামধ্যাসাত্ত্যান্ত্র তত্র নিমিত্তব্বাং প্রত্ত্রংখ্যাপি দৃঢ়প্রত্যাশ্রা তিরস্ক্রত্যান্তিত ভাবঃ। বিবর্ত্তাহ্র পরীপাকঃ

তাহাতে রদ উৎপক্ষ হয় না, নাট্যজ্ঞেরা এই ষাহা বলিয়া থাকেন তাহা যুক্তিসঙ্গত বটে॥৬০॥

এই কৃষ্ণরতি অলোকিকী, সমুদায় অন্তুত হইতেও অন্তুত, ইহা হরিপ্রিয় ব্যক্তিতে যোগ হইলে রস বিশেষত্ব প্রাপ্ত হয় এবং বিয়োগ হইলে অতিশয় আনন্দের বিবর্ত্তর অর্থাৎ বিয়োগেস্বন্ধুতানন্দবিবর্ত্ত দেখত্যপি।
তানোত্যেয়া প্রগাড়ার্তিভরাভাসস্থার্জিকা॥৬১॥
তারাপি বল্লবাধীশনন্দনালম্বনা রতিঃ।
সান্দ্রানন্দচমংকার-পরমাবধিরিষ্যতে।
যংস্থােঘলবাগস্তাঃ পিবত্যেব স্বতেজ্ঞসা।
রমেশমাধুরীসাক্ষাংকারানন্দার্কিমপ্যলং॥৬২॥

ভদাা: স্বরূপাননাণা ভাবে হেছু:। উর্জিভেতি অনাথা ভাবে দা তাজোতৈব নতু তাজু: শকোতেতি। তত্ক: প্রীব্রুদেবীভি: স্বয়মেব। আশাহি পর্মং ছ:ৰ্মিড্যাদ্যনম্ভব: তজ্জানতীনা: ন: ক্ষে তণাপ্যাশা হরত্যগৈতি॥ ৬১॥

তদেবং শামান্যত: শ্রীকৃষ্ণরতে: দর্বোৎকর্ষ্ প্রামন্ত্রা গ্রান্থ বৈশিষ্টছাহ তত্রাপীতি দ্বাভাগে যংস্থোঘণবেতি। রমেশোহত শ্রিক ক্রিণীনাগদাবস্থা দ এব। তদেতত ুহরি: পূর্ণতমেত্যানী তত্রাপ্যেকান্তিনাং শ্রেষ্ঠা ইত্যাদৌচ স্ফু
ব্যাথাতিমের ॥ ৬২ ॥

পরিপাক ধারণ করিয়া এই রতি প্রগাঢ় ছুঃখভরের আভা-সত্ব বিস্তার করে॥ ৬১॥

তনাধ্যে আবার নন্দনন্দনাশ্রিতা রতি নিবিড় আনক্ষ চনৎকারের পরম দীমা পর্যন্ত আরোহণ করিয়া থাকে। কারণ যে রন্দাবনচন্দ্রের প্রথমমূহের লেশরূপী অগস্ত্য স্বীর তেজে রুক্মিণীনাথের মাধুরী দাক্ষাৎকার রূপ আনক্ষ সমুন্দ্রকে তুচ্ছ জ্ঞান করিয়া পান করিয়াছেন অর্থাৎ নন্দনন্দ্রের মাধুর্য্য রুক্মিণীনাথের মাধুর্যকে তিরোহিত করিয়াছে॥ ৬২ ॥

### किक ॥

পরমানন্দ তাদাঝ্যাদ্রত্যাদেরস্য বস্ততঃ!
রদস্য স্থাকাশস্বমথগুত্বক দিধ্যতি।
পূর্বামৃক্তান্দ্রিধা ভেদান্ম্থ্যগোণতয়া রতেঃ।
ভবেন্ড ক্তিরদোহিপ্যেষ মুখ্যগোণতয়া বিধা।
পঞ্চধাপি রতেরৈক্যান্ম্থ্যকে ইহোদিতঃ।
সপ্তধাত্র তথা গোণ ইতি ভক্তিরণোহন্টধা॥ ৬৩॥

পরসাননভাদাত্মাদিতি পরমানন্দাংজ হলাদিনীশকিং। তত্ত রতিন্তন্মূলা। কৃষ্ণরূপো বিভাবস্ত শক্তিশক্তিমভোরেকায়কস্বান্তহ্নত্যাত্মকং। ভক্তরপো স্বানিষ্ট:। অকুভাবা বাভিচারিণত তত্থা ইতি রত্যাদেন্ত তত্তদাত্মাপ্রাপ্তঃ। তত্ত পূর্বদৈশিতমোক্ষানন্দতিরভাবেত্মীভগবদ্দীকারিমহানন্ত্যা বস্ততো মূলাংশবিচারে সতি স্থাকাশতং মন
আলোনধীনস্থ প্রকাশক মণগুর্মননাক্ত্রিময়হঞ্চ সিধাতীতি বিব্যাহিং। ৬০ ঃ

### আরও বলি॥

বস্ততঃ হলাদিনী শক্তির সহিত তাদাত্ম্য প্রযুক্ত রত্যাদি অর্থাৎ রতি প্রেম স্কেহাদি রদের স্বপ্রকাশত্ব এবং অথওত্ব সিদ্ধ হয়।

পূর্বে মুখ্য গোণ ভেদে রতির হুই প্রকার উল্লেখ করা হইয়াছে অতএব এই ভক্তিরসও মুখ্য ও গোণ ভেদে হুই প্রকার হয় অর্থাৎ মুখ্য ভক্তিরস ও গোণভক্তিরস। রতির এক্য প্রযুক্ত পাঁচপ্রকার ভেদ থাকিলেও মুখ্য এক এবং গোণ সাত, এই উভয়ে মিলিত হইয়া ভক্তিরস আট প্রকার হয়। ৬০।

তত্র মুখাঃ॥

মুখ্যস্ত পঞ্চধা শান্তঃ প্রতিঃ প্রেয়াংশ্চ বংসলঃ
মধুরশ্চেত্রামী জ্ঞেয়া যথাপৃর্বমনুত্তমাঃ ॥
অব গোণঃ ॥
হাদেয়াহছু হস্তথা বারঃ করুণো রোদ্র ইত্যপি।
ভয়ানক সনীভংস ইতি গোণশ্চ সপ্তধা ॥ ৬৪ ॥
এবং ভক্তিরসো ভেদাছয়োর দিশধোচাতে ।
বস্তুত্ত পুরাণাদে পঞ্চধব বিলোক্যতে ॥ ৬৫ ॥

শ্বেত শিচতে (ইক্লণঃ শোণঃ শ্যামঃ পাগুরপিঙ্গণে)।
অন্ত্রমা: কনিষ্ঠা: ॥ ৬৪ ॥
পঞ্চিবে ( চিহাসাধীনাং ব্যভিচারিয়ু প্র্যব্যানাং ॥ ৬৫ ॥

যশসঃ শুরু রবং কবিসময়ালুরত্বাণ মন আদীনাং চল্রাদিবভত্তদ্ধিঠাত-

### তন্মধ্যে মুখ্যভক্তিরদ যথা॥

মূখ্য ভক্তিরদ পঞ্চ প্রকার। মথা শাস্ত, প্রীক্ত, **প্রেয়, বং**-সল ও মধুর, কিন্তু এই পাঁচের পূর্ব্ব পূর্ব্ব**কে কনিন্ঠ জানিডে** ইইবে॥

## व्यथ ८गीन ॥

গোণভক্তিরণ সাত প্রকার যথা—হা**দ্য, অচুত, বীর,** করুণ, রৌদ্র, ভয়ানক ও **গ**ভংস ॥ ৬৪ ॥

এইরপ মূখ্য গোণ ভেদে ভক্তিরস ঘাদৃশ প্রকার হয়, কিন্তু পুরাণাদিতে পাঁচ প্রকারই দৃষ্ট হইয়া থাকে ॥ ৬৫॥ উক্ত ঘাদশ রদের ঘাদশ প্রকার বর্ণ যথা। খেত, চিত্র, গোরো ধ্রতথা রক্তঃ কালো নীলঃ ক্রমাদমী ॥ ৬৬ ॥
কপিলো মাধবোপেন্দ্রে। নৃদিংহো নন্দনন্দনঃ।
বলঃ কূর্মন্তথাকল্পী রাঘবো ভার্গবাঃ কিরিঃ।
মীন ইত্যেষু কথিতাঃ ক্রমাদ্রাদশ দেবতাঃ।
পূর্ত্তেবিকারবিস্তারবিক্ষেপক্ষোভতস্তথা।
সর্বভিক্তিরদাস্বাদঃ পঞ্চধা পরিকীর্তিতঃ ॥ ৬৭ ॥
পূর্তিঃ শাস্তে বিকাশন্ত প্রীতাদিষ্বপি পঞ্চয়।

মুর্ত্তিভেদেন বা তেষাং রূপকল্পনামাহ খেত ইত্যাদি ॥ ৬৬ ॥

আব ভগবংসথ জিনামেতে বাং রসানাং চ ক্রাদীনামনি রুজাদিবদ স্তর্থামি ছেন ভগবদ তারা এব জ্ঞেরা ইত্যাহ কথিলো মাধবোথে ক্রাবিতি কিরিবরাহ: মীন-ছানে বুজো বা পঠনীয়:। তচ্চেষ্টায়া অরোচক ছাং। মীনস্য সচিচ দান্দবিগ্রহ∙ ছাং॥ ৬৭॥

প্কবিতি হাসাসাহিত্যাত্মকরং। উর্গ্রোরীত:॥ ৬৮॥

আরুণ, রক্ত, শ্যাম, পাণ্ডর, পিগল, গৌর, ধূঅ, রক্ত, কাল এবং নীল॥ ৬৬॥

দ্বাদশ রদের দ্বাদশ অধিষ্ঠাত্রীদেবতা যথা।।
কপিল, মাধব, উপেক্র, নৃসিংহ, নন্দনন্দন, বলরাম, কুর্ম্ম,
কল্ফি, রাঘব, ভার্গবি, বরাহ এবং মীন॥

পূর্তি, বিকাশ, বিস্তার, বিক্ষেপ ও ক্ষোভ হেতু সকল ভক্তিরসের আয়াদ পঞ্চধারূপে পরিকীত্তিত হয়॥ ৬৭॥

শান্তরদে পূর্তি, প্রীতাদি হাদ্য পর্যান্ত পঞ্রদে বিকাশ, বীয় ও অভ্তরদে বিস্তার, করুণ ও উগ্রবদে বিক্ষেপ এবং বীরেইছুভেচ বিস্তারো বিক্ষেপঃ করুণোপ্রয়োঃ।
ভয়ানকোহথ বীভংদে কোভো ধীরৈরদাহতঃ।
অব্ধস্ত্রপর্পত্তেইপ্রেমস্তি কচিং কচিং।
রসেযু গহনাম্বাদবিশেষঃ কোইপ্যসূত্র্যঃ॥ ৬৮॥
প্রতীয়্মানা অপ্যক্তিপ্রাথিয়ঃ দপদি ছঃখবং।

ভত্র তাবং প্রক্রিধা জনাঃ প্রাম্শান্তে ভারাভকাঃ ভারকভকাঃ প্রাজ্ঞা আরানানে চিত । তত্র কনিচদাশ্বতে । নমু, বিরোগে যথা রসতা স্থাপিতা তথা প্রতীয়তে অক করণে বিরোগ ইব লীলাপরিকরণক্ষণভাবাভকানাং তৎপ্রাপ্তাশ্বা বাতারাহ ভ্রানকে ভরেনাজ্ঞাদনারীভংসে চাস্দাক্ত্রা। ক্ষণাক্ষাদিক্রণাজ্যাদনালানারীভংসে চাস্দাক্ত্রা। ক্ষণাক্ষাদিক্রণাজ্যাদনালানারীভংসে চাস্দাক্ত্রা। ক্ষণাক্ষাদিক্রণাজ্যাদনালানারীভংসে চাস্দাক্ত্রা। ক্ষণাক্ষাদিক্রণাজ্যাদনালানারীভংসে চাস্দাক্ত্রা। ক্ষণাক্ষাদিক্রণাজ্যাদনালানার তথা গিলাক্র কর্মানা ইতি । অইজঃ শাল্লাকর-ভক্তানাং বৈর্গাপত্তিঃ স্থাবিত ভ্রারভাবকভক্তানাং ভক্তর্পাক্রাম্বিভাবিত বিজ্ঞানা আমি ভারভাবকভক্তানাং ভক্তর্পালায় ক্ষণাদ্যাঃ ব্রসাঞ্চালাক্র বিজ্ঞানা বিষ্ণালালাভ্রের প্রতীয়নানা অপি ভারভাবকভক্তারাদ্যাঃ ক্ষণাদ্যাঃ ব্রসাঞ্চাক্রের বিজ্ঞানার্যানার্যালালার বিজ্ঞানার্যালার বিজ্ঞানার্যালার বিজ্ঞানার বিজ্

ভয়ানক ও বীভংদে ক্ষোভ, পণ্ডিতগণ এই রূপ বিধান করিয়া। শাকেন I

শান্তাদি ভাব সকলের অথও স্থারূপত্ব হইলেও রক্ষ বিষয়ে কোন উত্তম নিবিড় আশ্বাদ বিশেষ হইয়া থাকে ॥৬৮॥ অজ্ঞ গ্রাম্য লোককর্ত্বক করুণাদি রক্ষকল আশু তুঃখ-রূপে প্রভীয়মান হইলেও প্রাক্তব্যক্তিগণ ভৎসমুদায়কে গাড় করুণাদ্যা রসাঃ প্রাক্তিঃ প্রোঢ়ানন্দময়া নতাঃ ॥ ৬৯॥ অলোকিকবিভাবস্থং নীতেভ্যো রতিলীলয়া। সত্নক্ত্যাচ স্থং তেভ্যঃ স্যাৎ স্তব্যক্তমিতি স্থিতিঃ॥ ৭•॥

#### মতা: ॥ ৬৯ ॥

তদেবমজ্ঞান্ প্রাম্যাশ্চ নিলিয়া রদনিশান্তে । প্রাক্তনতেন যুকিং দর্শয়তি।
আনৌকিকেতি অত নীতেভাতেভা ইতি বছবচনং স্পষ্টতার্থং ক্রিভিরেক
বচনৈঃ পৃথক্কতা বাথেগয়ং। তত্র কর্মণেংনিষ্টা শল্পায়য়য়াছিয়োগাছিলক্ষণে
ক্রেলাকা ফণীক্রয়ভ্রমিত্যাদিভাব্য ভক্তায়ভবেনাবিয়োগে বিয়োগজ্ঞানজ্ঞিনি
বাধান্তং যদনিষ্টাশল্লাময়ং ছংথং তন্ময়েহপি রতিলীলয়া লকঃ প্রমানন্দর্মপরা
য়েতেলীলয়া তত্তংকাব্যপ্রশন্তভাবাভাক্তের্ সর্বজ্ঞশতবালিয়াতিভঃ পূর্বপূর্ববং
প্রাপ্ত সন্তানামেনা রক্তা তথা সহক্র্যা ভাবকভকের্ প্রথমস্চিভাহক
সান বিস্তৃত্যক্রমধান স্তচনার্মপরা সভাং বক্তৃণাং ভাল্গজ্ঞা চালোকিক
বিভাবতং লোকচমৎকারকারিবিভাবাদিক্তিশালিয়ং নীতাং কর্মণরসাং
স্বং বাক্তং স্যাদিতি স্থিতিঃ রসবিদাং রসমর্যাদেত্যর্থঃ। অথ ভয়নকে রতিলীলয়া তহদেবাশাম্যা রতের্ভা সহক্রাচ তাল্শোত্যর্থঃ। বীভংসেহপি রতিলীলয়া বীভংসক্ত্রিমুপ্রাদ্য ক্র্মালক্তিকারিল্যা সহক্রাচ তাল্শোত্যর্থঃ।
বথোকাং প্রীকৃক্ত্নীদেব্যা সক্লাজ্বাম নথেত্যাদি ॥ ৭০ ॥

## আনন্দময় কলিয়া বোধ করেন ॥ ৬৯ ॥

স্বতঃ পরমানদর্রপ। রতির লীলাবশতঃ করুণাদি রস স্বানেকিক বিভাবত্ব প্রাপ্ত হইলে সংসকলের উক্তি ক্রমে ঐ করুণাদি রস হইতে স্পান্টরূপে স্থ উৎপন্ন হ্য, রস্বেকা দিগের এই ম্থ্যাদা॥ ৭০॥

## हिम्ब । दव गर्बी । पृथ्विताव पृथ्विता

ভূপান নাট্যাদের ॥

ক্রন্ধণারাবপি রুশে আরভে য়ং পরং অধ্যা

হচ্চেল্যমন্ত্রণ প্রমাণং ত্রে ক্রেণা ॥ ৭০ ॥

সূক্রে ক্র্নাগ্রা রুস্ট্রেরোপপারনাং ।
ভূরেন্রায়েগারীনামন্ত্রা তুঃশ্চেত্রতা ইভি ॥ ৭২ ॥
ভূপাত্রে রামপানাজ্ঞারেরকল্লোলরারিধিঃ।
প্রীভ্যা রামায়ণং নিভাং হত্মান শ্র্যাৎ ক্র্থ ॥ ৭৩ ॥
স্ক্রিচা রামায়ণং নিভাং হত্মান শ্র্যাৎ ক্র্থ ॥ ৭৩ ॥
স্ক্রিচা ৪৪ ॥

ভ্ৰান্তঃ ভারদস্মাকং সা ক্পেডাভিপ্লেডাছে তৃথাট্ডি ॥ ৭১ ॥ অথ বাভিরেকেণ স্মতং বোল্বভি স্থাতি । প্রতিকৃতিং বৃত্তেভ্রেভার্ছঃ উপশাদনাবাধনাৎ তংধ্হেতুভেডাল ভারকভাকেছিভি শেষং ॥ ৭২ ॥

ভূত ভাববেরু মুখানোক্সা প্রবৃত্তানাগাহপুপ্তিং প্রমাণ্যতি ভূপুদ্ধ ইড়ি । দুংগহেতুদ্ধে সভীতার্থ: । ৭৩ ।

অপিচেতি তদেতৃৎ সুমাপ্তং ক্রিকিদনাদৃপ্যভাত ইত্যর্বঃ ॥ ৭৪ ॥

## नार्गातिएक यथा ॥

কুক্রারি বনে যে পর্মহথের উৎপতি হয়, ভারাজে। সহলয়দিগের সমুভূবই কেবল প্রমাণ ॥ ৭১ ॥

রামারণারির প্রতিকাণ্ডে কর্ল্নস্থের প্রকাশ জন্য ভারিক্স ভুক্ত মকলে জন্য প্রকার হুংগ্রের হেতৃভা হয় ॥ ৭২ ॥

যদি নানায়ণে প্রকৃত ছংগ্র হইবে, তাহা হইলে দ্বান-প্রাণাজের প্রেমজরপের সমুদ্রেমরণ হতুমান্ প্রীতিপুর্যক্ত নিতা কেন নামায়ণ প্রথণ করিবেন ? ॥ ৭০ ॥ স্প্রসিচ্ছার্থ ক্ষার্থ কিছু বুলি ॥ ৭৪ ॥ সঞ্চারী স্যাৎ সমোনা বা কৃষ্ণরত্যাঃ স্থান্তি: । অধিকা পুষ্যমাণা চেম্ভাবোল্লাস ইতীর্ঘতে ॥ ৭৪॥। ফল্কবৈরাগ্যনির্দ্ধাঃ শুক্ষজ্ঞানাশ্চ হৈতুকাঃ।

সঞ্চারী স্যাদিত্যস্যায়মর্থং। স্কুলাং নিজাভীইরসাশ্রেরে ভক্তবিশেবে শ্রী-রাধিকাদৌ বিষরে সজাতীয়ভাবভকানাং পরস্পরং রভ্যা বিষয়শ্রেররপাণাং ললি তাদীনাং স্থীমুখ্যানামেকতরাশ্রেরা যা রতিঃ সা যদি ক্ষণবিষরায়া রত্যাঃ সমা স্যাদ্না বা স্যান্তদা ক্ষণবিষরায়া রতেঃ স্কার্য্যাথ্যভাব এব স্যাৎ তন্মূল-ছাৎ তৎপোষণাচ্চ এবং মধ্রাখ্যে রসে তুসা যদি কচিৎ ক্ষণবিষরারা অপি রভ্যা অধিকা তত্তাপি পুষামাণা সততাভিনিবেশেন স্থর্দ্ধানা স্যান্তদা সঞ্চারিছেছিপি বৈশিষ্টাপেক্রা ভাবোলাসাথ্যো ভাব ঈর্যাত ইতি ভদিদং ছ্ত্রামুশ্বত্য বিধিভ্যাপি সঞ্চারিণানত্তে যোজনীয়ং তত্তিব সঞ্চাতীয়হাৎ ॥ ৭৫ ॥

অথ পূর্বোক্তানজ্ঞাদীন্ রসানধিকারিণ আহ ফল্পরেরাগ্যেতি। ফল্পরৈরাগ্যং ভকুশোনীনাদি বৈরাগাং। শুক্জানং ভকুদোসীমাদিজানং। হৈতুকান্তর্কমাত্র-

স্থান কথিং সীয় অভীষ্ট রদের খাশ্রমন্তরণ ভক্ত বিশেষ
শ্রীরাধাদিবিষয়ে সজাতীয় ভাৰভক্তে শরস্পার রতির বিষয়
ভালায়রপ ললিতাদি মুখ্য স্থীগণের একতরাশ্রায়া রতি, দে
যদি কৃষ্ণবিষয়া রতির স্মাভ্যাবা উন হয়, তাহা হইলে তাহার
স্থানী ভাৰ বিলিয়া শ্রাখ্যা হয় এবং মধুরাখ্য রদে ঐ স্থল
রতি যদি কৃষ্ণবিষয়া রতি হইতে অধিকা এবং সভত অভিনিবেশভারা স্থলিনা হয় তাহা হইলে স্থারি সত্ত্বেও বৈশিষ্ট্য
অপ্রেক্ষায় ঐ রতির নাম ভাবোল্লাস হয়। ৭৫॥

যাহারা ফল্পবৈরাগ্যে পথা ছইতেছে অর্থাৎ ভক্তিবিধনে আদর পরিত্যাগ করিয়া কেবল বৈরাগ্যমাত্র ধারণ করিয়াছে,

মীমাংদকা বিশেষেণ ভক্তা স্বাদৰ হিমু বাং ॥ বিভাগ ইভ্যেব ভক্তির দিটক শ্রেচারগদিব মহানিধিঃ। জর্মীমাংশক দ্রেক্ষ্য ক্ষণ্ড ক্তিরসঃ দিশী॥ ৭৭ ॥

নিষ্ঠা: শীমাংসকা: কর্মবাদিন: পূর্ব্বশীমাংসকাস্কথা হৈত্মাত্রমিথাবিদিনঃ কেচিত্ত্রমীমাংসমন্দ্রনাঃ। এবামৃত্তরোত্তরং পরিহার্গান্ধিকাং। তার্কিকাণাঞ্চ কেবাঞ্চিৎ কৌতুকেনাধীতালকারাদীনাং কিঞ্চিত্র প্রবেশ: সাাদিভি শীমাংসকাৎ পূর্বত্র পাঠঃ। অত্য প্রাম্যাং কল্পবিরাগানিদ্দ্রাঃ, অনো ভ্রজা ভ্রেয়াঃ। ৭৬॥

যন্ত্রাং সর্কেইণি মীমাংসকা বিশেষেণ গুজাামাদবহিমুথা ইতি হেতো বেষ ক্ষান্তজ্ঞিরসো জরনীমাংসকাজ, সদা বিশেষেণ রক্ষো গোণা ইতি পুর্বেশাম্বর্দাননালোহাাংপি ফক্তবৈরাগানিদ গাদিভ্যো যথাযথং রক্ষান্ত ইতি লভাতে। তত্ত্র। চৌরাদিব মহানিধিরিতি দৃষ্টাম্বস্তু তেন তাদ্রিজীকরণমাঝা-পেক্ষা নতু তেনাপি তদা লভাম্বিভাপেক্ষা বহেঁবিবেতি তুপাঠাক্তরং ॥৭৭॥

যাহাদের শুক্ত জ্ঞান ক্ষর্থাং যাহারা ভক্তিকে ক্ষনাদর ক্রিয়া হৈতৃক অর্থাং কেবল তর্কমাত্রেই নিষ্ঠা ধারণ করিয়াছে এবং যাহারা মীমাংসক অর্থাং কর্ম্মকাগুপরায়ণ ও নির্বিশেষ প্রক্ষা-মুসন্ধানকারী ভাহারা ভক্তিরস আয়াদনে বহিম্বা ॥ ৭৬ ॥

অতএব চৌর হইতে যেমন মহানিধি রক্ষা করিছে ইর তাহার ন্যায় ভক্তিরসিকেরা পূর্বনীমাংসক হইতে সর্বদা কৃষণভক্তিরসকে গোপন করিবেন অর্থাৎ পূর্ব্বাক্ত করু বৈরা-গ্যাদিশালি ব্যক্তিগণের সমক্ষে কৃষণভক্তিরস প্রকাশ করিবেন নায় ৭৭ ॥

खेना डिकिनेननाचित्रिकं डार्गाडां विक्रिकेटिकंटर्नित्रेताचित्रः नाम्क्रे नृत्सीकं-खारेखनेनीजाह नसंदेशत्वित ॥ १८ ॥

खंब कार्त्रगकार्यानिम्छिदंबन नाट्यार्था अनेजावद्यांदर्जनमाहे बार्काः वाजी-ত্যৈতি। সন্ধার জীবিকারণবেন পুর্বিদ্দিষ্টং গুদ্ধস্থিবিশেষঃ সন্ধারিধু নার্মারিবা-নার্মার্ডেন ইতি ভারঃ ॥ ৭৯ ॥

অউক্তগণ ভগবন্ত জিরস আখাদন করিতে পারে না, ভারাদের নিকট ভক্তিরস সর্ব প্রকারেই চুরাই, কিন্তু ভগ-বচ্চরণারবিশই যাহাদের স্ববিশ্ব সেই ভক্তগণই ভক্তিরস আখাদন করিতে পারেন ॥ ৭৮॥

ভাবনার পথ অভিক্রমপূর্বক যে চমৎকারাভিশয়ের আধারস্থরপ ইইয়া সঞ্জলাধিত উজ্জল ইন্যে আসাদিত হয়, ভাষাক্রের নদ বলে ॥

ভাৰন। বিষয়ে আনন্তৰুজি হইলা পণ্ডিত্লণ হানলমধ্যে দুট্ । শংকাৰ্থানা ঘাহাকে ভাৰনা করেন তাহার নাম ভাৰ ॥ ৭৯ ॥

॥ के ॥ देखि श्रीवामनावायनितिवादक्रक्षेत्र व्याधाय छिल-विमेश्विकित्रक्षेत्र पिकिनविकारिंग छिकित्रम माधाना निकासरि श्रीविन র্মসামান্যনির পর্নে ইবিজেবলহরী পর্যামী । # ॥

গোপালর পর্নোভাং দ্বদিপি র্যুনাধর্ভাববিভারী।
ভূষ্যত্ সনাতনাঝা দক্ষিণবিভাগে ইবাস্থানিংং ॥

॥ # ॥ ইতি দক্ষিণবিভাগঃ সমাপ্তঃ ॥ # ॥

॥ \* । ইতি পঞ্চলহর্যাশ্বিকে দক্ষিণবিভাগে স্থায়িভাব লছরী প্রকাষা । \* ।

॥ ইতি ত্র্মদল্মনীনার্নাং শ্রীভর্তিরদায়ত্দিব্রীকাশাং দক্ষিণবিভাগঃ
সমাপ্তঃ ॥ \* ॥

ভाব लहती शक्ती॥ # ॥

যিনি গোপালরপ শোভাঁকে ধারণ করিয়াও রঘুনাথের ভাব বিস্তার করিয়াছেন, সেই সনাত্র স্থর্রপ প্রভু হুধারস সমুদ্রের দক্ষিণ বিভাগে সৃস্তিফ হউন॥

॥ 🛪 ॥ ইতি দকিণবিভাগ সমাপ্ত ॥ 🛎 🛊

# वर्थ भन्तियतिङ्गारः॥

প্রথমলহরী ॥

ধুতমুগ্ধরপভারে ভাগবতার্পিতপুথুপ্রেমা।

স ময়ি সনাতনমূর্তিস্তনোতু পুরুষোত্তমস্তৃষ্টিং ॥
রসামৃতাব্ধের্ভাগেছত্র তৃতীয়ে পশ্চিমাভিধে।
মুখ্যো ভক্তিরসঃ পঞ্চবিধঃ শাস্তাদিরীর্যাতে।
অতোহত্র পাঞ্চবিধ্যেন লহর্যাঃ পঞ্চ কীর্তিতাঃ।
অথামী পঞ্চ লক্ষ্যন্তে রসাঃ শাস্তাদয়ঃ ক্রমাং ॥ > ॥
তত্র শাস্তভক্তিরসঃ ॥
বক্ষামাণৈর্বিভাবাদ্য়ঃ শমিনাং সাদতোং গতঃ।

ধুতেতি পূর্ববং শ্লিষ্টং মুগ্ধাদিশকানাং দার্থনাং ভাবোহ্ত সৌন্দর্যাং পক্ষে আধিকাং। অনামপকে নিজোৎসক্ষকেশকুরোচ্বা ইবেতার্থঃ। অথামীতি রস্বস্বতারভেদোপচারাজ্যাশ্চ শাকাদর উচাত্তে ॥ ১ ॥

স্থায়ীতি স্থানিভাবপর্যায়: ভীমো ভীমদেন ইভিবং। ততঃ স্থানিসংন

যিনি মনোহররূপের সোক্ষর্য ধারণ করিয়াছেন, যাঁহাতে ভক্তগণ অতিশয় প্রেম বিধান করিয়া থাকেন, সেই সনাতন মৃঠি আমাতে ভূম্ভি বিধান করুন॥

রদাম্ত-দমুদ্রের পশ্চিমনামক এই তৃতীয় বিভাগে শাস্ত-প্রভৃতি মুখ্য পঞ্চ ভক্তিরদনিরূপণ হ'ইবে॥

অত এব এই বিভাগে ভক্তিরস পাঁচপ্রকার হওয়াতে পাঁচটী শহরী কীর্ত্তিত এবং ঐ পাঁচ লহরীতে ক্রমে শাস্তাদি পাঁচটী রস দৃষ্ট হইবে॥ ১॥

তন্মধ্যে শান্তভক্তিরস যথা॥ বক্ষ্যনাণ বিভাবাদিদারা শমতাদম্পন ঋষিগণকর্তৃক <sup>বে</sup> স্থায়ী শাস্তিরতির্ধীনেঃ শাস্তভক্তিরসং স্মৃতঃ ॥ ২ ॥ প্রায়ঃ স্বল্পকাতীয়ং স্কৃপং দাদেক যোগিনাং। কিন্তাস্থানিষ্যান্থ ঘনন্ত্রীশময়ং স্কৃপং॥ ৩ ॥ তত্তাপীশস্ক্রপান্ত্রবদাবোরুহেতুতা।

জাজতি। তত্ত শান্তিরনিরপ: স্থায়িতাবো বক্ষামানৈবিভাবালৈ: সহ মিলিয়া শমিনাং শমিভি: কর্জির্যং সাদ্যং তজ্ঞপতাং গত**ভেছভভিত্রস:** কবিভি: সুত ইতার্থ:। যদাপি শুদ্ধারা: সামানাা স্বচ্ছা শান্তিরিভি ভেদ্মন্ত্র-মুক্তং। তথাপি শাল্ডেরের রস্বপ্রতিপাদনং সামানাায়া অস্ট্রাং স্ক্রায়ান্ত ভক্ষবভাল্রস্বামগ্রীপরিপোবো ন স্যাদিতাভি পারেশ। ২ ॥

স্থান্থ জাতীয়ং সর্বামূলস্থ কানি বিশেষ বন্ধানন্দ প্রকারং প্রায় ইতি গুণানামণি ক্রি: সাচাত্মারামাণ্চ মুনয় ইত্যাদে:। ঈশময়ং সচিদানন্দবিশ্রেছ ভগবংক রিপ্রায়র ॥ ৩॥

দশমগৃহমের বিশদরতি তার তেরু স্বস্থকাতীয়ভাণিত্ব দাসাদীনামিব তেষানীশস্ত্রপাত ভবসা শ্রীবিগ্রুরণতংসালাংকারসার রসোৎপত্তার্ধানা-ম্কতেত্তা সাথে। বলাপোবং তথাপি মনোজস্বনীলাদে গুণিসা তথা দাসাদাস্থ-ভবপ্রকারের নোক্তেত্তা, কিন্তু যথাকণঞ্চিদেবেভার্থঃ। তথোকাং তৃতীয়ে।

স্থায়ি শান্তি রতি আয়াননীয় হয় পণ্ডিতগণ তাহাকে শান্ত-ভক্তিরস বলিয়া বর্ণন করেন ॥ ২॥

যোগিগণের প্রায় ত্রন্ধানন্দরপ স্থাক্তি হইয়া থাকে, কিন্তু এই স্থ অতি অল্লভন, আর সচিদানন্দ বিগ্রহ ক্তি-রূপ যে ঈশময় স্থ তাহাই প্রচুরতর॥ ৩॥

এই ঈশমর হ্থেতেও শ্রীবিগ্রহের সাক্ষাৎকারভাই গুরু-তর হেতু, দাসাদির ন্যায় মনোজ্ঞত্ব লীলাদির সাক্ষাৎকারে লালালিবন্ধনোজন্দীলায়ে র তথা মতা ॥
তত্তালন্ধনাঃ ॥ ৪ ॥
চত্ত্ লশ্চ শাস্তাশ্চ ক্ষব্মিলালন্ধনা মতাঃ ।
তত্ত চত্ত্ জঃ ॥
শামাক্তিঃ ক্ষ্বতি চাক্ষচত্ত্ জোহ্যমানন্দ্রাশিবগ্লিণাজ্বকরস্থিকঃ ।

এবং তদেব ভ্রমবানরবিন্দনাভঃ স্থানাং বির্ধা সৃষ্ঠি ক্রমমার্থাস্থলঃ। তদ্মিন্

এবৌ পরমন্থ্যমনীনামন্ত্র্ণীরচরণৌ চলরন্ সহঞ্জীঃ। তং তাগৃতং প্রাঞ্জিল ক্রবৌপরিকং স্বপৃংজিতে চৃক্তাক্ষবিষয়ং স্থস্যাধিভাগামিতাাদৌ স্থামাধিভাগাক্রিডানেন স্বপৃংজিরিভাত স্থাকেনোপস্তভ্ত্তামরাদ্যৌপরিক্তেন সন্ধীক্রিডানেনচ্ ভাষ্তিক্র্যা দারাদীনাং মনোজ্বনীলাদ্যভ্রাধিকাং দুর্শিভং ॥৪॥

শামাক্তিরিতি তাপদশান্তানাং বচনং। উদাহরণক জ্ঞানিশান্তর্য়েড়ি উওরার্কে তদ্যৈর প্রতিপ্রাদ্যথাং। স্থান যদ্যণি ব্যক্তিদীদৌপ্রবিক্ষিত্যাদ্যি

গুরুতর হেছু হর না অর্থাৎ ক্ষাত্মারাম মুনিগণ কেবর ভগবৎ সাক্ষাৎকারমাত্রেই রুভার্থ ছইয়া থাকেন, লীলানিছে টুাহা-নের দ্বাসান্তির ন্যার স্কৃচি উৎপদ্ধ হয় না॥

लेखित्स चालस्य यथा॥

চতুত্তি এবং প্রাস্থ্যণ এই শান্তবন্যে ক্লালমূন বলিয়া সামত য় ৪ চ

क्वार्श हरू के गर्श ॥

ভাপার শাস্ত্রগণ কহিলেন, এই যে মনোহর চতুর্ভুক্ত, ক্লানক্ষরালি ও জ্বিল লাজ্মরণ ভরক্তের সাগরস্কুরণ লাস্ যশ্মিন্ গতে নয়নয়োঃ পথি নিজ্জিহীতে
প্রত্যক্ পদাৎ পরসহংসমুনের্মনোহপি॥
সচ্চিদানন্দদান্দ্রাঙ্গ আত্মারামনিরোমণিঃ।
পরমাত্মা পরংব্রেক্ষ শমো দান্তঃ শুচির্বশী।
সদা স্বরূপসংপ্রাপ্তো হতারিগতিদায়কঃ।
বিভুরিত্যাদিগুণবানিশ্মিলালম্বনো হরিঃ॥

বলাদ্বিভূকীলার তদাকর্ষ-লোমর্থাধিকামিতি তলৈবাল্যন্ত্রে মুখ্যন্ত্রে উদাহরিয়তে চ প্রথাসাতি মহত্তপ ইত্যাদিনা। তথাপি যুগ্ণ নূলোকে বত ভূরিডাগা ইত্যাত্যক্রদিশা গৃড়তয়া ন তে সর্কানা তদমুভবস্তীতি চতুর্ভূ জন্মারের প্রাচুর্যোগান্তবাং প্রধানাং দর্শিক্তং তলৈবোদাহরতি শ্যামাক্রতিরিভি অত্র বর্ণনা প্রথমতে! নির্দ্দেশান্তার্কিতি সৌন্দর্যানা চ কথনাত্তর তচ্চমৎকারাতিশান্ত্রা দর্শিক্তঃ। অত আলম্বনহনির্দেশে সচিদানন্দসান্ত্রাক্র ইতি যদক্ষতে তদশোতৎ প্রধানান্ত্রের ক্রেরং। অথিলা যে আল্পনান দ্বীবান্তেমাং তর্ত্তরন্ধনাণাং সিদ্ধুর্বেশ ইত্যাল্পার্মাল্যনোরংশাংশিতামাত্র তাংপর্যাকং। অথিলাল্যম্পৃত্রা ইতি বা প্রনীরং। প্রভাক্পদাং নির্দ্ধিশেরক্রাভূসন্ধনাৎ নির্জিহীতে নির্গতং সন্তন্ত্রের রাবিষ্টং ভবতীতার্থঃ॥ ৫॥

কৃতি প্রকাশ পাইতেছেন, ইনি যদি নয়নদ্বয়ের পথগত হয়েন তাহা হইলে সর্বব্যাপক পরব্রহ্ম হইতে পরমহংদ মুনিগণের মন মুশ্ধ হাইয়া পড়ে॥

এই শাস্তরদে সচিদানন্দ্রনমূর্ত্তি, আত্মারামশিরোমণি, পরমাত্মা, পরমত্রহ্ম, শাস্ত, দান্ত, শুচি, বশী, সদা স্বরূপ সং-প্রাপ্ত, হতারিগতিদায়ক ও বিভূ ইত্যাদি গুণ সম্পন্ন হরিই আলম্বনম্বরূপ ॥ অথ শান্তাঃ ॥
শান্তাঃ স্থাঃ কৃষ্ণতৎপ্রেষ্ঠকারুণ্যেন রতিং গতাঃ ।
আগারানান্তদীয়াধ্ববদ্ধশ্রদাশ্চ তাপদাঃ ॥
তত্রাত্মারানান্ত দনকদনন্দনমুখা নতাঃ ।
প্রাধান্যাৎ দনকাদীনাং রূপং ভক্তিশ্চ কথ্যকে ॥
তত্র রূপং ॥
তে পঞ্চযান্দবালাভাশ্চত্মারস্তেজদোজ্জ্লাঃ ।
গৌরাঙ্গা বাতবদনাঃ প্রাধ্যেণ সহচারিণঃ ॥
তত্রচ ভক্তিঃ ॥

### অথ শান্তগণ॥

কৃষ্ণ এবং কৃষ্ণভক্তের করুণা বশতঃ যাঁহারা রতি লাভ করিয়াছেন এমত আত্মারাম ও ভগবমার্গে বদ্ধশ্রদ্ধা তাপস, ইহারাই শান্ত॥

তন্মধ্যে আত্মরাম যথা॥

সনক সনন্দন প্রভৃতিকে আত্মারাম বলে। সনকাদির প্রাধান্য হেতু তাঁহান্দের রূপ এবং ভক্তি বর্ণন করিতেছি॥

তন্মধ্যে রূপ যথা॥

সন্কাদি চারিজন, তাঁছারা পাঁচ বা ছয় বৎসরের বালক-সদৃশ, তেজঃদ্বারা উত্ত্রল গোঁরবর্ণ, উলঙ্গ এবং প্রায় চারি-জনে একত্রে বিচরণ করেন॥

मनकामित्र ভक्ति यथा ॥

## भिन्छत्र। **३म महत्रो। ७ क्रिक्षमञ्**क्रितिकः।

শমস্ত গণ বজিতে করণতঃ প্রতীচীনতাং
গতে কিমপি বস্তুনি স্বয়মদীপি ভাবৎ স্থাং।
ন যাবদিয়মন্তুতা নব-ভমাল-নীলহ্যুতেমুক্লস্থিচিল্বনা তব বস্থুব দাক্ষাৎকৃতিঃ॥
অথ ভাপদাঃ॥
মুক্তিভিন্ত্যব নিবি ছেত্যাত্তযুক্তবিরক্ততাঃ।
অনুজ্বিতমুমুক্ষা যে ভজন্তে তে তু ভাপদাঃ॥ ৫ ॥
যথা॥
কদা শৈলদ্রোণ্যং পৃথুলবিটপিঞোভ্বদতিব্দানঃ কৌপীনং রচিতফলকন্দাশনক্ষিঃ।

মুকুলাভিধমিতি। সভাবত এব সংদারহরণাঝুকুলাভিধং মুক্তিদাভারং।

হে মুকুন্দ! যাবং ভোমার স্থানয় জ্ঞানঘনস্বরূপ স্বস্তুত নৰতমাল সদৃশ নীলছ্যতি আকৃতি দাক্ষাৎকার না হয়, তাবং ইন্দ্রিয়াগোচর নির্কিশেব এক্সরূপ বস্তুতে স্বয়ং স্থুও উদ্দীপিত হইয়া থাকে॥

#### অথ ভাপসগণ॥

ভক্তিদারা মৃক্তি নিবি দা হয় এই হেড়ু যাঁহারা যুক্ত-বৈরাগ্য স্বীকার করেন ও যাঁহাদের মৃক্তি বিষয়ে অভিলাই আছে, তাঁহাদিগকেই তাপদ বলে॥ ৫॥

#### यथ। ॥

কবে আমি পর্বতগুছার অথবা বিপুলরক্ষের ক্রেডিটোটা বসতি বিধান করিব, কবেই বা আমি কৌপীন পরিধান করিব 010

হৃদি ধ্যায়ং ধ্যায়ং মৃত্রিহ মৃকুন্দাভিধমহং

চিদানন্দং জ্যোভিঃ ক্ষণমিব বিনেষ্যামি রজনীঃ।
ভক্তাত্মরামকরুণাপ্রপঞ্চেনৈব তাপসাঃ।
শাস্তাথ্যভাবচন্দ্রস্য হৃদাকাশে কলাং প্রিতাঃ॥ ৬॥
অথোদ্দীপনাঃ॥
শুস্তিম হোপনিষদাং বিবিক্তস্থানদেশনং।
অস্তর্ম তিবিশেষস্য ক্ষৃতিক্তব্বিবেচনং।
বিদ্যাশক্তিপ্রধানত্বং বিশ্বরূপপ্রদর্শনং।

স্থলনীরিতৃ।পলকণনহোরাতাণীভার্থ:। তিরাত্তমণি যে তত্ত বসস্থীতিবং ॥ ৬॥ তত্ত্ববিবেচনাদিত্রয়ং তাপসাদীনাং জ্ঞেয়ং। অন্যেতৃভয়েষামেব । তত্ত্ব

কবেই বা আমার ফলমূল ভোজনে রুচি হইবে এবং কবেই বা আমি হৃদয়মধ্যে বারম্বার মুকুন্দনামক চিদানন্দজ্যেতিকে ধ্যান করিয়া ক্ষণকালের ন্যায় দিবারাত্তি যাপন করিব ॥

ভক্ত, আত্মারাম ও করুণা-বিস্তারকারিকে তাপদ বলে, এই তাপদেরা হৃদয়াকাশে শান্তনামক ভাবচন্দ্রের কলা আশ্রম করিয়া থাকেন॥৬॥

## ष्यथ উদ्দोপन॥

মহৎ উপনিষদের প্রবণ, নির্জনস্থান দেবন, অন্তর্নু তি বিশেষে অর্থাৎ শুদ্ধ সন্ত্রময় চিত্তে শ্রীক্ষাফের স্ফূর্তি, তত্ত্ব-বিচার, জ্ঞানশক্তির প্রধানতা, বিশ্বরূপ দর্শন, জ্ঞানিভক্তের সংস্পৃতিবং ব্রহ্ময়ত্র অর্থাৎ সমবিদ্য ব্যক্তিদিগের পরস্পার

## পশ্চিম। ১ম লছরী। ভক্তিরদায়ভনিক্র।

জ্ঞানিভক্তেন সংসর্গো ব্রহ্মসঞ্জাপর কথা।

এষদাধারণা প্রোক্তা বুধৈক্দনীপনা অমী ॥

তত্র মহোপনিষচ্ছুতির্যথা ॥

অক্রেশাং কমলভুবং প্রবিশ্য গোষ্ঠীং
কুর্বস্তঃ প্রুতিশিরদাং প্রুতিং প্রুতজ্ঞাঃ।

উত্তু সং যত্পুস্বসঙ্গমায় রঙ্গং

যোগীন্দাঃ পুলকভ্তো নবাপ্যবাপুঃ ॥ ৭ ॥
পাদাজভুলদীগদ্ধঃ শন্ধনাদো মুরদ্বিষঃ।
পুণ্যশৈলঃ শুভারণ্যং দিদ্ধক্ষেত্রং সুরাপগা।

বিষয়াদিক্ষয়িফুত্বং কাল্য্যাথিলহারিতা।

বিদ্যাশক্তিপ্রধানত্বাদিত্বয়নীপরগতং তেরং। ব্রহ্মসত্রমন্যোন্যং সমবিদ্যানা মুপনিষ্টিচারং । ৭ ॥

পদাক্ততুল্যীগন্ধশৃত্ধনাদ্ধরাপগা উভয়েষাং অন্যে তাপ্সানাং আলিতৈ-

উপনিষদ্ বিচার, পণ্ডিভগণ শাস্তরদে এই সকলকে অসাধারণ উদ্দীপন কীর্ভন করিয়াছেন॥

তন্মধ্যে মহৎ উপনিষ্দের ভাবণ যথা॥

কোন্ বেদজ্ঞ যোগীন্দগণ ক্যলযোনি ব্রহ্মার ক্লেশরইজি সভায় প্রবিষ্ঠ হইয়া উপনিষদ্ প্রবেশ করত যতুলুস্কবের সঙ্গু নিমিত্ত পুণকাকূল কলেবরে ছাতিশয় রঙ্গ প্রাপ্ত না হইরাছি-লেন ? ॥ ৭॥

ভগবং পাদপদ্মের তুলদীর দৌরভ, শভোর ধ্বনি, পুণ্য পর্বত, পবিত্র বন, সিদ্ধক্ষেত্র, গঙ্গা, বিষয়াদির ভায়শীলত, ইক্তাহ্যদীপনাঃ সাধারণাস্তেষাং কিলাপ্রিতৈঃ॥
তত্ত্ব পাদাজবুলসীগন্ধো যথা তৃতীয়ে॥
তস্যারবিন্দনয়নস্য পদারবিন্দকিঞ্জক্ষমিপ্রতুলসীমকরন্দবায়ুঃ।
অন্তর্গতঃ স্ববিবরেণ চকার তেষাং
সজ্জোভমক্ষরজুষামপি চিত্তস্থোঃ॥৮॥
অথাসুভাবাঃ॥
নাসাগ্রন্যন্তনেত্রন্থ্রবিচেপ্তিতং।

দাসবিশেষ: সহ সাধারণা: ভেষামপি ভবন্ধীতার্থ:। তত্ত্ব স্থারিতি স্থর্গসাপেগা গলাইতার্থ:॥৮॥

যুগং হলাদাকং তচ্চ চতুহ প্রপ্রমাণং লক্ষাতে। যুগমাতে যদীকিতমীক্ষণং

কালের সর্বহারিত্ব, দাসবিশেষের সহিত আত্মারাম ও তাপস-দিগের এই সকল সাধারণ উদ্দীপন ॥

ত্বিধ্যে পাদাজভূলদীগদ্ধ যথা॥
ভূতীয়ক্ষণ্ধে ১৫ অধ্যায়ে ৪০ শ্লোকে॥

সনকাদি মুনিগণ প্রণাম করিলে অরবিন্দনয়ন ভগবানের পানারবিন্দের কেশরমিঞিতা তুলদীর মকরন্দযুক্ত বায়ু তাঁহা-দের নাদারস্কুষোগে অন্তঃপ্রবিষ্ট হইল, তাহাতে যদিও তাঁহারা ব্রক্ষজানদারা নিরন্তর ব্রক্ষানন্দ অনুভব করিতেন, তথাপি তাঁহাদের চিত্তে হর্ষ এবং শরীরে রোমাঞ্চ হইল ॥৮॥

অথ অসুভব॥

্লানাগাণে দৃষ্টিনিকেপ, অবধুতের ন্যায় চেন্টা, যুগমাত্র

যুগমাত্রেক্ষিতগতিজ্ঞানমুদ্রাপ্রদর্শনং।
হরেদি যিপি ন দ্বেয়া নাতিভক্তিঃ প্রিয়েম্বপি।
দিন্ধতায়াস্তথা জীবমুক্তেশ্চ বহুমানিতা।
নৈরপেক্ষ্যং নির্মানতা নিরহঙ্কারিত। তথা।
মৌনমিত্যাদয়ঃ শীতাঃ স্থ্যরগাধারণাঃ ক্রিয়াঃ॥ ৯॥
তত্র নাসাগ্রনমনত্বং যথা॥
নাদিকাগ্রাদ্যং পুরো মুনিঃ, স্পান্দবন্ধুরশিরা বিরাজতে।
ভিত্তকন্দরতটীমনাকুলামস্য নূনমবগাহতে হরিঃ।

তেইনব গতি:। জ্ঞানমূদা তৰ্জনাৰ্চয়োৰ্ছ:। সিদ্ধতা অত্যন্ত সংসারধ্বংসঃ। জীবনুকি: শরীবন্ধানাবেশেন স্থিতি:। এতপুর বহুমানিতা তত্তকা ভালবতাং তাপসানাং জেরং॥ ১॥

সাসিকাগ্রদ্বিতি মুনিরিতি চাত্র তসাায়ারামতং লোভাতে তত্ত স্পান্দ

নিরীক্ষণ গতি অর্থাৎ চতুর্হস্ত পরিমিত স্থান অবলোকন করিয়া পশ্চাৎ পাদনিক্ষেপ, জ্ঞানমুদ্রা প্রদর্শন অর্থাৎ তর্জ্জনী ও অঙ্গুঠের যোগরূপ মুদ্রা ধারণ, হরিদ্বেষির প্রতি দ্বেষরহিত, ভগবংপ্রিয়ভক্তের প্রতি ভক্তির অঙ্গুড়া, সংসারধ্বংস এবং জীণমুক্তির প্রতি বহু আদর, নিরপেক্ষ, নির্মান্তা, নিরহঙ্কারিতা তথা মৌন ইত্যাদি শীতা রতি এবং অসাধারণ ক্রিয়া। ১ ॥

নাগাগ্ৰা নয়নত্ব যথা ॥

এই অগ্রবর্ত্তি মুনি নাগাগ্রে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া স্পান্দান-দ্বারা উন্নতাবনত নতকে বিরাজিত হইতেছেন, অভএব বোধ হয় ইহার অনাকৃশ চিত্তকন্দরতটে হরি বিয়াল ক্রিতেছেন ॥ জ্ঞান্তমোটনং ভক্তেরপেদেশে। হরেন্তিঃ।
স্তবাদয়শ্চ দাসাদ্যৈঃ শীতাঃ সাধারণাঃ ক্রিয়াঃ॥
তত্র জ্ঞা যথা॥
হদয়াঘরে প্রবং তে ভাবাদ্রমণিরুদেতি যোগীল্র।
যদিদং বদনাস্ভোজং জ্ঞামবলম্বতে ভবতঃ॥ ১০॥
অথ সাত্তিকাঃ॥
রোমাঞ্যেদকম্পাদ্যাঃ সাত্তিকাঃ প্রলয়ং বিনা॥ ১১॥

বন্ধনাইতি বিশেষামূভব:। সচ শীহরিগুণায়ক এব সন্তবতি আয়ারামাশচ মুনর ইত্যাদেরিতি ভাব: ॥ ১০ ॥

এষাং শীভগৰৎসমাধৌ চেটায়া জানাস্বসাচ নিরাক্তেটা প্রলয়লকণছে। প্রাপ্তেমণি ভূনিপতনাদ্যভাবাৎ প্রলয়ং বিনেত্যুক্তং ॥ ১১ ॥

জৃম্ভা অর্থাৎ হাঁই তোলা, অঙ্গমোটন ভক্তির উপদেশ, হরির প্রতি নতি এবং হরির স্তবাদি, দাসপ্রভৃতির এই সকল শীক্ত ভাবরূপ সাধারণ ক্রিয়া॥

## তশ্বধ্যে জৃন্তা যথা॥

হে যোগীন্দ্র! নিশ্চয় তোমার হৃদয়াকাশে ভাবসূর্য্য উদিত হইয়াছেন, যেহেতু তোমার বদনপদ্ম ক্রেমশঃ জ্ঞা অব-শম্বন করিতেছে ॥ ১০ ॥

## অধ সাত্তিক ॥

শাস্তরদে প্রলয় অর্থাৎ ভূপতনাপি ব্যতিরেকে রোনাঞ্চ, স্বেদ (ঘর্ম) এবং কম্পপ্রভৃতি দান্তিক ভাবদকল প্রকাশ হইয়া থাকে॥ ১১॥

ভত্ত রোমাঞো যথা।
পাঞ্চন্যজনিতো ধানিরন্তঃ
ক্যোভয়ন্ সপদি বিদ্ধসমাধিঃ।
যোগিনাং পিরিগুহা-নিলয়ানাং
পুদর্গলে পুলকপালিমনৈষীৎ॥ ১২॥
এষাং নিরভিষানানাং শরীরাদিষু যোগিনাং।
সাত্তিকাস্ত জ্লস্ত্যেব নতু দীপ্তা ভবস্ত্যমী॥
অথ সঞ্চারিণঃ॥
সঞ্চারিণোহত্ত নির্বেদো ধৃতিহ্র্যো সভিঃ স্মৃতিঃ।
বিষাদোৎস্ককতাবেগবিত্রকাদ্যাঃ প্রকীর্ত্তিঃ॥

পুলগলে দেছে। কারো দেহ: দ্রিয়াং মূর্তি: পুলগলশ্চ পুমাংকলুরিত্যমরদন্ত: ॥>২॥
এমানিতি তাবদপি শ্রীভগবংসম্বরপ্রভাবাদেব ভবতীতি ভাব: ॥ ১৩ ॥

#### তব্যধ্যে রোমাঞ্ব যথা।

পাঞ্জন্য-শন্তজনিত ধ্বনি গিরিগুহাবাদি যোগিদের অকঃ-করণে ক্ষোভ প্রদান করত তৎক্ষণাৎ ভাঁহাদের সমাধিভঙ্গ করিল, স্তরাং তথন ভাঁহারা খীয় দেহে পুলকাবলী ধারণ করিয়াছিলেন ॥ ১২ ॥

এই দকল নিরভিমান বোগিদিগের শরীরে উক্ত ভার্-দকল জ্লিত হয়, কিন্তু দীপ্ত হয় না॥

भास्त्रतम मकाती घवा ॥

নির্বেদ, ধৈর্য্য, হর্ব, মন্তি, স্মৃতি, ঔৎস্ক, আবেগ ও বিতর্ক প্রভৃতি শাস্তরসে সঞ্চারি বলিয়া কীর্তিত হয় ৷ তত্র নির্দেশে যথা ॥

তারিন্ স্থঘনমূত্রে পিরমাত্মনি র্ফিপেন্তনে স্ফুর্ভি।

তারারামতয়া মে র্থা গতো বত চিরং কালঃ ॥

তার স্থায়ী ॥

তার স্থান্তির ভিঃ স্থায়ী সমা সান্ত্রাচ সা বিধা ॥ ১০ ॥

তত্রাদ্যা ॥

সমাধো যোগিনস্ত স্মির্মসম্প্র জ্ঞাতনামনি।

লীলয়া ময়ি লক্ষেহ্যা বজুবোৎক ম্পিনী তৃষুঃ ॥ ১৪ ॥

সমাধাবিতি শ্রীভগবন্ধচনং। মনসো বৃত্তিশ্নাস্য ব্রহ্মাকারতরা স্থিতিঃ। বা সম্প্রক্ষাতনামানে সমাধিরভিদীরতে n ১৪ ॥

# তন্মধ্যে নির্কেদ যথা॥

এই দারকানগরীতে যথন স্থঘনমূর্ত্তি পরমাত্তা প্রীকৃষ্ণ বিরাজ করিতেছেন, তথন হায়! আপ্তারামত্ব প্রযুক্ত আমার চিরকাল রুথা গত হইল।

অথ শান্তরসে স্থায়ী ভাব॥

শান্তরসে শান্তিরতি স্থায়ী ভাব। এই শান্তিরতি সমা ও শান্তা ভেদে তুই প্রকার হয়॥ ১০॥

जनात्था गमा यथा॥

ভগবান্ কহিলেন এই যোগিব্যক্তির অসংপ্রজ্ঞাত নাম সমাধিতে আমি লালাবশতঃ উপস্থিত হইলে ইহাঁর তমু কম্পে পরিপূর্ণ হইয়াছিল॥ ১৫॥ সান্দ্রা যথা।

সর্বাবিদ্যাধ্বংসতো যঃ সমস্তাদাবিভূতো নির্বিকল্পে সমাধে।
জাতে সাক্ষাদযোদবেন্দ্রে স বিন্দন্
ময্যানন্দঃ সান্দ্রতাং কোটিধাসীৎ!
শাস্তো বিধৈষ পারোক্ষ্য-সাক্ষাৎকারবিভেদতঃ॥
তত্র পারোক্ষ্যং যথা॥
প্রথাস্যতি সহত্তপঃ সফলতাং কিম্ফাঙ্গিকা
মুনীশ্বর পুরাতনী প্রম্যোগ্চর্য্যাণ্যসে।।

সর্বেতি জ্ঞানিতাং পরমগভীরস। পাস্য কণ্ঠোকীক্তনিজ্ঞানন্দতরা চাপলা-ভিবাকে: পূর্বস্থাদাধিকামের ব্যক্তং। জাত ইতি স এবানন্দ: সাক্ষাজ্ঞাতে বাদবেক্তেংধিকরণে তদীয়ক্রপগুণলীলামূভবান্মরি কোটিধা সাক্সতাং বিজ্ঞাদ-সাক্ষ্রভয়া প্রকাশ্যমান অস্বীদিত্যর্থ: ৪১৫ ৪

#### मास्ता यथा॥

সর্বপ্রকার অবিদ্যাধ্বংদ হেডু নির্বিকল্প সমাধিতে যাদ-বেন্দ্র দাক্ষাৎকার হইলে সর্বতোভাবে আমাতে যে আমশদ আবিভূতি হয়, তাথা কেটিগান্দ্রতা লাভ করত প্রকাশমান ইয়াছিল॥

পারোক্ষ্য এবং দাক্ষাৎকার ভেদে শাস্ত ছুই প্রকার হর ॥ তন্মধ্যে পারোক্ষ্য শাস্ত যথা॥

তে মুনীখর! আপনি বলুন দেখি আমার মহৎ তপস্য। এবং পুরাতনী অফীক পরমযোগচর্য্যা সফলতা প্রাপ্ত হইকে নরাকৃতি-নবান্থ্দপ্র্যুতিধরং পরং ব্রহ্ম মে
বিলোচনচমৎকৃতিং কথ্য কিন্ধু নির্ম্মান্যুতি॥ ১৫ ॥
যথাবা॥
ক্ষেত্রে কুরোঃ কিমপি চগুকরোপরাগে,
সান্তেং মহঃ পথি বিলোচনয়োর্যদানীৎ।
তন্মীরদন্ত্যুতিজ্মি স্মরমুৎস্ককং মে
ন প্রত্যুগাত্মনি মনো রমতে পুরেব ॥ ১৬॥
সাক্ষাৎকারো যথা॥
পরমান্মত্যুতি যেহুরাৎ

সাক্রং মহঃ পথীতি যদাসীদিতি ছাতিজয়ীত্যেতএব পাঠাস্থিটা: ॥ ১৬ ॥ হে ভগবন্ সর্বাতী হানস্তগুণসম্পন্ন তব সাক্ষাৎকরণাদনদাদধিকং

নরাকৃতি নবজলধর ত্যুতিধারী পরমত্রক্ষা কি আমার লোচ-নের চমৎ্কৃতি বিধান করিবেন অর্থাৎ তাঁহার কি আমি দর্শন পাইব॥ ১৫॥

#### यथावा ॥

সুর্য্তাহণ উপলক্ষে কুরুক্ষেত্রের পথে নীরদত্যতিজয়ী যে, নিবিড় তেজ লোচনছরের প্রত্যক্ষ হইয়াছিল, তাহা স্মরণ করিয়া আমার মন উৎস্কৃকান্বিত হইয়া আর পুর্বের ন্যায় ভ্রমান্ত্রের রমণ করিতেছে না॥ ১৬॥

সাক্ষাৎকার যথা।।

🔗 হে ভগবদ্! আপনি সর্বাতীত আননাগুণসম্পন্ন, দূৰ

# পশ্চিম। ১ম শহরী। ভক্তিরসায়ভনিকুঃ।

তব সাক্ষাৎকরণপ্রমোদতঃ।
ভগবমধিকং প্রয়োজনং
কতরন্ত্র ক্ষাবিদোহপি বিদ্যুতে। ১৭॥
যথাবা॥
হান্টঃ কমুপতিষ্বনৈভূবি লুঠচ্চীরাঞ্চলঃ সঞ্চলন্মূর্মা রুদ্ধদৃগশ্রুভিঃ পুলকিতো দ্রোগেষ লীনব্রতঃ।
অক্ষোরঙ্গব্যঞ্জনত্বিধি পরব্রহ্মণবাপ্রে মুদ্

প্রোজনং ব্রহ্মণঃ পর্মরহরির্বিশেষানন্দ স্বর্গদা বোহমুন্তবী তস্যাথি কতর্বিদাতে। নমু, ব্রহ্ম তাবং সর্বেষাং স্বর্রপং, স্বর্রপট্যাণ সর্বতঃ প্রেষ্ঠছেন তৎসাক্ষাংকারদ্যৈর সর্ব্বতঃ প্রীত্যাম্পদতাং বার্থং ক্বতং গুণমরসাক্ষাংকরণেন
ত্রাহ। পরেতি আহা সর্বেষাং স্বর্ন্ধং ব্রহ্ম তভোহণি তব পর্মত্রাজিমেন্ত্রাং, ব্রহ্মণোহণি প্রতিষ্ঠাহমিতি জীভগবলগীতোপনিষ্ট্যঃ ক্বন্ধমেনমবৈহিছ্
মান্তান্যবিশাল্যনামিতি জীভক্বাক্যাচ্চ॥ ১৭॥

অঞ্চি: ক্ষদৃগিতি যোজাং। শীনং নষ্টং ব্ৰতং তত্তলিয়মো যস্য ॥ ১৮ ॥

হইতে আপনার যে সাক্ষাৎকার লাভ করিয়াছি ভজ্জনিত আনন্দ হইতে আমি যে ত্রহ্মজ্ঞ আমার অন্য প্রয়োজন কি আছে ?॥ ১৭॥

#### যথাবা ॥

কম্পতি পাঞ্জন্যের ধ্বনিশ্রবণদ্বারা কোন যোগী চীর-বস্ত্রের অঞ্চল সঞ্চালনপূর্বক ভূমিতে মস্তক লুপ্তিত করত অঞ্চন প্রিতলোচনে পুলকাকুল ছইয়া আপনার নিরম বিনষ্ট করিয়াছিলেন এবং চক্ষুর অঙ্গণে অঞ্জনকান্তি পদ্মক্রকা সাক্ষাৎ- মুদ্রাভিঃ প্রকটীকরোত্যবমতিং যোগীস্বরপস্থিতো ॥ ১৮॥ ভবেৎ কদাচিৎ কুত্রাপি নন্দস্নোঃ কুপাভরঃ। প্রথমং জ্ঞাননিষ্ঠোহপি সোহত্রৈব রতিমুদ্ধহেৎ॥ ১৯॥ যথা বিল্লমঙ্গলস্তবে॥
ভাইত্বরীথীপথিকৈরুপাস্যাঃ
স্থানন্দ্রিংহাসনল্রুণীক্ষাঃ।
স্থানন্দ্রিংহাসনল্রুণীক্ষাঃ।
স্থানন্দ্রিংহাসনল্রুণীক্ষাঃ।
স্থানন্দ্রিংহাসনল্রুণীক্ষাঃ।
স্থানন্দ্রিংহাসনল্রুণীক্ষাঃ।
স্থানন্দ্রিংহাসনল্রুণীক্ষাঃ।

তত্ত্ব শ্রীমন্নক্ষর্ত্ত্রপদা তদা কুপাভিশরেত্ পরমোংকর্ষমার ভবেদিতি। আর শ্রীনন্দক্ষনাবেব রঞিশুকৈর্বহেত তদেখাগ্যাং শান্তিমভিক্রেম্য রভিনিশেবং বহুতীভার্য:॥১৯॥

আহৈতেতি শালং জানমুকং। স্থানন্দেতি শহুভবপর্যান্তং। স্থানন্দ এব সিংহাসনং ভত্ত লকঃ দীকা পূজা বৈরিত্যর্থঃ । দীক্ষ মৌডেভ্ডাদিধাতুগণাং। ব্যাকস্থাতিরিয়ং ॥ ২০॥

কার হওয়ায় যে আনন্দপরিপাটী উপস্থিত হইয়াছিল ওদ্ধারা তিনি নির্বিশেষ ত্রন্মে অবজ্ঞা করিয়াছিলেন ॥ ১৮ ॥

কথনও যদি কাহারও প্রতি নন্দনন্দের কুপাতিশয় হয়, তাহা হইলে সে যদি প্রথমে জ্ঞাননিষ্ঠ থাকে তবে পরে ভাহার রতি লাভ হয়॥ ১৯॥

## यथा विद्यमननस्ट व ॥

যাঁহার। অবৈভ্যার্গের পথিক হইয়াছেন তাঁহারাই নির্বিবশেষ ব্রহ্মানুভবিদিগকে উপাদনা করুন, কিন্তু কোন গোপবধ্নম্পটি শঠ হঠপুর্বক আমাদিগকে দাস করিয়াছেন ॥ ২০॥

# পশ্চিম। ১ম লহরী। ভক্তিরশায়ভাগিকু:।

তংকার নামধীভূতজ্ঞানসংস্কারসস্তৃতি:।

এষ ভক্তিরসানক্ষণিপুনঃ স্যাদ্যথা শুকঃ ॥ ২১ ॥
শমস্য নির্দিকার ছান্নাট্যক্তিনের মন্যতে।
শাস্ত্যাথ্যায়া রতেরত্র স্বীকারাম বিরুধ্যতে।
শম্যে মন্নিষ্ঠতা বুদ্ধেরিতি শ্রীভগবন্ধ।
তমিষ্ঠা তুর্ঘটা বুদ্ধেরেতাং শান্তিরতিং বিনা॥ ২২ ॥

অত্যার্থমপি প্রমাণমাহ ওদিতি। শুকেন হি সর্ব্বোত্তমপ্রেমতন্ত্রা বন্ধবাসি-মাত্রং নিরূপ্য তত্ত্বাপি কুত্রচিৎ প্রমোৎকর্ষো দর্শিতঃ॥ ২১॥

অত্তেতি কেবল: শাস্তরস্টেডবিরুধ্যতাং নাম অত্রাক্ষরতেতু শাস্তরসে হৈ বি-রোদ্ধু: ন শকাত ইতার্থ:। তত্ত হেতুমাহ শাস্ত্যেতি জীভগবদ্রতিমাত্রস্য রসন্ধং পূর্বমেবেতি স্থাপিতমিতি ভাব:। তত্ত্ব হি কার্যান্বার রতিরূপং কারণং লক্ষাভ্ ইচ্যাহ তরিষ্ঠেতি। তথাপি সামান্যান্বামেব রভৌ লক্ষারাং বিশেবেছত প্রস্তিঃ প্রসিদ্ধা শম প্রাচ্ধ্যাৎ পর্যবসীরতে ॥ ২২ ॥

যেমন শুকদেব ভগবংকরুণায় জ্ঞানসংস্কার সমূহকে রাথ করিয়া ভক্তিরসানন্দে নিপুণ হইয়াছিলেন, তাহার ন্যার এই -বিল্লমঙ্গল ভগবংকরুণায় ভক্তিরসানন্দে প্রবীণ হইয়াছি । লেন॥২১॥

শমভাবের নির্নিকারত্ব প্রযুক্ত নাট্যজ্ঞেরা ইহাকে রস বলিয়া স্বীকার করেন না, কিন্তু এ স্থলে শান্তিরভির স্বীকার করিলে কিছুই বিরুদ্ধ হর না॥

কেবলশান্ত। হপি জীবিফুধর্মোন্তরে যথা।
নাস্তি যত্ত স্থাং চুংধাং ন ছেবো নচ মৎসরঃ।
সমঃ সর্কোয় ভূতেরু স শান্তঃ প্রথিতো রসঃ॥ ২০॥
সর্কারিবমহকারর হিতত্বং ব্রজন্তি চেৎ।
তত্ত্রান্তর্ভাবমহন্তি ধর্মবীরাদয়ন্তদা।
প্রতিস্থায়িনমেকেতু নির্কোদয়ন্তদা।
শান্তমেব রসং পূর্কে প্রাভ্রেকমনেকধা।
নির্কোদো বিষয়ে স্থায়ী তত্ত্তানোত্তবঃ স চেৎ।

অথ কেবলশাস্তাথ্যে রসে বিবদমানানাং মতনিরাসেন কৈমৃত্যাদাক্সতং স্থাপন্ততি কেবলশাস্তোহপি শ্রীবিষ্ণুধর্মোত্তরে যথেতি॥ ২৩॥ ধর্মবীরাদ্যো ধর্মদ্যাদানবীরা:॥ ২৪॥

কেবল শান্তরদ বিষ্ণুধর্মোত্তরে যথা॥

যাহাতে স্থানাই, ছঃখ নাই, দেবৰ নাই, মাৎসৰ্য্য নাই এবং সকলভূতে সমভাব তাহাকেই শান্তরস বলিয়া উল্লেখ করা যায় ॥ ২৩ ॥

যদি সর্বপ্রকারে অহঙ্কার রাহিত্য হয়, তবেই ধর্মবীর, দানবীর ও দয়াবীর শান্তরলৈ অন্তর্ভাব লাভ করিতে যোগ্য হইতে পারে॥

কেহ ধৃতিকে স্থায়ি বলেন ও কেহ নির্মেদকে স্থায়ি বলেন, কিন্তু পূর্ম্বপূর্ম পণ্ডিতগণ একমাত্র শান্তরদকে অনেক প্রকারে বর্ণন করিয়াছেন॥

निर्द्यम यमि তত्त्रकान हरेए उर्भन्न हम, जाहा इरेल

# পশ্চিম। ১ব বছরী। ভক্তিরশায়ভদিছা।

ইন্টানিউবিয়োগাপ্তিকৃতস্ত ব্যভিচার্য্যদে ॥ ২৪ ॥ ॥ \* ॥ ইতি জ্ঞীভক্তিরদামূতদিকে পশ্চিমবিভাগে মুঞ্জ-ভক্তিরদপঞ্চনিক্ষপণে শান্তভক্তিরদলহরী প্রথমা॥\*॥ ১ ॥

॥ + ॥ ইতি পঞ্চলহর। বাকে পাল্চমবিভাগে শান্তভজিবস্ত্রী প্রথমা॥ + ॥

তাহাকে বিষয়ের মধ্যে স্থায়ী বলাষায়। আর্যদি এই নির্নেবদ ইফবিয়োগ ও অনিফপ্রাপ্তির নিমিত্ত হয় তাতা। হইলে ইহাকে ব্যভিচারী বলে॥ ২৪ ॥

॥ #॥ ইতি জ্রীরামনারায়ণবিদ্যারত্বকৃত ক্যাখ্যায় ভক্তি-রদামৃত্যিকুর পশ্চিমবিভাগে শান্তভক্তির্দ প্রথম লহ্রী। সমাপ্তা॥ #॥ ১॥ #॥ অধ প্রীক্তভিক্তিরসং॥
শ্রীধরস্বামিভিঃ স্পান্টনয়মেব রসোভমঃ।
রঙ্গপ্রসংগ্রেমভক্তিকাখ্যঃ প্রকীর্ত্তিকঃ।
রিজ্যারিতয়া নামকোমুদীরুন্তিরপ্যসো।
শান্তত্বেনায়মেবাদ্ধা স্থানেবাল্যেশ্চ বর্ণিতঃ।
আত্মোচিতৈর্বিভাবাল্যৈঃ প্রীতিরাস্বাদনীয়তাং।
নীতা চেডিসি ভক্তানাং প্রীতভক্তিরসো মতঃ।
অনু গ্রাহ্ন্যা দাসত্বালাজ্যাদপ্যয়ং দ্বিধা।
ভিদ্যতে সম্রমপ্রীতো গৌরবপ্রীত ইত্যপি॥
তত্র সম্রম প্রীতঃ॥

## অথপ্রীতভক্তিরস॥

শ্রীধরস্বামিপ্রভৃতি এই প্রীত রদকে স্পান্ট রূপে উত্তম
বলিয়া কার্ত্তন করিয়াছেন এবং রঙ্গপ্রদঙ্গে অর্থাৎ নাট্যাদিতে
এই প্রীতরদ প্রেমভক্তিনামে উল্লিখিত হইয়াছে। নামকোমুদীকার ইহাকে স্থায়িরতি বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন এবং স্থদেবাদি
কর্ত্তক এই প্রীতরদ দাক্ষাৎ শান্ত নামে কথিত হইয়াছে।
আত্মোচিত বিভাবদ্বারা ভক্তগণের চিত্তে প্রীতি আস্বাদনীয়ন্থ
প্রাপ্ত হয়, এ কারণ ইহা প্রীত ভক্তিরদ বলিয়া দন্মত॥

অমুগ্রহপাত্রের সম্বন্ধে দাসত্ব এবং লালনীয়ত্ব প্রযুক্ত এই প্রীতরস ভূই প্রকারে ভিন্ন হয়, যথা—সম্রমপ্রীত ও গৌরব-প্রীত ॥

তমধ্যে সম্ভম প্রীত বথা॥

# পশ্চিম। २য় लहतो। ভক্তিরশাস্ত্তিপুর্ছা

দাদাভিমানিনাং কৃষ্ণে দ্যাৎ প্রীতিঃ দন্তমোতরা।
পূর্ববং পুষ্যমাণেরং দন্তমপ্রীত উচ্যতে ॥
তত্তালম্বনাঃ ॥
হনিশ্চ তদ্য দাদাশ্চ ক্রেয়া আলম্বনা ইং ॥
তত্ত্ব হরিঃ ॥
আলম্বনোহস্মিন্ দ্বিভুজঃ কৃষ্ণো গোকুলবাদিয়ু।
অন্যত্ত দ্বিভুজঃ কাপি কৃত্তাপ্যেষ চতুভুজঃ ॥
তত্ত ব্রজে যথা ॥
নবামুধরবন্ধুরঃ কর্যুগেন বক্তামুজে
নিধার মুদ্ধলীং স্ফুরংপুরুটনিন্দিপট্যাম্বরঃ।

দাসাভিমানি ব্যক্তিদিগের শ্রীকৃষ্ণে সন্ত্রমবিশিষ্টা প্রীতি উৎপন্ন হয়। এই সন্ত্রমোত্তরা প্রীতি পূর্ব্যবৎ পুষ্ট **হইলে** ইহাকে সম্ভ্রমগ্রীত বলা যায়॥

উক্ত প্রীতর্সে আলম্বন যথা।।

এই প্রীতরদে হরি এবং হরিদাদ সকল আত্মধন **হইয়া** থাকেন॥

তন্মধ্যে আলম্বন রূপ হরি যথা॥

এই সন্ত্রমপ্রতি রদে গোকুলবাদি দকলে প্রীকৃষ্ণ **দিভূক** রূপে আলম্বন, অন্যত্র কোথাও দিভূজ এবং কোথাও বা চহুভূজ রূপে আলম্বন হয়েন॥

ভদ্মধ্যে ত্রজে আলম্বনরূপী হরি ৷

নবজলধরকান্তি রূপে ফ্রন্তিশীল প্রভু জ্রীকৃষ্ণ কর্যুগল-দারা বদনপদ্মে মুরলী ধারণপূর্বক স্থানিন্দি পীতরদন শিখগুক্তশেখরঃ শিখরিণস্তটে পর্যাটন্
প্রভুর্দিবি দিবৌকসো ভুবি ধিনোতি নঃ কিস্করান্॥
অন্যত্র দ্বিভুজো যথা॥
প্রভুরয়মনিশং পিশঙ্গবাসাঃ
কর্যুগভাগরিকস্থ্রস্থাভঃ।
নব্যন ইব চঞ্চলা পিনদ্ধো
রবিশন্মিণ্ডলমণ্ডিভশ্চকান্তি॥ ১॥
তত্র চতুর্জো যথা ললিত্মাধ্যে॥
চক্তংকোস্তভকামুদীসমূদ্যঃ কোমোদকীচক্রয়োঃ

চঞ্দিতি শ্রীদারুকবাকাং। এর ইতি বৈকুণ্ঠনাথাদপি চমংকারকরত্বেন ময়ান্ত্

পরিধান এবং মন্তকে ময়ুরপুচেছর চূড়া ধারণ করত গিরিতটে পর্য্যটন করিতে করিতে স্বর্গে দেবগণ এবং পৃথিবীতে আমরা যে কিঙ্কর আমাদিগকে আনন্দ প্রদান করিতেছেন॥

অন্যত্র দ্বিভুজ্ব যথ। ॥

এই মেঘকান্তি প্রভূ নিরন্তর পীতবসন পরিধান এবং করমুগে শছা চক্র ধারণপূর্ণক নবজলধরে বিচ্যুৎ নিবদ্ধ ইইলে যে রূপ শোভা দেখায় তাহার ন্যায় চক্রকান্ত ও সূর্য্য-কান্তময় মণিভূষণ সকলে বিভূষিত হইয়া শোভা বিস্তার করি-তেছেন॥ ১॥

তনাধ্যে চড়ুভুজি যথা। ললিতমাধ্যে॥ শাক্ষক ক'ৰিলেন ইাহার কণ্ঠে কৌস্তভ্যনি শুভ্ৰ তেঞ্চ সংখ্যনে ভ্রিকিটে তথা জলজয়ের চ। শতু ভিজি: ।

দিব্যালঙ্করণেন সন্ধটত মুঃ সঙ্গী বিহঙ্গেশিত্মাং ব্যক্ষারয়দেষ কংসবিজয়ী বৈক্ গগৈ জীপ্রিয়ং ॥ ২ ॥

ব্রক্ষাণ্ডকোটিনামৈকরোমকূপঃ কুপান্ধুরিঃ।

অবিচিন্ত্যমহাশক্তিঃ সর্ব্বসিদ্ধিনিষেবিতঃ।

অবতারাবলীবীজং সদাআরামহৃদ্ গুণঃ।

স্থারঃ প্রমারাদ্যঃ সর্ব্বিজ্ঞঃ স্তৃত্ব কুঃ।

স্থান্ধিয়ান ক্ষমাশীলঃ শ্রণাগতপালকঃ।

ভূগমান ইভার্থঃ। বান্মার্যদিত্যনেন্চ প্রস্ততানাং সামগ্রীণাং বৈকুষ্ঠসামগ্রীভোগ বিলক্ষণতং ধ্বনিভং॥১॥২॥

লক্ষাওকোটদামৈকরোমকপ ইতি। নচান্ধ নিবহি বঁসোজাদিপ্রমাণেন
সদামপরিমাণকে পি অচিন্তালক পা প্রমনিভূবিগ্রহ ইভার্য:। তৎসন্ধন্ধ জ্ঞান
নাজীতি অন্নদেব গাঁতং। ময়া তত্দিদং সর্কাং জগদবাক মুর্তিনা। ইভাদিনা
বাজিতমেব। সচ প্রমেণিব তৎসন্ধাভাসো নতু অন্ধং:ভগবতেতি। যথোকং
প্রেকাশ করিতেতে, যিনি শন্তাচক্র গদাপদ্মশালি ভূজচভূস্টরে
যুক্ত হইয়াছেন, যাঁহার অঙ্গে দিব্য দিব্য অলক্ষার সকল সক্ষ্ণা
হইয়া রহিয়াছে এবং যিনি গগেশ্বর গরুড়ের উপরি বিরাজ্ঞাবিতেছেন, সেই কংসারি আজ আমাকে বৈকৃঠের ঐশ্বয়্তি

যাঁহার এক রোমকূপে কোটি কোটি ব্রন্ধাণ্ড অবস্থিতি করিতেছে, যিনি রূপাসমূদ, অবিচিন্তামহাশক্তি, সর্বাসিদ্ধিনিবেবিত অবতারাবলীবীজ, আত্মারামগণাক্ষী, ঈশ্বর, প্রমান্রাধ্য, সর্বজি, হৃদ্ভব্রত, সমৃদ্ধিমান্, ক্মাণীল, শ্রণাগতপালক,

দক্ষিণঃ সত্যবচনো দক্ষঃ সর্বশুভঙ্করঃ।
প্রতাপী ধার্ম্মিকঃ শাস্ত্রচক্ষুভক্তস্থকঃ।
বদান্যন্তেজসাযুক্তঃ কৃতজ্ঞঃ কীর্ত্তিসংশ্রমঃ।
বরীয়ান্ বলবান্ প্রেমবশ্য ইত্যাদিভিগু লৈঃ।
যুক্তশ্চত্র্বিধেষেষ দাসেষালম্বনো হরিঃ॥ ৩॥
অথ দাসাঃ॥
দাশাস্ত্র প্রশ্রিভান্তস্য নিদেশবশবর্ত্তিনঃ।
বিশ্বস্তাঃ প্রভুতাজ্ঞানবিন্ত্রিভিধিয়শ্চ তে॥

শীদশমে। যস্যাংশাংশভাগেন বিশ্বস্থিতাপ্যয়োদয়া ইতি। টীকাচ। যস্যাংশঃ
শুক্রবস্তম্যাংশো মায়েত্যাদিকা। তদেব মায়িকগুণবন্তা তস্য ন সর্বাত শুকুরতি
কিন্তু যথাবিভাগমেব। যথা প্রথমোহয়ং গুণঃ অধিকারিবিশেষাশ্রিভগুপেনেশেবেতি ॥ ৩॥

প্রশ্রিতা নতদৃষ্টিতাদিনা স্থিতা:। নিদেশ: স্বযোগ্যকর্মণি বা শ্রীকৃষ্ণসাজ্ঞা তত্র যো বশ ইচ্ছা স্বত এব ক্ষচিগুত্র বর্ত্তিতুং শীলং যেযাং তে তথা। বশ: কাস্তাবিত্যমর:। তদেতলকণাসুসারাং ক্ষড়িবুল্ডা দাসত্বোশক্ষানা শ্রীকৃষ্ণ-

গতপালক, দক্ষিণ, সত্যব্চন, দক্ষ, সর্বশুভঙ্কর, প্রতাপী, ধার্মিক, শাস্ত্রচক্ষ্, ভক্তস্থতং, বদান্য, তেজীয়ান্, কৃতজ্ঞ, কীর্ত্তিমান্ বরীয়ান্ বলবান্ এবং প্রেমবশ্য, ইত্যাদি গুণযুক্ত হরি চতুর্বিধে দাসভক্তে আলঘন স্বরূপ ॥ ৩ ॥

#### অথ দাস ॥

প্রশ্রেত অর্থাৎ সর্বাদা নতদৃষ্টিতে অবস্থিত আজাবতী, বিশ্বত এবং প্রভুজ্ঞানে নত্রবৃদ্ধি ইত্যাদিভেদে দাস চারি প্রকার হয় ॥

গৌরববিষয়া বিপ্রাদয়োহণি বোগরুত্তা গণয়িষান্তে দাসতে দীয়**ে ক্রপয়া ভত্ত-**ঘাঞ্ছিতং সম্পদাতে যেভ্য ইতি নিরুক্তে:। দাস্দানে। যথা চাত্র প্রমাণীকৃতং
ভাষারুত্তো। গুণিনাং ব্রাহ্মণো দাস ইতি। কিন্তেতে নিতাসিদ্ধা: সাধনসিদ্ধান্তেভূভেয়ে শীশাপরিকরা স্থাদৃশতা ভাববাঞ্কাঞ্চিতি ভেদেন ভত্ত তত্ত্ব জেয়া:। ৪ 1

#### যথা॥

এই প্রভূ নিখিল গুণদারা সকলের গুরু, এ জগতে ইহাঁর সহিত কে তুল্যন্থ লাভ করিতে পারে, এইরূপ নিশ্চয় জ্ঞানে নত ও সর্বাহিতকারি হরিদাস সকলকে ভঙ্গনা কর।

উক্ত চারি প্রকার দাদের নাম অধিকৃত, আপ্রিত, পারি-যদ্ও অনুগ॥

তন্মধ্যে অধিকৃত দাস্যথা॥

ব্রহ্মা, শিব এবং ইন্দ্র ইত্যাদিকে পণ্ডিতগণ অধিকৃত দান বলিয়া কীর্ত্তন করেন, ইহাঁদের রূপ প্রসিদ্ধই, আছে, একারণ এই সকলের ভক্তি বলিতেছি॥ ৪॥ যথ।।

কা পর্য্যেত্যবিকেয়ং হরিমবকলয়ন কম্পতে কঃ শিবেহিদে তং কঃ স্তৌত্যেষ ধাতা প্রণমতি বিলুঠন্ কঃ ক্ষিতে বাদবোহয়ং। ক: স্তদ্ধো হস্যতেহদা দকুজভিদকুজৈ: পূৰ্বজোহয়ং মমেথং कालिकी काखनजार जिन्मनितिहत्रः जानतस्त्राचाजानी ।।।

অথা ভিতে গং ॥

অধিকৃতা ইতি শ্রীকৃষ্ণেনাধিকৃতা স্থাপিতা ইতার্থ:। উদাহরণেত কা ্পর্বেতি প্রদক্ষিনীকরোতি। শুরু: শুন্তাধাসাহিকেন যুক্ত ইতার্থ:। পূর্বজ ইভি তদানীং মন্ত স্বত্তা দ্বিমশনীর প্রবিষ্ট্র গার্যা হোষ্ট্র তজ্ঞ প্রতেনের ব্যবetate # e #

#### यथ।।

कामनकी कालिमीतक किछामा कतितन हतितक श्रमिन कदिएल इन देनि एक ? कालिको कहिएलन देनि अधिका. आध-वजी. इतिमर्गन कतिया काँ ि एउट इन दिन (क? कालिको, देनि निव काखवजी खब कतिए एक देनि (क ? कालिको दैनि বিধাতা, জাম্ববতা, ক্ষিতিতলে লুপ্তিত হইয়া প্রণাম, করিতে-(ছन ইनि कि ?। कालिमी, ইनि ইন্দ্র। জামবতী, দেবগণের मिंड खद्ध इरेश हामा कतिएडएन रेनि एक ? कालिको, रेनि आगात कार्छ जांडा यम, अहेतरिश शराक मिया कालिको का चवरोतक (मनग्राबद्ध श्रीत्रहा श्रीमान कतिएक मार्गितन ॥

অথ আগ্রিত ॥

# भन्ति । २ नर्ते । **चक्तित्र**गाञ्चलिक् ।

তে শরণ্যা জ্ঞানিচরাঃ দেবানিষ্ঠান্ত্রিধাঞ্জিতা: ॥ ৫॥ যথা॥

কেচিন্তীতাঃ শরণমভিতঃ সংশ্রমন্তে ভবন্তং বিজ্ঞাতাথীত্তদমুভবতঃ প্রাদ্য কেচিন্মুমুক্ষাং। শ্রোবং শ্রাবং নবনবনবাং মাধুরীং দাধুরুক্ষা-দ্বৃন্দারণ্যোংদব কিল বয়ং দেব দেবেমহি ছাং।

কেচিন্তীতা ইত্যাদৌ ভূতএব নিষ্ঠানত্ বর্তমানে। সংগ্রন্তি খেষ্যান তিলাবিতাশ্নাথ্যের বক্তবাং শুদ্ধন্তের গণনাং। মুম্পামিত্যপলক্ষণ্ডন শান্তিরিংহেতৃজ্ঞানতাগোহিপি লভাতে অতএব জ্ঞানিচরা ইতি ভূতপূর্বাথং জ্ঞানসাপি দশিতং। অএচ মধ্যমান্তিয়াধিকারিশামননভেদ ঐবর্থায়-ভ্রাভ্যাং জ্ঞের:। ভীতা ইতি ওয়কিবাভিরিক্তাং সর্ব্যাদিপি ভরযুক্তা ইত্যবং। ভদক্তবতো বিজ্ঞাতাথী ইতি ব্রহ্মান্তব্র বদম্ভব্যোজ্ঞাতভারতম্যা ইত্যবং। ভদিদং সহজ্ঞভদ্যারতে: সাধ্কভক্ষা ব্রন্মাথন: সার্ব্যদিকাননাগতিত্ব-নিব্রেদনায়॥ ৬॥

শরণাগত, জ্ঞানী ও দেব।নিষ্ঠ এই তিনকে আঞ্জিত বলে॥৫॥

#### गथा ॥

হে র্ন্দাবনানন্দ! হে দেব! কোন কোন ব্যক্তি ভীত হইয়া সর্বভোভাবে রক্ষকজ্ঞানে তোমাকে আশ্রেয় করিয়া-ছেন, কোন কোন ব্যক্তি ভোমার প্রভাব অবগত হইয়া মুক্তি-বিষয়ক ইচ্ছা পরিষ্ঠ্যাগপূর্বকি ভোমারক আশ্রেয় করিয়া-ছেন এবং আমরা সাধুমুখে ভোমার নবনব মাধুরী বারবার শ্রেবণ করিয়া ত্দীয় সেবাকার্য্যে নিযুক্ত হইরাছি॥ ভত্ত শরণ্যা: ॥
শরণ্যা: কালিয়জরাসদ্ধবদ্ধন্পাদয়: ॥
যথা ॥
অপি গহনাগদি নাগে, প্রভুবর ময্যুক্তান্য তে করুণা।
ভক্তিরপি স্বচ্ল ভয়া, যদহং পদমুদ্রয়ে। ভ্রমিলিত: ॥
যথাপরাধভঞ্জনে ॥
কামাদীনাং কতি ন কতিধা পালিতা চুমি দিশা
জাতা ভেষাং ময়ি ন করুণা ন ত্রপা নোপশান্তি:।
উৎস্কোতান্থ যতুপতে দাম্প্রতং লক্ত্র্দ্ধি-

#### তমাধ্যে শরণা যথা॥

কালিয়নাগ এবং জরাসক্ষের কারাগারে আবিদ্ধ নৃপতিগণকে শরণাগত বলা যায়।

#### যথা॥

হে প্রভুশেষ্ঠ ! আমি কালিয়নাগ, অভিশয় অপরাধ করিলেও আমার প্রতি আপনার অদুত করুণা, যে হেতু ভক্তগণেরও স্ত্রতি পদ্চিক্ষারা আজ আমি উজ্জ্লিত হই-লাম ॥

## यथा वा व्यवतास्टक्षरम्॥

প্রভা ! স্থামি কামজোধাদি রিপুবর্গের কত কত না তুই স্থাদেশদকল প্রতিপালন ক্রিয়াছি, তথাপি তাহারা স্থামার প্রতি দয়া করিল না, না তাহাদের লজ্জা বা উপশম্ই ্হইল। অভএব হে যতুপতে ! সম্প্রতি স্থামি জ্ঞানপ্রাপ্ত হইয়া স্ভায়স্করণ স্থাপনার শ্রণাগত হইলাম, স্থাপনি স্থামাকে স্থামায়াত: শরণমভয়ং মাং নিযুক্জ্বাত্মলাসের ॥
তথ জ্ঞানিচরাঃ ॥
বেয় মুক্ষাং পরিত্যজ্ঞা হরিমের সমাপ্রিকাঃ ।
শৌনকপ্রমুশান্তেতু প্রোক্তা জ্ঞানিচরা বুধৈঃ ॥
যথা হরিভক্তিস্থালেয়ে ॥
তথা মহাত্মন্ বহুলোষস্ফৌ২প্যেকেন ভাত্যেয় ভবো ওলেন
সংসক্ষাথ্যেন স্থাবহেন
ক্রাল্য নো যেন ক্রশা মুমুক্ষা ॥ ৬ ॥
যথা বা পদ্যবিশ্যাং ॥

সীয় দাদ্যে নিযুক্ত কর্তন ॥ অথ জ্ঞাননিষ্ঠ ॥

বাঁহারা মুক্তি-ইচ্ছা পরিত্যাগপূর্বক কেবল হরিকেই আশ্রম করিয়াছেন, তাঁহাবাই শৌনকাদি ঋষি, পণ্ডিতগদ তাঁহাদিগকেই জ্ঞাননিষ্ঠ বলিয়া কীর্ত্তন করিয়াছেন।

যথা হরিভক্তিস্থধোদয়ে॥

শোনকাদি থাষিগণ সূতকে কহিলেন, হে মহাত্মন ! কি আশ্চর্যা । এই মনুষ্যজন্ম বহুদোবে তুট ইহলেও এক স্থশজনক সংসঙ্গরূপ গুণদারা শোভা পাইতেছে, দেখ তদ্বিশ্থ আমাদের মৃতির ইচ্ছাও কীণ হইয়া গেল॥ ৬॥

বথাৰা পদ্যাবলীতে 🗈

ধ্যানাতীতং কিমপি প্রমং যেতু জানন্তি তত্ত্বং
তেষামান্তাং হৃদয়কুহরে শুক্তিনাত্র আত্মা।
অস্মাকস্ত প্রকৃতিমধুরঃ স্মেরবক্তারবিন্দো
নেঘশ্যামঃ কনকপ্রিধিঃ পঙ্কজাক্ষোহয়মাত্মা॥
অথ দেবানিষ্ঠাঃ॥
মূলতো ভঙ্কনাসক্তাং দেবানিষ্ঠা ই গীরিতাঃ।
চক্রধ্বজো হরিহয়ো বহুলাশস্তথা নূপঃ॥
যথা।
ইক্ষ্বকুঃ প্রুতদেবশ্চ পুগুরীকাদয়শ্চ তে॥ ৭॥
আত্মারামানপি গময়তি হৃদগুণো গানগোষ্ঠাং

ধ্যানাতীতমিতি। পূর্বার্কে হেরত্বিবক্ষরা জ্ঞাতস্যাপ্যজ্ঞাতব্রিক্লেশং। প্রকাকোইয়মায়েতি প্রমেশিত্রাং প্রমপ্রিয়ত্বাচ্চ॥ ৭॥

मृत्न। निर्श्रत छेनात्न वर्षमानान् विश्वप्रतृ नाः छशवित्नाश्ति छिक्कार्षाः

বাঁহারা ধ্যানাতীত কোন এক পরমতত্ত্ব বলিয়া নিশ্চয় করিয়াছেন, তাঁহাদের হৃদয়ে শুদ্ধসত্ত্ব জানময় আত্মা অব-স্থিতি করুন, কিন্তু আমাদের হৃদয়ে স্বভাবদিদ্ধ মাধুর্য্যময়, হাস্যস্বদন, মেঘকান্তি, পীত্রসন ও পদানেত্র এই আত্মা বিরাজ করুন॥

# অথ দেবানিষ্ঠ ॥

যাঁহারা প্রথমাবধিই ভজনবিষয়ে আসক্ত, তাঁহাদিগকেই দেবানিষ্ঠ বলা যায়। শিব, ইন্দ্র, বহুলাশ্ব রাজা, ঈক্ষাকু, ভ্রুতদেব ও পুগুরীক, ইহাঁরা সকল দেবানিষ্ঠ ॥ ৭ ॥

যথা ॥

কৃষ্ণ তোমর গুণ আত্মারাম্পণকেও আকর্ষণ করিয়া

শ্ন্যাদ্যানে নয়তি বিহ্গানপ্যলং ভিক্ক্চর্যাং।
ইত্যুৎকর্যং কমপ্রি সচমংকারমাকর্ণ্য চিত্রং
সেবায়াতেং ক্ষুটমঘহর শ্রেক্ষা গর্দ্ধিতোহ্মি॥ ৮॥
অথ পারিষদাঃ॥
উদ্ধবো দারুকো জৈত্রং শ্রুছদেবশ্চ শত্রুজিং।
নন্দোপনন্দভদ্রণাঃ পার্যদা যত্রপত্তনে।
নিযুক্তাঃ দন্তামী মন্ত্রদার্থ্যাদিষু কর্মান্ত।
তথাপি কাপ্যব্দরে প্রিচ্য্যাঞ্চ কুর্মতে।

ষদ্ গুণগান প্রবংশ ছিলান সভায়াং ভিকোরিব চর্ণ্যাং নয় তি। যথা। শুনােদ্দানে ইত্যাবেশাং প্রৌট্রিচনং। (ক) জনস্থানে শূনাে ক্রণক্র গৈরার্থ্য-চরিতৈরপি গ্রাণা গোদিতাপি দলতি বজ্রস্য স্থান্ধতিবং ॥৮॥

শ্রু হলে বশক্রজি তাবপি প্রথমস্কলে প্রোক্তাবত জেয়ে। পরিচর্যাত খব-

ত্বনীয় গান্দভায় লইয়া যায় এবং নির্জনবাদি তপ্রিদিগ্রেও তোমার গুণগান প্রবণেচ্ছায় ত্বনীয় গান্দভায় ভিক্কুচর্যা প্রাপ্ত করায়, হে অঘনাশন! এই রূপে তোমার কোন অনির্বচনীর আশ্চর্য্য উংকর্ষ দর্শন করিয়া আমি স্পাষ্টরূপে দ্বনীয় দেবায় প্রদায়িত হইয়াছি॥৮॥

#### অথ পারিষদ॥

ঘারকানগরীতে উদ্ধান, দারুক, সাত্যকি, প্রাত্ত দেব, শক্ত-ক্রিং, নন্দ, উপনন্দ ও ভদ্র প্রভৃতি পার্ষদ, ইহারা মন্ত্রণা ও সার্থ্যাদি কার্য্যে নিযুক্ত থাকিলেও কোন কোন সময়ে পরিচর্যাদি কার্য্যে প্রবৃত্ত হয়েন। কুরুবংশের মধ্যে.

<sup>(</sup>ক) ক্রণক্রণৈরিভাত বিক্লক্রণৈরিভাপি পঠি:। সোক্ষেৎ্যং ভর্তুভেক্তর্চরিভিস্।

কৌরবেষু তথা ভীষ্মপরীক্ষিষিত্রাদয়ঃ॥
তেষাং রূপং যথা॥
সরসাঃ সরসীরুহাক্ষবেশ।
স্ত্রিদিবেশা বলিজৈত্রকান্তিলেশাঃ।
যতুবীরসভাসদঃ সদামী
প্রানুষ্ঠানজ্বলা জয়ন্তি॥৯॥
ভক্তির্যথা॥
শংসন্ ধূর্জনির্জ্ঞানিবিক্রদং বাজ্যাবরুক্রাক্ষরং
শঙ্কাপঙ্কলবং মদাদগণ্যন কালাগ্রিক্রাদ্পি।

#### বোগাামুগতি: ॥ ৯ ॥

শংসরিতি ইক্সপ্রহণতং একফং প্রতি কস্চিন্ন । শংসন্প্রশংসৃত্।
শক্তিব পক্ষ উদ্বেগদারি বাত্তস্য লবমপাগণয়ন্ সোহপি নাজীতি নিশ্চিম্বরিদ্দিত থা । যথা শিক্তিব পক্ষণনা যথিন্স শক্ষাপক্ষণ ই ইফ্কেমান ইত্যর্থ:।
তত্ত গে । সমস্তস্যাসমন্তেন নিত্যাপেকেশ সক্ষতিরিতি নাারেন কালায়ি

# ভীষা, পরীকাং ও বিতুর প্রভৃতিকে পার্ষদ বলা ॥ ঐ সকল পার্ষদের রূপ যথা॥

যদ্বীরের সভাসদ সকল রসময় মুর্ত্তি, পদ্মনেত্র, দেবপরা-জয়কারি কান্তিশালী এবং সর্ববিদা প্রচুর অলঙ্কারে উচ্ছল হইয়া বিরাজ করিতেছেন॥ ৬॥

#### ভক্তি यथा॥

ইন্দ্রপ্রস্থাত শ্রীকৃষ্ণকে কোন ব্যক্তি কহিল, প্রভো! উক্তবাদি হুদীয় পার্বদগণ গলদশ্রু গদগদ বাক্যে ভোমার ক্লন্ত্র- ছযোবার্পিতবুদ্ধিরুদ্ধবমুথস্থৎপর্যিদানাং গণে।
দারি দারবভীপুরদ্য পুরতঃ দেবোৎস্কস্তিষ্ঠিত ॥১০॥
এতেষাং প্রবরঃ শ্রীমানুদ্ধবঃ প্রেমবিরুবঃ॥
তদ্য রূপং যথ।॥
কালিন্দীমধুরত্বিং মধুপত্তর্মাল্যেন নির্মাণ্যতাং
লদ্ধেনাঞ্চিতমন্বরেণ চ লদদ্যোরোচন্বোচিষা।

কুদাদিপি শকাপকলবো যো ভগবছ কজনস্তমপি মদাছগবদাশ্রমাহাত্মাগর্কাদগণয়ন্ ভগবদাশ্রমে সতি তদাভালোহপি নোচিত ইতাতোন বহু মধান
ইতার্থঃ। তদেবমেব পূর্কেভো জগতাধিকতেভা এষাং বিশেষো দর্শিতঃ। পুরতঃ
ঘারবতীপুরসা পুরতো ঘারে সকাগ্রিমঘারে ॥ ১০॥

ংগ্রাবিক্র: প্রেমপ্রবশ:। ক্লব ভর ইতি ঘটাদাাত্মনেপদিত্বেন বোপদেব: পঠতি। থিক:বা বিহবেল ইতি বিশোষানিম্নবর্গ:। তত্ত বিক্লবতে কাতরো ভবতীতি ক্ষীর্থানী। ভ্রাদাভিভূতে ধ্রমিতি টীকাস্তরাণি। তত্ত ত্রেনাত্ত

জ্বাদি কার্য কার্ত্তন করিতে করিতে মত্তাবশতঃ প্রলয়ক্ত্তা কালাগ্রি রুদ্র হইতে শঙ্কারূপ পঞ্চলেশকেও গণ্য করেন না, কেবল তোমাতে চিত্ত সমর্পণপূর্দ্দিক দেবাবিষয়ে উৎস্ক্র হইয়া দ্বারাবতাপুরীর অংগ্র দণ্ডায়মান হইয়ারহিয়াছেন॥১০॥

এই দকল পার্ষদগণের মধ্যে প্রেমবিহ্বল শ্রী**মান্ উদ্ধবই** সংব্যঞ্জেষ্ঠ ॥

# উদ্ধবের রূপ যথা॥

যাঁহার শরীর কালিন্দীতুল্য প্রিশ্ন শ্যাসবর্গ, যিনি কুরু নির্মাল্য মাল্য ও পীড়বস্নে বিভূষিত, যিনি অর্গল সদৃশ ছদেনার্গরিশবেশ ভূজবোজাজিফুমজেকণং
মুখাং পারিষদের ভক্তিলহরীক্রদ্ধং ভজাম্যদ্ধবং ॥ ১১॥
ভক্তির্যথা ॥
মুর্দ্ধন্যাত্তকশাদনং প্রণয়তে ত্রেক্রেশবোঃ শাদিতা
দির্দ্ধং প্রার্থয়তে ভূবং ভত্তরাং ত্রন্ধাতকোটীশবঃ।
মন্ত্রং পৃচ্ছতি মামপেশলিয়ণ বিজ্ঞানবারাংনিধিবিক্রীড়ত্যসক্ষিতিক্রচরিতঃ সোহয়ং প্রভূম দিশাং॥
স্থানুবাঃ॥

পারবশাং লক্ষ্যত ইতি। এবনেব। ইতি বিক্লবিতঃ ভাসামিত্যত্ত স্থামিতিঃ পারবশাঞালপিত্মিতি ব্যাথাতিং (ভা।১০।২১।৩১)॥১১ঃ॥ বিক্লীড়তীতি বাজেন তথ্য বিনয়মেব ব্যাক্তিমা॥১২॥

স্থানার প্রস্থার বিরাজমান এবং পদানেত্র তথা পারিষদগণের মধ্যে মুখ্য ও ভক্তিশালি, সেই উদ্ধবকে ভল্গনা করি॥ ১১॥ উদ্ধবের ভক্তি যথা॥

ধিনি শিব ও ব্রহ্মার শাদন কর্ত্ত। হইয়াও মন্তকে উগ্র-সেনের শাদন বহন করেন, যিনি কোটি ব্রহ্মাণ্ডের অধীশ্বর হইয়াও সমুদ্রের নিকট যৎকিঞ্চিৎ ভূমি প্রার্থনা করিয়াছেন এবং যিনি বিজ্ঞানসমুদ্র হইয়াও অল্লবুদ্ধি আমি যে উদ্ধব আমাকে মন্ত্রনা জিজ্ঞানা করেন, সেই এই প্রভু শ্রীকৃষ্ণ আমাদের মন্ত নানাকার্য্য করিয়া নিরস্তর জীড়া করিতেছেন ॥
অথ অনুসুগ ॥

# পশ্চিম। ২ লহরী। ভক্তিরদায়ত দিরু:।

সর্বদা পরিচর্যান্থ প্রভারাসক্তচেতদঃ।
পুরস্থাশ্চ ব্রজন্থাশ্চেত্টোতে অসুগা বিধা ॥
তত্র পুরস্থা: ॥
খচন্দ্রো মণ্ডনঃ স্তন্তঃ স্থ কথাদ্যাঃ পুরামুগাঃ।
এষাং পার্ষদরৎ প্রায়ো রূপালঙ্করণাদয়ঃ॥
দেবা যথা॥
উপরি কনকদণ্ডং মণ্ডনো বিস্তৃণীতে।
ধুবতি কিল স্থচন্দ্রদানরং চন্দ্রচারু।
উপ্তর্ভি স্তন্থঃ স্থ্রাস্থ্রবিটিং
বিদ্ধতি পরিচর্যাং সাধ্বো মাধ্বদ্যা॥

য!হার। সর্বাদা প্রভুর সেবাকার্য্যে **আসক্তচিত্ত, ভাহা-**দিগকে অনুগ বলে, এই অনুগ পুরস্থ ও ব্র**জস্থ ভেদে চুই** প্রকার হয়॥

তশাধ্যে পুরস্থ অর্থাৎ দারকাস্থ অনুগ যথা ॥ স্থান্তন, স্থাও স্থান্ত প্রভাৱ প্রভৃতিকে দারকা**স্থ অনুগ** বলে, ইহাঁদের পার্ষিভুল্য রূপ ও অলঙ্কারাদি ধারণ ॥ অনুগদিগের সেবা যথা ॥

মণ্ডন শ্রীকৃষ্ণের মন্তকোপরি কনকদণ্ড ছত্র ধারণ করেন, হচন্দ্র শেতচামর ব্যজন করেন এবং হৃতস্ত তাম্বুলবীটিক। সমর্পণ করেন, এইরূপে সাধ্গণ মাধ্বের পরিচর্যা সকল বিধান করিয়া থাকেন॥

অথ ব্রজন্থা ।।
রক্তকঃ পত্রকঃ পত্রী সধুকঠো মধ্বতঃ।
রসালঃ স্থবিলাদশ্চ প্রেমকন্দো মরন্দকঃ।
আনন্দশ্চন্দ্রগাদ্চ প্রোদো বকুলস্তথা।
রসদঃ শারদাদ্যাশ্চ ব্রজন্থা অনুগা মতাঃ ॥
এষাং রূপং যথা॥
মণিময়বরমণ্ডনোজ্জ্লাজান্
পুর্টজ্বামধুলিট্পটীরভাদঃ।
নিজ্বপুরন্ধরপদিব্যবস্তান্
ব্রজ্পতিনন্দনকিক্ষরার্মামি॥
সেবা যথা॥

#### ব্ৰজন্থ তামুগ যথা॥

রক্তক, পত্রক, পত্রী, মধুকণ্ঠ, মধুব্রত, রসাল, হ্রবিলাদ, প্রেমকন্দ, মন্দক, আনন্দ, চন্দ্রাদ, পয়োদ, বকুল, রসদ, এবং শারদ প্রভৃতি। এই সকল ব্রজন্থ অনুগ বলিয়া পরিগ-ণিত ॥

## ব্রজহ অনুগদিগের রূপ যথা n

যে সকল অজস্থ অমুগ উৎকৃষ্ট মণিময় ভূষণে উজ্জ্লাঙ্গ, স্বর্ণ, জবা, ভ্রমর ও চন্দ্র তুল্য বর্ণশালী ও বাঁহাদের নিজ নিজ দেহামুরপ বসন পরিধান সেই অজপতিনন্দনের কিঙ্করগণকে প্রণাম করি ॥

ব্রজন্থ অমুগের দেবা যথা।

ক্রত ক্র পরিক্তং বকুল পীতপট্টাংশুকং
বরৈরগুরুভির্জনং রচয় বাসিতং বারিদ।
রসাল পরিকল্লয়োরগলতাদলৈবীটিকাঃ
পরাগপটলী গবাং দিশমরুদ্ধ পৌরন্দরীং॥
ব্রেছামুগেয়ু সর্কের্ বরীয়ান্রক্তকো মতঃ॥ ১২॥
অসা রূপং যথা॥
রম্যপিঙ্গপট্টমঞ্চ রোচিমা
থিনিতোরুশতপর্কিকারুচং।
হুষ্ঠু গোষ্ঠয়ুবরাজনেবিনং
রক্তক্তমনুযামি রক্তকং॥ ১৩॥

শতপৰ্কিকা দ্ৰ্কা। ব্ৰক্তঃ বাগবিদ্যানিপুণঃ কণ্ঠে! যদ্য তং অহ্যামি অহ্-গতো ভবামি ৭১৩ ॥

যশোদা কহিলেন, বকুল। শীঅ পীতবর্ণ পট্টবস্ত্র পরিকার কর, বারিদ। তুমি ভাল ভাল অগুরুদ্ধারা জল স্থবাসিত কর, রসাল। তুমি পর্ণদ্বারা বীটিকা প্রস্তুত কর, ঐ দেখ পূর্বাদিক্ গোধ্লিতে আছেন হইয়া আদিতেছে॥ (উরগণতা নাগবলী-পান)

রুন্দাবনে যে সমস্ত অনুগ আছেন তাঁহাদের মধ্যে রক্তক সংবাপেকা প্রধান ॥ ১২ ॥

রক্তকের রূপ যথা॥

যাঁহার পীতাম্বর পরিধান, যিনি অঙ্গকান্তিছারা উৎকৃষ্ট দূর্বাকে পরাজ্য করিয়াছেন, যাঁহার নন্দনন্দনের সেবাভেই স্মুত্রাগ ও সঙ্গীতে কণ্ঠ হ্রঞ্জিত, দেই রক্তক অনুগের অনু-গামী হই ॥ ১০॥ ভক্তির্যথা।।

গিরিবর ভৃতিভর্ত্নারকেহস্মিন্
ব্রজযুবরাজতয়া গতে প্রদিদ্ধিং।
শূণু রসদ সদা পদাভিসেবা
পটিমরতা রতিরুত্তমা মহাস্ত ॥ ১৪ ॥
ধ্য্যো ধীরশ্চ বীরশ্চ তিধা পারিষদাদিকং॥
তত্ত্র ধূর্যাঃ॥
ক্ষেত্বেল তেয়সীবর্গে দাসাদোচ যথাযথং।
যং প্রীতিং তত্ত্বতে ভক্তঃ স ধূর্যা ইং কীর্ত্তিতে॥

নিজেশিত্রা কদাপি স্থীব্দাবজ্ঞিমাণং স্থং সঙ্গুচন্তাবং বীক্ষা বিজনে পৃচ্ছস্তং রসদং প্রতি স্বয়মেবাহ গিরীতি। রতা আবিষ্ঠা ॥ ১৪ ॥ পারিষদাদিক ইতি পারিষদা অনুগাশেচত্যুভ্যোর্গণঃ ॥ ১৫ ॥

## রক্তকের ভক্তি যথা॥

রক্তক কহিলেন অহে রসদ! প্রবণ কর, এই গিরিধারি ব্রেক্সরাজনন্দন যিনি ব্রজযুবরাজ বলিয়া প্রশিদ্ধ খ্যাতি লাভ করিয়াছেন ভাঁহার পাদপদ্ম দেবা বিষয়ে আমার পটীয়দী উত্তমা রতি সর্বদা হউক॥ ১৪॥

ধূর্য্য, ধীর ও বীর ভেদে পারিষদ তিন প্রকার ॥
তন্মধ্যে ধূর্য্য পারিষদ যথা॥

যে ভক্ত কুষ্ণে, কুষ্ণপ্রে। সীবর্গে ও দাসাদিতে যথাযোগ্য শ্রীতি বিস্তার করেন। তাঁহাকে ধূর্য্য পারিষদ বলিয়া কীর্ত্তন করা যায়॥ যথা ॥

দেবঃ দেব্যতথা যথা ক্ষুব্তি মে দেব্যন্তথাস্য প্রিয়াঃ
সর্বঃ প্রাণসমানতাং প্রচিন্তুতে তদ্তক্তিভাজাং গণাঃ।
স্মৃত্যা সাহসিকং বিভেমি তমহং ভক্তাভিমানোমতং
প্রীতিং তৎ প্রণতে থরেহপ্যবিদ্ধদ্ যঃ স্বাস্থ্যমালম্বতে॥
অথ ধীরঃ॥

ভাগ্রিত্য প্রেয়দীমদ্য নাতিদেবাপরোহপি যঃ। তদ্য প্রদাদপাত্রং দ্যান্মুখ্যং ধীরঃ দ উচ্যতে॥ ১৫॥

#### যথা ॥

প্রীকৃষ্ণ যেমন আমাব সন্থান্ধে সেবান্থ রূপে ক্ষান্তি পাই-তেছেন, তদ্রাপ তদীয় প্রেয়দাবর্গ দেবীগণও আমার সন্থান্ধে ক্ষান্তি প্রাপ্ত হইতেছেন, তথা সমুদায় কৃষ্ণভক্তিভালি ভক্ত-গণও আমার প্রাণসদৃশরূপে পরিগণিত হইয়াছেন, কিন্তু আমি ভক্ত এইরূপ অভিমানে উচ্চ সাহদিক ব্যক্তিকে সারণ করিয়া আমি ভীত হইতেছি, যেহেতু কৃষ্ণভক্ত গর্দভের যে ব্যক্তি প্রীতি বিধান করেন তিনিও পরমন্থ্যে কাল্যাপন করিতে পারেন॥

## অথ ধীর পারিয়দ॥

যিনি শ্রীকৃষ্ণের প্রোমীকে আশ্রেয় করিয়া থাকেন, দেবা-বিষয়ে অতিশয় পরায়ণ হয়েন না, তিনিও শ্রীকৃষ্ণের মুধ্য অমুগ্রহপাত্র এবং তাঁহাকেই ধীর বলাযায়॥ ১৫॥ যথা॥
কমপি পৃথগমুকৈন চিরামি প্রযক্তং
যতুক্ল-কমলার্ক ত্বংপ্রদাদ্রিরেইপি।
সমজনি নমু দেব্যাঃ পারিজাতার্চিতায়াঃ
পরিজননিথিলান্তঃপাতিনী মে যদাথ্যা॥

কমণীতি সভাভামায়াঃ পিত্রা ভদন্গততথা দত্তদা ভদ্ধাতীপুদ্রদা অভএব শ্রীকৃষ্ণমন্থ স্থিমশালায়মানসা নর্মপ্রায়য়া দেবঘা ভং স্থয়তঃ কসাচিষ্চনং। অভএব রদাবহুমিদং সাথে। কমপি কঞিদ্পি অনুক্তিরল্লম্পি॥ ১৬॥

#### घथा ॥

যংকালে জ্রীক্ষের সহিত সত্যভামার পাণিগ্রহণ হয়, সেই সময় সত্যভামার ধাত্রীপুত্র যিনি সত্যভামার অতিশয় প্রীতিপাত্র ছিলেন, সত্যভামার পিতা ঐ ধাত্রীপুত্রকে সত্য-ভামার সহিত ছারকানগরীতে প্রেরণ করেন, এই নিমিত্ত ঐ ধাত্রীপুত্র জ্রীক্ষেরে শ্যালক তুল্য হইয়া সর্বাদা পরিহাদ সেবা ছারা জ্রীক্ষেকে স্থী করিতেন, সেই ব্যক্তি কহিলেন, হে যতুকুলকমলপ্রভাকর! ভোমার অনুগ্রহলক্ষ্মী লাভনিমিত্ত আমি পৃথক্রপে কিঞ্চিম্মাত্রও ঘত্র করি নাই, তথাপি পারি-জাত্বপ্রিতা দেবী সত্যভামার পরিজনবর্গের মধ্যে প্রধান বিয়া আমার আখ্যা হইয়াছে ॥

चार्थ वीत्रभातियम् ॥

কুপাং তস্য সমাপ্রিত্য প্রোচাং নানামপেকতে। অত্লাং যো বহন্ কৃষ্ণে প্রীতিং বীর: স উচ্যতে ॥ ১৬॥ যথা॥

প্রলম্বরিপুরীশরো ভবতু কা কৃতিন্তেন মে কুমারমকরধ্বজাদপি ন কিঞ্চিদান্তে ফলং॥ কিমন্যদহমুদ্ধতঃ প্রভুক্পাকটাক্ষপ্রিয়া প্রিযাপরিষদ্যিমাং ন গণয়ামি ভাষামপি॥ চতুর্থেচ॥

প্রবাধ ইতি অসা তত্র তত্তান্ত:সরসত্ত্বংশি প্রণারকৌতুকবিশেষেণৈৰ বহিপর্বিসা বাঞ্জনা জ্রেরা। সর্বাথা তত্তাবত্তেনৈ বৈর্দ্যাপত্তে:। এবমূত্রর জগজ্জননাামিতাাদাবপি জ্রেরং। বক্ষাতেচ। ঈর্বালবেনে ত্যাদি। তদেত চে সভাভামারাঃ
কঞ্চিদস্তরক্ষঃ প্রতি রহসি বীরভক্তসা বচনং। স্পষ্টবচনত্বে প্রানম্বিপুষ্তিক্রমার সভাভামাধিকাবাঞ্জনারাং শ্রীকৃষ্ণসা লক্ষ্যা সাাদিতি ॥ ১৭॥

াযনি ঐক্ষের কুপাতিশর আগ্রেয় করিয়া অন্যকে অপেক। করেন না, কিন্তু ঐক্তিয়ের অতুল ঐতি বিধান করেন উচ্চাকেই গীরপার্বদ বলা যায়॥ ১৬॥

#### যথা #

প্রলম্বলকে বলদেব ঈশ্বর হউন, তাঁহাতে আমার কোন প্রয়োজন নাই, প্রত্যুদ্ধ বালক, তাঁহা হইতেও আমার কোন ফল নাই, অতএব অন্য আর কি বলিব, শ্রীকৃষ্ণের কুপা-কটাক্ষপাতে আমি উদ্ধত হইয়া প্রিয়াএগণ্যা সত্যভামাকেও গণনা করি না॥

**চতুর্পক্ষে २० जगाता २० क्षाटक ॥** 

জগজনন্যাং জগদীশ বৈশদং

স্যাদেব যথ কর্মাণি নঃ সমীহিতং।
করোষি ফল্ গপুরু দীনবৎসলঃ
স এব ধিফোহভির হস্য কিং তয়া॥ ১৭॥
এতের্ তস্য দাসেয়ু ত্রিবিধেষাশ্রিতাদিয়ু।
নিত্যদিদ্ধাশ্চ দিদ্ধাশ্চ সাধকাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ॥ ১৮॥
অথোদ্ধীপনাঃ॥
অনুগ্রহ্স্য সংপ্রাপ্তিস্তাগ্যাজির রক্ষ্যাং তথা।

এতে বিভি ত বদধিকতে বিপি ভেদা ইলে জেয়া:। তথা শান্তাদিবপি ॥ ১৮॥ অমুগ্রহদ প্রাপ্তাদীনামুদ্দীপনরং বংসলেষু ন সম্ভবত্যেব সময়ভেদেন

পৃথুরাজ কহিলেন, হে জগদীশ! লক্ষ্মীর কর্মনিমিত্ত আনার যত্র হইতেছে, ইহাতে তাঁহার সহিত যদি আনার বিবাদ হয় হউক, তাহাতে ক্ষতি নাই, আপনি দীনবৎসল, দীনের প্রতি দয়। করিয়া ভুচ্ছ কার্য্যও বহু করিয়া থাকেন, আমার কার্য্য অবশ্য গণ্য করিবেন। প্রভো! আপনি স্বর্ধন পেই সদা অবস্থিত আছেন, লক্ষ্মীতে আপনার প্রয়োজনই বাকি॥ ১৭॥

শ্রীকৃষ্ণের পূর্বের ক্র শরণ্য, জ্ঞানিচর ও দেবানিষ্ঠ এই তিন আগ্রিত দাসসকলে নিত্যসিদ্ধ, সিদ্ধ এবং সাধক এই তিন প্রকার ভেদ কীর্ত্তিত হয়॥ ১৮॥

অথ উদ্দীপন ॥

শ্রীকৃষ্ণের অমুগ্রহ, শ্রীকৃষ্ণের চরণধূলি, শ্রীকৃষ্ণের ভুক্তাব

ভুক্তাবশিষ্টভক্তাদেরপি তম্তক্তসঙ্গতিঃ।
ইত্যাদয়ো বিভাবাঃ স্থ্যবেষদাধারণা মতাঃ॥ ১৯॥
তত্তামুগ্রহদংপ্রাপ্তির্যথা॥
কৃষ্ণস্যত কুপাং কুপাদ্যাঃ কুপণে ময়ি।
ধ্যেয়োহসৌ নিধনে হস্ত দৃশোরধ্বান্যভ্যগাৎ॥ ২•॥
মুরলীশুপ্রোঃ স্থানঃ স্মিতপ্র্কাবলোকনং।
গুণোৎকর্ষপ্রভিঃ পদ্ম পদাক্ষ নবনীরদাঃ।
তদঙ্গনোরভাদ্যান্ত সর্কৈঃ সাধারণা মতাঃ॥ ২১॥

কুমটিদন্যত্রাপীত।সাধরাণত্বং জ্ঞেয়ং। তত্তকসঙ্গতিক্ত বিশেষবিবক্ষরৈর গণিতা॥ ১৯ ম

ক্কঞ্চেত্র ভীমবচনং ॥ ২০ ॥ স্মিতেতাত্র গুণেতাত্র পদাক্কেতাত্র চ স্বদীরস্বং গ্নাং ॥ ২১ ॥

শিষ্ট অমাদির প্রাপ্তি এবং শ্রীকুষ্ণের ভক্তসঙ্গ, দাসপ্রভৃতি এই সকল অসাধারণ বিভাব হয়॥ ১৯॥

তন্মধ্যে অনুগ্রহ দংপ্রাপ্তি যথা॥

ভীম মহাশয় কহিলেন, অহে কুপাচার্য্য প্রভৃতি দ্বিজ্ঞাণ!
শ্রীকৃষ্ণের আশ্চর্যা কুপা সন্দর্শন করুন, আমি অতি দীনব্যক্তি হইলেও এই ধ্যেয় পদার্থ অন্তকালে আমার লোচনের
পথে সমাগত হইলেন॥ ২০॥

উক্ত প্রীতরসে প্রীকৃষ্ণের মুরলীর শব্দ, শৃপধ্বনি, সহা-স্যাবলোকন গুণোৎকর্ষ প্রবণ, পদ্ম, পদ্চিহ্ন নৃতন মেঘ এবং অঙ্গদৌগভ, ইত্যাদি সকল সাধারণ উদ্দীপন ॥ ২১ ॥ ভত্ত মুরলীস্বনো যথা বিদশ্বনাধ্বে ॥

সোৎকণ্ঠং মুরলীকলা পরিমলানাকর্ণ্য ঘূর্ণত্তনোরেভস্যাক্ষি সহস্রভঃ হুরপতে রব্রুণি সম্রুভুবি।

চিত্রং বারিধরান্ বিনাপি তরসা যৈরদ্য ধারামীয়দূরাৎ পশ্যত দেবমাতৃকমভূত্বলাটবীমগুলং ॥২২ ॥

অধাসুভবাঃ ॥

সর্বাতঃ স্থানিয়োগানামাধিক্যেন পরিগ্রহঃ।

স্বিলিবেন চাস্পুকা মৈত্রী তৎ প্রণতে জনে।

দেবমাতৃকং বৃষ্ট্যমুপালিতং ॥ ২২ ॥ ভন্নিষ্ঠতা প্রীতিমাত্রনিষ্ঠতা ॥ ২৩ ॥

# তশ্বধ্যে ম্রলীশব্দো যথা॥ বিদগ্ধমাধ্যে॥

বলদেব উৎকণ্ঠান্থিত হইয়া কহিলেন, দূর হইতে আশ্চর্যা দেখ, মুরলীর অমৃতময় ধ্বনিসমূহ প্রাবণ করিয়া ঘূর্ণিত তমু ইন্দ্রের সহস্র নেত্র হইতে অপ্রাক্তির ইয়া ভূতলে পতিত হইতে লাগিল এবং মেঘ ব্যতিরেকেও ঐ ধারাময় অপ্রাসমূহ দ্বারা বৃক্ষাবনমণ্ডল বৃষ্টিপালিত হইয়া সদ্যঃ দেবমাতৃক-ভূমি ভূল্য হইল ॥ ২২ ॥

### অথ অমুভাব ৷৷

সর্বতোভাবে স্থনিয়োগ অর্থাৎ ভগবৎ আজ্ঞার প্রতিশালন, ভগবৎ পরিচর্য্যায় ঈর্ষাশূন্যতা, কৃষ্ণদাদের সহিত মিত্রতা এবং প্রতিমাত্র নিষ্ঠতা শীতরতি, এই সকল অসাধারণ ভন্নিষ্ঠ ভাদ্যাঃ, শীভাঃ স্থারেলগাধারণাঃ ক্রিরাঃ ॥ ২০ ॥

শত্র স্থানিদ্যা সর্বাভ আধিক্যং যথা ॥

শব্দন্তভারভমুক্ত স্থান্তঃ
প্রেমানন্দং, দারুকো নাভ্যনন্দং ।

কংসারাভেবীজনে যেন সাক্ষা

দক্ষোদীয়ানন্তরায়ো ব্যধায়ি ॥

উদ্ভাস্থরাঃ পুরোক্রা যে তথাসা স্থান্দরঃ ।

অক্সভেতি প্রেমানন্দং ভন্তারস্থম্ত ক্ষম্ভং সস্থং নাভানন্দ্দিভাষ্যঃ। আরমর্ব:। প্রেমা তাবিদ্ধা বিশেষণ ভাক্ ওন্তাদিনা আমুক্লোচ্ছ্রাচ। তাল দাসাদীনামামুক্লোচ্ছ্টেগ্রতিহ্ন্যা। সেবারপারপুক্ষার্থসম্পাদকস্থাৎ ভাজাদিকং
স্ক্লাকরত্বেনিবাভানন্দ্রিত স্বিশেষণ বিধিনিষ্ধে বিশেষণমূপসংক্রামতঃ
সভি বিশেষ্য বাধে ইতি ন্যান্তেন আরম্ভ আটোপঃ অক ভাজাসক্ষিতি বা

### কার্য্যকে অমুভাব বলে॥ ২০॥

অন্মধ্যে স্থনিরোগকার্য্যের সর্বতোভাবে আধিক্য যথা এ
দারুক শ্রীকৃষ্ণের চামর বীজন কার্য্যে নিযুক্ত ছিলেন
এমত সময়ে প্রেমানন্দ উপস্থিত হইয়া তদীয় অঙ্গ সকলে
স্তম্ভাতিশয় বিস্তার করিতেছিল, কিন্ত দারুক ঐ প্রেমানন্দকে
সাক্ষাং কৃষ্ণসেবার অন্তরায় (বিল্ল) বলিয়া অবধারণ ক্রত
ভাহার প্রতি আর আদর প্রকাশ করেন নাই ॥

পূর্ব্বোক্ত যে সকল উদ্ভাস্থর তথা শ্রীক্লঞ্চের স্ক্রের্গের প্রতি আদর এবং বিরাগ প্রভৃতি যে সকল শীতভাব তৎসমূ- বিরাগাদ্যাশ্চ যে শীতাঃ প্রোক্তাঃ সাধারণস্ত তে ॥
তত্ত্ব নৃত্যং যথা প্রীদশমে ॥
প্রুতদেবোহচ্যুতং প্রাপ্তং স্বগৃহান্ জনকো যথা।
নত্বা মুনীংশ্চ সংহৃদ্দেও ধুন্বন বাদ্যো ননর্ত্ত হ ॥ ২৪ ॥
যথাবা ॥
ত্বং কলাস্থ বিমুখেহিপি নর্ত্তনং
প্রেমনাট্য গুরুণাসি পাঠিতঃ।
যদ্বিচিত্ত গতিচর্যায়াঞ্চিত-

#### नार्ठः ॥ २८ ॥

দ্বং কলাত্ম বিমুখোছপি যদিচিত্রগতিচর্যারাঞ্চিতঃ সন্নহন্ন চারণামপি চিত্তদ্বাসি তৎ প্রেমনাটা গুরু গৈব নর্ত্তনং পাঠিত ইত্যর্থঃ। চারণাশ্চ নর্ত্তক সদৃশা
ইতি ভদভেদেনোক্তিঃ॥ ২৫॥

দায়কে সাধারণ বলিয়া কীর্ত্তন করা যায়॥
তন্মধ্যে নৃত্য যথা॥
শ্রীদশ্যে ৮৬ অধ্যায়ে ২৭ শ্রোকে॥

মিথিলাবাদী শ্রুতদেব ব্রাহ্মণ স্বীয় গৃহে মুনিগণ সহ শ্রীকৃষ্ণকে সমাগত দেখিয়া ছফুচিত্তে তাঁহাদিগকে প্রণামপূর্বক
হস্ত উত্তোলন করিয়া নৃত্য করিতে লাগিলেন॥ ২৪॥

### যথাবা ॥

আহো ! তুমি নৃত্যকলায় বিমুখ হইয়াও যথন আশ্চর্য্যাতি দারা শোভিত হইয়া আমরা যে নর্ত্তক আমাদিগকে চমৎকৃত ক্রিলা তথন নিশ্চয় বোধ হইল, তুমি নাট্যগুরু, থেমের শিচত্রগান্যহহ চারণানপি ।
অথ সান্ত্রিকাঃ ॥
স্তম্ভাদ্যাঃ সান্ত্রিকাঃ সর্ব্বে প্রীতাদিত্রিতয়ে মতাঃ ।
যথা ॥
গোক্লেন্দ্রগুণগানরসেন
স্তম্ভমুত্রমর্ফো ভজমানঃ ।
পশ্য ভক্তিরসমগুপমূল
স্তম্ভতাং বহতি বৈষ্ণবর্ষ্যঃ ॥ ২৫ ॥
শ্রীদশ্রে ॥
স ইন্দ্রদেনো ভগবৎপদাস্কুজং
বিজ্ঞমুত্রঃ প্রেমবিভিন্নগা ধিয়া ।

हेक्सरमत्ना विलः॥ २७॥

নিকট এই নৃত্যবিদ্যা পাঠ করিয়াছ॥ অথ দাত্ত্বিক॥

প্রীত।দি রসজুয়ে শুস্তপ্রস্থৃতি সমুদায় সাত্তিকভাব প্রকাশ পায়॥

যথা ॥

দেখ এই বৈষ্ণবশ্রেষ্ঠ শ্রীকৃষ্ণের গুণগান রসে **অপূর্বে** স্তম্ভ ভঙ্গন করত ভক্তিরসমগুপের মূলে স্তম্ভতা ব**হন করিতে-**ছেন॥ ২৫॥

শ্রীদশমে ৮৫ অধ্যায় ৩০ শ্লোকে॥ শুকদেব কহিলেন মহারাজ। পরে অ**স্থররাজ বলি ভগ-** ভবাচ হানন্দজলাকুলেকণঃ
প্রান্থ ব্যক্তিরামা নূপ গদাদাকরং ॥
অথ ব্যক্তিচারিণঃ ॥
হর্ষোগর্কো ধ্রতিশ্চাত্র নির্দ্রেদোহধ বিষণ্ণতা ।
দৈন্যং চিন্তা স্মৃতিঃ শঙ্কা মতিরোহ স্থক্যচাপলে ।
বিতর্কাবেগ হুটা জাড্য মোহোম্মাদাবহিপেকাঃ ।
বোধঃ স্বপ্নঃ ক্রমো ব্যাধিম্ তিশ্চ ব্যক্তিচারিণঃ ॥ ২৬ ॥
ইতরেষাং মদাদীনাং নাতিপোষকতা ভবেহ ॥
যোগে ত্রয়ঃ স্থাপ্তিয়ো অ্যোগেতু ক্রমাদয়ঃ ।

মদাদীনাং মদ শ্রম আসাপমারালদোত্রা। মধাক্রা নিজাণাং। তত্ত্ব মদসা পোষকতা নান্ডোব মধুপানানল বিকারজতয়া দ্বিধিবেন।পাযোগাছাং। শ্রমন্ত্রত্ব কথঞ্চিজ্ঞাতস্য সেবোংকঠাপোষকছাং কণাচিত্তবতাপি ন পুনরালমা বৎপদাস্ক হাদয়ে ধারণপূর্বক প্রেমে বিহ্বল চিত্ত হইয়া রোমাঞ্চিত-কলেবরে ও আনন্দ-জলাকুল-নয়নে গদগদ-স্বরে কহিতে লাগিলেন॥

প্রীতরদে ব্যভিচারি ভাব যথা॥

হর্ষ, গর্ব্ব, ধ্বতি, নির্মেদ, বিষণ্ণতা, দৈনা, চিন্তা, স্মৃতি, শঙ্কা, মতি, ঔংস্কা, চপণতা, বিতর্ক, আবেগ, লজ্জা, জড়তা, মোহ, উন্মাদ, অবহিথা, বোধ, স্বপ্ন, ব্যাধি এবং মৃতি এই চবিবশটী প্রীতরদে ব্যক্তিচারি ভাব॥ ২৬॥

ইহা ভিন্ন মদ, প্রাম, তাদ, অপস্মার, আলদ্য, উগ্রতা, ক্রোধ, অদ্যা ও নিদ্রা এই নয়টীর অভিশয় পোষকতা নাই, মিলনে হর্ষ, গর্মা ও ধৈর্য্য এই তিন, অমিলনে গ্রানি, ব্যাধি ও উভয়ত্র পরে শেষ। নির্কেদান্যা: সভাং মভা: ॥
তত্ত্ব হর্ষে। যথা প্রথমে ॥
প্রীত্যুৎফুল্লমুধা: প্রোচুর্হ্ষ গদসন্মা গিরা।
পিতরং সর্কাহ্হদমবিতারনিবার্ভকা: ॥
যথাবা ॥
হরিমবলোক্য পুরো ভূবি
পতিতো দণ্ডপ্রণামশতকাম: ।

জন্মাপি সাং। অত্র ত্রাসাদরগুদৈরি যোগাজ্জাতাশ্চেত্তহি পোষ**কাল্ড ভবস্তীতি** মনসি কুত্যাহ নাতীঙি এবং প্রিয়তাদিশপি বিবেচনীরং॥ ২৭॥

মৃতি এই তিন ব্যভিচারি ভাব হয়। তৎপরে নির্বেদপ্রভৃতি অফীদশ ব্যভিচারি ভাব মিলন ও অমিলনে সকল কালেই হুইয়া থাকে, পণ্ডিতগণ এইরূপ নিশ্চয় করিয়াছেনে॥

### ভন্মধ্যে হৰ্ষ যথা n

প্রথমক্ষরে >> অধ্যায়ে ৪ শ্লোকে॥

শ্রীকৃষ্ণ হস্তিনাপুর হইতে দারকায় আগমন করিলে দার-বাগি প্রজ্ঞাসকল বালকেরা যেনন পিতার সহিত কথা কহে তদ্বৎ উৎফুল্ল বদন হইয়া হর্ষগদাদ বচনে সর্বলোকের স্থহৎ এবং রক্ষক সেই ভগবানকে কহিছে লাগিল।

#### যথা বা ॥

মিথিলাধিপতি রাজা বহুলাখ জ্ঞাক্ষণে অবলোকন করিয়া শন্তবার দণ্ডবং প্রণাম করিব, এই মানসে ভূমিতে পতিত হইয়াছিলেন, কিন্তু আনন্দে অতিশয় বিহন্দতা প্রযুক্ত পুনরু- প্রমদবিমুখো নৃপতিঃ
পুনরুখানং বিসম্মার॥
রুমো যথা স্থান্দে ॥
অশোষয়মান্স্রস্য শ্লাপয়মুখপক্ষজং।
আধিস্তবিরহে দেব গ্রীম্মে দর ইবাংশুমান্॥ ২৭ ॥
নির্কেদো যথা ॥
খন্যাঃ ফারুনন্তি তব সূর্যকেরাঃ সহস্রং
বেষ সর্বন। যতুপতেঃ পদযোঃ পতন্তি।
বক্ষ্যা দৃশাঃ দশশতী প্রিয়তে মমাদো

ব্রিনতে অবতিষ্ঠতে দ্রেংশি মুহূর্ত্তমপি ইত্যভগতাম্বঃ ॥ ২৮ ॥

খান করিতে আর তাঁহার স্মরণ ছিল না॥
· ক্লম অর্থাৎ গ্লানি যথা॥
- স্কন্দপুরাণে [

হে দেব! যজপ সূর্য্য গ্রীম্মকালে সরোবর শুক্ষ করিয়া থাকেন, তাহার ন্যায় তোমার বিরহে আধি অর্থাৎ মনঃপীড়া তাঁহার মন মুখপদ্ম মান করিয়াছিল॥ ২৭॥

### निर्द्यम यथ। ॥

ইন্দ্র কহিলেন, হে সূর্য্য ! আপনার যে সহস্র কিরণ স্ফূর্ত্তি পাইতেছে, ইহাদিগকে ধন্য বলিতে হয়, যেহেতু ইহারা গিয়া যত্নতির চরণারবিন্দে পতিত হইতেছে, কিন্তু ত্বংথের বিষয় এই যে, আমি দশশত লোচন ধারণ করিয়াছি, এ সক-শই বন্ধ্যা হইল, কারণ ক্ষণকালের নিমিত্ত দূর হইতে ঐ

# পশ্চিম। ২ লহরী। ভক্তিরসামুভদিদ্ধু:।

দূরে মুহূর্ত্তমপি যা ন বিলোকতে তং ॥ ২৮ ॥ অথ স্থায়ী॥

সংভ্রমঃ প্রভুতা জ্ঞানাং কম্পন্টেডসি সাদরঃ।
আনেনৈক্যং গতা প্রীতিঃ সংভ্রমপ্রীভিক্ষচাতে।
এষা রসেইত্র কথিতা স্থায়িভাবতয়া বুদৈঃ ॥ ২৯ ॥
আপ্রিতাদেঃ পুবৈবোক্তঃ প্রকারো রভিজ্ঞানি।
তত্র পারিষদাদেস্ত হৈতুঃ সংস্কার এব হি।
সংস্কারোদ্বোধকাস্তম্য দর্শনপ্রবাদয়ঃ।
এষাতু সংভ্রমপ্রীতিঃ প্রাপ্রবৃত্যন্তরোভ্রাং।
বুদ্ধিং প্রেমা ততঃ মেহস্ততো রাগ ইতি ত্রিদা॥

কম্পোহত্র কেন কথং কুর্গ্যামিভাতৈর্গ্যং ॥ ২৯ ॥ পুরৈবেভি ভাবসামান্য প্রকরণে সাধনাভিনিবেশেনেভ্যাদিনা ॥

যতুপতিকে দর্শন করিল না॥২৮॥ অথ প্রীতরদে হায়ী ভাব॥

প্রভুতা-জ্ঞান-নিমিত্ত সম্রম, কম্প ও চিত্তমধ্যে আদর এই সকলের সহিত ঐক্যগত প্রীতিকে সম্রম্প্রীতি কহে, পণ্ডিত-গণ প্রীতর্গে এই সম্রম্প্রীতিকে স্বায়ী ভাব বলেন ॥ ২৯ ॥

আপ্রিকাদির রক্তি উৎপন্ন হইনার প্রকার পুর্ণে**ব ভাব** সামান্য প্রকরণে উক্ত হইয়াছে, তন্মধ্যে পারিষদাদির রক্তি উৎপন্ন বিষয়ে সংস্কার কারণ। সংস্কারের উদ্বোধক (প্রকা-শক) প্রীক্ষের দর্শনি ও প্রবণাদি॥

এই সন্ত্রমগ্রতি উত্রোতর রৃদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া প্রথমে প্রেষ, ভংপরে স্নেহ ও তাহার পর রাগ এই জিন প্রকার হয় ॥ তত্ত সংভ্রমপ্রীতির্যথা শ্রীদশমে ।

মমাদ্যামঙ্গলং নফং ফলবাং দৈচষ মে ভবঃ ।

যন্ত্রমদ্যে ভগবতো যোগিধ্যেয়াজিযুপক্ষজং ॥

যথাবা ॥

কলিন্দনন্দিনীকূল-কদন্তবনবল্লভং ।

কদা নমন্করিষ্যানি গোপরূপং ত্রমীশ্বং ॥ ৩০ ॥

অথ প্রেমা ॥

হাদপগান্ততো বন্ধমূলা প্রেমেয়মূচ্যতে ।

হাসেতি ইয়ং সংভ্ৰমপ্ৰীতিঃ বন্ধমূলা অতএব হ্ৰাসশঙ্কাচ্যুতা ॥ ৩১ ॥

ভন্মধ্যে সন্ত্ৰমপ্ৰীতি যথা॥ শ্ৰীদশমে ৩৮ অধ্যায়ে ৫ শ্লোকে॥

অক্র মহাশয় কহিলেন, আমি যথন ভগবদর্শনে গমন করিতেছি, তথন আজ আমার অমঙ্গল সকল বিনষ্ট হইয়াছে এবং এ জন্মও সফল হইল, যেহেতু যোগিধ্যেয় ভগবচ্চরণার-বিদ্দে আমি প্রণাম করিব॥

### যথাবা ॥

শামার ভাগ্যে এমন দিন কবে হইবে যে, সেই কালিন্দী-কূলবর্ত্তি কদম্বনস্থামী গোপরূপি ঈশ্বর শ্রীকৃষ্ণকে নমস্কার করিব॥ ৩ • ॥

# অথ প্রেম॥

এই সম্ভ্ৰমপ্ৰীতি হ্ৰাদ শকা শূন্য হইয়া বন্ধমূল হইলে ইহাকে প্ৰেম বলা যায়। ইহাতে যে সকল তুঃথাদি প্ৰকাশ অস্যাসুভাবা: কথিতান্তত্ত ব্যসনিতাদয়: ॥ ৩১ ॥
যথা ॥
অণিমাদিসোখ্যবীচীমবীচিত্নুংখপ্রবাহংবা ।
নয় মাং বিকৃতির্নহি মে, স্বংপদকলাবলম্বদ্য ॥ ৩২ ॥
যথাবা ॥
কৃষ্য স্থালিতবুদ্ধিনা ভণ্ডস্থতেন শস্তোহ্পালং
ময়া কৃতজগল্লয়োহ্প্যতমু কৈতবং তম্বতা ।

অণিমাদিতি দণ্ড প্রসাদরোরনপ্পরং শ্রীবলিবচনং অবীচির্নরকবিশেষঃ ॥ ৩২॥ ক্ষুবেতি। বলিদদনাগমনানস্কমুদ্ধবং প্রতি শ্রীক্ষুবচনং ॥ ৩৩॥

# হয়, ভাহাকেই অনুভাব বলে॥ ৩১॥

यथा ॥

দশু এবং অনুগ্রহের পর বলিরাজ ভগবান্কে কহিলেন, প্রভা ! আমি যথন আপনার চরণকমল অবলম্বন করিয়াছি, তথন আপনি আমাকে হয় অণিমাদি মুখদমূহের তরক্ষে নিক্ষেপ করুন, না হয় অবীচিনামক নরকবিশেষেই ফেলা-ইয়া দিউন, তাহাতে আমার কোন বিকার হইবে না॥ ৩২॥

### যথাবা ॥

শ্রীকৃষ্ণ বলিরাজের গৃহ হইতে দ্বারকায় আগমন করিয়া উদ্ধানক কহিলেন, সংগ! বিরোচননন্দন বলির আশ্চর্য্য গুণ কি বর্ণন করিব, ঐ সম্বর্গান্ধ ক্রোধন্ধলিভবুদ্ধি ভৃগু-নন্দনকর্ত্ব অভিশপ্ত হইয়াও এবং আমি বামনাবভারে প্রবল ছল বিস্তারপূর্ণক তিজ্ঞাৎ হরণ ও প্রতিশ্রুত প্রদান করিতে বিনিন্দ্য কুওবন্ধনোহপুরেগরাজপাশৈর্বলাদরজ্যত স ময্যহো দ্বিগুণমের বৈরোচনিঃ॥
অথ স্লেহঃ॥
সাক্রন্দিতভক্তবং কুর্মান্ প্রেমা সেহ ইতীর্যাতে।
ক্রনিক্য্যাপি নেহ স্যাদ্বিশ্লেষ্য্য সহিষ্ণুতা॥
যথা॥
দক্তেন বাঙ্গালুঝার্স্য কেশবং
বীক্ষ্য দ্রবিচ্চভমস্ক্রন্তর।
ইত্যুচ্চকৈধার্য়তো বিচিত্তভাং
চিত্রা ন তে দারুক দারুকঙ্গুতা॥ ৩৩॥

পারিল না বলিয়া নিন্দ। করত বল প্রকাশ করিয়া নাগপাশে বন্ধন করিলেও তিনি আমার প্রতি দ্ভিণতর অনুরাগ প্রকাশ করিয়াছিলেন ॥

অথ প্রীতরদে স্নেহ।

প্রেম গাঢ় হইশ্ব। চিত্তকে দ্রুবীভূত করিলে তাহাকে স্নেহ খলে। এই স্নেহে ক্ষণকাল বিচ্ছেদণ্ড সহু হয় না॥

### राधा म

হে দারুক! কোন ছলে এক্সিংকে দর্শন করিয়া নয়ন জলে পরিপূর্ণ ভোমার মন দ্রবীভূত হইয়া যায়, এরূপ কুষ্ণে শমপিতিচিত্ত ভোমার ভদিরহে কার্দ্রপুত্তলিকাতুল্য হওয়া বিচিত্ত নহে॥ ৩৩॥ यथा वा ॥

পত্নাং রম্বনিধেঃ পরামুপহরন্ পরেণ বাল্পা**ন্তসাং** রজ্যন্মঞ্লকণ্ঠগর্ভলুঠি হস্তোতাক্ষরোপক্রমঃ। চুথন্ ফুল্লকদম্বভন্থরভুলানকৈঃ সমীক্ষ্যাচ্যুতং স্তব্যোহপ্যভ্যধিকাং শ্রিয়ং প্রণমতাং রুদ্দাদ্ধারোশ্বরঃ॥৩৪ অথ রাগঃ॥

ক্রেহঃ গ রাগো যেন গ্যাৎ স্থথ ছঃখমপি ক্ষুটং।

রজান্ সেগজনি হসরবিংশবনাধুর্যাং বিজ্ঞাহণা অভাবত এব মঞ্লন্তদনী। সাধুবী মনোহরপ্রাদৃশো যা কঠা তথা যোগভো মধা ভাগপ্তত্ত্বৰ লুঠিত ইত-ভাহা আলালেব ভ্রমন্ প্রোজাক্ষরাণামুপ্রক্ষেমা যার সাঃ॥ ৩৪॥

সেহএব রাগ: স্যাৎকীদৃশ: সন্। তস্য শ্রীক্রফাস্য সাক্ষাংকারেণ বা তত্তুল্য ক্রুবেশন বা কপালাভেন বা য: স্বন্ধবিশেষতাদত্তরস্ভাগাভতস্য লেশেছিপি কাতে যেন স্বেংন ত্থেমপি স্থাং ক্টং স্যাং স্বভ্যা প্রতিভাতীভার্থ:।

#### यथा वा॥

উদ্ধব শ্রীকুষ্ণকে সন্দর্শন করির। অশ্রুজ্ঞলে নদী নির্মাণ পূর্বক রত্নাকরকে পত্নীরূপে উপহার প্রদান, রাগযুক্ত মনো-হর কণ্ঠমধে গদগদ স্বরে স্তব্ করিতে আরম্ভ এবং সর্বাঙ্গ দ্বার। কদস্বকুস্থমসমূহে সাদৃশ্যবিধান করত স্তব্ধ হইয়াও ভক্তবৃন্দ হইতে অধিক শোভা ধারণ করিয়াছিলেন॥ ৩৪॥

অথ প্রীভভক্তিতে রাগ॥

যে স্নেহে স্পাইজপে ছঃখণ স্থ বলিয়া প্রতীত হয়, ভাহাকে রাগ বলে, ইহাতে শ্রীকৃষ্ণের সমন্ধলেশমাত্তে প্রাণ তৎসন্ধন্ধলবেহপ্যত্র প্রীতিঃ প্রাণব্যব্যৈরপি॥ ৩৫॥
যথা ॥
গুরুরপি ভুজগান্তীস্তক্ষকাৎ প্রাজ্যরাজ্যচ্যুতিরতিশয়িনীচ প্রায়চ্য্যাচ গুর্বী।
অতসুত মৃদমুচ্চৈঃ কৃষ্ণলীলাস্থান্তবিহরণসচিবত্বাদৌত্রেয়স্য রাজ্ঞঃ॥ ৩৬॥
যথা বা॥
কেশবস্য করুণালবোহপি চে-

তক্রচ সতি। যেন প্রাণবারেঃ নাশপ্র্যাইতরপি প্রাণসা ক্ষেঃ প্রীতিস্তদামু-কুলাং ক্রিয়ত ইতার্থ:। তৎসম্কাভাবেতু স্থমপি জ্ংথং স্যাদিতি বিশেষঃ তদেবং তাদৃশঃ সন্ইত্যর্থ:॥৩৫॥

ষ্পত্র তাদৃশক্রণেনোদাহরন্ সাক্ষাংকারেণ কৈম্তাং ব্যঞ্জরিতি। প্রাজ্যং প্রচ্রং। প্রায়চর্যা প্রাণাস্থমনশনব্রতং ঔররেয়সা শ্রীপরীক্ষিতঃ ॥৩৬॥

অত তংশকাভাবেত্দাহরণং জেলং ৷ অথ কুপালাভালাভাভাামুদাহরতি

নাশপর্যান্তও প্রতি প্রদান করে অর্থাৎ প্রাণনাশ করিয়াও শ্রীকুষ্ণের প্রতি সাধনে প্রবৃত্ত হয়॥ ৩৫ ॥

राधा ॥

তক্ষক নাগ হইতে ওরুতর ভয়, সদাগরা ধরার সর্বতো-ভাবে রাজ্যচ্যুতি এবং মরণপর্য্যন্ত অনশন ব্রত, ইহারা সকল কৃষ্ণলীলায়ত শ্রবণের সাহায্য বশতঃ রাজা পরীক্ষিতের তুঃখ-প্রদানা হইয়া অতিশয়রূপে আনন্দ বিস্তার করিয়াছিল॥ ৩৬॥

যথা বা ॥

আগার প্রতি যদি কেশবের করুণালেশও হয়, তাহা

ঘাড়বোহপি কিল যাড়বো মম।
অস্য যদ্যদয়তা কুশস্থা
পূর্ণদিদ্যিরপি মে কুশস্থা ॥ ৩৭ ॥
প্রায় আদ্যদয়ে প্রেমা স্লেহঃ পারিষদেষদা ।
পরীক্ষিতি ভবেদ্রাগো দারুকেচ তথোদ্ধবে।
ব্রজামুগেষনেকেয়ু রক্তকপ্রমুথেযুচ ॥ ৩৮ ॥
অস্মিলভাদিতে ভাবঃ প্রায়ঃ স্যাৎ স্বাপেশভাক ॥ ৩৯ ॥

কেশবসে।তি । ষাড়বঃ পানকবিশেষঃ । কুশস্থলী দ্বারকা ॥ ৩৭ ॥

তত্রাধিক তাশ্রিতপার্যনিষ্ ব্যবস্থানার প্রায় আদারম ইতি, প্রায়োগ্রহণং যহা স্থালাপসসার ভো ত্রানিত্যাদি বার কাবাসিবচনে রাগস্যাপি স্পর্শদর্শনাং। পরীক্ষিতীতি, নৈযাতি জঃসহা ক্র্নামিত্যাদি ত্রাক্যাং। দারুকেচ যথা অপশাতত্তে চরণাম্বরং প্রভো দৃষ্টিঃ প্রণষ্টেত্যাদি ত্রাক্যাং। উদ্ধবেচ যথা, স্কৃত্যান্ত্রের্বিয়োগকাত্র ইত্যাদেঃ সাধারণে স্বপান্ত্রের্থায় সদৃশ প্রবেত্যভিপ্রতা ত্রিশেষের্বিশেষনাহ ব্রজান্ত্রেরিতি॥ ৩৮॥

অন্মিলু। দিতে ভাব:। প্রীত্যাথোংপি প্রায়: স্যাদিতি প্রণয়াংশময়ে

হইলে আমার সম্বন্ধে বাড়বাগ্নিও পানকদ্রব্য বিশেষ হইবে, আর যদি তাঁহার অকরুণত্ব প্রকাশ পায় তবে আমার সম্বন্ধে ঐশ্ব্যপূর্ণ কুশস্থাী অর্থাৎ দ্বারকাও কুশস্থামি সদৃশী হইয়া উঠিবে॥ ৩৭॥

প্রায় অধিকৃত এবং আপ্রিত দাদে প্রেম, পারিষদসকলা সেহে, তথা পরীকিৎে, দারুকে, উদ্ধব এবং বহু বহু ব্রাদাসুগ রক্তক প্রভৃতিতে রাগ উৎপন্ন হেইয়া থাকে॥

এই রাগ উদিত হইলে প্রায় ইহাতে স্থাংশ মিজিত

নথা।
ভদ্ধান্তান্মিলিতং বাঙ্গারুদ্ধবাগুদ্ধবো হরিং।
কিঞ্চিৎ কৃষ্ণিতনেত্রান্তঃ স্বান্তেন পরিষম্বজে ॥ ৪০॥
অযোগযোগাবেত্রন্য প্রভেদে কথিতাবুতে ॥
তত্রাযোগঃ ॥
সঙ্গাভাবো হরেধীরৈরযোগ ইতি কথ্যতে।
ভ্যাযোগে তন্মনক্ষরং তদ্গুণাদাকুসদ্ধ্যঃ।

সভীভার্থ: ॥ ৩৯ ॥

আন কেষ্টিরুজারুরেষু সম্ভণতাপি প্রণয়াংশে তং মে ভ্তাঃ স্থলং সথেতি প্রসিদ্ধিমুপলকা জীমত্রবমুদাহরতি শুর্জাভাদিতি। শুর্জাভাদস্থংপ্রাং॥ ৪০ ॥ এতসা প্রীতিভক্তিরসা॥ ৪১ ॥

ভাব প্রকাশ পায় ॥ ৩৯ ॥

यश् ॥

উদ্ধব শুদ্ধান্তঃকরণপ্রযুক্ত সমাগত হরিকে অবলোকন করিয়া বাঙ্গাবারিতে কণ্ঠ অবরুদ্ধ হওয়ায় আর কথা কহিতে পারিলেন না, কিন্তু কিঞ্জিং নয়নাঞ্চল কুঞ্জিত করিয়া অন্তঃ-করণ দ্বারা ঐ হরিকে আলিঙ্গন করিলেন ॥ ৪০॥

পণ্ডিতগণ এই প্রীত ভক্তিরদে অযোগ ও নোগ এই ছুই প্রকার প্রভেদ করিয়াছেন॥

ভন্মধ্যে অযোগ যথা॥

পণ্ডিতেরা হরির সহিত সঙ্গাভাবকে অযোগ কহেন, এই

বিযোগে হরির প্রতি মন সমর্পন এবং তদ্গুণাদির অনুসন্ধান

তৎপ্রাপ্ত্যাপায় চিন্তান্যাঃ সর্বেষাং কথিতাঃ ক্রিরাঃ।
তৎকণ্ডহং বিয়োগন্চেত্যবোগোহিশ দ্বিধাচ্যতে ॥
তব্যেংকন্ঠিতং ॥
তদ্যুপ্রস্মা হরেদি দৃক্ষোৎকন্ঠিতং মতং ॥ ৪১ ॥
যথা নারসিংহপুরাণে ॥
চকার মেঘে তন্ত্রণি বহুমানরতিং নৃপঃ।
পক্ষপাতেন তন্ধান্মি মুগে পদ্মেচ তদ্দি ॥ ৪২ ॥
যথা বা শ্রীদশ্যে ॥
তপ্যাদ্য বিষ্ণোৰ্য ক্রিজ্বনী মুগে

নূপ ইক্বকু: । প্ৰপাতেনাভাস জ্ঞা ভ্লামি ত্যা নাম যত ভা**দ্দে ক্ষ্ড** মাবিংখো । ওদ্ধি ভ্যা দুক্ ভুলা ইভাৰ: ॥ ৪২ ॥

মমুজ্বং মনুজ্জাতিব্যীৰূপঃ প্ৰাপ্তৰ হত্ত্ব প্ৰকাশমানস্বেত্যৰ্থঃ॥ ৪৩॥

করা হয়। সকল দাসভক্তের ভগবংপ্রাপ্তি বিষয়ক চিন্তাদি ক্রিয়া কথিত ইইধাছে॥

উৎকণ্ঠিত ও বিয়োগ ভেদে অযোগ ছুই প্রকার হয়॥ ভন্মণ্যে উৎকণ্ঠিত যথা॥

অদৃষ্টপূর্বে হরির দর্শনেচ্ছাকেই উৎপ্তিত বলে॥ ৪১॥

गथा नात्रिनः इश्रतारण ॥

ইক্ষ্বাকুরাজা অতিশয় আস্ত্রিক বশতঃ কৃষ্ণবর্ণ মেঘে, কৃষ্ণনামশালি কৃষ্ণমার্মণে ও কৃষ্ণনয়নতুল্য পদ্মে বভ্ষান পুরঃমর রতি বিধান ক্রিয়াছিলেন॥ ৪২॥

যথাব। শ্রীদশমে ৩৮ অধ্যায়ে ৯ শ্লোকে॥ অক্রুর মহাশয় পুনরায় অন্যবিধ চিন্তা করত কহিতে ভারাবভারায় ভুবো নিজেছয়া।
লাবণ্যধান্দ্রো ভবিতোপলস্তনং
মহুং ন ন স্যাৎ ফলমপ্তসা দৃশঃ॥ ৪০॥
ভাত্রাযোগপ্রসক্তানাং সর্বেষামপি সস্তবে।
ঔৎস্থক্য-দৈন্য-নির্বেদ-চিন্তানাং চাপলস্যত।
জড়তোম্মাদমোহানামপি স্যাদতিরিক্ততা॥ ৪৪॥
তবৈত্রিংস্থক্যং যথা কর্ণামতে॥
ভাম্ন্যধন্যানি দিনান্তরাণি
ভ্রে জ্লালোকনমন্তরেণ।
ভানাথবন্ধো করুণকদিদ্ধো

সর্কেবাং ৰাভিচারিশাং সম্ভবে সতাপি অভিরিক্ততা উদ্রেক:॥ ৪৪ ॥ ন বিদ্যুতে নাথো নাথান্তরং যগ্য তথ্য বন্ধো প্রতিপাদক ॥ ৪৫ ॥

লাগিলেন, পৃথিবীর ভারাবতরণ নিমিত্ত আপন ইচ্ছায় মনুষ্য-মধ্যে প্রকাশমান ভগবান্ হরির লাবণ্যযুক্ত কলেবর দর্শন হইতে পারে, যদি সাক্ষাৎ লাভ হয় তাহাহইলে কি যথার্থতঃ আমার লোচনের ফল হইবে না ? অবশ্যই হইবে ॥ ৪০ ॥

এই প্রীত ভক্তিরদে অযোগ সম্বন্ধীয় সমুদায় ব্যভিচারির সম্ভব হইলে ঔৎস্থক্য, দৈন্য, নির্দ্রেদ, চিন্তা, চপলতা, জড়তা, উদ্মাদ ও সোহ এই সকলের আধিক্য হয়॥ ৪৪॥

তন্মধ্যে উৎস্ক্র যথা কর্ণামূতে॥

হা কফ হা কফ ! হে হরে ! হে অনাথবন্ধো ! হে করুণা-দিক্ষো ! আপনার দর্শন ব্যতিরেকে এই অধন্য দিন সকল হা হস্ত হা হস্ত কথং নয়ামি॥ ৪৫॥
যথাবা॥
বিলোচনয়ধাসুধিস্তব পদারবিশ্দদ্দী
বিলোচনয়সচ্ছটামমুপলভ্য বিক্ষুভ্যতঃ।
মনো মম মনাগপি কচিদনাপুবন্ধির তিং
ক্রণার্জমপি মন্যতে ব্রহ্মহেন্দ্রবর্তাং
দন্যং যথা ততৈব ॥
নিবদ্ধমুদ্ধাঞ্জলিরেষ যাচে
নীরস্ধদৈন্যোমতিমুক্তকণ্ঠং।
দয়াসুধে দেব ভ্বংকটাক্য-

বিলোচনেতি মধুরাত: শ্রীমহ্দ্রবস্য :গুপুপত্রিকা। বিক্ষৃত্ত ইত্যক্ত বিক্ষোভভূদিতি পাঠান্তরং ॥ ৪৬॥

কিরূপে যাপন করিব॥ ৪৫॥

यथा या।

賃,

মধুরানগরী হইতে উদ্ধব পত্র লিখিলেন, হে ব্রজমহেন্দ্র ।
আপনি লোচনের অমৃত্সমুদ্র, আপনার চরণারবিন্দ্রয়ের
দর্শনিচ্ছটা প্রাপ্ত না হইয়া, ক্ষোভ্যুক্ত আমার মন কোনস্থানে
কিঞ্জিৎ স্থ্য প্রাপ্ত হইতেছে না, অধিকস্ত ক্ষণার্দ্ধকালকেও
বহু বহু বংসর ক্রিয়া মানিতেছে ॥

দৈন্য যথা কণামতে॥

হে দেব! আপনি কুপাদাগর, আমি মন্তকে অঞ্জলিবন্ধনপূর্বক অভিশয় দৈন্যদহকারে মুক্তকণ্ঠে প্রার্থনা করি-

দাক্ষিণ্যলেশেন সক্ষিষিক ॥ ৪৬ ॥
যথাবা ॥
অসি শশিমুকুটালৈয়রপালভ্যেক্ষণস্ত্বং
লঘুরঘহর কীটাদপ্যহং কূটকর্মা ।
ইতি বিদদৃশ্তাপি প্রার্থনে প্রার্থয়ামি
স্পন্ন ক্ষপণবন্ধো মামপাঙ্গছেটাভিঃ ॥ ৪৭ ॥
নির্বেদো যথা ॥
স্কুটং শ্রেতবতোরপি শ্রুতিনিষেব্য়া শ্লাঘ্তোং

কৃটকৰ্মাহং কীটাদপি লঘুৱিতি প্ৰাণনে বিষদৃশতাপি প্ৰাৰ্থগ্ৰামণী গ্ৰয়:। প্ৰাৰ্থয়েংপীতি বা পাঠ:। যদাপাযোগাশ তথাপি প্ৰাৰ্থগ্ৰহণ এই ॥ ৪৭ ॥ ক্ষুটমিতিচ পূৰ্ববিদেবোদ্ধবদা সন্দেশ:। পদাযুজ্দা নথক্ৰণ: অফুরোংগ্রা

তেছি আপনি স্বায় অনুগ্রহসূচক কটাক্ষলেশবারা এক বার আমাকে সেচন করুন ও ৪৬॥

#### गशाता ॥

হে অঘনাশন! শশিশেশর শক্ষরপ্রভৃতিও আপনার দর্শন প্রাপ্ত হইতে পারেন না, আমি কীট অপেকাও মন্দকর্মা, স্তরাং প্রার্থনা বিষয়ে অযোগ্য হইলেও প্রার্থনা করিতেছি, হে দীনবন্ধো! আপনি স্বীয় নেত্রকোণের ছটাদ্বারা আমাকে স্নান করান্ অর্থাৎ আমার প্রতি ঈষৎ করুণাদৃষ্টি নিক্ষেপ করুন॥

# निर्द्यप यथा॥

্ উদ্ধব ঐকৃষ্ণকে বলিয়া পাঠাইলেন, কৃষ্ণ ! বহুতর শ্রুতি

মমাভবনিরেতয়োর্ভবতু নেত্রয়োর্ম ন্দরোঃ।
ভবেশ্বরি যথোঃ পদং মধুরিম প্রিরামাস্পাদং
পদালুজনপাঙ্করাদপি বিদারি রোচিন্তব ॥ ৪৮ ॥
চিন্তা যথা ॥
হরিপদক্ষলাবলোকতৃক্যা
ভরলমভেরপি যোগ্যভাষ্যবীক্ষ্য।
ভবনতবদন্য চিন্তয়া মে

ভাগ:। শ্রতিনিষেবয়েতি দীর্ঘরে সীতার্থ:। বহুতরশোতগ্রহদর্শিনোরিতি বা। অভবনি: নাশ: ॥ ৪৮॥

হরিপদেতি ক্যাচিত্তক্র নির্জনবিলাপ:। হরি হরি থেদে। মে মম যোগাও ভামবীক্যা সোহ্যমণোগো। ছ:থিতো ভবতু নামেতীব বিভাব্য নিশাঃ প্রযাস্থীত তার্থ:। কীদৃশস্যাপি মম হরিপদেতা দিলক্ষণস্য। অতএব চিন্তমাবনতবদন-

গ্রন্থ দর্শন করিষা আমার নয়নরয় অভিশয় প্রতিষ্ঠা লাভ করিলেও ইহাদিগকে মন্দ বলিতে হয়, যেহেতু ইহারা ভোমার পাদপদ্মের নথাঙ্কুর হইতে প্রদরণ শীল মাধুর্য সম্পদের আম্পদস্রপ কান্তি সন্দর্শন করিতে পারিল না অতএব ইহাদের বিনাশ হওরাই ভাল ॥ ৪৮॥

চিন্তা যথা॥

কোন ভক্ত নির্জনে বিলাপ করিতে করিতে কহিলেন, হরি হরি! চঞ্চলমতি আমার হরিপদক্ষল অবলোকন অযো-গ্যতা দেখিয়া অবনতবদন যে আমি আমার সহস্কে দীর্ঘ-নিশ্বাস পরিত্যাগ করিতে করিতে এই সকল নিশা অতি- হরি হরি নিশ্বসতো নিশাঃ প্রয়ান্তি॥ ৪৯॥
চাপলং যথা কর্ণামৃতে॥
ছচৈছশবং ত্রিভ্বনান্ত্তমিত্যবেহি
মচাপলঞ্চ তব বা মম বাধিগমাং।
তৎ কিং করোমি বিরলং মুরলীবিলাসি
মুগ্রং মুথাসুজমুদীক্ষিত্মীক্ষণাভ্যাং॥ ৫০॥
যথাবা॥
ভ্রিম্মহর মুক্ত্রা দৃক্পতঙ্গী মমার্দো
ভরমপি দম্যিত্বা ভক্তর্কনাত্রার্তা।

সোতি বন্ধী চেয়মনাদরে ॥ ৪৯ ॥

বির্বাং কচিং ভাগাবদ্ভিরেব উপলভাং ॥ ৫০ ॥

দৃক্পভঙ্গীতি লুপ্তোপমা কঙ্ভর্থকিবদ্বাং পুনঃ কর্ত্তরি ক্ববিহিতঃ কিবিহা-

বাহিত হইতেছে॥ ৪৯ ॥

চাপল যথা॥ কর্ণায়তে॥

হে কৃষ্ণ ! তোমার শৈশবচাপল্য ত্রিভুবনমধ্যে অতি-শর অন্তত, তাহা তুমিই অবগত আছ এবং আমার চপলতা আমি জানি এবং তুমিও জান, নির্জনে লোচনদ্য দ্বারা স্থামীয় মুথপদ্য দর্শন করিবার নিমিত্ত কি করিব॥ ৫ • ॥

যথাবা॥

হে অবহর ! হে ঈশ ! আমার নয়নভ্রমরী লজ্জা বিদর্জন-পুর্বাক ভক্তর্নের অভয়দানে ভয়কে দমন এবং নিরম্ভর নিরবধিমবিচার্য্য স্বদ্যাচ ক্রোদিমানং তব চরণদরোজং লেচুমস্বিচ্ছতীশ। ৫১॥ জড়তা যথা দপ্তমস্কল্ফ। ন্যস্তক্রীড়নকো বালো জড়বত্তমানস্তয়া।

পমাবাচকদা প্রসা কিপো লোপাং। রূপকন্ত নাত্রেষাতে তংপুক্রদান্তরপদ-প্রধানত্বং প্রধানভ্তায়া পতঙ্গা ত্রীন সন্তবতি গুণীভূতায়াং দৃশি বোজনিতৃং ন শকাত ইতাভবন্মত্যোগাধাদোবং সাং। ততঙ্চ দৃক্ কর্মী ত্রিয়ং মুজ্বা ভর-মপি দময়িত্বা অসাচ কোদিমানমবিচার্যা পতঙ্গীবাচরন্তী সতী তব চরণসরোজং লেচ্মবিচ্ছতীতি যোগাং। দৃক্ তপস্বিনাসৌ মে ইতি বা পাঠং। অহিচ্ছতীতি ইবু গদি যমাং ছ ইতি বিধানাং॥ ৫১॥

নাত্তেতি। তন্মনন্তয়া কৃষ্ণমন্ত্রা নাত্তকীড়নক: তদনস্তরং তরৈবজ্জুবৎ-তত্ত্বা: তৎপশ্চাৎ কৃষ্ণগ্রহগৃহীতাত্মা গ্রহেণৈর কৃষ্ণেনাবিষ্ট: সন্ জগদীদৃশং ন বেদ ন দদর্শ যথা লোকা: পশান্তি তথা ন কিন্তু তৎক্তিকরত্বেনৈর দদর্শ

আপনার লঘুতা বিচার না করিয়া অতিশয় তৃষ্ণাকুল চিত্তে তোমার চরণকমল আমাদন করিতে ইচ্ছা করিতেছে॥ ৫১॥ জড়তা যথা॥

সপ্তমক্ষমে ৪ অধ্যায়ে ২৭ প্লোকে॥

নারদ কহিলেন, হে যুখিন্ঠির ! প্রহ্লাদের ভগবদ্বিয়া রতি যাভাবিকী ছিল, তাহার নিদর্শন এই যে, তিনি বালককালেই জীড়া পরিত্যাগ পূর্বক ভগবানের প্রতি একচিত্ত হইয়া জড় হইয়াছিলেন, আর ভগবান্ শ্রীক্ষের অনুধ্যানেই তাঁহার আত্মা আগ্রহান্বিত ছিল, অত্প্র জগৎ কীদৃশ, তিনি ভাগা

কৃষ্ণগ্রহগৃহীতাত্ম। ন বেদ জগদীদৃশং ॥ ৫২ ॥
যথাবা ॥
নিমেযোমুক্তাক্ষঃ কথমিছ পরিস্পান্দবিধুরাং
তন্মং বিভ্রত্তব্যঃ প্রতিকৃতিরিবাক্তৈ দিজপতিঃ ।
অয়ে জ্ঞাতং বংশীরমিক নবরাগব্যসনিনা
পুরং শ্যামান্ডোদে বত বিনিহিতা দৃষ্টিরমুনা ॥
উন্মাদো যথা তত্তিব ॥
নদতি ক্চিতুংকতো বিলভ্জো নৃত্যতি ক্চিৎ।

चिकार्यः ॥ ८२ ॥

ভবা: সর্বাত্র যোগা: ভবাং সত্যে শুভে চাথ ভেদাবদ্যোগ্যভাবিনোরিভি বিশ্বপ্রকাশাং ॥ ৫০০

किছूरै जानिएक गा॥ ४२॥

যথাবা ॥

সর্বকার্যানিপুণ এই আক্ষাণ কেন আজ অনিমিষলোচনে স্পান্দনরহিত কলেবর ধারণ করত প্রতিমার ন্যায় স্তরভাবে অবস্থিত আছেন, তবে বােধ হয় ইনি বংশীরদিকের নবামুনরাগে বিপদান্তিত হইয়া অগ্রবর্তি শ্যামমেঘে দৃষ্টিনিক্ষেপ করিয়া রহিয়াছেন।

উন্মাদ যথা॥

সপ্তমস্কন্ধে ৪ অধ্যায়ে ৩০ শ্লোকে॥

ঐ প্রহলাদ কথন উদ্ধিকণ্ঠ হইয়া শব্দ করিতেন, কথন দ্বিল্লভিন্ন হইয়া নৃত্য করিতেন, কথন বা ভগবদ্রাবনায় অভিনি- কচিত্ত বিনাযুক্ত ক্ময়োহ সুচকার হ ॥ ৫০॥
যথাবা ॥
কচিন্নটতি নিষ্পটং কচিদসম্ভবং শুভতে
কচিন্নিহদতি ক্যুটং কচিদসন্দ্যাক্রন্দতি ।
লসত্যনলসং কচিৎ কচিদপার্থ গার্ভায়তে
হরেরভিনবোদ্ধুরপ্রপ্রসীধুমত্যে মুনিঃ ॥ ৫৪॥
মোহো যথা হরিভক্তি স্থধোদয়ে ॥
অযোগ্যমান্থানমিতী শদর্শনে
সমন্যানস্থদনাপ্রিকাতরঃ ।

লসতি জ্বীজৃতি। অপার্থ: দৃষ্টার্ডিসামগ্রী: বিনেতার্থ:। মুনির্নারদ: ॥ ৫৪ ॥ স্ত্রীপ্রহলাদ: ॥ ৫৫ ॥

বিষ্ট হওয়াতে তনায় হইয়া তদীয় চেষ্টা অর্থাৎ ভগবল্লালার অমুকরণ করিতেন ॥ ৫০॥

### যথাবা ॥

দেবর্ষি নারদ ভগবান্ হরির অভিশন্ধ প্রণয়স্থায় মত্ত হইয়া কখন বিবদনে নৃত্য, কখন অদন্তব শুস্ত অবলম্বন, কখন স্পান্টরূপে উচ্চ হাস্য, কখন জন্দন, কখন অনলস ভাব প্রকাশ এবং কখন বা পীড়া অভাবেও পীড়িতের আচরণ করিতেছেন। ৫৪॥

# মোহ যথা।। হরিভক্তি স্থোদ্যে।।

হে বিজ ! প্রহলাদ ভগবৎ সন্দর্শনে আপনাকে আযোগ্য বিবেচনা করিয়া তাঁহার অপ্রাপ্তি নিমিত ক্লাতর ও বিপুল উদ্বেশ্য থাৰ্থ বিষয় বানদঃ
ক্ৰেন্তা ক্ৰেন্তা বিশ্ব মৃচ্ছিতে। ২পত । ৫৫ ।
বথাৰা ॥
হিন্তি নুগৰিলোকাল ক্ৰিন্তা পাৰণী ভিৰ্বন্ত বিধৃত চিদন্ত দ্যুত্ত নন্তী প্ৰিৰ্য্য ।
ক্ৰেন্তি পুটপনিবাহেনেশনামায় ভানি
ক্ৰিপ্ত নমু দতী পাশ্চেইতাং প্ৰাণহংদঃ ॥
অথ বিয়োগঃ ॥
বিয়োগো লক্ষ্য কেন্ত্ৰ বিচেছদো দমুক্ষ বিষা ॥ ৫৬ ।

চিং চৈতনাং। তীর্থমত্র শুরু:। পকে ঋযিজুইজলং॥ ৫৬।

তুঃধসাপরে চিত্ত নিম্ম করত অঞ্চধারা বিদর্জন করিতে করিতে ভূমিতলে মূর্জিত হইয়া পতিত হইতেন॥ ৫৫॥ যথাবা॥

আহে সভীর্থাগণ! অর্থাৎ আমরা সকলে এক শুরুর শিষ্য,
আমাদের গুরুদেব হরিচরণারবিন্দ সন্দর্শন করিয়া তাপরাশিতে পতিত হইয়াছেন, এ কারণ ইইার চৈতন্যজল শুজ
হইয়া গিয়াছে, অতএব এক্ষণে কর্ণবিবরভারা হরিনামামৃত
নিক্ষেপ কর, ভাহা হইলে ইহাঁর প্রাণহংস চেফান্থিত হইবে॥
অথ বিয়োগ ॥

হরির সহিত সঙ্গণাভ করিয়া পুনরায় তাঁহার বিচেহদ ষ্টিলে ভাহাকে বিযোগ বলে ॥ ৫৬ ॥ যথা॥
বিলিহ্নত-ভূক্তবণ্ড-খণ্ডনায়
ক্ষতকপুরং পুরুষোন্তমে প্রথাতে।
বিধ্ববিধুরবুদ্ধিরুদ্ধবোহ্যং
বিরহনিরুদ্ধনা নিরুদ্ধবোহ্ছং॥
অঙ্গেছ তাপরুশতা জাগর্যালম্পুন্তা।
অধ্তির্জ্ভতা ব্যাধিরুদ্মাদো মৃচ্ছিতং মৃতিঃ।
বিয়োগে সংভ্রমপ্রীতের্দশাবদ্ধাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ।
অনবস্থিতিরাখ্যাতা চিত্তস্যালম্প্নতা।
অরাগিতাভূ সর্বস্মিরপ্রতিঃ ক্থিতা বুধৈঃ।

ক্ষতজ্বপুরং শোণিতপুরং বিধৃতা কম্পিতা বতো বিধুরা ছ:খিতাচ বা ভাদৃশী বৃদ্ধিগদা স বিধৃর:। বিধুতেতি বা পাঠ:। বিধুরং তু প্রবিশ্লেষ ইতামর:॥ ৫৭ ॥

শ্রীকৃষ্ণ বলিনন্দন বাণের বাত্দকল ছেদন করিবার নিষিও শোণিতপুরে গমন করিলে, বিরহকাতর উদ্ধব হতবৃদ্ধি ও নিরানন্দ হইয়াছিলেন ॥

বিয়োগ অবস্থায় সন্ত্রম প্রীতির দশটা অবস্থা হয়। ধধা— অঙ্গসকলে তাপ, কুশন্তা, জাগরণ, আলম্বশূন্যতা, অধৃতি, জড়তা, ব্যাধি, উন্মাদ, মূচ্ছা ও মৃতি ॥

চিত্রের অনবস্থিতির নাম আলম্বশ্ন্যতা এবং সকল বিবরে অনুরাগশ্ন্যের নাম অধৃতি, পণ্ডিতগণ এইরূপ উল্লেখ করি-যাছেন, অন্য আট্টীর অর্থ স্পান্ত বলিয়া পৃথক্ রূপে সক্ষণ অন্যেহকৌ প্রকটার্থন্বান্তাপাদ্যা নহি লক্ষ্ডা: ॥ ৫৭ ॥ তত্র তাপো যথা ॥ অস্মান্ হনোতু কমলং তপনদ্য মিক্তং রত্নাকরশ্চ বড়বানলগৃত্যুর্তি: । ইন্দীবরং বিধুস্ক্তং কথমীখরং বা তং স্মারয়মুনিপতে দহতীহ সভ্যান্ ॥ ৫৮ ॥ কুশতা যথা ॥

অন্ধারিতাদিকং নারনং প্রাক্তাদ্ধববাকং। বাড়বানলেন গৃঢ়াচ্ছাদিভা মূর্ত্তি স্তন্মধ্যভাগো যদ্য সং। অত্র তাপার্থং তপনমিত্রতাদিষয়দ্য হেতেরিভাদত্বং ব্যক্তা বিধুস্থক্তর্মাত্ বিক্লবং ব্যক্তা বিয়োগদৈয়ব হুরস্ততেরং যৎকমলাদিকমপি তাপকত্বেন সম্পাদরতীতি ব্যঞ্জিতং। তং আরর্মদহতি পারিবদামুনীজেতি বাপাঠে আরর্মিভাত্র লিক্ষবিপরিণামং কর্ত্তবং। তং আর্র্ম্মুনিপতে দহতীহ সভ্যানিতি পাঠেত সন্ধিবিশ্লেষ্ণ সর্ক্ত্রাপার্যঃ ॥ ৫৮ ॥

# करतन नारे॥ ৫१॥

### ত্রাধ্যে তাপ যথা ॥

নারদের প্রতি উদ্ধব কহিলেন, হে যুনিবর! সূহ্যবন্ধু পদ্ম, আমরা যে সভ্যগণ, আমাদিগকে তুঃথ প্রদান করে করুক, বাড়বানলে আচ্ছাদিতমূর্ত্তি জলনিধি আমাদিগকে দগ্ধ করেন করুন এবং চন্দ্রন্থতাদ্ ইন্দীবর আমাদিগকে সন্তপ্ত করে করুক, কিন্তু কি জন্য ইহারা সেই ঈশ্বর প্রীকৃষ্ণকৈ স্মরণ করাইয়া আমাদিগকে ক্রিফ করিতেছে॥ ৫৮॥

কুশতা যথা ৷

দধিত তব তথাদ্য সেবকানীং
ভুজপরিঘাঃ কুশতাঞ্চ পাশু ভাঞা।
পততি বত যথা মুণালবৃদ্ধ্যা
ফা টুমিহ পাশুবমিত্র পাশু পক্ষঃ ॥ ৫৯॥
জাগর্যা যথা॥
বিরহান্মরবিদ্বিষশ্চিরং, বিধুরাক্ষে পরিধিশ্লচেত্রসি।
ফণদাঃ ফণদায়িতোজ্বিতা, বহুলাখে বহুলাশুদাভবন্ ॥৬০
আলখণুন্যুতা যথা॥

সেবকানাং কেষাঞ্চিদাবশ্যককার্যার্থং দারকাস্থিতালামিতার্থঃ। 'ফুটমিত্যুৎ
প্রেক্ষায়াং। সাচাত্রোদান্তনামালকারং বাঞ্জয়তীতি বিরহাতিশনং বঞ্জয়তি।
পাতৃপক্ষো হংসঃ॥ ৫৯ ॥

ক্ষণদা রাত্রান্তত্বলক্ষণভাদিনানাপি। যথা, ক্ষণদায়িত্পদার্ধা:। উৎসব্দাত্রোহপীতি তু শ্লেষ: ক্ষণদায়িতয়া উৎসবদায়িতেনোজ্ঝিতা বভূবু:॥ ৬০ ॥

হে পাণ্ডবমিত্র কৃষণ! ইহু লোকে ষেমন মুণালবুদ্ধিতে হংস পতিত হয়, তাহার ন্যায় আজ আমরা যে তোমার সেবক আমাদের ভুজলগুড় সকল কুপতা এবং পাণ্ডুতা ধারণ করিল। ৫৯॥

# জাগর্য্য যথা া

শীক্ষের চিরবিরহে অবসন দেহ, ক্ষীণচিত্ত, রাজা বছলা-খের হংগপ্রদা যামিনী সকল হুঃখপ্রদা হইরা বহুতরা হুইরা-ছিল॥ ৬০॥

অথ আলম্খূন্তা ়া

বিজয়রপ কুট্রিনা বিনান্যম কিল কুট্রিমিহান্তি নস্ত্রিলোক্যাং।
ভ্রমদিদমনবেক্ষ্য যৎপদাজ্ঞং
কচিদপি ন ব্যক্তিষ্ঠতেহদ্য চেতঃ॥ ৬১॥
অধাধৃতির্যধা।
প্রেক্ষ্য পিঞ্কুলমকি পিধতে
নৈচিকীনিচয়মুজ্ঝতি দূরে।
বৃষ্টিমপি নাদ্য মুরারে

বিজ্বরথেতি সমর্বিশেবে ঐীফুবিটিরবাকাং। বিজ্ঞাহর্জুন: রথকুট্থী সার্থি: ॥ ৬১ ॥

প্রেক্ডার্সারেণ পূর্ক্মরাগিডেতি লক্ষণেন নঞ্ বিরোধ এব জের:।

ষ্থিতির কহিলেন, অৰ্জ্ন্নারথি প্রাক্ত ব্যতিরেকে এই ত্রিভ্বনে আমার জন্য কোন কুটুম্ব নাই, যেহেতু জাজ তদীয় চরণারবিন্দ জ্বলোকন করিতে না পাইয়া আমার মন ভ্রান্ত হইয়াছে, কোনম্বানে স্থিরভাবে অবস্থিতি করিতে পারিতেছি না॥ ৬১॥

# অথ অপ্নতি যথা ॥

হে মুরারে! তোমার বিরহে ছদীর চরণামুরক রক্তক-নামা ভৃত্য, ময়্রপুচ্ছ অবলোকন করিয়া চক্ষু মুদ্রিত করিতে-ছেন, উত্তম গো-সকলের প্রতি আর দৃষ্টি নাই, তাহাদিগকে ুদুরে পরিত্যাগ করিতেছেন, অধিক কি বলিব যক্তি পর্যান্তও

# পশ্চিম। ২ লহরী। ভক্তিরশায়ত্রিকু:।

রক্তক তব পদাযুলরুক: ॥ ৬২ ॥

জড়তা যথা ॥

যৌধিতিরং পুরমুপেয়ুষি পদ্মনাভে
থেদানলব্যতিকরৈরতিবিক্রবস্য ।

স্বেদাশুভিনহি পরং জলতামবাপুরঙ্গানি নিজ্ঞয়ত্যাচ কিলোদ্ধবস্য ॥ ৬৩ ॥

ব্যাধির্যথা ॥

চিরম্নতি মণিময়েকটুং চলিতে

মুরভিদি কুশস্থলীপুরতঃ ।

রাগপ্রাতিক্লামিতার্ব: ॥ ৬২ ॥ জল হাং জবদং। পক্ষে জাড়াং ॥ ৬০ ॥ প্রন্যাধিকদ্ব: । বাল্যাদের ভগবংপ্রেমান্তব্যের ভগ্য ভধা লোকভানা-

# वार्ग कतिए हेव्हा कतिए एहन ना ॥ ५२॥

**জ**ড়তা যথা ॥

পদ্মনাভ জ্রীরুষ্ণ যুধিন্তিরের রাজধানীতে গমন করিলে থেদাগ্লিরারা অতিশয় কাতর উদ্ধবের ঘর্মবারি ও অঞ্চধারা দারা অঙ্গদকল দ্রবীভূত ও নিজ্ঞির হইয়াছিল ॥ ৬০॥

# वािश वर्षा॥

ঘারকানগরী হইতে প্রীকৃষ্ণ দ্যুমস্তক্ষণি অবেষণ করিছে গ্রুমন করিয়াছিলেন, ভাহাতে তাঁহার অধিক কাল বিলম্ব হওয়ার উদ্ধব কৃষ্ণবিরহে ন্তন আর একটা ব্যাধিগ্রস্ত হইলেন,
ভিনি যে বাল্যাবধি কৃষ্ণপ্রেমোল্যন্ত থাকায় লোকন্দালৈ

সমজনি প্রতনবব্যাধিঃ
প্রবনব্যাধির্যথাথাখ্যঃ ॥
উন্মাদের যথা ॥
প্রোষিত্তে বত নিজাধিদৈবতে
বৈরতে নবমবেক্ষা নীরদং ।

পশ্য নৌতি রমতে নমস্যতি ॥ ৬৪ ॥
মৃচ্ছিতং যথা ॥
সমজনি দশা বিশ্লেষাতে পদাসুজ্ঞসেবিনাং
ব্রজ্জুবি তথা নাসীন্মিদ্রালবোহপি যথা পুরা।

#### ত্তপা থ্যাতে: ॥ ৬৭ ॥

ভধা দশা সমজনি যথা পুরা প্রথমং নিজালবোহপি নাদীং। অধুনাতৃ বায়ুরোগগ্রস্ত বলিয়া বিখ্যাত ছিলেন কিন্তু দেই দিন ঐ নাম-টী দার্থক হইয়াছিল ॥

### উন্মাদ যথা ॥

স্থীয় অধিদেব ঞীকৃক বিদেশ গমন করিলে ভ্রান্ত বুদ্ধি উদ্ধব বৈরবত্তক পর্বতে নবমেঘ নিরীক্ষণ করিয়। চঞ্চলচিত্তে স্তব, স্থানন্দ প্রকাশ এবং নমস্কার করিতে লাগিলেন॥ ৬৪॥

# মূচিছ ত যথা।

হে যত্বর! বুলাবন ভূমিতে তোমার পাদপ্রমেরি দাসপরের যেমন পূর্বে নিদ্রালেশ উপস্থিত হয় নাই, তদ্ধেপ এথন ইয়ং নিশ্বাসবারা জীবন আছে কি না এইরূপে বিত- যতুবর দরশ্বাদেনামী বিতর্কিতজীবিতাঃ
সতত্তমধুনা নিশ্চেন্টাপ্লাস্ডটান্যধিশেরতে ॥ ৬৫॥
মৃতির্যথা ॥
দমুজদমন যাতে জীবনে ছ্য্যকস্থাৎ
প্রচুরবিরহতাপৈধ্ব স্তহ্হৎপঙ্কজায়াং ।
ব্রজমভিপরিতত্তে দাসকাসারপঙ্ক্তো
ন কিল বসতিমার্তাঃ কর্ত্তুমিচ্ছন্তি হংসাঃ ॥ ৬৬ ॥
স্থানিত্বাল ঘটতে ভক্তে কুত্রাপ্যসৌ মৃতিঃ ।

সততং নিশ্চেষ্টাঙ্গা: সম্ভটোনাধিশেরত ইতি যোজাং ॥ ৬৫ ॥ কাসার: সর:। পকে। হংসা: প্রাণা: ॥ ৬৬ ॥

ন কুত্রাপীতি কু মচিদেব ভক্তে সিদ্ধলকণ এবেতার্থঃ। তার মৃতির্ন ঘটত, ইতার হেতুঃ অশিবস্থাদিতি তারামকলমারং হি ন সন্তর্তীতার্থঃ। সাধকভক্তে মৃতিরপি বর্ণিতা। প্রাণান্ জহতি মথুরায়াং স্কৃতিন ইতি ততক সিদ্ধতক্তে

র্কিত হইয়া যমুনাতীরে নিশ্চেফাঙ্গে পতিভ হ**ইয়া রহি**-য়াছে॥৬৫॥

# মুতি যথা n

হে অহারনাশন কৃষ্ণ। জীবনম্বরূপ তুমি গমন করায় ব্রজ-ভূমির চতুর্দিক্স তোমার দাসরূপ-সরোকর-ত্রোণীর অকস্মাৎ প্রবল-বিরহানলদারা হৃৎপদ্ম শুক্ষ হইয়া গিয়াছে, প্রাণহংস-সকল আর্ত্ত হইয়া আরু তাহাতে বাস করিতে ইচ্ছা করি-তেছে না॥ ৬৬॥

অনস্বপ্রযুক্ত কখনও ভক্তজনে মৃত্যু সম্ভব হয় না, বিয়ো

ক্ষোভকত্ব। বিয়োগদ্য জাতপ্রায়েতি কথ্যতে ॥
অথ যোগঃ ॥
ক্ষেন দঙ্গমো যস্ত দ যোগ ইতি কীর্ত্ত্যতে ।
যোগোহপি কথিতঃ দিদ্ধিস্তৃত্তিঃ স্থিতিরিতি ত্রিধা ॥
তত্র দিদ্ধিঃ ॥
উৎপ্রতি হরেঃ প্রাপ্তিঃ দিদ্ধিরিত্যভিধীয়তে ॥ ৬৭ ॥
যথ। কর্ণামৃতে ॥
মৌলিশ্চন্দ্রকভূষণো মরকতস্তম্ভাভিরামং বপু-

বিয়েশগদ্য কোভকত্বং কোভকত্বমূদিশ্যৈব জাতপ্রায়া মৃতিরিতি কথ্যত ইতার্থ:॥৬৭॥

यमा त्योलामित्र क्रेम्भाः म এव देकाधाहात्वनाचत्रः । वात्ल त्कायतः । देभभ-

বিয়োগের ক্ষোভকারিত্ব হেতু ঐ মৃত্যু জাতপ্রায় বলিয়া কথিত হয় ॥

### অথ যোগ।

শ্রীকুফের সহিত মিলনকে যোগ বলা যায়। ঐ যোগ, সিন্ধি, তুর্ম্বি ও স্থিতি ভেদে তিন প্রকার হয়॥

### ত্তমধ্যে দিদ্ধি ষথা॥

উৎকণ্ঠিত অবস্থায় হরির যে প্রাপ্তি তাহাকে দিদ্ধি বলা যায়॥ ৬৭॥

# যথা কণামতে ॥

কি আশ্চর্য্য মন্তকে ময়্রপুচ্ছের চূড়া, মরকত স্তম্ভ বিনি-শ্দি বপুঃ, আশ্চর্য্য মনোহর হাস্যে মুখকমল স্থানর, নয়নদ্ম র্বক্তং চিত্রবিমুশ্ধহাদমধুরং বালে বিলোলে দৃশো।
বাচঃ শৈশবশীতলা মদগজল্লাঘ্যা বিলাদস্থিতির্মন্দং মন্দময়ে ক এষ মথুরাবীথীং মিথো গাহতে ॥
যথা বা শ্রীদশমে ॥
রথাত্র্বিবপ্লুত্য সোহক্রুরঃ প্রেমবিহ্বলঃ।
পপাত চরণোপাস্তে দণ্ডবদ্রামকৃষ্ণযোঃ॥
ভূষ্টিঃ॥
জাতে বিয়োগে কংদারেঃ দংপ্রাপ্তিস্তৃষ্টিরুচ্যতে ॥ ৬৮॥
যথা প্রথমসংস্কে॥

বেন ভদংশেন শীতলান্তাপহরে ভার্থ:। মথুরায়া বীথীং নিকটভূমিং বুন্দাবন-মিতি যাবং। মিথোহন্যোন্যং রহ্সাপীভামর:॥ ৬৮॥

চকল ও স্থকোমল, শৈশবপ্রযুক্ত বাক্য অতি মধুর এবং মক্ত গজেন্দ্র হইতেও শ্লাঘ্য ক্রীড়াশালী হইয়া ধীরে ধীরে রহস্য করিতে করিতে রক্ষাবনের পথে গমন করিতেছেন ইনি কে ॥

यथा वा श्रीनगरम ०৮ व्यक्षारा ७১ (श्लारक ॥

হে মহারাজ ! রামকৃষ্ণকে দেখিবামাত্র অক্তুর সত্মর রথ হইতে অবতীর্ণ হইয়া স্লেহবিহ্বলচিত্তে তাঁহাদের চরণোপাস্তে দণ্ডবং পতিত হইলেন ॥

ু তুষ্টি যথা॥

বিচ্ছেদের পর ঐক্ষের প্রাপ্তির নাম তৃষ্টি ॥ ৬৮ ॥
যথা প্রথমক্ষে ১১ অধ্যায়ে ৯ স্লোকে ॥

কথং বয়ং নাথ চিরোমিতে ত্বয়ি প্রানমন্ট্যাথিলতাপশোষণং। জীবাম তে স্থন্দরহাসশোভিত-মপশ্যমানা বদনং মনোহরং॥ ৬৯॥ যথা বা॥ সমক্ষমক্ষমঃ প্রেক্ষ্য হরিমঞ্জলিবন্ধনে।

কথং বয়মিতি প্রথমস্য যহাঁসুজাক্ষেত্রনস্তরং পদ্যং কাচিংকমেব ॥ ৬৯ ॥
ত্রোপলক্ষণত্বন কাঞ্চিং স্থিতিমাহ পুরস্তাদিতি । শুরোর্ইস্পতেঃ শিষ্যঃ
শীমত্বর:। অব শীম্বুজনেবকানামপি তন্মহাবিরহানস্তরং নিত্যা স্থিতিব ক্ষ্যান্দ্র মাণস্য প্রেয়সের বংসলস্য চাস্তিমতীকান্দ্রমারেণ জ্রো। তেষাং দিগ্দর্শনস্ত গণোদ্দেশদীপিকাদ্ট্রা ক্রিয়তে । অঙ্গাভাঙ্গকরং স্থবন্ধমুপরি স্নানপ্রদং বারিদং বস্ত্রপ্রাপণশর্মধামবকুলং গন্ধার্পাং পুস্কং। মিইড্রাসমর্পকং মধুকরং ভাষ্-

দারকাবাদী প্রজাগণ কহিলেন, হে নাথ! তুমি যদি চির-কাল প্রবাদে থাক, তাহা হইলে তোমার এই মনোহর বদন যাহাকে প্রদান করিলে দমস্ত সন্তাপ নিবারিত হয় এবং যাহা স্থাদরহাদ্য দারা দার্শনাই শোভা পায়, আমরা ইহা দেখিতে পাইব না। ইহা না দেখিলে কি আমাদের জীবন ধারণ হইতে পারে ? ॥ ৬৯॥

যথা বা ॥

দাক্ষক প্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিয়া সাক্ষাতে অঞ্চলিবন্ধন করিতে অক্ষম হওত দ্বারকার দ্বারে অবস্থিতিপূর্ব্বক বিচিত্র দারুকো দারকাদারি তত্ত্র চিত্রদশং ধর্মে।
দিহতিঃ॥
সহবাদো মুকুদেন স্থিতির্নিগদিতা বুদৈঃ॥
যথা হংসদৃতে॥
পুরস্তাদাভীরীগণভয়দনামা স কঠিনো
মণিস্তম্ভালম্বা কুরু কুলকথাং সংকথয়িতা।
স জানুভ্যামফাপদভ্বমবফভ্য ভবিতা
গুরোঃ শিষ্যো নূনং পদকমলদ্বাহনরতঃ॥
নিজাব্দরশ্ভানিবেশাদ্যা যোগেহ্মীষাং ক্রিয়া মতাঃ

লিশং জন্ত্ৰং, নিত্যং গোষ্ঠিস্থাংশু কাস্তিস্থায়া পুটং দিদৃক্ষামহে ॥ ৭০ ॥ দশা প্ৰাপ্ত হইয়াছিলেন ॥

### স্থিতি॥

জ্রীক্ষের সহিত একত্র বাস করাকে পণ্ডিতগণ ছিতি করিয়া থাকেন॥

# যথা হংসদূতে॥

গোপীগণের ভয়দনামা কঠিন অক্তর প্রীক্ষের সম্মুখে মণিস্তম্ভ অবলম্বন করিয়া কুরুকুলের কথা কহিতেছেন এবং বৃহস্পতির শিষ্য উদ্ধব জাকুদ্বয় দারা স্বর্ণভূমি আক্রমণপূর্বক প্রীকৃষ্ণের পাদপদ্ম সম্বাহন করিতেছেন॥

যোগ অর্থাৎ প্রীকৃষ্ণের সহিত মিলনকালীন দাসভক্ত-গণের অপুন আপন অবসরে সেবাকার্য্যে সাধ্যানতা এবং কে চিদ্দা। রতেঃ কৃষ্ণভক্ত্যাস্থাদবহিমুখাঃ।
ভাবস্থমেব নিশ্চিত্য ন রদাবস্থতাং জগুঃ॥ ৭০॥
ইতি তাবদদাধীয়ো যৎ পুরাণেয়ু কেয়ুচিৎ।
শ্রীমন্তাগবতে চৈষ প্রকটো দৃশ্যতে রদঃ॥ ৭১॥
তথাহি॥
কচিত্রুদন্তাচ্যুতিচিন্তুয়া কচি-

নমু, ভবস্ত তে তদ্বহিম্থা:। তেষাং পূর্বনিদিষ্ঠং তন্ম হস্ত দৃঢ়মেব রসশাল্তকুন্নিসন্মত্বাং। তত্ত্বাহ ইতীতি। তাবং পদং বাক্যোপন্যাসেহবায়ং।
ইতি। এতন্মতমসাধীয়:। শীভাগবতং রসং ব্যাপ্ত্রমমর্থপালাতিদৃঢ়মিত্যর্থ:।
কুতস্তত্ত্বাহ যদিতি। মতেহপীতি শব্দ ইতি কীরস্বামী। তত্ত্ব যদর্শিতমিত্যাপিশ্লিরিতি তত্ত্বাপি আপিশ্লি রিদং মতং স্বীক্তবানিত্যর্থ:॥ ৭১॥

কচিক্রদন্তীত্যাদিকং সামান্য ভক্তিরসপরমণি বিশেষে পর্যাবস্যেদিতি ভাব:

শ্রীকৃষ্ণের অত্যে উপবেশনাদি হইয়া থাকে। কৃষ্ণভক্তির আম্বাদবহিমুখি কোন কোন জন এই দাস্যরতির ভাবত্ব নিশ্চয় করিয়া রসাবস্থা উল্লেখ করেন নাই ॥ ৭ • ॥

যদিচ অন্যান্য পুরাণে উক্তপ্রকার মত দেখা যায়, কিন্তু তাহা প্রশস্ত নহে, ষেহেতু শ্রীমদ্ভাগবতে এই দাস্তক্তিরস স্পাষ্টই দৃষ্ট হইতেছে॥ ৭১॥

যথা একাদশক্ষমে ৩ অধ্যায়ে ৩৩ শ্লোকে॥ ভক্তগণ ভক্তিযোগ সাধন করিতে করিতে কথন কৃষ্ণ চিস্তায় রোদন, কথন হাস্য কথন, আহ্লাদ, কথন অলোকিক ক্ষণন্তি বদন্ত্যলোকিকা:।
নৃত্যন্তি গায়ন্ত্যসুশীলয়ন্ত্যজ্ঞ:
ভবন্তি তৃষ্ণীং পরমেত্য নির্বৃতাঃ।
নিশম্য কর্মাণি গুণানতুল্যান্
বীর্য্যাণি লীলাতমুভিঃ কুতানি।
যদাতিহর্ষোৎপুলকাশ্রুগদাদঃ
প্রোৎকণ্ঠ উল্গায়তি রোতি নৃত্যতি॥ ইতি॥
এষাত্র ভক্তভাবানাং প্রায়িকী প্রক্রিয়োদিতা।
কিন্তু কালাদিবৈশিষ্ট্যাৎ ক্ষিৎ স্যাৎ সীমলজ্বনং॥৭২॥

তত্ত্ব কচিজ্রদন্তীত্যাদিকমেকাদশস্করত্বং পদ্যং, নিশম্যেতিত্ সপ্তমস্করত্বং ভেয়ং॥ ৭২॥

বাক্য কথন, কথন নৃত্য, কখন গীত, কখন ক্ষামুশীলন এবং কখন বা নির্তি হইয়া ভূফীস্তাব অবলম্বন করেন ॥

সপ্তমক্ষরে ৭ অধ্যায়ে ২৮ শ্লোকে যথা—

প্রহলাদ কহিলেন, অহে বয়স্যগণ! প্রীকৃষ্ণের লীলামূর্ত্তি দারা যে সকল লোকাতীত কর্মা, গুণ ও বীর্য্য প্রকাশ করি যাছেন ভক্তব্যক্তি তাহা যথন প্রবণ করেন, তৎকালে তাঁহার অতিশন্ন হর্ষোদ্য হওয়াতে পুলকোলান, অপ্রুপাত ও গলাদ বাক্য সহকারে উদ্ধিকটে গান, উচ্চশন্দ এবং নৃত্য করিতে থাকেন॥

এম্বলে এই ভক্তভাবের প্রক্রিরা প্রায় স্বাভাবিকী, কিন্তু কালাদির বৈশিষ্ট্য হেতু কথন কথন সীমা উল্লেখন করে ॥৭২॥ অথ গৌরবপ্রীতিঃ ॥
লাল্যাভিমানিনাং ক্ষে সাথে প্রীতিগৌরবোত্তরা !
সা বিভাবাদিভিঃ পুর্টা গৌরবপ্রীতিরুচ্যতে ॥
তত্তালম্বনাঃ ॥
হরিশ্চ তদ্য লাল্যাশ্চ ভবস্ত্যালম্বনা ইহ ॥ ৭৩ ॥
তত্ত হরির্যথা ॥
অরমুপহিতকর্ণঃ প্রস্তুতে র্ফির্ট্মর্তুপতিরিতি হাগে মন্দহাগোজ্জ্লাদ্যঃ ।

প্রোরবং শ্রীক্লফরপশুক্নিষ্ঠহং গুরুজমেবোতরং প্রোচ্ছে প্রাবসিতং। যস্যাং॥৭০॥

অন্নমিতি। চেইয়াউপহিতকর্ণ ইত্যাদিলকণয়া হিতং এবনেব পুর্কেষাং

### অথ গৌরবগ্রীতি॥

আমি শ্রীকৃষ্ণের লালনীয় এইরূপ অভিমানি ব্যক্তিদিগের শ্রীকৃষ্ণবিষয়ে গোরবোত্তরা অর্থাৎ উত্তরোত্তর গুরুত্ব জ্ঞানময় শ্রীতি হয়, এই শ্রীতি বিভাবাদিদ্বারা পুষ্ট হইলে ইহাকে গোরবশ্রীতি বলা যায়॥

গোরবপ্রীভিতে আলম্বন যথা॥

্ হরি এবং ইরির লালনীয় ব্যক্তিগণ এই গৌরবপ্রীতিতে ভালস্থনস্থরূপ ॥ ৭৩ ॥

### তমধ্যে হরি যথা॥

যত্রদ্ধণ কোন প্রস্তাব উপস্থিত করিলে যত্পতি কৃষ্ণ। উদ্দিক্ণ হইয়া প্রবণ করেন, কোন হাস্য কথা উপস্থিত

**উপদিশতি হুধর্মামধ্যমধ্যা**স্য দীব্যন হিত্মিছ নিজয়াতো চেফীয়েবাত্মজান: ॥ महा ७ क्रम हा की र्विर्महा वृद्धि में हा वलः। तको लालक इंड्रारेनाख रेगत्रालयम् रहिः ॥ व्यथं लालाः ॥ লাল্যাঃ কিল কনিষ্ঠত্বপুত্রতাদ্যভিমানিনঃ। কনিষ্ঠাঃ সারণ-গদ-স্নতন্ত্র-প্রমুখাঃ স্মৃতাঃ ! প্রত্যুত্মচারুদেফাদ্যা: দাঘাদ্যাশ্চ কুমারকাঃ ॥` এষাং রূপং যথা॥

সহতাং বুভমমুসরণীয়মিতার্থ: ॥ ৭৪ ॥

हरेल बीकृष हानावमन हायन अवर अध्या मन गाया छैन-বিষ্ট হইরা ক্রীডা করিতে করিতে স্বীয় উত্তম চেষ্টাদারা আমরা যে আতাজ আমাদিগকে হিত উপদেশ করেন ॥ '

এই গোরবোত্তরা প্রীতিতে মহাগুরু, মহাকীর্তি, মহাবৃদ্ধি মহাবল, রক্ষক ও লালক ইত্যাদি গুণছারা শ্রীকৃষ্ণ আলম্মন **र्**यन ॥

### **चाथ** ताता ॥

কনিষ্ঠত্ব অভিমান এবং পুত্ৰত্ব অভিমান ভেবে লাল্য হুই প্রকার হয়। তলাধ্যে সারণ, গদ ও হুভদ্রপ্রভৃতি ক্রিষ্ঠিছ অভিমানী আর প্রত্যুদ্ধ চারুদেক্ষ ও দারপ্রভৃতি যুতুকুমারগণ পুত্রত্বাভিমানী গ

য়হুকুমারদিগের রূপ যথা ॥

অপি মুরান্তক পরিদমগুলাদধিকমণ্ডনবেশগুণপ্রিয়: ।
অনিতপীতশিত্তাতিভিযুকা
যত্তকুমারগণাঃ পুরি রেমিরে॥ ৭৪॥
ভক্তিঃ॥
স্থিং ভজন্তি হরিণা মুখ্যুন্নম্য
তাস্থলচর্বিত্যদন্তি চ দীয়্মানং।
আতাশ্চ মূদ্রি পরিরভ্য ভবস্তাদ্র্রাঃ
সাম্বাদ্যঃ কতি পুরা বিদধ্তপাংসি।
ক্রিনীনন্দনভেযু লাল্যের প্রব্রো মতঃ॥

मधिः महत्काकनः ॥ १८॥

যদুকুমারগণ শ্রীকৃষ্ণের পার্ষদসকল হইতে অধিক বেশ, ভূষণ, গুণ ও শোভাশালী হইয়া কৃষ্ণ ও শুকুবর্ণ মূর্তিতে ভারকানগরে বিহার করিতেচেন॥ ৭৪॥

যতুকুমারদিগের ভক্তি যথা ॥

সামাদি পুত্রগণ মুখ উত্তোলন করিয়া প্রীক্ষের সহিত ভোজন, প্রীক্ষকর্তৃক প্রদত্ত উচ্ছিট তামূলচর্বেণ এবং প্রীকৃষ্ণ ক্রোড়ে লইয়া মন্তকের আন্তাণ লইলে চক্ষু দিয়া অক্রমোচন করিয়া থাকেন, অভএব ইহারা সকল পূর্বজন্মে কত কত না পুণ্য করিয়াছিলেন।

गाना गक्टलब मट्या ऋचिनीनन्तन श्रेष्टाचरे मर्ख्यधान ॥

তস্য রূপং॥
স জয়তি শ্বরদমনঃ, স্কুমারো যতুকুমারকুলমোলিঃ।
জনয়তি জনেয় জনক, ভাস্তিং যঃ স্কুরূরপেণ॥ ৭৫॥
ভক্তিঃ॥
প্রভাবতি সমীক্ষ্যতাং দিবি কুপাসুধিম দৃশাং
স এব পরমো গুরুর্রজড়গো যদূনাং পতিঃ।
যতঃ কিমপি লালনং বয়মবাপ্য দর্পোদ্ধরাঃ
পুরারিমপি সঙ্গরে গুরুর্জহে।

প্রভাবতীতি শ্রীহরিবংশোক্তপ্রভাবতীহরণে তৎসমীপস্থা শ্রীপ্রছ।মুদ্য বাকাং॥ ৭৬॥

### প্রত্যামের রূপ যথা॥

যিনি আপনার মাধুর্য্ময় রূপদারা জনমাত্রেরই কৃষ্ণ বলিয়া আভি উৎপাদন করেন, সেই যতুকুমার চূড়ামণি স্কুমার শঘবারি প্রত্যুদ্ধ জয়মুক্ত হউন॥ ৭৫॥

> প্রত্যন্ত্রের ভক্তি বথা॥ হরিবংশোক্ত প্রভাবতীহরণে॥

প্রভাগ কহিলেন, অহে প্রভাবতি ! অর্গে রূপাসার গরুড়াকাচ যতুপতিকে সন্দর্শন কর, ইনি আমাদের পরম গুরু, ইহার
সমীপে আমরা কোন অনিকাচনীয় লালন প্রাপ্ত হইয়া দুর্পোজত হওত যুদ্ধক্ষেত্রে গুরুতর জোধশালি ত্রিপুরারিকেও
তিরস্কার করিয়াছি॥

উভরেষাং সদারাধ্য ধিরৈব ভক্ততামপি।
সেবকানামিহৈশ্বর্যজ্ঞানসৈরে প্রধানতা।
লাল্যানাস্ত সমন্বন্ধস্কৃত্তিরেব সমস্ততঃ ॥ ৭৬ ॥
ব্রহ্মস্থানাং পরিশ্বর্যজ্ঞানশূন্যধিয়ামপি।
ভাস্ত্যেব বল্লবাধীশপুত্রতৈশ্বর্যবেদনং ॥
ভাস্থাদীপনাঃ ॥
উদ্দীপনাস্ত বাৎসল্যান্স্তিপ্রেকাদয়ো হরেঃ॥
যথা॥

বলবাধীশপুত্রত্বেনিব ষ্টেশ্বর্যানিজ্ঞজন্মাদিপ্রভাবন্তস্য বেদনমন্থভব: ॥ ৭৭ ॥

উভয় অর্থাৎ সম্ভ্রমপ্রীতি ও গোরবপ্রীতিশালি ভক্তসকলের মধ্যে দ্বারকাস্থ সেবকগণ যাঁহারা নিরন্তর আরাধ্য বৃদ্ধিতে শ্রীকৃষ্ণকৈ ভজন করিয়া থাকেন, তাঁহাদের ঐশ্বর্য জ্ঞানের প্রধানতা, আর যাঁহারা লাল্য তাঁহাদিগের সর্বতোভাবে শ্রী-কুষ্ণের সহিত স্বীয় সম্বন্ধ স্ফুর্তি পাইয়া থাকে ॥ ৭৬॥

ব্ৰজন্ম সন্ত্ৰমপ্ৰীতি ও গৌরবপ্ৰীতি নিষ্ঠ ভক্তগণের পরম ঐশ্বয় জ্ঞান না থাকিলেও গোপরাজনন্দন বলিয়া ইন্দ্রজয়াদি ঐশ্বয় জ্ঞান আছে ॥

অথ উদ্দীপন সকল।

প্রিক্ষের বাংসল্য ও ঈষং হাস্যাদি এই সকলকে উদ্দী-

আত্রে সামুগ্রহং পশ্যমগ্রজং ব্যগ্রমানসং।
গদঃ পদারবিন্দেহ্স্য বিদধে দণ্ডবম্বভিং।
অথানুভাবাঃ॥
অনুভাবাস্ত তদ্যাগ্রে নীচাদননিবেশনং।
গুরোর্বস্থানুদারিছং ধুরস্তম্য পরিগ্রহঃ।
বৈরাচারবিযোক্ষাদ্যাঃ শীতা লাল্যেযু কার্তিতাঃ॥ ৭৭॥
গুরু নীচাদননিবেশনং যথা॥
যতুদদদি হুরেন্দ্রৈভিপ্রক্র্যানঃ
হুথদ-করক-বার্ভির্ক্রাণাত্যুক্ষিতাসঃ।

উপত্রজ্যমানঃ পুরো গছা সমানীধমানঃ পাঠাস্তর্ভ ভ্যক্তং রভুষুণা-বিশেষঃ ৪০৮ ঃ

শ্রীকৃষ্ণ যখন অত্যে অনুগ্রহ দৃষ্টি নিক্ষেপকারি পাগ্র**জ বল-**দেবকে অবলোকন করিয়া ব্যস্তচিত্ত হইয়াছেন, এমত সময়ে গদ তাঁহার চরণারবিক্ষে পতিত হইয়া নতি বিধান করিছে লাগিলেন॥

### অথ অমুভাব ॥

লাল্য সকলে ঐক্ফাত্রে নীচাসনে উপবেশন, গুরুপথের অনুগ্যমন এবং স্বেচ্ছাচারের পরিত্যাগ এই সকল শীতভাব বলিয়া কীর্ত্তিত হয়॥ ৭৭॥

তশ্বধ্যে নীচাদনে উপবেশন যথা।

দেবেন্দ্রপ্রভৃতি অমরর্শকর্ত্ক অমুত্রজ্যমান ও ত্রক্ষার ক্মওলু জলদারা স্কাঙ্গ অস্থাকিত হইরা প্রত্যুত্র যতুসভায় মধ্রিপুমভিবন্দ্য স্থাপীঠানি মুকন্
ভুবমভিমকরাকো রাঙ্কবং স্থীচকার ॥ ৭৮ ॥
দাদোঃ দাধারণাশ্চান্যে প্রোচ্যন্তেইমীয়ু কেচন।
প্রশামো মৌনবাহুল্যং সকোচঃ প্রশ্রেয়াচ্যতা।
নিজপ্রাণব্যয়েনাপি তদাজ্ঞাপরিপালনং।
ভাষোবদনতা স্থৈয়ং কাদহাদাদিবর্জনং।
ভদীয়াভিরহংকেলিবার্ভাগ্যুপরমাদয়ঃ॥
ভাষা দান্তিকাঃ॥
কন্দর্প বিন্দতি মুকুন্দপদারবিন্দ-

দাসৈরিত্যাদৌ তদীরাতিরহংকেশীতি বদ্যপি তেলত্যস্তাসস্তবারিষেধােছপি ন প্রসক্ষেত তথাপ্যাধুনিকতভাবানাং বােধনার্থমেব নিবিদ্ধমিতি জ্ঞেরং ॥ ৭৯॥

গমনপূর্বক শ্রীকৃষ্ণকে প্রণাম করিয়া স্বর্ণ পীঠ পরিত্যাগ করত ভূমির উপরে মুগরোমজ আসনে গিয়া উপবেশন করি-লেন॥ ৭৮॥

এই সকল পুজানিতে দাসের সহিত কতক গুলি সাধারণ অনুভাব কীর্ত্তন করা হইয়াছে, যথা প্রণাম, অধিকতর মৌন, সঙ্কোচ, বিনয়শীলম্ব, স্বীয়প্রাণ পরিত্যাগপূর্বক তদাজ্ঞা প্রতিপালন, অধোবদনতা, স্থৈয়, কাস ও হাস্যাদি বর্জন এবং তদীয় নির্জন কেলিরহস্য বার্তাদি হইতে উপরম ॥

অধ সাত্তিক॥

ঘদে দুশোঃ পদমসে কিল নিপ্রাকল্পা।
প্রালেয়বিন্দুনিচিতং ধৃতকতকা তে
বিন্নান্য কণ্টকিফলং তকুরন্থকার্যীৎ ॥
অব ব্যভিচারিণঃ ॥
অনস্তরোক্তা সর্কেহত্র ভবন্তি ব্যভিচারিণঃ ॥
তত্র হর্ষো যথা ॥
দূরে দরেন্দ্রস্য নভস্থানীর্ণে
ধ্বনে বিতানাং যত্নরাজ্বধান্যাং।
তনুক্রহৈন্তত্র কুমারকাণাং
নটেশ্চ হ্বয়ন্তিরকারি নৃত্যং ॥ ৭৯ ॥
নির্কেশো যথা ॥

হে কদর্প! শ্রীকৃষ্ণপদারবিশ্বদ্যে চকুর্ব থের স্থান লাভ হওয়াতে তোমার এই তনু অদ্য ঘর্মবিন্দুসমূহে কণ্টকাকুল হইয়া হিমবিন্দুসমূহে আকীর্ণ কণ্টকিফলের অনুকরণ করি-তেছে।

অথ ব্যক্তিচারী ॥

এইস্থলে সন্ত্রমগ্রীতোক্ত ব্যভিচারি সমুদায় হইয়া থাকে ॥ তন্মধ্যে হর্ষ যথা॥

দূর হইতে পাঞ্জন্য শব্দের ধ্বনি গগণমগুলে উদ্দাক্ত হইলে যতুরাজধানীতে অবস্থিত কুমারগণের অঙ্গলোমস্কল হন্ট নটের সহিত নৃত্য করিতে আরম্ভ করে॥ ৭৯॥

निटर्सम यथा ॥

ধন্য দাস ভবান্ দরিঙ্গণময়ন্ পার্ষে রজঃ কুর্ব্বুরো
নস্তাতেন বিক্ষয় বংদলত্য়া সোংদঙ্গমারে।পিতঃ।
ধিঙ্মাং ছুর্ভগমত্ত শম্বরম্যৈছু দৈববিস্ফুর্জিতৈঃ
প্রাপ্তান ক্ষণিকাপি লালনরতিঃ দা যেন বাল্যে পিতুঃ ॥৮০
অথ স্থায়ী॥
দেহসম্বন্ধিতামানাদ্ওরুষীরত্র গোরবং॥

শমরমরের ভাবরবার্থে মরট্ ॥ ৮০ ॥

দেহসম্বন্ধিতেতি অত্র গুরুণীরিতি গুরুরগ্নীতি বৃদ্ধিরিত্যর্থ:। সা গৌরিষমিতি সম্বন্ধিককণরা গ্রম:। অত্র নানাস্থানপতিভানাং সামান্যবিশেষপ্রীতিনির্দ্ধিকাণাং কারিকাণাং সমন্ত্র: ক্রিয়তে। স্বন্ধান্তবিস্তি যে ন্নাত্তহন্ত্রাঞ্হরেম তাঃ। আরাধান্ধান্থিকান্তেষাং রতিঃ প্রতিরিতীরিভা। যে ন্না ন্না
বন্ধমিতি আভিমানমন্ত্রতিমন্ততেহন্ত্রাফ্তরা হরেম তাঃ। তেবান্ধান্ধান্তি আনান্থিকা রতিঃ প্রীত্তিধ্যা গোকেত্যর্থঃ। অস তস্যা রুসভেদ্বারা

প্রায় কহিলেন, অহে সাম্ব! তোমাকে ধন্য বলিতে হয়, যেহেতু জানুদ্বয়দারা ইতন্তত ভ্রমণ করিতে কবিতে ভোমার অঙ্গে যথন ধূলাদকল লিপ্ত হইয়া কর্ব্যুর বর্ণ হইত, ভংকালীন পিতা বাংদল্যপ্রযুক্ত আকর্শণপূর্বক ভোমাকে ক্রিডেন, অতএব আমি অতি তুর্ভগ, আমাকে ধিক্ শম্বর্ময় প্রবল তুর্দিবকর্ত্ক আমি বিড়ম্বিত হইয়া বাল্যকালে পিতার নিকট কোন লালন রতি প্রাপ্ত হই নাই ॥ ৮০ ॥

व्यथं ऋ। भी ॥

দেহ সম্বন্ধাভিমান্প্রুক্ত ইনি আমার শুরু এইরূপ যে

তম্মী লালকে প্রীতিগোঁ রবপ্রীতিরুচাতে ॥ ৮১ । স্থানী ভাবোহত্র সাচৈষামা মূলাৎ স্বরম্ভিতা। কিঞ্চিদিশেষমাপনা প্রেমেতি স্বেছ ইত্যাপি।

ভেদ্বরমাহ। অনুগ্রাহ্নসা দাস্বারালাখাদ্পারং বিধা। ভিদ্যতে সংশ্রমপ্রীভো গৌরবপ্রীত ইতাপি। দাসহং অনুভ্কতৎসেবারামিজ্বং। ভত্মাং সংশ্রমো ভবতি। সংশ্রমাস্থাক্ত সংশ্রমপ্রীত উচ্যতে। এবং লালাবং ওৎকর্ভৃত্বলাল-নারামিজ্বং। ভত্মান্দেলারবং ভবতি। গৌরবার্য্যাক্ত গৌরবপ্রীত উচ্যত ইতি। অথ সংশ্রমপ্রীতিং বৃদ্ন সংশ্রমস্য কৃষ্ণমাহ। সংশ্রমং প্রভৃত্তাক্তানাং কম্পশ্তেসি সাদরং। অনেনৈক্যং গতা প্রীতিঃ সম্রমপ্রীতিরুচ্যতে। কম্পোহ্র স্বা সাচ সেবেজামরী জ্বেরা লালাভিমানিনাং ক্রমে স্যাং প্রীতিগৌরবোজরা। সা বিভাবাদিভিঃ পুটা গৌরবপ্রীত উচ্যতে। ইত্যত্র লক্ষিত্রসা গৌরব-প্রীতর্সস্যা। স্থার্মনং গৌরবপ্রীতিং বৃদ্ন গৌরবস্য লক্ষ্ণমাহ দেহসম্বন্ধিতিত। দেহসম্বন্ধিতরা আতাবিক্যা যো মানং অভাবত এবাতিবাল্যেইপি ভদীরভাত্তিমানং ভত্মান্দা গুরুধীম্মারং গুরুলালক ইতি বৃদ্ধিং সা গৌরবমূচ্যতে। তত্মরী যা তত্মিন্ লালকে প্রীতিঃ সা গৌরবশ্রীতিরুচ্যতে ইতি। তত্র যদ্যপি লালক্ষীতিরাল্য এব কেবলা গুরুধীম্প্রাত্ত প্রোচ্নশারাং দৃশ্যতে। ভথাপি কারণকার্য্যাত্মাস্থাত্মবারভাত্তরারভেদ এবেই:। এবমেব তত্র তত্র কচিদিত্যক্তং। কিন্তু বর্ণাযোগ্য ভেদ্ব এবাবগন্ধবা ইতি॥ ৮১॥

বৃদ্ধি এম্বলে ভাহাকে গোরব বলা যায়, লালকের প্রতি তম্মী যে শ্রীভি, ভাহার নাম গোঁরবপ্রীভি॥৮১॥

ध्यात धरे रागितवथीि शाही जात, उक्क जातमकातत मून इरेड खर दक्षिणीन हरेशा कि किए विरोध थील हरेल

রাগ ইত্যুচ্যতে চাত্র গোরবপ্রীতিরেব সা॥
তত্র গোরবপ্রীতির্থা॥
মুদ্রাং ভিনতি ন রদক্ষদযোরমন্দাং
বক্তুঞ্চ নোমময়তি অবদঅকীর্ণং।
ধীরঃ পরং কিমপি সঙ্কৃচতীং ঝধাঙ্কো
দৃষ্টিং ক্ষিপত্যঘভিদন্চরণারবিন্দে ॥
থেমা যথা॥
বিষক্তিঃ ক্যোদিঠৈর্জবদবিহতেচ্ছস্য ভবতঃ
ক্রাদাকুষ্যের প্রসভ্সভিমন্যারপি হতে।

ভৰেৰ স্থাপরতি স্থারীতি। ৮২॥

ঐ গোরবপ্রীতি প্রেম, স্নেহ ও রাগ এই তিন আখ্যা প্রাপ্ত হয় ॥

# তদ্মধ্যে গোরবপ্রীতি যথা॥

পরমধীর প্রস্থার পিতার অত্যে উচ্চম্বরে আলাপ করণ নিমিত্ত অধরোষ্ঠের মুদ্রা অভিশয়রূপে উন্মোচন করেন না, গলদশ্রুব্যাপ্ত মুথ উত্তোলন না করিয়া কেবল শ্রীক্ষক্ষের চরণারবিন্দের প্রতি কৃষ্ণিত লোচনাঞ্চল নিক্ষেপ করিয়া থাকেন॥

#### প্রেম যথা ॥

হে অহরনাশন! কর্ণ জয়দ্রথপ্রভৃতি কুদ্রে শক্রণণ জগৎকক্ষক যে তুমি তোমার হস্ত হইতে বলপুর্বকেই ষেন আকর্ষণ
করিয়া অভিমত্যুকে বধ করিলে হুভদ্রার ভোমার প্রতি

শ্বভদ্রারাঃ প্রীতির্দমুক্ষদমন ত্বিষ্ট্রিকা
প্রপেদে কল্যাণী নহি মলিনিমানং লবমপি ॥
ক্রেহো ষথা ॥
ক্রিক্রু পৃথু বেপপুং বিস্তুজ কন্ঠকুন্ঠায়িতং
ক্রিক্রু ময়ি নিক্রিপ প্রদর্মজ্ঞাধারে দৃশো ।
করক মকরধ্বজ প্রকটকন্টকালক্লতং
নিধেহি দবিধে পিতৃঃ কথ্য বংদ কং দক্রমঃ ॥ ৮২ ॥
ক্রিমেপি সহসা স্থামিবায়ং
নিপিবতি চেৎ পিতৃরিক্রিতং ক্রাজঃ ।

विवयि महामठा। मिकायव शर्वनीयः नकू विवयि मूमिक देखामिकः ॥৮०॥

প্ৰীতি উজ্জ্লই ছিল, কিঞ্চিমাত্ৰ মলিন হয় নাই ॥ স্কেহ যথা॥

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, প্রত্যান ! বিপুল কম্প পরিত্যাপ কর, কঠ কৃষ্ঠিত করিও না, স্পন্টাক্ষরে বাক্যপ্রয়োগ কর, অঞ্চনধারা মার্জন করিয়া আমার প্রতি লোচনঘয় নিক্ষেপ কর। এবং স্পন্টরূপে পুলকায়িত হস্তদ্বয় আমাতে সমর্পণ কর, বংশ ! বল দেখি পিতার নিকট সন্তম কি ! ॥ ৮২ ॥

রাগ যথা॥

প্রহান্ন যদি পিতার ইনিত প্রাপ্ত হন্ তাহা হইলে বিষ্ক্তে অয়তের ন্যার পান করেন, আর যদি তাঁহার অসমতি দেখেন বিস্কৃতি তদসংমতির্যদি স্যা-বিষমিব তাস্ত স্থাং সএষ সদ্যঃ ॥ ৮০ ॥ ত্রিবেবাযোগযোগাদ্যা ভেদাঃ পূর্ববদীরিতাঃ ॥ তত্রোৎকণ্ঠিতং ॥ শম্বরঃ স্মুখি লব্ধ স্বিপ্ডিম্বরঃ স্বিপুরস্বায়িতঃ । সম্বরাজমহসং কদা গুরুং, ক্সুরাজকর্মীক্ষিতাম্মহে ॥৮৪

ত্তিবেব প্রীতিপ্রেরো বংসলেবেবাযোগযোগাদা। ভেদা মুথাবাস্তরভেদেন ভত্তং-সংজ্ঞাঃ পূর্ববদত্তিব প্রীতসামানোকদেশসংভ্রমপ্রীত ইবেরিভাঃ কথিভাঃ। ভেদা ইতাত্ত সংজ্ঞা ইভার বা পাঠঃ। অনাত্তত্তু পাস্তস্য পারোক্ষাসাক্ষাংকারা-বিতোবসংজ্ঞে মণ্রস্য সভ্জোগবিপ্রলম্ভাবিতি মুথো সংজ্ঞে পূর্বরাগাদ্যাক্ষ্ ভদবাস্তরসংজ্ঞা ঈরিতা ইত্যর্থঃ॥ ৮৪॥

তাহা হইলে অমৃতকেও তৎক্ষণাৎ বিষের ন্যায় পরিত্যাগ করিয়া থাকেন॥ ৮০॥

প্রীতি, প্রেয় ও বংগল এই তিন রসে অযোগপ্রভৃতি ভেদ পূর্বের ন্যায় কথিত হয়॥

তন্মধ্যে উৎকণ্ঠিত যথা।

রভির প্রতি প্রহান্ত কহিলেন, হে হুমুখি! ঘোর বিপ্ৎ-রাশিষরূপ পরমশক্ত শমর বিনষ্ট হইরাছে, ভবে কবে আমরা ইন্দীবরকান্তি, পাঞ্চন্য কর, গুরু শ্রীকুফুকে দুর্শন ক্রিব ? ॥ ৮৪ ॥ অথ বিয়োগঃ॥
মনো মমেন্টামপি গেণ্ডুলীলাং
ন বস্তি যোগ্যাঞ্চ তথাস্ত্রযোগ্যাং॥
গুরো পুরং কোরবমভ্যুপেতে
কারামিব দারবতীমবৈতি॥
অথ বিয়োগে সিদ্ধিঃ॥
মিলিতঃ শহরপুরতো
মদনঃ পুরতো বিলোকয়ন্ পিতরং।
কোহহমিতি স্বং প্রমদামধীরধীরপাগে বিদ ॥

অন্ত্রোগ্যামন্ত্রাভাগে:। অভ্যাস: খুরণীঘোগ্যেতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ ৮৫ ॥

### অথ বিয়োগ॥

গুরু এক ইন্দ্রপ্রস্থে গমন করাতে আমার মন আর মনোরম কলুকলীলা ও অস্ত্রাভ্যান করিতে ইচ্ছা করিতেছে। না, অধিক কি বলিব দারাবতীকেও কারাগৃহ বলিয়া বোধ হইতেছে।

# **ज्य विद्यार्ग मिकि॥**

প্রত্যাল্ল শ্ররান্তরের পুর হইতে দারকাপুরে আগমন করিয়া সন্মুখে পিতাকে দেখিতে পাইলেন, তাহাতে তাঁহার এরপ আনন্দ উৎপন্ন হইয়াছিল যে, আনি অধীর বুদ্ধি । নদন যে কে ? তাহা কিছুই জানিতে পারেন নাই॥ ভূষ্টি: ॥

মিলিভমধিষ্ঠিত পরুড়ং
প্রেক্ষ্য যুধিষ্ঠিরপুরাশুরারাতিং।
অজন মুদা যত্ত্বগরে
সংজ্রমভূমা কুমারাণাং॥
ছিডি:॥
কুঞ্মদক্ষিণী কিঞ্ছাপ্পনিপ্রাম্পিশক্ষাণী॥
বন্দতে পাদগ্যের নহং পিতৃঃ প্রতিদিনং স্মরঃ ॥
ভূৎকপ্রিতবিয়োগাদ্যে যদ্যদ্বস্তারিতং নহি।
সংজ্যপ্রীতবজ্জ্যেং ভত্তদেবাধিলং বুধৈ:॥৮৫॥

# তৃষ্টি॥

যুধিন্তিরের পুর হইতে গরুড়ারত মধুরিপু আদিয়া মিলিভ হইলে ভদবলোকনে যত্ত্রগরে কুমারদকলের আনন্দনিবন্ধন ভূরি ভূরি দংজম উপস্থিত হইয়াছিল ॥

### অথ স্থিতি॥

প্রত্যন্ন প্রতিদিন সঙ্গল-পক্ষাশালি লোচনযুগল কিঞ্চিৎ সঙ্কুচিভ করিয়া পিতার চরণদ্বয় বন্দনা করিয়া থাকেন ॥

উৎকণ্ঠিত ও বিয়োগাদিতে যাহা যাহা বিস্তার করা হয় নাই, পণ্ডিতগণ সংভ্রমশ্রীতির ন্যায় তৎসমুদার অবগত হই-

॥ #॥ ইতি ঐভিক্তিরসায়তসিদ্ধে পশ্চিমবিভাগে মুখ্য-ভক্তিরসপঞ্চকনিরপণে প্রীতভক্তিরস্বত্রী ॥ #॥ ২॥ #॥

॥ → ॥ ইতি পঞ্লহ্যাত্মকে পশ্চিমবিভাগে প্রীতভক্তিরসলহরী বিতীয়া ॥ ● ॥

॥#॥ ইতি শ্রীরামনারায়ণবিদ্যারত্বকৃত ব্যাখ্যায় হরিভক্তিরদামৃতদিক্ষুর পশ্চিমবিভাগে প্রীতভক্তিরদ দ্বিতীয়লহরী ॥#॥২॥#॥

অধ শ্রেষেভিক্তিরদ: ॥
শ্বারী ভাবো বিভাবাদৈয়: সথ্যমাজোচিতৈরিই।
নীতশ্চিতে সভাং পুস্থিং রস প্রেয়াসুদীর্ঘ্যতে ॥
তত্তালম্বনা: ॥
হিন্তিল ভ্রম্যাশ্চ ত্রিয়ালম্বনা মভাঃ।
তত্ত্ব হরিঃ ॥
বিভূজত্বাদিভাগত্র প্রাথদালম্বনো হরিঃ ॥
তত্ত্ব ত্রেমেনিমঞ্ল্ল্যুতিরমন্দকৃন্দিম্মিতঃ
স্ফুরৎপুরটকেতকীকুস্থ্যরম্যপট্টাম্বরঃ।

### অথ প্রেয়ভক্তিরস ॥

স্থায়ী ভাব আজোচিত বিভাবাদিদ্বারা সংসকলের চিত্তে স্থারসকে পুষ্টি প্রাপ্ত করাইলে, ঐ স্থা প্রেয়রস বলিয়া কীর্ত্তিত হয়॥

#### প্রেয়রদে আলম্বন যথা ।

ছির এবং ছিরির স্থাগণ ইহারাই প্রেয়রদে আলম্বন-শ্বরূপ॥

### তম্মধ্যে হরি যথা ॥

পূর্বের ন্যায় দিভুজাদিরপধারী হরি এই প্রেয়রদে জাল-ত্বন হয়েন ॥

তন্মধ্যে ত্রজে ভালম্বনরূপী হরি যথা ॥

যাঁহার ইন্দ্রমালমণি অপেকাও হৃদ্যর কান্তি, কৃদ্যপুজ্পের ন্যায় মমোহর হাদ্য, প্রফুল স্বর্ণকেত্কীর ন্যায় পীতবর্ণ পট্ট- অগুল্লসমূরঃ ছলঃ কণিতবেণুরত্রোব্রন্ধন্
ব্রজ্ঞাদদহরো হরত্যহহ নঃ সধীনাং মনঃ ॥ ১ ॥
অন্যত্র যথা ॥
চক্ষংকৌস্ভকৌম্দীসমূদ্যং কৌমোদকীচক্রন্ধেঃ
শথোনোজ্জ্লিতৈন্তথা জলজ্ঞারাচ্যং চতুর্ভিভু কৈঃ।
দৃষ্ট্বা হারি হরিগ্রণিক্যুতিহরং শৌরিং হিরণ্যাম্বরং

চক্ষন্ ইতন্ততঃ প্রসাধন্ কেন্সিভাকে মুদীসমূদরো যসা তং। আত্মসন্তাবনাধ অসমহমামীতি জ্ঞানং। শিরসি নৃপতির্দ্রাগ্রাসীদ্বারিমিতি বল্পাণাদৃব্ধিষ্টি । দীনাং বাংসলাদিবলিত ছৈংপাত্র পাতৃষ্তসামানোক্তিং সৌহদারূপে সংখ্যা তরদংশাসা সন্তবাং। বলাতে হি। বাংস্পাগদ্ধি স্থান্ত কিঞ্চিত্রে ব্যুসাধিকাং। কনিষ্ঠ কর্যাং সংখ্যান সংবদ্ধাং প্রীতিগদ্ধিনেতি। এবাং চতৃত্ জ্বাবির্ভাবেহিপি স্থাং। মৃত্তদক্ষত্বেন নাতি বৈলক্ষ্যাননাং। বথোক্তং শ্রীমন্জ্র্নন তেনের রূপেণ চতুত্ জ্বেনিতি স্বাত্ ভ্রাপি শ্রীমন্ত্রাক্ষরত্বৈর স্থিতিঃ। বেষাং গৃহানাবস্তীতি সাক্ষাদৃগূতং পরং বিদ্যাহানিক্ষিত্যাদেং। অতিভ্রম্যা ক্রশ্ন

বদন, বন্যালার বক্ষঃস্থল উজ্জ্বল এবং যিনি বেণুর্বকারী দেই অঘনাশন হরি প্রজনধ্যে বিচরণ করিতে করিতে আমরা যে স্থা আমাদিগের মন হরণ করিতেছেন ॥ ১॥

অন্যত্র অর্থাং ব্রজভিন্ন আলম্বনরূপী হরি যথা ॥

যাঁহার কণ্ঠদেশে কৌস্তভমণি ইতস্ততঃ বিচালিত ছইরা চতুর্দিকে কিরণমালা বিস্তার করিতেছে এবং যাঁহার ভুজচতু-উরে শহা, চক্রন, গদা ও পদা ধারণ, সেই ইন্দ্রনীলমণিকা ছি-শালী পীতাম্বর বস্থদেবনন্দন কৃষ্ণকে অবলোকন কার্য়া পাণ্ড- জগা; পাণ্ডুহতাঃ প্রমোদহুধয়া নৈবাত্মসন্তাবনাং ॥
হুবেশঃ সর্বসন্ত্রক্ষলক্ষিতো বলিনাং বরঃ।
বিবিধাসুতভাষাবিদ্ধাবদুকঃ হুপণ্ডিতঃ।
বিপুলপ্রভিভো দক্ষঃ করুণো বীরশেখরঃ।
বিদক্ষো বৃদ্ধিমান্ কন্তা রক্তলোকঃ সমৃদ্ধিমান্।
হুখী বরীয়ানিত্যাদ্যা গুণান্তস্যেহ কীর্তিতাঃ॥২॥

বেশগুণালৈ: সমা ইতি বক্ষামাণেন তেখাং ন চতুত্ অন্ধ্যাপদ্যতে ॥ ১ ॥ ২ ॥
সমাগ্ৰজিতা দাসবদ্যত্তপাশ্ন্যা:। যতো বিশ্বভেতি। বিশ্বভাৱ বক্ষাতে।
বিশ্বভো পাঢ়বিখাসবিশেষো যন্ত্ৰপোজ্বিত ইতি ॥ ৩॥

তন্য যুধিন্তিরাদি আনন্দ হুধায় নিমগ্ন হইয়া আজুবিস্মৃত হইয়া ছিলেন ॥

প্রেরসে আলম্বনরপী হরির গুণ যথা ॥

হ্নেশ, সমুদার সল্লকণাক্রান্ত, বলিষ্ঠ, বিবিধপ্রকার অন্তুত ভাষাবেক্তা, বাবদূক, হ্পণ্ডিত, অতিশন্ন প্রতিভাশালী দক্ষ, করুণাবিশিষ্ট, বীরশ্রেষ্ঠ, বিদয়, বুদ্ধিমান্, ক্ষমাশালী, রক্ত-লোক অর্থাৎ লোকসকলের অনুরাগভাজন, সমৃদ্ধিমান্, এবং হুখী, আলম্বনরূপী হরির এই সকল গুণ॥ ২॥

অথ শ্রীকৃষ্ণের বয়স্যগণ ॥ ইাহারা রূপ, গুণ ও বেশধারা সমান, দাদের ন্যায় যন্ত্রণা বিশ্রেষ্ঠান্থানো বর্দ্যান্তদ্য কীর্তিভাঃ ॥
যথা দ

সাম্যেন ভীতিবিধুরেণ বিধীর্মানভক্তিপ্রপক্ষমমুদক্ষদমুগ্রহেণ।
বিশ্রেষ্ঠারনিকুরম্বকরন্বিতেন
বন্দেতরামঘহরদ্য বর্দ্যার্দ্দং ॥
তে পুরব্রজ্ঞদম্কান্দিবিধাঃ প্রায় ঈরিতাঃ।
তত্র পুরদম্বন্ধিনঃ॥
অর্জ্নো ভীমদেনশ্চ ছহিতা ক্রুপদস্যা ॥ ৩॥
এষাং দখ্য যথা॥

भूना এवः विश्वामी ভाशामिशटक है वसना अर्था मा वाप्र ॥

#### যথা ॥

যাহারা মহাবিখাদ সমূহযুক্ত, স্থিরাতুগ্রহকর, ভয়শূন্য, সমভাষারা ভক্তিসকল বিধান করেন, সেই সমুদায় প্রীকৃষ্ণের বিধানিকরেন, স্থাদিগকে প্রশাম করি॥

ঐ সক্ল দখা ব্ৰহ্মসন্ধন্ধ ও পুরসন্ধন্ধে তুই প্রকার ॥ ভন্মধ্যে পুরসন্ধন্ধি দখা যথা॥

অৰ্জ্ন, ভীমদেন, ড্ৰোপদী ও শ্ৰীদাম ব্ৰাহ্মণ ইহাঁরা সকক পুরদম্বনীয় স্থা॥ ৩॥

देशांदाक मथा यथा॥

শিরদি নৃপতির্দ্রাগালাদিয়ারিমধীরধীভূজপরিঘয়োঃ শ্লিফৌ ভীমার্জ্বনে) পুলকোচ্ছালো।
পদকমলয়োঃ সাজো দ্রাগ্মজোচ নিপেততুভ্যবশধিয়ঃ প্রেণ্যানন্দাদরুদ্ধত পাশুবাঃ ॥
ক্রেষ্ঠঃ পুরবয়দ্যেষু ভগবান্ বানরধ্বজঃ ॥
ক্যা রূপং যথা ॥
গাণ্ডীবপাণিঃ করিরাজগুণ্ডারম্যোক্রিন্দীবরস্থারাভঃ ।

শির্দীতাত্র ভীনাজ্র্নাবেবোদাছরপে জ্ঞাে। শ্রীদানদ্রোপদােচ ভাজাামুপলক্ষা। ভূজপরিঘরো: পদক্ষলয়োশ্চ বিষয়য়ো:। প্রকরণাদ্বারেরেইবভানি জ্ঞোনা নিটো খ্রিষ্টেবজাে। গ ভার্থাকর্মক্রিষেত্যাদিনা কর্তুরি ক্তঃ ॥৪৪

শ্রীকৃষ্ণ ইন্দ্রপ্রত্থের উপস্থিত হইলে রাজ। যুদিষ্ঠির অস্থির বৃদ্ধি হইয়া শ্রীকৃষ্ণের মস্তকে আন্ত্রাণ করেন, ভীমার্জ্রন পুল-কাকুল কলেবরে পরিষদদৃশ বাহুলয়দ্বারা আলিঙ্গন প্রদান করেন এবং নকুল সহদেব অশ্রুমোচন করিতে করিতে চরণ দ্বায়ে গিয়া পতিত হয়েন, এইরূপে পাণ্ডুনন্দনগণ আনন্দাভিশয় প্রযুক্ত বিহরলচিত্তে শ্রীকৃষ্ণের প্রতি অমুরাগ বিধান করিয়া ধাকেন॥

পুরবাসি সথা দিগের মধ্যে অর্জ্বন শ্রেষ্ঠ র অর্জ্জনের রূপ যথ। ॥ বাঁহার হত্তে গাতীব, বাঁহার উক্ল করিশুও অপেকাও রথাঙ্গিনা রত্মরথাধিরোহী
স রোহিতাক্ষঃ স্কৃতরামরাজীং ॥
সধ্যং যথা ॥
থার্যক্ষে মহতি স্করারিহস্তরক্ষে
নিঃশক্ষপ্রনান-নিস্কিপু প্রকায়ঃ ।
উদ্মীলম্বনবন্দ্র-কর্মঠোহ্যং
গাগুরী স্মিতবদনাস্থুজো ব্যরাজীং ॥ ৪ ॥
অথ ব্রজসম্বন্ধিনঃ ॥
ক্ষণাদর্শনিতো দীনাঃ সদা সহবিহারিণঃ ।

ক্ষণাদর্শনত ইতি। উচ্চ স্থল: ক্ষমতাত্র তদেকজীবিতা ইতি কৃষ্ণ:।
মহাবকগ্রস্তঃ দৃষ্ঠা রামাদ্যোহর্তকা:। বভূব্রিজিলাণীব বিনা প্রাণঃ বিচেন

স্থার, বাঁহার কান্তি ইন্দীবর হইতেও স্থা এবং লোচনদ্বর আরক্ত, সেই অর্জুন শ্রীক্ষের সহিত একরথে আরোহণ করিয়া আশ্চর্য্য শোভায় স্থাভিত হইয়া রহিয়াছেন।

অর্জ্রনের সথ্য যথা॥

অর্জ্বন উৎকৃষ্ট পর্যাক্ষে সমাসীন শ্রীকৃষ্ণের জোড়ে প্রণর বশতঃ নির্ভয়ে মন্তক সমর্পন করত নব নব পরিহাস বাক্যদার। হাস্য প্রফুল্ল মুখে বিরাজ করিতেছেন॥ ৪॥

অথ ব্ৰহ্মসম্বন্ধি বয়স্য ॥

যাঁহারা ক্ষণকাল জীক্ষের দর্শন প্রাপ্ত না হইলে হঃথিত। হয়েন, যাঁহারা জীক্ষের সহিত সর্বদা বিহার করিয়া থাকেন এবং যাঁহাদের জীক্ষণতই জীবন সেই সকল জ্ঞাবাদিরাই তদেকজীবিতা প্রোক্তা বয়স্য। ব্রজবাসিনঃ।
অতঃ সর্ববিদ্যসেষু প্রধানত্বং ভজস্তামী॥ ৫॥
এষাং রূপং যথা॥
বলাসুজসদৃক্ বয়ো গুণবিলাসবেষপ্রিয়ঃ
প্রিয়ক্তরণসন্ন কীদলবিষাণবেণ ক্লিতাঃ।
মহেন্দ্রমণিহাটক স্ফটিক পদ্মরাগত্বিষঃ
সদা প্রণয়শালিনঃ সহচরা হরেঃ পাস্ত বঃ॥ ৬॥
সধ্যং যথা॥
উদ্ধিদ্রস্য যযুস্তবাত্র বির্তিং স্পু ক্ষপান্তিষ্ঠতো

#### ত্ৰ ইভাত জেরং॥ ৫॥

শ্রেষধ্বণতেতি অগ্রিয়ং প্রিয়ং ক্রিয়তে বৈক্তিঃ সর্বান্তভাষ্টরবান্তকীদল-বিশাপবেণুভিরম্ভিতা লক্ষিতা:। পাঠান্তরন্ত ত্যকং॥ ৬ ॥

. छेब्रिज्ञात्मा वि प्रश्नीनाः वहनः। उनानीः श्रीहरत्रो भारकत्राविकावनर्भातम

শ্রীকৃষ্ণের বয়স্য বলিয়া কথিত হয়েন, এ জন্য ইহারা সকল বয়স্য হইতে প্রধান ॥ ৫॥

ব্রজবয়দ্যগণের রূপ যথা॥

যাঁহাদের জ্রীক্ষের তুল্য বয়স, গুণ, বিলাস, বেশ ও শোভা, যাঁহারা সল্লক পত্রনির্মিত শৃঙ্গ ও বেণুদ্বারা অকিড, তথা ইন্দ্রনীলমণি, স্বর্ণ, স্ফটিক ও পদ্মরাগ মণিকান্তি বিশিষ্ট এবং সর্বাদা প্রণয়শালী সেই কৃষ্ণসহচরগণ আমাদিগকে রক্ষা করুন। ৬॥

ভ্ৰম্বয়স্যদিগের স্থা যথা ॥ শ্রীকৃষ্ণ গোৰ্দ্ধন্পর্বত ধারণ ক্রায় ব্য়স্যুস্থ কৃহিলেন, হস্ত প্রাস্ত ইবাসি নিক্ষিপ সথে খ্রীদামপাণী গিরিঃ।
আধিবিধ্যতি নন্ত্মপ্র করে কিংবা ক্ষণং দক্ষিণে
দোফত্তে করবাম কামমধুনা সব্যস্য সন্থাহনং॥ ৭॥
যথা বা শ্রীদশমে॥
ইত্থং সতাং ভ্রক্ষত্ত্বধামুভূত্যা
দাস্যং গতানাং পরদৈবতেন।

ভদাবেশাৎ জেরং। তদেতৎ পদ্যং সমস্বভাবনামন্ত্রহ্বাঞ্জং। উত্তর্ত্ত স্থ্ বিহারমন্তব্যঞ্জকমিতি ভেদঃ ॥ १ ॥

সভাং পরমন্ত্রপালভাবিভাবেভাং। যদা, এক্সপদসারিধ্যাৎ স্থিশেরাণাং। উভর্পা জ্ঞানিনামিতোবারুভ্তি: অড় প্রতিযোগি অপ্রকাশবস্থ। সৈব স্থাই আত্মতের পর্যাবসিভভরা নিরুপাধিপ্রেমাম্পদরাং সৈব বৃহত্তমপ্র্যারক্তমাধ্যা। সর্ক্রেবাং পরমক্তরপতাং। ভেবাং কেবলভজ্ঞপেণ ক্রুতা। দাসাং প্রভানাং দাসাভক্তিসভাং ঐব্যাদিপৃশ্ভয়া ভভোহিপি পরেণ দৈবভেন স্কারাধ্যের ক্রেপেণ ক্রুতা। মহিমদর্শনার্থং ভৎক্তিবিয়স্য বির্লভামাহ। মারাধিকার

সথে! তুমি নিদ্রা পরিত্যাগপৃক্ষিক দণ্ডায়মান থাকিয়া সপ্তরাত্র অভিবাহিত করিলা, হা কফা! তোমার অভিশয় পরিশ্রম হইয়াছে, আর পর্বতিধারণের প্রয়োজন নাই, শ্রীদামের
হস্তে পর্বতি সমর্পণ করে, অহে বয়স্য! তোমাকে এরূপ
দেখিয়া আমাদের মর্মা ভেদ হইতেছে, অথবা তুমি দক্ষিণ।
হস্তে ধারণ কর, তাহা হইলে আমরা ঐ বামহস্ত মর্দ্দন করিয়া
দি॥ ৭॥

যথা বা শ্রীদশমে ১২ অধ্যায়ে ১০ শ্লোকে ।
শুক্তেদ্ব কহিলেন, রাজনু! যে ভগবান্ হরি বিশ্বজ্ঞান্তর

মায়াজিতানাং নরদারকৈণ।
নার্দ্ধং বিজহুঃ কৃতপুণ্যপুঞ্জাঃ॥
এযু শ্রীকৃষ্ণায় যথা॥
সহচন নিক্রম্বং ভাতরার্য্য প্রবিষ্ঠং
ক্রতম্মজঠনান্তঃ কোটরে প্রেক্ষানাণঃ।

পক্ষে স্থাকাশ, পরম রগহরপ, ভক্তজনের আত্মপ্রদ পরস-দেবতা এবং মায়ালিজি জনের পক্ষে নরবালকরপে প্রতীয়-মান হয়েন, ভাঁহার সহিত গোপবালকগণ যথন ঐ প্রকারে বিহার করিতে লাগিলেন, তথন অবশ্যই বোধ হইবে, ঐ সকল বালকের পুঞ্ পুঞ্জ পুণ্য ছিল, ভাঁহাতেই তাঁহারা ভগ-সানেয় গহিত্ব স্থাভাবে বিহার করিতে প্রিয়াছিলেন ॥

ব্ৰধ্বলিকের প্রতি জ্রীক্ষের স্থ্য যথা 🛚

বল্যামের প্রতি শীকৃষ্ণ কহিলেন, হে ল্রাভঃ ! সংচর সঙ্গকে শীস্ত অধাস্থ্যের জঠনীস্তংকেটিরে প্রবিউ হইডে দেশিয়া আখার ন্যুন্তর হুইডে স্থাপিত উক্ত অঞ্চ, আয়া স্থানদলিনির বাল্পক্ষানিত ক্ষামগণ্ড:
কণমহমবসীদন্ শূন্যচিত্ততথাক: ॥
হুহদশ্চ স্থান্নণ্চ তথা প্রিয়নখা: শরে ।
প্রিয়নশ্বিদ্বত্যাকো গোঠে চতুর্বিধা: ॥
তত্র স্থান্ন।
বাংসল্যগদ্ধিস্থান্ত কিঞ্চিতে বয়সাধিকা: ।
সাযুধান্তস্য তুর্বেড্য: সদা রক্ষাশরার্ণা: ॥
হুভদ্রমণ্ডলীভন্ত-ভন্তবর্দ্ধনগোটা: ।
বক্ষেন্তিভ ভন্তাঙ্গ বীরভন্ত মহাগুণা: ।
বিক্রয়ো বলভ্রাদ্যা: হুহদন্তস্য কীর্ত্তিভা: ॥ ৮॥

গণ্ডদেশকে কালন পূৰ্বক কীণ করিয়াছিল, হে আর্য্য ! ভাহাতেই আমি কণকাল অবসম হইয়া শ্ন্যচিত হইয়া-ছিলাম ॥

গোকুলের মধ্যে জীকুফের চারি প্রকার বয়স্য হয়, বুখা হুহুৎ, স্থা, প্রিয়স্থা ও প্রিয়ন্দ্রস্থা॥

**जनार्या छहान्** यथा ॥

বাঁহারা প্রহুৎ তাঁহাদের বাংসল্য গন্ধ বিশিষ্ট স্থ্য এবং তাঁহারা জীকুক অপেক। কিঞ্ছিৎ বয়োধিক, অপ্রধারী ও সর্বাদা মুক্টগণ হইতে জীকুফাকে রক্ষা করেন॥

चूक्र नकत्नव नाम सुथा॥

হুভত্ত, স্থানিতত, ওত্তবর্ত্তন, পোন্ট, যক্ষ, ইক্সান্ট, ভত্তাল, বীরভত্ত, স্থাপ্তণ, বিশ্বর ও বল্লুক্ত প্রভৃতি, ইইারা সকলেই জ্রীক্ষাক্ষর স্কৃদ্ বলিয়া কীর্ত্তিত হবেন॥৮॥ এবাং সথ্যং যথা ॥

ধূৰন্ ধাবদি সগুলাগ্ৰামমলং তং মগুলীভদ্ৰ কিং
গুবনিং নাৰ্য্যগদাং গৃহাণ বিজয় ক্ষোভং রথা মা রুথাঃ ।

শক্তিং ন ক্ষিপ ভদ্ৰগৰ্জন পুরো গোবর্জনং গাহতে
গর্জমেষ ঘনো বলী নতু বলীবর্দারুতিদ নিবঃ ।
হুহুংহু মগুলীভদ্রবলভদ্রে কিলোভ্রমো ॥ ৯ ॥
ভক্ত মগুলীভদ্রদার রূপং যথা ॥

পাটলপটলদদ্রো লকুটকরঃ শেখরী শিথগুন ।
ভুত্তিমগুলীমলিনিভাং ভাতি দধন্মগুলীভদ্রঃ ॥

श्वकिष्ठि चाविहेवशाद श्वाः वृद्धः ॥ २ ॥

**উক্ত ञ्रह्मग**्नत मथा यथा ॥

আহে মণ্ডলীভদ্র ! তুমি কেন চাক্চিকাময় থড়া ঘূর্নিত করিছে করিতে ধাবমান হইতেছ, হে বলদেব ! আপনি শুরুতর গদা গ্রহণ করিবে না, বিজয় ! তুমি আর র্থা কুরু হইও না, তথা হে ভদ্রবর্জন ! তুমিও আর শক্তি নিক্ষেপ করিও না, ঐ দেখ অগ্রবর্তী মেঘ গর্জন করিয়া গোবর্জনে পতিত হইতেছে, ওটা বলবান র্যাকৃতি অরিকীয়ের নহে॥

স্ক্লান্তের মধ্যে মণ্ডলীভদ্র ও বলভদ্র এই ছুই জন স্বী প্রধান ॥ ৯ ॥

ভশ্বধ্যে মণ্ডলীভানের রূপ যথা॥

মণ্ডলীওটে অংক পাটল বর্ণ, মনোহর বসন, হতে নাসা বার্ণে রঞ্জিত লগুড়, মন্তকে ময়্রপুচ্ছ ও অমরের ন্যায় কান্তি-মুমুহ ধারণ করিয়া অভিশব্ন শোভা প্রকাশ করিতেছেন ॥ সধ্যং যথা ॥
বনভ্ৰমণকেলিভিগু কৈভিরহি থিনীকৃতঃ
হথং স্থপিত নং স্কর্জনিশাস্তমধ্যে নিশি।
ভাহং শিরসি সর্দানং মৃত্ করোমি কর্ণে কথাং
দ্বম্য বিস্কল্লং স্বল স্কৃথিনী লাল্য॥ ১০॥
বলদেব্য্য ক্রপং যথা॥
গণ্ডাস্তঃ স্কুরদেককুণ্ডল্যলিছ্লাবতংশোংপলং
কন্তুরীকৃত্তিত্রকং পৃথ্ছদি ভাজিফু গুঞ্জাভ্রমং।
তং বীরং শ্রদস্পুদ্যুতিভরং স্থীতকালাহ্রং

বেভরক্তর পাটণ ইভাষর:। তাদৃশেন পটেন লসদক্ষ: a > a প্রভাৱবিত্যালো করুরীকৃত্তি এক: পধ্রদি আজিকু শুভাঅক্ষিত্যের

### মগুলীভদ্রের সধ্য যথা॥

আমাদের পরমন্ত্রদ্ শ্রীকৃষ্ণ দিবদে গুরুতর্বন জ্ঞান-কেলিতে অভিশয় থিল হইয়াছেন, এক্ষণে রলনীকালে জ্ঞান-গৃহে ক্ষণে শয়ন করুন, আমি ধীরে ধীরে ইছার মন্তক মর্কন করি, সুবল! তুমি উরুদেশ সম্মাদিন করে, ॥ ১০॥

#### वलामावत क्रेश यथा ।

বাঁহার এক গণ্ডে কুণ্ডল আন্দোলিত হইতেছে, বাঁহার কর্নোৎপলে অলিসকল সকুল হইরা রহিরাছে, বাঁহার কন্ত্রীঘারা চিত্রবিচিত্র ভিলক, বিশাল বক্ষে উৎকৃষ্ট গুলা-হার আন্দোলিত এবং যিনি শর্হকালীন মেঘের ন্যায় শুল্র কান্তিশালী, লীলাম্বর ধারী গভারম্ব্রাম্বিত, আজাসুল্মিত

গন্তীররস্থনিতং প্রশাসভ্তমানত্বে প্রশাস্থা । স্থাং যথা ॥
জানতিথিরিতি পুত্রপ্রেমস্থীতয়াহঃ
রপয়তুমিহ সদ্মনাস্থা। শুস্তিগোহিসা।
ইতি স্থলগির। মে সংদিশ হং যুকৃন্দং
ফণিপতিতুদকচ্ছে নাদ্য গচ্ছেঃ কদাপি ॥ ১২ ॥
অথ স্থায়ঃ ॥
কনিষ্ঠক্লাঃ স্থোন স্বস্ধাঃ প্রীতিগন্ধিনা।

দ্বিতীয়চরণ: পাঠ:। চিত্রকং তিলকং ॥১১ ॥

ক্ষাতিথিরিতি মাসি শীরং ক্ষাক্র্কা তিথিং নতু বার্ষিকী। মহামহোং-স্বারাং ত্সাং স্বাত এব আঁঞ্জন্য সমনাসভ্বাং সোহরং চ সন্দেশঃ স্বাত্তন বিশ্বমান্ত্রা গতেন কটি তি সমাসাদ্রিভুং ন শেক ইতি গ্যাতে স্বান্ধা পূর্বা-ষ্ট্রাণি তথাজা তুতেন নাল্ডব্রিবাত ইতি ॥ ২০ ॥

ৰিশালব্যভৌজনীতি জীভাগবছে :গৌড়াদিসক্ষতঃ পাঠ:। বুষাল

ভূজ ও প্রলম্বাতী, দেই বীর বলদেকে আগ্রয় করি ১১ বলদেবের সখ্য যথা॥

বলদেব কহিলেন হ্ৰবল ৷ আমার বাক্যমারা মুকুন্দকে হল গা, আল্য ভাঁহার জনতিথি, এজন্য পুত্রস্থেহ্যয়ী জননীর সহিত আমি ভাঁহাকে স্নান করাইবার নিমিত্যুহে অবস্থিত আছি, তিনি ধেন আজ কলাচ কালিয়ছদের লিকে গমন না করেন। ১২॥

স্থাগণ যথা॥

बाहाबा कमिन्न जुना, नामानिक मधात्रमानी जाहा-

# निक्ता **अस्ति। छक्तिसाम्**ङिक्सा

বিশালর্বভৌজ্বি-দেবপ্রস্থবরূপপাঃ।
মরক্ষরুমপীড়-মণিবন্ধকরন্ধমাঃ।
ইত্যাদরঃ স্থায়েছ্স্য সেবাসেতিগ্রকরাগিণঃ।
এবাং স্থাং যথা ॥
বিশালবিষিণীদলৈঃ কল্ম বীজনপ্রক্রিয়াং
বরূপপ বিশ্বিভালকবর্গমূৎসারর।
মুষা রুষভজ্জিতং ত্যজ ভজাক্সম্বাহনং
যত্ত্রভুজ্সক্রে গুরুমগৃৎ ক্রমং নঃ স্থা।
সর্বেষু স্থিয়ু প্রেষ্ঠো দেবপ্রস্থেইয়মীরিতঃ॥
তস্য রূপং যথা॥

पुरक्षिक्वी कि कान्यानिमध्य है: ॥ ५७ ॥

# দিগকে সথা বলিয়া কীর্ত্তন করাযায়॥

উক্ত সৰা সকলের নাম যথা—বিশাল, র্যভ, ওল্পনী, দেৰপ্রস্থ, বর্ণপা, মরন্দ, কুত্যাপীড়া, মণিবন্ধ ও করন্ধম ইত্যাদি স্থাদকল কেবল শ্রীক্ষের এক সেবাবিষ্ণেই অসুরাগী ॥

# **এই मकल मश्रांत मश्रा गर्था ॥**

বিশাল ! তুমি পথিনীদল ছারা বীজন কর, বর্রপা।
তুমি চূর্বকুন্তল গুলি যাহা মুখনগুলে লম্বিত হইয়া পড়িয়াছে
দেই সকল উঠাইয়া দাও, ব্যভ !তুমি বুখা বাক্য পরিভ্যাশ্বঃ
করিয়া অঙ্গ সন্থাহন কর, যে হেতু আজ খোরভর বাহ্যুদ্ধে
ভাষাদের স্থা শ্রীকৃষ্ণ ভাতিশর ক্লান্ত হইয়াছেন ॥

(मयश्राच्या ऋण यथा॥

বিভ্রালে গুং পাণ্ডুরোন্তাসিবাদা:
পাশাবদ্ধোন্ত কুমোলির্বলীয়ান্।
বন্ধুকাভঃ সিন্ধুরস্পর্জিলীলো
দেবপ্রস্থঃ কুষণার্বং প্রতন্তে ॥ ১০ য়
সথ্যং যথা॥
শ্রীদান্ধঃ পৃথুলাং ভুজামভিশিরো বিন্যায় বিশ্রামিণং
দাল্ধঃ স্ব্যুক্রেণ রুদ্ধহৃদ্ধাং শ্যাবিরাজন্তমুঃ।
মধ্যে কুম্বির কন্দ্রম্য পদ্যোং স্থাহ্নেন প্রিয়ং
দেবপ্রস্থ ইতঃ কুতী স্থয়তি প্রেল্লা ব্রেজন্তাজ্বং ॥১৪ ॥

বেছবশাদায়: স্বাক্রেণ কক্ষা ক্ষরা নিজবক্ষো যেন তা। সমস্তস্যা-স্বত্তেন নিভ্যাপেকেণ স্কৃতিরিভি ন্যায়েন ক্ষর্ণ্যরো: স্মাসে ক্তৃতে স্বা-ক্রেণ্ডস্যুস্থক্ষা ॥ ১৪ ॥

মহাবলবান্ রক্তবর্ণ দেবপ্রস্থ হত্তে কন্দুক ধারণ ও শুক্র পীত বদনে বিভূষিত হইর। রজ্জ্বারা উচ্চ মৌলি অর্থাৎ বুটাবন্ধন পূর্বেক মত্ত করীন্দ্রের লীলা বিস্তার করিতে করিতে শ্রীকৃষ্ণের পার্মে গমন করিতেছেন। ১০॥

#### 

হে হৃদ্ধি! প্রজেজনন্দন পর্বতকন্দরে প্রীণামের বৃহছুক্ষোপরি মন্তক বিন্যন্ত করত দামনামক সথার বামবাস্থ দারা গুদর আবন্ধ করিয়া শয়ায় শরীর নিক্ষেপ পূর্বক শয়ন করিলে স্তদুক্ষ দেবপ্রস্থ প্রণয়বশতঃ পাদসম্বাহন দারা ঐ প্রিয় গুমকে স্থা প্রদান করিতে লাগিবেন ॥ ১৪॥ অধ প্রিয়দথা: ॥
বয়স্তল্য: প্রিয়দথা: দখা: কেবলমান্তিতা: ।
শ্রীদামা চ হুদামা চ দামা চ বহুদামক: ।
কিন্ধিনীস্তোক কৃষ্ণা: শুভন্তেনবিলাদিন: ।
পুভরীকবিটন্ধাখ্য-কলবিন্ধান্তমেই প্রমী ।
রময়ন্তী প্রিয়দ্পা: কেলিভিবিবিদ্য: দদা ।
নিযুদ্ধদ ওযুদ্ধাদি-কোভুকৈরপি কেশবং ॥
এমা: সখা: যধা ॥

শ্রীদানেতার দানস্থানবস্থানকি কিণর: পঠিত অপি প্রিরনর্থনথগণেছপি জেরা:। তেই প্রীকৃষ্ণাত্তকেরনরপরাং সর্করি প্রবিশ্বি। বর্থাছ প্রথ-নাবরণপূজারাং গৌতনীরে। দানস্থানবস্থান কিছিণীন্ প্রবেদ্যক্ষ পূলাকৈ:। অভ্যক্তরণরপাতে কুফাসা পরিকীর্তিতা:। আত্মাজেদেন ভে পূলাবথা কুফ্তথেব ভ ইতি ॥ ১৫॥

#### অথ প্রিয়দথা॥

যাঁহারা তুল্যবাস ও কেবল সধ্যমাত্র আতার করিরাছেন তাঁহাদিগকে প্রিরস্থা করে। প্রিরস্থাদিগের নাম যথা— প্রীদাম, স্থাম, দাম, বহুদাস, কিরিণী, স্তোকরুফা, অংশু, ভদ্রসেন, বিলাসী, পুগুরীক, বিটঙ্ক ও কলবিঙ্ক ইন্ড্যাদি প্রিরস্থা সকল বিবিধ কেলি ঘারা সর্বাদা কেলবকে স্থা প্রদান করিরা থাকেন ॥

अहे नकश विवनशाह नशा दर्श ह

সগলগদপদৈহনিং হদতি কোহপি বজোদিতৈঃ
প্রদার্যা ভুজরোর্য্ গং পুলকি কশ্চিদালিয়তে।
করেণ চলতা দৃশো নিভ্তমেত্য রুদ্ধে পুরঃ
কুশাঙ্গি প্রথয়ন্তামী প্রিয়দখাঃ দখায়ং তব ॥
এর প্রিয়বরস্যের জ্রীদামা প্রবরা মতঃ ॥
তদ্য রূপং ॥
বাদঃ পিঙ্গং বিভ্রতং শৃঙ্গপাণিং
বদ্ধপৌদ্ধং দোহদালাধ্যেন ॥
তাত্রোফীষং শ্যামধামাভিরাকং
জ্রীদামানং দামভাজং ভজামি ॥১৫ ॥

হে কুশালি! তোমার স্থাকে কোন প্রিয়স্থা গদাদ স্বরে নড়োক্তিমারা পরিহাস করেন, কোন প্রিয়স্থা পুলকশালী ভূজম্বর প্রশারণ পূর্বক মালিঙ্গন করেন এবং কোন কোন প্রিয়স্থা পশ্চাৎদিক্ দিয়া গিরাচপল কর-মারা সম্মুখে চফুর্র মাবদ্ধ করিয়া হুখ প্রদান করিয়া থাকেন।

आहे नकेन श्रिप्तवयदगात मत्या श्रीमांम मर्त्यालका श्रथां ॥ श्रीमारमत क्रथ यथा ॥

যাঁছার পাঁডবদন পরিধান, হতে শৃত্র মন্তকে ভাত্রবর্ণ উফীর, শরীর মনোহর শ্যামবর্ণ ও গলদেশে মালাএবং যিনি শোহদ্যবশতঃ মাধ্বের সহিত স্পর্ক্তা করিয়া থাকেন, সেই मधाः वेषा ॥

क्रर ना द्याक्ष्यी क्रंटिक वामूनकरि क्यानक्ष्यीत्रेति। निका मृद्धिनिरकाश्ति एक निविद्धारहरैया स्थीने द्यौनेता। क्राया मकार्यकर्मेरने क्ये भेनोक् का द्यनया एक यहर क्रि. दशक्रि कियकीकैविकावित्रका मर्कार विभवनित्रेति ॥ व्यव व्यवस्थानम्बद्यम्भाः ॥

विषयनेष्यमाञ्च पूर्वत्वार्गाक्य वर्षाः।

অবোৎসাহারিবর্তুনে কালিনী চটজুবীজাবিভি ব'রন্পর্বিবং বর্ণিকবের। নৌরুবন্ধ করে আরুং স্থাবিভি পূর্বদেশ কর্ণারিভি বং ম ইজি। মা ধ্যন্ত ইজাবৌ ব্রেয়াবহারে পাবেরাব্যাে কর্বজীজার্বঃ। যত ইজাবেন আকারেণ স্থানিবন্ধানিব বিশ্বাসাভি ৪ ১৬ ৪

#### क्षिणाटमस मचा वर्षा ।

ख्यां श्री क्षेत्र कि विद्यान कर्ता । पूजि एक वर्ता । व्याप्त विद्या क्षेत्र । व्याप्त विद्या क्षेत्र । विद्या कि विद्य कि विद्या कि वि

चर विश्वजीनश् ।

विश्वना प्रमा मका गुर्स गुरी क्षेत्र, गया व विश्वनी वाष्ट्रवि व्हेट्ड ट्यार्ड, निरमर जीवनाति वर्षः परिनति वर्षा- আত্যন্তিকরহস্যের যুক্তাভাববিশেষিণঃ।
স্বল্। জন্মর্বান্তে বসন্তোজ্বলারয়ঃ॥ ১৬ ॥
এবাং স্যং যথ। ॥
রাধাসন্দেশরূপং কথয়তি স্বলঃ পশ্য কৃষ্ণস্য কর্পে
শারা কলপ্লেখং নিভূতমূপহর্জ্যুজ্বলঃ পাণিপারে।
পালীতাস্থ্যাস্যে বিভরতি চতুরঃ কোকিলো মুর্দ্ধির ধতে
ভারা দামেতি নর্মা প্রশাসহচরাত্তবি তরন্ধি স্বোং॥
বিশ্বন্দ্রম্যুব্যুব্যুব্যাস্যু প্রবলো স্বলোজ্বলোঃ॥

সূচ ভাৰবিশেষ তথ প্রেরণীসাহায্যময়তৎক্ষ্পদিৎসৈবেতি দর্শরতি রাধেতি। ভাষিকং শ্রীকৃষ্ণস্যা দুক্যোমিশিং স্থানঃ ৪ ১৭ ॥

## कार्या नियुक्त थारक ॥

श्रियनच्च वर्षमानिश्वत नाम यथा— स्वन, जन्द्रि, शन्दर्य,

अहे मकल व्याय मर्जनशामित्रात मश्रह यथा ॥

ক্ষেত্র দুতীগণ পরস্পর কহিলেন হে কুণালি! এ দেশ অবল জীরাধার সন্দেশ সকল জীকুক্টের করে বাদান উত্থান শালিক কলপলেখা নির্কনে জীকুফের করে বাদান করিছেছে, চতুর পালপ্রদত্ত ভাত্বল জীকুফের বদনসংখ্য অপণ করিছেছে এবং কোকিল ভারালগ্রিত বনমালা জীক-ক্ষের মন্ত্রকে ধারণ করিভেছে, হে স্থি! এই রূপে প্রিয়ন্ত্র লখাসকল জীকুকের সেবাকার্য্যে নিযুক্ত রহিরাছেন ॥ বিয়ন্ত্রী স্থাসকলের মধ্যে স্থবল ও উজ্জ্বল সর্বা প্রধান ম ख्य देवनमा क्रमः यथा ॥

ख्युक्तिविधिकहित्रगाः

इतिप्रतिकः इक्षिणः इतिष्यनः ।

द्वार क्रमार्गानः

नग्रनामकशंक्रयः वटन्म ॥ ५५ ॥

मधाः यथा

वयमारगोर्छामशिरनिष्ठरव्यु

विभाग्नमाग्रामि मधवमा ।

खरिनाङ्कामा क्रांमि यक्ष वार्छा ॥

ख्यानमा क्रांमि यक्ष वार्छा ॥

ख्यानमा क्रांमि यक्ष वार्छा ॥

मः व्या मारिक कर्ना नाम क्खारेगाफार्यक्र एन कामझः ३२৮ ।

ভশ্মধ্যে হুবলের রূপ যথা 🖁 🕝

বাঁহার অস কান্তিবারা প্রবর্ণের শোভা তিরক্ষ হই-তেছে, বিনি হরির অভিশয় প্রিরপাত্তে, বাঁহার গলদেশে হারু, পরিধান হরিদর্শ বসন ও ইন্দীবরতুল্য লোচন, এবং নীজিন যারা যিনি বাধাবগণের আনন্দ উৎপাদন করেন, রেই প্রবর্গে প্রণাদ করি ৪ ১৭ ট

श्वरणत गर्भा यथी

স্থানপুন বন্ধগ্য গোড়ীতে প্রিয়নর্থসথা সকলের মধ্যে স্থান্ধ পের সহিত্য মাধ্যের কোন সক্ষেত্রতী বার্তা ক্ষরাছিল, কিন্তু অব্যে তাহার ভাহপুরা অবধারণ করিতে পারে নাই ্রা জরণাশ্বরমৃচলেকণং
মধুপুস্পাবলিভি: প্রসাধিতং।
হরিনীলরুচিংহরি প্রিয়ং
মণিহারোজ্মলম্ব্রুণং ভলে॥ ১৮॥
স্থাং যথা॥
শক্তান্মি মানমবিতুং কথমুজ্জ্বলোহয়ং
দূত: সমেতি সৰি যত্র মিলত্যদূরে।
সাপত্রপাণি কুলজাপি পতিব্রতাপি
কা বা বুইদাতি ম গোপরুষং কিশোরী॥

শিক্ষাশীতার কথমিতান্তমেকং বাকাং সমেতীতান্তমনাৎ শেষমপরং। সাপ-অংশেতাাদৌ যালপি লক্ষাকৃলধর্ম ছরানামেকতরেংশি সতি মর্যাদাল্ভ্যনং ন সংবিং তথাশি সর্কোষ্শি তেরু সংস্কা গোশবৃষং গোশস্তাইং আক্রিকং ন বৃষ-

### खेळ्यालात काश यथा॥

বাঁছার অরণ বর্ণ বসন পরিধান, বাঁছার চক্ষু অভিশর চক্ষন, যিনি বসস্ত পুল্পবারা বিভূষিত, যিনি কৃষ্ণভূল্য নীল-কাভিশালী, বিনি জ্ঞীকৃষ্ণের অভিশয় প্রিয় এবং যিনি মণি-ছারে উজ্জ্বল, নেই উজ্জ্বাকে ভঞ্জনা করি॥৮॥

## **उच्चरनम** मध्य यथा॥

স্থিত আমি কির্মণে মানরকা করিছে সমর্থ হইব, ঐ দেও উজ্জল দূর জাগমন করিভেছে। ধেথানে উজ্জল আসিরা উপস্থিত হর, সেথানে কোন্ লজ্জানীলা, কুলজা, পভিগরা-ঘণা, গোপকিলোরী আছে যে, সে গোপকিশোরকে ভারনা দা করে १॥ উদ্ধালাহয়ং বিশেষেণ সদা নর্মোক্তিলালসঃ ॥ ১৯ ॥
যথা ॥
ত্যুরদত্ত্তরঙ্গাবর্ধিতানরবেলঃ
স্থাপুররসরপা তুর্গনাবারপারঃ।
জগতি যুবতিজাতিনিস্নগা দং শম্দ্রভালিয়মঘহর দ্বাধেতি সর্বাধানৈবল
এতেযু কেহণি শাস্তেযু কেহণি লোকেরু বিশ্রুতাঃ॥ ২০

স।তি ল কামরতে কিন্তু সবৈধি কামরত ইতার্থ: ১৯॥

কৃষ্ণপক্ষে বৃদ্ধি চা জিলা জনল। বেলা স্থ্যাদা বেন। স্মূলণক্ষে বৃদ্ধি চা এখিতা বেলা জলং বেন। বেলা স্যান্তীরনীরলোরতামর: ॥ ২০ ॥

এই উজ্জ্ব সর্বদা বিশেষ রূপে পরিহাস বিষয়ে লাল-শাষিত॥ ১৯॥

### वथा ।

হে অবহর ! ত্মি আপনার ক্ল অভিশয় রূপে হর্মন করত চুর্গম অনিবার্যাপার হইয়া সমুদ্রস্থরপ হইয়াছ, জগতে বে সকল যুবতিজাতি আছে তাহারা কলপতিরল বিভার-পূর্বাক হ্মধ্র রসময়ী মদীসরপা হইয়াছে, অভএব ভাহারা যে দিকু দিয়াই পদস কর্মক না কেন, সকল যুবতী-নথী ভোষাতেই আগিয়া মিলিত হইবে ৪

अहे नकत न्यांगलत यात्र दक्ष दक्ष याञ्चलिक छ दक्ष का दक्ष वा दक्ष व्यक्तिक ॥ २०॥ নিত্যপ্রিয়াঃ হ্রেচরাঃ সাধকাশ্চেতি তে বিধা।
কেচিদের ছিরা জাত্যা মন্ত্রিব তমুপাসতে।
তং হাস্মন্তি চপলাঃ কেচিছৈহাসিকোপমাঃ।
কেচিদার্জবসারেণ সরলাঃ শীলয়ন্তি তং ॥ ২০॥
বামা বক্রিমচক্রেণ কেচিছিস্মায়মন্ত্রমুং।
কেচিং প্রগণ্ডাঃ কুর্বন্তি বিত্তামনুনা সমং।
সৌম্যাঃ হ্রন্তয়া বাচা ধন্যা ধিস্বন্তি তং পরে।

সাধকা: সাধনসিদ্ধা: । যদ্যপি হ্বরচরা জাগি সাধকা এব ভথাপি বিশেষং স্প্রিছে: পৃথপ্রচাত্তে ॥ ২১ ॥

বিশায়র শ্রীভাস্কস্থাকার বর্ষণা এব পাঠ:। তে গুনিল শুক্তেইশি হেতৃভয়-খাভাষার বিশাপর স্থি ইতি সাং বিশের য়খীতি মূল পাঠে তু কুতেইপি তং ক্ষেতি তলাচত্তে ইতি কৃদ শ্বংখিত কুর্মন্তমাচতে কারম্ভীতিবং। বাদিতবন্তং

উক্ত স্থাস্কল নিত্যপ্রিয়, দেবতা ও সাধক ভেদে তিন প্রাক্তার হয়, তাহাদের মধ্যে কেহ কেহ স্থাবসিদ্ধ স্থিরভাবে সন্ত্রের ন্যায় প্রীকৃষ্ণকে উপাদনা করেন, কেহ কেহ চপল স্থভাব পরিহাস্করূপে প্রীকৃষ্ণকে হাস্য করান এবং কেহ কেহ স্বলম্বভাব ঋজু ব্যবহারধারা প্রীকৃষ্ণকে স্থা করেন॥ ২১॥

কেং কেং বা প্রভিক্শ বক্ষভাব শক্ষ ছারা প্রীকৃষ্ণকে বিশ্মিত করেন, কোন কোন প্রণল্ভ বালক ক্ষেত্র সহিত্ত বাদ বিবাদ, কতকগুলি হশীল ধন্য বালক হৃমিত বাক্যছারা প্রীকৃষ্ণকে হুখী করেন। এই সকল স্থা স্থভাবতই মধুর,

তবং বিবিধনা সর্প্রে প্রকৃত্যা সধুরা অসী।
প্রিক্রনৈক্রীনৈচিক্রী-চাক্রতামুপচিম্বতে ॥
অথ উদ্দীপনাং ॥
উদ্দীপনা ব্য়োরূপ শৃঙ্গবেণুধরা হরেং।
বিনোদ নর্ম্ম বিক্রান্তি গুণাং প্রেষ্ঠজনাস্তথা।
রাজ-দেশবভারাদি-চেন্টাসুকরণাদয়ঃ॥
তক্র বয়ং॥
বয়ঃ কৌমার পোগ্রু কৈশোরক্ষেহ সম্মতং।

প্রবোজিতবান্ অধীবদ্দিতিবক্ত। প্রাক্ত তিপ্রত্যাবৃদ্ধি: স্যাং। উচ্মাথাতবাান, উল্লেখ্যত সা ন দৃশ্যতে হণীতি চেৎ ন দৃশ্যতাং নাম কিং ভাবভা কটেন॥ ২২॥

ইহাঁর। পৰিত্র বন্ধু তাদারা নানা কার্গ্যে বিচিত্রভা সম্পাদন করেন॥

व्यथ मश्रातरम डेम्हीशन ॥

হরিদয়কীয় বয়স, রূপ, শৃঙ্গ, বেণু, শহাতথা বিনোদ, পরিহাস পরাক্রম প্রভৃতি গুণ এবং প্রিয়ন্তন ও রাজ, দেব অবতরাদি চেফীর অস্ক্রণ ইত্যাদি সকলকে স্থারশের উদ্দীপন বলে।

তন্মধ্যে বয়দ যথ।॥

প্রীকৃষ্ণের বয়স তিনপ্রকার-কৌষার পৌগণ্ড ও কৈলোর পর্যাত্ত পৌগণ্ড বংসর পর্যাত্ত কৌমার, দশ বংসর পর্যাত্ত পৌগণ্ড এবং পঞ্চদশ বংসর পর্যাত্ত কৈলোর, পশুভূগণ এইরপ নিশ্চর করিছাছেন।

পোঠে কৌমারপোগণ কৈশোরং পুরগোর্চয়েঃ॥
তত্ত্ব কৌমারং যথা॥
কৌমারং যংগলে বাচ্যং ভতঃ সংক্রিপ্য লিখ্যতে॥ ২২॥
যথা প্রীদশমে॥
বিভ্রমেণুং জঠরপটয়োঃ শৃঙ্গবৈত্ত্বে চ কক্ষে
বামে পাণে মহুণক্ষলং তৎফলান্যস্থায়।

বিজ্ঞদিতাসায়মর্থ:। অঠরণটয়োম ধ্যে বেণুং বিজ্ঞং। বামে কক্ষে শৃলবেজে বিজ্ঞং। মস্পক্ষণ দ্বাদি স ক্ষত ভক্তপি ওং পত্ত পাত্র সন্ধৃতি বামে পানে বিজ্ঞং। তৎক্ষণানি তদস্তর্থনীয়ানাখাদ্যভাগাংশ্য ক্রেমেণ দক্ষিণপাণ্যক্ষীয় বিজ্ঞং। ভোজনেহিশ বুথা মুখস্পর্শোন স্যাৎ তথা স বিনোদং গৃহুদ্বিভার্থ:। খং পরিতো বর্ত্তমানান্ অ্বদঃ বৈর্ব্যাধারণৈ ন বিভিত্তিসমন্। অর্গে অর্পত্তে

গোক্লমণ্যে কোমার ও পোগও বয়দ, আর পুর ও গোক্ল এই ছুইয়েতে কৈশোর বয়দ ॥

ভন্মধ্যে কোনার যথা।

কৌমার বয়স বংসলরসেই উপরুক্ত, এ কারণ এছলে সংক্রেণে নিশিত হইতেছে॥ ২২ ॥

यथा खिनमदम ३० व्यक्षादित्र २ दल्लादिक ॥

শুরুদের কহিলেন হৈ রাজন্ ! ভগবান্ প্রীরুক্ষ মঞ্জুক্
হইরাও দেই সকল গোপবালকের মধ্যে বলিয়া যে ভোজন
করিলেন ইহার কারণ এই, যে সময় আপনি বালকের কেলি
বীকার করিয়াছিলেন, তিনি উদয় ও বসনের মধ্যে বেণু, বাদ
কক্ষে শুল ও বেজ, বামহত্তে দ্যাদিসংক্ষ্ত অমণিও এবং
দক্ষিণ হত্তের অসুলীসকলের সন্ধিত্ত ক্ষতিজনক শিলু

তিষ্ঠথাধ্যে স্বপরি স্কলে। ছাসয়ন্ধভিঃ বৈ.
স্বর্গে লোকে মিষতি বৃভূজে যজ্ঞভূথালকেলিঃ॥
তথ্য পৌগশুং॥
ত্যাদ্যং মধাং তথা শেষং পৌগশুক বিধা ভবেং॥
ত্যাদ্যং পৌগশুং॥
তথ্যাদ্যং স্লোহিত্যং জঠনস্য চ তানবং।
ক্ষুথীবোদ্যমাদ্যক পৌগশু প্রথমে সতি॥ ২০॥

লোকে মিয়তি কিমিদমপুক্ষিতি পশ্যতি সতি অপুক্তি কারণমাহ যজজুথা-লংক্সিরিতি। বোহরং সজে দৃষ্টিমাবেণ ভোকে। সোহয়মেৰ বালকেলিঃ সন্ বুজুফে ইতি॥২০॥

প্রভৃতি ফল ধারণ করিয়াছিলেন। আর আপনি পদ্মের কর্নিকার ন্যায় সকলের অভিমুখে থাকিয়া নিজের চতুদ্দিকে উপবিষ্ট স্থান্তকে স্থীয় পরিহাণ বাক্যে হাস্য করাইতে-ছিলেন, স্থান্থানী দেবগণ আশ্চধ্যান্থিত হইয়া ঐ ধ্যাপার নিরীক্ষণ করিতেছিলেন॥

অপ পৌগও ॥
আদ্য, মধ্য ও শেষ ভেদে পৌগও তিন প্রকার হয়॥
তম্মধ্যে আদ্য পৌগও যথা---

অধরের মনোহর রক্তিমা, উদরের কুশতা ও কণ্ঠে শন্থের ন্যায় রেখাত্রয়ের উদ্যাম। ইত্যাদি প্রথম পোগণ্ডে প্রকাশ ইইয়া থাকে॥২০॥ यथा ॥

তুদাং বিলাতি তে মুক্দা শনকৈরশ্বপাপত্র প্রিরং
কঠং কস্থ্যদস্কাক ভজতে রেখাত্র মুজ্জনাং।
আরুদ্ধে কৃরুবিদ্দ কদলরুচিং ভুচন্দ্র দন্তচ্ছদো
লক্ষীরাধুনিকী ধিনোভি স্কলামকীণি সা কাপ্যসো॥
পুষ্প মন্তন বৈচিত্রী চিত্রাণি গিরিধাতুভিঃ।

ভূক্ষমিভাগেতচরাণামধুণা পুন্রাগভানাং বৈদেশিকবন্দিনাং বচনং। আফ্রে ব্লীকরোভি ক্ষুব্দিভি তেন ভূলাক্রিয়া চেরভিঃ। এবং লক্ষণাংশি ক্ষুব্দ্গী-বারা উদগম ইভার্থঃ। কুক্বিক্লঃ প্রারাগঃ। মা কাশীভি বর্ণরিভূমশকেন্ ভার্থঃ॥ ২৪॥

#### यथ। ॥

বৈদেশিক বন্দিগণ যাহারা পূর্ক্সে একবার আসিয়া জীর-ক্ষকে দর্শন করিয়াছিলেন, ভাঁহারাই পুনরাগমন করিয়া জীর-ক্ষকে দর্শনিপূর্বক কৰিলেন, হে মুকুন্দ! ধীরে ধীরে ভোমার উদর অখ্যপত্ত্রের নাল শোভা ধারণ করিতেছে, হে অন্ধূলাক ! একণে ছদায় কণ্ঠ কন্থুর ন্যায় রেখাত্রেয়ে উজ্জ্বল হই-ভেছে, তথা হে ভূচক্র! ভোমার দন্তচ্ছদ অধরোষ্ঠ পদ্মরাগন্মনির শোভাকে বশীভূত করিতেছে, যাহা হউক আধুনিক ভোমার কোন অনির্ক্তনীয় শোভা হাহাদগণের নয়নসকলকে আনন্দ প্রদান করিতে লাগিল।

পৌগণ্ড বয়সে পুষ্পালক্ষারের বিচিত্রতা, গৈরিকাদি ধাতু দ্বারা চিত্র বিচিত্র ও পীত বর্ণ পট্টবন্ত্রাদি। এই সকল প্রসাধন পীতপট্রক্লাদামিহ প্রোক্তং প্রদাধনং।

দর্শ্বটেবীপ্রচারেন নৈচিকীচ্য়চারনং।
নিযুদ্ধকেলি নৃত্যাদি শিক্ষারভোহত্র চেষ্টিতং ॥ ২৪ ॥

যথা॥
ব্রন্দারন্যে সমস্তাং স্থ্রভিনি স্থাভীবৃন্দরকাবিহারী
ভঞ্জাহারী শিখওপ্রকটিতমুক্টঃ পীতপট্টাম্বর শ্রীঃ।
কর্ণান্ত্যং কর্ণিকারে দধদলমুর্মা ক্রমন্নীক্যাল্যং

কুলা মল্লো যদ্মিকাদৃশং মাণাং দধং। অএ বদাণি উণাদাব্জনদতেন দলিকা লক্ষ্ ব্যাধিত:। মলীশক্ষ প্রামাণিক এব মত:। অমরেণচ তৃণশূলান্ত মলিকেতি পঠিত:। তথাপি দর্বিদ্যাত স্থীতি ফ্লোলীফলীশকেতি। মিল্লেল্কিনী মলীলামেতি কবি ভং স্থীকত বাদ্যাপি াতে তৃত্যান্তম্ভ তংশশংকু বাপি ন দুশতে তাত পাঠান্তমন্ত ভাকং। তিলকু ধুনেত প্রিমুইণার্থনীমেতি

### বলিয়া উক্ত হইয়াছে ৷৷

অপর, বনসমূহের মধ্যে গমন করিয়া গোচারণ, বাছ্ যুদ্ধকেলি ও মৃত্য শিক্ষারন্ত, ইত্যাদি সকল পোগও ব্রুদের হেফী॥ ২৪॥

#### घर्गा ॥

শ্রীকৃষ্ণ দৌরভ শালি বৃন্দাবনের সর্বাদিকে গাভীরন্দের রক্ষা নিরে ক্রাড়াপর হইয়। গলদেশে গুঞাহার সন্তকে ময়ুর পুচ্ছের চূড়া, পীতবর্ণ পট্টবদন পরিধান তথা কর্ণবয়ে কর্ণি-কার পুল্প এবং বক্ষ:ছলে মল্লীকৃত্যসের মালা ধারণ করিয়া শৃত্য করিতে করিতে বাত্যুদ্ধরকে নটের ন্যায় শাসরা নৃত্যন্ দোষ্ ভরকে নটবদিছ সধীক্ষরতোষ কৃষ্ণ: ॥
অথ মধ্যপোগণ্ডং ॥
নাসা স্থাশথরা তুঙ্গা কপোলো মণ্ডলারতী।
পার্শাদ্যঙ্গং স্থবলিতং পোগণ্ডে সতি মধ্যমে ॥
যথা ॥
তিলকুস্থমবিহাদিনাদিকাজী
র্বমণিদর্পন্দর্শনাশিগণ্ডঃ।
হরিরিহ পরিমৃষ্টপার্শনীমা
স্থম্যতি স্থীন্ স্থ্যু স্পোভ্যৈব ॥
উষ্ণীয়ং পট্ট স্তোখ পাশেনাত্র তড়িব্রিধা।

পরিষ্ট্রসুলাপাখানাং দীমা মধ্যাদা তেষামুর্দ্ধং বিরা**জমান ইভার্থঃ** ॥ ২৫ ॥

যে স্থাগণ আমাদিগকে আনন্দ প্রদান করিতেছেন।
অথ মধ্যপৌগণ্ড।

মধ্য পোগতে নাদা ও ললাট উচ্চ, গওস্থল মওলাকৃতি ও পার্যাদি অঙ্গ দকলে স্পাটরপে ত্রিবলি রেথা যুক্ত হয়॥ যথা॥

যাঁহার নাসিকার শোভা তিলকুস্থমকে উপহাস করি-তেছে, যাঁহার গণ্ডদেশ মণিদর্পণের দর্পকে চুর্ণ করিতেছে এবং যাঁহার পার্খদেশ অভিশয় উজ্জ্বল, সেই হরি স্বীয় শোভা দ্বারা ভামরা যে স্থা আমাদিগকে স্থা প্রদান করিতেছেন ॥

মধ্য পৌগতের ভূষণ যথা—বিত্যুদ্বর্ণ পট্টসূত্র-জনিত
দক্ষ্বারা উফীষ বন্ধন এবং অগ্রভাগে স্বর্ণ মণ্ডিত, তিন হস্ত

যষ্টি: শ্যামা ত্রিছজোচ্চা স্বর্ণাগ্রেড্যাদিমগুনং।
ভাগীরে জ্রনিড্নং শৈলোদ্ধারণাদ্যক চেম্নিডং॥ ২৫॥
যথা ॥
যম্ভিং হস্তত্ত্রয়পরিমিডাং প্রাস্তর্যাঃ স্বর্ণবদ্ধাং
বিজ্ঞদীলাং চটুলচমরীচারুচুড়োক্ষ্বলঞ্জীঃ।
রঙ্গোক্ষীয়ঃ পুরটরুচিনা পটুপাশেন পার্শ্বে
পশ্য ক্রীড়ন্ স্বথয়তি সথে মিত্রবৃক্ষং মুকুক্ষঃ॥ ২৬॥
পৌগগুমধ্য এবায়ং হরিদীবান্ বিরাজতে।

চমরীতি মঁজনীতিশাকণ। চুড়া মল্পকমধাবদ্ধকেশভতি**ন্তরা নাত্যরতরা** স্থান্ন স্বচ্ছোকীবাঞ্চল বুভরা উজ্বা শ্রী র্যসা। পট্পাশেন বদ্ধ: সংশাভং কিঞ্-বেষ্টিত উক্ষীবোষণা সং ॥ ২৬ ॥

মাৰুৰ্বাণ বৰ্ণপুঠভাদীনাং মৈনোরমভেনাফুভং লোকবিশ্বরকারকং ক্লণ মাকারো বস্যাস ভদ্ধপথাং কৈশোরাগ্রাংশভাগিব বিভাতি যথান্যঃ স্কলিকণ

**উक्त भागिवर्ग गर्छि भावन ॥** 

মধ্য পোগণ্ডের চেফা যথা—ভাণ্ডীরভটে ক্রীড়া ও পর্বত। উত্তোলনাদি॥ ২৫॥

### ग्रथा ॥

মাধুর্গান্তু জরপত্বাৎ কৈশোরাগ্রাংশভার্গিব ॥ ২৭ ॥
তথ্য শেষং ॥
বেনী নিতম্বলম্বাগ্রা লীলালকলভাত্যুতিঃ ।
তাংসয়োস্তমতেত্যাদি পৌগণ্ডে চরমে সতি ॥
মথা ॥
তথ্য লীলালকলভিক্যালম্ক ভং বিভ্রদাস্যঃ
চঞ্চবেনীশিথরশিথ্যা চুম্বিভ্রোণিবিম্বঃ ।
উত্তমাংসচ্ছবির্ঘহরো রক্ষমন্ত্রীয়ৈব

সম্পারো রাজকুমারোহণি তদগ্রাংশভাক্ সন্বিরাজতে তথা তস্য কৈশোরা-গ্রাংশভাগন্ধ স্কতো বিলক্ষ ইত্রে ৮২৭॥

লীলয়া বিনাকায়া অলকলভায়া চাতিঃ শোভা ॥ ২৮॥

কৈশোরাংশের ন্যায় ক্রীড়াপার হইয়া বিরাজ করিতে-ছেন॥২৭॥

### অথ শেষপৌগও॥

শেষ পোগণ্ডে নিতম পর্যান্ত লম্বিত বেণী, লীলানিবন্ধন চুর্ণ কুম্বলের বিন্যাস এবং ক্ষমন্বয়ের উচ্চতা হয়॥

### यथा ॥

যিনি সন্মুখন্থ বিলাস শালিনী অলক লতিকায় অলক্কত বদন দাৱণ করিয়াছেন, যাঁহার চঞ্চল বেণীর অগ্রন্থাগ নিত্র পর্য্যন্ত লন্ধিত হইয়া পড়িয়াছে এবং যাঁহার উচ্চক্ষম্মে শোভা-তিশয় প্রকাশ পাইতেছে, দেই অঘনাশন শ্রীকৃষ্ণ অঙ্গলক্ষীর দারা প্রিয়বয়স্য সকলে রঙ্গ বিস্তার করিতে করিতে গোকুল হইছে গমন করিতেছেন॥ নাসালেষ প্রিয়সবয়সাং গোঁকুলানির্জিনীতে ॥
উদ্ধীষে বক্রিমা লীলা সরসীরুহপাণিতা।
কাশ্মীরেণের্পুপুরাদামিই মন্ডনমীরিতং ॥ ২৮ ॥
যথা ॥
উদ্ধীষে দরবক্রিমা করতলে ব্যাজ্জি লীলাস্কুলং
গোর শ্রীরেলিকে কিলোর্জ্বিলকঃ কন্ত্রিকাবিন্দুমান্।
বেশঃ কেশব পেশলঃ স্থবলমপ্যাঘূর্ণিত্যদা তে
বিক্রান্তং কিমৃত স্বভাবমুক্রলাং গোষ্ঠাবলানাং ভতিঃ ॥

উফীবে দরেতি। গৌরে ভালে আদে কুকুমদিবাদুর্দ্ধতিলক ইতি বা পাঠ:। বিক্রান্তমপি অ্বলমিতাখর: ২৯ ॥

## অন্ত্যপৌগণ্ডের ভূসণ যথা n

উদ্ধীদের বক্রিমা অর্থাৎ বক্র করিয়া উদ্ধীদ বান্ধা, হস্তে লীলাপদ্ম ধারণ এবং কুঙ্গুম ছারা উদ্ধিপুগুদি নির্মাণ এই সক-লকে অন্ত্যপৌগণ্ডের ভূষণ বলে॥ ২৮॥

### यथा ॥

স্বল কহিলেন হে কেশব! তুমি উফীবে বক্তিমা, হস্তে প্রফুল দীলাকমল এবং ললাটে কস্ত্রীবিন্দুশালী কল্পমরচিত্ত উদ্ধিপুণ্ড ধারণ করিয়া যে মনোহর বেশ বিস্তার করিয়াছ, তদ্ধারা প্রবল পরাক্রমশালী আমি যে হ্বল অমাকেও আঞ্জ ঘূর্ণিত করিতেছে, অভএব স্বভাব মৃত্রণা অভবালাদিগের ক্থা কি ? অর্থাৎ ভাহারা ত অবই মৃশ্ধ হইবে॥

এই অন্তাপোগণ্ডে বাক্যের ভন্নী, নর্ম্মনথাদিগের সহিত্ত কর্ণাকর্ণি কথারস এবং ঐ সকল নর্ম্ম স্থাদিগকে স্থীপে ষ্মত্র ভঙ্গী গিরাং নর্ম্মার্থিং কর্ণকথারদঃ।

এমু গোপালবালানাং শ্রীশ্লাঘেত্যাদিচেন্তিতং॥

যথা॥

ধর্ত্ততং যদবৈষি হৃদ্যাত্রমতঃ কর্ণে তব ব্যাহরে

ধূর্ত্তত্বং যদবৈষি হৃদ্যাত্মতঃ কর্ণে তব ব্যাহ্রে
কেয়ং মোহনতা সমৃদ্ধিরধুনা গোধৃকুমারীগণে।
অত্যাপি হ্যুতিরত্বরোহণভুবো বালাঃ সথে পঞ্চযাঃ
পঞ্চেষু র্জগতাং জয়ে নিজধুরাং যত্রাপ্রিমাদ্যতি॥
অথ কৈশোরং॥

কৈশোরং পূর্বিমেবোক্তং সংক্ষেপেণোচ্যতে ততঃ॥ ২৯॥

গোক্ল বালিকাদিগের শোভার প্রশংসা করণ ইত্যাদিকে চেফা বলে॥

### যথা ॥

কৃষ্ণ ! তুমি অভিশয় ধূর্ত, যে হেতু মনোগত ভাব সকল জানিতে পারিয়াছ, অত এব তোমার কর্ণে বলিতেছি, এক্ষণে গোপকুমারী সকলে এই কোন মোহনতা শক্তির সমৃদ্ধি প্রকাশ পাইভেছে, ভশ্মধ্যে আবার পাঁচ ছয়টা কুমারী অভিশার ক্ষপতী, হে সংখ ! বোধ হয় পঞ্চবাণ কল্পপ এই পাঁচ ছয় জনেই জগজ্জয়ের ভার সমর্পণ করিয়া স্বয়ং মন্ত হইয়া- ছয় জনেই জগজ্জয়ের ভার সমর্পণ করিয়া স্বয়ং মন্ত হইয়া- ছয় জনেই জগজ্জয়ের ভার সমর্পণ করিয়া স্বয়ং মন্ত হইয়া-

### অথ কৈশোর॥

কৈশোর পূর্বাই উক্ত হইয়াছে তথাপি এ স্থলে সংক্ষেপে বলিতেছি॥ यथ। ॥

পশোৎ নিক্ত বলিজয়ী বরলতে বাসৃস্তভ্তিমণ্ডলৈ
প্রোম্মীলঘনমালিকাপরিমলন্তোমে তমালছিবি।
উক্ষত্যস্থকচাতকান্ স্মিতরসৈদ মোদরাস্থোধরে
শ্রীদামা রমণীররোমকলিকাকীর্ণাঙ্গশাখী বড়ো ॥ ৩০ ॥
প্রায়ঃ কিশোর এবারং সর্বভক্তের ভাষতে!

উংসিক্তেতি প্রোত্মীলনিতি চ শ্রীদামেদরসা পক্ষে সপ্তমান্যপদার্থঃ ।
অন্তোধরপক্ষে তৃতীরানাপদার্থঃ শ্রীদাম দামোদররোন বাজেধররোরিবাজ্যভাবেশেন পরম্পরমানিদিভরেবর্বনিমিদং। তত্মার্লভাবনমালাশাধিনাং তত্ত্ব
তাতকাং তাত্কতি সিক্তি দামোদরাজোধরে শ্রীদামা বড়ো তৎসংসম্বভার
বিরেক্ত ইতার্থঃ। তদেবং তদতেদমিব প্রাপ্তং দামোদরাজ্যোবরং বিশিন্তি উৎসিক্তেভাদিনা। বনস্থানীরকেন শ্রীদামানং বিশিন্তি রম্পীরেতাদেন রম্পীর
রোমক্ষিকাভিরাকীর্ণা ব্যাপ্তঃ অক্তর্মণা বাহ্বাদিলক্ষণাঃ শাধিনো বত্ত্ব সংগ্রুত ব্যাপ্তঃ
ভারুত কিশোলঃ শৈশ্বমিশ্রবিষন এব পন্য সর্বভাক্তের প্রাপ্তঃ

### यथा ॥

আশ্বর্য দেখ, ত্রিবলীরূপ উৎকৃষ্ট লভা সেচনকারী, বস্ত্র-রূপ মনোহর বিদ্যুদ্ বিশিষ্ট, বিক্সিড বনমালার সৌরভর্শালী, ভ্রমালবর্ণ ও নেত্রচাতক-ভৃত্যি জনক, দামোদরশ্বরূপ জলধুরে রমণীয় পুলকাকুল-কলেবর শ্রীদাম-রুক্ষ পোভা পাইতেন্দ্রে । ৩০ ॥

बिह्य थात्र किलावपूर्विट्टे एक गुरुता क्षेत्राण

ভেন যৌবনশোভাস্য নেহ কাচিৎ প্রপঞ্চিতা ॥ ৩১ ॥
অথ রূপং যথা ॥
অলকারমলজ্বা তবাসং পকজেকণ ।
স্থীন্ কৈবলবেবেদং ধাসা ধীমন্ ধিনোতি নং ॥ ৩২ ॥
অথ শৃসং যথা ॥
ব্রজনিজ্বভূতী-বিতর্দ্ধিকায়ামুষদি বিষাণব্যে রুসভূদ্পগ্রং ।

প্রাবৃথিণ ভাসতে তেভাো রোচতে কৌমারপৌগওরপত্ত ন্নভরন্নতে-নেভার্থ:। তেন তভ উর্দ্ধৃ বয়সঃ তেখভাসমানতেন কেবলা যৌবনশোভাড় ইভি শ্রীকৃষ্ণে নোলয়ত ইভি কাচিৎ স্বরাশি ন প্রশঞ্চিতেত্যর্থ:॥ ৩১॥

্ অশহারমলমতে ডি তৎকরণেনালমিতার্থ: ॥ ৩২ ॥

ব্ৰেছে বা নিজা স্বশ্যনাবাদরূপা বড়ঙী চন্দ্ৰশালিকা। বসামেদেব্ছ নৰছ-লীকা: সৃষ্ণ বধ্জিব ড়ঙীবুৰান ইভি মামকাব্যাৎ। তস্যা বিভৰ্মিকা ভারাঞ

পাইয়া থাকেন, এ কারণ ইহাঁর কোন যৌবন শোভা বিস্তার করা হইল না॥ ৩১॥

व्यथं बीकृरकात ज्ञान यथा॥

হে পক্ষণোচন! তোমার অঙ্গ অলক্কত করায় প্রয়োজন নাই, হে ধীমন্! কেবল অঙ্গই স্বভাবসিদ্ধ শোভা দ্বারা স্থা-গণকে হুথ প্রদান করিভেছে॥ ৩২॥

मुन्ने यथा॥

উবাক্ষে অক্ষণ্যে খীয় আবাস রূপ চন্দ্রশালিকার ছার স্নীপ্রতি বেদ্কার উচ্চ শূলরব আরম্ভ হুইলে রহসা শহু স্বয়সাং ভাগীয় রোখামাপা নিবহা স্মানেব জাগ্রভি সা ॥
বেপুর্যথা ॥
হুছাদো নছি যাত কাতরা
ছরিমন্বেট্ মিতঃ হুতাং রবেঃ ॥
ক্ষরস্মত্র বৈণবধ্বনিদ্তঃ শিখরে ধিনোতি নঃ ॥
শাঝা যথা ॥
পাঞালীপত্যঃ শ্রুছা পাঞ্জন্যস্য নিহ্নং ।
পঞ্চাস্য পশ্য মুদিতা পঞ্চাস্প্রভিমা যয়ঃ

(विकिश्यक्षां ॥ ७० ॥

রোমাঞের সহিত স্থা স্কল জাগরিত হইগাছিলেন।।
বেণু যথা॥

আহে প্রহদ্ সকল ! ভোগরা কাতর হইয়া হরি আহ্বেশ করিতে যমুনাতীরে গমন করিওনা, এতানে বেণুধানিদৃত্ত শ্রীকৃষ্ণ গোবর্জন শিখরে এই কথা বলিয়া আমাদিগকে তুর্ধ প্রদান করিতেছে।

## मध्यथा ॥

পার্বভী কহিলেন হে পঞ্চান্য (পিব) অবলোকন করন, পাঞ্চালীপতি পাণ্ডবগণ পাঞ্জন্য শথের ধানি ধানণ করিরা আনন্দসহকারে পঞ্চান্তপতিমা অর্থাৎ সিংহতুল্য হুইলেন ॥



বিনোদ যথা ॥
ক্ষুবদরুণ চুকুলং জাগুড়ৈ গোরণাত্রং
কুতবরকবরীকং রক্ষতাড় জিকর্ণং।
মধ্রিপুমিহ রাধাবেশমুখীক্ষ্য সাক্ষাৎ
প্রিরস্থি হ্ববলোহভূ বিস্মিতঃ স্মিত শ্চ ॥
অথাসুভাবঃ ॥
নিমুদ্ধ-কন্দুক্যুত-বাহ্যবাহাদি-কেলিভিঃ।
লগুড়ালগুড়িক্রীড়াসঙ্গরৈশ্চাস্য তোষণং।
পল্যক্ষাননদোলাস্থ সহ স্বাপোপবেশনং।
চারুচিত্র পরীহাসো বিহারঃ সলিলাশয়ে॥ ৩০॥

### विद्यान यथा॥

প্রিয়দখি! শ্রীরুষ্ণ কৌতুকনিমিত্ত অরুণ বসন পরিধান ও কুকুম লেপনদারা গাত্ত গৌরবর্ণ এবং কর্ণে রত্বতাড় ধারণ করিয়া সাক্ষাৎ রাধাবেশ প্রকাশ করিলে তদবলোকনে স্থবল বিশ্বিত ও হাস্যবদন হইয়াছিলেন॥

স্থারদে অফুভাব যথা॥

বাছ্যুদ্ধ, কন্দুক, দৃতে, বাহ্যবাহক অর্থাৎ ক্ষদ্ধে আরোহণ ও ক্ষন্ধে করিয়া বহন, পরস্পার যষ্টিক্রীড়া যুদ্ধদ্বারা জ্রীকুষ্ণের ভোষণ, পর্যাক্ষ, আসন ও দোলা সকলে জ্রীকুষ্ণের সহিত ওক্তর শয়ন ও উপবেশন, পরিহাস এবং জলাশয়ে বিহার এই সক্তর্কে শ্রমুদ্ধাব বলে॥ ৩৩॥ যুগাছে লাদ্যপানাদ্যাঃ দর্কদাধারণাঃ ক্রিয়াঃ ॥ ৩৪ ॥
ভত্ত নিযুদ্ধন ভোষণং যথা ॥
ভত্ত নিযুদ্ধন ভোষণং যথা ॥
ভত্তক জিতকাশী যুদ্ধক গুলবাত্তভ্রমটদি দথি গোষ্ঠামান্দ্রবীগ্রহ স্তবানঃ ।
কথ্য কিমুমমোটেচ শুলোদ গুটেন্টা
বিরমিতরঙ্গরঙ্গো নিংসহাঙ্গং ভিডোছদি ॥
যুক্তাযুক্তাদিকথনং হিতক্তো প্রশ্তনং ।

যুগান্ধ যুগান্ধো যিলন্মিতার্থ: দুগানে বাদে।তি তেন সহেতার্থ: সংক্ষাং স্থিমান্তার্থ: সাধারণা: প্রন্তিরা: ৪০৪ ॥

জি ভকাশী জগাণহ ইতি কীৱস্বামী সজন্বাভিমানী ভার্থ:। যুক্তেতি যুক্তমন্ জঞানিবঁদা যুক্তমিদঃ কর্ত্তবামযুক্তমিদং ন কর্ত্তবামিত্বাপদেশ ইভার্থ: ৫ ৩৫ ॥

প্রীক্ষের সহিত মিলিত হইলে স্থামাত্রেরই নৃত্যণীতাদি ক্রিরা সাধারণরূপে সম্পন্ন হয়॥ ৩৪॥

ভন্মধ্যে বাজ্ যুদ্ধৰারা 🗐 ক্ষের ভোষণ যথা॥

হে অঘহর ! তুমি যে আত্মজয়াভিমানী হইয়া যুদ্ধার্থ বাস্ত্
কণ্ড্রন প্রকাশ পূর্কাক আপনার পরাক্রমের প্রাশংসা করিছে
করিতে বয়য়য়য়লায় অমণ কালতেচ, বল দেখি আমার প্রচণ্ড
বাস্ত্রন চেন্ডা দেখিয়াই কি তুমি রণরত্ব হইছে ভাত্ত
হইয়া একাকী অবস্থিতি করিতেছ ॥

एक्न मकरनत जिल्हा वर्षा।

কর্ত্তবাক্তব্যের উপদেশ, হিতলনক কার্য্যে প্রবৃত্ত করার এবং প্রার সকল কার্য্যেই অগ্রনর হওয়া, ইভারি সকল প্রায়: পুরংসরত্বাদ্যা: ত্রহাদামীরিতা: ক্রিয়া: ॥ ৩৫ ॥
ভাত্ম্লাদ্যর্পণং বক্তে ভিলকস্থাসকক্রিয়া ।
পত্রাকুরবিলেথাদি সথীনাং কর্ম কীর্ত্তিং ॥ ৩৬ ॥
নির্ক্তি তাকরণং যুদ্ধে বস্ত্রে ধ্যাদ্য কর্ষণং ।
পুল্পাদ্যাচ্ছেদনং হস্তাং ক্ষেনে স্থাদাধনং ।
হস্তাহস্তি প্রসাদ্যা: প্রোক্তাঃ প্রিয়স্থক্রিয়া: ॥ ৩৭ ॥
দৃত্যং ব্রহ্ককিশোরীয় ভাদাং প্রণয়গামিতা।

স্থাসকশ্যনাদিভিশ্চি। ০৮॥
হস্তাহস্তীতি প্রস্পর্মাকর্ষণাদিনা হস্তেন হস্তেন যুদ্ধমিবেভূাংগ্রেক্ষাতে॥ ৩৭॥
প্রশাস্থামিতা প্রণয়সাম্মোদন্মিতার্থা। তাভিঃ সহ স্থাঃ **শ্রীকৃষ্**সা

ञ्क्रम् मिर्गत कार्या ॥ ०० ॥

मशामिरभन्न कन्त्र यथा।

মুখমধ্যে তাম্বার্পার্ণ, তিলকনির্মাণ, চন্দনলেপন ও বদন-স্থল চিত্রবিচিত্র করণ ইত্যাদি সকল স্থাদিগের কর্ম ॥৩৬॥। প্রিয়স্থাদিগের কর্ম যথা

শ্রীকৃষ্ণকৈ যুদ্ধে পরাজিত করণ, তদীর বস্ত্র ধারণ পূর্বক আকর্ষণ, হস্ত হইতে পুষ্প কাড়িয়া লওয়া, শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক শাপনাকে খলন্ধত করণ, হস্তাহন্তি প্রসঙ্গ অর্থাৎ হস্ত যুদ্ধের। প্রস্তাব করণ ইত্যাদি সকল প্রিয়স্থাদিগের কার্যা। ৩৭।

প্রিরন্মস্থাদিগের কার্য্যথা।।

্রন্ধকিশোরী সকলে দূত্য করণ, ভাঁহাদের প্রণারের প্রতি

তাতিঃ কেনিকলো সাকাৎ সমুঃ পক্ষপরিপ্রহঃ।

অসাকাৎ সম্যুদ্ধেশাপক্ষপাসনচাত্রী।

কর্ণাক্রি কথাদ্যান্চ প্রিয়ন্দ্র্যমধক্রিরাঃ।

বন্যরত্বাদ্যলক্ষারৈ মাধ্যস্য প্রসাধনং।

প্রত্যেঘ্যিত্রিকং তদ্যাগ্রবাং সংভালনজিয়াঃ।

অসম্যাহনং মাল্যগুক্তনং বীজনাদয়ঃ।

এতাঃ সাধারণা দাসৈর্ধ্যস্যানাং জিয়া মতাঃ॥ ৯৮॥

কেলিকলো ক্রীড়াকলহে তাসাং কেবলানাং সাক্ষান্তসৈয়ৰ পক্ষপরিপ্রহঃ ভাসামসাক্ষান্তস্য তু সাক্ষান্তাসাং মধ্যে বা অত্যাপ্ররুপ্রেশা তসা বঃ পক্ষাপ্রনাক ত্বাপনচাতুরীতার্থঃ। তাসাং তস্য ৮ বুগপত্বপাশি তসা এব পক্ষাপনচাতুরীভার্বঃ। তাসাং তস্য ৮ বুগপত্রপাশি তসা এব পক্ষাপনচাতুরীভি ক্রেরংং কর্ণাক্রীতি পুর্কং বাধ্যাভ্যের ॥ ৩৮ ॥

অপুমোদন, ঐ সকল কিশোরিকাদিগের সহিত শ্রীকৃষ্ণের ক্রীড়া কলছ উপস্থিত হইলে সাক্ষাতে শ্রীকৃষ্ণের পক্ষ সমর্থন এবং অসাক্ষাতে অর্থাৎ কিশোরিকাগণ উপস্থিত না থাকিলে শ্রীকৃষ্ণের অগ্রে স্ব স্থেমরীর পক্ষ সমর্থন বিষয়ে চাতৃর্য্য প্রকটন এবং কর্ণাকর্ণি বাক্য কথন অর্থাৎ কানে কথা বলা, প্রিয়ন্দ্র স্থাদিগের এই সকল কার্য্য।

দাসের সহিত ব্যাসাদিপের সাধারণ ক্রিয়া বধা ॥
বন্য পুস্পাদি ও রম্বাশকার সকল দারা জ্রীকৃষ্ণের জলক্রতি করণ, তাঁহার জ্যে সৃত্য, গীত, গোশুজ্রমাদি ক্রিয়া,
জ্লমর্মন, মাল্যগ্রহন ও বীজন ইত্যাদি দাস্দিপের সহিত্ত
নম্ন্যগণ্ডর সাধারণ ক্রম্ম এ৮ ঃ

পূর্ব্বাক্তেম্বপরাশ্চাত্র জ্ঞেরা ধীরৈ র্যথোচিতং ॥
অথ সান্ত্রিকাঃ ॥
তত্র স্তস্তো যথা ॥
নিক্রামন্তঃ নাগমুমাথা কৃষ্ণঃ
শ্রীদামায়ং দ্রাক্ পরিম্বক্তুকামঃ ।
শরুস্তস্তী সংভ্রমারম্ভশালী
বাত্স্তস্তো পশ্য নোৎক্ষেপ্তুমীফে ॥
কৌড়োৎস্বানন্দরসং মুকুন্দ
স্বাত্যমুদ্দে বর্ষতি রমাঘোষে।

পুর্বোকেবস্ভাবেরপরা অগণিতাঃ কেচনাম্ভাবাঅর জেরাঃ ইভি বাবং ॥ ৩১॥

পূর্বে যে যে অমু ভাব বলিয়াছি এবং এক্ষণে যাহা যাহা বলিলাম, পণ্ডিতগণ এই সকলকে যথাযোগ্য বিবেচনা করি-বেন ॥

# ব্দপ সান্ত্রিক॥ তন্মধ্যে স্তম্ভ যথা॥

শীর আলিঙ্গন করিতে ইচ্ছা করিয়া সংভ্রমশালী স্তম্ভাষিত বাহ্দর আর উত্তোলন করিতে পারিতেছেন না অবলোকন কর ম

স্বেদ অর্থাৎ ঘর্ম যথা।। মূরলীর মনোহর গর্জন সহকারে মুকুশারূপ স্বাভি নক্ষ- শ্রীদামমূর্ত্তি ব'রশুক্তিরেষা
দ্বোমাঞ্চোপটলীং প্রসূত্তে ॥ ৩৯ ॥
রোমাঞো যথা ॥
দানকেলিকৌমূল্যাং ॥
অপি গুরুপুরস্তাং দোস্তম্ভৌ প্রদার্য্য নির্মালং
বিপুলপুলকৌ ধন্যঃ সৈরী পরিষক্তমে হরিং ।
প্রণয়তি তব ক্ষক্ষে চাদৌ ভূজং ভূজগোপমং
ক হ্বল পুরা সিদ্ধক্ষেত্রে চকর্থ কিয়ন্তপঃ ॥ ৪০ ॥
স্বরভেদাদিচভূকং যথা ॥

অপি গুরুপুর ইতি জীবাধায়া মানসমেবাস্থভাপবচন্ং শুরবোহত্ত শীরামা -নয় এব ঃ ৪০ ॥

ত্রীয় মেঘ, ক্রীড়োৎদৰ রূপ আনন্দৰ।রি বর্ষণ করিলে উৎ-কৃষ্ট শুক্তি দদৃশ শ্রীদামমূর্ত্তি ঘর্শ্মবিন্দুময় মুক্তারাশি প্রসৰ করিয়াছিলেন॥ ৩৯॥

(त्रामाक यथा मानटकनिटकोमुमीटङ।

শ্রীরাধা উত্তথমনে কহিলেন হ্রবল ! তুমি ধন্য, যেছেতু অবাধে গুরুজনের সমক্ষেপ্ত বিপুল পুলকদালি বাহুদ্বয় প্রসা-রণ করিয়া স্বেচ্ছাচারে শ্রীকৃষ্ণকে আলিসন করিভেছ, শ্রীকৃষ্ণপ্ত ভোমার ক্ষমে ভূজগ সদৃশ ভূজদার নিক্ষেপ করিভে-ছেন অভএব বল দেখি ভূমি পূর্বে কোন্ সিদ্ধক্ষেত্রে কি রূপ তপদ্যা করিয়াছিলে ॥ ৪০ ॥

> স্বরভেদাদি চতুষ্টয় অর্থাৎ িঞ্চী

প্রবিষ্টবিত মাধবে ভূজগরাজভাজং ব্রদং
তদীয়ত্বহৃদন্তদা পৃথুলবেপথু-ব্যাকুলাঃ।
বিবর্ণবপুষঃ কণাছিকট ঘর্ষরগ্রায়িনো
নিপত্য নিকটন্থলী ভূবি হৃষুপ্রিমারেভিরে॥ ৪১ ॥
অথ অঞ্চ বথা॥
দাবং সমীক্ষ্য বিচরন্তমিধীকতুলৈস্তদ্য ক্যার্থমিব বাষ্প্রারং কিরন্তী।

স্থরভেদাদিচতুষ্মিতি। অঞ্তাজু। পুর্বোদিইজমো নতু শ্লোকজম: কণাদিতি কণ্মতিজমা নিকটেভাদি লক্ষণা:। এবমেবং ভূতা নিণভোতি নিপত-ৰাদনস্তর্মিতার্থ:। সুষ্পিমিতি তামিব নিশেষ্টাব্যামিতার্থ:॥ ৪১॥

ইবীকা: শরপুশদগুদ্ধান্তাদাং তুলৈ। ইটকেযিকামালানাং চিততুলভুচ্বিদ্বিতি ভূম্বং। প্রকরণবলাদতাভীরাদিশনা স্থিমের প্রয়বসান্তি।

অঞ্চ পরিত্যাগ করিয়া পূর্বেবাক্ত ত্রুম যথা॥

প্রীকৃষ্ণ কালিয়ন্ত্রদে প্রবেশ করিলে তৎকালীন তদীয় স্ফল্গণ ব্যাকুল চিত্তে অতিশয় পুলক ও বিবর্ণ দেহ ধারণ পুর্বাক ক্ষণকাল বিকট ঘর্ঘর শব্দ করিতে করিতে নিকটম্ব ভূমিতে পতিত হইয়া স্মৃপ্রিদশার ন্যায় নিশ্চেষ্ট অবস্থা প্রাপ্ত হইয়াছিলেন॥ ৪১॥

### অশ্ৰু যথা ॥

শরপুষ্প দণ্ড সকলের তুলা ষমূহে দাঝনল বিচরণ করি-তেছে দেখিয়া ভাহার বিনাশ নিষিত্তই যেন বাষ্পারারি বিমো-ছন করিতে করিতে পদ্মশালাধারী বরুস্থাণ আপনাকে স্বানপুনপেক্য তমুমসুজমালভারিগাভীরবীথিরভিতো হরিমাবরিক্ট ॥ ৪২ ॥
অথ ব্যভিচারিণ: ॥
ঔগ্রং ত্রাসং তথালদ্যং বর্জমন্তাথিলা: পরে ।
রুদে প্রেয়দি ভাবজৈঃ কথিতা ব্যভিচারিণ: ।
ভত্রাধোণে মদং হর্ষং গর্কাং নিদ্রোং ধূতিং বিনা ।
যোগে মৃতিং ক্রমণ ব্যাধিং বিনাপস্মৃতি দীনতে ॥ ৪০ ॥
ভত্র হর্ষো যথা ॥
নিক্রময্য কিল কালিয়োরগং

ভাগেপা শ্রমিদমনিউস্যানিশ্চয়াজেন্ত্রত্তি জেরং॥ ৪২ ॥

উগ্রাম্র কেবল ক্লফবিষয়ং আসং কেবলতদ্ধে হৃক্মালস্যং ভদাত্ত্কুল্য বিষয়ং। বর্জবিবেতি ভত্তপ্রধানসভাবে]ভত্ত ভত্তাবর্ণগ্রেবেতি ॥ ৪০ ॥

গীবুলিংশদ্ভং পদাব্যান্দ্রশক।নির্বছবিবশাল্ভমক্রাব্যান্সেডি 🛭 🙈

উপেক্ষা করিয়া সর্ববেভাভাবে শ্রীকৃষ্ণকে গিরা **আবরণ করি**-

### অথ বাভিচারী॥

ভাবজ পণ্ডিটেরা বলিয়াছেন, উগ্রতা, ত্রাস ও **খালস্য** পরিত্যাগকরিয়া অন্য সমুদায় ব্যক্তিচানী ভাব প্রেয়োর্সে **ইইয়া** থাকে। তমধ্যে অমিলন অবস্থায় মদ, হর্ম, গর্মবা, নিম্রা ও **ধৃতি** তথা মিলন অবস্থায় মৃতি, ক্লম, ব্যাধি, অপস্থৃতি ও **দীনতা** ইত্যাদি ব্যভিচারী ভাব প্রকাশ পায় না॥ ৪০॥

ভন্মধ্যে অর্থাৎ অবোগে হর্ষ মধা।। ব্ৰন্তবালনক্ষ কালিয়নাগকে নির্বাদন পূর্বক জালিয়া বল্লবেশ্বরহৃতে সমীয়ুষি।
সম্মদেন হৃহদঃ ভালংপদা
স্তাদিনক বিবশাঙ্গতাং গতাং॥ ৪৪ ॥
অথ স্থায়ী॥
বিমৃক্তসংভ্রমা যা সাাদ্রিশুস্তাত্মা রতিদ্ধরোঃ।
প্রায়ঃ সমানযোরত্র সা স্থাং স্থায়িশকভাক্॥ ৪৫ ॥
বিশ্রম্ভো গাঢ়বিশ্বাসবিশেষো মন্ত্রণোক্ষিতঃ।
এযা স্থারতির্দ্ধিং গচ্ছন্তী প্রণয়ঃ ক্রমাং।
প্রেমা ক্রেহন্তথা রাগ ইতি পঞ্বিধোদিতা॥

বিশ্রস্তাঝা যা রতিঃ সা বিমৃক্তসংল্রমা সতী স্বাং সাং তচ্চ স্থায়ি শক্ত ভাগিতাব্যঃ। সংল্যাহের গৌরবক্ত বৈষ্ণাং ॥ ৪৫ ॥

গাঢ়ি বিখাস বিশোশ বিশেষ প্রম্পার: সর্ব্ধা স্বাভেদ প্রতীতিঃ অভএব মন্ত্রণোস্থাতিক ॥ ৪৬॥

মিলিত হইলে, হর্বাতিশয় প্রযুক্ত স্ক্লাণ আলিতপদ ও আলিতবাক্য হইয়া অঙ্গে বিবশতা ধারণ করিয়াছিলেন ॥৪৩% অথস্থায়ী॥

প্রায় পরস্পর সমান স্থান্বয়ের যে সম্ভ্রমশূন্য বিশ্বাসময়ী রক্তি তাহাকে স্থ্য বলে এবং ঐ স্থ্যেই স্থায়ী শব্দ প্রয়োগ হয়॥ ৪৫॥

অতিশয় বিশাস বিশেষের নাম বিশ্রস্ত, কিন্তু এই বিশ্রস্তে উল্লিখিত রতি হৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইয়া ক্রেমে সখ্য রতি, প্রশয়, প্রেম, স্নেহ ও রাগ এই পঞ্চ প্রকারে ক্থিত হয়। ভত্ত সধ্যরতির্থধা ॥

মুক্লো গান্ধিনীপুত্র দ্বরা সন্দিশ্ভামিভি।
গরুড়ান্ধ গুড়াকেশস্তাং কদা পরিরক্ষাতে ॥ ৪৬ ॥
প্রশারঃ ॥
প্রাপ্তারাং সংভ্রমাদীনাং যোগ্যভায়ামপি ক্ষুটং।
ভদ্যক্ষেনাপ্যসংস্পৃটা রভিঃ প্রণর উচ্যতে ॥ ৪৭ ॥
যথ। ॥
স্থারিস্তিপুরজিমুথৈরপি বিধীয়দানস্ত ভে
রপি প্রথম্ভঃ পরামধিকপারমেষ্ঠাঞ্জাং।

গোষাদীনাং লক্ষণ পূর্মবং প্রণরদা তুবকাতে ॥ ৪৭ ॥ সুবৈল্পিব জিষ্ঠিরতি অস্ত্রাণাং বধাতেশীদুশী দীলা জেয়া ॥ ৪৮ ॥

### তশ্মধ্যে সখ্যরতি যথা॥

অক্রের প্রতি অর্জ্ন করিলেন হে গা**জিনীনশন।** আপনি মুকুন্দকে বলিবেন, হে গরুড়ধ্বল। **অর্জ্ন করে** তোমাকে আলিঙ্গন করিবে॥ ৪৬॥

#### कार्थ প্राग्य ॥

বে রতিতে স্পাইরপে সংভ্রমাদির প্রাপ্তিযোগ্যতা থাকিলে ভাহাতে যদি সংভ্রমলেশ স্পার্শ না হয়, ভাহা হইলে ভাহাকে প্রণয় বলা যায়॥ ৪৭॥

### यथा

ত্তিপুরারি প্রভৃতি দেবগণ স্তৃতিখারা **প্রাক্তির পর**-মেখরত্ব সম্পাদ্ধিস্তার করিতেছেন, **মর্জ্বন নামা ত্রমধ্যস্য**  দধংপুলকিনং হরেরধিশিরোধি সব্যং ভুজং
সমস্কৃত্রত পাংশুলান্ শির্মি চক্রকানর্জ্বনঃ ॥ ৪৮ ॥
প্রেম যথা ॥
ভবত্যুদয়ভীখরে স্কৃদি হস্ত রাজ্যচ্যুতিমুক্লবস্তিবনৈ পরগৃহেচ দাস্যাক্রিয়া।
ইয়ং ফাটুমমঙ্গলা ভবতু পাগুবানাং গতিঃ

ভবত্যদয়তীতি পাওবানামজাতবাদদময়ে শ্রীনারদবচনং। ভবেরমমঙ্গলী গতি র্জবিছিতি অভিসর্গনায়ী যা কামচারাভালজা তদাাং লোট,। যতঃ দা গতিয়েযাং ন স্থাদা হানিকরী প্রত্যত তদাং তদা বুদ্ধিরেব দৃশাত ইতাং পরছিতি তেষাং ভবতি প্রেমা ভবতা ক্রতৈরূপকারেন জনিতঃ। কিব্দিব্যাদ্ধিবদ্ধাণানামস্ভাবেনৈব। তেচত ভবত্দাদীনভাময়ং তেষাংজ্ংথামূলবং নির্মি ক্রেজ্বং প্রেমাণ্যেশয়ত এব বিরাজ্য ইতি ভাবঃ। বর্ধ ইতি দিরব্রিন্দোলাটাং বোধরতি। পরোক্ষনির্দেশাতেষামেবান্ত্রবগ্নাং। তদক্ষাক্ত ক্রেজ্বান্ত্রবান্ত্যবান্ত্রবান্ত্রবান্ত্রবান্ত্রবান্ত্রবান্ত্রবান্ত্রবান্ত্রবান্ত্রব

ঐ শ্রীকৃষ্ণের ক্ষন্ধোপরি বামভুজ সমর্পণ করিয়া তদীয় মন্ত-কক্ষ্মর্বপুটেছর ধূলি সকল সংক্ষার করিতে লাগিলেন॥ ৪৮॥ প্রেম ধর্ণা॥

পাণ্ডবদিগের অজ্ঞাতশাদ দময়ে নারদ কহিলেন, হে মুকুন্দ! তুমি পরমেশর, পাণ্ডবদিগের স্থহদ থাকায় তাঁহাদের রাজ্যচাতি, বনে বাদ এবং পরগৃহে দাদ্যকর্মা, ইত্যাদি স্পান্ত ক্ষমণান্মী মুগতি হইয়াছে, তথাপি ভোষাতে এ পাণ্ডব পরস্ত বরুধে ছয়ি ছিগুণমের সধ্যায়তং ॥
স্বেহো যথা শ্রীদশনে ॥
আন্যে তদকুরপাণি মনোজ্ঞানি মহাক্সনং ।
গায়ন্তি স্ম মহারাজ স্মেহরিক্সধিয়াঃ শনৈঃ ॥ ৪৯ ॥
যথাবা ॥
আর্দ্রাঙ্গরাদ্দহেধাতুর স্ক্রেন্সোত্রের্ লীলারসং
বর্ষ হ্যুচ্ছু সিতের ক্ষেম্দিরে ব্যক্তং বস্থ্বাতুতং ।

কৃষ্ণমূদিরে লীলারদং বর্ষতি সতি আর্দ্রাদকাৎ খলতঃ জছাঃ জছা ধাতবো গৌরিকাদাক্ষরাগা যেবাং ভাদৃশেরু স্থকজ্ঞপেরু গোতেরু পর্বতেরু উচ্ছ্যুশিদ্ধেতরু

# দিগের বিওণ রূপে স্থাম্ত ব্দ্বিত হইয়াছিল ॥ অথ স্থেত ॥

यथा जीनमात्म ३० व्यथात्म ३० त्झांदक ॥

মহারাজ ! মহাত্মা প্রীকৃষ্ণ ক্রীড়া করিতে করিতে শরন করিলে অন্য কতিপয় গোপবালক স্নেহে আর্দ্রতিত হইশ্লা ধীরে ধীরে তদীয় মনোজ্ঞ গীত দকল গান করিতে লাগি-লেন ॥ ৪৯॥

### যথাবা ॥

কৃষ্ণনেঘে অভিশব নীলারস বর্ষণ করার শ্রহণ রূপ প্রোত্ত অর্থাৎ পর্বভসকলে আর্দ্র শরীর প্রযুক্ত গৈরিকালি ধাতু স্থানিভ হইয়া আশ্চর্যা বিষয় ব্যক্ত হইয়াছিল, ব্যান্দ্র পূর্বেষে সেরস্থতী অর্থাৎ বাণীরূপা নদী প্রবাহিত ছিল, ঐ যা প্রাগান্ত সরস্বতী ক্রত্তমসে লীনোপক ঠস্থলে

যা নাদীছলগান্দ্শোঃ পথি দদা নীরোক্র ধারাত্র সা ॥ ৫০ ॥

রাগো যথা ॥

অস্ত্রেশ কুম্পরিহরা হরয়ে ব্যকারি

যা পত্রিপঙ্ ক্রিক্রপেণ কুশীস্থতেন।
উৎপ্লুত্য গাণ্ডিবভ্তা হুদি গৃহ্মাণা
জাতাদ্য সা কুস্বর্স্তীরিবোৎসবায়॥

যথাবা ॥

উচ্চৈ: याসমুকের । পক্ষে রুক্ষাদির্দ্ধা উচ্চ্ দের্ আন আসীং। সরস্বতী বাদী। পক্ষে নদী। উপকঠম্বলে কণ্ঠস্য সমীপে। পক্ষে নিকটে যা নীরোক্ষধারা দৃশো: পথি নাসীৎ সা সদা উদগাং। পক্ষে সদানীরা করতোয়াধ্যা নদী ॥ ৫০॥ বাকারি কিন্তা ॥ ৫১॥

স্থৎ-রূপ পর্বতের কণ্ঠদেশে লীন ইইল, আর যাহা কখন নির্গত হয় নাই এমত চক্ষ্ড রের পথে অনবরত ধারা প্রবাহিত ইইতে লাগিল॥ ৫০॥

### क्रांग यथा॥

নিষ্ঠুর অশ্বত্থামা অন্ত্র দারা তুপ্পরিহার্য্য বাণপঙ্ক্তি শ্রীকৃষ্ণের উপরে নিক্ষেপ করিলে গাণ্ডীবধারী অর্জ্জন লক্ষ্য দিয়া ঐ বাণশ্রেণী আপনার হাদয় মধ্যে ধারণ করিলেন, ভাছাতে অর্জ্জন আনম্পোৎসব নিমিত্ত ঐ বাণর্ষ্টি পুস্পর্ষ্টি সদৃশ ইয়াছিল ॥ কুষ্মন্যবিদ্যতঃ সমস্তাদ্বমালারচনোচিভান্যরণ্যে।
ব্যভ্যা ব্যাক্জামরীচী
দিবসার্দ্ধেশি বভূব কৌমুদীর ॥
ভাবাযোগে উৎকন্তি ছং ॥
ধনুর্বেদমধীয়ানো মধ্যমস্ত্রি পাণ্ডবঃ।
বাষ্পাসন্তর্গিরা কৃষ্ণ গিরাল্লেবং ব্যক্তিজ্ঞপং॥ ৫১॥
ভাব বিয়োঁগঃ॥
যথা পত্রী॥
ভাবগ্য জচরানলাৎ ফণিহ্রদ্যাচ ক্ষেড্ডতো

शां हिलाना क्या मिलि की त्रशामी । ११ ।

র্বভনামা স্থা অরণ্যের স্কা প্রদেশে জ্রীক্ষের বন্ধা-লার উপযুক্ত কুত্রদকল চয়ন করিতেছিলেন, তাহাতে ভাঁহার মধ্যাফ্কাল হয়, যদিচ তৎকালীন ব্যরাশিস্থ ভাস্করের প্রচণ্ড কিরণ পতিত হইতেছিল তথাপি ঐ ব্যভের স্থক্ষে ভাহা চক্তিকাতুল্য হইয়াছিল ॥

অযোগে উৎকণ্ঠিত যথা।

ছে কৃষ্ণ ! মধ্যমপাণ্ডৰ অৰ্জ্জন শহুৰ্বেদ অধ্যয়ন ক্রিভে ক্রিভে ৰাষ্পপ্রিত গলাদবাক্যে ভোষাতে আলিখন নিৰে-দন ক্রিয়াভিলেন॥ ৫১॥

অধ বিয়োগ যথা॥ পত্নীনামা ভূত্য কহিল প্রভেটি! অঘাস্থরের জঠরানল, [১৬] দবদ্য কবলাদপি অ্মবিভাত্ত যেষামভূ:।
ইতন্ত্ৰিভয়ভোহপ্যভিপ্ৰকটঘোরধাটীধরাৎ
কথং ন বিরহজ্বাদবদিতান্ দথীনদ্য নঃ।
অত্ৰাপি পূৰ্ববং প্ৰোক্তান্তাপাদ্যান্তা দশা দশ ॥
ভত্ৰ ভাপঃ ॥
প্ৰশাৰ্কা ভাণীৱেহপ্যধিকশিশিরে চণ্ডিমভরং
ভূষারেহপি প্রোঢ়িং দিনকরন্থভাজ্যোত্দি গড়ঃ।
অপ্বাং কংসারে, ন্থবলমুখনিত্রাবলিমদৌ
বলীয়ামুভাপন্তব বিরহজ্মা জ্বয়তি॥ ৫২ ॥
কুশতা॥

কালিয়হ্রদের বিষ এবং দাবানলের গ্রাস এই তিন হইতে আপনি বাহাদের রক্ষক হইরাছেন, কিন্তু হঁহা অপেক্ষাও বজাবান্ আপনার বিরহজ্বর হঁইতে আমরা যে সেই স্থাগণ আৰু আমারে রক্ষানা করিবেন কেন?॥

**এছনেও** পূর্ব্বাক্ত তাপাদি দশ দশ। কথিত হইয়াছে॥ তন্মধ্যে তাপ যথা॥

শে কংসারে! তোমার বিরহজনিত উত্তাপ অভিশয়, আশ্চর্বা, যে হেতু শীতল ভাগ্ডীরবটে অভিশয় প্রাথগ্য এবং হিমতুল্য ভাসুতনয়ার জ্যোতে অধিকতর বৃদ্ধি লাভ করিয়া ঐ উত্তাপ হ্বল প্রভৃতি মিত্রগণকে নিরন্তর দশ্ম করি-ভেছে ॥ ৫২ ॥ দ্বরি প্রাপ্তে কংশক্ষিতিপতিবিমোক্ষার নগরী
গভীরাদাভীরাধলিতকুষু ধেদাদকুদিনং।
চতুর্ণাং ভূতানামজনি তনিমা দানবরিপো
সমীরস্য প্রাণাধ্বনিপৃথুলতা কেবলমভূং॥
জাগর্ষা।
নেত্রামুজদক্ষ্মবেক্ষ্য পূর্ণং
বাক্ষাম্বুপুরেণ বর্রথপদ্য।
তত্তাকুর্তিং কিল যাদবেন্দ্র
নির্বিদ্য নিদ্রা মধুপী মুমোচ॥
ভালম্বুশ্বতা॥

हरूपंत्रिकारकानगाणि कनिया त्वरकारणा न विवताणाः स्वाद्ध वाद्धः । १०॥

হে অহ্রঘাতিন্! ভূমি কংসরাজকে বিমোচন করিবার নিমিত মধুপুরী গমন করিলে থেদ প্রযুক্ত গোপ সকলের দেহে চারিটী ভূতের অর্থাং পৃথিবী, জল, অগ্নি, আকাশ এই চতুইটয়ের ক্ষীণতা হইয়াছিল কিন্তু আশ্চর্য্যের বিষয় এই বে, কেবল নাগারক্রে বায়ুই প্রবলরূপে প্রবাহিত হইতেছিল ম

कां भवन यथा ॥

হে যাদবেন্দ্র ! বরূপণ নামক ভৌমার স্থার নেত্র কমল বাষ্ণাবারিতে পরিপূর্ণ দেখিয়া, নিদ্রারূপা ভ্রমরী বেইপ্রয়ুক্ত ঐ নেত্রপল্মের পরিচর্য্যা পরিভাগে করিয়াছিল ॥ স্থান্য শ্ব্যন্তা ॥ গতে বৃন্দারণ্যাৎ প্রিয়ক্ষ্ দি গোঠেশ্বরস্থতে
লথ্ভূতং সদ্যঃ পতদতিতরামৃৎপতদপি।
নহি জামং জামং জঞ্জতি চটুলং ভূলমিণ মে
নিরালশ্বং চেতঃ কচিদপি বিলম্বং লবমপি॥
অধৃতি॥

রচয়তি নিজরতো পাশুপাল্যে নির্তিং কলয়তি চ কলানাং বিস্মৃতো ষত্রকোটিং। কিমপরমিহ বাচ্যং জীবিতেপ্যদ্য ধতে যতুবর বিরহাতে নার্থিতাং বন্ধুবর্গঃ॥ ৫৩॥ জড়তা॥

অনাশ্রিতপরিচহদাঃ কুশবিশীর্ণ ক্লাপকাঃ

পরিজ্ঞা বেশাদর: পক্ষে পরিত: ছদা: পত্রাণি। ছারা কাস্তি:। পক্ষে

প্রিয়হ্ছদ্ এজরাজ্বন্দন র্ন্দাবন হইতে গমন করিলে আমার চঞ্চল মন নিতান্ত লঘু হইয়াছিল, স্তরাং তুলের ন্যায় আল্ছ শ্না হইয়া চতুর্দিক্ অমণ করিতে করিতে কোথাও শ্নাত্র বিশ্ব করিতে পারে নাই॥

### অধ্যতি ॥

হে বহুবর! তোমার বিরহে তদীয় বন্ধুবর্গ পশুপালনরূপ নিজ র্ভিতে র্ভি কল্পনা করিতেছেন না, গানাদি কৌশল
বিশারণ হইবার নিমিত কোটি কোটি যত্ন করিতেছেন, অধিক
কি বলিব আপনারা জাবিত থাকিতেও আর প্রার্থনা করিতেছেন নামান্ত মা

জড়তা যথা॥ টেং মুকুন্দ ! তোমার হুছ্ছের্গ প্রতাগ্রজাত রক্ষের ন্যায় সদা বিফলহান্তরো বিরহিকাঃ কিলাকারা।
বিরাবপরিবর্জিনান্তব মুকুন্দ গোষ্ঠান্তরে
ক্রুরন্তি অন্দাং গণাঃ শিশরজাতবৃন্দা ইব॥ ৫ ৪ ॥
ব্যাধিঃ ॥
বিরহজ্জনগংক্জরেণ তে
ক্জালিতা বিশ্রপগাত্রবন্ধনা।
যত্রীর তটে বিটেন্টতে
চিরমাভীরকুমারমণ্ডলী॥
উন্মাদঃ ॥
বিনা ভবদমুন্দ্রতিং বিরহবিভ্রমেণাধুনা

জনাতপঃ। বিরাবে। বিশেষেণ রাবঃ। পক্ষে বীনাং পক্ষিণাং <mark>রাবং। বিশর-</mark> জাতবুজা ইবেতোৰ পাঠঃ বিশিষ্টকৈবালোপমানবাং । ৫৪॥

বিরহ এব অব: ভভ সংজ্ঞারণ সন্তাপেন ৷ ৫৫ ৷

পরিচহদ শূনা, রুশ, বিশীর্ণ, রুক্ষাঙ্গ, সর্বাদা বিফল জীবিভা, শোভা বিরহিত ও নীরব হইয়া গোকুল মধ্যে অবস্থিতি করি-তেছেন ॥ ৫৪ ॥

### वाधि यथा ॥

হে যত্নীর ! তোমার বিরহ জ্বরের সন্তাপে গোপকুষার মণ্ডলী লিখিল গাত্রে বহু দিন যাবৎ হৃষুনাকুলে ভ্রমণ করি-তেছেন।

## **उन्मा**न कथा ॥

হে মধুরাপতে ! তোশার স্মরণ না থাকা প্রযুক্ত সম্প্রতি

জগদ্বকৈতিক্রমং নিথিলমের বিস্থারিতা: ।

মুঠন্তি ভূবি শেরতে বত হসন্তি ধাবন্তামী
কলন্তি মুধুরাপতে ক্রিমপি বল্লবানাং গণা: ॥ ৫৫ ॥

মুচ্ছিতিং ॥

দীব্যতীক মধুরে মথুরায়াং
প্রাপ্য রাজ্যমধুনা মমুনাথে ।

বিশ্ববে মুদিতং রু দিতাক্ষে

গোকুলেতু মৃত্রাকুলতাভূং ॥

দীবাতীতি শ্রীকৃষ্ণং প্রতি স্থিবিশেষসন্দেশ:। অত্র ক্রদিতার ইত্যাদিনা
মুক্সুঁকা ধ্বনতে।ক্রিতারত ধলু রোদনানম্বং মৃত্সুঁকি তথং তচে গোকুলং
লক্ষ্যা স্বর্মেব বালাতে ইতি। আকুলতা চাত্র রোদন্মুক্রিশৌনংপুনোন
বাাকুলতা ৪ ৫৬ ৪

পোপগণ বিরহ্বিভামে বিহ্বল হইয়া নিশিল জগতের চেটা সমুদায় বিশ্বত হইয়াছেন, তাঁহারা কথন ভূমিতে লুগিত, কথন শয়ৰ, কথন হাস্য, কথন ধাবন এবং কথন বা রোদন ক্রিভেছেন ॥ ৫৫॥

## মৃচিছ ত যথা॥

তে সধুনাথ! সম্প্রতি তৃষি মধুরার রাজ্যপ্রাপ্ত হইর।
ক্রীড়ারত থাকাতে সমুদার জগৎ আনন্দমর হেইরাছে বটে
কিন্তু ক্রদিতান্ধ গোকুলে নিরন্তর ব্যাকুলত। বৃদ্ধি প্রাপ্ত হই-

মৃতি: ॥

কংসাবে বিরহজ্বাধিজনি চজালাবলীজর্জনা
গোপাঃ শৈল চটে তথা শিথিলিভখাসারকুঃ শেরতে।
বারং বারমথ দিলোচনজ লৈরাপ্লাবা ভারিশ্চলান্
শোচন্ত্যদ্য যথা চিরং পরিচয় সিন্ধাঃ ক্রঙ্গা অপি॥ ৫৬॥
প্রোক্তেয়ং বিরহাবন্ধা স্পানীলামুসারতঃ।

প্রোক্তেরমিতি স্পাইলীলা স্থানারেশেতানেন : উত্তরাংশ্বিদাল্পনার্থনারেশতানেন : উত্তরাংশ্বিদাল্পনার্থনার শেতি গ্রাহি গ্রাহি । স্পাইলীলা প্রকটানিটি গ্রাহি । স্থানিটি । তার আকটা প্রাপকিকলোকগোচরীভূতা । সাচ কাদাচিংকী । অপ্রকটা ভলগোচরীভূতা । সা তু নিভাগ প্রীর্ক্ষাবনাদৌ কর্ত্ততে । থৈব বলু স্থানালো আগনালো ভাগনালা অগনালো আগনালা ক্রাহিনিটি প্রকাশিক নাত্তি নিতাবাদের কিন্তু প্রকটারাধ্যের কলাচিল্লনার প্রাণক্তিবলাকগোচরী ভারত স্বাধিকর সা ভগরত অভানীলাভূসারেশ

## মৃতি, যথা ॥

হে কংসারে ! ভোষার বিরহজ্ব-তরঙ্গজনিত জালাসমূহে গোপগণ জন্ম ইইয়া অল্ল অল্ল খাল পরিত্যাগ করত পর্বেত-তটে শরন করিয়া রহিয়াছেন, যেমন পরিচিত ব্লুজনকে বিপদায়িত দেখিয়া অঞ্জনোচন পূর্বক শোক করিয়া খাকে, ভাহার ন্যায়, মুগগণও বারস্থার বিপুল নর্মজনপ্রবাহ-স্থায়া ঐ সকল নিশ্চেট গোপগণকে সেচন করিতেছে ॥

अक्र मोबात प्रमादि धरे वित्रविष् वर्षिक इरेन,

কুষ্ণেন বিপ্রয়োগ: স্যান্ম জাতু ব্রজবাসিনাং ॥
তথা চ ক্ষান্দে মথুরাখণ্ডে ॥
বংদৈব হৈদতরীভিশ্চ সদা ক্রীড়তি মাধবঃ।
রন্দাবনাস্তরগতঃ সরামো বাল্টকর্বতঃ ॥ ৫৭ ॥
অথ যোগে সিদ্ধির্যথা ॥
পাশুবঃ পুগুরীকাক্ষঃ প্রেক্ষ্য চক্রিনিকেতনে।

ক্ষাচিত্তবভি । তত্র বোড়শসংশ্রকনাবিবাহবল্লীলা শক্তা প্রাত্তবিভেদাদক্রিমানভেদ: । পরপারমনমুসকানক তত্তলীলারসরক্ষণার স্যাৎ তদনাথাত্
বিয়োগ এব ন স্যাৎ তত্মাৎ প্রকটলীলারাং বিয়োগে জাতেছপাপ্রকটলীলারাং
ভক্তবিল জাতিত্যক্তং । কিন্তু প্রকটলীলামেবোদ্দিশ্য সর্ক্রেরং রচনেতি ভস্যাঃ
পর্বাব্যানরমাত্মবশ্যং স্থাপনীয়ং । তচ্চ ব্রজে পুনঃ সক্ষতা ব্যাহালীলেরোঃ
শীক্ষাবতা ক্বতে প্নরেকীভাবে প্রকটলীলাগত বিরহশ্য শাম্যভীতি বিষরণময়ে
বংসবরসপ্রাত্তে জ্বেরং ॥ ৫৭ ॥

भाखत्वारकार्क्कृतः मत्था मूथाचार हकी क्रभमनगत्रमा क्रूक्क वातः। उत्थिव

কিন্তু নিভ্যালীলায় জ্রীকৃষ্ণের সহিত ব্রজ্বাসিনিগের কথনই বিচ্ছেদ নাই॥

যথা স্বন্ধপুরাণাস্তর্গত মথুরাথতে॥

জীক্ষ বলদেব ও অজবালকগণে পরিবৃত হইরা বংস
ও বংসভরীর সহিত নিরন্তর ক্রীড়া করিতেছেন॥ ৫৭॥

অথ যোগে সিদ্ধি যথা :

अर्ज्य अभवनगरतत क्षकारतत गृह श्रीकृक्टक अवरणा-

চিত্রাকারং ভজনেব সিত্রাকারমনশ্রিং॥
তৃষ্টির্যথা শ্রীদশমে॥
তং মাতৃলেয়ং পরিরন্ত্য নিরিত্রো
ভীম: স্মান্ প্রেমজলাকুলেন্দ্রিয়ঃ।
যমৌ কিরীটাচ হুছলমং মুদা
প্রেমজলাপা: পরিরেভিরেইচুতেং॥ ৫৮॥
যথাবা॥
কুরুজাপনে হরিমবেক্যা পুরঃ
প্রিয়দক্ষণ ব্রজহুছ্রি করাঃ।

ভারতালাখ্যানাং। চিঅস্যাক্ষিমাক্সভিং ভর্তুম্যতাং মিএবোগ্যাক্ষিক্ মিসিতং॥ ৫৮॥

প্রকটদীলারামণি ঞীব্রজন্মরিকয়াণাং তৃষ্টিমার কুক্ষমালল ইতি । স্কৃত্

কন করিয়া তুল্যাকৃতি প্রযুক্ত তাঁছার দহিত মিত্রতা করিয়া-ছিলেন ॥

कृष्टिर्गर्व। श्रीनमाम १० व्यक्षारा २० क्षार्क ॥

শ্রীকৃষ্ণ ইন্দ্রপ্রক্ষে গমন করিলে ভীম দেই মাতৃলেমকে আলিঙ্গন করিয়া হাস্যবদনে প্রেমাশ্রুণারায় আকৃল হইলেন পরে নকুল সহলেবের সহিত অর্জ্বন আসিয়া হাউচিতে প্রির্জ্বন অচ্যতকে আলিঙ্গন করিয়া প্রস্কুর বাষ্প্রকলার পরিপূর্ণ হইলেন ॥ ৫৮ ॥

श्वावा ॥

কুরুকেত্রে শগ্রে প্রিয়তম প্রীর্কাকে গ্রহণাকন করিয়া
[১৭]

ভূক্ষমণ্ডলেন মণিকুণ্ডলিনঃ
পুলকাঞ্চিতেন পরিষম্বজিরে॥ ৫৯॥
ছিতির্যথা শ্রীদশমে॥
যৎপাদপাশু র্বহৃত্তকারুচ্ছুতো
ধৃতাত্মভির্যোগিভিরপ্যলভ্যঃ।
স এব যদ্ধিষয়ঃ স্বয়ং স্থিতঃ
কিং বর্গতে দিউমহো ব্রজৌকসাং॥

ক্ষেত্রই ভার্য:। প্রিয়োছ ভিলবিত: সঙ্গমো যস্য তং॥ ৫৯॥

ু বছল মভির্যৎ ক্লচ্ছেং হংধাত্মক মন্তাল যোগসাধনং তেন ধৃতঃ স্থিনীকতঃ আরা মনো বৈকৈবোগিভির্যৎপাদপাশুরলভা ভাদৃশেনার নাপি লক্ষ্মশকাঃ সএব শ্রীককো নতু তদংশঃ স্বয়মান্তনৈব হেতুনা নতু হেল্বতরেণ। কিন্তু স্থা-বেনৈব যেবামহো আশ্চর্যাং দৃশ্বিষদ্ভিততে যাং ত্রজোকোমাত্রাপাং দিইং প্রাক্তনপূর্ণাং কিং বর্ণাতে নহি কিন্তু স্থাভাবিকী তাদৃশভ্যা মহতী স্থিতিরেব

মনিকৃগুলধারি ব্রজ্মহদ্গণ পুলকশালী ভূজ্মগুল ছারা উ্হাহাকে আলিসন করিয়াছিলেন॥ ৫১॥

স্থিতি যথা॥

জীদশমে ১২ অধ্যায়ে ১১ স্লোকে ॥

ষোণিগণ বহুজন্ম পর্যান্ত কুচ্ছাদি ত্রতখারা ধূতাত্মা ছই-রাও বাঁহার চরপরেণু লাভ করিতে পারেন না, 'সেই ভগবান্ স্বায়ং যে সকল ত্রজবাসির দর্শন গোচরে অবস্থিত হন্ তাঁহাদের ভাগ্য যে অত্যাশ্চর্য্য ইহা বর্ণন করিয়া বলা বাহুল্যমাত্র ॥ ষরোরপ্যেকজাতীরভাবমাধুর্যাভাগসোঁ।
প্রেয়ান্ কামাপি পুঞাজি রগশ্চিত্রচৎকৃতিং।
প্রাতে চ বংগলে চাপি কৃষ্ণভদ্ধক্তরোঃ পুনঃ।
ঘরোরন্যোন্যভাবস্থা ভিন্নজাতীয়তা ভবেং ॥ ৬ • ॥
প্রেয়ানেব ভবেং প্রেয়ানতঃ সর্বর্বেয়য়ং
স্থাসংপ্রক্রদ্বিয়ং সন্তিরেবামুব্রগতে ॥ ৬১ ॥

॥ अ ॥ ইতি শ্রীভক্তিরসায়তগিকো পশ্চিমবিভাগে মুখ্য ভক্তিরস পঞ্চনিরপণে প্রেয়োভক্তিরসলহরী॥ ॥ ॥ ৩ ॥ ॥ ॥

বৰ্ণনীয়া ইভাগ:। তদেবং সহ বিহারক্কতাং পূর্ব্যোক্তগধীনাং কিমুতেভি ভাব:।
ভিত ইতি শীলিতাদিধাম্বর্তমানে জ:। যক কিঞ্জিলগভামিণ্লিশতে আমতে।
হলি বা: অনুব্যিণ্ড ভংস্কাং বাাপং নারায়ণ: ভিত ইতিবং ৪ ৬০ ॥

च छः भूर्त्रभगवादाराकारकारकारणाः (श्रवात्नत्वज्ञामि (वाकार ॥ ७) ॥

॥ • ৪ ইতি পঞ্গহৰ্ণাছকে পশ্চিমবিভাগে প্ৰেলেভকিবৰ শৃহ্ৰী ভূতীলাল ঃ

চুই অর্থাৎ কৃষ্ণ এবং কৃষ্ণস্থা ইহাদের এক জাডীয় ভাব মাধ্য্যশালী প্রিয়তর রদ, কোন এক অনির্বাচনীর চিত্ত চনৎ-কৃতি সম্পাদন করে॥

প্রতি ও বংসল রনে কৃষ্ণ এবং কৃষ্ণভক্ত এই **চ্ইরের** পুনরায় পরস্পর ভাবের'ভিন্ন জাতীয়তা হয়॥ ৬•॥

সকল রসের মধ্যে প্রেররণই প্রিয়তর হয়, স্থা রস্ বিশিক্ত সাধুগণই ইহা অসুভব করিতে পারেন॥ ৬১॥

॥ # ॥ ইতি জীরামনারারণ বিদ্যারত্বত ব্যাধ্যার ভক্তি-স্বামৃত্রনিজ্ব পশ্চিমবিকাণে প্রেয়োভক্তি রগ ॥ # ॥ ০ ॥ # ॥ অধ বংসনভক্তিরসঃ॥
বিভাবাদ্যৈন্ত বাংসলাঃ স্থায়ী পুষ্ঠিমুখাগতঃ।
এয় বংসলনামাত্র প্রোক্তো ভক্তিরসো বুধাঃ॥
তত্রালন্থনাঃ॥
কৃষ্ণং তস্য গুরুংশচাত্র প্রান্থনান্ধী বুধাঃ॥ ১॥
তত্র কৃষ্ণো যথা॥
নবকুবলয়দামশ্যামলং কোমলাকঃ
বিচলদলকভ্সক্রাস্তনেত্রাস্ক্রান্তঃ।
ভক্তভ্বি বিহরন্তঃ পুত্রমালোকয়ন্তী

উৎপীতৃং শ্বয়ং বলাছদগ্ম:। দিয়া লিপেতি সংকীর্ণবর্গ: ॥ ১ ॥ ২ ॥

### অথ বংসল রস।।

বিভাবাদিদ্বারা বাংসল্য পুষ্টি প্রাপ্ত হইয়া স্থায়ী হয়, পণ্ডিতগণ ইহাকেই বংসলন।মক ভক্তিরস বলিয়া থাকেন॥ বংসল রসে আলম্বন যথা॥

পঞ্জিদকল এই বংশলরগে কৃষ্ণ এবং কৃষ্ণের গুরু-বর্গকে আলম্বন কছেন॥১॥

#### खन्यत्था व्यानयनताभ कृष्ध गथा॥

যিনি নধনীলোৎপল মালার ন্যায় শ্যামল বর্ণ, যাঁহার অঙ্গ অভিশয় হুকোমল এবং যাঁহার চঞ্চল চুর্ণকুন্তুলরূপ জমরসমুছে নয়মপদ্মের প্রান্তভাগ আক্রান্ত, এভাগৃশ পুক্রকে ব্রজভূমিতে বিহার করিতে দেখিয়া ব্রজপতিদয়িতা যশোদা সহসা
ক্ষরিত স্তনন্ত্রে লিপ্ত হুইয়াছিলেন অর্থাৎ পুক্রাবলোক্রে

ব্ৰহ্ণ বিদয়ি ভাসীং প্ৰস্নবোংশীড় দিগ্ধ। ॥ ২ ॥
শামিকো কৃচিনঃ সর্বসল্লকণ্যুতো মৃত্যু ।
প্রিয়বাক্ সনলো দ্রীমান্ বিনয়ী মান্যমানকং :
দাতেভ্যাদিগুণঃ কুক্ষো বিভাব ইতি কথাতে।
প্রবং গুণস্য চাসাামুগ্রাহত্বাদেব কীর্তিতা।

শামাল ইতি আলা তাবতলা গাণেকা শামালতা মানেগজননানীমান্
মান্ত্ৰনত ইতাৰ্থ: ব্যাল ইতি বা পঠি:। আল্ডন্ড্ৰেব জন্ম বিশ্বন্ধতি
থ্ৰমিতি অনা প্ৰছেনাভিবাক্তনা শ্ৰীক্ষণা অভ্ৰন প্ৰভাবানান্দ্ৰভাৱ বেলাপ্ত
অনভিবাঞ্জিত প্ৰভাবনা ক্ৰিণ্ডিবাঞ্জত পঞ্চাবছেই পানাথাড়াবিভনা যদন্ত্ৰীক্ষ্
প্ৰোইখং মমান্তৰ্বহিষ্ণাতিকোমন ইতি ভাবননা মানাদীনাং হিছেচ্ছাবিদ্
বহু তেমানেন নেত্ৰমাং প্ৰকাষাদ্য বনে বিভাবতা মানাদিব। বাংস্ন্যাভিধ্
বহু তামান্ত্ৰন ক্ৰেন্ত্ৰমাং প্ৰকাষাদ্য বনে বিভাবতা মানাদিব। বাংস্ন্যাভিধ্
বহু তামান্ত্ৰন ক্ৰেন্ত্ৰমাণ্ডিভেতে প্ৰভ্ৰমানিভাৰমান্ত্ৰন সা সিক্ষিব। প্ৰ্নিন্ত্ৰাম্প্ৰহোদ্যে নতু স্ক্ৰিভ প্ৰস্বাধিভিদ্ধণ্যপ্ৰাণীভাৰঃ। বাংস্বাভিদ্

বলপুর্বক তাঁহার স্তন হইতে ত্থা ক্ষরিত হইয়া অস সকল আর্দ্র করিয়াছিল ॥ ২ ॥

বংসলরসের বিভাব যথা॥

শ্যামান্দ, রুচির, দর্বসলক্ষণাঞ্জান্ত, মৃত্যু, প্রিরবার্কী, সরল, শত্দাশীল, বিনয়ী, মান্যগণে মানপ্রদ এবং দাতা ইত্যাদি গুণ-শালী প্রীকৃষ্ণ বংগলরসে বিভাব বলিয়া কীর্তিত হয়েন ঃ

উক্ত গুণশালী ঞীকৃষ্ণ অনুগ্রহের পাত্রভাপ্রবৃক্ত বর্থন

প্রভাবনি ক্রান্তরা বেদ্যাত্র বিভাবতা ॥
তথা শ্রীদশমে ॥
তথা শ্রীদশমে ॥
তথা শ্রেদান বিভাবতা ॥
তথা শ্রেদান বিভাবতা ॥
তথা শ্রেদান বিভাবতা আলং ॥ ৩ ॥
ব্যানা ॥
বিষ্ণুনি ত্যিমুপাদ্যতে স্থি ম্যা তেনাত্র নীতাঃ ক্রমং

গ্রহরোভ কারণকার্যতাভেদেন ভেদো জ্ঞো: মম প্রোহর: প্রাতৃপ্রোহর-মিডি লিগ্নতা বাংসলাং ভত্রাহিভেছোগুরুগ্রহ ইতি ॥ ৩ ॥

ভবেষং শ্রীভাগবভমতেন নেমং বিরিঞ্ ইত্যাদাত্মারাং এব্যেত্যাদি

প্রভাব শূন্যরূপে অর্থাৎ পুক্র বলিয়া বিদিত হয়েন তথনই তাঁহার বিভাবতা হয়॥

यथा जीनगरम ৮ व्यथारा २० ट्रांटिक ॥

শুকদেব কহিলেন মহারাজ! বেদসকল ইন্দ্রাদি বলিরা, উপনিষং সকল ব্রহ্ম বলিয়া, সাখ্য সকল পুরুষ বলিয়া, যোগ সকল পরমাস্ত্রা বলিয়া, তথা সাত্ত (ভক্ত) গণ ভগবান্ বলিয়া বাঁহার মাহাত্ম্য গান করিতেছেন, যশোদা ুসই হরিকে আপনার অক্ষ্মিজ বলিয়া জ্ঞান করিতে লাগিলেন॥ ৩॥

#### यथावा ॥

যশোদা কৰিলেন সথি! আমার সহিত গোষ্ঠপতি নশা যে শ্রীবিষ্ণুর উপাদনা করিয়াছেন, বোধ হয় তাঁহারই প্রসাদে শক্ষে পৃত্তনিকাদয়ঃ কিভিক্তবে ঙৌ বাভালোমু লিভে । প্রভাক্ষং গিরিরেষ গোষ্ঠপতিনা রামেণ সার্জং য় ছ-ভঙ্তং কর্ম তুরহয়ং মম শিশোঃ কেনাস্য সংভাবাতে য়য়॥ অথ গুরহঃ ॥

বাঞ্চতঘংশলামহিমানং দশ্বিষা গুদ্ধং তবেব দশ্বতি বিফুরিতি স্পইষেব।
আনেন রফোর্যাঃ পরমার্ক্সবং স্টিচং। বরা। বিফুরিতি নর্ম গোলীরং ত্যারমর্ব:। মরা সার্দ্ধং গোলগতিনা ব্যক্তিকপান্ততে তততেনৈর প্রতনাদরঃ কর্ম
নীডাঃ কিতিকটো বাতাইরবোম্বাতি ন ত্যা তল্যাপি সম্বন্ধ ইতি ভাবের
মজিশোরত রক্ষা তু তেনৈব কতেতি ধ্বনিতং। গিরিস্ত ভাদৃশতহুপাসনবলেন
তেন গোলগতিনৈব ধুজঃ। রামেশ সার্দ্ধনিতি মম শিশৌ যদি তৎসন্তাবতে তর্দি
কথং রামেখিন সন্তাবাত ইতার্গঃ। তদেং কচিং তং প্রশ্তনভাদৃশগোবর্দ্ধনধরপ্রতিমাদ্টা শ্রীকবিচরবৈঃ স্পরীক্রতং। তেন সহেতি তুলাবোগক্তি সমাস্ত্র সহার্থা বৈবিধাখিল দৃষ্টে অর মহা সার্দ্ধং রামেশ সার্দ্ধিতি স প্রঃ
সহার্থো বিদ্যমানভাষাত্রেণ বিবক্ষাতে ন তুলাবোগেনেতি। শ্রীরজ্বপতিক্রগেনিতাবিক্সরাজনমের কারণ্ডেন রাজ্য তিমিন্ পালাছ্যের প্রবিধায়িতং ॥ ৪ ঃ

পুতনাপ্রভৃতি রাক্ষণ সকল বিনক্ত হইয়াছে, যগলার্জন ছইটা বুক্ষ প্রবল বায়ুঘারা উন্মূলিত হইয়া গিয়াছে এবং প্রভ্যক্ষ দেখিয়াছি রামের সহিত গোঠপতিই পর্বতে ধারণ করিয়া-ছিলেন, নতুবা আমার এই শিশুপুদ্রের কি ঐ সকল তুরুত্ব কর্মা সম্পর্কর হয়! ॥ ৪ ॥

अप खदावर्ग ॥

অধিকক্ষন্তাবেন শিক্ষাকারিতয়াপিচ।
লালকত্বাদিনাপ্যত্র বিভাবা গুরুবো মতাঃ॥ ৫॥
যথা ॥
ভূর্যানুত্রহিচিতেন চেতলা
লালনোৎকমভিতঃ কুপাকুলং।
পৌরবেণ গুরুণা জগদ্গুরো
গৌরবং গণমগণ্যমাশ্রয়ে॥ ৬॥
তে তু তদ্যাত্র কথিতা ব্রজনাজী ব্রজেশরঃ।
রোহিণী তাশ্চ বল্লব্যো যাঃ পদ্মজহৃতাত্মজাঃ

অধিক অন্যভাবেনেত্যাদিযুপলকণে তৃতীয়া ॥ ৫ ॥ অনুনেপালনেক্ষান্ত্যহ: । পরছ:খহানেক্ষা কুপা ॥ ৬ ॥ । বোহিণীতানেনানাা: পিতৃবাপ্যাদ্যশেষ্ণলকাতে । দেবকী সপ্যাদি-

অধিকমন্য অর্থাৎ আমি বড় এই রূপ জ্ঞান, শিক্ষা প্রদান কারিত্ব এবং লালক হাদি গুণহারা এই বৎদলরদে গুরুবর্গ বিভাব হইয়া থাকেন॥ ৫॥

#### যথা।

যাঁহারা ভূরি অনুগ্রযুক্ত চিত্রারা লালনবিষয়ে উৎহুক এবং সর্বভোগ্রাবে কুপাকুল, সেই সকল জগৎগুরুর অগণ্য গুরুগণকে গুরুতর গৌরবসহকারে আগ্রায় করি॥ ৬॥

প্রীকৃষ্ণের গুরুবর্গের নাম যথা ॥

অঙ্গরাজী, অঞ্জেশর, রোহিণী খবং অক্ষা বাঁহাদের পুজ-গণকে হরণ করিয়াছিলেন দেই সকল গোপী, দেবকী ও দেবকী তৎ সপদ্ধান্ত কৃষ্টী চানকতৃন্দ্ভি:।।
সান্দীপনিমুখান্চান্যে যথা পূর্বমনী বরাঃ।
ব্রেজেখরী ব্রজাধীশো ত্রেতো গুরুজনেছিনো ॥ ৭ ॥
তত্র ব্রজেখর্যা রূপং যথা জীনশনে ॥
কোনং বাদং পৃথু কটিভটে বিভ্রতী সূত্রনদ্ধং
পুত্রমেহেমুভক্চযুগং জাভকম্পঞ্চ হুক্রঃ।
রক্ষাকর্যপ্রমন্ত্রচলং ক্ষণে। কুণ্ডলেচ

ভোশানকত্নুভেন্।নথং জানাংশাধিকোন পুরুষ্টেন চ কেহাংশ্যাবর্ণাং। অজেম্বাাঃ শ্রেট্ডং কেহ্মাত্রশাল্ভাং। তত্কং। পিতরৌ সাহ্বিন্দেতা্মিত্যা। দিনা । ৭ এ

কৌনং পর্যস্থাত্সী ভর্সন্তবং অত্সী সাহেষা ক্ষা ইতামর: ॥ ৮ ॥

দেবকীর শপত্নীগণ, তথা কৃষ্ঠী, বহুদেব এবং সান্দীপনিমনি প্রভৃতি অন্যান্য ব্যক্তিগণ ইহাঁরাই শ্রীকৃষ্ণের গুরুবর্গ, কিন্তঃ ইহাদের মধ্যে পূর্বব পূর্বব প্রেষ্ঠ। সমুদার গুরুবর্গের মধ্যে; ব্রজেম্বরী এবং ব্রজরাজ সর্বপ্রধান॥ ৭॥

> ভন্মধ্যে ত্রকেখরীর রূপ যথা। শ্রীদশমে ৯ অধ্যায়ে ২ শ্লোকে ॥

শুক্ষের কবিলেন, হে রাজন্ ! যশোদার সুল কটিউটে: কোমবদন সূত্রহারা বন্ধ ছিল, পুত্রাস্থেহে স্তন হইতে জুল প্রসূত হইতে ছিল, আর বারম্বার রজ্ আকর্ষণে কাজ্বল প্রাপ্ত হওরাতে ককণ চলিত ও কর্ণের কুণ্ডলম্বর ক্রান্ত প্রাপ্ত হওরাতে পুত্রদায় খলিত হইতে ছিল। অপর প্রমা ৰিবং বক্তুং কৰন্দবিগল্মালতী নিৰ্মান্ত ॥ ৮ ॥
যথাৰা ॥
ডোনী-জুটিত-ৰক্তকেশপটলা গিন্দু নবিক্লুলসং
সীমন্তত্যতিরপ্সভ্বণবিধিং নাতিপ্রভূতং প্রতা।
গোবিক্লাস্য নিস্কটগাঞ্জনরন্দ্রনবেক্লীবর

নবেন্দীবরেতি ক্রমদীপিকারাং ষথাসংখাপ্রাপ্তারান্তাতে। তথাহি ত্তাবরণপূজারাং। ততোযক্ষেদ্দলাগ্রেষ্ বহুদেবঞ্চ দেবকীং। নন্দগোপং যদোদাঞ্চ
ইত্যুক্তা প্রাহ। ক্রান্মুল্রভিষকরৌ শিতরৌ পীতপাণ্ডরৌ। দিব্যমান্যান্ধরাশেশ
ভূষণো মাতরৌ পুনং। ধাররজ্যো চ বরদং প্রসা পূর্ণপাত্রকং। অরুণশ্যামলে
হারমশিকৃত্বন মণ্ডিতে ইতি। বংথল্ গৌতমীবভত্রে। তথাহিবস্থি দেবঞ্চ যালোগাং
দেবকীং পুনং। বহুদেবো হেমগোরো বরাভ্রকরঃ হিতঃ। দেবকী শ্যামন্ত্রপা
স্কাভ্রশদোভনা। বলোলা হেমসকাশা দিভবল্র যুগাহিতা। স্কাভ্রবন্দলীপ্রা
কৃত্বোভাসিভাননা। রোহিণীঞ্চ বজ্লের নন্দং গৌরং সমর্ভরেং। বরুদাভর্বসংবৃক্তং সমন্তপ্রবর্থনিতি। ভাগে ভালু বিচার্যাং। ইন্দীবর্ণ্যাম শ্যামক্রিক্রিভি। ইন্দীবর্ষির শ্যামা ন কেবলং ভালুণী অপিতু শ্যামা ক্রিভিণিপ্রশ্য

হশতঃ জাঁহার বদৰ বেদ বিন্দুতে অহিত হইয়া ছিল॥৮॥ যথাবা॥

বিনি মঞ্বারা বক্রকেশসমূহ বন্ধন করিয়াছেন, বাঁহার বিন্দুরবিদ্র বারা সীমন্তের চ্যুতি লাজ্জলামান দেখাইভেছে, বাঁহার অস সোষ্ঠববারা অলফার সকলের কান্তি ভিরন্ধত হইতেছে, গোবিদের বদন নিরীক্ষণেই বাঁহার নয়নমুগল অঞ্চতে আকীর্ণ হইয়াছে এবং বাঁহার নীলপদের ন্যায় শ্যাম শ্যামক্রচিবিচিত্রনিচয়া পোঠেখনী পাছু বং ॥ ৯ ॥
বাৎসল্যং ঘণ। ॥
ভনৌ মন্ত্রন্যাদং প্রণয়ভি হরে গ্রিচাদময়ী
ল বাম্পান্দি রক্ষাভিলকমলিকে ক্রম্মভিচ ।
ল্লুবানা প্রভাগে দিশভিচ ভূকে কার্ম্যমদেশ
যশোদা মূর্ত্বে ক্রুরভি শুভবাৎল্যপটলী ॥ ১০ ॥
ব্রক্ষাধীশস্য রূপং ঘণ। ॥
ভিল্তভূলিতৈঃ কচৈঃ ক্রুরন্তং

ভালৃশীচ বিশেষণরোঃ কর্মধারয়ঃ ॥ ৯ ॥ কার্মণং মূলকর্মরক্ষোবধমিতি যাবং ॥ ১০ ॥ ভিলমিত্রিত ভঙুলবলাচরম্ভিঃ লাামমিত্র খেতেরিতার্থঃ । অভিভূমিল মিডি

শ্যামবর্ণ অঙ্গ ও চিত্রবিচিত্র বসন পরিধান, সেই গোঠেশরী যশোদা আমাদিগকে রক্ষা করুন ॥ ৯॥

य(मानात्र वारमना यथा॥

যশোদ। প্রভাতকালে প্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিয়া সেহভারে স্থন হইতে ছ্ম মোচনপূর্ণক বাঙ্গাকুল লোচন ও গদাদ শরে পুজাঙ্গে মন্তন্যাস, ললাটে রক্ষা ভিলক এবং হন্তে মঞ্চা বন্ধন করিতে লাগিলেন, কি আন্চর্যা! এভদ্বারা বোধ হইল বাং-দল্যসমূহই যেন যশোদা মূর্ত্তিতে ক্ষুত্তি পাইতেছে ॥ ১০ ॥

ব্ৰদ্যাল নন্দের রূপ যথা।। ধীহার মতকের কেশ সকল শ্যাম মিজিভিভক্ত বর্ণ

## ভক্তিরসায়ভদিকু:। পশ্চিম। ৪র্থ লহরী

নবভাতিরপলাশচাক্রচেলং।
অভিতৃশিলমিন্দুকান্ডিভাত্তং
ব্রহ্মরাজং বরফুর্চচন্দর্গমি॥
বাৎসল্যং যথা॥
অবলম্য করাঙ্গুলিং নিজাং
শ্বলদন্তিযু প্রসরন্তনঙ্গনে।
উর্দি স্রবদশ্রনিবারে।
মুমুদে প্রেক্ষ্য- স্তুগং ব্রক্সাধিপং॥
অথোদ্দীপনাঃ॥
কোমারাদিবয়োরূপবেশাঃ শৈশবচাপলং।

প্রশংসা বিষয়ত্যা সূল্মি চার্ণ:। অভিশ্ন: প্রশাসামিতি বিষা। কুর্চো বিক্রন মধ্যে ক্রবো: শাক্রনি কৈতব ইতি বিষা। ১১ ।

পরিধেয় বসন নৃত্ন বট পত্তের ন্যায় মনোহর, উদর অতি সুল এবং যিনি পূর্ণ চল্ডেয়ে ন্যায় রূপবান্ও অসুপম শাঞ্চ-ধারী পেই ব্রহরাজ নন্দকে অর্থনা করি॥

নন্দের বাৎসকা যথা॥

জীকৃষ্ণ পিভার করাঙ্গুলি ধারণ করিয়া প্রাঙ্গণে ভ্রমণ করিতেছিলেন, তাহাতে তাঁহার মৃত্ চরণ দৃঢ়রূপে ভূমিতে সলগ্ন না হইয়া ছালিত হইতে লাগিল, অজরাজ ঐরপ গমন-শীল পুত্রকে নিরীক্ষণ করিয়া হালয়স্রাধী অঞ্জ বিমোচনপুর্বক ভানন্দে বিহলে হইয়া পরিলেন॥

অথ বাৎসল্য রসে উদ্দীপন॥ কৌমারাদি বহুস, রূপ, বেশ, বাল্যচাঞ্চল্য, মধুর বাক্য জন্নিত স্মিত লীলান্যা বুবৈরুদ্দীপন!: স্মৃতাঃ ॥
তত্ত্ব কৌষারং ॥
তাল্যং মধ্যং তথা শেবং কৌমারং ক্রিবিধং মতং ॥ ১১ ॥
তত্ত্বাল্যং ॥
স্থানধ্যারুতাপাঙ্গ খেতিমা স্বল্লদন্ততা।
প্রব্যক্ত মার্দ্দবন্ধক কৌমারে প্রথমে স্তি॥ ১২ ॥
যথা ॥
ক্রিচতুর দশন স্কুর্শ্থেন্যঃ
পৃথুত্ব মধ্য কটীরকোরু শীমা।

স্থূলং সধাং উদ্ধান্ত বদা ভেষা ভাষতে ওটা ॥ ১২ ॥ জবোষা বাচন্দাবোৰা জিচ চুরা ইতি সনিক্ষ চায়ামেৰায়ং বহুতীহিঃ সন্ধি-

মক্ষ হাগ্য ও ক্রীড়া প্রভৃতি, পণ্ডিতগণ বাংসল্য**রসে এই** সকলকে উদ্দীপন বলিয়া থাকেন॥

তমধ্যে কৌমার যথা॥ আদ্যু, মধ্য ও শেষ ভেদে কৌমার তিন প্রকার হয়॥ >>॥ তমধ্যে আদ্যুকৌমার যথা॥

প্রথম কোমার অব্সায় ও মদাভাগ ৢউরুদেশের স্থ্রতা, নেত্রের অস্তভাগ শুরুষর্গ, অল্ল অল্ল দস্তোদাস এবং মুচ্ছা-প্রভৃতি হইয়া থাকে॥ ১২॥

यथा ।

যাঁহার ভিন চারিটা দত্তে মুথচন্দ্র শোভা পাইতেছে, বাঁহার মধ্য দেশ ও উক্ল অতিশয় সুল এবং যিনি নয় কুবলয়- নষক্বলয়কোষলঃ ক্ষারো
মুদমধিকাং ব্রজনাথয়োর্ব্রানীৎ ॥
আন্মিন্ মূহুঃ পদক্ষেপঃ ক্ষণিকে রুদিভিন্মিতে ।
স্বাস্ত্রপানমূত্রানশায়নাদ্যঞ্চ চেপ্তিতং ॥
যথা ॥
মুথপুট ক্বত পাদাস্ত্রোরু হাস্ত্রমূর্জ্ব
প্রচল চরণ যুগাং পুত্রমূতান স্বপ্তং ।
ক্রণমিহ বিরুদন্তঃ স্মেরবক্তাং ক্ষণং সা
তিলমপি বির্বাদীয়েকিছ্ং গোর্চরাজী ॥
আন্তর্ব্যান্তন্থঃ কঠে রক্ষাতিলক্মঞ্জনং ॥

গ্ধৰ্ক।তি হল্মহবাঞ্চনার্থ মিতি চত্তার এব দশনা বস্তুতো বোধাস্তে। সীমুশ্রে

দল অপেক্ষাও হুকোমল দেই কুমার ব্রজরাজ ও ব্রজেশ্বরীর অভিশয় আনন্দ বিস্তার করিতে লাগিলেন॥

এই প্রথমে কৌমারে বারস্থার পাদনিক্ষেপ, ক্ষণ রোদন ও ক্ষণ হাদ্য, স্মীয় অঙ্গুপান এবং উত্তান শর্ম অর্থাৎ চিং ছইয়া শয়ন করিয়া থাকা, ইত্যাদি সকলকে চেফী বলে॥ যথা॥

শ্রীকৃষ্ণ উত্তান ভাবে শয়ন করিয়৷ মুখপদ্মে পদাস্ত্রি, উর্জনিগে চরণদ্ম নিক্ষেপ, ক্ষণকাল রোগন ও কণকাল বা হাস্যবদ্দনে আনন্দাভিশয় প্রকাশ করিতে লাগিলে, ত্রজেশরী যশোগা ঐ প্রকার পুত্র দর্শন বিষয়ে ক্ষণকালও বিরক্তি ভাব প্রকাশ করেন নাই অর্থাৎ সতৃষ্ণ নেত্রে নিরস্তর নিরীক্ষণ

96-9

পট্ডারী কটো হন্তে সূত্রমিত্যাদিমগুনং ॥ ১৯ ॥
যথা ॥
তবকুনখন্তনং নবভ্নালপত্রস্থাতিং
লিশুং রুচিররোচনা কভত্নালপত্রপ্রির: ।
ধ্রতপ্রভিদনং কটি ক্ষ্রিতপট্রসূত্রপ্রক্রম
তব্দেশগৃহিণী সভং ন কিল বীক্ষা তৃপ্তিং যর্যো ॥ ১৪ ॥
অথ মধ্য ॥
দৃক্তটিভাগলকতা নগ্রভা ছিদ্রিকর্ণতা ॥

মাত্রাম্পদং বাচাং জেবামাল্লর ইভার্থ: ॥ ১৩ ॥

্ ভবকো ব্যাল্পায়তরা তচ্চলেনার ব্যাল্প এব বাচনীর:। বিতীরং ভ্যাক পুরুং ভিশকং ॥ ১৪ ॥

चानश्रका जैवनग्रका। माठाममाभाष्कावाका च्काहिरकनश्रक। ८०% विश्वा ।

করিতেভিলেন।

এই প্রথম কোমারে কৃষ্ঠেব্যাম্রেনখ, রক্ষাজিলক, কজ্জল, কটিতে পট্টরজ্ব হতে সূত্র, এই সকল ভূষণ॥ ১৩॥

যথা॥

বাঁহার বক্ষে ব্যাত্র নথভূষণ, বাঁহার নবতমাল সদৃশ লীল বর্ণ কান্তি, বাঁহার মনোহর গোরোচনার তিলক এবং বিনি হল্তে সূত্র ও কোটিদেশে পট্টরজ্জ্ব দাম ধারণ, করিয়া ছিলেন, সেই শিশু সন্তানকে নিরীক্ষণ করিয়া ব্রজরাজ কোন জ্বানেই কৃষ্টি লাভ ক্রিডে পারিশেন না॥ ১৪ ॥

चर्य मधारकीमात्र ॥

দেজ আত্তে কেশের অগ্রভাগ পত্র, ঈবং নমারা অর্থাৎ



কলোক্তী রিঙ্গণাদ্যক কোমারে সতি মধ্যমে ॥ ১৫ ॥
যথা ॥
বিচলদলক রুদ্ধ ভ্রাক্তী চঞ্চলাক্ষং
কলবচন্মৃদ্ধুন্তনভোত্র হন্ধুং।
অলঘুরচিত্রিঙ্গং গোকুলে দিগ্ ভুকুলং

ছিত্রীতি নিত্যমোগেছপি ভত্রাভিষ্যক্তথাছক্তং। রিঙ্গদেষ্যাদ্যং ষত্র ভত্তিঙ্গপাদ্যং কিঞ্চিত্রণ বিহারাস্থং চরিভমিতার্থ: ॥ ১৫ ॥

বিচলন্তিরলকৈ ক্লৈ যে ক্রতটো ওওল ভাগে তাত চঞ্চলে জ্ঞাকিণী যদ্যা তাই উদ্ধান ক্রিন্দ্র ক্রেন্তার রন্ধ্যে বাদ্যা বির্দ্ধান্য বিতি হত্তং। তাত ভাগে বিশ্বপণ চরণবিহারক তারেশোহরতি অগত্য বিচিতরিপ্রমিতি। তাত প্রথমে আনক্ষ্রিভিরিপ্রমিতার্থ:। আনেন প্রথম কৌমারাস্থেচপি স্বরং বিশ্বণং বোধাতে। আব বিতীয়েন লখু পি রচিতে বিশ্বেষ যেন তং। কিঞ্চিচরণচর্যারা বিহরস্কামিতার্থ:। দিগ্তুক্লমিতি পূর্কবিদীয়গ্গতা কাদাচিংকনগ্রহা চেতি জ্ঞারং। তনর

কখন বস্ত্র পরিধান এবং কখন বিবসন, ছিদ্রে কর্ণ, (কান ফোড়া-) মধুর বাক্য ও রিঙ্গণ অর্থাৎ কিঞ্চিৎ কিঞিৎ চর্গ়া বিন্যাপপুর্বক গমন, ইত্যাদি সকল মধ্যকোমারে হইয়া খাকে ॥ ১৫ ॥

#### यथा ॥

বাঁহার চূর্ণকুন্তল গুলি জ্রভটে পতিত হইয়া লোচনন্ত্রকে চক্ষল করিতেছে, বাঁহার বাক্য অব্যক্ত ও অভিশন্ত মধুর, বাঁহার কর্ণবন্ধের ছিদ্র প্রকাশ পাইতেছে এবং যিনি জ্রভ-শমনে স্থালিভগতি ও উলগ, গোক্লমধ্যে এভাদৃশ পুত্রকে নিরীয়ণ শবিশ মাতা নাশোদা অন্ত্যমুদ্ধে নির্ম হইরা

তনরুমুত্রিকো বেক্য মাজা ন্যমাজনীং ॥ ১৯ ॥ আগস্য লিখরে মুক্তা নবনীতং করামুক্তে।
কিছিণ্যাদিচ কট্যাদো প্রদাধনমিধোদিজং ॥
যথা ॥
কণিতকনককিবিণীকলাপং
ক্রিত্রমুখ্যুজ্মনাসিকাগ্রমুক্তং।
করপ্তনবনীতপিগুমগ্রে
তনয়ম্বেক্য ননন্দ নন্দপত্নী ॥
অথ শেষং ॥
অত্ত কিঞ্চিৎ কুলং মধ্যমীয়ংপ্রথিমভাগুরঃ

সমূভবঁতী সা স্থাকে। বিলহে ইভি বা পাঠ: ॥ ১৭ ॥
নবনীত: কাদাচিংকমেৰ তচ্চ শোভাকরতাং প্রসাধননির্বিশেষ: ॥ ১৭ ॥
ছিলেন ॥ ১৬ ॥

মধ্যকোষারে অলপ্কার যথা।।
নাগাতো মৃকা, হস্ত পল্মে নবনীত এবং কটি প্রভৃতিভিত্ত

यथा ॥

বাঁথার কটিতে শব্দারমান স্বর্ণময় কুন্ত ঘণ্টিকা,বন্ধন ট্রাইছ হাল্য বৃক্ত, নালাতো জাজ্ল্যমান পূক্তা এবং বিনি ক্রেন্বনীত পিও ধারণ করিয়াছেন, অত্যে জানুশ ভনরকে অবলোক্ত্র করিয়া নুলপত্নী আনন্দাতিশয় লাভ করিলেন এ

অৰ শেষকোমার 👔

(भवरकीमीद्र मधारमण केवर कीन, वक्टक्ल्य किंदिक

শিরশ্চ কাকপকাত্যং কৌমারে চরমে সন্তি ॥ ১৭ ॥
যথা ॥
স মনাগপচীয়মানমধ্যঃ
প্রথিমোপক্রমশিক্ষণার্থিককাঃ।
দধদাকুলকাকপক্ষলক্ষীং
জননীং স্তম্ভব্তিম্মি দিব্যডিস্কঃ ॥ ১৮ ॥
ধটীফণপটী চাত্র কিঞ্চিন্যবিভূষণং।
লঘ্বেত্রকরম্বাদি মণ্ডনং পরিকীর্তিতং ॥ ১৯ ॥

অপচীয়মানেতি কর্মকর্ত্তরি প্রয়োগ: বরং ক্ষীণীভবন্মধা ইতার্বঃ। কাক-পক্ষোহত্ত স্বাপসবামধান্থবেশী ব্রুল্য পূর্চে যুক্তি: ॥ ১৮ ॥

ধটা শরবিতার বছবারাম: পটবিশেষ:। য: থলু বিচিত্রপরিবৃত্তিখাত-লোনাধরাকে বিচ্ছিতিং লভতে। ফণপটাপুরত: ফণাকারকচ্ছীকরণার পশ্চাদর-ধটা সংনিতঃ স্থাতপট:॥ ১৯॥

বিশালভা এবং মন্তক কাকপক্ষ যুক্ত অর্থাৎ জুল্লীশালী হইয়া থাকে ॥ ২৭ ॥

#### यथा॥

বাঁহার মধ্যদেশ ঈষৎ ক্ষাণ, বক্ষ:হুল কিঞ্চিৎ প্রাণন্ত এবং হিনি মন্তকে আকুল কাকপকের শোভা ধারণ করিয়াছেন, সেই আশ্চর্য্য বালক জননীকে স্তম্ভিত করিভে লাগি-লেন ম ১৮॥

এই শেষ কোমারে ধটা অর্থাৎ অল্প পরিসর অবচু বহু বার্ষ বস্ত্র বিশেষ, বাহার অগ্রভাগ সূর্পকণার ন্যায় কৃষ্ণিত, বন্যসূহণ এবং হল্ডে ক্ষুত্রবেত্র ইত্যাদি সকল স্থ্যপর্কণে কার্তিত হয় ॥ ১৯ ॥ বংসরক। ব্রজাভার্ণে বরুকৈ: স্ব থেপনং।
পাবশূর্গকাদীনাং বাদনাদ্যক্র চেন্তিভং ॥ ২০ ॥
ঘণা ॥
শিবশুরুতশেশবর: কণপটাং কটারে দবং
করে চ লগুড়াং লযুং সবয়সাং কুলৈরার্ভঃ।
অবমিহ শরুৎকরীন্ পরিসরে ব্রক্ত খিরে
ফভত্তব রুভার্যরভার্ছ পশ্য দেবাণি নং॥

भावः एष्ट्रारवर्ः २० ॥

লিবণ্ডেভি স্থান্য গৃহাগ্যনে বিলম্পান্ডাং বীক্ষা চপ্রশালিকার আর্চনা আর্থান্য আর্থানিকা আর্চনা আর্থানিকা আর্দ্রান্ত আর্থানিকা আর্দ্রান্ত আর্থানিকার আর্থান

ব্রজের নিকট বংসচারণ, সধাগণের সহিত জীড়া, সৃক্ষ বেণু, শৃঙ্গ ও পত্রাদির বাদ্য এই সকল শেষ কৌমারের চেকী॥২০॥ ঘধা॥

পুত্র বংসচারণ করিতে পিয়া অপদ্বায়ে সৃহে আগম্বদ করিতে বিলম্ম ছওয়ার প্রফেশর ব্যক্তচিতে চন্দ্রশালিকার উপর আরোধণ পূর্বক ব্যাকুলচিতা যশোগাকে কহিলেন প্রিয়ে কি আশ্বর্য । ঐ দেখ ভোষার পূত্র মন্তব্দে মন্ত্র্য প্রভাৱ চূড়া, কটিভটে কণাকার পটা এবং হতে কুল্ল সভান্ধীপে বারণ পূর্বক প্রিয়থয়ভাবর্গে পরিবৃত হইরা অজের ভানীপে বংসবৃন্দ্র রক্ষা করত আনাগের নের্জানকারে কুডার্বড়া মুন্দানি ক্ষা করতে আনাগের নের্জানকারে কুডার্বড়া মুন্দানি ক্ষা করতে আনাগের নের্জানকারে কুডার্বড়া মুন্দানি ক্ষা করতেছে ই

অব পোগতং-॥
পোগতাদি পুরৈবোক্তং তেন সংক্রিপ্য লিখ্যতে ॥
ঘবা ॥
লবি পবি প্রক্রীণামংশুকোন্তং নিমুর্দ্ধা
ধবলিমযুগপালো মন্তিতঃ কঞ্কেন ।
লঘু লঘু পরিগুঞ্জন্মঞ্জীরযুগ্যং
ব্রক্তম্বনিম বৎসঃ কছদেশাস্থ গৈতি ॥
অব কৈশোরং ॥
অক্রিমযুগপাকস্ত্র্পবক্ষংকপাটী
বিলুঠদমলহারো রম্যরোমাবলিশ্রীঃ ।
পুরুষমনিরয়ং মে দেবকি শ্রামলাক-

## ष्यथ (भोगख॥

পোগগুদি বয়স পূর্নেই উক্ত হইয়াছৈ, একারণ এস্থানে শক্তিশে শিশিডেছি॥

#### যথা ॥

্ মশোলা কহিলেন দেখ আমার ধাল অপাঙ্গশালী বংগ গাঙ্গকে উক্ষীয়, গাত্তে কঞ্ক এবং পদদরে ক্লা মুন্দ হবকারি জানোহর নুপুর মুগল পরিধান করিরা হুরক্ষী সকুলের সমীপ হুইতে পথে পথে বুলাবন ভূমিতে আগমন করিছেছে।

#### जब किरमात्र ।

्र वर्त्नारमः। यादात अभाजवूनन अक्रतवर्गः, तकःयन वैश्वकः, भनुस्मरण विमुष्टिक केञ्चन दात्र अवः तमनीत स्तामा-

# भन्दिय । अर्थ नहत्ती । "खेक्तित्रनाञ्चेकनिक्कः ।



স্তুত্বর্থনিজন্ম নৈত্রসূকৈ থিনোতি ।
নামান্ যোগনেনাপি দীদ্যন গোঠেন্দ্রনন্দনঃ !
ভাতি কেবলবাৎসলাভাজাং,পোগগুভাগিব ॥ ২৯ ॥
স্তুত্মারেল পোগগুবরসা সঙ্গতোহপ্যসৌ ।
কিলোরাভঃ সদা দাসনিলেবাশাং প্রভাসতে ॥ ২২ ॥
অথ লৈশ্যে চাপলং ॥
পারীর্ভিনতি বিকিরত্যজিরে দ্বীনি
সন্তানিকাং হরতি কন্ততি সন্থদগুং ।
বাক্রো ক্ষিপত্যব্রিরভং নদনীত্রিশ্বং

লাগৰিলেবাণামিতি তৎপ্রোচ্চারপক্তিময়লোকপালানামিভার্থঃ ॥ ২২ ॥ পারী পানপারবিতি কীরস্থামী। তচ্চ হ্যাংগেজেরং। মুখারাজাল্য-

বলী শ্রী, দেই এই ভোমার জঠরথনিজন্মা পুরুষরত্ব শ্রামণাঞ্চ আমার নেত্রকে অভিশয় রূপে আনন্দিত করিতেছে।

গোপেজনন্দন নৰযোবনে শোভমান হইলেও বাৎসল্য বসনিষ্ঠ ব্যক্তিদিগের নিকট পোগও বয়ো বিশিক্টের নায়র শোভা পাইয়া থাকেন ৪২১ ৪

এই প্রকৃষ হকুষার পোগও বয়সে যুক্ত হ**ইলেও দান** বিশ্বেষ সকলের স্থান্ধ সর্বাদা কৈলোর তুলা, প্রকাশিত হয়েন ॥ ২২ ॥

## व्यव रेममर्ड हम्बद्धा ॥

्ञिङ्क द्वारा एक, श्रामान मुस्तिद्वन, मह इसन, अधानम्य एक अरः नित्रस्त स्त्रिष्ट नरनीस् विद्यम स्त्रिश •

মাতৃঃ প্রযোগভরমের হরিস্তনোতি॥ ২০॥ ্ যথা বা॥

প্রেক্য থেকা দিশ: সশক্ষমসকৃত্যকং পদং নিকিপসায়াভ্যেষ লভান্তরে ক্ষুটনিভো গব্যং হরিষ্যন্ হরিঃ।
ভিঠ বৈরমজানতীব মুখরে চৌর্যান্ত্রগভং

জ্রসকোচনমস্ত শুষ্যদধরং রমাং নিদৃক্ষে মুখং॥ ২৪ ॥ অথাসুভাবাঃ॥

অনুভাবাঃ শিরোজ্রাণং করেণাঙ্গাভিমার্জনং ।

ভাগুমিতি মাধুরা: সম্ভানিকা হুয়োপরি জাততংসারভাগমরজালিকা। অবিরতমিতাত দুশি মুহরিতি পাঠান্তরং দুশুং ॥ ২৩ ॥

বৈরং মনসচকলং ভিঠ। মনসফল্লয়োঃ বৈরং এমবপ্রবিধামীতি ভাবনরা নানগিতিং দধ্যতা জনতে যক্ত তৎ ॥ ২৪ ॥

## এই প্রকারে মাতার আনন্দাতিশয় বিস্তার করেন। ২ত ॥ যথাবা ॥

মুখরে ! ঐ দেখ শ্রীকৃষ্ণ সভয়ে চতুর্দিকে দৃটিপাত পূর্বক আর অয় পদ নিজেপ করত লতাজালে আবৃত হইয়া নিশ্চয় নবনীত হরণার্থ এখানে আসিতেছে অতএব তৃষি না জানার মত ইইয়া অবস্থিত থাক, আসি উহার চৌয়্য কম্পিত জাগভা শালি জাসান্তিত লোচন ও শুক অধ্যযুক্ত রমণীর মুবচক্ষে নিরীক্ষণ করিব ॥ ২৪ ॥

ৰথ অমুভাব 🛭

मजर चार्कान, रखवाश जन मार्कन, चार्चितीन, चार्का-

चानैकाला निरमण्ड नाननः श्राडिणाननः ।
हिर्छाणस्ममानामाः वर्णतन श्राहिडाः ॥
छक् निर्प्राञ्चानः ववा श्रीकणस्म ॥
छक्षेक्रस्यारस्यानमान्नामा
छक्षेक्रस्य। रूक्ष्मम् ।
छक्ष्मक्रस्य। रूक्षम् ।
यथावा ॥

माननः योगनामि । अखिनाननः प्रका ॥ २६ ॥

করণ, লালন, প্রভিপালন এবং হিভোপদেশ প্রদান এই সকল বৎসল রসে অমুভাব রূপে কীর্ক্তিত হয় ॥

তন্মধ্যে মন্তক আত্রাণ কথা।।

**क्रिमाम २० जवाराय ०० (आदिय ॥** 

ভকদেৰ কৰিলেন হে রাজন্! প্রগণকে অবলোকন করিবা মাত্র গোপদিপের অনিক্চিনীর প্রেম রূপ উদগত হবল, তাহাতে তাঁহাদিপের চিত্ত ময় হবল। পড়িল। সজ্জা ও ক্লেশ হেতু ভাঁহারা প্রাছপের প্রতি তাড়না করিছে আনিরাছিলেন কিন্তু নয়মগোচর হবল মাত্র গতমন্ত্র হবলা তাহপরীত্যে বরং আতামুরাগ হবলেন। অভএব সেই সকল বালককে প্রহণ পূর্বক বাহু হারা আলিজন করিয়া মৃত্তক আন্তাপ করন্ত পরম প্রশাস প্রাধ্ব হবলেন য়

তুর্বেন দিঝা ক্চবিচাতেন
সমগ্রমাজ্ঞার শিরঃ সপিঞ্ছং।
করেণ গোঠেশিত্রসনেরসঙ্গানি পুক্রদা মৃত্র্মমার্ক ॥
চুম্বাশেষী তথাহ্বানং নামগ্রহণপূর্বকং।
উপালস্তাদয়শ্চাত্র মিত্রৈঃ সাধারণাঃ ক্রেয়াঃ ॥
অথ সাত্ত্বিকাঃ ॥
নবাত্র সাত্ত্বিকা স্তন্যস্রাবং শুস্তাদয়শ্চ তে ॥
তত্ত্বস্ত্রাবো যথা শ্রীদশমে ॥
ভন্মাভ্রো বেণুরবত্বরোপিতা

ব্ৰজনাজ গৃহিণী বশোদা ক্ষরিত স্তন্ত্ৰে লিপ্তালী হইয়া পুজের সপিঞ্ নন্তক আত্রাণ পূর্বক ভণীর অঙ্গ নকল বারং বার মার্জন করিতে লাগিলেন #

চুম্বন, আলিম্বন, নামগ্রহণ পূর্ব্যক আহ্বান এবং মিত্রের সহিত ভিন্নকার এই বংগল রসের সাধারণ কার্য্য।

অৰ সান্তিক ৷৷

भृत्काल यस्त्राति चाठे अवः स्तर्भ स्त्रात् । वश्यन तस्त्रा अवि नवन्त्रिक ॥

ভশ্বধ্যে স্তন্যজ্ঞাৰ যথা ॥ জীবশক্তে ১০ সংগ্ৰহে ১৯ কোনে ॥

खकरम्ब किस्पन ह्य बाजन् । वश्त्रभातमाङ्ग्यं । क्षत्रमात्राच मुद्र इदेशाहित्सन, काहाना व्यन्धाति खन्माज উদ্গৃহ দোর্ভিঃ পরিরভ্য নির্ভরং।
সেহসুতন্তন্যপরঃস্থাসবং
সন্থা পরং ব্রহ্ম স্কানপারয়ন্॥ ২৫॥
যথা বা ললিতমাধবে॥
নিচুলিতগিরিধাতৃক্ষীভপদ্রাবনীকানবিলস্বভিরেগুন্ ক্ষালয়ন্তির্যপোদা।
কুচকলগ্রিমুক্তৈঃ ক্রেহমাধ্যাকমেধ্যৈস্তব নর্মভিষেকং চুগ্রপুরৈঃ করোতি॥ ২৬॥

নিচুলিতখনাচ্ছাদিতবং বেহ এব মাধ্বীকং বেৰু ভেচ নেখান্ট পরস্থবিজ্ঞাতে ইতি বিশেষণয়োঃ স্থাসঃ। তবাপি প্রমাখালৈ।ছিভি ভাষঃ। নবং প্রথমনিত্য-ভিষেকান্তরং অলৈক্তবিষ্ণাশানেন পিইপেবী ক্রিবাত ইতি ভাষঃ॥ ২৬॥

সম্বর উখিত হইরা সেই সকল মারারচিত বালককে স্ব স্থ তনর জ্ঞান করিলেন, পরে পরপ্রক্ষের ন্যার বাহ্যারা তুলিরা লইলেন ও নির্ভর আলিসমপ্রক্ষ হ্যাবৎ হ্যাদ এবং আসংক্ষ বং মাদক, তুর যাবা স্লেহবলতঃ স্বভঃ প্রস্তু হইডেইগ্রাভাগ পান করাইতে লাগিলেন॥ ২৫॥

বৰাবা ললিভনাধৰে #

হে কৃষ্ণ ! গাভীরুশের চরণধূলিয়ারা তোমার যে সকল হ্ব্যক্ত গৈরিকাদি থাড় রচিত প্রোবসী বিস্তা হ্ইরাছিল, যশোলা কৃচকলন বিষ্ক্ত মেহনর মাধ্বীকভ্ল্য ছুল সম্ তৎসম্পার ধূলি প্রকালনপূর্বক হতালার দূতন অভিবেক্ত করিছেন ॥ ২৬ ॥ ; স্তম্বাদের বর্ধা।
কথমপি পরিরজ্ব ন ক্ষমা স্তর্জগাত্রী
কলরিভুমপি নালং বাষ্পপুরপ্লাভান্দী।
নচ স্তম্পদেষ্ট্র ক্ষক্ষী সমর্থা
দধভমচলমাসীদ্যাক্লা গোক্লেশা।
অব ব্যভিচারিশ:॥
অত্রাপস্থানস্থিতা: শ্রীভোক্তা ব্যভিচারিশ:॥
অত্র হর্ধে। যথা শ্রীদশ্যে॥

**ংগান্তুলেশেভ্যত্ত গোপরাজ্ঞী**তি পাঠাস্তরং ॥ ২৭

## **उ**छानि यथा ॥

ু জীকৃষ্ণ গোৰন্ধন পৰ্বত ধারণ করিলে গোকুলেখনী মূশোদা শুৰুগাত্ৰী হইয়া কোনক্ৰমেই পুক্তকে আলিঙ্গন করিছে সক্ষম হইলেন না, চকুৰ্জলে পূৰ্ণ হওয়ায় তদ্ধায়া আর অৰ্লোক্ষন করিতে পারিলেন না, অধিক কি বলিব বাল্পা-বারিতে কণ্ঠ পরিপূর্ণ হেতু আর কোন উপদেশ প্রদান করিতে সম্বর্থ হইলেন না॥

শ্বথ ব্যক্তিচারী॥

এই বংগলয়দে অপত্মারের সহিত প্রীতরসোক্ত সম্বাদ ব্যক্তিচারী হইরা থাকে ॥

> ् ज्यारम् वर्ष यक्षाः ॥ क्रीमणस्य २२ व्यवहारसः ॥

যশোদাচ মহাভাগা নতীপকপ্ৰকা সভী।
পরিষজ্ঞাকমারোপ্য সুমোচাজ্ঞাকলাং মুক্ত । বিশ্বী
যথা বিদয়মাধ্যে ॥
কিতচন্দ্রপরাগচন্দ্রিকা
নগদেশাবরচন্দ্রভিন্ন ।
পরিতো ময়ি শৈত্যমাধুরীং
বহতি স্পর্শনহোৎসমন্তব ॥
অধ স্থায়ী ॥
সংজ্ঞানিচ্যতা যা স্থানসুক্স্পোহ্সুক্স্পিতৃঃ।

চক্রপরাগাদীনাং শ্রীঃ সম্পত্তিঃ। সাপাত্ত শৈতামাধুবোর। তৎঅতিযোগি-ছেন নির্দিটভাব। চক্রপরাগঃ কপুরিচুর্বঃ। নগদমূশীরং॥ ২৮॥

শুক্ষের কৰিলেন হে রাজন্! যশোলাও মহাভাগ্যবভী, যেহেতু নউপুত্র পুনরায় লাভ করিয়া ক্রোড়ে আরোপন, পুক্ষিক আলিঙ্গন করত মৃত্যুত্ঃ আনন্দাশ্রু আচন করিছে লাগিলেন ॥ ২৭॥

## यथावां विषयामाध्य ॥

হে কৃষ্ণ ! তোমার স্পর্শ মহোৎসৰ কপ্রচ্ব, জোৎক্রা, উশীর (বেণামূল) ইশ্পীবর ও চন্দানের শীতলম্ব, ভিরক্ষার করিয়া সর্বভোভাবে আসাতে শৈত্য মাধুর্য প্রাপ্তি ক্ষাইল ডেছে ঃ

## चव श्राष्ट्री ॥

অমুকলার্থ ব্যক্তির প্রতি অমুকলাকারির যে গঞ্জ-

রতি: দৈবাত্ত বাৎসল্যং স্থায়ী ভাবো নিগণ্যতে ॥ ২৮ ॥

যশোদাদেন্ত বাৎসল্যরতিঃ প্রেট্রা নিস্প্তিঃ ॥

প্রেমবৎ স্কেবস্তাতি কদাচিৎ কিল রাগবং "

তত্ত্ব বাংসল্যরতির্যথা শ্রীদশমে ॥

নলঃ স্বপুক্রমাদায় প্রোধ্যাগত উদার্থীঃ ।

মূর্দ্ধ্যবন্তায় প্রমাং মূদং লেভে কুরুত্বহ্ব ॥ ২৯ ॥

যথা বা ॥

বিম্যক্তশ্রুত্বিগালিরদ্য যুর্লীনিস্থানশুক্রাষ্যা

বলোদানেরি চাপলকণং অনে। বাগপি প্রেটার তীনাং প্রোটা রাগপরা-কাঠান্মিকা প্রেমানিবনিতি যথানোযাং প্রেমানম্বথা ভাতি প্রতীয়তে অভ-ভত্ত সদা প্রোট্ডবে ভার্থঃ ॥ ২৫ ॥

শুন্যা রতি হয়, তাহাকে বাৎসল্য বলে, এ স্থলে ঐ বাৎসল্য শ্বায়িভাবরূপে কথিত হয়॥ ২৮॥

্ যশোদাদির বাৎসল্য রতি স্বভাবতই বৃদ্ধিশীল, কিস্ত উহা কথন প্রেমতৃল্য, কথন স্নেহ এবং কখন বা অসুবাগের ন্যায় প্রকাশ পাইয়া থাকে।

> ত দ্বধ্যে বাৎসন্য ন্নতি যথা॥ শ্রীদশমে ৬ অধ্যায়ে ২৭ শ্লোকে॥

হে রাজন্! উদারবুদ্ধি নন্দ প্রবাদ হইতে আগমন করিয়া খীয় তনগকে গ্রহণপূর্বকে সন্তক আন্তাণ করত পরম হর্ষ প্রাপ্ত হইলেন॥ ২৯॥

यथा वा ॥ ं खटकसमृहिभी घटभामा च्यमंत्र मृत्रमीत्रवं ख्यवमयामरम ভুনঃ প্রান্তবর্ষিণী বিগুণিভোৎকণ্ঠা প্রদোধোদনে।
গেহাদদণমদণাৎ পুনরসোঁ গেছং বিশস্ত্যাকুলা
গোবিক্ষা মৃত্ত্র জেন্ত্রগৃহিণী পদ্মামমালোক্যজে ॥ ৩০ ॥
প্রেম্বন্যথা ॥
প্রেক্ষা ভত্ত মুনিরাক্ষ্যগুলিঃ
ভুন্নমানমপি মৃক্ত্রদা।
কৃষ্ণমন্ত্রমভি গোকুলেখনী।
প্রান্ত্রমভূবি ন্যনীবিশ্ব ॥ ৩১ ॥

পালি: কর্ণনভারো ন্যাদিতি বিশ্ব:। তদ্বিনাংসে নতু সমগ্রকর্ণবিনাংসে এব স্কাতে ॥ ৩০ ॥

প্রেক্ষা পরপাররা বৃদ্ধে ভার্ব:। অন্নর্বাস এব জলা মিলনৌচিভাং সাধি প্রেক্ষাচ বৃদ্ধিরচাতে : কুরুভূবি মাবীবিশ্লিতোর পাঠ: ॥ ৩১ ॥

কর্ণাগ্রবিনস্ত করিয়াছিলেন কিন্তু প্রদোধকালে ঐ মুরলীরব পুন: ভাবণার্থ দিগুণতর উৎকণ্ঠা বর্দ্ধিত হওয়ার স্তন হইতে
দুগু মোচন করিতে করিতে গৃহ হইতে অঙ্গণ ও অঙ্গণ হইতে
গৃহে প্রবেশ করত 'ব্যাকুলচিতে বারখার গোবিশের প্রের
প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন । ০০ ॥

#### **C शमगर यथा ॥**

প্রধান প্রধান মূনিগণ প্রীকৃষ্ণের মহিমাসূহক স্তব করিতেছিলেন, গোক্লেখরী পরস্পারার ভদীর মাধাস্থ্য অবগত হইয়া
মৃক্তগন্ত্রমে ভানত্রম্বারা কঞ্লিকা আন্ত্রীভূত করত কুলেক্রে পিরা প্রবেশ করিলেন ॥ ০১ ॥

যথাৰা॥
দেৰক্যা বিবৃত্পসূচরিত্যাপুদ্মুজ্যমানাননে
ভূয়োভি বঁশুদেবনন্দনত্যাপুদ্যুদ্যমাণে জনৈঃ।

উল্লামানানন ইতি বল্লবনাথয়োমিলনকথেন ভদাননভাঞ্লিপতাং ৰাজ্বতি মিহিরেতি। মিহিরগ্রহং নিমিতীকুতা যা উংস্কৃতা বল্পবনাথাৰপালা-গমিষাত ইতি ভরোদর্শনোৎকণ্ঠা ভরেতার্থ:। প্রেম্বস্ত উল্লাসে হেতুঃ স্বাচারিক-ভাষপ্রেরিভায়াত্তভিরোধিনা। যুক্তে: ফ্রণ্মের (জ্বং। কংস্বধাৎ পূর্ম-मक्ष करक प्रवास्थानाः जीताक का भीनाः ए प्रशाह कृतम् का चार्यस्था नार्का कर्या ৰামিভাকাশবাণী প্ৰামাণামাত্ৰেণ শ্ৰীক্ষে স্বায়ৰ্ভাং বদংস্ক স্বপ্তপ্ৰিত্তি ৰাৰ্ছৰা বাজৰাত পুনস্তত্বপাদান মন্যায়াং স্যাদিতি তাং গোনহৎস্থ তৎপরিবন্ধি-প্রচক্ষরিবংশরীত্যা অপ্রত্যা নারনেন কংসং প্রতি কৃতং ভেদমপি ভারারত্ত वामरवर् न। युक्तित्रीमुनी। अञ्चाद्यामर्टम हे आपिकः धलू किः मन्न एक्स मन জাত: থলু ভবাত্তকং৷ যত্র কচিৎ পূর্বেশক্রবিভি দেবীবাণাা ব্যভিচারিভং কংসেনাপি তথা স্চিতং। দৈবমপানুতং বাক্তি ন মর্ত্যা এবেতি। বদিচ কিম-পাত্র সম্পর্ভাররং সাত্তদা সর্ক্ষরাবঞ্চশীলেন নিক্রপাধিবন্ধভাবভাবিতেন বস্থ-**टमटबम । विद्या खाजः खारबम देशांनीय शक्ता एक । खाळाणांत्रा निवृद्धमा खाळा वः** সমপন্নত, ইত্যাদিকং ন প্রোচাতে তত্মাদ্যথা প্রাগরং বস্তুদেবস্য কচিজাভত্তবা-মুল ইতি গর্গেণাত্র প্রোক্তং তথা ভক্রাপি নুনং প্রোক্তমিতি সংপ্রেভি স্বকার্যা-লাধনার্থমের প্রাচীনমর্কাচীনমের ছবিবিচা স্বারয়ত্বমাত্রং তে প্রচাররামাস্তঃ

#### যথাবা ॥

শ্রীকৃষ্ণসূর্য্য গ্রহণে উৎস্থকান্বিত হইয়া কুরুক্তেরে পাগ্যন করিলে লোকসকল দেবকীনন্দন বলিয়া উল্লেখ্ করিতে লাগিল, তাহাতে প্র দেবকী দেবী জননীযোগ্য-

গোষিদের নিহির গ্রহোৎ ক্ষক ভয়া ক্ষেত্রং কুরোরার্থতে প্রেমা বল্লবনাধ্যোর ভিতরামুল্লাসনেবাঘ্যো ॥ ৩২॥ স্মেত্রসম্বধা॥

শীযুষতাতি জি স্তনাজিপতিতৈঃ ক্ষীবোৎক রৈজাছবী কলিন্দাত বিলোচনাজ জনিতৈ জাতাপ্তনশ্যামলৈঃ।

ভবভাগনাম ত্র্বপি যতঃ স্প্তে বেগিয়া জনা বদি প্রবিদানর ভি জনা
পিজাঃ স্থামের ক্লাং কিম্ন প্রেয়া বাজাামভিয় বস্থানেদেবকে। । ভাদেভদ্যুসন্ধার স্বরং শ্রীরুক্ষেনাপোত্ত রুং । যাত যুবং বন্ধং ভাত বরক স্বেছ্ছাবিতান্ ।
ক্রাভীন্ বে৷ দুই মেনালো বিধার স্থানাং স্থামিভি ৷ ভ্রাং স্ক্রুক্তরারিক্রাভিগাবতংক্রবিধানং কার্নাং ভবভিত্তাবং গাজীর্যাং কার্যামিভি স্প্রভিত্তং ।
ক্রীমত্রবং গ্রভিচ ব্রহারণৈর নিম্নভার্মমূলং । গজেরের ব্রন্ধং নোমোভানে
নিম্নোনি ব্রীভিমাবতে ভি ৷ যব ক্লক্ষেত্রযাবারাং শ্রীদেবকা। শ্রীমনোলাং প্রভিত্তাবদ্রীপিভ্রাবিত্যকং ভ্রাণানয়। তৎক্রপ্রিলভিত্তিরবিধ্রুক্তপ্রস্কা সাক্ষ্যানং ক্রভিত্তি গ্রাহান হত এবারবং ন ক্লিক্ষপ্রভিত্তি নিস্ত্র ৩২ ৪

শীৰ্ষেতি কৰ্মোপৰাগ্যানাব্যালেন স্পুত্ৰদৰ্শনোৎকণ্ঠৰা বস্তুভাগ বজেখনাথ ক্সালিং প্ৰিচিত্চৰ ভাগতা বচনং ৷ কীৰং তথ্য ক্ষক ৷ মধ্যে মধ্যতাল্য

প্রেহ্রারা প্রীক্ষের বদন মার্জন করিয়া দিলেন, পুনরার লোকে বস্থাবনন্দন বলিয়া আহ্বান করিলে নন্দ ও যশোদার প্রেম অভিশয়রূপে উল্লাসপ্রাপ্ত হইয়াছিল॥ ৩২ ॥

#### (अहर यथा »

সূর্য্যোপরাগ বাত্রাজ্ঞলে স্বপুক্ত দর্শনোৎকর্তার প্রমন্ত্রারিশা ত্রজেশনীয় প্রতি কোন পূর্বপরিচিত তুপশ্বিতী কহিলেন, হে অঞ্চলাকরাজি ৷ ডোমার শুনপুর্বিত হুইজে

আরামধ্যমবেদিমাপতিতয়োঃ ক্লিমা তয়োঃ সঙ্গমে বুঙাসি অজ্বাজ্ঞি তৎ স্তমুখপ্রেকাং স্ফুটং বাঞ্সি॥৩০॥ বাগবদ্যথা॥

ত্যারতি ত্যানলোহপুগের তত্ত বদ্ধন্থিতি ভবন্তমবলোকতে বাদ মুকুন্দ গোঠেখনী। হুধাসুধিরপি ক্ষুটং বিকটকালকৃটত্যলং ন্থিতা যদি ন তত্ত্ব তে বদনপদ্মমুদীক্ষতে॥

শএব বেদিস্তাং। পক্ষে মধ্যবেদিং প্রয়াগং॥ ৩৩॥

ুহে মুকুল গোটেশরী বনি ভবস্তমবলোকতে তদা ত্যানলোহণি তৃযারিজ তৃষারবদাচরতি। কীদৃশী সতাবলোকতে তত্তাহ। তস্য ত্যানলসোপুরি বন্ধ-ছিতিরিতাবরঃ। এবমুত্তরতাপি ॥ ৩৪ ॥

আয়তসদৃশ ক্ষীর সমূহ পাত হইয়া জন্মার জাক্ষী এবং শ্রামণ বর্ণ অঞ্জন মিশ্রিত অশ্রুসমূহে কালিন্দী উৎপন্ন হইয়া মধ্যভাগে পতিত হইয়াছে, তুমি ঐ ভুরের সঙ্গমে আর্দ্রী-ভূতা হইয়া কেন আর স্পাইরেপে সন্তান মুখ দেখিতে ইচ্ছা করিতেছ। ৩০॥

#### অকুরাগের ন্যায় যথা

হে মুকুন্দ ! গোডেমরী যদি তুষানলের উপরি অবস্থিত হইরাও তোমার ম্থপদ্ম দেখিতে পান, তাহা হইলে ঐ তুষা-নল তাঁহার সম্বন্ধে হিম্সদৃশ হয়, আর যদি তিনি অমৃত সম্-দের উপর দণ্ডায়মান হইয়া তোমার মুখপদ্ম না দেখিতে পান তাহা হইলে ঐ অমৃতদাগরও তাহার সম্বন্ধ কালকুটসদৃশ হইয়া থাকে ঃ

## श्विता । अर्थ सर्वे । प्रक्रियाप्याप्रकािष्टः ।

प्रशासिक स्थापिक विकास । किंगा विकास स्थापिक स्थापिक

**डाक्र्याम् भजन्त्** ॥ ७०

## অযোগে উৎকণ্ঠিত যথা ৷

শ্রীকৃষ্ণ ব্রজবাটিকার বিহার করিতে থাকিলে হায়!
বংসের শরণিন্দ্বিনিন্দি বদন কবে আমাদের নয়নানন্দ
সম্পাদন করিবে? এইরূপ দেবকনন্দিনীদিগের গুরুত্র
হুরা জয়যুক্ত হউক॥ ৩৪॥

#### যথাৰা ॥

কৃত্তীদেবী কহিলেন হে ভাতঃ অজুর। আমার ভাতপুত্র মুকুন্দকে বলগা যে, হে হরে। কৃত্তী শক্তমধ্যে বাস কৃত্তিয়া রহিয়াছেন, কণে তিনি ভোমাকে দেখিতে পাইবেন॥

> व्यव विद्यांग स्व। ॥ श्रीनगरम ८५ व्यवादा २५ द्वीरक ॥ ( >०५ )

বশোদা বর্ণমানানি হুতস্য চরিতানিচ।
শৃণুন্তাঞাণ্যবাস্থাকীৎ স্নেহস্কুতপ্যোধরা ॥
যথাবা ॥
যাতে রাজপুরং হরো মুখতটা ব্যাকীর্ণপুত্রালকা
পশ্য অন্ততন্মং কঠোরলুঠনৈর্দেহে ত্রণং কুর্বতী।
কীণা গোষ্ঠমহীমহেন্দ্রমহিষী হা পুত্র পুত্রেত্যসৌ
কোশন্তী করয়োর্গুনেন কুরুতে কন্টাহরন্তাড়নং ॥
বহুনামপি সম্ভাবে বিয়োগেহত্রতু কেচন।
চিন্তা, বিষাদ, নির্বেদ, জাড্য, দৈন্যানি চাপলং।
উন্মাদমোহাবিত্যাদ্যা অত্যুক্তেকং ব্রক্ত্যমী॥ ৩৫॥

উদ্ধাৰ কৰ্ত্ত্ব বৰ্ণিত পুজের চরিত্র আবন করিতে করিতে বশোদা স্তন হইতে তুগ্ধ ক্ষরণপূর্ব্বক অশ্রুসকল মোচন করিতে লাগিলেন॥

#### যথাবা দ

শ্রীকৃষ্ণ কংসরাজপুরে গমন করিলে, ঐ দেখ গোকুল-রাজগৃহিণী যশোদা ইতস্ততঃ পতিত অলকা দারা আচ্ছন্নমুখী হইয়া বিৰশদেহে কঠোররূপে ভূমিলুগ্ন করাতে অঙ্গে প্রকল উৎপন্ন হইল এবং ক্ষীণদেহে হা পুত্র! হা পুত্র! বলিয়া চীৎকার করত দৃঢ়রূপে বক্ষঃ ভাড়না করিতে লাগি-লেন॥

এই বিয়োগে বহু বহু ব্যক্তিচারি ভাব সম্ভাবনা থাকিলেও এখানে কেবল চিন্তা, বিষাদ, নির্কেদ, জাড্য, দৈন্য, চপলতা উন্মাদ ও মোহ এই সকলের উদ্রেক হইয়া থাকে॥ ৩৫॥ ভত্র চিস্তা ॥

মদ্দস্পদ্মভূৎ ক্লমৈরলঘৃতিঃ সন্দানিতং মানসং
দশ্বং লোচনয়োশ্চিরাদবিচলব্যাভূয়ভারং স্থিতং।
নিষ্ঠিসঃ প্রবিদ্ধর পাক্ষয়তে স্তন্যক তথৈরিদং
নূনং বল্লবরাজ্ঞি পুত্রবিরহোদ্দ্রশাভিরাক্রম্যাদে॥ ৩৬॥
বিষাদঃ॥
বদনক্ষলং পুত্রস্যাহং নিমীলতি শৈশবে
নবতরুলিয়ারস্থোদ্য দুইং ন রম্যম্লোক্ষং।

মক্স্ক্ষিতি শ্রীকৃষ্ণস্য বনগমনে কস্যান্তিখচনং। সন্ধানিতং বন্ধং নিশ্বাসৈঃ প্রবদেবেত্যাদি পাঠ এব প্রবিবহস্চকঃ ॥ ৩৬ ॥

বদনেতি আক্রকণ্ড বারকারাং গার্ভবানিটা: প্রাজীবলেপরীবচনং ॥ ৩৭ ॥

## তশাধা চিন্তা যথা।।

শ্রীকৃষ্ণ বনপ্রন করিলে কোন বাক্তি কহিলেন ছে গোপরাজি! ভোমার স্পাশ্রম মন্দ হইয়াছে, নিরভিশম কেশে মানস বন্ধ দেখিডেছি, লোচনন্ধ্যের ভারা বহুকাশ যাবৎ ভূম ও দ্বির হইয়া রহিরাছে এবং উষ্ণ নিখাদে জন্য- ভূম পক হইয়া করিত হইতেছে। অভএব হে যশোলে। বোধা করি পুত্রবিরহজনিত উদ্যুগায় ভূমি আজোভা হইয়াছুগাইত ৯

# वियाम ॥

শ্রীকৃষ্ণ ভারকার গাহ ব্য ধর্মে রক্ত হইরা রভিয়াছেক শুনিয়া ব্যক্ষরী কহিলেন, হার! শৈশব অভিবাহিত ছইরা জক্রশিনারত্তে পুত্রের মার্ক্তিত র্মণীয় মূধক্ষণ অব্লোক্ষ অভিনববধু যুক্ত কামুং ন হর্মাসবেশরং শিরসি কুলিশং হস্ত কিপ্তং শক্ষেক্সতেন মো এন ॥ নির্কোলঃ ॥ ধিগ্ন্ত হস্তজীবিতং নির্বাধিজিয়োহপাদ্য মে যয়া নহি হরেঃ শিরঃ সুউকুচা এমাজারতে।

यशा नार १८ तः । শরঃ সুত্রু চাত্র নাঞারতে । সদা নবস্থাত্রহামি গবাং পরার্দ্ধঞ্চ ধিক্ স লুঞ্চতি ন চঞ্চলঃ স্থরভিগন্ধি যাসাং দধি॥

ভাড্যং ॥

যঃ পুণ্ডরীকেক্ষণ ভিষ্ঠতন্তে

ধিগলিভি বিরহচিন্তয় চিন্তানবস্থানাভ্রাৎস্থাক্ ভিময়ং বটনং। যড এব স ল্ঞতীভূচেনং। সদা নবস্থাত্হাসিভৌর পাঠো বিকারপোর্ফঃ॥ ৩৮॥

করিলামনা এবং নববধ্যুক্ত ঐ পুজকে গৃহমধ্যেও প্রবেশ কল্লাইলাম না, অফুর বে আমার মন্তকে বজ্ল নিক্ষেপ করিল॥ ৩৭॥

## निदर्शन ॥

নির্ক্ষি সম্পতিশালিনী আমার জীবনকে আজ্ ধিক্, বেছেছু স্থনাপ্রক্ষরিত হরিমস্তক আমি আআশি করিলান না এবং সংবঁদা নবস্থা দোহনকারিশী পরার্দ্ধনংখ্যা গো সকলকেও ধিক্, সেই চঞ্চল ইরি যাহাদের স্থগন্ধি দ্বিত্ব ক্রিলেন না॥

#### काषा ।

र्ट गुरुतिरंकका । कृषि यथन रंगाकृष्ण अविष्ठ हिना

গৈতে করাজেক্ত্রওকেহ্ছুৎ।
তং প্রেক্ত দশুং নিক্তিনির্দ্ধান্তদশুক্তিন্তে জননী বস্তৃব ॥
দৈন্যং ॥
যাচতে বত বিধাতক্তশুলা
ছাং রদৈস্তৃনমূলস্য ঘশোদা।
গোচরে সকুদলি ক্ষণমক্ত্রোরদ্য মহান্য বংসং ॥ ০৮ ॥
চাপলং ॥
কিমিব কুরুতে হর্ম্যে তির্গন্নং নির্পত্রশো

কিমিবেতাভিছ: থমর: শীএকেশরীবাকা:। মুদেভি হাসাপুর্বক্ষিতার্থ:।
কেই সময় তোমার হস্তপজ্ঞার ভূষণশ্ররণ বে দণ্ড ছিল
ভাহা অবলোকন করিয়া আজ ভোমার জনমী নিশ্চলৈ শিক্ষি
ইইয়া দণ্ডাকার ইইয়াছেন॥

## टेलना ॥

হে বিধাতঃ! যশোদা শুশ্রু মোচন শ্বনিত করিতে করিতে দত্তে ত্ব ধারণপূর্বক তেনাকে আর্থনা করিতেতেন ত্রে, বিধান মংসর! আল কবকালের নিখিত বংস কুফাকে নয়ন্ত্র হয়ের পোচরে আনরম কর । ৩৮॥

#### **जिल्ला**

বশোদা নন্দকে উন্দেশ করিয়া কহিলেন , অট্টালিকার. উপরে অবস্থিত হইয়া এই নির্মাক্ত কি করিতেছেন, আলক্ষ ত্তজপতিরিতি জতে মুশ্লোহ্যমত্ত মুদা জনঃ।
অহহ ত্নয়ং প্রাণেড্যোহপি প্রিয়ং পরিস্ত্য তং
কঠিনহদমো গোষ্ঠে শৈরী প্রবিশ্য স্থীয়তি॥ ৩৯

ক মে পুজো নীপাঃ কণয়ত ক্রঙ্গাঃ কিমিহ বঃ স বজ্রামাভ্যর্ণে ভণত তত্তদত্তং মধুকরাঃ। ইতি ভ্রামং ভ্রামং ভ্রমভরবিদূন। যতুপতে

আন লগতি মুগৌ জনো দেশাস্তবস্থবিপক্ষরণ:। তদিদমপি ছঃথেন বিভর্ক-মন্ত্রেষ । তপ্ত ভাদৃশ্বচনং যুক্তমেবেডাাই আহহেতি ॥ ৩৯ ॥

ক মে পুত্র ইতাক সাম্প্রাচন্তং পলায়নং শ্রুভা ভল্লাবচনং। উদস্তং

সহকারে মুগ্ধলোকে ইহাঁকে ব্রজপতি বলিয়া থাকে, কি আশ্চর্যা! প্রাণ অপেকাও প্রিয়তর পুত্র পরিত্যাগপূর্বক এই কঠিনহৃদয় স্বেচ্ছাচারে গোষ্ঠে প্রবেশ করিয়া স্থামু- ভব করিতেচেন ॥ ৩৯॥

#### উন্মাদ ॥

কোন ব্যক্তি শ্রীক্ষের নিকট যগোদার উন্মাদ অবস্থা বর্ণন করিতেছেন যথা—অহে কদম বৃক্ষণণ! আমার পুত্র কোথার বল, হে ক্রপ্সকল! কৃষ্ণ কি জোমাদের নিকট দিয়া গমন করিয়াছে, ভ্রমরনিকর! তোমরাও তাহার বার্ত্তা বল, হে যদুপতে! যগোদা ভ্রমভরে অতিশয় কাতরা ইইয়া চতুর্দিকে তোমাকে জিজাসা করিতে করিতে বিচরণ করিতেছেন। ভবস্তং পৃদ্ধন্তী দিশি দিশি যশোদা বিচর্জি ।

নোহঃ ॥
কুটম্বিনি মনস্তটে বিধ্রতাং বিধৎসে কথং
প্রানার দৃশং মনাক্ ভব হুজঃ পুরাং বর্ততে।
ইদং গৃহিণি মে গৃহং ন কুক শূন্যমিত্যাকুলঃ
স পোচতি ভব প্রসূং যতুকুলেক্ত নন্দঃ পিতা ॥
অথঃ যোগে সিদ্ধিঃ ॥
বিলোক্য রক্তমলক্ষ্যক্ষ্যং
বিলোচনাভীকীবিলোকনং হরিং।
স্তিন্যরিক্ষ্যকপ্রকাঞ্চলং
(দব্যঃ ক্ষণাদানকত্যন্তিপ্রিয়াঃ ॥

वार्खाः । 8 • ॥

#### ८माए॥

হে কুটমিনি! কেন র্থা মনোমধ্যে কাতরতা বিধান করিতেছ, একবার চক্ষ্ উদ্মীলন করিয়া দেশ, তোমার পুত অত্যে দণ্ডার্মান রহিয়াছে, হে গৃহিণি! আমার গৃহ শূন্য করিও না, হে যন্ত্রুলেন্দ্র! ভোমার পিতা নন্দ ব্যাক্ল হইয়া তোমার জননীর নিকট এইরূপ লোক প্রকাশ করিতেছেন।

व्यथ (यादश निक्रि॥

বস্থাবের পত্নীগণ রঙ্গহলে সমুপত্তিত নরনাতীউপ্রেদ প্রীকৃষ্ণকে অবলোকন করিয়া ক্ষণকালের মধ্যে চুগ্ধহারা নর কঞ্চিকার অঞ্চল সেচন করিতে লাগিলেন ॥ ভূষির্থা প্রথমে॥
তাঃ পুত্রমক্ষমারোপ্য স্বেহস্কুতপ্যোধরাঃ।
হর্ষবিহ্বলিতাক্সানঃ দিবিচু নে ত্রিজর্জ লৈঃ ॥ ৪০॥
যথা বা ললিতমাধবে॥
নয়নয়োঃ স্তনুয়োরপি যুগ্মতঃ
পরিপতন্তিরদৌ প্রদাশ্ধরৈঃ।
ভাহহ বল্লবরাজগৃহেশ্বরী
স্বতনয়ং প্রণয়াদভিষিক্তি॥ ৪১॥
স্থিতি র্থা বিদ্যামাধ্যে॥

বলবরাজ্বিলাসিনীভাত বলবরাজগৃহেখরীভি পাঠাতরং॥ ३১॥

# তুষ্টি যথা॥

প্রথমক্ষকে ১১ অধ্যায়ে ২৫ প্লোকে।

প্রীক্রফ সাতৃগণকে প্রণাম করিলে তাঁহারা তাঁহাকে ক্রোড়ে কইলেন, তাহাতে স্নেহতরে তাঁহাদের স্তন হইতে ক্রুম ক্ষরিতে লাগিল, অভএব সকলে হর্ষে বিহরল হইয়া অঞ্চ-ক্রমে তাঁহাকে অভিষিক্ত করিতে লাগিলেন। ৪০॥

यथा वा निन्छ्याष्ट्रत्॥

আহো ! গোপরাক্ষগৃত্ত্থরী যলোদা প্রীতিনিবন্ধন নয়ন-ক্ষেত্রণ স্কর্মন্ত্র ক্ষতি করিত জল ও ক্রমধারা ভারা সীয় জনয়কে ক্ষভিবেক ক্ষিত্তে লামিকেন ॥ ৪১,॥

क्षिणि यथा तिमञ्जयामहत् ॥

আহত ক্ষণগদ্ধেরত্র গৌন্দর্যার্ন্দে বিনিহিতনয়নেয়ং ত্তমুখেন্দোমুকুন্দ। কুচকলসমুখাভাষাখরকোপমন্দা ভব মুত্রতি হর্যাধ্বতি ক্ষীরধারাং ॥

चरत्राभगरत मार्जितरकार्थः। चनता दिखा निकादिक इति প্রভাগমনানম্বর: প্রেরো মগার হৃতিত সিম্বান্তরহুরেয়া। কিভিত্রিপুরাক্তে ভত্ত সভাসকলভ্রা বেলাদিগীতসা ওসা জাতীনুবো তাই মেবাামের বিধার-कृत्रमाः कृष्यिक क्षिणान्यनमः काः क्षिम्माम म्माडे व्य क्या सह विकि कर्मनमा शुक्रवार्वत्वन निर्दर्शना निकारिकाविका द्वापक्ष । यदा, खडे विकि দুৰ্শনবিষ্যী ভবিভূমিভাৰ:। ভ্ৰাণি ভূমন্ মহিমাঞ্গলা ভে বিৰোজ वर्षकाचनाश्वताचाकित्रिकाण विस्ताकुः स्वाधिवनत्री अविकृतिकिवरः। कर्णव विवृत्तर क्रिमध्करवन । एका करगर तकमरशा धाठीशर मर्जनावकार् । यश्र यः नमानता कृषः नताः कत्त्राति ७९! आन्यिकाणारीर्द्धन श्राटमस রশ্বমচাতঃ। প্রিরং বিধাসাতে পিত্রোভগবান সাঘভাং পভিবিত্তি। आज भिट्याः शिवविधानः थेलू नवा ७९ नः वाश कदविष । **भद्रवाशयनम्बद्ध**कः सञ्चर क्रमान सम्मान र वर्षा एकिए चत्राम । जानि चत्र वे नः मध्य हासान अविकिशिया। शृक्षां किया विकास माक्ष्म मान्य मान्य मान्य विकास अविकास भक्त दशास्त्र मस्वदक्षका भारत निमाणमार **छायोछि कुल्ल क्या काला हार मिक्** वहतः। वाजा (हतः मधवक्रवधार शुर्वतमयः। अत्र वनशर्व श्रीकाः। सामग्रहः। স্থিতভাত গতৰ্ফবৰত সমকাশ মেবছি পাওবানাং বনগ্ৰনং। ক্লেক্ষ্ व्यानभनानस्वरम्यक श्रीकाणियमम् श्राप्तकपृष्टः। मा याखाः श्रीकाशानसम्ब মহীতি। তথা প্রবিশবেশতীর্থাতা কুলকে চ্যাত্রাতঃ পূর্বং গঠিতা ক্ষ্মীর্ক

হে মৃকুল । যশোদা পদাগন্ধবিশিক ভোষার মুখনকোর নৌন্ধ্যর্কে নমন নিক্ষেপ করিয়া অভিশয় **ংর্থ সংকারে মু**র্ট-কলসমুখনর্ভি বসন আর্থ্র করিয়া বারখার সীর্ধারা ধ্রী শাঝাচ ছর্ব্যোধনবধদিনে পূর্ণেতি। দত্তবক্রবধানস্তরং প্রত্যাপমন্ত্ ভদ্য পালোভরথতে ক্টং দৃশাতে। ক্লোংপি তং হথা যম্নামৃতীর্ব্য নক্ষরকং গৰা লোংকঠে পিত্যাবভিবাদ্যাখাল্য তাত্যাং লাক্রক্রমালিকিতঃ লক্ষ্যপোণ হুছার প্রশ্বাধান্য বছবস্থাভরণাদিতি গুরুস্থার স্কান্ স্তুর্পরামানেতি গুলোন। অত: প্রভাগবতে চ ভারতযুদ্ধানস্তরং প্রীঞ্জন্য বারকাপ্রবেশে প্রথম-ক্ষম্ভ বারকাপ্রকাবচনং যহাস্লাকাপস্সার ভো ভবান্কুরুরুধুন্বাথ সুক্দি-দৃশর। তথাপকোটি গতিম: কণো ভবেত্রবিং বিনাক্ষোরিব নন্তবাচাতেতি। ভত্ত মধুন মধুরাংশ্চেতি স্বামিটীকাচ স্ক্লণ্চ ভলা তত্ত প্রীব্রজ্যা এব। ভত্ত বোগ গ্লাভাবেন নীতা সর্বজনং হরিরিতি সর্বশেষাং। বলভদ্রঃ কুরুশ্রেষ্ঠ ভগ্ন ৰান রখমান্তিত:। সুদ্দিনুকুকংকণ্ঠ: প্রাযথে নন্দ্রোকুলমিতি ভবৈত্ব ভচ্ছেন্ क्षारवानार। তत्त्वमधीहोत्र श्रीकृष्ण उक्कालानमनात्र श्रीकानव्य भागत्वाः সম্বাদে দর্শিতে ভদাতুদলিকং তু দত্তবক্রবধন্থানং করভেদরীতাা বৈঞ্বভোরণী-बीक्षा वा विवामः পরিক্তা সংগ্রমনীর:। তদেবম্পি পুন: 🖺 কুঞ্চ বারকাগ্রমনঞ ভত্তথা নলালয়: পুত্ৰধানসহিতা: পশুপক্ষিমুগালয় চ বাহুদেবপ্ৰসাদেন দিব্য-ক্ষপথরা বিমানমাক্ষ্যাঃ পরমং বৈকুঠলোকমবাপুরিতি। ক্রফন্ত নলগোপ হতে। क्नाः मर्व्यवाः निवासमः अभाः नवा निवि त्ववगरेनः मःखुवमात्ना बाबवछीः বিবেশেভিচ। তত্র নক্ষম: পুত্রণারসহিতা ইতি। শ্রীমন্ত্রকর ভর্মমুখাস্য পুত্র: 💐 🖚 এব। দারাচ ত্রীয়শোলৈব। ইতি গুলিদ্দশি পুত্রাদিশব্যোক্তা ভত্তকৈপৈরেৰ জৈ: সহ ভত্ত প্রবেশ ইতি গ্নাতে। অভো এছং প্রতি अकाशियनवर्षण बाष्ट्रस्वधारिक निवाक्रभवतं हे ि উन्नारम्ब भवत्र विश्राक्षमान् ऋण्यस्य विविक्षिष्ठः। विमातन তেখাং পর্মবৈকুৡপ্রস্থাপনঞ আপি কিক্সনত ব্ধনাধ্যের প্রপঞ্জিত। বস্তু তস্তুপো বৃন্ধাবনত্তিব প্ৰকাশ বিশেৰে প্ৰবেশনং প্ৰবেখন ভব স্থিতানাম্প্ৰকটপ্ৰকাশানামেযু ध्यक्के प्र ध्यक्षात्मच बर्जावनः इन्छः। वर्गा शक् हे नी गा शक (बाक्न महत्वविवी-विवाद खीनात्रमण्डेरवागमात्रादेवछ्दव गर्काखःभूद्रत्रछाः শেচ ভাদৃশ্বমিতি। পূর্বমণি জীবৃন্ধাবন এবাজিংপ্রেয়াং ভেন বথা ভত্ত

लार्यमनः श्रीकरकन वर्निकः। कवाहि श्रीवर्णात्। नमक्कीलिकः वृद्दे। लोक-भागमरकानवः। कृत्क ह महाजिर ८७वाः काजिरका विचिर्णाश्यवीर। ভেটে। তুকাধিরো রাজন মন্তা গোপাত্রমীবরং। অপি নং বগতিং কুম্মার্শা शांत्रशीचतः। ইতি चानाः म जगवान विकाताचिननुकः चतः। नश्कत्रनिक्षः Coate क्रमदेव क्रमिक ब्रह । कार्ता देव त्यांक अर्काश्वविद्यां कांमक विकास উচ্চাবচাম গভিষু ন বেদ খাং গতিং ভ্ৰমন । ইতি সংচিখ্ন ভগণান মহাকার্ম-ণিকো বিভু:। দর্শরামাধ লোকং খং গোপানাং ওমসঃ পরং। সভাজান-মনস্তং যব ক্ষরেলাতিঃ সনাতনং। যদ্ধি পশান্তি মুনরো অণাপারে সমাহিতাঃ। ভেতু ব্ৰহ্মস্থাং নীভা মগ্নাঃ ক্ষেত্ৰ চোফ্ ডাঃ। দদ্ভ ব্লাণো লোকং ব্ৰা ক্রেহিধাগাং পুরা। নন্দাদরস্ত তংদৃষ্ট্। পরমানন্দনির্ভা:। ফুক্ষঞ্চ ভত্ত ছন্দেভি: ভুরমানং সুবিশ্বিতা ইতি। অত্র থলু যারজপদং তেবাদেবাস্পদত্রা পুরা তেবামের দুরিপথমকার্যীন্তদেও পশ্চাঘতোরীদিতি গমাতে। তেতু ব্ৰহ্মছদং নীতা ইতাত যতাজুৱ: শ্ৰীভক পরীকিৎ স্থাদমণেকা পুরা-ভভবাংতং ব্ৰহ্মক্ত্ৰতীৰ্থ ত্মহিমানং লক্ষ্য বিধাত্ং ক্লেন নীভা মহাত পুন: জীকুফেনৈবোদ,তা উদ্ভা বুলাবনমানিতা ভামিরেব নরাক্তি-পদ্মবন্ধণ অসা লোকং দদ্ভ বিভিচ গভাতে। কোছলে অবাই যত্রেতি। পুরেত্যেতৎ প্রদলায়াবি কাল ইত্যর্থ: পুরা পুরাণে নিকটে প্রবন্ধা-की इ कविविधि विश्व धनानार । रागानि अञ्चलाकमात्मन कश्रवासाकमाळार দ্বিভীরে বন্ধব্যকঃ সনতিন ইত্যনেন লবং। প্রামিতি তম্পঃ প্রমিতি সভাং জানমিতি চ তবেব সামানাতো বাকক। তথাপাপি নঃ স্থাতিং সুত্মামিতি ন বেদ আং গভিমিতি চ গোণানাং অংশোক। মিডি কৃষ্ণক ভৱেতি প্রীগোপাললোক এব বিশেষালভাতে। ভার ছালাভি-স্থ ৰমানমিতি ভজ্জনাদিশীলা বৰ্ণিনীনাং শ্ৰুতিবয়বৰ্ণিনীনাং সাক্ষিতাত ভেছু সোণের ত্যা কুঞ্যা প্রতাভিজ্ঞাপনার্থমেব। অতএবাশ্বন এব চ তৎপরিকর্তনা তৈরমূত্তা ইতি নানো বর্ণিচা:। তদেবমের তদেকফ্রচীনাং চেয়াং বিশ্বতিঃ পরমানন্দনির তিক ঘটতে। তথ্য বংশাকভারামপাবভারাব্দরে ভেষা-भक्कारन कात्रणः बरना वा देखि नारगांका नार्द्वीकानि भनाव सम्भन्यमणांभि



জনগুৰীয় খজন এবোচাতে। তলাগ্য প্রমুখনত গুমাডে। জন্মান্ত क्यार दर्गाहेर महायर मरणित्रहार । द्याणात्व चाचात्वारान त्याह्या द्य क्ष आहिक हेकि क्षेत्रकमा मननि कावनाति। उठक शतम प्रकानाश्यः मय खबरांत्रिककनः आंशिक्षांक कारक याः चारिमाामिक्तिर्वारिकामा গত प्रवास समस्य किरिलन विश्वासानः मदाना मर्लविकामानाः याः शकिः न बाबाडीछार्थः। मनीवालाक्यक्रीलात्यभारमञ्जूष छातः। देखि बन्तामरबा-গোপাঃ ক্লকামকথাং মুদা। কুর্কান্তো রমমাণাত নাবিদান ভববেদমা-মিছাালে: বন্ধামার্থ সূত্রৎ প্রিয়াগ্যতনয়া প্রাণাশয়া তৎকতে ইত্যালে: ক্লে क्ष्मनभूखाटक मःनाकाथिनतायम हेजादन्क। एनकानादन्य नमुष्ठी सिद्ध-মিত্যাদিকং ঘটত ইতি। স এষ এব প্রীবৃন্দাবনশু প্রকাশবিশেষঃ প্রীবারাছে-পাপলফিতঃ। তদ্যথা। ততাপি মহদাশ্চর্যাং পশান্তে পণ্ডিতা सञ्जाः। कानिवहनशृद्धन कनत्यां महित्वाक्रमः। लञ्जायः विभागाकि अनुग्रह स्वर्धान প্ৰিচ। স চ ভাদপ্ৰাসানি মনোজ্ঞ ওড্শী চলঃ। পুশার্জি বিশালাকি व्यक्तमत्त्वा पिर्नामत्मिति। ७था उवान्धर्याः श्रीयकामि छक्त् पः वस्यक्रता। णक्रद मञ्जा: निक्तिः मम কর্মপরায়ণা:। তত তজোভরে পার্বে৹শোকরুক: শিষ্কপ্রতঃ। বৈশাথদা তুমানত শুক্লপক্ষদা বাদশী। দ পুলাতি চ মধাতে মম ভক্তরখাবছ:। ন কণ্চিদ্পি জানাতি বিনা ভাগবতং শুচিমিতি। व्यव कवानि महनाकर्गामिकानिक यहा श्विता न कावक हैकि द्वांशाक। **७७ अक्ट ७८मा** अर्थः। ७थाहि कात्मः। तुन्नाचनः दाम्नमः तुन्ना शक्ति-র্শিকং। ছরিণাধিটিতং তচ্চ ব্রহ্মকতাদিসেবিত্মিতি। আদিবারাছে ক্লক্ষ্যাড়ালেভুৰন্ধং মহাপাতকনাশনং। বলভীং তত্ত্ৰ ক্ৰীড়াৰ্থং ক্লম্বা দেবো গদাধরঃ। গোপকৈ: সহিতত্ত্ব ক্পমেকং দিনে দিনে। তত্ত্বৈর রমণার্থং হি निकार कांगर म शब्द शैकि छ । वर्रेमवर्रमणब्रीखिएकणामि किन्द मर्निकासव । क्षांनरक दिवाध वित्तव किमर्थः भर्त्रज्य अदिविक नादित मधीता नास ष्ट्रंभमन थ्र'क्रवा मालाभगार्थः क्वितायन मञ्जर्ण । ज्याव नावनक व्याका त्वाहत्रश्रकामवित्मव এव एकवाः खर्यनः। छवा हातकः बुर्म्रशिकभीदन वक्ष कर्मका। हेन्: वृन्हावनः वमाः मम धारिमव (क्वनः। कल द्व शनवः

शक्ति चुन्नाः कीके सदायताः। द्व बनवि बमादिका वृक्त शक्ति बमाक्रवरः। कत वा द्यालकताक विवयकि ब्रह्मानदृष्ट । द्यालिकाका यहा विकार वय देववा-भन्नाबनाः । भक्रत्वाक्षमध्यभक्ति रमः त्य (महक्षणकः । कानिकीवः श्रमुक्तान्ताः भवमानुक्याहिनी । पात (नवान्त कृष्ठानि वर्त्ततक श्रुपाक्रभक्षः । स्परिक्यकः काहर व कामाबि वनर कहिर। व्याविकाविकात्राकादना कदनत्त्रक कुटन चूर्य : Cocminumet प्रमाममुनाः । ध्यां क्ष्यूरवि : श्रीतानाता अप्रकार्यान-माक् धीमठीर्शिभीः প্রতি ছর্বাসনো বচনে। জন্মবন্তাতাং ভিত্ত ভাবুরবন্তজ্ঞ-त्मांबर त्यांश्रमो त्योत्वा किर्केण त्याश्रमो त्यातं किर्केण त्याश्रमो त्यांवर পালরভি বোহসৌ গোপের তিইভি বোহসৌ সন্দের দেবের ভিইতি বোহসৌ मर्टेक्टेट्रेनिजीबरण त्याकरणे मरकात् कृष्टकवारिक कृषानि विवसाचि म त्या वि चामो क्वडोडि त्योर्दा देखि त्योत्री यमुना छनम्बध्य **त्यान वृत्यासम** हेकार्थः। कथार कःमाधिकः पथ्रकाश्वमञ्चत्रकः मःहका ख्रमवानका क कुल्यांच्या अव वृष्ट्या अकिनिविद्यालय मस्त्रे अवशासिक मह विश्वेषक महास्त्रे स নি গাৰিছিডিঃ কুতে সাৰগতং। অভতাৰ সুন্দাবনদীলায়াং ভাষা বিশ্বক क मठा ह निविद्देश भाजानबर्द्ध । व्यक्त व्यक्तांश्राह द्याकमा न भीक बद्दाना জলং। গো গোপ গোপিকাসলে যত্ৰ ক্ৰীড়তি কংস্তেভি। বৌধারত कर्चिविवादक ह त्या त्यावादक त्याविकात्राधात । त्याविकात्राकीकामबाहरके कःमाञ्चत्रप्रतिमान्यवास्त्राहिमप्रविद्यान्तरः। यस्टेख ६ बीदवास मीमानुस्य वकारक । ८ शारतारक्षिताकिकतार किमिनाग्रात्न मार दक्तिवसम विश्वतील ভল্লবেন্যতি ভতেখনভি লায়াদেব। কেলিবণান্ধতাভাদুল্লীলা স্বায় স্থাহানত্ত্ব কাণাসভবাং। কিকাল এছে নীল্বৰ্না ছিবিধাঃ। আৰু শীৰামবে। ব্ৰহতাপনবাঃ প্ৰনীৰ্মিয়াতেটি। প্ৰেভাৱত ভিৰিথাঃ त्रव्यवस्था प्रवस्तावता छिष्टान्तः मदर्वसाः प्रवर्णसर्वदेश ह 😻 निमित्राः । छत्व ७ हेशांनाः नर्सा ध्वर सूथ (शायका ७ वक्ति । श्रीकृष्णांत ভাংগরাত্বাব। পুরধনাত্গানাং এলগীলাক ত্বপোবিদা ভবতি। আন্তর্নীয়া कीयगामकश्युविनयम एक बाब विश्वा विविध गीवा विश्वा भूगमानकः स्थान युगतात्रगता विवसान कर्मा छ। बीनाः प्रथरगात्रात्र काण हेलि प्राप्तमता ।

क्षांतामार कारतता दव नीता अवकतास्थानार कु श्रमश्किनाः स्थरणारिका ল ভৰৱোৰ প্ৰভাৱ ছংখণে।বিকা:। প্ৰৱস। ব্ৰাগমনাস্ট্ৰনাৎ ততভ ব্ৰলণীৰাম্বাশ্চ ছঃখবেনৈৰ পৰ্যাবসিতাঃ। কিমৃত ব্ৰভাগণন্যাঃ সংক্ষা নেষ চ প্রথং পেই মিচ্ছতির্যাছকৃতিঃ স্বা লীলা বর্ণিতাঃ। বিশেষতক্ত चालोकिकीविषः इक्षत्रिः नसीद्वाद्वाः। ७वालि वद्यवाधीननस्नालयना क्षृतिः। माञ्चानमहम्दकात्र शत्रमाविध त्रिशुक है कि म्लाहीरक अववनामू-গানাং এব সর্বাধিকং স্থাং পোষ্টবাং। তত্মাত্তরীত্যা প্রমেব সংক্ষেপ্ ভাগৰভাষুতে লিখিতং শ্ৰীকৃষ্ণদা পুন্ত লাগ্যনপূৰ্বকং পুরগত তত্ত্বিজয়-প্রবশাদপি পৃষ্টস্থানাং ব্রক্ষনানাং মধ্যে নিতাবিস্থানমেব গ্রন্থকতাং হৃদ্-গঙা। তেন ভত্তক্ৰণেন ব্ৰজ্ঞনামুগা অপি পুটস্থা: স্থাঃ। প্রোক ৰালা খবরঃ পরোক্ষ মম প্রিয়মিতিবং প্রকটত্ত তল পঠিভমিতি জেরং নিভাবস্থানঞ্চাত্র কৈমৃত্যেন গতাস্তরাস্বীকারেণ চ শ্রীমন্তাগরতে দর্শিতং এবাং খোৰনিৰাসিনামুক ভবানু কিং দেব রাতেতি ন শেচকো বিশ্বফলাৎ ফলং খদপরং কুরাপায়ন মুহ্ছতি। সংব্যাদিব পুতনাপি সকুলা তামেব দেবাপিতা ৰদ্ধাৰ্মাৰ্থ স্থাৰ্ম তনৰ প্ৰাণাশন। খংকতে ইতি। তাসাম্বিরতং 🔫 ে কুর্মতীনাং স্থাতকণং। ন পুন: করতে রাজন্ সংসারোহজ্ঞান সম্ভবা ইভি । পূর্বত তথা তেবু ঋণিত প্রাপ্তে তৎপ্রাপ্তেশ্চানাদিকল্পরম্পর। वाश्वविद्यान्यवाम्यवामात्व । সংখ্যাদিব সভাং ধাতীজনানাং বেষা-विष्ठार्थः। উত্তর व চ তত এব এবং ব্যাব্যারং। সংসার: সংসারিখং ন পুনর্ন তু করতে ন ঘটতে। তথা হেডু:। অবিরতমাগত মধাবিচ্ছেদ হীনং যথা সাাত্থা হুছৈ হুভেন্নণ হুত ইতি প্রভাকতাং কুর্মতীনাং ভংকতিভয়া সদা ঘর্তমানানা बिक्ति व्यनम निकारिक्षकः भतिभागि वित्नवन्त्र छेखत्रमाभानम्भूनृहे॥ নি**ইছাঃ দিগ্দশনকে**ছা। মাতৃশবিদমেতা সংমতিমিতভাতসা চ আভৃভিঃ সাহিং ধেছুগণাংবনার বিপিনং গ্রাচরন ক্রীড়িতং। আগ্ন্যাথ গৃহং সমন্ত व्यक्तामीहरू थाली डः सम्बद्धाः श्री असतासन्तमनवदः चारता न अवामिष्ठि । 🗃 মধুরাবার করোনিতাবিহিতিত। মধুরা ওগবান্যতা নিভাং সরিহিতো ৰ্মিরিভি। বিভাং সরিহিতত্ত্ত ভগবান্ মধুসূদন ইতি দশমৈক।দশগোর্টইবা স্বীকৃৰ্বতে রদমিমং নাট্যজ্ঞা জপি কেচন। তথাহঃ ॥

ফাুটং চমৎকারিতয় বংসলঞ্চ রসং বিছঃ।
স্থানী বংসলতাস্তেহ পুত্রাল্যালম্বনং মঙং॥ ৪২॥
কিঞা

অগ্রতীভো হরিনতে: প্রীতস্ত স্যাদপুষ্টতা। প্রেয়সস্ত তিরোভাবো বংসল্ভাস্ত ন ক্ষতি:।

বিশেষজিজাসা চেৎ বৈক্ষৰভোষণী কৃষ্ণসন্দর্ভগোপালচম্পুর্ব লোচনহোচনী নামোজ্ঞগনীলমণিটীকা এইবাাঃ ॥ ৪২ ॥

অপ্রতীতো অনির্ণয়ে হ'ররতে: হরিকড় করতে: । ৪৩ ॥

## করিতেছেন ॥

কোন কোন নাট্যজ্ঞের। এই বংশলকে রস বলিয়া স্বীকার করিয়া থাকেন॥

প্রাচীনদিগের উক্তি যথা॥

পণ্ডিতগণ চমংকারিতাপ্রযুক্ত বংগলকে রস বলিয়া বর্ণন করেন, এই রসে বংগলতা স্থায়ী এবং পুত্রাদি আগস্থন ॥ ৪২ স্থারও বলি ॥

হরিকর্ত্ক রতি নির্ণয় না হইলে প্রীতির পৃষ্টতা হয় না প্রেয়রণের ভিরোভাব হইলে এই বংগলের কোন ক্ষ্মি নাই: আশ্চধারূপ প্রীতি, প্রেয় ও বংগল এই যে সক্ষ এষা রদত্রদ্বী প্রোক্তা প্রীতাদিঃ পরমান্ত্রা।
তত্র কেষ্টদপ্যস্থাঃ সঙ্কুলন্তমূদীর্যতে ॥ ৪০ ॥
সঙ্কর্ষণস্থা সধ্যস্ত প্রীতিবাৎসল্যসঙ্গতং ।
যুধিন্তিরস্থ বাৎসল্যং প্রীত্যা সংখ্যন চান্তিবং ।
আত্কপ্রস্থানাস্ত প্রীতির্বাৎসল্যমিশ্রিতা।
জরদাভারিকাদীনাং বাংসল্যং স্থ্যমিশ্রিতং ।
মাজেয় নারদাদীনাং স্থাং প্রীত্যা কর্মিতং ।
ক্ষম্ততাক্ষে দ্বাদীনাং প্রীতিঃ স্থ্যেন মিশ্রতা।

স্কর্ণনোতি। অত্র স্কর্ষণ্যা স্থাং। নৃত্যতো গায়ত: কাশি ষরতো
বৃদ্ধাকোমিথ:। গৃহিতহত্তো গোণালান্ হসত্তো প্রশাংস্তু:। বাংসলাং
বর্থা। কচিং ক্রীড়াপরিপ্রাপ্তং গোপোংসলোপবর্হণং। স্বরং বিশ্রামন্নতার্যাং
পাদস্বাহনাদিভি:। প্রীতির্যথা। প্রায়ো মায়ান্ত মে ভর্তু নানা মেহশি বিমোহিনীতি ত্বাকাং। তদেবং পৌরাণিকদৃষ্ট্যান্যকানাদ্পি জ্বেরং। জ্বলাতী
বিশ্বীশাং স্থামত্র পরিহাসক্রপাংশেনের ক্রেরং। ক্রন্ত্রাক্রিক্জিতাদি-

রস্ত্রয় উক্ত হইল কিন্তু কোন কোন পণ্ডিতেরা ইহার সমুদ্ধ অধীৎ মিশ্রণত্ব বলিয়া থাকেন ॥ ৪৩ ॥

वनदारमत गथा, श्रीिक ও वारमनायुक, यूपिकितत वार-मना श्रीिक ও मधायिक। উগ্রাহ্যনপ্রভূতির श्रीिक वार-मना विश्विक, श्राहीन গোপীদিগের श्रीिक, वारमना ও मना विश्विक। वासीनन्त्रन नक्न, महाप्तव नांत्रपापित मधा श्रीिक्षक। क्रक, गरूष ७ केवनित श्रीिक, मधा विश्विक শনিরুদ্ধাণি নপ্তুণামেখং কেচিছভাবিরে।
এবং কেবুচিদন্যের বিজ্ঞান্নে ভাবমিশ্রণং ॥ ৪৪ ॥
॥ \* ॥ ইতি শ্রীভক্তিরসামৃতিদির্দ্ধো পশ্চিমবিকারে সুখ্যভক্তিরসনিরূপণে বৎসলভক্তিলহরী ॥ # ॥ ৪ ॥ # ॥

অণ মধুরাথ্য মৃখ্যতক্তিরস: ॥ > ॥
আহোচিতবিভাবাদ্য: পুষ্ঠিং নীতা সভাং হৃদি।
মধুরাখ্যো ভবেত্তকি রসোহসৌ মধুরা রক্তিঃ ॥ ২ ॥
নিব্তামুপযোগিছাদ্যুরহুছাদরং রস: ।

ক্ষণেণ ক্ষেম্বং ৷ কেচিদিতি গৌরদেশ্যানাং পৌতাদিতিঃ কিঞিছিলেদ্বশ্-নাদিতি ভাবঃ ৪৪৪

৪ • ৯ ইতি পঞ্লহব্যাত্মাক পশ্চিমবিভাগে বাংস্লাভ**ভিন্নস্ল্রী** চতুৰী ৪ • ৪ ৪ • ৪

সভাং জীকুছবিষরকভংকান্তরভিন্দুইন্জিনাং স্বিশেষাণাং ॥ ১ ॥ ২ ॥ ও অনিক্লন্ধ প্রভৃতি নপ্তাণের কোন কোন ব্যক্তি এইরূপ্রবিদ্ধা থাকেন এবং অন্যান্য ব্যক্তিতেও ভাবের বিশ্রেশ জানিতে ইইবে ॥ ৪৪ ॥

॥ 🛊 ॥ ইতি জ্ঞীরামনারায়ণবিদ্যারত্ন-ক্তব্যাখ্যার ভক্তি-রসাম্বতসিন্ধুর পশ্চিমবিভাগে বৎসলভক্তিরসলহরী ॥ 🛊 ॥ 🕬 🗷

चव मर्त्रावा चक्तित्रम ॥ ১ ॥

আছোচিত বিভাষাদি ছারা নধুরা ছতি পৎসকলের অধরে পুরিতা প্রাপ্ত ক্ষমে নধুরাব্য অভিনয়ন বলিয়া ক্ষিত্র ক্যা ২ য

বিশ্বত্যকলে পর্বাৎ প্রাক্ত প্রারন্ধনে সমভা মৃতিধারা (১০০)

রহস্যভাচ সংক্রিপ্য বিভতাক্ষেইপি নিশ্যতে ।
ভত্তালঘনাঃ ॥
অস্মিনালঘনঃ কৃষ্ণঃ প্রিরান্তস্য চ হুক্রবঃ ॥
ভত্তা কৃষ্ণঃ ॥
অসমানোর্দ্ধ-সৌন্দর্য্য-লীলাবৈদগ্যসম্পদাং ।
আগ্রাছেন মধুরে হরিরালঘনো মভঃ ॥
যথা শ্রীগীতগোবিন্দে ॥
বিখেষামন্তরঞ্জনেন জনয়য়ানন্দরিন্দীবরভেণী শ্যামলকোমবৈরুপনয়য়লৈরনকোৎসবং ।

নির্ত্তেষু প্রাকৃতশৃকাররস্সামাদ্ট্যা ভাগবতাদ্পাত্মাদ্রসাদ্বিকেদশ্পবাকি

ভগবৎ সম্বন্ধীয় মধুরাখ্য ভক্তিরস হইতে বিরক্তব্যক্তিসকলে উক্ত রস অযোগ্যত্ব, তুরহত্ব এবং রহস্যত্বপ্রযুক্ত বিস্তাপ হইলেও সংক্ষেপে লিখিত হইতেছে॥

মধুরাখ্য ভক্তিরদে আলম্বন যথা।।
ইহাতে কৃষ্ণ এবং কৃষ্ণপ্রিয়া স্থন্দরীবর্গই আলম্বন।
তন্মধ্যে কৃষ্ণ যথা।।

যাহার সমান নাই, যাহার অধিক নাই এমত সোল্দর্যা ও লীলা রসিকতা সম্পাদের আশ্রমপ্রযুক্ত হরিই মধুররদের আল্মন্থরূপ ॥

্যথা শ্ৰীগীতগোবিশ্যে॥

তে স্থি! যিনি অমুরঞ্জনভারা সম্পায় বিশ্বের আনন্দ উৎপাদন করিতেছেন, যিনি ইন্দীবরঞোণী তুল্য কোমল ষদশং অসম্পরীভিরভিতঃ প্রভাগনালিকিওঃ
শ্রারঃ স্থি মৃতিমানির মধো মুগ্নো হরিঃ জীড়ভি ॥ ৩ ॥
অব তত্তা প্রেরতঃ ॥
নবন্বরমাধ্রীধ্রীণাঃ
প্রেরজকরন্বিভাস্তরগাঃ
নিজরমণ্ডয়া হরিং ভজ্জীঃ
প্রমান্তাঃ কিশোরীঃ ।
প্রেরসায় হরেরাজ্ প্ররা বার্ষভানবী ॥ ৪ ॥

चानरवानाचार ॥ ० ॥

আন্তরিতাভাকরণং। প্রণয়তরলৈং কর্ষিতানি মিশ্রিতানি <mark>আভাকরণতা-</mark> ভানি বুরুরো যাসাং॥ ৪ ॥

শ্রামাপদার। অনপোৎসব বিস্তার করিতেছেন এবং ব্রজহাশরী-গণকর্ত্ব স্বচ্ছদে সর্বতোভাবে যাঁহার প্রত্যঙ্গ আলিপিত হইতেছে, সেই হরি মুগ্ধ হইয়া মূর্তিমান্ শৃঙ্গারের ন্যায় মধু-স্বাহুতে বিহার করিতেছেন॥ ৩॥

चर जीकृत्यत (अयमीवर्ग ॥

বাঁহারা নব নব উৎকৃত মাধ্রীর আধার স্বরূপ, বাঁহাদের অঙ্গনমূদার প্রণয় তরঙ্গে মিপ্রিত এবং বাঁহারা স্বীয় রমণ্রূপে হরিকে ভজন করিভেছেন, সেই পরমাতৃত কিশোরীগণকে প্রণাম করি॥

শ্রীকৃষ্ণের সম্পায় প্রেরসীবর্গের মধ্যে ব্যভাসুনশিনী সর্বহ

নদ চকুর চকোরী চারত। চোর দৃষ্টিবিদন্দ মিতরাকারো হিণাকান্তকীর্তিঃ।
আবিকলকলধোঁতোজ্ভিধোরে বক আর্থি রিমমধুপাত্তি রাজতে পশ্য রাধা॥ ৫ ন রতি॥

নর্গোক্তো মম নির্দিতোর পরমান দেশং সৰারামিপি শ্রোত্রস্থান্ত তটিমপি ক্ষুট্মনাধায় ছিতোদ্য মুখী। রাধা লাঘ্যমপাসালর গিরাং ভঙ্গীভিরাত্রতী

মদেন চকুরা চণলা যা চকোরী। চকেতেতি পাঠে লক্ষণশা প এবার্ধ: act কুটমিভানেনালক্ষিতভয়া খাধায় স্থিতেতি বাঞ্জিভং। উদামুধী উদ্ দৃষ্টি:। স প্রণায়গর্কাদিতি ভাব:। নর্মোক্তাবিতাস্য লাঘবমিতানেনাময়:।

# বুষভাতুনন্দিনীর রূপ যথা॥

যাহার লোচন মদমত চকোরীর সৌন্দর্য্য হরণ করিতেছে, যাহাঁর বদনচন্দ্র অবলোকন করিলে পূর্ণচন্দ্রেকেও ঘ্লা বোধ হয় এবং যিনি স্বর্ণ অপেকা সোন্দর্যাশালিনী, সেই মধুরিমার মধুপাত্রী শ্রীরাধা বিরাজ করিতেছেন, অবলোকন কর॥ ৫॥

# রতি ॥

শীকৃষ্ণ কহিলেন, জাসার নির্দ্ধিত পরমানন্দোৎৰ স্বরূপ পরিহাস উক্তিতে শ্রীরাধা কর্ণাগ্র বিন্যাসপূর্বক উদ্ধৃত্তি হুইরা জনাধরসূচক বাক্যভঙ্গীদ্বারা যে লাঘ্ব বিস্তার করেন, ভাষাতে মিত্রভার গৌরব হেতু ঐ শ্রীরাধা জামার সম্বন্ধে বৈত্রী গোরবতোহপাসোঁ শতগুণাং মংপ্রীভিন্নেলাবং ॥৬
তত্ত্ব কুফরতির্ঘণা শ্রীগীতগোবিন্দে ॥
কংসারিরপি সংসারবাসনাবদ্ধশুলাং ।
রাধামাধার হৃদয়ে তত্যাক ব্রক্তক্ষরীঃ ॥
অধোদ্দীপনাঃ ॥
উদ্দীপনা ইছ প্রোক্তা মূরণী নিম্মাদয়ঃ ॥
বধা পদ্যাবল্যাং ॥
তক্তক্ষনগঞ্জনময়শো গৃহপতিচরিতঞ্চ লাক্রণং কিমপি ।
বিশ্মারয়তি সমস্তং শিব শিব মূরলি মুরারাজেঃ ॥
ভঙ্গীভিরিতি । বাজনা বৃত্তা ৯ গৌরবমের বাজম্বীতি বাজিতং ॥ ৬ ॥
বস্ত তক্ত সমাক্ সারং সংসার ইতি ভাবং ॥ ৭ ॥
শতগুপ প্রীতি বিধান ক্রিয়া থাকেন ॥৬ ॥
এশ্বলে শ্রীকৃষ্ণের রতি যথা ॥

কংদারি শ্রীকৃষ্ণও সংগার বাসনা বিষয়ে **শৃত্যলাবত্ত** শ্রীথাধাকে হৃদয়ে ধারণ করিয়া ত্র**জহুন্দরীসকলকে পরিত্যাগ** করিয়াছিলেন॥

शिशीकाशावित्य ॥

অথ উদ্দীপন ॥

মধুর রদে মূরলীরব প্রস্থৃতি উদ্দীপন ॥

পদ্যাবলীতে যথা ॥

শিব শিব। জীক্ষের মুরলী গুরুজনের গঞ্জনা, আবশ এবং গৃহপতির কোন দারুণ চরিত্র ইণ্ড্যাদি সমুদার বিশারণ করাইতেছে। অধানুভাবাঃ ॥

অনুভাবাস্ত কথিতা দৃগন্তেকা স্মিতাদয়ঃ ॥ ৭ ॥

যথা ললিতমাধবে ॥

কৃষ্ণাপাঙ্গতরঙ্গিতত্যুমণিজাসন্তেদবেণীকৃতে

রাধায়াঃ স্মিতচন্দ্রিকাহ্মরধুনীপূরে নিপীয়ায়তং ।

অস্তত্যোষভূষারসংপ্রবলবব্যালীত্তাপোলামাঃ ।

ক্রান্তা সপ্তজগত্তি সংপ্রতি বয়ং সর্কোর্মধ্যাস্মতে ॥ ৮ ॥

ক্ষণাক্ষেত্যত্রাণাক শক্ষোহপাক সমীপদেশ বাচক: নিতাপাক শক্ষরৎ অপাকৌ নেত্রবোরস্থাবিত্যত্র তং সমীপদেশাহলি বাচরিত্র শক্ষতে। নেত্র বৃদ্ধির্গালালি নেত্রান্তঃ পাতাং। যথোকং, জীগোপালসভবে। নীলেনী-ব্যুগালালি । তত তং সমীপদেশ তদেক দেশরো রৈক্যাত্মাত্তরজিভিত্ত ছামনিজান্তেন রূপকং যুক্তমেব জেরং। ততর্জিতেতি তুকাতর্থ কিবন্ত থাতোর্ভাবে নিষ্ঠা॥৮॥

## অথ অনুভাব ।

নয়নাস্তে নিরীক্ষণ ও হাস্য প্রভৃতিকে অনুভাব বলে ॥৭॥ যথা ললিভমাধবে॥

শ্রীকৃষ্ণের অশাঙ্গ তরঙ্গিতখন্তপ যমুনার মিলনদ্বারা বেণীকৃত শ্রীরাধার হাস্যচন্ত্রিকারূপ হ্রধ্নী তটে অমৃত পান করিয়া অন্তঃকরণের সন্তোধরূপ ত্যার সংপ্রবনে তাপো-কাম নিধারণপূর্বক সপ্ত জগৎ আক্রমণ করতঃ সম্প্রতি আহ্রা সক্ষের উপরে অধিষ্ঠিত আছি ॥ ৮ ॥ যথা পদ্যাবল্যাং ॥

কামং বপুঃ পুলকিজং নয়নে ধু ছাত্রে

বাচঃ সগদগদপদাঃ সথি কম্পি বক্ষঃ ।
ভ্যাতং মুকুন্দমূরলীরবমাধুরী তে

চেতঃ হুধাংশুবদনে তরলী করোজি ॥ ৯ ॥
অথ ব্যভিচারিণঃ ॥
আলসেনিগে বিনা সর্বে বিজ্ঞো ব্যভিচারিণঃ ।
তত্র নির্বেদো যথা পদ্যাবল্যাং ॥

শ্রমণমূরলীরবং লক্ষীক্বতা কাচিদাহ কামমিতি । ১॥
আলুদোণিত্রে বিনা ইতি যথা ক্রমং সভোগান্তবিদ্যসঙ্গত্তক রয়ে রন্তরভেবং ॥ ১০

## व्यथ माखिक शमावनौटक यथा ॥

হে স্থি চন্দ্রাননে! তোমার বপুঃ পুল্কিত, নয়ন দ্বের অঞ্চধারণ, গদগদবাক্য এবং বক্ষঃস্থল কম্পান্তিত দেখিয়া জানিতে পারিলাম, মুকুন্দের মুর্লীরব তোমার চিত্তকে তত্মলিত করিয়াছে॥৯॥

# অথ ব্যক্তিচারী #

ু মধুর রলে আল্ফ ও উগ্রভা ব্যভিরেকে সম্পায় ব্যভি÷্ চারী হইয়া থাকে ॥

> खन्मरश निर्द्धन यथा॥ शन्दावनीटक ॥

# ভজ্মিশাম্ভলিক্ষা। পশ্চিম। ৫ম শহ্নী

मा मूक शक्षणंत शक्षणंतीः णतीरत

मा निक नाट्य मकत्रणत्मन वारता।

जन्नानि जर्थाग्रजन विशर्षिजानि

नालश्चिष्ट्रः कथमशि कमरजर्मा कोवः॥ >०॥

हर्सा यथा नानरकनीरकोम्नाः॥

क्वनत्रयूवजीनाः रलह्यमक्षिज्ञेष्टः

क्वनत्रयूवजीनाः शिम्माः नाज्ञजानः।

मनकन कनरण्याह्याह्यकिनीलाजतनः

कवनप्रजि श्रुजिः रम क्यायतात्राधुर्जः।

ক্ৰণছেতি। প্ৰথম: ক্ৰলয়: ভূম ওবং বি চীয়: নীলোংপলং। ত**ত্ৰ স্থাক-ভানাং মধুছেন** যদ্ৰপকং নত্ত হং। অত এব লেংয় দ্বিতাসা পানাৰ্থকা স্থাদাৰোঁ নি বিৰক্ষিত: কি স্থাসক্তিমাত্ৰাৰ্থ:। অত্ৰ প্ৰভাৱসানপ্ৰাায় পান ভোজনাৰ্থা-ভাষাস্থান কতু ণামকি ভ্লাণাং গাস্ত ক্ষ্কজং নতুত: স্থাণ্য ভত্ৰ প্ৰক্ষণ

হে কন্দর্প! তুমি শরীরে পঞ্চশর নিক্ষেপ করিও না, হে বারো! তুমি নিবিড় পুষ্পারদে এ অঙ্গ সেচন করিও না, যেতেতু শ্রীকৃষ্ণের প্রণায় ভঙ্গে নিন্দিত এই অঙ্গনকলকে কি শাঞ্জায় করিতে জীব সমর্থ হয় ?॥ ১০॥

इर्घ यथा मानदकलि को मृमी एउ॥

শ্রীরাধা কহিলেন, পর্যন্তত্ব এই অরণ্যধূর্ত ভূমওলবর্তি
বুর্তিদিগের নরনভূমধারা নীলোৎপল দলের পোভা হই-তেও অধিক পোভাশালী নিজাঙ্গের শোভা আত্মদন করাইয়া
বত্ত করিশাবকের লীলা তরঙ্গ উল্লভ্যনপূর্যক আমার বৈর্যা
বাস করিল # শব স্থায়ী ॥ °
স্থায়ী ভাবো ভবভাত্ত পূর্ব্বোক্তা মধ্রা রভিঃ ॥ ১১ ॥
যথা পদ্যাবল্যাং ॥
ক্রবল্লভাগুবকলা মধ্রাননশ্রীঃ
ক্ষেল্লিকোরক-কর্ম্বিভকর্শপূরঃ ।
কোহয়ং নবীননিক্ষোপণভূল্যবেশো

প্রাপ্তঃ শ্রীগোবর্দ্ধনঃ অতএব নাায়কভাত শ্রীক্রমন্তং ব্যক্তং ধৃর্ত্তপদমত্র নর্মান প্রযুক্তমিতি রস্থানহং। যথা কিতব যোবিতঃ কন্তাজেরিশীভাত্ত কিতবপদং প্রাথকাপোক্তমিতি॥

বল্লীশন্ত দ্বাল্লখং নৰ নাগবলিদ্বপুগ্ৰহ ইতি মাধকাবাদ্টা। মলী-বলিচঞ্চপ্ৰাগ ইতি গীতগোবিলাদিদ্টিপ্ৰস্প্ৰাগ চ জ্বাক্ষেতি বা পঠনীলং নৰীননিক্ষেতি পীতাম্বন্দন নিক্ষোপ্ৰবেশত্লাবেশ ইতাত মধাপদলোপিছা-বেশশকাছত অৰ্পৱেধাস্থানীয় প্ৰিধানাৰ্থঃ। অবশীক্ষোতীতি ন বিদ্যুত্তে কিঞ্চিদ্যি বশং বতা ভাদ্শী ক্ষোতি যবা অবশা অভ্যা ভাদ্শী ক্ষোভি ক্ষিত্তম্থাদীক্ষোতীতাৰ্থঃ। অভ্যত্তাবে চি থতায় ক্ষেলিবশোকঃ ॥ ১২ ॥

#### অথ স্থায়ী॥

পূৰ্বোক্ত মধুরা রতি অর্থাৎ সম্ভোগের আদিকারণই এ স্থলে স্থায়ী ভাব॥ ১১॥

#### यथा भन्तावनीटक ॥

হে সথি ! বাঁহার জ্রলতার নৃত্য হারা মৃথপ্রী অভিশর মধুর, বাঁহার কণাত্র অশোককলিকার স্থাভিত এবং বিনি পীতবসন পরিধান করিয়াছেন, এ কে? ইনি যে আমাকে



বংশীরবেণ সথি মামবশীকরোতি ॥ ১২ ॥
রাধামাধবয়ারেব কাপি ভাবৈং কদাপ্যসোঁ!
সজাতীয়বিজাতীয়ৈনৈ ব বিচ্ছিদ্যতে রভিঃ ॥ ১৩ ॥
যথা ॥
ইতো দূরে রাজ্ঞী ক্ষুরতি পরিভো মিত্রপটলী
দূশোরত্রে চন্দ্রবিলরুপরি শৈলস্য দুকুতঃ ॥
অসব্যে রাধায়াং কুন্থমিততলতাসংবৃত্তনো
দৃগন্ধঞ্জীলোলা তড়িদিব মুকুন্দ্রস্থ বলতে ॥ ১৪ ॥

রাধামাধবরোরের নতু প্রেরক্তর মাধবরো রতিঃ। স্ব্যাক্তরভিদর্শনা-শিমরী নৈব বিচ্ছিদ্যতে নার্তং সাাং। কৈ: সভাতীদৈত্তৎ প্রেরস্ভর ব্যক্তিত বিজ্ঞাতীকৈ ক্তর্থস্থানি ব্যক্তিভাবি ভবিষ্টোধি স্মীহাসারেঃ ৪১৩৪

রাজী ব্লরাজী। দহজে। হরিট:। শৈশদ্ শিশাসমূহসা। ব্রজ্বাহ্যা অবিরপ্তয়াচিত্সাঃ ১৪॥

बः भोत्रत्व व्यवन कतिरत्न ॥ ১२ ॥

জীরাধামধেবের কথন কোন হানে স্বজাতীয় বাবিজাতীয় ভাৰম্বার রভির বিচ্ছেদ হয় না ॥ ১০॥

কিঞ্চিদ্দুরে যশোদা, চতুর্দিকে স্থাগণ, নেত্রঘরের অতা-ভাগে চন্দ্রাৰলী এবং গুজ্বারন্থ শিলাবদ্ধভূমির উপর র্যাহ্মর বিদ্যমান থাকিলেও দক্ষিণদিকে কুস্মিত লতাজালে আর্-ভাদী শ্রীয়াধার প্রতি মুকুন্দের চফল অপাদ্স্ত্রী বিহ্যুতের ন্যায় পতিত হইতেছে ॥ ১৪ ॥ বোরা ধণ্ডির্জান্থানু ড্রাজিরং রুদ্ধে শিবা ভারাসী ব্রুলিষ্ঠাননঃ শসস্তুতিকথা প্রালেয়সাসিকতি। অব্যে রামস্থারু চিবিজয়তে কৃষ্ণপ্রমোদোচিতং রাধায়ান্তদপি প্রফুল্লমভন্তন্ মানিং ন ভাবাস্থানং ॥ ১৫ ॥ স বিপ্রশাস্থায়ভাবে ভিবিধা মতঃ ॥

ভাবপক্ষে ৰণ্ডিবঃ শম্চুড়ভদাবেঃ যকে; যত্র তদুশমন্তিরং জীড়ালনং। ভাষরী ভগোগুণমন্ত্রী শিবা শৃগালিছাতিঃ ।ক্তমে আর্ণোভি অম্পুলপক্ষে তংপ্রতি অশিবা অমলণা তামসী রাত্রিঃ ।এবমুভয়ত্র ব্রন্ধিষ্ঠো বর্মাঃ সত্রব ব্রন্ধিনা ভয়ানক শান্ত বংসলা দর্শিভাঃ। অম্পুলবিরোধিনা ভাগালিছা ভাগালিছা ভাগালিছা বালিছা লাভি বালিছার বালিছা

म अवमम्रका मधुत्रारका खिलातमः ॥>७ ।

এক দিকে প্রাঙ্গণন্থ শৃষ্টুড় যকেন গণ্ডিতদেহ ভমোগুণময়ী শিবা সকল বেইটন করির। রহিয়াছে, অন্য দিকে পবন
ভুলা ব্রক্ষিষ্ঠগণ শমতাসম্পন্ন স্তুতিকথারূপ হিম সেচন করিল ভেছেন, সম্প্র অমৃতকান্তি বলদেব বিদ্যমান রহিয়াছেন,
ভবাপি প্রীক্ষের প্রমদোচিত প্রীরাধার ভাবপদ্ম মলিন না
হইয়া প্রফুরই ছিল ॥ ১৫॥

বিপ্রশস্ত ও সম্ভোগভেনে পূর্বোক্ত মধুরাধ্য ভক্তিরস কুই প্রকার হয়॥ ভত্ত বিপ্রশন্তঃ ।

স পূর্বরাগে। নানশ্চ প্রবাস।দিময়ন্তথা ॥
বিপ্রলম্ভো বহুবিধাে বিদ্বন্তিরিহ কথ্যতে ॥ ১৬ ॥
তত্ত পূর্বরাগঃ ॥
প্রাগসসভয়ােভাবঃ পূর্বরাগাে ভবেদ্বরাঃ ॥
যথা পদ্যাবল্যাং ॥
অকস্মাদেকস্মিন্ পথি স্থা ম্যা যামুনভটং
ব্রদ্ধাা দৃষ্টো যাে নবজ্লধর-শ্যামলভকুঃ।
সদৃগ্ভস্যা কিমা কুরুত নহি জানে তত ইদং

আবিভাত ঘ্যোরিতি কাছায়া: পূর্বরাগো ভক্তিরস্থেনোচাতে কান্তস্য তৃ

**७गा**र्था विश्वलख गथ।॥

পণ্ডিতগণ পূর্বরাগ, মান ও প্রবাদাদি ভেদে বিপ্রল স্তকে বছবিধরূপে কীর্ত্তন করেন॥ ১৬॥

ख्यारश পूर्यत्राभ यथा॥

কাস্তা ও কাস্ত এতত্ত্বের পূর্ণে অমিলন প্রযুক্ত বে ভার ভার্তে পূর্বেরাগ বলে॥

यथा भगावनिद्ध ॥

হে স্থি! আমি যমুনাতটে গমন করিতেছিলাম, অক্সাৎ সেই পথে কোন এক নংজলধর শ্যামবর্ণ পুরুষ আমার নেত্রে গোচর হইয়াছিলেন, তিনি নয়ন ভঙ্গীবারা কি যে করিলেন ভাহা জানিতে পারি নাই কিন্তু সেই অবধি আমার এই মন মনো মে ব্যালোকং কচ ন গৃহক্ত্যে ন লগতে ॥ ১৭ ॥

যথাবা শ্রীদশমে ॥

তথাহমপি ভচ্চিত্যে নিজাঞ্চ ন লভে নিশি।

বেদাহং রুবিণা হেষামমোহাহো নিবারিতঃ ॥

অথ মানঃ ॥

মানঃ প্রসিদ্ধ এবাত্র ॥ ১৮ ॥

যথা শ্রীগীতগোবিশে ॥

বিহরতি বনে রাধা দাধারণপ্রণয়ে হরে

ভদ্দীপন্ত্রেস গ্নাতে। এবম্তর্থাপি॥ ১৭॥
বজ্বনেবীষু শ্রীকৃষ্ণসা পূর্বর্গাগন্ত জয়তি তে ২ধিকং জ্বানেতাধারে তাসাং
মুখেনৈব শ্রীম্মুনিনা বচ্পোৎপি শর্জ্বাশ্য ইত্যাদিভির্বিতি এব ইত্যতিপ্রেত্য স্কৃত্তকং শ্রীকৃষ্ণিণামেব তং দশ্যতি ম্থাবেতি॥ ১৮॥
বিহর্তী হার্ষ্যেব নোলাহরণং ডাইবাং॥ ১৯॥

যথাবা জীদশনে ৫০ অধ্যায়ে ২ শ্লোকে ॥
জীকৃষ্ণ কহিলেন, প্রকান্! তদ্রপ আমারও চতি ক্লিণীর
প্রতি অপিতি হওয়াতে রাত্রিতে নিদ্রালাভ হয় না। আমার
প্রতি ক্লির দ্বেষবশতঃ আমার বিবাহ যে নিবারিত হইরাছে,
ভাহা আমিও অবগত আছি ॥

অথ মান॥
এক্ষে মান প্রসিদ্ধই আছে॥ ১৮॥
যথা শ্রীগীভগোবিক্ষে॥
বনমধ্যে শ্রীকৃষ্ণ স্থারণ প্রণরের সহিত বিহার ক্রিডে-

বিগলিতনিজাংকর্যালীর্যাবশেন গতাক্যুত।
কচিদ্পি লতাকুঞ্জে গুপ্তম্মধুত্রতমগুলীমুখরশিখনে দীনা দীনামুগুবাচ রহঃ সখীং ॥
ধ্বাসঃ ॥
ধ্বাসঃ মঙ্গবিচুতিঃ ॥
ধ্বাসঃ সঙ্গবিচুতিঃ ॥
ধ্বাসংকর্যাবল্যাং ॥
হন্তোদরে বিনিহিতৈকক্পোল্পালের্প্রাস্তলোচনজ্ঞলম্বপিতাননায়াঃ ।
প্রস্থানমঙ্গলদিনাবধি মাধ্বস্য
নিজ্ঞালবোহ্পি কৃত এব সরোক্ত্রাক্যাঃ ॥

ছেন দেখিয়া শ্রীরাধা স্বীয় উৎকর্ষার লাঘব হেতু ঈর্ষাভরে
ক্রীড়া পরিভ্যাগপূর্বক অন্যত্র গমন করিলেন কিন্তু যাহার
উপরিভাগে ভ্রমরনিকর গুঞ্জন করিতেছে, এমত লভাকৃঞ্জে
গিয়া লুকায়িত ভাবে অবস্থিতি করত তুঃখিত চিত্তে নির্জনে
স্থীর প্রতি বলিতে লাগিলেন।

প্রবাস ॥

সঙ্গ রহিভের নাম প্রবাশ॥ যধা পদ্যাবলিভে॥

বে দিবসাবধি জীকৃষ্ণ মধুপুরী গমন করিয়াছেন, সেই প্রাথান মঙ্গল দিন হইতে পদ্মাক্ষা জীরাধা হস্তমধ্যে এক কপোল বিনাস্ত করত অবিজ্ঞান্ত নেত্রজলে বদনমগুল আর্জ করিভেছেন, স্তরাং কোথা হইতে তাঁহার নিজ্ঞালব উপ-ক্ষিত্র হুইলে এ বধা প্রহুলাহ্সংহিতারাং উদ্ধাবনকাং ॥
ভগবানপি গোবিন্দঃ কন্দর্পনরপীড়িতঃ।
ন ভূঙ্কে ন স্বপিতি চ চিন্তান্ বো হুহনিশিং ॥
ভব সম্ভোগঃ ॥
ভয়োমিলিতয়োর্ভোগঃ সম্ভোগ ইতি কীর্ত্তা ॥ ১৯ ॥
বথা পদ্যাবল্যাং ॥
পরমানুরাগপর্য়াথ রাধ্যা
পরিরস্ত-কৌশল-বিকাশি-ভাব্যা।
স ত্যা সহ স্মরসভাজনোৎসবং
নিরবাহয়চ্ছিথিশিওওশেথরঃ ॥ ২০ ॥

পরমানুরাগ ইতাভাত্তে নিতাভিভিজ এলদেবীনাং পুরদেবীনাক ফুগ্পদ্ধ-বিভা। জয়তি জননিবাস ইতাদিনা॥ ২০॥

ষথা প্রহলাদসংহিতায় উদ্ধববাক্য॥

ভগবান গোবিদ্দও কন্দর্পশরে পীড়িত **হইয়া দিবা রাত্র** ভোমাদিগকে চিন্তা করিতে করিতে না ভো**লন করিছেছেন,** না শয়ন করিতেছেন ॥

অথ সম্ভোগ।

কাস্তা এবং কাস্ত উভয়ে মিলিত হইয়া যে ভোগ করেন ভাহাকে সম্ভোগ বলিয়া কীর্ত্তন করা যায়॥ ১৯।

यथ। भम्राविलएक ॥

ধিনি পরমাসুর।গমরী, আলিসন কৌশলমারা বাঁহার ভাষ বিশেষ প্রকাশ হইরাছে, সেই শ্রীরাধার সহিত শিশগুড়ুড় কন্দর্প পূজোৎসব নির্বাহ করিয়াছিলেন। ২০॥ ॥ # ॥ ইতি ট্রীভজিনসামৃতিসিদ্ধে পশ্চিমবিভাগে মধ্-রাধ্যভক্তিরসলহরী পঞ্চমা ॥ # ॥ ৫ # ॥

শ্রীমন্তাগবভাদ্যই শাস্ত্রদর্শিতয়া দৃশা।
ইয়মাবিক্ষতা ম্থ্যপঞ্চজিরসো ময়া ॥
শোপালরপশোভাং দধদপি রঘুনাথভাববিস্তারা।
ত্যাতু সনাতনাত্রা পশ্চিমবিভাগে রসামুনিধেং ॥ # ॥
॥ # ॥ ইতি শ্রীভজিরসাম্ত্রিক্ষো মুখ্যভজিরসনিরূপণং
নাম পশ্চিমবিভাগস্তীয়ং ॥ # ॥ ০ # ॥

॥ † ॥ ইভি - শীহুৰ্গমসক্ষনীনায়্যাং ভক্তিরসামৃতসিদ্ধটীকার্যাং পশ্চিম বিভাগকুতীরঃ ॥ ● ॥ ৩ ॥ ● ॥

্জীমন্তাগবতাদি শান্ত্র দর্শিত জ্ঞানদারা আমি এই মুখ্য ভক্তিবসময়ী পঞ্চম লছ্রী প্রকাশ করিলাম।।

ষিনি গোপালরপ শোভাকে ধারণ করিয়াও রঘুনাথের ভাষ বিস্তান করিয়াছেন, সেই সনাতনবিগ্রহ প্রভু ভক্তিরসা-মৃতিসিদ্ধুর পশ্চিমবিভাগে সম্ভট হউন ॥

॥ \*। ইতি শ্রীরাদনারায়ণবিদ্যায়প্রকৃতব্যাখ্যায় ভক্তিয়লায়ভিনিপুর পশ্চিমবিভাগে মধুরাখ্য ভক্তিয়ল লহরী
পশ্নীর । ৫॥ \*।।

<sup>॥ • ॥</sup> ইতি তুর্গমসক্ষমনী নাস্ত্রাং শ্রীরসামৃতসিক্টীকারাং পঞ্চমনহর্যাত্মকে
পশ্চিমবিভাগে মধুরাথভেক্তিরসলগ্রী পঞ্চমী ॥ • ॥ ৫ ॥ • ॥

শ্রীমদিতি । শ্রীমন্ত্রাগ্রভাদিলকণ্যোগাশার প্রকাশিতেন জ্ঞানেনেতার্থঃ ॥

<sup>॥ # ।</sup> ইতি পশ্চিমবিভাগ সমাপ্ত ॥ # ॥

ভক্তিতরেণ প্রীতিং কলয়মুররীরুত ব্রজাসকঃ।
তবুতাং সনাতনাত্মা ভগবাদ্ময়ি সর্বদা তৃষ্টিং ॥
রসমতাকের্ভাগের তুরীয়েতৃতরাভিধে।
রসং সপ্রবিধা গোণো মৈত্রী বৈরন্থিতির্মিথঃ॥
রসাভাসশ্চ তেনাত্র লহর্ষে। নব কীর্ত্তির্গাঃ॥
প্রাগত্রানিয়ভাধারাঃ কদাচিৎ কাপুাদিছরাঃ॥
পৌণা ভক্তিরসাঃ সপ্ত লেখ্যা হাস্তাদয়ঃ ক্রমাৎ॥ ১॥
ভক্তানাং পঞ্চোক্রানামেষাং মধ্যত এবহি।

নমু শালাদিবদ্যাগাৰু হাদবোহণি পূৰ্থক স্থা কিহ্বক দেনানাদি<mark>যু হাস্য-</mark> বীরাদীনাং বিরভা দুর্লনাত্তাহ ভকানামিতি। ভকানাং পঞ্ধা র<mark>তিপঞ্কা</mark>

দিনি ভক্তাতিশয় প্রযুক্ত প্রীতিবিধানপূর্বক গোষ্ঠসংসর্গ অঙ্গীকার করিয়াছেন, সেই সনাতন সরূপ ভগবান্ সর্বলা আমার প্রতি তুষ্টি বিধান করুন॥

রসায়তিসিন্ব এই উত্তর নামক চতুর্থবিভাগে সাত প্রকার গৌণ ভক্তিরস অর্থাং হাস্ত, অন্ত্র, বীর, করুণ, রৌদ্র, ভয়ানক ও বীভংগ, তথা পরস্পার মৈত্রবৈর্ছিতি অর্থাং কোন্ভাবের সঞ্জি কোন্ভাবের মিত্রতা ও কোন্ভাবের সহিত কোন্ভাবের শক্রতা এবং রসাভাস বর্ণিত হইবে॥

পূর্বে এই গ্রন্থে লেখ্য হাস্থাদি গোণ ভক্তিরসধারাবাছিক রূপে বর্ণিত হয় নাই, কোনটা অগ্রে এবং কোনটা মা পরে লিখিত হইয়াছে ॥ ১॥

গোণ হাস্থাদি ভক্তিরদ সকলে মুখ্য শাস্তাদি রসনিষ্ঠ [১০৫] কাপ্যেকঃ কাপ্যনেকশ্চ গৌণেস্বালন্থনো মতঃ ॥
তত্র হাস্যভক্তিরসঃ ॥
বক্ষামাণৈর্বিভাগাল্যৈঃ পুষ্ঠিং হাসরতির্গতা।
হাস্যভক্তিরসো নাম বুংধরেষ নিগদ্যতে ॥ ২ ॥
আাস্মিশ্লম্বনঃ কৃষ্ণস্তথান্যোহ্পি তদ্বয়ী।

শ্রমথেনোক্তানাং মধ্যত এব নতু তেভাছিনা ইত্যর্গ:। অরং ভাব:। তত্তন্তি বিষয়থেনোক্তস্য শ্রীকঞ্চস্য তত্তদাশ্রমথেনোক্তস্য তত্তদ্ধক্তস্য চ সর্প্রোৎসর্প সিদ্ধতম্বাজ্ঞাব আল্বনথং। কিন্তু তত্ত্রতি সম্বান্তিতি নোপচর্যামাণ হাসাদিনাং প্রাকৃত্রস্পাল্লাফ্সারেণৈর হারিকম্পচর্যতে। তদক্সারেণৈর চ জ্বানকর্সানৌ দার্কণাদীনামালম্বর মভ্পেগংস্যতে। সমতেতু বিভাবতেহি রত্যাদির্যার বেন বিভাবতে। বিভাবো নাম স ক্ষেণাল্থনাত্মক ইত্যার্থ প্রমাণাক্ষ্যারেণ্র, সপ্তমার্থ এব সর্প্রালম্বনং। সচাক্ষ্যভায়া রতেঃ সহস্কেন বিষরাশ্রম্বাশ্রেণ্য, এবেতি । ২ ॥ ২ ॥

পরার্থায়া রভেবি শ্বছেন তথাকীকৃত হাস্সা হেতুদেন চকুফোঝিরা-

পঞ্চবিধ ভজের মধ্যেই কোন স্থানে এক ও কোন স্থানে বহু আলম্বন হইবে॥

হাস্ত ভক্তিরস যথ।

বক্ষামাণ বিভাবাদি দ্বারা হাস্ত রতি পুষ্ট হইয়া হাস্ত ভক্তিবস নামে কথিত হয়॥ ২॥

এই হাস্ত ভক্তিরদে কৃষ্ণ এবং তদম্বয়ী অর্থাৎ কৃষ্ণের অনুগত চেন্টাশালী ব্যক্তি আলম্বন হয়েন। পণ্ডিগণ বলিয়া-ছেন বৃদ্ধ এবং শিশুগণ প্রায় হাস্ত রতির আশ্রেয়, কথন বৃদ্ধা: শিশুমুখ্য: প্রায়: প্রোক্তা ধীরৈন্তদাশ্রম্মা:।
বিভাবনাদিবৈশিক্যাৎ প্রবরাশ্চ কচিম্মতা: 
তিত্র কুকো যথা 
ধ্যাস্থামাস্থ ন ভীষণস্থ দবিধং জীর্ণস্থ শীর্ণাকৃতে—
নাভনেব্যতি নাং পিধার কপটাদাধারিকারামদা ।
ইত্যক্তা চকিতাক্ষমন্ত্রশিশাবুরীক্ষ্যমাণে হরে
হাস্থং তক্ত নিক্রতাহপাতিত্রাং ব্যক্তং তদাসীকুনে: 
আথ তদস্বয়ী ॥

লখন: তদ্ধ্বী তসা ক্লুফার্ম্পত চেইন্চ তদ্রতেরাশ্রহেন তাদৃশ হাস হেতুদ্ধন চাশ্রহন। তক্ত হাসভাশ্ররা ওদাশ্র্যা:। ক্ষাসভা চেতে বিকাশ-সাক্রপ্রাধিষয়ন্ত্র ন বিদাতে নহি ক্মলাদিবিকাশ: ক্চিথিবরং ক্রোভি য্যু-দিশা প্রক্তিত্র এবহি বিষয়। পরিহাসোগ্যাস্থাসিও যাল ভাতদ ক্ষিত্রি-

ক্সন বিভাবনাদির বৈশিক্যপ্রযুক্ত শ্রেষ্ঠ ব্যক্তিরাও এই রতির আশ্রয় হইয়া থাকেন॥

তন্মধ্যে কুলঃ আলম্বন যপা॥

রুষ্ণ কহিলেন মা! আমি এই জীর্ণ শীর্ণারুতির নিকট যাইব না, উহার নিকট গেলে, ও আমাকে ভিকা পাত্রের মধ্যে আচ্ছাদন করিয়া অর্থাৎ ঝোলার মধ্যে পু'রয়া রাথিবে এই বলিয়া অদুত শিশুরূপা হরি চকিত লোচনে নিরীক্ষণ করিতে লাগিলে, যদিত মুনি হাস্ত সম্বরণ করিয়াছিলেন তথাপি তাহা শীত্র প্রকাশ পাইল॥

**७** नयशे जानयन यथा ॥

যচেষ্টা কৃষ্ণবিষয়া প্রোক্তঃ সোহত্ত তদস্বয়ী ॥ ৩ ॥
যথা ॥
দদামি দধিফাণিতং বিরুপু বক্তুমিত্যগ্রতো
নিশম্য জরতীগিরং বিরুতকোমলোঠে স্থিতে ॥
তয়া কৃষ্ণম্পর্শিতং নবমবেত্য ভূগাননে
হরো জহম্ফদ্ধুরং কিম্পি হুঠু গোঠার্ভকাঃ ॥
যথাবা ॥
ভাষ্ঠ প্রাক্ষ্য করং শিশোমুনিপতে শ্রামদ্য মে কথ্যতাং

ষয়মপি কুর্যারাম স ভুনাত্রোপাণীয়ত ইতি ভাব: ॥৩॥ ফানিতং খণ্ডবিঞ্জি:। দধিমিশ্রিতং ফাণিতং দধিফানিতং কোমলেতি

তথাং হস্ত চিরায়ুরেষ ভবিতা কিং ধেনুকোটীশ্বঃ।

যাহার কৃঞ্বিষয়ক চেফী তাহাকে ওদন্বয়ী বলে॥
যথা॥

কৃষণ! তোমাকে দধিমিশ্রিত ফাণিত অর্থাৎ বাতাসা
দিব, মুথ ব্যাদান কর, সম্মুথে জরতীর এই কথা শুনিয়া কৃষণ
কোমলোষ্ঠ বিস্তার করিলে জরতী তাহাতে একটা অভিনব
কৃষ্ম নিক্ষেপ করিলেন, কিন্তু তাহাতে এ কৃষণ মুথ কৃটিল
করায় তদ্দর্শনে ব্রজবালক্ষকল উচ্চরূপে হাস্থ করিতে
লাগিল।

#### মথাৰা ॥

নন্দ কহিলেন, হে মুনিপতে ! আপনি আমার এই স্থাম শিশুর হস্ত নিরীক্ষণ করিয়া যথার্থ বলুন, এ দীর্ঘায়ু হইয়া ইত্যুক্তে ভগবন্ ময়াদ্য পরিতশ্চীরেণ কিং চারুণাদ্রগাবির্ভনন্থ রুল্যিতমিদং বক্তুং ত্ব্যা রুধ্যতে ॥ ৪ ॥
উদিপনা হরেস্তাদ্যায়েশ্চরিতাদয়ঃ।
অনুশ্রেবাস্ত নামেষ্ঠ গণ্ডনিস্পান্দনাদয়ঃ।
হর্ষালভাবহিত্যাদ্যা বিজেয়া ব্যভিচারিণঃ।
মা হাদ রভিরেবাত্র স্থায়িভাবতয়াদিতা।
যোঢ়া হাদরভিঃ ভাংলিতহদিতে বিহ্নিতাবহণিতেচ।
অপহ্নিতাভিহ্নিতকে জেঠাদীনাং ক্রমাদ্ধে দে।

वालाः वाश्विकः ॥ ८ ॥

উদীপন ইতাত হরিরিত।পলকণ: ভদম্বিনোহপি ভেমা:॥ ৫॥

কোটি ধেমুর অণীখন হইবে কি না, হে ঋসে ! আমি এই কথা বলিলে, আপনি কেন উদগত ঈশং হাস্যায়িত বদন চীর-বসন্থানা আচ্ছদন ক্রিলেন॥ ৪॥

এই হাস্যরেস কৃষ্ণ এবং কৃষ্ণ সম্মীয় ব্যক্তির ঐ প্রকার বাক্য বেশ এবং আচরণপ্রভৃতি উদ্দিপন। নাসা, ওঠ ও গণ্ড স্পাদানাদি সকল ভামুভাব, তথা হর্ষ, আলস্য এবং আকার গোপনপ্রভৃতি ব্যভিচারী হইয়া থাকে॥

হ।স্যরসে হাস রভিকে স্থায়ীভাব বলিয়া **কীর্ত্তন করা** যায়॥

হাস রতি ছয় প্রকার হয়। যথা স্মিত, হসিত, বিহসিত, অবহসিত, অপহসিত ও অভিহসিত। জ্যেষ্ঠ, মধ্য ও কনিষ্ঠ ভেদে তুইটা তুইটা করিয়া প্রকাশ পায়, অর্থাৎ জ্যেষ্ঠ স্মিত নিভাবনাদিবৈচিত্ত্যাতুত্তমন্যাপি কুত্তিছিং।
ভবেদ্বিংসি ভাল্যঞ্চ ভাবকৈরিতি ভণ্যতে ॥
তত্ত্ব স্নিতং ॥
স্মিতং স্বলক্ষ্যদশনং নেত্রগগুবিকাশকৃং ॥ ৫॥
ক্ষামি জরতী থলা দ্ধিহরং দিধীর্যন্ত্যা
প্রধাবতি জনেন মাং স্ক্রল মংক্ষু রক্ষাং কুরু।
ইতি স্থালন্ত্দীরিতে দ্রন্তি কান্দিশীকে হরে

স্বল হে স্পূৰ্বল ইতি কিঞিবলিষ্ঠা ভোষ্ঠা আতরং প্রতি সম্বোধনং গ্রু স্বলসংজ্ঞাং তং সমবয়স্কাং প্রতি। কান্দিশীকে ভয়ক্ততে দ্বতীতি দ্রবস্থাতি-

ছদিত মধ্যমে বিহ্দিত, আবহ্দিত এবং কন্তি অপহ্দিত ও অভিহ্দিত প্রকাশ পাইয়া থাকে॥

ভাবাজ্ঞগণ বলেন বিভাবনাদির বৈচিত্র্য হেতু কোন কোন স্থানে উত্তম ব্যক্তিতেও বিহ্দিত গ্রভৃতি প্রকাশ পায় ॥

তনাধাে বিভাত যথা।

যে হাস্যে দন্ত লক্ষিত হয় না, কিন্তু নেত্র ও গণ্ডের প্রফু-লুকা দৃষ্ট হয়, ভাহাকে স্মিত বলে॥ ৫॥

यथ। त

যে জেপ্ত ভ্রাতঃ ! দনি চুরি করিয়াছি, বলিয়া থল জরতী আমাকে ধনিবার জন্য দোড়িয়া আগিতেছে, এখন কোণা যাইব, শাত্র আমাকে রক্ষা কর, এই বলিয়া ভয়ে পলায়ন-পরায়ণ জ্রীকৃষ্ণকে দেখিয়া অর্গে মূলিগণের বদন স্বাহ হন্যে

বিকল্পর-মূপালুজং কুলমভূমুনীনাং দিবি॥
হিসিতং॥
তদেব দর সংলক্ষ্য দন্তা গ্রং হসিতং ভবেং॥ ৬॥
বর্ণা॥
মলেশেন পুরস্থিতো হরিরদৌ পুল্লোহ্হমেবাম্মি ভে
প্র্যেত্তা হল্পর বিশ্বসিত্যা সংবস্তার লাদ্র্ণা।

मंग्र (नामनांच्या का भा

মছেলেনেতি টু চরমায়াক মদৃষ্ট কবেলি জীক্ষণ জীবাধিকা**রা: পতিস্ত্যাং** জটিলায়া: পুত্রমভিষয়াং দৃষ্ট্ । তাৰেশেন ডদগৃহং গভাৱ **জীক্ষত তাং** প্রতি

বিক্ষিত হইল ॥

তাথ হসিত।

বে হাম্যে দন্ত ঈষং দৃষ্ট হয়, তাহাকে হসিত বলে ॥৬॥
যথা ॥

প্রানিধিকার পতিন্মন্য কটিলপুত্র অভিমন্থা নিজগৃছে আগমন করিভেছিল, কিন্তু সে প্রীকৃষ্ণকৈ দেখিতে পায় নাই, প্রীকৃষ্ণ আগমনশীল অভিমন্থাকে দূরে অবলোকন করিয়া নিজে অভিমন্থার বেশ ধারণগুর্দক জটিলার নিকট গিল্লা বলিলেন মা! আমি ভোষার পুত্র অভিমন্থা, আমার বেশ ধারণ করিয়া কৃষ্ণ অহা অবস্থিত রহিয়াছে দেখুন, কৃষ্ণ এই কথা বলিলে ভটিলা ভাহাতে বিশ্বাদ করিয়া সক্রোধ-নেত্রে চীৎকার করত মা মা এই অন্ধ উচ্চারণকারি স্বীয় পুত্র অভিনম্পুক্তে প্রান্ধণ হইতে ভাড়াইয়া দিলে ভদ্দন্তি স্থী সকলের

মামেতি স্থানদকরে জটিলয়া ব্যাক্রশ্য নিকাসিতে
পুত্রে প্রাঙ্গণত শীক্লমভূদন্তাংশুধোতাধরং ॥
বিহসিতং ॥
সম্বনং দৃষ্টদশনং ভবেৰিহসিতং তু তৎ ॥ ৭ ॥
যথা ॥
মুখাণ দধি মেছুরং বিফলমন্তরা শক্ষদে
সনিশ্বসিত ভম্বং জটিলয়াত্র নিদ্রোয়তে ।
ইতি ক্রবতি কেশবে প্রকটশীর্ণস্থলং
কৃতং হসিত্মুৎস্বনং কপটন্তপ্রয়া রুদ্ধাা ॥

বচনং। নিস্কাসিতে দ্বত এব বিদাবিতে। ততা বাতুলতামাশকা স্ববন্ধনা মানয়নাৰ্থং ততা বিজ্ঞত্বাং ॥ ৭ ॥

ক্পট স্থায়েতানেন তয়েতি পূর্ব্বোক্ত খার্ম্পালভাতে। স্থায়াপৈতেরেতি

অধর ঈষৎ দন্তকিরণে অলঙ্কত হইয়াছিল অর্থাৎ ভাঁহারা সকলে হাসিতে লাগিলেন॥

বিহুদিত ৷

যে হাদ্যে শব্দের সহিত দন্ত দৃষ্টহয়, তাহাকে বিহ্নিত বলে॥ ৭॥

আহে সথাসকল! উৎকৃষ্ট দিধি চুড়ি কর, গৃহমধ্যে কোন ভয় করিও না, জটিলা প্রবল নিশ্বাস পরিত্যাগ করিতে করিতে নিদ্রা যাইতেছে, শ্রীকৃষ্ণ এই কথা বলিলে কপট স্থা র্দ্ধা শীর্ণান্ত উদ্ঘাটনপূর্বক সশব্দে হাসিয়া উঠিল। ্ অবহসিতং ॥

ভচ্চাবহসিতং ফুল্লনাসং কুঞ্চিতলোচনং ॥ ৮ ॥ যথা ॥

লগ্নতে নিভরাং দৃশোরপি মুগে কিং ধাড়ুরাগো ঘনঃ
প্রাতঃ পুত্রবলতা বা কিমসিতং বাসন্ত্যাঙ্গে ধৃতং।
ইত্যাকর্ণ্য পুরো অজেশগৃহিণী বাচং ক্ষুর্মাসিকা
দূত্য সক্ষণীক্ষণাবহসিতং জাতা ন রোজুং ক্ষমা ॥
অপহসিতং ॥

বা পাঠ: # ৮ #

লগ্নত ইত্যাদৌ পুত্ৰেতাত মিবেতি বলেশগৃহিণী বাচমিতাত চ ধৃতাৰ্জ্ব

## অবহসিভ ॥

যে হাস্যে নাদা প্রফুল্ল ও লোচন কুঞ্চিত হয়, ভাহাকে অবহ্দিত বলে॥৮॥

শ্রীকৃষ্ণ প্রাতংকালে গৃহে উপস্থিত হইলে যশোদা অব-লোকন করিয়া কহিলেন, পুত্র! তোমার লোচনযুগলে ঘন ধাতুরাগ কি সংলগ্ন হইয়াছে? তুমি কি বলদেবের নীলাম্বর পরিধান করিয়াছ? অজেশরগৃহিণী যশোদার এই বাক্তঃ শ্রেবণ করিয়া অগ্রবর্তিনী দূতী প্রফুল্ল নাসিকা ও সঙ্কৃতিত নেত্রে উৎপন্ন অবহসিত আর সংগোপন করিতে পারিলেন না

> অপহিষ্ঠ ॥ { ১০৬ }

তচ্চাপহসিতং সাপ্রুলোচনং কম্পিতাংরকং॥
যথা॥
উদস্রং দেবর্ষিদি বিদরতরঙ্গুজ্ঞশিরা
যুদ্ভু গুলুদ্ভো দশনক্রচিভিঃ পাগুরয়তি।
স্ফু টং রেক্সাদীনাং নটয়িতরি দিব্যে রজ্ঞশিশো
জরত্যাঃ প্রস্তোভ্যন্নটতি তদন্যীদ্শমসো॥
অতিহ্যিতং॥
সহস্ততালং ক্ষিপ্রাঙ্গং তচ্চাতিহ্যিতং বিহুঃ ॥১॥
যথা॥

স্থল্ড মিতি চ পাঠান্তরং জেয়ং ॥ ৯ ॥

যে হাস্তে অশ্রুক্ত লোচন ও ক্ষম কম্পিত হয়, তাহার নাম অপহ্যিত॥

यथा ॥

যিনি স্পাষ্টরপে প্রক্ষাদি দেবগণকে নাচাইতেছেন, দেই ব্রন্ধশিশু শ্রীকৃষ্ণ জরতীর স্থোভে নৃত্য করিতেছেন, দেখিয়া স্থর্গে দেবর্ধি নারদ স্কন্ধকম্পিত করত যে সকল নেত্রে হাস্থ নিবন্ধন দম্ভজ্যোভিদ্বারা মেঘদকলকে শুভ্রবর্ণ করিয়াছিলেন, দেই নয়ন শ্রীকৃষ্ণের প্রতি নিক্ষেপ করিলেন॥

অতিহ্সিত ৷৷

হস্ততাল ও অঙ্গক্ষেপের সহিত হাস্তকে অতিহ্দিত বলে॥৯
বিধা॥

রদ্ধে বং বলিতাননাসি বলিভিঃ প্রেক্ষ্য স্বযোগ্যমিতস্থামুদ্ধোচু মসৌ বলীমুধবরো মাং সাধ্যস্থাৎস্কঃ।
আভির্বিপ্লুত ধীর নৈ নহি পরং ছন্তো বলিধবংসনাদিতুটেচ্চমূ বরাগিরা বিজহপ্লঃ সোতালিকা বালিকাঃ।
যক্ত হাসঃ সচেৎ কাপি সাক্ষান্তৈব নিবধাতে!
তথাপ্যেষ বিভাবাদিসামর্থ্যাতুপলভাতে ॥ ১০ ॥

বলি: কুঞ্চিতচর্ম। বলীমুখো বানর:। সাধ্যতি সাধনাম প্রের্ম**ীতি**-ছিলিচ্প্রতায়াং। বলিন স্থাবর্ত প্তনাদয়স্কোন ধ্বংসক্**র্ড: আভিবলি**-ভিবিল্ভা উপলুতা শীর্ষাঃ॥ > • ॥

শ্রীকৃষ্ণ জরতিকে কহিলেন, রুদ্ধে! তোমার মুখের চর্মা
সকল লোলিত হওয়ায় তুমি বলিতাননা অর্থাৎ বানরমুখী
হইয়াচ, এই কারণে এই বলীমুখবর অর্থাৎ বানরমাজ
তোমাকে যোগাপাত্রী দেখিয়া বিবাহনিমিত উৎস্ক হওত
আমাকে উপাদনা করিতেচে, এই কথা শুনিয়া রুদ্ধা কহিল
আমি এই সকল বলিদারা অধীর বৃদ্ধি হইয়া বলিধ্বংসি
অর্থাৎ তুর্গবির্ত পুত্রনাপ্রভৃতিকে বিধ্বংসন করিয়াছ যে তুমি
তোমা ভিন্ন অত্য কাহাকেও বরন করিব না, মুখরার এই
সকল কথা শুনিয়া বালিকা সকল করভালিকা প্রদানপ্রক্রিক
উচ্চরূপে হাস্ত করিতে লাগিলা।

যং কর্তৃক হাদ, সে যদি সাক্ষাং কোন স্থানে নিশ্চয় না হয়, তথাপি বিভাবাদির দামর্থ্যপ্রস্তুত তাহার উপলব্ধি হইয়া থাকে ॥ ১০ ॥ যথা॥
শিশ্বীলম্বি কুচাদি দত্রবধুস্পর্দ্ধি নাদাকৃতিআ্বং জীর্যদে লিদৃষ্টিরোষ্ঠতুলিতাঙ্গার। মৃদঙ্গোদরী।
কা মতঃ কুটিলে পরাস্তি জটিলাপুত্রি ক্ষিতো স্থলরীপুণ্যেন ব্রজস্বক্রবাং তব প্রতিং হর্ত্তুং ন বংশী ক্ষমা॥ >>
এম হাস্তরসম্ভত্র কৈশিকীর্ত্তিবিস্তৃত্বো।
শৃঙ্গারাদিরসোডেদো বহুদৈব প্রপঞ্চিতঃ॥ >২॥

ছিলিঃ কমঠী ॥ ১১ ॥ ভত্র ভরতাদিনিবদ্ধে স্বক্তনাটকলকণে চ ॥ ১২ ॥

### घशा ॥

হে জটিলাপুত্রি কুটলে! তোমার স্তনদ্বর শিষ্বার আয় শুক্ষ ও লখমান, নাসিকার শোভা ভেকবধুকেও তিরস্কার করিতেছে, দৃষ্টি জীর্ণকচ্ছপীরভায় মনোহর, ওঠ অসারের সহিত তুলনা ধারণ করিয়াছে এবং উদরও মৃদঙ্গের নাায় শোভমান দৃষ্ট হইতেছে, অতএব হে স্থন্দরি! ব্রজস্করী-দিগের মধ্যে তোমার ন্যায় আর কাহাকেও স্থন্দরী দেখা ঘায় না, অধিক কি বলিব পুণ্যবলে বংশীও তোমার ধৈর্ম্য ছরণ করিতে পারিতেছে না॥ ১১॥

ভরতাদি প্রণীত নিবন্ধে এবং স্বকৃত নাটকে শৃ**ঙ্গারাদি** লদের উদ্ভেদস্বরূপ এই হাস্থরদ বহুপ্রকারে বিস্তৃত হই-মাছে॥ >২॥ ॥ \* ॥ ইতি প্রীভক্তিরদায়তদিয়াবৃত্তরবিভাগে গৌণভক্তি
রদনিরপণে হাস্মভক্তিরদাহরী ॥ \* ॥ ১ ॥ \* ॥

অধাদুতভক্তিরদঃ ॥

আছোচিতৈবিভাবাদ্যৈ স্বাদ্যত্বং ভক্তচেতদি ।

দা বিসায় রতিনীতাদু গভক্তিরদো ভবেং ॥ ১ ॥

ভক্তঃ দর্শ্ববিধোপ্যত্র ঘটতে বিস্ময়াশ্রমঃ ।

লোকোভরক্রিয়াতেত্বি শ্রয়ন্তর কেশবঃ ।

তম্ম কেন্টা বিশেষাদ্যা স্তম্মির দ্বীপনা মভাঃ ।

\*\*\*\*

३ ৯ ১ ইচ্ তর বিভাগে নবলহণাাঝকে হালাভ কিরসলহরী প্রাণমা । ♦ ॥ ১ । • ॥
 ৬ ক ইতি সাক্ষ রাধাদৃত্যা পরিকরানাহ । বিশ্বয়াশ্রেরা বিশ্বর রভে
রাশ্র ইতার্থ: । বিষয়স্ত্রদা এব বিষয় ইভার্থ: । বিষয়্ণচদং কথ: জাতমিতি

। 🗱 । ইতি জীরামনারায়ণবিদ্যারত্বক্ত ব্যাখ্যায় ভক্তিরসা-মৃত্যিকুর পশ্চিমবিভাগে হাস্তভক্তিরস প্রথম লহনী ॥॥॥॥॥॥॥ অথ অদুভ ভক্তিরস ॥

আজোচিত বিভাবাদিৰারা বিসায়রতি হদি ভ**ক্তগণের**চিত্তে আসাদনীয়রূপে নীত হয়, ভবে ভা**থাকে অমূত ভক্তি**রস বলে॥ ১॥

সর্ব প্রকার ভক্তই বিশ্বর রতির আশ্রয় অর্থাৎ আলম্বন লোকাতীত কর্মপ্রযুক্ত শ্রীকৃষ্ণই ইহার বিষয় অর্থাৎ বিভাগ এবং শ্রীকৃষ্ণের চেফা বিশেষ সকলই ইহার উদ্দীপন, তথা ্ ক্রিয়াস্ত নেত্রবিস্তারস্তম্ভাশ্রুপুলকাদয়ঃ॥ ২ ॥ व्यादिश इर्ष काणामा खळ्ळाव (किन्नांत्रिनः। স্থায়ী সাাৰিসায়রতিঃ সা লোকোত্রকর্মতঃ। সাক্ষাদক্ষমভঞ্চেতি ভচ্চ দ্বিবিষ্মচ্যতে ॥ কেনে সাক্ষাৎ ॥ माकारिम्खिय्वर पृथेक्ष्य उम्की हिंठा पिकर ॥ ०॥ তত্র দফং যথা॥

Cर दम्खावनामग्री वृद्धिः। এ ठाणाः भरमात्रभागप्रमविष्ठावदः मनिष्ठः। विस्त ইন্তাক্ত বিভব ইতি পাঠে। লিখনভ্ৰমাং ॥ ২ ॥

লোকোত্তর কর্মত ইত্যাপলকণং তাদৃশরপগুণাভাঞ্চ। কিন্তু লোকোত্তর তথপ্রেম হেড্র জনতে ভদা সোহপি তদজ্জের:। তথা নেমং বিরিঞোন ভব इंडाह्मी हेबर महार उन्नव्यशामि नावर जिल्लाहन हेजाएन है। उन

নেত্র: বিস্তার, স্তম্ভ, অশ্রুত পুলকাদি দকল ইহার ব্রিয়া॥২ অপর আবেগ (ছরা) হর্ষ ও জাড্যপ্রভৃতি অদ্ভুত রুদে ব্যভিচারী।

্লোকাতীত কর্মপ্রযুক্ত বিস্ময় রতি স্থায়ী হয়, ইহা সাক্ষাৎ **ও অসমুমান ভেদে হুই** প্রকার হইরা থাকে॥

তন্মধ্যে সাক্ষাৎ বিসায়রতি যথা ॥

চক্ষুৰ্বিয়া দৰ্শন, কৰ্ণছাৱা আবণ ও মুখছাৱা কীৰ্ত্তন ইজ্যাদি ইন্দ্রিয় বিষয়কে সাক্ষাৎ বিস্ময়রতি বলা যায়॥ ৩॥ **७गा**र्था मुखे यथा ॥

ত্রকমেব বিবিধোদামভাজং
মন্দিরেষু যুগপদিখিলেয় ॥
দারকামভিসমীক্ষা মুকুন্দং
স্পান্দনোজ বিভেডকুমু নিরাসীৎ ॥ ৪ ॥
যথাবা ॥
কস্তভাগন্ধিবদমেন্দ্রসৌ শিশুস্তে
গোগর্জনঃ শিশরক্রব্দনঃ কচায়ং।
ভোঃ পশ্য স্ব্যুক্রকন্দ্বিভাচলেন্দ্রঃ
গেলমিব ক্যুর্তি হস্ত কিমিন্দ্রজালং ॥ ৫ ॥

এক মিতি এক বপ্রমেব সন্ধমিতার্থ:। যথোকং শীদশ্যে শ্রীনারদেন। চিত্রং বতৈতদেকেন বপুষা যুগপং পুণক্। গৃহেষু ছাইসাহল্রং দ্বিয় এক উদাবহদিতি। তত্মানু নির্ভ শীনারদং, অতএব কায়বৃদ্ধ সমর্থানানপি তর্ধিধানাং বিত্মর: ॥৪॥ ত্তনাগ্রমিত অহালাশাারাং সমাসাস্ত ইংপ্রতায়:। অচলেক্স:। পুর্বোক্ত এব গোবহন:। প্রাক্তহাং। কন্ত্রিতং তম্দ্রিং কুর্বনুদং বহুতীতি বা

দারকায় প্রতি মহিধীর মন্দিরে শ্রীক্ষকে এক বপুতেই বিবিধ উদ্যুখে ব্যাপৃত দেখিয়া মুনিবর নারণ স্পাক্ষন রঙ্তি জড়িমা দশা লাভ করিলেন ॥৪॥

## যথাবা 🛭

যশোদে ! দৃষ্টিপাত কর, কোথায় তোমার এই দুগ্ধমুপ বালক, কোথায় বা এই গোবর্দ্ধন পর্সতি, যাহার শৃঙ্গদারা মেঘদকক রোধ হইয়াছে, কি আশ্চর্যা ! এই গিরিরাঞ ইইার বামহত্তে ক্রীড়াককুকের নগায় প্রকাশ পাইতে লাগিল । ক্রান্তং যথা ॥

যান্যক্ষিপন্ প্রহরণানি ভটাঃ স দেবঃ
প্রত্যেকমচ্ছিনদম্নি শরত্রেরণ ।

ইত্যেকলয় যুধি কংসরিপোঃ প্রভাবং
ফারেক্ষণঃ ক্ষিতিপতিঃ পুলকী তদাসীৎ ॥৬ ॥

সংকীর্তিং যথা ॥

ডিস্তাঃ স্বর্ণনিভাম্বরা ঘনরুচো জাতাশ্চতুর্বাহবো
বৎসাশ্চেতি বদন কুতোাম্মি বিবশঃ স্কম্প্রীয়া পশ্যন্ত।

नार्जः ॥ द ॥

ভটা নরকনায়েহত্ত্রসাকাদশ অক্ষেহিণীসংখ্যা: কিতিপতি: শ্রীপরী-কিং॥ ৬॥

ডিস্কা ইতি সতাশোকসভারাং শ্রীব্রহ্মবাকাং। শুন্তশ্রিয়া পশুতেভ্যেব পাঠ

হায়! এ কি কোন ইন্দ্ৰজাল বটে ॥ ৫ ॥

শ্রুত যথা॥

নরকান্তরের একাদশ অক্ষেহিণী দৈন্যগণ যত অস্ত্র নিক্ষেপ করিয়াছিল, দেবোত্তম শ্রীকৃষ্ণ তিন শরে তৎসমুদার ছেদন করিয়া ফেলিলেন, রাজা পরীক্ষিৎ কংসরিপুর এই প্রভাব শ্রবণমাত্রেই নয়নম্বয় বিক্যারপূর্বক পুলকাকুল হইয়া-ছিলেন॥ ৬॥

# সংকীৰ্ত্তিত যথা॥

সত্যলোকে ব্রহ্মা কহিলেন, বালকসকল পীত্রসন পরি-খান, ঘনখ্যাম ও চতুর্বাহু মূর্ত্তি ধারণ করিয়াছে এবং বৎস আশ্চর্য্য: কথয়ানি ব: শৃণুত ভো: প্রত্যেকমেকৈকশঃ
ন্থান্তে জগদশুবন্তিরভিত স্তে হন্ত প্রাসনি: ॥
অনুমিত: যপা ॥
উন্মীল্য ব্রন্ধশিশবো দৃশং পুরস্তাদ্যান্তীরং পুনরত্লং বিলোকযন্ত: ।
সাত্মানং পশুপটলীক তত্র দাবাতুন্মুক্তাং মননি চমংক্রিয়ামবাপু: ॥ ৭ ॥
অপ্রিয়াদে: ক্রিয়া কুর্যায়ালোকিক্যপি বিশ্বরং ।

ভেষামিটঃ ভূষত ইতি বর্ত্তমান সামীপো বর্ত্তমানকছেতি মাধ্যেনাবিশ্বল্টখং হচরতি ॥৮॥

🕮 রুফে এবাড়ুডো রস: সমুভূত: সাদিতি কথরন্ সর্কমণি রস: বিভার-

সকলও আবার তজ্ঞপ অবস্থা লাভ করিল দেখ, এই কথা বলিতে বলিতে আমি শুদ্ধ সম্পতিদ্বারা বিকশ হইয়া পড়ি-লাম। অপর আশ্চর্যা শুন, ঐ সকল বালক ও বংস প্রভ্যে-ককে জগদগুনাথ প্রাসন বিধাত্গণ গ্রুড়দিকে শুব করিতে লাগিলেন॥

# অথ অসুমিত।

ব্ৰজশিশু সকল চক্ষু উদ্মীলনপূৰ্কক পুনরায় অত্যে ভাণ্ডীর-বন অবলোকন করিয়া তাহাতে আগনাদের সহিত প্রাদি পশু সমুদায়কে দাবামি ছইতে প্রিমৃক্ত হইয়াছে দেখিয়া মনোমধ্যে অতিশয় চমৎকৃতি লাভ করিলেন॥ ৭॥

অপ্রিয়াদির কার্য্য অলোকিক ইইলেও ভাহা বিশ্ময়ঞ্জনক

শাধারণাপি মনাক্ করোত্যেব প্রিয়ন্য দা।

'প্রিয়াৎ প্রিয়ন্য কিমৃত সর্বালোকোতরোতরা।

ইত্যত্র বিস্ময়ে প্রোক্তা রত্যসূত্রহমাধুরী॥৮॥
॥ \*॥ ইতি শ্রীভক্তিরদায়্তদিন্ধাবুতরবিভাগে গৌণভক্তিরদনিরূপণেহছুতভক্তিরদলহরী বিতীয়া ॥ \*॥ ২॥ \*॥

শেধ বীরভক্তিরদঃ॥

দৈবোৎসাহ রতিঃ স্থায়ী বিভাবাদ্যিনি জোচিতেঃ।

রতাবেৰ প্রতিষ্ঠাপয়তি অপ্রিয়াদে রিতি রয়েন। তছকেং সারশ্চমংকার: স্ক্রোপীয়াতে বুধৈ:। তত্মাদত্তমেবাহ ক্রতী নারায়ণোরস্মিতি মনাগ্পাসাধ্যকীতি যোলাং ॥৮॥

ছয় না, প্রিরব্যক্তির অদাধারণ ক্রিয়াও ঈষৎ বিস্ময় উৎপাদন করিয়া থাকে এবং প্রিয় হইতে অপ্রিয় ব্যক্তির দর্বলোকো-ভরা ক্রিয়া যে বিস্ময়জনিকা হইবে না তাহা আর কি বলিব অতএব এই বিস্ময়ে রতির অনুগ্রহ মাধুরী কথিত হইল॥৮॥

॥ \* ॥ ইতি শ্রীরামনারায়ণবিদ্যারত্বকৃতব্যাখ্যায় ভক্তিয়দায়তিদক্ষর উত্তর বিভাগে অন্তুত ভক্তিরদাদহনী দিতীয়।
॥ \* । ২ ॥ \* ॥

অধ বীরভক্তিরস।। আছোচিত বিভাবাদিদায়া উৎসাহ রক্তি স্থায়ীভাবরূপে শানীয়মানা স্বান্যন্তং বীরভক্তিরলো ভবেং।

যুদ্ধ দান দয়া ধর্মৈশ্চতুর্দ্ধ। বীর উচ্যতে।

শালস্বন ইহু প্রোক্ত এষ এব চতুবিধঃ॥ > ॥

উৎসাহস্বেষ ভক্তানাং সর্কেষাদেব সম্ভবেং॥

তত্র যুদ্ধবীরঃ॥

পরিভোষায় কৃষ্ণন্য দধতুংশাহমাহবে।

সাথাবন্ধু বিশেষো বা যুদ্ধবার ইংহাচ্যতে।

প্রতিযোদ্ধা মুকুন্দো বা তত্মিন্ বা প্রেক্ষকে স্থিতে।

তদীয়েচ্ছাবশেনাত্র ভবেদন্যঃ স্থহনরঃ॥ ২॥

তত্র কুষ্ণে। যথা॥

এই উৎসাহ সমূদায় ভক্তেই সম্ভব হইয়া থাকে ॥ তন্মধ্যে মুদ্ধনীর যথা॥

শ্রীকৃষ্ণের পরিভোষনিমিত্ত উৎদাহধারী দথা বা বন্ধু বংশবকে এ হুলে যুদ্ধবীর বলা যায়। মুকুন্দ প্রতিযোদ্ধা ধেবা তিনি দর্শকরূপে অবস্থিত থাকিলে তাঁহার ইচ্ছামু-

জন্য একজন হৃহত্তম প্রতিযোদ্ধা হয়েন ॥ ভন্মধ্যে কৃষ্ণ প্রতিযোদ্ধা যথা॥ অপরাজিত্যানিনং হঠাচ্চটুলং ত্বামভিভূয় সাধব। ধিনুয়ামধুনা স্থহালগণং যদি ন ত্বং সমরাৎ পরাঞ্চি॥ ০॥ মথাবা॥

সংরম্ভ প্রকটীকৃতপ্রতিভটারম্ভগ্রিয়োঃ দায়ুতং কালিন্দীপুলিনে বয়স্য নিকরৈরালোক্যমানস্তদা।

যদি নৰ্মিতি যদি সমরং তাক্তং ছলেন সমরাৎ পরাবাুথো ন ভবসীতার্থঃ। সুযদি স্বং সমরং সমঞ্সীতি বা পাঠঃ॥ ৩॥

সংরক্তেশ কোণেনৈর প্রকটাক্কতা প্রতিভটস্য প্রতিযোদ্ধারম্ভ শ্রীষ্টাং বস্কতত্ব্যুখাপিত স্থায়ে রবিরোধিত মৈত্রয়ারিল। শ্রীদায়শ্চ বকীছিবাছ-রোরিভার্য:। এতদর্থবশাদের বিশেষণানাং দ্বিহং। এতত্কুং ভরতি। থলু চ্তু-র্কিষ:। সমুক্তরাষাচরেত্রেতরযোগসমাহারভেদেন। তত্র সমুক্তায়ার্থশিকশক্তরে-দর্থানাং পৃথক্ পৃথকতা বাল্লক:। যথা শ্রীদামাচ বকীদ্বিট্ হাগ্ড ইভাক্ত আগ-জ্যা পৃথক্ পৃথক্ সম্বন্ধ:। অধাচয়ার্থশি তথা। যথা বকীদ্বিষ মানম্ম যদি পশাসি শ্রীদামানঞ্চ। কিন্তুত্র নির্দিষ্টেনাভাগ্রহং বাল্লয়তি। যথা শ্রীকৃষ্ণত লোকশ্চ দৃশাতামিতি। তথাং সমর্থারের সমর্থারোভাবাদনয়ার হন্দ্সমাস: ক্রিয়রতে। কিন্তু তত্রবৈগ্রেরব। তক্ত সমাহারে সমর্থন্থে সভাপি মলিনমাত্র বাজির্থন ভ্রত্তামবাহিছাং প্রতিবিশেষণাহ্রিছেং স্যাদের। যথা। পদক্রমক

হে মাধব! তুমি অতি চঞ্চল আপনাকে অপরাজিত করিয়া মানিয়া থাক, যদি সমর ছইতে পলায়ন না কর, ভাহা ছইলে তোমাকে পরাজিত করিয়া হৃহদ্যাণকে পরিতুষ্ট করিব॥ ৩॥

### যথাবা ॥

শ্রীদাম ও পৃতনাশক্র শ্রীকৃষ্ণ ইহাঁদের পরস্পর অবিরোধি নৈত্রতা থাকিলেও ইহাঁরা কোপাবেশ বশতঃ প্রতিযোদ্ধার অব্যথাপিত স্থায়োরপি বরাহক্ষার বিস্ফৃ জিত: শ্রীদাল্ল স্চ বকী দ্বি স্চ সমরাটোপ: পটীয়ান স্থুৎ ॥ ৪ ॥
গুলন্বরো যথা ॥
স্থি প্রক্রমার্থনানগণিতান্ ক্রিপন্ সর্বতিস্থাদ্য লগুড্থ ক্রমান্ত ময়তিসা দামাকৃতী।

বাবহিত্যি জাদি। তছতি বৃত্তি স্ব্রেশ্বাশ্চাবাদেব। অপেত্রেতর বেগগাশ্চর্যশব্দ স্তত্ত্বেত্যক সংখ্যাসমূল্যেন যাবতী তেখাং সংখ্যা স্যান্তাবং সংখ্যাবিভ্যা যুক্তরা ব্যপ্তক:। বুজন্ত দল্পে শ্রীলামন কীছিয়াবাগালানি দান শ্রীলামাচ বকী বিট্ চেতি বাবাগালাবিভার্য:। সমুক্তরালস্যান্তমেব ভেল:। যদিচ সমাসে তথার্য: স্যান্তলা তছিপ্রছেছিল স্যাহ। যমাবলবৈথাৰ সমাসানামপ্য: প্রবর্ততে। ধন্দসমাস্সা চ বৈক্তিকেছাং। কেবল বিপ্রছেছিল বাযুক্তাতে। তত্তক শ্রীলামাচ বকী বিট্ চাগ্রভাবি লালি স্থাহ। যথা সচক্ষণাহঞ্চ প্রাম ইত্যন্ত বিপ্রতিবেধে পরং কর্মানিতি পালিকৈ স্থাপ্রতানে পরংপুক্ষাণামিতি স্ক্রিম্পান্ত নারেনো ভ্রমপুক্ষেছিল প্রাপ্রে ব্যাপ্রতান প্রাপ্রবাশ্যিতি সাধু ব্যখ্যাতং। শ্রীলামন বকী বিহালি বিভাবি । ম ॥

मार्गना व्यव ज्नलूर्ने जिल्लक वानाः॥ । ॥

যুদ্ধারম্ভ শ্রী প্রকটন করিয়াছিলেন, সধাগণ কালিক্রাক্রত অদ্ভুতরূপে দর্শন করিতে লাগিলে ইহাঁদের অহস্কারাম্বিত সমরাটোপ অতিশয় পড় হইয়াছিল। ৪॥

कुरुषत गुभा ॥

স্থাসকল চতুদ্দিক্ হইতে তুলপুরিত চর্মাফলকবিশিষ্ট বাণ সকল নিক্ষেপ করার,কর্মাকুশল জ্রীদাম সেই প্রকার আঞ্চ শমংস্ত রচিত স্তৃতিত্র ক্লপতেন্ত কুকোপ্যমুং
সমৃদ্ধ পুলকো যথা লগুরপঞ্জরান্তঃ স্থিতং ॥
প্রায়ঃ প্রকৃতিশূরাণাং স্বপক্ষৈরপি কহি চিৎ।
যুদ্ধকেলিসমুৎসাহো জায়তে পরমান্ত ॥
যথাচ হরিবংশে ॥
তথা গাণ্ডীবধন্বানং বিক্রীজন্মধুসূদনঃ।
জিগায় ভরতজ্ঞেষ্ঠং কুন্ত্যাঃ প্রমুখতো বিভু:। ইতি ॥
ক্থিতাক্যোটবিস্পদ্ধাবিক্রমান্ত্রাহাদয়ঃ।
প্রতিযোধস্থিতাঃ সন্তো ভবন্ত দ্বীপনা ইহ ॥ ৫॥

লগুড় ভ্রমণদ্বারা তৎসমুদায়কে দূরীভূত করিতে লাগিলেন, যদ্দর্শনে ব্রেজপতিনন্দন শ্রীকৃষ্ণ পুলকাকুল কলেবরে প্রশংসা করত ঐ শ্রীদামকে লগুড় পঞ্জরের অন্তর্গত করিয়া মানিয়া-ছিলেন॥

প্রায় স্বভাবদিদ্ধ শূরব্যক্তিদিগের কোন স্থানে স্বপক্ষের সহিত্ত পরমান্ত্র যুদ্ধক্রীড়া বিষয়ক উৎদাহ উৎপন্ন হইয়া থাকে ॥

# যথা হরিবংশে॥

মধুসূদন জীড়া করিতে করিতে কুন্তীর সমক্ষে গাণ্ডীরধন্বা অৰ্জ্জনকে পরাজয় করিয়াছিলেন॥

এই নীররদে আত্মাঘা, আফালন, স্পর্দ্ধা, বিক্রম, অস্ত্র গ্রহণ এবং প্রতিযোদ্ধারণে অবস্থিতি ইত্যাদি সকলকে উদ্দী-পন বলৈ । ৫ ॥ ভত্ত কথিতং যথা।।
পিণ্ডীশূরস্থামিহ স্থালং কৈতবেনাবলাকং
ভিত্তা দামোদর যুধি রুখা মাকৃথাঃ কথিতানি।
মাদ্যমের স্থালয় ভূজা দর্শদর্শাপহারী
মন্ত্রবানো নট ত নিকটে ভোককৃষ্ণঃ কলাপী। ৬॥
কথিতাদ্যাঃ স্বাংশ্বাংশ্চদমূভাবাঃ প্রাকীর্তিতাঃ।
ভথৈবাহোপুরুষিকা ক্ষেড্রা সেরাদপলায়নং।
স্বাহায়েহপি যুদ্ধেচ্ছা সমরাদপলায়নং।

পি ঞীশুরে। ভোজনমার পটুঃ। অবশাসম্পি কৈতবেন **জিংখতার্থঃ।** কলাপী ভূগবান্ সভূবণো বা পকে ময়বঃ॥ ৬॥

আংগাপুক্ষিক। দৃশীদ্যা সাং স্ভাবনাত্মনি। কে ভিডং সিং**হনাদঃ।** আকোশঃ সাটোপ্ৰচনং বল্লনং যুদ্ধার্থো গতিবিশেষঃ। যুদ্ধে**ছা যুদ্ধোল্যমঃ।** 

## ভশাধো কথিত যথা॥

হে দামোদর ! তুমি কেবল ভোজনমাত্র পটু, ছলপুর্বক তুর্দল ত্বলকে যুদ্ধে পরাজয় করিয়া আর আজ্লাভা করিও না, ভোমার অলযু হস্তরূপ দর্প দর্শহারী গঞ্জীররাধী-ভোক্দ কুফামযুর মত হইয়া নিকটে নৃত্য করিতেছে ॥ ৬॥

আল্লালাপ্রভৃতি যদি স্বনিষ্ঠ হয়, তাহা হইলে প্রিতগ্রতাহাকে অনুভাব বলেন। তথা আহোপুরুষকা অর্থাৎ দর্পহেতুক আপনাতে যে সন্তাবনা, সিংহনাদ, আজোশ, যুদ্ধার্থ
গতি বিশেষ, সহায় ব্যতিরেকে যুদ্ধোদ্যম, যুদ্ধ হইতে অপলাদ্য
যন ও ভাত ব্যক্তিকে অভয় প্রধান ইভ্যাদি সকলাকেও অনুদ

ভীতাভয়প্রদানাদ্যা বিজ্ঞেয়াশ্চাপরা বুধৈঃ॥
তত্ত্র কথিতং যথা॥
প্রোংসাহয়দ্যতি তরাং কিমিনাগ্রহেণ
নাং কেশিস্দন বিদম্পি ভদ্রদেনং।
বোদ্ধ্যু বলেন সমমত্র স্তুর্কলেন
দিব্যার্গলা প্রতিভটন্ত্রপতে ভুজো মে॥
স্থাটোপে গোপেশ্বর জল্পিচন্দ্রে পরিকরং
নিবশুভুল্লাসান্ত্র সমরচর্য্যা সমৃচিতং।
সরোমাঞ্চং ক্ষেড্রা নিবিভূমুথবিষ্বস্য নটতঃ
স্থলাল্লঃ সোহকণ্ঠং জয়তি মুহুরাহোপুরুষকা।।

সরোমাঞ্চ সোৎকর্মক কথা সারেখা নটক ইতি বোজাং ॥ ৭ ॥

ভাব বলিয়া জানিতে হইবে ॥

তশ্বধ্যে কথিত যথা॥

হে মধুসূদন! আমাকে জানিয়াও কেন অতি শীঘ্ৰ সূত্ৰ বিল বলদেবের সহিত বুদ্ধ করিতে ভদ্রসেনকে উৎসাহিত করিতেছ, ইহাতে আমার যে উৎকৃষ্ট অগ্লসদৃশ প্রতিযোদ্ধা রূপ ভুজ লজ্জিত হইভেছে॥

আহোপুরুষিকা অর্থাৎ দর্পহেতু আত্মসম্ভাবনা যথা।
হৈ গোপেশ্বর! উল্লাস বশতঃ জলধিচন্দ্র সগর্বেব বাত্যুদ্ধে
সমুচিত কটিবন্ধন করিলে রোমাঞ্চ ও উৎক্ঠার সহিত নৃত্যকারি ঘন ঘন সিংহনাদায়িত মুখ্বিদ্ব শ্রীদামের আহপুরুষিকা

চতুই যেহপি বীরাণাং নিশিলা এব সান্ধিকা:।
গর্কাবেগ প্লতি ব্রীড়া মতি হ্রাবহিত্যকা:।
অমর্বোহস্কতাসূত্য স্মৃত্যালাে ব্যভিচারিণঃ।
যুদ্ধোহসাহরতিস্থান্দ্রিভাবস্থাাদিতা।
যা স্বশক্তি গহায়ালৈরাহার্যা সহক্ষাপি বা ॥ ৭ ॥
জিগীলা স্বেয়লী যুদ্ধোহলাহ ঈর্বাভে ॥
তত্র স্বশক্তা আহার্যোহসাহরতির্যথা ॥ ৮ ॥
স্বতাতশিক্তা ক্যুট্মপ্যনিচ্ছ-

যদত জিগীবে শাদিভিগুজিংসাহাদিয়ে লক্ষতে ভচ্চ সভ্রা মানসাশক্তি-জংসাহ ইতি গুর্কোক্রসামানালক্ষণভূগত্যেব। জ্ঞাপি গাচেচ্ছামাত্রসা বিব-ফিড্ডাংল্ডা

খনা তাচনা শিটা। চল্ভ দক্ষীবনেন স্থানে বিক্রামিতি শাসনেন

অর্থাৎ অহমার জয়যুক্ত হউক ॥

যুদ্ধ, দান, দয়া ও দর্ম এই চারি প্রকার বীরে সমুদায় দাব্রিক। তথা গর্কা, আবেগ, ধ্রুতি, লজ্জা মতি, হর্ম, আর্থ-হিপা, অমর্থ, উৎস্তুক্তা, অস্থা এবং শ্বাতিপ্রভৃতি ব্যভিচারী দকল প্রকাশ পাধ॥

এই বীররসে যুদ্ধোৎসাহ রতিই স্বায়ীভাব, বাহা স্বশক্তি ও সহায়াদিখারা আহার্যা এবং সহজা হইয়া থাকে॥ ৭॥

যুদ্ধবিষয়ে স্থিরতর যে জিনীয়া ভাহাকে যুদ্ধোৎসাহ বলে ॥ ৮ ॥

ভন্মধ্যে সশক্তিৰারা আহার্য্য উৎসাহ রভি যথা॥ ( ১০৮ ) রাহুয়নানঃ পুরুষোত্তনেন।

স স্তোকরুষো পুত্রমুদ্ধত্যঞঃ
প্রোদ্যম্য দণ্ডং ভ্রময়াঞ্চকার॥ ৯ ॥
স্থাক্ত্যা সহজোৎসাহরতির্যধা।
শুগুকারং প্রেক্যু মে বাহুদণ্ডং
মা দ্বং ভৈষীঃ কুদ্রে রে ভ্রদ্রেন।
ক্রোরস্ভোগান্য নির্জিত্য রামং
শ্রীদামাহং কুফামেবাহ্বয়েয় ৯ ১০ ॥
মথাবা॥

ক্টমনিজ্রিতার্থ: পাঠান্তরং তাক্তং॥ ৯॥
আহ্বেষেতি স্পর্কায়ামাথনে পদং॥ ১০॥

সর্ব জীবন শ্রীকৃষ্ণের সহিত যুদ্ধ করিতেছিদ্ ধিকৃতোকে এই বলিয়া পিতা শাসন করিলে স্তোককৃষ্ণ যুদ্ধে পরাদ্ধ্যুথ হইয়াছিলেন কিন্ত শ্রীকৃষ্ণকর্তৃক আহুত হইয়াঐ স্তোকে-কৃষ্ণ পুনরায় যুদ্ধোৎসাহ ধারণ করত দণ্ড উস্তোলনপূর্বক যুরাইতে লাগিলেন॥ ১॥

স্বশক্তিদারা সহজোৎসাহ রতিমধা॥

হে কুদ্র ভদ্রেন। আমি শ্রীদাম, আমার ভুজদণ্ড দেখিয়া ভুমি ভীত হইও না, আজ হেলায় বলরামকে জয় করিয়া পরে শ্রীকৃষ্ণকে আহ্বান করিব॥ ১০॥ বলস্য বলিনো বলাং স্ক্লনীক্মালোড্রন্
পরোধিমিব মলমঃ কৃত্যুক্লপক্সগ্রহঃ।
জনং বিকটগর্জিতৈব্বিরয়ন্ স ধীরস্বরো
ছরেঃ প্রমন্দককঃ সমিতি ভদ্রসেনো ব্যধাং ।
সহায়েনানার্য্যাৎসাহরতিইথ। ॥
ময়ি বল্লতি ভীমবিক্রমে ভল্লভঙ্গং নহি সঙ্গরাদিতঃ।
ইতি মিত্রগির। বর্লথপঃ স বিরূপং ক্লবন্ হরিং যথো ॥১১
সহায়েন সহজোৎসাহ ব্তিইথা ॥

একক একাকী। একাদাকিন্ চাসহায়ে ইতি পাণিনিছুৱাং। একাকীৰেক একক ইভামন্ব: একল ইতি লেখক প্ৰমাদাং॥ ১১॥

বলবান্ বলদেবের বল হইতে ধীরস্বর ভদ্রদেন কৃষ্ণপক্ষ
অবলম্বনপূর্বক সন্দরপর্বতে যেমন সমুদ্রকে বিলোড়ন করিয়াছিল, তাহার ন্যায় হহেদলগতে বিলোড়ন করত বিকট গর্জনছারা জন সকলকে বধির করিয়া একাকী যুদ্ধে শ্রীকৃষ্ণের
প্রমোদ বিধান করিয়াছিলেন।

সহায়ৰারা আহার্য্য উৎসাহ রতি যথা

অহে আমি ভয়ানক পরাক্রমে যুদ্ধক্ষেত্রে লক্ষ প্রদার করিতেছি, তুমি যুদ্ধ হইতে ভঙ্গ দিও না, এইরূপ মিত্রৰাক্য শ্রেবণ করিয়া বর্রথপ বিরূপ শব্দ করিতে করিতে হরির নিক্ট গমন করিলেন ॥ ১১ ॥

महास्वात। महस्वादमाह त्रि घषा॥

সংগ্রামকামুকভুজঃ সময়ের কামং
দামোদরস্য বিজয়ায় কৃতী স্থদাযা।
সাহায্যমেত্র স্থবলঃ কুকতে বলী চে
ভ্জাতোমণিঃ স্থজটিতো বরহাটকেন।
স্থলেব প্রতিভটো বীরে কৃষ্ণস্য ন ছরিঃ।
স ভক্তকোভকারিছাজোজৈছোলম্বনো রসে।
রাগাভাবো দৃগাদীনাং রৌজাদস্য বিভেদকঃ ॥
অথ দানবীরঃ॥
দ্বিধো দানবীরঃ স্যাদেকস্তত্র বহুপ্রদঃ।

সুজটিত ইতি জাট ঝট সংঘাত ইতাসা ক্তান্ত প্ৰতান্ন রূপেং। **জাটিলিত ইতি** পাঠস্ক নেই: জটিলোহি পিছাদিবাদিলশ্চ জটাবানেবাভিধীয়তে॥ ১২॥

দামোদরের বিজয় নিশিত্ত সংগ্রাম কামুক ভুজশালী স্থানক স্থাম স্বয়ংই চেন্ট। করিতেছেন, ইহাতে যদি আবার বলবান্ স্থান সাহায্য করেন, তাহা হইলে যেমন উৎকৃষ্ট স্থানিয়া নিশিষ্টিত হয়, তাহার নায়ে শোভা পার॥

বীররণে এরিক্ষের স্ফ্রন্ট প্রতিযোদ্ধা হ**ইয়া থাকে,** শক্ত কথন প্রতিযোদ্ধা হইতে পারে না, যে হেতু ভক্তাক্ষাভ-কারিত্বপ্রযুক্ত শক্তর বীররদেই আলম্বন্ত হয়॥

ে রৌজরদ এবং বীররদ এতত্বতায়ে এই মাত্র প্রভেদ যে রৌজেরদে চক্ষ্ রক্তবর্ণ হয়, বীররদে তদ্রপ হয় না ধ

অথ দানবীর॥

দানবীর হুই প্রকার হয়, তন্মধ্যে এক বছপ্রদ, দ্বিতীয়

# উভর। ৩র লহরী। ভক্তিরদামৃতণিক্ষু:।

উপস্থিভদুরাপার্যভাগী চাপর উচাতে ॥
তত্ত্র বহুপ্রদঃ ॥
সহসা দীয়তে যেন সর্পর্যপুতে ।
দামোদরস্য সৌধ্যার প্রোচ্যতে স বহুপ্রদঃ ॥
সম্প্রদানস্য বীক্ষাদ্যা অস্মিলুদ্যাপনা মঙাঃ ।
বাঞ্ছিতাধিকদাতৃত্বং স্মিভপূর্ব্বাভিভাযনং ।
বৈত্রত্বোহুল্বাদায় বিজ্ঞো ব্যভিচারিশঃ ।
দানোৎসাহ রতি স্তত্ত্ব স্থায়িভাবতয়াদিতাঃ ।
প্রগাঢ়া স্থেয়ণী দিৎসা দানোৎসাহ ইতীর্যতে ।
বিদ্যাবহুপ্রদোণ্যেয় বিমন্তিরিছ কথ্যতে ।

উপস্থিত তুর্লুভ অর্থ পরিভ্যাগী।

**७ मार्सा वङ्**था गर्भा ॥

যে ব্যক্তি কৃষ্ণসন্তোষার্থ হঠাৎ সর্কান্থ পর্যান্তও দান ক্রিতে পারেন, তাঁহাকে বহুপ্রদাবলে॥

ইহাতে সম্প্রণানের প্রতি নিরীক্ষণাদি উদ্দীপন। আর'
বাঞ্চিত্র ইতি অধিক দাড়ত, হাস্যপূর্ণক সম্ভাষণ, দৈর্ঘ্য,
দাক্ষিণ্য ও ধৈর্যপ্রস্তৃতি অনুস্থাব, তথা বিভর্ক, উৎস্ক্র এবং
হর্ষাদি সকল ব্যক্তিনারী হয়। অপর এন্থলে দানোৎসাহ রভিই
স্থায়ীভাব বলিয়া কথিত। আর প্রশাদ্রপে স্থিরভর যে
দানেছা ভাহাকে দানোৎসাহ বলে॥

পণ্ডিতগণ বলিয়াছেন, বহুপ্রদণ্ড তুই প্রকার হয়, ভশাধ্যে

স্মাদাভূদেয়িকস্ত্রেকঃ পরস্তংসম্প্রদানকঃ॥
তত্রাভূদেয়িকঃ॥
ক্ষম্যাভূদেয়ার্থং তু যেন সর্বস্বমর্প্যতে।
ক্ষিল্যা ব্রাহ্মণাদিভ্যঃ স আভূদেয়িকো ভবেং॥ ১২॥
যথা॥
ব্রহ্মপতিরিহসুনোর্জাতকার্থং তথাসে
ব্যতরদমলচেতাঃ সঞ্চয়ং নৈচিকীনাং।
পৃথুবপি নৃগকীর্ত্তিঃ দাম্প্রভং সংব্রতাসীন
দিতি নিজগত্তক্ষৈতভূতির। যেন ত্থাঃ॥

ন্গকীর্ব্যে: সাবৃত্তে হেডুঃ অমলচেতাঃ প্রক্রপ শ্রীক্ষসোদ্যমাত্র তৎ-প্রভ্যান ভ্রুলোক্ষ্যভ্লাভ প্রতিষ্ঠা কামনা দোব্যুক্ত ইত্যুর্থঃ॥ ১৩॥

এক আভ্যুদয়িক, দ্বিতীয় সম্প্রদানক॥
তন্মধ্যে আভ্যুদয়িক যথা॥

যে ব্যক্তি শ্রীকৃষ্ণের কল্যাণার্থ ভিক্ষুক ভাক্ষণাদিকে সর্বস্থ পর্যুস্তঃভ দান করেন, ভাঁহাকে আভ্যুদ্য়িক বলা যায় ॥ ১২॥ মুখা ॥

ব্ৰজরাজ নশ্দ প্রীক্ষণ জন্ম গ্রহণ করিলে পর, বিশুঁজ চিত্ত হইয়া অর্থাৎ কেবল তদীয় কল্যাণ মাত্র কামনা করিয়া জাত-কার্থ উত্তম উত্তম ধেমুসকল দান করিয়াছিলেন, সেই দান এমন কি যদ্বারা ব্রাহ্মণগণ পরিতৃপ্ত হইয়া বলিয়াছিলেন, সম্প্রতি নন্দরাজের এই দানদ্বারা নৃগরাজের বিস্তৃত কীর্তি বিশুপ্ত হইল । জ্ঞথ তৎসম্প্রদানকঃ॥
জ্ঞাতার হরয়ে স্বীয়মহন্তা মমতাস্পদং।
সর্বস্থং দীয়তে যেন স স্যাতৎসম্প্রদানকঃ।
তদানং প্রীতিপূজাভাগং ভবেদিতুদিতং দিধা॥
তত্ত প্রীতিদানং॥
প্রীতিদানং তু তব্যৈ সদ্দ্যাদ্দ্যাদিরূপিণে॥ ১০ ॥
যথা॥
চার্চিক্যং বৈজয়ন্তীং পটমুরুপুরটোন্তান্থরং ভূষণানাং
শ্রেণিং মাণিক্যভাজং গজরথভুরগান্ কর্ব্রান্ কর্বুরেণ।

## অথ তৎসম্প্রদানক॥

যে ব্যক্তি হরিমাহাত্তা অবগত হইয়া হরিকে অহস্তা মমতাম্পদ অর্থাৎ আমি আমার ইত্যাদির আধারস্বরূপ সর্বস্থ প্রদান করেন, তাঁহাকেই তাহার সম্প্রদানক বলা যায়॥

সেই দান প্রীতি ও পূজা ভেদে তুই প্রকার হয়। বন্ধুরপি হরিকে যাহা দান করা যায়, তাহার নাম প্রীভিদান॥ ১০॥ যথা॥

মহারাজ যুধিন্তির রাজসূয় যজ্ঞসভায় ঐকুফকে চন্দন বিলেপন, বৈজয়ন্তা অর্থাৎ পঞ্চবর্ণ পুস্পনির্মিত জ্ঞানু পর্যান্ত লম্বিত নালা, স্বর্থচিত উৎকৃষ্ট বস্ত্র, মাণিক্যশালী ভূষণজ্ঞেণী, তথা কনকালয়ত গল্প, রখ, ভূরগ ইত্যাদি সকল প্রদান করিয়া রাজ্য, কুটুম্ব ও আত্মপর্যান্ত দান করিছে ইচ্ছা করিয়া যখন তম্বির জন্য কিছু জার দেয়বস্তু কোথাও দেখিতে পাইলেন

দত্ব। রাজ্যং কুট্নং সমপি ভগবতে দিংস্করপান্যস্থ চৈচদেশং কুত্রাপি দৃষ্ট্রা মধ্যদিনি তদা ব্যাকুলঃ পাওবোহভূৎ ॥
পূজাদানং তু তেশ্যে যদিপ্ররূপায় দীয়তে ॥
যথান্টমে ॥
যজন্তি যজ্ঞং ক্রেত্ভির্যমাদৃতা
ভবস্ত আল্লায়বিধানকোবিদাঃ ।
স এব বিষ্ণুর্বরদোহস্ত বা পরো
দাস্যাম্যুর্বৈয় ক্ষিতিমীপ্রকাং মুনে ॥ ১৪ ॥

কর্রেণ অবর্ণেন মিশ্রান্মথসসদি তদেতাগ্রাপ্কাবসর ইতি ন বাাথেরং। কিন্তু সর্কাবিধি পূর্ত্তানস্তর ইত্যেব পূর্বস্যা পূজান্তর্গতহাং। উত্তর্জ বিপ্রক্রপা-ক্লেত্যুপ্লক্ষণং বিপ্রদেব ভগবজ্ঞপায়েত্স্য বিবক্ষিতহাং। ১৪॥

না, তথন ঐ রাজা অভিশয় ব্যাকুল হইয়া পড়িলেন॥ পূজাদান॥

বিপ্রক্রপি ভগবান্কে যাহা কিছু দেওয়া যায়, তাহাকে পূজাদান বলে॥

অন্তসক্ষে ২০ অধ্যায়ে ১০ স্লোকে॥

বলিরাজ শুক্রাচার্যাকে কহিলেন, হে মুনে! আপনারা বেদ-বিদ্যার দক্ষ, আপনারা আদরপূর্বক যাগ যজ্জদারা বাঁহার অর্চনা করিয়া থাকেন, এই বচু সেই বরদ বিফুই হউন অথবা আমার শত্রুই হউন, ইহার প্রাথিত ভূমি দান করিব॥ ১৪॥ যথাবা দশরপকে ॥
লক্ষীপয়োধরোৎসঙ্গ কৃদুমারুণিতো হরেঃ।
বলিনৈব স যেনাস্য ভিক্ষাপাত্রী কৃতঃ করঃ॥ ১৫॥
অথোপস্থিত তুরাপার্থত্যাগী॥
উপস্থিত তুরাপার্থত্যাগ্রসে যেন নেষ্যতে।
হরিণা দীয়মানোহপি সাইট্যাদিস্তয্যতা বরঃ॥ ১৬॥
পূর্বতোহত্র বিপর্যন্তকারকত্বং ঘ্যোর্ডবেং।

বেন বলিনেতাসা পুরকন্তচ্চদন্ত তৎপ্রকরণ এব লভাঃ ॥ ১৫॥

উপস্থিতেতি যদাপি সিদ্ধসাধকভেদেন দ্বিবিধোহয়ং সম্ভবতি তথাপি বং কিঞ্চিজাত কচিদ্ ঢ়াগ্রহ: সাধক এবাত্ত লকাতে নতু সম্যগ্ ভগবন্মাধুর্যামুন্ ভবিদ্ধ:। নহম্ভাবাদে লকে গুড়াদিভাগী তথা প্রশসাতে। তসা তিসাপি ভক্তোবাগ্রহ দৃষ্টা ভুষ্ট: শ্রহিরি: তদাগ্রহব্যক্তার্থং কদাছিতং দাতুমিব প্রোংস্কৃতি। বর ইভানে বিভিন্ন নাহশীভার্য: ॥১৬॥

বিপর্যান্তকারকত্বং হরেরপাদানত্বং ভক্তসাতৃ সংপ্রদানত্বমিত্যেবং ভুষা অতি-

### যথাবা দশরূপকে॥

ভগবান্ হরির যে হস্ত লক্ষ্মীর পরোধর লিপ্ত কুকুমদ্বারা অরুণবর্ণ, বনিরাজ সেই হস্তকে ভিক্ষাপাত্র করিয়াছিলেন ॥১৫ অথ উপস্থিত গুরাপার্থত্যাগী॥

ভগবান্ হরি সাষ্টি প্রভৃতি মুক্তি, অথবা অন্য কোন বর দিতে ইচ্ছা করিলেও যিনি তাহা গ্রহণ না করেন, তাঁহাকে উপস্থিত তুরাপার্থত্যাগী বলে ॥ ১৬ ॥

পূর্ব্ব অপেকা এন্থলে কারকের বিপ্র্যায় অর্থাৎ পূর্ব্বে [১০৯] অস্মিদ্দীপনাঃ কৃষ্ণ কপালাপস্মিত।দয়ঃ।
অসুভাবাস্তত্থকর্ষ বর্ণন দ্রিদাদয়েঃ।
অত্র সঞ্চারিতা ভূলা প্রতেরেব সমীক্ষ্যতে ॥ ১৭ ॥
ত্যাগোৎসাহ রতিনীরৈঃ স্থায়ীভাব ইহোদিতঃ।
ত্যাগেচ্ছা তাদৃশী প্রোঢ়া ত্যাগোৎসাহ ইতীর্যতে ॥ ১৮ ॥
যথা হরিভক্তিল্পধোদয়ে॥
স্থানাভিকামস্তপদি স্থিতোইহং
ত্যাং দৃষ্টবান্ সাধুমুনীক্রগুহাং।

পরেন সমীক্যাতে ॥ ১৭ ॥

**छान्नी मार्ड**ोनानिष्ठामश्री॥ २৮॥

স্থানেতি প্রীঞ্ববাকাং তদিদমপি ন সমাঙ্মার্থামুভব্মসং। প্রীভাগবতেতি

যে হরি সম্প্রদান ছিলেন, ভিনি এখানে অপাদান এবং যে ভক্ত অপাদান ছিলেন তিনি এখানে সম্প্রদান হইলেন॥

এ স্থলে কৃষ্ণের কুপা, আলাপ ও হাস্য প্রভৃতি উদ্দীপন এবং কৃষ্ণের দৃঢ়রূপে উৎকর্ষ বর্ণনই অনুভাব। আর অতিশয় ধৃতিকেই সঞ্চারিত ভাব বলে॥ ১৭॥

অপর পণ্ডিতগণ বলিয়াছেন, দানবিষয়ে উৎসাহ রতিই ছায়ীভাব, আর দানবিষয়ক ইচ্ছা বৃদ্ধিশীল হইলে তাহাকে দানোৎসাহ বলে॥ ১৮৯॥

যথা হরিভক্তিস্থধোদয়ে॥

প্রব বলিলেন, ছে দেব! আমি স্থান কামনা করিয়া তপ্যায় প্রবৃত্ত হুইলে যেমন কাচ অধ্যেষণ করিতে করিতে কাচং বিচিম্বন্ধিব দিব্যরত্বং
স্থানিন্ কুতার্থোহিস্মি বরং ন যাচে ॥ ১৯ ॥
যথা তৃতীয়ে ॥
নাত্যন্তিকং বিগণয়ন্তাপি তে প্রদাদং
কিম্বনাদর্পিতভয়ং ভ্রুব উন্নরৈত্তে।
যেহঙ্গ স্থারত্বিশ্বনা ভবতঃ কথায়াঃ

পাঞ্চন্যস্য স্পর্ণাদেব তেন তওত্তং কিন্ত ক্রমাদেবারুভ্তমিতি বাজং । ১৯ ॥
নাভ্ত্তিকমিলাদিনাপি তাদৃশ সাধকা এব বিধক্তিতা: । কুশলা ইত্যুনেনোক্রানাং ভক্তিরস্পাস্তাহ্লাবেণ বিবেকিনামেনাবোদান্তিয়মাণ্ডং নতু
কৈমুভোনোত্তরপ্রোক্রানাং রস্জানামিতি । তে তব ক্রব উন্নবৈবিক্লেপক্রপৈঃ

রত্ন পায় ডজেপ আপনাকে, প্রাপ্ত হ**ইলাম, জতএব হে** আমিন্! আর বর প্রার্থনা করি না॥ ১৯॥

यथाना ज़ शेरग्र २० न्यगारम् १४ ८ सारक ॥

সনকাদি মুনিগণ কহিলেন, হে ভগবন্! তোমার যশ পরম রমণীয় ও অতিশয় পবিত্র স্তরাং কীর্ত্রনার্হ ও তীর্ষ স্থারর কথার রসজ্ঞ, তাঁহারা তোমার আত্যন্তিক প্রদাদরূপ যে মোক্ষপদ, তাহাকেও গণ্য করেন না, অন্য ইন্দ্রাদি পদের কথা কি ? ফলতঃ ইন্দ্রাদিপদেও তোমার ভ্রন্ত ভয় অপিতি হয়, তোমার কথারদক্ষজনেরা সত্ত নিরতিশয় স্থানজ্ঞোগ করেন.

কীর্ত্তন্তীর্থযশদঃ কুশলা রসজ্ঞাঃ॥ ২০॥

শ্বয়দৌনাং তৃতীয়দ্য বীরদ্য পদবাং ব্রজেং॥

ধ্ব্যাদীনাং তৃতীয়দ্য বীরদ্য পদবাং ব্রজেং॥

শ্বথাদীনাং তৃতীয়দ্য বীরদ্য পদবাং ব্রজেং॥

শ্বথাদীরঃ॥

কুপার্ক হৃদয়ত্বেন খণ্ডশো দেহমর্পয়ন্।

কুফায়াচ্ছন্তরপায় দ্য়াবীর ইহোচ্যতে।

উদ্দীপনা ইহ প্রোক্তান্তানিতিব্যক্তনাদয়ঃ।

বিশ্বপ্রাণব্যয়েনাপি বিপন্নত্রাণশীলতা।

শাধাদনোক্তমঃ স্থৈনি গ্রাদ্যান্তর্বিক্রিয়াঃ।

### काटेनः॥ २०॥

প্রোত্ভাববিশেষভাক্ কশ্চিদেবেতার্থ:। বিশেষ শব্দোহার তাদৃশ দাস্য-পর্যাবসানার্থ:। অন্যাভিলাবিতাশ্নামিতাাদিভিবস্কদেব সর্বস্থাপি ভক্তস্য

তাহাতে ঐ পদে তাঁহাদের কেন প্রবৃত্তি হইবে ? ॥ ২০ ॥
এই উপস্থিত তুর্লভি অর্থ পরিত্যাগী অতিশয়রূপে ধুর্যাদির প্রোঢ়ভাববিশেষ লাভ করিলে তৃতীয় দয়াবীরের স্থান
প্রাপ্ত হয়েন॥

### ভাপ দ্যাবীর ॥

যিনি দয়ায় আর্দ্রচিত্ত হইযা আচ্ছন্নরূপি হরিকে পণ্ড থণ্ড দেহ অর্প। করেন, তাঁহাকে দয়াবীর বলে॥

পণ্ডিতগণ এই দয়াবীরে শ্রীকৃষ্ণের পীড়া প্রকাশক সকশকে উদ্দীপন। স্বীয় প্রাণ দিয়া বিপন্ন ব্যক্তির ত্রাণকারিতা,
আখান বাক্য ও স্থৈয়ি ইকাদি সকলকে বিকাল তথা

উৎস্কানতিহর্ষাদ্যাঃ জ্যোঃ সঞ্চারিশো বুলৈ: ।

দয়োৎসাহরতিস্তত্ত্ব স্থায়িভাব উদীর্যাভে ।

দয়োদ্রেকভূত্ৎসাহো দয়োৎসাহ ইহোদিতঃ ॥ ২১ ॥

যথা ॥

বন্দে কুটালিতাঞ্জলিমুভ্রহং বীরং ময়ুরধ্বজং

যেনার্দ্ধং কপট্রিজায় বপুয়ঃ কংস্বিষে দিৎসতা ।

কন্টং গদ্যদিকাকুলোহস্মি কথনারস্তাদহো ধীমতা

সোল্লাসং ক্রকচেন দারিত্যভূৎ পত্রীস্ত হাভ্যাং শিরঃ ॥২২

**डाम्न** कर्म आध्यार ॥ २५ ॥

বন্দ ইত্যানে) কইনিত্যাদিগভিত্নোষোহপি চমংকারপোধকআদগুণঃ। যথা সাহিত্যদর্শনাদৌ দিল্লাতক্ষটে গাদিপদ্যানি দশিতানি। গভিত্তক যন্তাক্যাভিত্যকথাং বাক্যান্তর প্রবিশ্তীতি। এবমনাত্রাপি সমাধেয়ং ৮২২॥

উৎস্কা, মতি ও হর্ষ। দিকে সঞ্চারি স্থায়ী ভাব। আর উৎ-সাহ যদি দ্যার উদ্রেক ধারণ করে, তাহা হ**ইলে তাহাকে** দ্যোৎসাহ বলেন॥ ২১॥

### यथा a

হায়! যাঁহাব কথা আরম্ভ করিতে আমার অভিক**তিও** বাকা নিঃস্ত হইতেছে না, দেই ময়ুবধ্বজ্ঞকে কৃতাঞ্জলিপুটে বারম্বার বন্দনা করি। এই বুদ্ধিমান্ আহ্মণ রূপধারি কংসা-রিকে অর্দ্ধণারীর দান করিতে ইচ্ছা করিয়া উল্লাস সহকারে পত্নী পুত্রকর্তৃক করাভ্যারা আপনার মন্তক বিদীর্ণ করিয়া-ভিলেন। ২২॥

करतामहत्वविद्धानः देनवामा घटेरक मया। ত্বনভাবেত্বসে। দানবীরেহস্তর্ভবতি ক্ষুটং ॥ ২৩ ॥ रिकश्वकात्मिक्टिः कृत्यः क्रियुट्करम् मर्वदेशः । কতাত্র দ্বিজরূপে চ ভক্তিস্তেনাগ্য ভক্ততা। ष्यस्र ७। वर वमस्य विश्वास मानिकी द्वार महाजानः । বোপদেবাদয়ে। ধীরা বীরমাচক্ষতে ত্রিধা॥ धर्यावीतः ॥ क्रेकिक ट्याप्तरा भाषा यः मना পরিনিষ্ঠিতঃ। প্রায়েণ দীরশান্তন্ত দর্মনীরঃ দ উচাতে॥

ছবেবিকি। জল\*চ ক্লভাবে জন্যা দুয়ামা অভাব ইভাৰ্থ: ॥ ২৩ ॥ বৈক্ষাবস্থানিতি বিক্ষণ্ডিজিউক্নীয়োহমোকি বৈক্ষার:। সূচ ভ্রেক্তারেলানেন

ইহাঁর যদি ভগবান হরির তত্ত জ্ঞান না থাকে, তাহা হইলে দয়া ঘটে না, দয়ার অভাব হইলে ইনি স্পত্তরূপে দানবীরের অস্তুত হটবেন॥ ২৩॥

रिकार का श्रमुक अहे महावध्यक गर्यना क्रास छक्ति कति-ক্তেন, এ স্থলে ব্রাহ্মণ মূর্তিকে ভক্তি করাতে ইহার ভক্তত্ব দিদ্ধি চইল। এই দয় র্মটিভকে দাননীরের অন্তর্ভাব বলিয়া বোপদেবপ্রভৃতি ধীর ব্যক্তিদকল তিন প্রকার বীর বর্ণন করি-श्राटिन ॥

### অথ ধর্মবীর ॥

্যে ব্যক্তি 🗐 ক্ষেত্র পরিতোষণ রূপ ধর্ম বিষয়ে সর্বদা তৎপর, তাঁহাকে ধর্মনীর বলিয়া বর্ণন করা যায়, কিন্তু প্রায় ধীরশান্ত পুরুষই ধর্মনীর হইয়া থাকেন ॥

উদ্দীপনা ইহ প্রোক্তাঃ সজ্জান্ত প্রবশাদয়ঃ।
অনুভাবা নয়াস্তিক্য সহিফুত্ব যমাদয়ঃ।
মতি স্মৃতি প্রভৃতয়ো বিজেয়া বাভিচারিশঃ।
ধর্মোৎসাহরতিদীরৈঃ ছায়ীভাব ইহোচাজে।
ধর্মেকাভিনিবেশস্ত ধর্মোংসাহো মতঃ সতাং॥ ২৪॥
যথা॥
ভবদভিবতিহেতুন্ কুর্সিডা সপ্ততন্ত্ব্
পুরমভিপুরুত্তে নিতামেবোপছুতে।
দক্ষদমন তদ্যাঃ পাণ্ডুপুত্রেণ গণ্ডঃ

স্ত্ৰেণালোকিকাভিধানাং। তত্সচ বৈকাৰ্জাদি<mark>ক্তকিৰুকজাদিতাৰ:। ২৪</mark>॥ স্পুত্ৰণিজ: ॥ ২৫॥

এই ধর্মনীরে সংশাস্ত্র শ্রানপ্রভৃতি উদ্দীপন। নীতি, আন্তিক্য, স্থিয়্য এবং ইন্দ্রিনিগ্রহপ্রভৃতি **অমুভাষ। আব** মতি স্মৃতিপ্রভৃতি ব্যভিচারী হইয়া গাকে॥

ধীরগণ এ স্থালে ধর্মোংসাহ রভিকেই স্বাধীভাব, **আর** কেবল ধর্মবিষয়ে অভিনিৰেশকেই ধর্মোংসাহ বলেন॥ ২৪॥ যথা॥

হে অহারনাশন রক্ষ ! পাণ্ডুপুক্ত যুধিন্তির তোমাতে রতি উৎপাদন করিবে এই উদ্দেশে যজ্ঞাকল করিয়া নিত্যই ইন্দ্রকে স্বীয় পুরে আহ্বান করিতেন, ভাহাতে হুদীর্ঘ কালের অন্য ভদীর পত্নী শচীর গণ্ডদেশকে বাম হস্তরূপ শ্যাায় শ্যন করাইয়াছিলেন অর্থাৎ ইন্দ্রবিরহে শচী বামহন্তে গণ্ডদেশ

ন্ত চিরমর চি শচ্যাঃ সব্যহস্তা ক্ষশায়ী ॥

যক্তঃ পূজ বিশেষে হিস্য ভূজাদ্যঙ্গানি বৈষ্ণ বৈঃ ।

ধ্যান্তে নালা আগত্বেন যদেষ ভিতিরপ্যতে

আয়ং তু সাক্ষাতি সৈয়ে নিদেশাং কুরুতে নথান্ ।

যুধিন্তিরোহমুথিঃ প্রেমাং মহাভাগবতোত্তমঃ ।

দানাদি ত্রিবিধং বীরং বর্ণ য়ন্তঃ পরিস্ফুটং ।

ধর্মবীরং ন মন্যন্তে কতিচিদ্ধনিকাদ্যঃ ॥ ২৫ ॥

॥ ॥ ইতি শ্রীভক্তিরসায়ত দিন্ধাব্তববিভাগে গৌণভক্তিরসনিরপ্রপে বীরভক্তিরসলহরী তৃতীয়া ॥ ॥ ৩॥ ॥ ॥

॥ • ॥ ইভি নৰশহর্যাব্যকে উত্তরবিভাগে বীরভক্তিরসলহরী তৃতীয়া ॥ • ॥ আ

অপ্ৰ করিয়া বহুকাল যাবৎ অবস্থিত ছিলেন॥

পূজা বিশেষকে যজ্ঞ বলে, বৈষ্ণবগণ শ্রীক্নষ্ণের ভুজপ্রভৃতি অঙ্গসকলের আশ্রয়ত্বরূপে ইন্দ্রাদিকে ধ্যান করিয়া ঐ সকল আন্তৃতি প্রাদান করিয়া থাকেন, কিন্তু এই পাগুনন্দন যুধিষ্ঠির প্রেমের সমুদ্র এবং মহাভাগবতোত্তম, ইনি সাক্ষাৎ শ্রীকৃন্ধের নির্দেশ হেছু যজ্ঞ সকল করিতেন ॥

ধ্বনিক।দি কতকগুলি পণ্ডিত ধর্মবীর স্বীকার না করিয়া কেবল যুদ্ধবীর, দানবীর ও দয়াবীর এই তিন বীর স্পাইক্রেপে বর্ণন করেন। ২৫॥

॥ #॥ ইতি শ্রীরামনারায়ণবিদ্যারত্বকৃতব্যাখ্যায় ভক্তি-রদামতদিমুর উত্তর বিভাগে বীরভক্তিরদলহরী তৃতীয়া॥ #॥ অথ করুণভক্তিরদঃ ॥
আত্মোচিতৈবিভাগাদ্যৈনীতা পুষ্ঠিং সতাং হৃদি।
ভবেচ্ছোকরতিভক্তিরদোহি করুণাভিধঃ ।
অব্যুক্তিরমহানন্দোহপ্যের প্রেমবিশেষতঃ ।
অনিষ্টাপ্তেঃ পদত্যা বেদ্যঃ কুফোহ্স্যুচ প্রিরঃ ॥
তথানবাপ্ততন্তক্তিদোখ্যুন্চ স্বপ্রিয়ো জনঃ ।
ইত্যুদ্য বিষয়ত্বেন জেয়া আলম্বনাস্ত্রিধা ॥ ১ ॥
তত্তবেদীচ তন্তক্ত আপ্রয়েহেন চ ত্রিদা ।
সোহপ্যোচিত্যেন বিজ্ঞেয়ঃ প্রায়ঃ শাস্তাদিবর্জিতঃ ।

**७ इत्सी जाम्मक्षामिजवास्** भाविण ॥

তাথ করুণভক্তিরস॥

সংসকলের হৃদয়ে আত্মোচিত বিভাবাদিধারা শোক রতি প্রাপ্ত হইলে তাহাকে করুণাধ্য ভক্তিরদ বলে।

এই করুণরস প্রেম বিশেষ হেতু অব্যুচ্ছিন্ন মহানদ্দ হই-লেও অনিউ প্রাণ্ডির স্থান বলিয়া কৃষ্ণ এবং কৃষ্ণপ্রিয় তথা কৃষ্ণভক্তিস্থ অপ্রাণ্ড স্বপ্রিয়জন ইহারা ড্রেয়স্বরূপ হয়েন। উক্ত কৃষ্ণাদি এর করুণরসের বিষয় প্রযুক্ত স্থালম্বন তিন প্রকার হয়॥ ১॥

এই করুণরসের আশ্রয় হেতৃ কৃষণাদি ত্রেয় অনুভবকারী। ভক্তও তিন প্রকার হয়।

উপযুক্ত বলিয়া ঐ করুণ-ভক্তিরস প্রায় শাস্তাদিরস বর্জিক্ত জানিতে হইবে ॥ তৎকর্মগুণরপাদ্যা ভবস্ত্যদ্দীপনা ইহ॥ ২॥
অনুভাবা মুখে শোষো বিলাপঃ প্রস্তগাত্রতা।
খাদক্রোশনভূপাত্যাতোরস্তাড়নাদয়ঃ।
অত্রাফৌ সান্থিকা জাড্যনির্ব্বেদয়ানিদীনতা।
চিন্তা বিষাদ ঔংস্ক্ ক্যচাপলোমাদম্ত্যবঃ।
আলদ্যাপস্মৃতিব্যাধিমোহাদ্যা ব্যভিচারিণঃ॥ ৩॥
হৃদি শোকতয়াংশেন গতা পরিণতিং রতিঃ।
উক্তা শোকরতিঃ নৈব স্থায়ী ভাব ইহোচ্যতে॥ ৪॥
তত্র ক্ষথো যথা প্রীদশমে॥

ভূবিপাতঃ ভূবিঘাতত হঙেন ভূতাড়নমিতি দ্বয়ং জেয়ং ॥ ৩॥ অংশেন অনিষ্ঠাপ্তিপ্রতীতিরূপেণ নিজবিশেষণেন ॥ ৪॥

এই রদে কৃষ্ণের গুণ, রূপ ও কর্ম উদ্দীপন ॥ ২॥
আর মুথশোষ, বিলাপ, অঙ্গজালন, শ্বাদ, চিৎকার, ভূমিপতন, ভূমি আঘাত ও বক্ষঃতাড়না প্রভৃতি অনুভাব হয়।
অপর ইহাতে পূর্ব্বোক্ত আট প্রকার দাল্পিক তথা জাড্য,
নির্বেদ, গ্রানি, দীনতা, চিন্তা, বিষাদ, ঔৎস্কর্য, চাপল, উন্মাদ
মুত্যু, আলস্যু, অপস্মৃতি, ব্যাধি ও মোহ প্রভৃতি ব্যভিচারী
হইয়া থাকে॥ ৩॥

রতি হৃদয়মধ্যে অনিউ প্রাপ্তির প্রতীতিরূপে পরিণত হুইলে তাহাকে শোকরতি বলা যায়, এন্থলে এই শোকরতিই স্থায়ী ভাব॥৪॥

> আলম্বনরূপী কৃষ্ণ যথা॥ শ্রী**দশনে ১৬ অ**ধ্যায়ে ১৩ শ্লোকে॥

তং নাগভোগপরিবীতমদৃষ্টচেষ্টমালোক্য তৎ প্রিয়সঝাঃ পশুপা ভূশার্তাঃ।
ক্ষণ্টেৎপিতিাক্সন্ত্রনর্থকলত্রকামাক্রংখাভিশোকভরম্চ্বিয়ো নিপেতৃঃ॥ ৫॥
যথাবা॥
ফণিব্রদমবগাচে দারুণং পিঞ্চুড়ে
স্থালদিশিরবাস্পস্তোমধৌতোত্তরীয়া।
নিথিলকরণর্ভিস্তভ্তিনীমাললম্বে
বিষমগতিমবস্থাং গোষ্ঠরাজস্য রাজ্ঞী॥

তংগ্রিয়বথাশ্চ পশুপাশ্চানো গোপা: ॥ ৫ ॥ ফণিত্রদমিতি। গোষ্ঠরাজসা পত্নীতি পাঠান্তরং॥ ৬।

সর্পদরীরে পরিবেষ্টিত হওয়তে শ্রীক্লের চেফা দৃষ্ট হইল না, ভাঁহাকে তদবস্থ নিরীক্ষণ করিয়া তদীয় প্রিয়সথা গোপদকল অতিশয় আর্ত্ত হইলেন এবং ছঃখ, শোক ও ভয় প্রযুক্ত হতবৃদ্ধি হইয়া ভূতলে পড়িতে লাগিলেন। ছেরাজন্! শ্রীক্ষের অনিষ্ট দর্শনে গোপদিগের এরূপ মোহ হওয়া বিচিত্র নহে, ভাঁহারা আপনাদের আত্ম, গুহুং, অর্থ, কলত্র এবং কাম দকলই ভাঁহার প্রতি সমর্পণ করিয়া-ছিলেন। ৪॥

#### यथावा ॥

শ্রীকৃষ্ণ দারুণ কালিয়ন্ত্রদে অবগাহন করিলে গোর্চরাজ্ঞ রাজ্ঞী যশোদা গলিত উষ্ণ বাষ্পাময়ুহে উত্তরীয় বদন আর্ছ্র করিয়া নিধিল ইন্দ্রিয়বৃত্তি স্তম্ভনকারিণী বিষম গতিরূপ অবস্থা অবলম্বন করিয়াছিলেন ॥ ভদ্য প্রিয়জনো যথা ॥
কৃষ্ণপ্রিয়াণামাকর্ষে শৃষ্যচূড়েন নির্দ্মিতে ।
নীলাম্বরদ্য বক্তেন্দুর্নীলিমানং মুহুদ ধে ॥ ৬ ॥
স্বপ্রিয়ো যথা হংসদূতে ॥
বিরাজন্তে যদ্য ভ্রজনিশুকুলস্তেয়বিকলস্বয়স্তূচ্ডার্গ্রেল্লিভশিথরাঃ পাদনথরাঃ ।
ক্ষনং যানালোক্য প্রকটপরমানন্দবিবশঃ
দ দেব্যিমুক্তানপি মুনিগণান্ শোচতি ভৃশং ॥

বিরাজস্ত ইতি। লুলিত ইতি লু'লতজং বিমদিতজং। <mark>লুল বিমদিন</mark> ইত্যাস্য নিষ্ঠায়াং প্রয়োগাং। অত্তরতান্ত সংস্পাশতাংপর্যক্ষেন অথাস্তর

আলম্বন রূপী কৃষ্ণের প্রিয়জন যথা॥
শঙ্কাচ্ড শ্রীকৃষ্ণের প্রেয়গীবর্গকে আকর্ষণ করিভেলাগিলে, নীলাম্বর বলদেবের বদনচন্দ্র মৃত্যুভ্ঃ নীলিমা ধারণ করিয়াছিল। ৬॥

স্বপ্রিয় যথা হংসদূতে॥

গোপীগণ কছিলেন, হংস! যাঁহার চরণনথর সকল ব্রজশিশুকুল অপহরণ করায় ব্যাকুলচিতে ব্রহ্মার লুলিত চূড়াগ্রচিহ্নে শোভা পাইতেছে এবং ক্ষণকাল যে সকল চরণচিহ্ন দেখিয়া দেব্যি নারদ প্রমানশে বিবশ হওত সংসার নির্স্তিশ্নিগণের নিমিত্ত অতিশয় শোক করিয়াছিলেন তুমি সেই সকল চরণচিহ্ন অবলোকন ক্রিয়া গ্রমন ক্রিভঃ

# ঁউত্তর। ৪র্থ লহরী। ভক্তিরদায়তদিকু:।

যথাবা ॥

মাত্মান্তি গতা কৃতস্তমধুনা হা কাদি পাণ্ডো পিতঃ

মান্দ্রানন্দস্থাকিরেম সুবয়োন ভিদ্দৃশাং গোচরঃ।

ইত্যুটেচন কুলাকুজো বিলপতি প্রেক্ষ্য প্রমোদাকুলো

গোবিন্দ্র্যা পদারবিন্দ্র্যালপ্রোদ্রামকান্তিচ্ছটাং ॥

রতিং বিনাপি ঘটতে হাসাদেরুদ্রামঃ কচিৎ।

কদাচিদ্রপি শোক্ষ্যা নাম্য সন্তাবনা ভবেৎ।

রত্যে কুলা ক্রশিলা চ শোকো ভ্যান্ ক্রশশ্চ মঃ।

রত্যা সহাবিনাভাবাৎ কাপ্যেত্স্য বিশিক্তিকা॥ ৭॥

সংক্রমিভত্মের জেয়ং। তহুভূত ইতার মুনিগণানিতি পাঠা। ত্রিরবিত্মর্থেন সূক্রান্ত

#### যথাবা ॥

নকুলানুজ শহদেব গোবিন্দের চরণারবিন্দের অসীমকান্তি-চছট। অবলোকন করিয়া আনন্দাকুলচিত্তে কহিলেন, ছে মাতঃ মাদ্রি! সম্প্রতি আপনি কোথায় গমন করিলেন, হে পিতঃ পাণ্ডো! আপনি কোথায় আছেন, আপনাদের এই নিবিড় আনন্দসমুদ্র নয়নগোচর হইল না, এই বলিয়া উচ্চরূপে বিলাপ করিতে লাগিলেন॥

রতি ব্যতিরেকেও কোন কোন স্থানে হাস্যাদির উদ্গম হয়, কিন্তু কদাচ শোকের সম্ভাবনা হয় না ॥

রতির বাহুল্য ও লঘুত্বে শোকের বিপুলত্ব ও ন্যুনত্ব সম্ভব হুহয়। রতির সহিত অবিনাভাবপ্রযুক্ত কোন হুলে এই শোক-রতির বিশিষ্টতা হইয়া থাকে॥ অপিচ॥ কুকৈশ্ব্যাদ্যবিজ্ঞানং কুতং নৈষামবিদ্যয়া। কিন্তু প্রেমোত্তররস্বিশেষেণ্ডিব তৎ কুতং।

কুকৈখবাাদীভি। এতহক্ত: ভবভি। ভগবলাম স্বর্পভৃতভগবন্তাবিশিষ্ট: পরমানক্ষরপ:। তহন্ত: চত্রে। খং প্রতাগাখানি তদা ভগ্রতানস্ত আনক্ষ মাত্র উপপর্দমন্তশক্তাবিতি। বিষ্ণুপুরাণে। জ্ঞানশক্তিবলৈশ্বর্যাবীর্যাতেজ্ঞাংস্য শেষ ছ:। ভগণচছক বাচানি বিনা খে যৈ গুণাদিভিরিতি। ভগবতা তুষড়িধছেeপি দামানাতো হিবিধা। পর্তমর্থারপা প্রম্মাধুর্ণারূপা cচ ভি। তত্তীর্ম্বর্যাং নাম প্রভাবেন বশীকর্ত্তং। যদস্ভবেন তত্মান্ত্রসংভ্রমাদি স্যাৎ। মাধুর্যান্ত রূপ-ঋণলীলানাং (রাচকজং। যদমূভবেন তলিন্পেম সাাং। কেবলং স্ক্রপং তু সানক্ষাত্রসমর্পকং। তত্র মাধুর্গাভুত্রস্ত তত্ত্বস্বাপার্ভব্যার্ণোতি। যথা ভদাারবিন্দনয়নদেতোত্র সংকোভ্যক্ষরজ্বামপি চিত্তত্থারিতি শ্রীসনকাদিভি-अकर्गात । यथा छ । जन्म एक मगारमी शार्था मा निमान्त्रमुख्यन । समूचिछा खन-**८६: ठः** नामश्यभौत्रशैति जाल औरनवकाानिवारका । দচ মাধুগ্যাত্মভবো माधुर्याञावनाञ्चकमांभटनाः भन्नट धमनित्नवनकत्रमभर्यााशाचान्विट्नयः । (खंन यटेनचर्गामाञ्च ज्वायत्राः ७० मटलाखमविमागग्रह्मव हे जिल्लामाल्या-চীনত্তেহবিদ্যা কথং তত্তাবকাশং লভতাং। যথা খ্রীবলদেবস্যাপি তম্মঙ্গলার্থ: व्यवद्रः आवत्त्र। कृदेव उद्धर्गवानात्मा विश्वभीयवत्तामामः। कृष्णदेशकः १७९ হঠুং কন্যাং কলহশঙ্কি । বলেন মহতা সার্দ্ধি ভাত্রেহপরিপ্লতঃ। ছরিতঃ কুভিনং প্রাগালাজাশ্বরণপত্তিভিরিতি। তীগ্ধিষ্টিরস্যাপি যথা। অজাতশক্র: পুতনাং গোপীথার মধুদ্বিয়:। পরে লা: শঙ্কিত: শ্লেহারাযুঙ্ক চতুরঙ্গিনীমিতি। यचारित्रमञ्ज्ञानीमिति (अमाननमममुक्कानन्युत्रगार । उद्भविक्वार जानून-

বলদেব ও যুখিন্ঠির প্রভৃতির ঐশ্ব্যাদির অবিজ্ঞান অবিদ্যাদারা কৃত হয় না, কিন্তু গাঢ় প্রেমবিশেষদারাই ঘটিয়া থাকে,

অতঃ প্রাতুর্তবন্ শোকো ল্রেন্থ্যুম্বটভাং মৃছ: ।

তুরহামের তমুতে গতিং সৌথাস্য কামপি ॥ ৮ ॥

॥\*॥ ইতি শ্রীভক্তিরসায়তসিদ্ধাবুররবিভাগে গৌণভক্তিরসনিরপণে করুণভক্তিরসলহরী চতুর্থী ॥ \* ॥ ৪ ॥ \* ॥

অথ রৌদ্রভক্তিরসং ॥

নীতা ক্রোধরতিং পৃষ্টিং বিভাবাদৈনিজোচিতৈ: ।

ক্রিন্থে হিতোহহিত্তদেচতি ক্রোধ্যা বিষয়ন্তিধা।

প্রেমসভাবেন কথ্ঞিং সভাবনেন বা গ্রত্যাশাস্থ্যমাৎ প্র্বসানে**ছণি তৎস্থ-**সৈব্যক্তিস্থাদপ্রেমী সৌধাগতিমের তসুতে। কিন্তু গ্রহাং **আগত্তকগুংখাসু-**জবেনব্র হাব। অভ্যাব কামণি অনিক্তিনীয়ামিভার্থ:। তথাদভ্যের ককণেছণি সুখ্যসাহ্যিতি ভাবি: ॥ ৮ ॥

। ০ । ইতি নৰলহৰ্যাশ্বকে ভৈত্ৰবিভাগে কৰণ ৰজিবসগহনী চহুৰ্থী । । । জ্বাণিতাপাশানংভীআৰ্থানাং প্ৰহেত্দ্বিভি

অতএব শোক প্রাত্তুতি হওত মুত্মুক্ঃ র্দ্ধিশীল হইয়া **হথের** কোন তুরহ গতি বিস্তার করে॥ ৮॥

॥ # ॥ ইতি শ্রীরামনারায়ণবিদ্যারত্বরুত ব্যাখ্যার ভক্তি-রসামৃত্যিকুব উত্তরবিভাগে করুণভক্তিরসলহরী ॥ # ॥

# অপ রৌদ্রভক্তিরস ॥

ক্রোণরতি নিজোচিত বিভাবাদিবারা পুষ্টিপ্রাপ্ত হইলে ভাহাকে হৌদ্র ভক্তিরস বলে॥ ১॥

কৃষ্ণ, হিত ও অহিত ভেদে ক্লোধের বিষর তিন প্রকার

কৃষ্ণে স্থীজনত্যাদ্যাঃ ক্রোধন্যাশ্রয়তাং গতাঃ।
ভক্তাঃ সর্ববিধা এব হিতে চৈবাহিতে তথা॥
তত্র ক্ষে স্থ্যাঃ ক্রোধঃ॥
স্থীক্রোধো ভবেৎ স্থ্যাঃ ক্ষাদত্যাহিতে সতি॥ ২॥
যথা বিদক্ষমাধ্বে॥
অন্তঃ ক্লোকলঙ্কিতাঃ কিল বয়ং যামোহদ্য যাম্যাং পুরং
নায়ং বঞ্চনসঞ্চয়প্রণয়িনং হাসং তথাপু।জ্বাতি।
অস্মিন্ সংপুটিতে গভারকপটেরাভীরপল্লাবিটে

স্মরণার ॥ ২ ॥

व्यक्टरङ्गकनहिका है जाता धाकात्रभत्रीकार्थः कृष्णीमाना धामार

হয়। কৃষ্ণবিষয়ে সণী এবং জরতীপ্রভৃতি তথা হিত ও অহি-তাদি বিষয়ে সর্বপ্রকার ভক্ত ক্রোধে আশ্রয় হইয়া থাকেন॥

তন্মধ্যে কুষ্ণের প্রতি স্থীর ক্রোধ যথা।।

কৃষ্ণ হইতে মহাভয় সম্ভাবনা হইলে স্থীর প্রতি স্থীর ক্রোধ প্রকাশ পায়॥ ২॥

যথা বিদশ্ধনাধ্বে ২ অক্ষে ৫০ শ্লোকে ॥
ললিতা ক্রোধ প্রকাশপূর্বক কহিলেন, রাধে! আসরা
শাস্ত্রিক ক্রেশে কলক্ষিত হইয়াছি, একারণ আজ যমপুরে
গমন করিব, তথাপি ইনি বঞ্চনা রূপ হাস্ত পরিভ্যাগ করিলেন্দা, হে বৃদ্ধিষ্ঠি! কি প্রকারে এই আভীরপল্লীকামুকে-

হ। মেধাবিনি রাধিকে তব কথং প্রেমা গরীয়ানস্থ ॥ ০॥ অথ তত্ৰ জনতাং ক্ৰোধঃ।। ক্রোধে। জরতা। বধ্বাদিসম্বন্ধে প্রেক্তিত হরে।। যথা ম অরে যুবভিতক্ষর প্রকটমের বঞ্জাঃ পট-স্তবোরণি নিরীক্যাতে বত ননেতি কিং জল্পসি। অংহা ব্রজসিণানিনঃ শুণুত কিং ন ণিজে৷শনং ব্রজেশরস্ত্রেন মে স্তগ্রেহ্মিরুত্থাপিতঃ॥

শ্রীক্ষাং শ্রীরাণায়। অত্যাহিত, জাত্মিতি । ২ ।

नर करकाः (कारः क्राप्त करः मारः। व्यक्तः जागारः। जागिकापि ব্রীভাগের চনির্ণান্তবীতাং বাজবাসিজীবিয়াবাণাং সক্ষাতিক্রমেণ সক্ষ্যমর্প ্ণন্ত উদেক্তিভানাং নামৌ স্বার্থ: সম্ভবতীতি ত্রাত ব্যাব্ধন্মিতি সোহয়ং চক্রবেল্যাঃ অতিক্ষন্যে কংস্সা কল্চিল্লোগ্র অগ্রেম্কভ্রা কুত্র্লগ্র ইভি ক্ষতিং প্রশিক্ষিঃ। জন্মাং তং বিনানোগ্মিতার্গি যোজ্যা। তদেবস্পি তন্ত্রি

তোমার প্রেম গ্রীয়ান হটণ।।

অপ জরতীর (ক্রেপে যথা॥

বধু সম্বন্ধীয় বস্তু হরিছে দৃষ্ট হইলে তাহাতে জনভীর (जान इस ॥

#### 전에 II

জোধ প্রকাশপুর্বক জরতী কহিল, অরে মুবতি ১ কর ! न्मकेहे छोत बदक आयात वधुत वद्ध (मिथ्डिकि. म कके না না একখা বলিতেছিস্ কেন, অছে অন্ধানী সকল! [ 555]

গোবর্দ্ধনং মহামল্লং বিনান্যেষাং ব্রজ্ঞোকদাং।
দর্বেষাদেব গোবিন্দে রতিঃ প্রোঢ়া বিরাজতে ॥
ভাথ হিতঃ ॥
হিতন্ত্রিদানবহিতঃ গাংসী চেয়ু রিত্যপি ॥ ৪ ॥
তত্রানবহিতঃ ॥
কৃষণপালনকর্তাপি তৎকর্মাভিনিবেশতঃ ॥
কচিত্র প্রণতো যঃ প্রোক্রোহনবহিতে।হত্র সঃ ॥ ৫ ॥

স্থান্য ক্রোধন্ত নাম্প্র ক্রের মুখ্য মৃদ্য ম্যান্ত কি নামু র ত্য ভাবেন ইতি পুরু দশিত মন্তি তথা জনেম শৃধং স্বৈব তথা জোশনং নামু শৃধং স্বপীতি ভাবঃ ॥ ৪ ॥ তার ক্ষাপ্রালনে কচিত ং শ্ব স্বিভাবে বৈচিতে সতি প্রমন্তঃ তবঃ প্রমন্ত নিকরী মপি তদবস্থান বধা ভূম সমর্থে ইঃ পোহনবহিতঃ প্রাক্তঃ ॥ ৫ ॥

তোমরা কি চিৎকার শুনিতেছ না, ব্রজেশ্বনন্দন আমার পুত্রের গৃহে অগ্নি উত্থাপন করিয়াছে॥ ৩॥

গোবৰ্দ্ধন মল্ল বাতিরেকে সমুদায় ব্রজবাসিরই গোবিন্দ বিষয়ে রন্ধিশীলা রতি বিরাজ করিতেছে॥

অথ হিত ॥

হিত তিন প্রকার হয় অনবহিত, সাহসী ও ঈষু ে॥ ৪॥ তন্মধ্যে অনবহিত যথা॥

শ্রীকৃষ্ণের পালনকর্তা হইয়াও কৃষ্ণসম্বন্ধি কর্মান্তরে অভি-নিশেশণশ ১ঃ তদীয় পরম হানিজনক অবস্থাসমাধান করিতে যে ব্যক্তি অসমর্থ হয় তাহাকে অনুবৃহত বলে॥ ৫ ॥ যথ। ॥
উতিষ্ঠ মৃঢ়ে কুরু মা বিশস্তঃ
রুথৈব ধিক্ পণ্ডিতমানিনী জঃ।
ক্রুটিংপলালিছয়মন্তর। তে
বদ্ধঃ হৃতোহদো স্থি বংভ্রমীতি ॥
অথ সহানী

প্তিত্যানিনী পুত্রশিকাবিজ্যানিনী। ফটাদিতি ভূতেহপি বর্তমান-সামীপো বর্ত্তমানবদ। তাদিদ প্রায়ন্তবিদ্ দিনেত্যপন্দাদোকতবগৃহে নিম-জনরা সপ্তেং গতায়াস্কুটাদ্বকগজিতাদাগতায়াঃ শ্রীদামোদারনিকটে শ্রীব্রজে-দ্বালাগ্যনং বীকাগৃহ এব গ্রায়াঃ শ্রীবোহিণাভেজক্তভয় মুচ্ছাত

#### यथ! ॥

এক নিবস উপনন্দ প্রভৃতি কোন এক গোপগৃছে নিমক্রিত হইয় ঐরিহাহিণীদেবী সপুত্রে গমন করিয়াছিলেন এমত
সময়ে গমলার্চ্জন রক্ষ ভয় হওয়তে প্রচণ্ড শব্দ হইয়াছিল,
তচ্ছবলে দামোদরের নিকট নন্দাদিকে ঘাইতে দেখিয়
শব্দক্ষিতমনা ঐরিহাহিণীদেবী গৃহে প্রত্যাবর্তনপূর্বক মূচ্ছা
হইতে উপিত প্রায় ঐয়িশোদাকে কহিলেন, হে মূঢ়ে! উঠ
উঠ, বিলম্ব করিও না, তুমি রুখা আপেনাকে পুত্রশিক্ষা বিষয়ে
পণ্ডিত বলিয়া অভিমান করিয়া থাক, হে স্থি! তোমার
রক্জুবদ্ধ পুত্র ভয় বৃক্ষরয়ের মধ্যে ইতস্ততঃ ঘুরিয়া বেড়াইতেছে॥

যঃ প্রেরণ ভর্ছানে সাহ্দী স নিগদনতে ॥ ৬ ॥
যথা ॥
গোনিদঃ প্রিয়স্ত্রহদ ং গিরৈব যাতস্তালানাং বিপিন্নিতি জুটং নিশ্ম্য ।
ক্রভেদস্থপুটিতদৃষ্টিরাস্যান্যাং
ডিস্তানাং ব্রজপতিগেহিনী দদর্শ ॥
অথেয় হি ॥
স্বায়ু স্নিধনা প্রেলিজা প্রোচ্ন্যাক্রান্ত্রমানধা ॥
যথা ॥
ভূমান্ত্রম্পিতে ক্থ্যামি কিং তে

উথিত প্রায়ত আবংজনবীং প্রতি বাকাত ॥ ৮॥

স্থপুটিও বিষম'কৃতং। স্থপুটা বিষম্মিতি জিকা **ওং**শলঃ। বিষ**মত্ত নতোর**ত

যে ভয়স্থানে প্রেরণ করে কাছাকে সাহদী বলে॥ ৬॥ যগা॥

প্রিষ্ঠ জালাণের বাকে। শ্রীকৃষ্ণ তালবনে গমন করিয়াছেন এই কথা স্পাটক্রপে গ্রবন করিয়া ব্রহ্মতিগৃহিণী যশোদা বিষয় দৃষ্টিরস্থা বালক সকলের বনন অবলোকন করিতে লাগিলেন।

जर्थ केयु ।।

যাহার কেবল মানমাত্রই ধন ও প্রবল ঈর্যায় মন আক্রান্ত, ভাহাকে ঈর্যু বলা যায়॥

यता ॥

(হ দৰি ! ভূমি ছুম্নিরপ মন্থন তেও ম্থিত হই েছে, অত-

দূবং প্রয়াহি স্পিটের তব জাজ্লীমি। हा धिक श्रि सन 6 कूर्नाश्रि • लिक्कु (कांग्रे।। নির্মাঞ্জ তা গ্রহবণাপ্যরাপাননাদি॥ जाराहि • १॥ অতিকঃ সাংদ্রিধা সম্প্রেরেক্তি প্রভেদ •ঃ॥ ভার স্বস্থা হিতঃ॥ অহিত স্বদা দ দাংদ্যঃ কুষ্ণদ্রস্থাবাধকঃ॥ यथा छेक्र-मत्मत्म ॥ क्रमः युक्तसकदान्यतारम्भाष्ठर । निष्ठं दञ्च

Fafe (7887 11 4 4

এব তে:মাকে আরে কি বলিব দুরে গমন করে, আমি তে৷মার নিকট অতিশয় দগ্ধ হইতেছি, হা কন্ট! ধিকৃ ভো**মাকে** প্রিয়তন শ্রীকৃষ্ণ সীয় চূড়া**স্থ মধ্**রপুডে**ডর অঞ্চাগ দারা** তোমার চবণাত্র মার্জন করিয়াছেন, তথাপি তুমি রক্তমুখী হইয়া রহিয়াত।।

### ভাগ অভিকে॥

আপনার এবং হরির এই উভয় ভে.দ অহিত তুই একান হয়, অর্থাৎ আধনার অহিত ও হরির অহিত॥

তবাধ্যে আজা অহত মথা #

নে গ্রন্থিক ক্ষণেষ্ট্রের বাধাকারা ছাহাকে আয়া আহিছে ৰালা যায় ॥

गशा जिख्यमारमा ॥

মামর্যাদাং যতুকুণভুবং ভিদ্ধি রে গান্ধিনেধ
পশ্যাভ্যণে ত্বার রথমধিষ্ঠান যাত্রাং বিনিৎসৌ
স্ত্রীণাং প্রাণৈর প নিযুত্তশো হন্ত যাত্রা ব্যধানি ।
অহ হরেরহিতঃ ॥
অহিতন্ত হরেন্ত্রতা নৈরিপক্ষো নিগদাতে ॥
হরে প্রতিশালা শিলালা কিন্তুলি ।
হরে প্রতিশালা শিলালা কিন্তুলি ক্রিপারে ব্যনক্ত্র যাঃ।
অন্ধং ক্ষিপতি পাণ্ডবঃ শমনদণ্ডঘোরং হঠাভিরদ্য মুক্টোপরি ক্ষুট্নুদীর্যা দ্ব্যং পদং ॥

অরে অকরণ গান্ধিনীতনয়! তুই অভিশয় নিষ্ঠুর, যতুকুলের মর্যাদা ভেদ করিদ্না, দেখ তুই রথে আরোহণ
করিয়া যাত্রা বিধান করিতে ইচ্ছা করায়, স্ত্রীগণের নিযুত
নিযুত প্রাণসকল অগ্রে যাত্রা বিধান করিল।

অথ হরির অহিত ॥ হরির বৈরিপক্ষকে হরির অহিত বলা যায় ॥ যথা ॥

আছিলির উপনিষৎ সকলের মুকুট মণির মরীচিকার ইছির হৃব্যক্ত চরণপঙ্কজ নির্মাঞ্চিত ংইতেছে, সেই শ্রীকৃষ্ণের প্রাক্তি যে ব্যক্তি অবজ্ঞা করে, এই পাণ্ড্র স্পান্টাক্ষরে বলিয়া ভাছার মুকুটোপরি ভিন বার বামপদ নিক্ষেপ করত ঘোর শ্রমণ্ডুরূপ অন্ত্র নিক্ষেপ করিতেছে॥ (म'ल श्रेहागव:का**क्टिक होक्का नामक्रामग्रः** কু পাহি ভহিতস্থাঃ স্থারমী উদ্দীপনা ইং। হস্ত নিম্পেণ্ড দন্তবটনং র*ক্ত*নেত্রতা। দুকৌষ্ঠতা তহুকুটী ভুজ।ক্ষালনত।ড়নাঃ। তুকীকতা নতাদাছে নিখাদো ভুগদৃষ্টিভা। ভংগন गृक्ष वर्ष छन्। छन्। छन्छ विः। ক্রতেদাধরকম্পাদ্যা অনুভাবা ইহোদিতাঃ। অত্ৰ স্তম্ভাৰতঃ সৰ্বে প্ৰাকটাং যাত্তি সাভিকা: ॥ ৭ ॥ णारतामा जएका भरती निर्मित्म दमारहाभरता। অসু: য়ীগ্ৰাং তথামধ্রশ্রমান্য। ব্যভিচারিণঃ॥ অত্র ক্রেম্বিতিঃ স্থাস তু ক্রেম্বিধা মতঃ॥

এই রৌদ্রাদে সে ল্লুগ্ডাদ, বক্রোক্তি, কটাক ও অনা-দর, তথা কুঞের অহিত ও হিতম্থ ব্যক্তিসকল উদ্দীপন, অপর হস্তম্দন দন্তমট্রন অর্থাৎ দন্তের শব্দ রক্তনেত্রতা, ওঠ দংশন, জাকুটী, ভুঞাক্ষালন, তাড়ন, ভূঞীকতা, নতণ্দন, নিখাস, বক্রদৃষ্টি, ভংসন, শিরশ্চাগন, নেত্রান্তে পাটলবর্ণ, জ্র.ভদ এব॰ অধরকম্পন, ইত্যাদি সকলরোজরদে অমুভাব ॥ আর ইহাতে স্তম্ভাদি সমুদায় পাত্তিক প্রকট হ**ইয়া থাকে॥** তথা আবেগ, জড়তা, গৰ্মা, নিৰ্মেদ, মোহ, চাপল, অসুগ্ৰ উগ্রাংগ, অমর্য ও প্রমাদি ব্যভিচারী সকল প্রকাশ পায় 🛭

এই রৌদরদে ক্রোররতি স্বায়ীভাব। কোপ মৃত্যু ও

যহুভেদে ক্রোণ তিন প্রকার হয়, তন্মধ্যে শত্রুপকে কেপে,

কোপো মমুস্তথা রোষ স্তত্র কোপস্ত শক্রগঃ।
মনুব্রুষ্ তে পূজ্য-সম-ন্যান-স্তিগো দিভাঃ।
রোষস্ত দয়িতে স্ত্রীণামতো ব্যক্তিরত, শে।।
হস্তপেষাদয়ঃ কোপে মনে। ভূষ্টীক ভাদ হঃ।
দৃগস্তপটেশস্বাদ্যা রোমেতু ক্থিতাঃ ক্রিয়াঃ॥ ৮॥
তত্র বৈরিণি যথা॥
নিরুধ্য পুরুমুমদে হরিমগাধসন্ত্রাশ্রাঃ
মুধে মগধভূপতো 'ক্যপি বক্রমাক্রোশতি।

বাভিচরতি আন্যে রসে বাভিচারিতাং গ্রাপ্রেতি। ছবতীস্থানিনা কোপমন্তাবলাম্যাং রোষঃ ভারিতামাগাতীতার্থঃ। তদেবং পুরস্কারণ আবেণ -দয়ক বাভিচারিণঃ উগ্রাপ্রধানাঃ শক্রবিষ্যাঃ অমর্যপ্রধানা বল্বিষ্যাঃ। অসুং প্রধানাদ্যিতবিষ্যা জেলাঃ॥৮॥

বিষ্টিদর্জাঙ্গলং শত্রুসমূহমাংসং। ইন্সলোহন্তার ॥ ১ 🖫

বন্ধুবর্গে মন্ত্রা। কিন্তু এই মনুর, পুজা, সম ও নূর্ন বন্ধুভেলে তিন প্রকার হইয়া থাকে॥

অপর প্রিয় বাক্তিতে স্ত্রীগণের রোষ প্রকাশ পার কিন্তু এই রোষ কথন কগন ব্যভিচারীও হইয়া থাকে ॥ আার কেংপে হস্ত মদ্নাদি, মনুতে ভূকী প্রভৃতি এবং রোধে নেত্রাস্তপাটলাদি ক্রিয়া সকল কথিত ২য়॥৮॥

তন্মধ্যে শক্রর প্রতি কোপ যথা।

উমাত জরাসন্ধ মধ্রা পুরী অব্রোধপূর্দক যুদ্ধকেত্র অব্যাণ সন্থাশ্য হরণ প্রতি কোন বক্ত আক্রোশ করিতে দৃশং কবলি ঃ বিষ্বিদ্যালয় লোপলে
কুনোদ দংগিক লপ্রবলপিক্ষলাং লাপলা ॥ ১ ॥
পুজ্যে যথা বিদ্যালধ্যে ॥
জোশস্তাঃ করপল্লবন বলবান্ সদ্যঃ পিধতে মুগং
দাবস্তাঃ ভাজাজি কিন্তু ভ ভূজো ক্ষমে পুরঃ পদ্ধতিং।
পাদাস্তে বিলুঠ ভাসো মহি মুক্দ ফিংধরাহাং ক্ষম।
মাতশ্চণ্ডি ময়া মুকুটাদক্ষাঃ ভিন্দজ্যঃ কথং॥ ১০ ॥

থাকিলে হলার সমস্ত শক্রনাংগগ্রাসকারী লাগ্রের প্রতি জলদস্পার তুল্য পিঙ্গলনেত্র নিকেপ করিলেন॥ ৯॥

পূজে। মন্ত্র। যথা বিদন্ধগাধনে ২ অক্ষে ৩১ লোকে॥

শীরাণা গোষের সহিত পৌর্নাস কে কহিলেন, মাতঃ!
আবনাকে আর কি বলিব, আমি মনি উচ্চরণ করিতে আরম্ভ
করি, তাহা হইলে বলবান্ শিগওচুড় অমনি করপল্লবন্ধারা
আমার বদন আছোদন করেন, আর যদি ভীত হইয়া পলায়ন করিতে ইচ্ছা করি, তাহা হইলে তগনি গাল্ প্রসারণপুর্পক আমার আগ্রে আলিয়া। পথ রোধ করেন এবং আমি য়দি তাহার পদ তলে লুন্তিত হই, তাহা হইলে ঐ মধুরিপু জোধ-ভরে বারম্বার আমার অধরে দংশন করেন অত্এব হে কোপনে। আপনি অকারণে আমার প্রতি জোধ করিছে ছেন কেনং আপনিই বলুন কি প্রকারে শিগওচ্ছ, ক্রুঞ্ছইতে আল্লরকা করিব॥ ১০॥

ক্রেশেস্থামিতি ভাবপরীক্ষামাণায়ও পৌর্ণমাস্যাং ক্লফ্ষেক্তিময়ং চরিতং সাক্ষাজপুমির শ্রীরধেয়া ক্রিতঃ ১০৬

সমে যথা॥
জ্লতি তুর্মুখি মর্মানি মুর্মুরন্তব গিরা জটিলে নিটিলে চ মে।
গারিধরঃ স্পৃশতিতা কদা মদাদুহি চরং তুহিতুর্ম সামরি॥ ১১॥
ন্যুনে যথা॥
হস্ত স্বর্গায়কুচমূদ্ধি মনোংরোহ্যং
হারশ্চকান্তি হ্রিকেণ্ডভীচনিয়ুঃ।

জ্ব হাঁতি জটিল।নুধরয়োনিভতকলহঃ। মু শাঁরস্ত্রধাগ্রিঃ। নিটলে শির্সি॥১১ কণাচিলিজাঙ্গাজ্ ঝটিতি শ্রীরাধিকয়াহবতারিতং হরিহারং বীকা তস্যাঃ স্থীঃ

## সমান সমান ব্যক্তিতে মনু্যু যথ। ॥

জটিলা কহিল হে জুমুথি মুখরে! তোমার কথার আমার হাদয়ে তুষানল জ্বিতেছে, মুখরা কৃহিল হে পামরি জটিলে! তোমার কথায় আমার মস্তক দগ্ধ হইতেছে, বল দেখি গিরি-ধর গর্বাহকারে কবে আমার কন্যার কন্যা কীর্ত্তিদানান্দর্নী জীরাধাকে স্পর্শ করিয়াছে॥ ১১॥

# ন্যন ব্যক্তিতে মন্ত্য যথা।

কোন এক দিবদ শ্রীরাধা নিজাপ হইতে শীত্র শ্রীকৃষ্ণের হার অবতরণ করিলে তদর্শনে জটিলা তদীয় স্থীগণের প্রতি কহিল, অহে স্থীসকল! তোমরা দেও যে মনোহর হার হরিক্তে আন্দোলিত হইতেছিল। সেই হার এই বধ্টীর

# উত্তর। ৫ম লছরী। । ভক্তিরণামূতণিকু:।

ভে পশাত স্কুলকজ্জগমঞ্জীয়ং
কুটেন মাং ত পো বঞ্চতে গধ্টী ॥ ১২ ॥
অংশিল তাদুশো, মনো গভঁতে গতামুগ্ৰহঃ ।
উদাহরণমাত্রায় তথাপোষ নিদশতঃ ।
কোশোশ্রণাণ শত্র্গাং চৈদ্যাদীনাং স্বভাবতঃ ।
কোণো গণিবিনাভাগাল ভক্তিগ্রসত ং বেজেই ॥ ১৩ ॥
॥ # ॥ ইতি শীভক্তিগ্রস্থিসিগ্রুগাণ্ডাগে গোশভক্তিগমনিকপ্রণা রৌগ্রভ ক্রণগহরী প্রশা ॥ # ॥ ৫ # ॥

প্রতি জটিলা বচনা হয়েতি । ১৮।

ন ভাদৃশ ইতি নাস্পট ইতাৰ্থ: । গোৰছনা বিনা মল্লমিত্যাজ্যভাষ্ট ॥ ১০॥ । ২ ॥ হ'তি নবসহযায়েকে উত্তৰবিভাগো বৌধুভজিবস্লহরী পঞ্চনী ॥ ২॥

কুচমস্তকে শোহা পাইতেছে, হা কফ তথাপি এই স্কুল-কজ্জলমঞ্জনী ছলপূর্বিক আমাকে বঞ্চনা করিতেছে ॥ ১২ ॥ যদিচ এই মনুগতে র তর অনুগ্রহ স্পাফী বোধ হইতেছে না, তথাপি ইহা কেবল উদাহনণ নি মন্ত প্রদর্শিত হইল ॥

কোষের আশ্রয় সক্ষয় শিশুপাল প্রভৃতি শক্তগণের স্বভাবসিদ্ধ ক্রেন্ধ রতি ব্যতি,রকে কথন ভক্তিরস্তা প্রাপ্ত হয়না॥ ১০॥

॥ # ॥ ইতি জীরামনারায়ণবিদারে ক্লুত ব্যাপারে ভক্তির্দা-মৃত্সিশ্বুর উত্তরবিভাগে গৌদভাকিরণ লহরী পঞ্চমী ॥#॥৫॥# তথ ভ্যানকভজিলে: ।

বক্ষ্যমাণৈণিভাবাদ্যৈঃ পুষ্ঠিং ভারতির্গতঃ
ভ্যানকাভিধাে ভক্তিরনাে ধারৈরুদার্যতে ॥ ১ ॥
ক্ষণ্ড দারুণা শ্রুণি তিম্মিগাল্মনা বিধা ।
অনুকাম্প্যেরু দাগদ্ভ ক্ষণ্ডসাতে বন্ধুরু ।
দারুণাঃ স্নেহতঃ শখন্তদ্নিভাগ্তিদশিষু ।
দশ্লাক্ত্যাণাক্ত প্রাণাক্ত প্রতির্গিঃ ॥ ২ ॥

### অণ ভয়ানক ভক্তিনস।

বক্ষানা বিভাবাদিরদারা ভয়র তিপুষ্টি গ্রাপ্ত হইলে পণ্ডিত গণ তাহাকে ভয়ানক ভজিরস বলেন॥ ১॥

ভ্যানক রণে শ্রীকৃষ্ণ এং দারুল এই তুইটা আলম্বন।
ত্যান্ধ্য ভক্ত সকল লগরাণা হইলে তাগতে কৃষ্ণ আলম্বন
অর্থাৎ কৃষ্ণ হইতে ভ্যা, আর যাঁহারা ফ্রেহ বশতঃ নিরন্তর
শ্রীকৃষ্ণের অনিষ্ট প্রাপ্তি দর্শন করিয়া থাকেন এমত কৃষ্ণান্ধ্য সক্রে দর্শন, শ্রবণ কিন্ধা আলগ হেতু দারুণ সকল ভ্যা রতির আশ্রেষ হইয় থাকে। ২ ॥ তত্রামুকম্পোষু ক্লো ষধা॥

কিং শুষাৰদনোহ'গ মুক্ষ পচিতং চিতে পৃধুং বৈশপুং
বিশ্বস্থা গ্রাকৃতিং ভজস্ব ন মনাগপ্যান্ত মন্তন্তব।
উন্নত্তিক ক্লোজনভস দিন্তীয়্য বীষ্যা স্থা
পৃথা প্রাকৃতিমুদ্ধকৌ ভুকমন্ত্রী সেবৈব মে নির্মিতা। ০।
মনমগন প্রস্তে কো ভুজস্বস্তপ্রী
লম্বংগতি ক বীর্মাস্য দীনায় মন্ত্রং।

উল্লাকেনধনস্থাপ: পৃথ্বী পৃথ্তরা॥ ৩॥ কালিয়দা বাকাং। তপশী বরাক:। মহা: ক্লোধ:॥ ৪॥

ঐ চুইয়েব মধে। ভক্তসকলে কুণা আলম্বন যথা।

ক্রীকুণা কহিলেন, হে ঋক্ষরাজ! তুমি কেন শুক্তবদন
হইলা, চিত্তিছিত বিপুল কম্প পরিতনাগার্থক বিশ্বস্ত হইগা
যীয় স্বভাবের অনুগামী হও, তোমার প্রতি আমার কিঞ্চিন্মাত্র কোপ নাই, তুমি শীঘ্র ক্রোধ সন্তপ্তবীর্যা বিস্তার করিয়া
প্রাত্তি যুদ্ধ কৌতুকময়ী সেগাই আমার সম্বন্ধে নির্মাণ
কর॥ ৩॥

#### यथा वा ॥

হে মুরনাশন! তোদার অথ্যে এই বরাক ভ্রম কোথা-কার কে, সানি অতিলয়, অভগ্র এই দীনের প্রতি কোপ করিও না, তোমার তব্ব না জানাতে অ্জান বশতঃ আমার এই গুরুতর অপরাধ হইয়াছে, সামি অতিমূঢ় আমার্ক ্রমা শুর্বম্বিদ্ধের গ্রাম ক্রানতো হ ভূদ্দশ্রবম্বিদ্ধার কর্ম বিদ্ধার বাদ্ধার ।
বিদ্ধার বাদ্ধার ॥

হা কিং কবোমি তালং ভানা ভরালে
গোপেন্দ্রগোপর বলান্ত্রপরকার বালং।
ক্রামশুলেন সহ চঞ্চল । লান্ত্রপরকার বালং।
শ্রামশুলেন সহ চঞ্চল । লান্ত্রপরকার ।
শ্রামশুলেন বিশ্বর্যার প্রাম্বিদ্ধার ।
শ্রামশুলি লাজ্যর তি পশ্য তুর প্রেদ্কার ।
শ্রাম্বিশ্য । ।
শ্রুবিশ্বর ক্রম্য গোকুলং কিল বিশ্বর্যুদ্ধুরং।
শ্রুবিশ্বর ক্রম্য গোকুলং কিল বিশ্বযুদ্ধুরং।

**শৃঙ্গাণি বুণাদীনামগ্রভাগান্**॥ ৫

কর এবং আমার প্রতি প্রসর হও॥ ৪॥

चञ्जूमक লে দারুণ তন্যধ্যে দশ নিহেতু যথা।।

দোগভূতনয়রকণ।কুলা শুদাদাসজলজা ব্রেশরী॥ ৫॥

যশোদা কহিলেন, হায়! কি করিব, হে গোপেন্দ!

শালক অতিচঞ্চল, ইহাচে বলপূর্বকি গৃহে অণ্রোধ করিয়া

রাথ, ভূমগুলের সহিত আমার মন চঞ্চল করিয়া অশ্বাকৃতি
কেশী দৈত্য রুক্ষাপ্র সকল উল্লেখন করিতেছে দৃষ্টিপাত কর ॥

শ্রেণহেতু দারুণ যথা॥

ভয়ান অখাকৃতি দানব ক্রোধভরে গোকুলে প্রবেশ ভারিয়াছে, অভেশ্বরী বশোদা সহসা এই কথা প্রবেশমাত্র তনয়-শ্বন্ধণ আকুলচিত্ত হইয়া শুক্ষবদন এবং সজলনয়ন হইয়া- স্মরণ দ্যথা ।

বিরম বিরম মা 🐮 পু চনায়াঃ প্রসঙ্গা-ভতু মিয়মবুনাপি স্মর্যামাণা ধুনোতি। ক্ৰলখিত্নিগান্ধাক্তা বালং খুরন্তী-বপুরভিপরুষ যা ছোএমাবি • চকার॥ বিভ বদা জাকুতবিদ্যাপ্তমিষ্ট্দীপনা মডাঃ ম্থংশাষণমূত্যাসঃ পরারত্য বিলোকনং। বসকোপনমূল্য বা শরবাত্মেধণং তথা। ক্রোলন দ্যাঃ ক্রিয়ান্চাত্র সাত্তিকান্চাঞ্রতিজ্ঞি

বিবনেতি কিঞ্চিন্নাৰাসভাষ্ট্ৰাং প্ৰতি প্ৰীব্ৰেশবাৰাকাং। ততঃ करविश्विति ज्ञानस्वरानरनारयाशिनं न मारि। पूत्रसी ख्रीनमर क्सरी।

### সাএণতেতু দার্কণ যথা॥

কোন বন্ধস্ত্রী দুরদেশ হইতে আগমন করিয়া অক্সাত প্তনারবান্ত কি দ্বানা কবিলে তাহার প্রতি এলেখনী কহি-লেন, ওমা! কান্ত হও, কান্ত হও, আর পূর্তনার প্রা করিও না, ও মাতিপাণে আরেড় হইগাই অস কম্পিত স্থাই তেছে, ঐ পুতাং গ্রাদ করিবার মানদে বালককে জেনিছে লইয়া ভয়ানক শব্দ কাত বিকটাকার বপু: আবিকার করি शक्ति ।

ভগ্যনকরদে বিভাবের ক্রাকুটা প্রভৃতি উদ্দীপনা ার্যুর্বশেষ উচ্ছাস, পশ্চাংসৃষ্টি, নিজা∞-গোপন, উদৰ্শা, **सा⊞ए**द्रत শবেষণ এবং টাৎকার প্রস্থৃতি ক্রিয়া। পঞ্চ মাডিমেক ইছ সংত্রাস মরণ চাপলাবেগদানভাঃ।
বিষাদমোহাপস্মারশকাদ্যা বাভিচারিণঃ।
ভাষিণেভাস্চ তত্র স্যাবহু ধৈবাপরাধিতা।
ভাজা ভীর্নাপরত্র দ্যাদকু গ্রাহ্মজনান্ বিনা।
ভাকত্যা যে প্রকৃত্যা যে যে প্রভাবেণ ভাষণাঃ।
আহলাক্সা ভাতিঃ কেবলপ্রেমশালিষু।
নারীবালাদিষু তথা প্রাধেনাত্রোপজায়তে॥ ৬॥
ভাক্ত্যা পূত্রাদ্যাঃ স্কৃঃ প্রকৃত্যাত্রউভূ ভুজঃ।
ভীষণাস্ত প্রভাবেণ স্বরেন্দ্রগিরিশাদ্যঃ॥
সদা ভগবতো ভীতিং গঙা আত্যান্তিকীমশি।

বুর ভীমার্কশন্ধরোরিতাক্ত রূপং॥ ৬॥ ছ**ঠ**তুভুল্ক: শিশুপালাদয়:॥ ৭ ৪

বোহ, অপসার ও শকাদে এই সমুদায় ব্যভিচারী ভাব॥

ইহাতে ভারতিই স্থায়ভাবে, ঐ ভর অপর ধ ও ভীষণ হতৈ ঘটিয়া থাকে। অপর অপরাধ শহুপ্র কার সন্তব হয়, কিন্তু অপরাধ জনিত ভয় অনুগ্রহের পাত্র ব্যক্তিকে অন্য ক্রাপি সন্তব হর না, যাহারা আকৃতি প্রকৃতি ও প্রভাবদার। ভীষণ অর্থাৎ ভারানক তাহারাই ভারের আশ্বন। আর যাহারা কেবল প্রেমশালী অর্থনা নারী ও বাশক সেই সকলেই প্রায় ভার উপস্থিত হয় ॥ ৬॥

আকৃতিবারা পূতনা, স্বভাবদারা হুট নৃপতিগণ এবং আভাবদারা ইঞ্জ ও শক্ষর প্রভৃতি ভীষণ হুইয়া থাকেন। কংস কংসাদ্র রিশ্নরেদিত্র নাগন্ধনা মতাঃ॥ १॥

॥ # । ইতি শ্রীভক্তিরদায়্তদিশ্ববৃত্তরবিভাগে গৌণ-ভক্তিরদনিরূপণে ভয়ানকভক্তিরসহগনী মন্তী॥ # ॥ ৬ ॥ # ॥

অপ বী ৬ংশ-ভ ক্রিরসঃ॥

প্রিটি: নিজবিভাবালৈজুপ্তিশারতিরাগতা। অসে) ভক্তিরদো গাঁটেরবীভংশাথ্য ইতার্যতে॥ ১॥ অফ্রিলাপ্রিভশান্তাল্য দাঁটেরলেজনা মতাঃ॥ ২॥

প্রভৃতি অম্বর্গণ ধর্মদা কুফ হইতে অভিশান ভয়প্রাপ্ত হইত একারণ রতিশুনা বলিয়া তাহার৷ এ ফুলে আলম্বন হুইতে পারে নান ৭ ॥

॥ # ॥ ইতি শ্রীরাণনার্গাবদ্যারত্বত ব্যাগ্যা ভক্তি-রশামু গ্রিকুর উত্তর্বভাগে ভ্যাণকভক্তিরদ লহরী মুঠী ॥#॥৬ তথ বীভংগভ ক্রন্ম।

ধীর ব্যক্তিদকল গলিয়াছেন জ্ওপন। রতি আত্মেটিক বিভাগদিরার। পুষ্ঠিপ্রাপ্ত হইলে গাঁভৎদ নামে ভক্তিরদ হয়। ১॥

এই বীভৎসরদে শাস্তা শ্রেভ ব্যক্তিগণই আলম্বন হইয়া থাকেন ॥ ২ ॥

ग्था ॥

পাওিত্যং রতহিওকাধ্বনি গতো যা কামদীক্ষাব্রতী কুর্বন্ পূর্বমশেষধিত গনগরীসাআজ্যচর্য্যমভূৎ।
চিত্রং শোহয়মুদীরয়ন্ হরিগুণাকুলাপ্সদৃষ্টির্জনো
দৃষ্টে স্ত্রীবদনে বিকূপিতমুখো বিফভ্য নিষ্ঠীবতি।
তত্র নিষ্ঠীবনং বক্তুকুণনং আগসংর্তিঃ।
ধাবনং কম্পপুলকপ্রস্বেদাদ্যাশ্চ বিক্রিয়াঃ।
ইহ য়ানি-শ্রমোন্মাদ-মোহ-নিবেদি দানতাঃ।
বিষাদ-চাপলাবেগ-জাত্যাদ্যা ব্যাভ্চারণঃ।
জ্ঞপারতিরক্র দ্যাৎ স্থায়ী সাচ বিবেক্জা।

রভহি ওকে। রভচৌরঃ। বিক্লিভমুখে বক্রিভবদনঃ। বিষ্টভা বিশেষে

#### যথা ।

যে ব্যক্তি পূর্ণের কামদীক্ষায় ব্রতী হইয়া রতিতক্ষরদি গর পথে পাণ্ডিত্য লাভপূর্বেক অশেষ কামুকনগরার সাম্রভ্য আচরণ করিয়াছিল, কি আশ্চর্য্য! সেই ব্যক্তিই আজ হরিওণ কীর্ত্তন করিতে করিতে বাষ্পাকুল-লোচন ২ইতেছে এবং স্ত্রী-বদন দৃষ্ট হইলে, তাহাতে স্তর্কভাব লাভ করত বক্রবদন ও নিষ্ঠীবন করিতেছে॥

এই জুগুপ্সারদে নিষ্ঠীবন, কুটিলমুখ, নাসিকা আচ্ছাদন, ধাবন, কম্প, পুলক, ও ঘর্মা ইত্যাদি সকল অনুভাব॥

অপর ইহাতে গ্লানি, শ্রম, উন্মাদ, মোহ নির্বেদ, দীনত। বিষাদ, চাপল, আবেগ এবং জাড্যপ্রভৃতি ব্যভিচারী হয়॥

প্রায়ি চা চেতি কথিতা জগুপ্দা দিনিধা ববৈঃ॥ ভতে বিশেকজা॥ ল্লা চক্ষাণ্ডেভক্ত বিশেষদা ত ক্যাচিং। विद्वत्काश्रीकु (महारम) जुछका माक्रिदक्का ॥ ०॥ भाश: B ঘনক্ষিক্ময়ে ছচা পিনজে পি শতবিমিজিতবিভাগদভাজি। कशंभव तमको वसः नतीरत जगर्व ब ब इ ८८ वर्ग (तक्ष्र (भार्न ॥

**全(衛) 19期) 1つ**1

र्व्यान्त्र भारतः विद्यार मालामपान यर । उदाविसमा (या शक्त **उदा**जी छार।। हैनीर रुचि क्रामिकसा क राज्यिकामा नीयना निष्ठाया कथा हैकिछ है । छो : १५

এ হলে ভুগুণা রতিই স্বায়ী ভাব, এই রতি বিবেক ও প্রায়িক ভেদে তই প্রকার হয় ॥

তশাধ্যে বিবেক জনিত জগুপদারতি গথা॥ কোন জাতরতি ক্লাওজ বিশেষের দেহাদিতে যেবিবেক-জনিত জুওপা উৎপন্ন হয় তাহাকে বিবেকজনিত জুঞ্জা রতি কছে। ৩।

#### यथ। ॥

হায়! ভগৰান শ্ৰীকৃষ্ণে কিঞ্চিনাত্ৰ গতি উৎপন্ন হইলে ख्वाना ना कि नाठ क्रवित्रमय, हन्याञ्चापिक, मारम विभिक्षिक व আম ( कांচ ) গন্ধশালী এই দেহে কেন রমণ করিবেন १ ॥ অথ পারিকী॥

অমেধ্যপূত কুভগং দর্কেষ'মের দর্কতঃ।

যা প্রায়ো জায়তে দেবং জুগুপদা প্রায়িকী মহা॥ ৪ ঃ

যথ!॥

অসঙ্মৃত্রাকীর্ণে ঘনশ্যলপক্ষরাতিকরে

বসান্ত্রম ক্লিনে। জড়তনুবহং মাত্রুদরে।
লভে চে তিকেলে তব ভজনক্ষ্মাক্ষরতা

তদ্পান কলাবে কুরু মাধ্য কুপাশার্য কুপাং॥ ৫ ॥

ভিজনকথাক্ষমত্যাধলকিতে যদি। মতু তথা হেতুনা ভজনকথাক্ষমত্য ইতি। সপুনাপ্তেবা পঠো। অন্যথা বীভংস্থাবিমৃষ্ট্রং স্যাদিতি॥ ৫ ।

# অথ প্রায়িকী জুগুপদা রতি যথা॥

অমেণা ও পতি অনুভব হেতুসর্বা প্রকারে সঞ্জের সম্বন্ধে প্রায় যে জুওপা উৎপন্ন হয়, তাহাকে প্রায়িকী বলে॥৪॥

#### यथ। ॥

হে কংসাবে! আ'ম এই জড়দেহে রক্তমূত্রে আকীর্ণ ও
তরণবিষ্ঠায় পরিপূর্ণ মাতার উদরে বাস করিয়া মনোমধ্যে
অভিশয় কোভ প্রাপ্ত হইতেছি, অতএব হে কুপাসমূত্র!
আপনি আমার প্রতি করুণা বিধান করুন আমি তোমার
ভক্তনকর্মে অক্ষমতাযুক্ত অথবা অত্যন্ত অক্ষম ! ৫ ॥

মধা বা ॥

আণোল্যুৰ্ণ কপ্তিগন্ধি বকটে কীটাকুলে দে**হলী**-স্রস্তব বিভিগ্থগুগ্রটনানিধতিনেত্রায় যি। कातानामनि इन्ह भागवग्रमनामी वशर नात्रक কিন্তা: স্ত স্মৃতিমাক লয়। নরক জেং দল্লিছ প্রাণিমঃ॥ ৬॥ ল্ককুণ্ডরতে এব প্রস্থাত মনঃ সদা। ফু লাভ ফদালে শহ'প ততে। হসা। রতামু গ্রহ:। भागतिमाः अगङ्गराप्तां भएका भएका भिक्तां के वि

म'न(क सरकम्भर्छ॥ ५॥ वराग्राः वरा कर्दाा (शास्तः ॥ १ ॥

#### যথা বা॥

হে ভগবন ! জরাসন্ধরুণী যম, যাহা বিকট পুতিগন্ধবারা আণের স্থাজনক ও কাটপরিপূর্ণ এবং যাহাতে প্রাঙ্গণপতিত রোগিধমুছের বিষ্ঠাদশনৈ নেত্রের পরমাগু ক্ষয় হয়, সেই কারানামক নরকে আমাদিগকে নিক্ষেপ ক'রয়াছে, কিন্তু ছে নরকল্পেন্। আমরা ঐ কারানরকে প'তত হইয়া কেবল তোমার নামমাত্র সারণ করত জীবন ধারণ করিতেটি ॥ ৬ ॥

বে ব্যক্তি শ্রীকুষ্টকে রতিগাভ কার্মাছে, তাহার মন সৰ্বানা পৰিত্ৰ, যদি কখন মুণিত বস্তুর লেশে ক্ষোভযুক্ত হয়. ত।হ। হইলে রতিই তাহাকে পুষ্ট করিয়া রাথে 🛊

হাস্যাদির গৌণত্ব হইলেও যে রদম্বকার্ছন করা হইয়াছে

প্রাচাং ম গ্রান্থসারেণ তরিজ্যেং মনীবিভিঃ।
অমী পকৈব শান্তান্যা হলেজ ক্রবনা মতাঃ।
এয়ু হান্যানয়ঃ প্রায়ো বিজ্ঞতি ব্যাভচ কিতাং ॥ ৭ ॥
॥ ইতি শ্রীভক্তিরসায়ত্রিদ্ধাবুত্রবিভাগে গৌণভক্তিরমনিরপণে বীভংসভক্তিরসাহরী সপ্তমী ॥ # ॥ ৭ ॥ # ॥
অথ রসানাং মৈত্রীবৈর্গিস্থতিঃ ॥
অথানীবাং ক্রমেনিব শান্তাদীনাং প্রস্পরং।
শিত্রতং শাত্রবন্ধক রসানামভিধায়তে ॥ ১ ॥
শান্তম্য প্রতিবীভংস্থর্মনীরাঃ শুক্রবাঃ।

॥ • ॥ ইতি নবলহর্ষাাত্মকে উত্তরবিভাগে বীভংগভক্তিবসলহরী সপ্তমী ০ । অত্য স্থায়মন্ত্রিসামূভবী শ্রীক্ষাভক্তঃ শ্রীক্ষান্তর্যন্তর্গান্তরি

পণ্ডিতগণ প্রাচীননিগের মতানুদারে তাহ। অবগত হইবেন ॥
শাস্ত ও প্রীত প্রভৃতি পাঁচটীই হরির ভক্তিরস, কিন্তু এই
সকলে হাস্যাদি রস প্রায় ব্যভিচারিতা ধারণ করে॥ ৭॥
শাংশ ইতি, শীরামনারায়ণবিদ্যারত্বকৃত ব্যোগ্যায় ভক্তিরসায়তশিক্ষুর উত্তরণভাগে বীভংগ ভক্তিরসলহরী সপ্তমী॥ ॥ ॥ ৭॥
অথ রসসকলের মিত্রতা ও শক্ততা॥

্**অনন্তর** ক্রমে শান্তপ্রভৃতি রদের পরস্পর মিত্রত। ও শক্রতা কীর্ত্তন করিতেছি॥ ১॥

**শান্তরনে প্রীত, বীভৎদ ধর্ম**বীর ও অত্ত ইহারা *হুছ-*

# অত্তৰৈ বিজেয়ঃ প্ৰীতাদিয়ু চতুষ পি॥ ২॥ विभन्नमा छित्रिक्तिभारतः तोराज्ञा छशानकः ॥ ७ ॥

বোলা চেতি পঞ্চবিবগতাহন ভবে। লাকান্তে, ভঞ্জান্তিনো ক্রম্য কেনচিন্তুটি-্তনক্ষেত্ৰ মিলি,ত সতি লগবিদাতঃ সল্লেত্ৰভাইলনেত্ৰ ভথপোধ ইতি বক্তব্যে শান্ত্যা , তা দশ্লিত ভাবাহশা ক্ষেতি। বা ৬২ম ধর্মবীরাবত্র তপবি শান্তম্য স্লভালী জ্ঞোন। ভ্রন্থান ভ্রমিন ভ্রমিন বিভিন্ন বিভিন্ন ভারত ভারনার । **প্রাকৃষ্ণত ত**ে ক্রমের প্রিক হার্রেগ্রে চন্ত্র চ ভূলীরবন্দোলয়ার। আত্মারামশাস্ত্রগ্রহ তন্ত্র-দৰবংগনেহলি ভব্স হেন কবিনা বৰ্ণনায়াও দোষ এব স্যাধ্য । অস্কৃত্ত**ত শাস্ত্ৰস্** জন্মর । এয়ে ১৯৮৯ জীত প্রেরে ১৭লম প্রেম পি স্কর্মরো (জ্ঞা। কিছ শ্রেষ্য শ্রপ্তপ্রায়তপ্রিনোর্গণ দিব। খ্রীভাবতি চমংকারো জায়তে। বন্ধায়-ভবনেলাগ'ল ভ্রাবেষাামুভবানন্দেন কচিছক্রপশনিগ্রহানিলীলয়া অপ্যাশ্চর্য্য ্রন । যথ তলার্বিকন্যন্ধ্যেত্রানি । যথা চান ত্যা চিত্রং প্রপ্রা**নিত্রহ**-স্থ্যপ্রি মত্যাপুরিধসা বর্গাত ইত্যাদি। মত্যা**নস্থরিধতেইফুকরোতি মর্ক্তালীলো**-চিতানের শুজি। জেল্লি নাধিকাং। তথাপি তলিগ্রাহাদিকং করোত্যের যন্ত্রেশ্য-%;?₹ \_ - 3

ভাষা শান্ত্রমাপি ছিবিধ্যা। শুচিরার সংপ্রতি**টাকোক্তপঞ্চবিধগতোহপি** বিধন তথা বৃদ্ধবার্শ্চ। বেইদ্ভ্রানবেইত আত্মারামশান্তলাৈ শক্ত। তপন্থি-শাস্তুদাতু ব্যানানায়বোলানশ্নালিজ্প সাবভ্যোংপত্তী শন্তিপুটে: ত্সাতু রৌজ: च्याक दक्षा ॥ व ॥

ছর : জার ঐ অতুত খাত, খেলঃ, বংদণ ইহারা মধুর রুদে-কেও প্ৰসৰৱ বলিয়া সন্মত ॥ ২ ॥

শান্তরদে শুচি মর্থাৎ মধুর, তথা যুদ্ধবীর, রেম ও ভয়া-নক ইহারা শক্র ॥ ৩॥

স্থান প্রতিষ্ট নিভংদঃ শান্তে। বীরন্ধাং তথা।
বৈরী শুচিরুদ্ধিবারে৷ রোদ্র শৈচকবিভাবকঃ ॥ ৪ ॥
প্রেমদস্ত শুচিহ নিগা যুদ্ধবারঃ স্থান্তরাঃ।
বিষো বংশলবীভংশ রৌদ্রা ভাষাশ্চ পুলবং ॥ ৫ ॥
বংশশস্য স্থান্ত্রাদ্য করুণা ভাষা ভত্তথা।

ক্ষণপ্রীতস্য বী ৬ৎ দ ইত্যাদাসীনাদিদরে বীভংগতয়৷ তদৈয় পুরামানস্বাং এবং তত উপরত্যা শান্তোহপি তথা প্রথমতয়গতং বীবঃয়ং ধর্মদানবীরাঝাং ব্রুবীরো রৌদ্রশ্চ একো বিভাবকঃ। ক্ষণবিভাবকঃ সাক্ষাং ক্ষণস্বরাজ্ৎপরঃ। সচ সচাত্র ক্ষণেন সহ স্বকর্পুর্ময়ঃ। ক্ষণ প্রতি স্বকোপময় ইত্যাপঃ। তদেওত্বপাকশন্তেনানাম্কেমপি যথাবথং তত্তপাক্ষনতান ব্যান্যাস্যতে॥ ৪ ॥

প্রেরদন্তি। শুচিরত্র ক্ষণতঃ। হাসান্তরজ্বন গতশ্চ। বুদ্ধবীরস্ত্রদানীনাদন্ত্র পতঃ। পূর্বং ক্ষবিভাবকঃ স্চ চাত্র ক্ষবিষাশ্রনতামর ইতার্থঃ॥৫॥

বংসলস্যেতি। হাস্যক্দণাব্র প্রথমত্রগতে। ভীম্মভিদ্রোধিহেতুক-

প্রতিরসে (দাদরেসে) বীভংগ, শান্ত, বারন্বয় অর্থাৎ পর্মানীর ও দানবার ইত্যাদি দকণ স্থহন্, আর মধুর, যুদ্ধবার ও কৌদ ইংকা শক্রা। কিন্তু এই যুদ্ধকার ও রৌদ্র এই ছুই সাকাৎ কৃষ্ণ হইতে উৎপন্ন হয়॥ ৪॥

প্রোরসে (সধ্যরসে) মর্র, হাস্য ও যুদ্ধবীর এই তিন অভিশর হৃহদ্, আর বৎসল, রোদ্র ও ভয়ানক এই চারিটী শক্তা । ৫।

বংসন রসে শাস্য, করুণ, ভীস্বভিৎ অর্থাৎ নিরে ধিছেতুক

শক্রং শুচিষ্ জিনীরং প্রীতো রৌদ্রশ্চ পূর্ববং ॥ ৬॥ শুচেছ (দান্তথা প্রেয়ান্ স্কল্যু প্রকীর্তিতঃ। বিষে: বংদল বীভংদ-শান্ত-রৌদ্র ভয়ানকাঃ। প্রাক্রেকেহ্দা স্কল্যু বীরষুগাঃ পরে রিপুং॥ ৭॥ মিত্রং হাদ্যদ্য বীভংদঃ শুচিঃ প্রেয়ান্দ বংদলঃ।

ভিয়নে হতের। ৩০ঃ স্ক্রিত । যুদ্ধীববৌদ্ধে ক্লেন স্থাপ্তিকী। প্রীতে বংসল্যা ক্লেবিগ্যক:। সভঃ পুস্বিদিভাপ্তফ্লং॥৬৮

শুচেরিত। হাস্যপ্রেয়ংশাস্তাং প্রথমবয়সতাং। হাস্যপ্রেয়ংসৌ ভূ কচিৎ স্থীলক্ষণভাজান্তর চিত্র বিশেষ প্রথম প্রথম, যারতঃ। বীভংসং স্কর্ণভাং রৌদ্ধানকৌ প্রায়ং স্ক্রিডেটা। বীল্যগায়ং স্ক্রেশ্বীবক্সপং ভাজা প্রথম প্রয়োগভাং। প্র ইতি তাদিদং নাক্ষনভামিতাভিশ্প্রভাগ গণা

মিন্দ্রমিতি বীভংলোহত্র ক্লতনীভংগিতবেশবিদ্যকাদিলকণভক্তান্তবদশনাং েন্দ্রমাতবেন জেলা। নম্বভান্তনীভংগিতদৌর্গফাদিদশনাং। তদেবং পর প্রত্

ভয়ানক ভেদ ইহারা জ্জদ্। আর মধ্ব, যুদ্ধবার, প্রীত (দাসঃ) ও গৌদ্র এই সকল শক্তা ॥ ৬॥

মধুররদে থাদা ও প্রেরঃ অর্থাৎ দথ্য ইহারা স্থলদ্, আর বংদল, বাভংদ, শান্ত, রোদ্র ও ভয়ানক এই দকল শত্রু বলিগা কীঠিত ॥

কোন কোন পণ্ডিত এই মধুররদের একমাত্র বীরন্ধর অর্থাং যুদ্ধরীর ও ধর্ম গীরকে হৃহদ্, তস্তির সমুদায়কে শব্রু বলিয়া থাকেন ॥ ৭ ॥

হাদ্যরদে বাভংস মধ্র ও বংশল ইহারা গ্রন্। আর

প্রতিপক্ষ করুণম্বথা প্রোক্তো ভগানকঃ ॥ ৮॥ ষ্ঠ্ৰেয় ক্ৰমীরঃ পঞ্চ শান্তাদয়স্তথা। প্রতিপক্ষে। ভবেদস্য রৌদ্রো বীভংস এবচ ॥ ৯ ॥ নীরস্য বছতো হাস্যঃ প্রেয়ান্ প্রাতত্তথা স্থক্ত। ख्यानका विशक्ताहमा कमाहिष्टां छ এवह ॥ >०॥ कक्रामा प्रकामी (प्रावध्मनम् विलोकारः ।

তর্কেরুই তত্তক্তিইঞ্ ক্রম্রের : ৮ ।

অম্বতদোতি। অলৌকিকবস্কমন্ত্রৰ জাতচমংকারদ্য ভীষণবীভংস্থে। রম্ভবেন বিশাতঃ সাদিতোর বিব্যালতং। অতস্তরোঃ স্বতশ্চমৎকারকরত্বস্ত ন নিবিধাতে ॥ রুদে সার্শ্সংকার ইতা্সাব বিরোধাং ॥ ৯ ॥

বীরসোতি। শ্রীবলদেবাদাবিব যন্ধবীরাদেঃ শ্রীব্রজেশ্বরাদাবিব দানবীরাদে-र्वरमन्क कृष्टिर स्कृक्तुभारक। ज्यानकः भाष्ठक क्याहिल्य् क्रवीतमा विश्वकः। मानवीवारभर्जशानक क (छापः ॥ २०॥

করুণ্দোতি। রৌদ্রো জাতচব স্বপ্রির্পীতনত্রান্তপ্রতন্ত্রাত্র গৃহতে। বর্ত্তনান-

### করুণ ও ভয়ানক এই তুই শক্র ॥ ৮ ॥

অন্তর্গে বীর ও শান্তাদি পাঁচটী স্থন্, আর রৌদ্র ও বীভৎদ এই তুইটা প্রতিপক্ষ॥ ৯॥

বীররদে অভুত, হাদ্য, খদ্য ও দাস্থ এই দকল স্থহন্ আর কেবলভয়ানক মাত্র বিপক্ষ, কিন্তু কাহারও মতে শান্তও বীররসের শত্রু ॥ ১০॥

करूपतरम रहोज ७ वहमन छ्रुन, जात, হাস্য বৈরী হাস্যোহ্দা সংভোগশৃপারশ্চাছুতস্থা॥ ১১॥
বৌদ্দ্য করুণ: প্রোক্তো বীরশ্চাপি স্কররঃ।
প্রতিপক্ষন্ত হাস্যোহ্দা শৃপারো ভীষণোহপিচ॥ ১২॥
ভয়ানকণ্য বীভংদঃ করুণশ্চ স্কররঃ।
ভিন্ত বীরশৃপারহাস্যোরীটাং প্রকীর্তিতাং॥ ১৩॥
বীভংদ্যা ভবেচছান্তো হাস্যঃ শ্রীতস্তথা স্করং।
শক্রঃ শুচিস্তথা প্রেয়ান্ জেয়া বুকা পরেচ তে॥ ১৪॥

#### ভাদশ্যা ভয়মাত্রজনক হাও॥ ১১ ॥

বৌদ্রদ্যেতি ভীষণে। ভয়ানকঃ স্থগতঃ ॥ ১২ ॥

ভাগনক বেডি। সত্র করুপরা ভূ হাসত্র ভারিস্বপ্রিরবিয়োগ্রারণাই। বীরাদয়ং শংগভারে ১০৭

বীভংগনোতি। শাস্তোগ্র তাপদ্লেম্বনকঃ প্রীত **আবন্ধর্জিভ কাশ্যব-**ল্যুন্য: হাস্থ্যে স্কুজ্য বিদ্যুক্ষান্ত্রকুবেশানে জেয়া নাজু স্থাই ॥ ১৪॥

সভোগ নাম শুঙ্গার ও অদুত ইহারা শক্র ॥ ২১॥

রৌদ্রেসের করুণ ও বীর এই ১ই স্কল্ আর হাসা, শুসার ও ভয়ানক এই তিন প্রতিপক ॥ ১২ ॥

ভয়ানকরদে বীভংগ ও করুণ গুজ্ন আর বীর, শৃ**পার** হাস্তে রৌর্শক্ত ॥ ১০ ॥

বীভংগ রসে শান্ত, হাসা ও দাসা স্থছন, আর শৃকার, ও সথ্য এই গুই শক্র। অপর যে সকল থাকিল তাহা যুক্তি-সক্ষত করিয়া জানিতে হইবে॥ ১৪॥ কথিতেভাঃ পরে যে স্থান্তে তটনাঃ স্তাং মতাঃ ॥
তত্র স্থকংক লাং ॥
স্থান্ত নি প্রণং সম্যাগাধান্যং কুরুতে রসং ॥ ১৫ ॥
দ্যোস্ত নি প্রণং সম্যাগাধান্যং কুরুতে রসং ॥ ১৫ ॥
দ্যোস্ত নি প্রণং সামাং সুংশকং স্যাভুলাধ্তং।
তত্মান্ত নিপ্রণাধ্য বা নোনাং নিজ্যাং মতং।
কর্ত্রাং ক্র ভদাসং স্থলনের রসো বুধৈঃ ॥
তথাপ্তিত্বং প্রথমতো মুখানামিহ নিখাতে।

ক্পিন্তো ইতি নাক্ষাওক্তেভা যুক্তা জাতেভাশেততার্থঃ॥১৫॥ ছয়োডিভাইনা প্রেণাধ্যঃ। ভূলয় ধৃতঃ অতান্তং যথা সাতিথা ছঃশকং

যে গকল কথিত হইল ত্রাত্রেকে গমূদায় উদাসীন, পণ্ডিতগণ এইরূপ সম্ভি প্রকাশ ক্রিয়াছেন॥ ভ্যাণো ভ্রদের কার্য যথা॥

্ স্থানের সহিত সহাদের মিলন গ্রালেরস অতিশয় আফ্রা-দনীয় হয়॥ ১৫॥

তুই ভাবের নিশ্রণে তুলাগ্ধত বস্তুর নাায় শমতা নির্ণা করা অতিশয় তুঃসাধা, একারণ পণ্ডিতগণ অঙ্গাঙ্গি ভাবদার। পরস্পার মিলন করিয়া থাকেন॥

মুখ্য হউক অথবা গোণই হউক যেনস যে স্থানে অঙ্গী হইবে, সে স্থানে তাহার স্থল রুসকেই অঙ্গ কর। কর্ত্তব্য ॥

অনস্তর প্রথমতঃ এ স্থলে মুখ্যরসদিগের অঙ্গিত্ব লিথি-তেছি, যে স্থানে পরস্পার হুছদ্ মুখ্য ও গৌণর সকল অঙ্গত্ব অন্তাং যত্ৰ হৃহদে। মুখ্যা গোনাশ্চ বিজ্ঞতি ॥ ১৬ ॥ তত্র শান্তেঙ্গিনি প্রীক্স্যাপতা যথা। জীবক্ষ্ লিঙ্গবক্ষে হিংগা ঘনচিৎস্বরূপস্য। স্পান্ধ প্রায়ু ক্রুগলং কিন্তা সন্তা>য়িব্যামি ॥ অত্র মুখ্যেহ স্থিনি মুখ্যাস্যাস্থতা॥ ১৭॥

ভার্যি দুম্শক্রমি তার্থঃ।। মেলনং একদা ভাবনং।। ১৬॥

জীবক্রিরবংস্বিতি শ্রোতাল্বাদঃ। সচ জীবেশয়োরংশাংশিতাগ্রামান গার। ঘনঃ শুবিগ্রাইন্তদাকারত্যা চিৎ সচ্চিদানন্দলক্ষণং পরং ব্রহ্ম সৈবস্থর্মপং যদ্য। তথ্য তাদুশহেন মমালম্বনদ্যতি তত্র স্থনিষ্ঠা দ্বিতা। তত্মাছান্তস্যা-প্রি इং। অসিং ১২পি তাদগুরুমস্থলাণিপিতত্বন প্রশতমপি ধ্বনিতং। কিছ ত্রাপান্তঃহণি প্রীত্যা প্রাব্লাং দধি দিতায়া ইবাস্বাদাধিক্যাদিতি জ্ঞেরং। প্রদেশ্যাহানকাত্ব প্রমানন্দ্রিগ্রহ্যা তম্ম পর্শানন্দ্রপ্রাপ্তীচ্ছয়ের নতু সাহায্যে-নানকলানেভ্যা। পূর্ণানক্ষেন তজ ক্রুবাং। এবমুভর্তাপি। ১৭।

কুতুপে অৱস্থাপুটকে। কুতুকী বিচিত্রবিষয়াস্বানায় সোৎসাহঃ॥ ১৮॥

भातन कतियाद्य ॥ ১७॥

**অঙ্গতা ॥ ১৭ ॥** 

তন্মধ্যে মুখ্য অঙ্গি শান্তরদে মুখ্য দাদ্যরদের অঙ্গত। মুখা ॥ অগ্নির স্ফুলিঙ্গের ন্যায় জীব, পরমন্ত্রন্মরূপ তে**জেরোশির** অংশ, কিন্তু শ্রীকৃষ্ণের শ্রীবিগ্রহ সচিচানন্দলকণ পরমতকা স্বরূপ আমিকি তাঁহার চরণারবিন্দের পেবার স্থিকারী হটব 🖠 এই উদাহরণে মুখ্য অঙ্গি শান্তরদে মুখ্য দাস্যরদের

म्था चित्र मास्त्रदम त्थीन वीज्यामा चक्रा वक्षा ।

তত্তিব নীভৎসদ্য যথা॥

অহমির কফশুক্রশোণি হানাং
পৃথুকুতুপে কুতুকা রতঃ শলীরে।

শেব শিব পরমাহানে। ছরাত্ম।

অথবপুরঃ স্মরণেহপি মন্থরোহদি॥ ১৮॥

অত্ত মুখ্য এব গোণদা।॥

তত্তিব প্রতিদ্যান্ত্ত্বী ভংদয়োশ্চ যথা॥ ১৯॥

হিছাস্মিন্ পিশিতোপনদ্ধরুধিরক্লিমে মুদং বি গ্রহে
প্রীত্যুৎসিক্তমনাঃ কদাংমদক্দু স্তর্কচর্য্যাম্পদং।

আদীনং পুরতাদনোপরি পরং ব্রহ্মান্থদ শ্যামলং

তত্রৈব শাস্তে॥ ১৯॥

ছস্তকচর্য্যাম্পানমিত্যনেনামূত্রসঃ। সম্বাহনেক্ছাবং দেবিধ্য ইত্যাদীচ্ছা চ তৎসৌরভ্যাদ্যতিশ্যাত্মভবাণা জ্ঞেয়। যথা তস্যারবিন্দনয়নস্যেত্যাদিকং

হায়! আমি কফ শুক্র শোণিতময় চর্মাচ্ছাদিত এই স্থূল-শরীরে বিচিত্র রসাস্থাদন করিব বলিয়া রত হইয়াছি, শিব শিব আমি স্বতি ছ্রাত্মা, স্থ্যয় বপুঃ প্রমাত্মার স্মারণেও মৃদ্র হইলাম।

এ স্থলে মুখ্য অংক শান্তরদে গৌণবীভংসরদের অঙ্গতা ॥ ১৮
শান্তরদে প্রীত, অন্তুত ও বীভংসের অঙ্গতা যথা॥ ১৯॥
আমি এই মাংসবন্ধ ও ক্ষির্রাক্তন্ধ দেহে প্রীতি পরিত্যাগ
পূর্বক প্রীতমনে ছন্তর্কের অগোচর স্বর্ণসিংহাসনোপরি অধ্যাশীন, পরনত্তন্ধ ও নারদশ্যামস্থলর প্রীকৃষ্ণকে চামরব্যজনের

সেবিষো চলচারুচামরমরুৎ-সঞ্চারচাতুর্যতেঃ॥ অত্র মুধা এব মুগা গৌণারোশ্চ ॥ ২০ ॥ ভাগ প্রীতে শান্তম। ॥ নির বদ্যতম্ব। সপদাহ নির্বদ্যঃ প্রতিপদ্য মাধুরীং। অব্বিশ্ববিশ্বভিন্ন কর্না, প্রভুমিন্দীবরস্থন্দরং ভঙ্গে॥ ২১॥ चत्रार्था ग्रामा ॥ তত্ত্ৰৈৰ বীভংসদ্য যথা ॥ সারন প্রভুপদান্তোজং নটনটতি বৈষ্ণবং। যন্ত দুক্তা। পদ্মিনানামণি স্থষ্ঠু হৃণীয়তে ॥ ২২ ॥

चिमनकालीमां अग्रट उद्दर॥॥ নিবাৰ্বাভ্যা অধিদ্যার্হিভভ্যেতি শাপ্তবাদনা॥ ২১॥ প্রবৃত্তি। অট্টি এমতি। জ্ণীরতে ঘূণাং করোতি। পাঠান্তরং তাক্তং॥২২॥

চাত্যদোরা সেবা করিব॥

এম্বলে মুখ্য শান্তরদে মুখ্য প্রীত ও গৌণ অন্তরদের অন্ত প্রাপ্তি হইল। ২০।

অথ মুখ্য অঙ্গি প্রাতরদে মুখ্য শান্তরদের অকত।॥ আমি অবিদ্যাশূন্যত। প্রযুক্ত নির্মণ হইয়া মাধুর্যালাভ করত কবে অর্থিন্দলোচন ইন্দীবরস্ত্রপর প্রভু শ্রীকৃষ্ণকে उक्रम क त्रिय ॥ २३॥

এম্বলে মুখ্যরদে অগ্নাঞ্চি ভাব।। মুগ্য অঙ্গি প্রতিরুগে গৌণণাভংগরদের অঙ্গত্ব রুগা॥ বৈষ্ণবব্যাক্ত প্রভুর চরণারবিন্দ স্মরণপূর্বক নৃত্য করিতে করিতে ভ্রমণ করিতেছেন, বাঁহাকে দর্শন করিলে পদ্মিনী সকলকেও মূণা বোপ হইয়া থাকে ॥ ২২ ॥

অত্ত মুখ্যে গৌণস্য।
তত্ত্বৈর বাভৎসশান্তবারাণাং যথা ॥
তনে।তি মুখবিক্রিয়াং যুবতিসঙ্গরঙ্গোদয়ে
ন তৃপাতি ন সর্বতঃ স্থখময়ে সমাধাবপি।
ন সিদ্ধিয়ু চ লালসাং বহতি লভ্যমানাস্বপি
প্রভা তব পদার্চনে পরমুপৈতি তৃষ্ণাং মনঃ ॥ ২৩॥
অত্ত মুখ্যে মুখ্যস্য গৌণয়োশ্চ ॥
অথ প্রেয়্বি শুচের্যথা ॥

ব্ৰহ্মসমাধাৰপি নিমিত্তে যং দৰ্কং শ্ৰবণমননাদিকং তত্ৰ ন ন তৃপ্যাতি অপিতৃ তৃপাত্যেব। অলং বৃদ্ধিং করোত্যেবেত্যর্থঃ। দীয়নানাম্বিত্যক্ত ম্বরেতি গমাং। সাদরতীয়েব তদত্মকিঃ। লভামানাম্বপীতি পাঠান্তবং স্পষ্টং॥ ২০॥

এন্থলে মুখ্য অঙ্গি গ্রীতরদ গৌণবীভৎদ রদের অঙ্গতা।
মুখ্য অঙ্গি গ্রীতরদে গৌণবীভৎদ, শান্ত ও বীররদের
অঞ্গতা যথা।

হে প্রভো! আমার মন যুবতীসঙ্গরক্ষের উদয়ে মুথবিকৃতি বিস্তার করিতেছে, ত্রহ্ম সমাধি নিমিত্ত যে প্রবণ মনননাদি তাহাতে পরিত্প্ত হইয়া তুচ্হবুদ্ধি করিতেছে এবং উপস্থিত সিদ্ধিসকলেও সার লালসা করিতেছে না কেবল তেগমার চবণার্চমমাত্রেই তৃষ্ণান্থিত হইয়াছে॥ ২০॥

**এছলে মুখ্য অঙ্গিতে মুখ্য ও গোণদ্বরের অঙ্গৃতা ॥ অথ অঙ্গি স্থারেসে মুখ্য শৃঙ্গাররদের অঙ্গৃতা** যথা॥।

भनामाः कित गर्कनाः अवलाग्ड कानमाः। অববং পিঞ্চুড়দা চলাশ্চুলুকয়ন্তি যাই॥ अब ग्रा मन मा ॥ २८ ॥ তাঁৱেব হাস্যাস্থ্য মধা।। দুশে প্রণিতৈরপা রেজ নির্ভা মুগ্নে রঞ্জ 'বতক্ষ্মি মাণ যথা । হি তথা দ্বা কি ভারণা ॥ ই শীর্ঘাত স্ধরে ন্ধাবলা দ্বা ভ্রানা क्रमभी स्वर्ता नवानिक ठम् छित्रम रेननः ॥ ष्य अभारताः , जीवनाः ॥ २०॥

वनारनरचित्रज्ञात्रवानमर्विदेवन् चित्रसायमः मञ् भट्टश्रार्थकामयाश्चिकाः। ০০০ অস্থাত এব **নিভালি**ত্য ১৯৪

भू. भारत हो र २ और १ माजराजन कामगार भारतिस्थान किसन् । मुस्या व माजराजन

(म अवन ) (त सकत अञ्चलको औ**त्रा**टास्त्र **चगत गड्म शान** করে নিশ্চয় ভাছারা ধন্য প্রথিত্তি মঞ্চে সভাগণ্য ॥

এন্দ্রে মুখ্য অন্ধি স্থার্গে মুখ্য শৃষ্ট্রের্মের অস্কুত। ॥ ২৪ मवा गित्र मधातरम दुशीय शमायरमत सक्राचा गया ॥

মুদ্রে! শীর পোচন করিও না, প্রতিনির্ভ হইয়া ওজে গনন কর, আর অধক প্রয়োজন নাট, মাধ্য ছলপূর্ব্বিক নব-বিলাসিনীকে এই কথা বলিলে দ্রাল বিক্ষারিভনেত্রে মাধ-বের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন।।

এত্বলে মধ অলি মধ্যেকেদে গৌণ হাদ্যরদের অঙ্গতা ॥২৫॥ 5 330

ততৈব শুচিহাস্য গোর্যথা ।
মিহির তৃহিতুক্তদ দ্বজুলং মজুতীরং
প্রবিশতি স্থবলোহয়ং রাধিকাবেশগৃঢ়ঃ।
সরভসমভিপশ্যন্ কৃষ্ণমভূগিতং যঃ
স্মিতবিকশিতগণ্ডং স্বীয়মাস্যং রুগ্নোতি ॥
অত্র মুখ্যে মুগ্যগোণধোঃ॥ ২৬॥
অথ বৎসলে করুণস্য ॥
নিরাতপত্রঃ কাস্তারে সন্ততং মুক্তপাতুকঃ।
বৎসানবতি বৎদো মে হন্ত সন্তপ্যতে মনঃ॥

রুণোতি আরুণোতি। প্রচীরং প্রান্ততে। বৃতিরিত্যমরদর্শনাৎ॥ ২৬॥ নিরাতপত্র ইতি। অত্রানিষ্টাশস্কীনীব বন্ধুর্দয়ানীতি শঙ্কাচিস্তাতিশ্যেন

মুখা অক্সি স্থারসে শৃঙ্গার ও হাস্যের অঙ্গতা যথা।।

স্থাল রাধিকাণেশে গুপু হইগা মনোহর অশোক রক্ষবিশিক্ট কালিন্দাকৃলে প্রবেশ করিতেছেন, তদ্দর্শনে প্রীক্ষণ
বেগে গাত্রোত্থান করিলে ঐ স্থবল হাস্থবিকসিত-গণ্ডুশালী
স্বীয় বদ্ধ আবিরণ করিলেন ॥

এন্থলে মুখ্য অঙ্গি সখ্যরসে মুখ্যশৃঙ্গার ও গোণ ছাস্যের অঙ্গতা॥ ২৬ ॥

অথ অঙ্গি বৎদলরদে গৌণ করুণরদের অগত। যথা॥
বাছা আমার ছত্রহীন ও পাতুকাশূন্য হইয়া তুর্গমপথে
বৎদচারণ করিতেছে, হায়! দেই জন্মই আমার মন অতি
শয় সম্ভপ্ত হইতে লাগিল॥

অত্র মুখো গোনস্য। ভবৈৰ হাস্যস্য বৈধাৰী পুত্ৰত্তে নবনাতপিওমতকুং মুফক্মমান্তগৃহাদ্-বিনাস। পিদদার তদ্য কণিকাং নিদ্রাণডিস্তান্ত্র। ইত্যক্তা কুলব্লয়। হৃতযুগে দৃষ্টিং বিভুগ্নক্রণি স্মেরাং নিক্ষিপতী সদা ভবত বং ক্ষেমায় গো**ঠেখরী ম** জত্রালি মুখে। গৌণদা ॥ ২৭॥ । তত্ত্ব ভয়ানকাষ্ট্র হাস। করুণানাং যথা॥ কম্প্র। সেদিনি চূর্ণকুঞ্জতটে ক্ষারেক্ষণা ভুন্সিতে

শেষকসংভাবা <u>শীরকেখরীব</u>চনাৎ করুণাবকশেং ॥ ২৭ ॥

সবো লোফি গিরীক্রং বিভাগসা হরেশ্চুগকুন্তলভটে স্বেদিনি সভি কচ্ছেন-এন্থলে মুখ্য অঙ্গি বংগলরদে গৌণ করুণ বসের অঙ্গত। ॥

মুখ্য অঙ্গ্রি বংসলরদে গৌণহাস্যরদের অঙ্গতা যথা।।

যশেদে : তোমার পুত্র আমার গৃংমধ্য হইতে বিদ্যাদ পূর্বক ফুল নবনীতপিও অপহরণ করিয়া পলায়ন করিয়াছে দেই ন্বনাতপিণ্ডের কণিক। এই নিদ্রিত বাগকের বদনে নিরীক্ষণ কর, কুশহুদ্ধা এই কথা বলিলে, কুটিল জ্রাশালি হাত-বদনে সহাস্য দৃষ্টিনিক্ষেপকারিণী অঙ্গেশর৷ তেঃমাদের কল্যাণ নিমিত্ত হউন ॥

**এन्हरन मुंबा व्यक्ति वर्शन बरम (गोवहाम। ब्रायक व्यक्त ॥२०॥** মুধ্য অন্ধি বংসলরসে গৌণভয়ানক অমুত

হাস্য ও করুণরসের অঙ্গতা যথা ৫ জ্রিক চাবর্দ্ধন পর্বত ধারণ করিলে পর তদীয় চুর্ণ- সব্যে দোকি বিকাশি গণ্ডকলকা নীলাম্যভঙ্গীশতে। বিভ্রাণম্য হরেগিরীন্দ্রমূদয়রাপ্পা'চরোদ্ধাস্থতো পাতু প্রস্নবসিচামানাসচয়া বিশ্বং ব্রজ্ঞানীশ্বরা ॥ অত্র মুখো চতুর্বং গোণানাং ॥ ২৮ ॥ কেবলে শংসলে নাল্ডি মুগ্যন্তা গলু সৌহৃদং! অতোহত্র বংসলে তম্ম নতরাং লিখিতাসংগ্যা ২৯॥ অথোগ্র্লে প্রেয়ানো যথা॥

जाभिकः योकाः ॥ २৮॥

কেবলে শুক্ষে বংগলে তার নাজীভাপলকণং কুজচিগনাজাপ্লেলং। ভদা মুবদা॥২১॥

কুন্তল তটে ঘর্মবারি নিরীক্ষণ করিয়া যশোদা কাম্পত হইতে লাগিলেন, পরে বর্থন বামধাত্ উর্দ্ধে উত্তোলন করিতে দেখি-লেন তথন ঐ বশোদার চক্ষ্ বিস্ফারত হইয়া উঠিল, তৎপরে শিক্তক যথন বদনের শঙ শত লালা প্রকাশ কারতে লাগিলেন তদ্ধনি ঐ বশোদার গড়ত্ব প্রফুল্ল হইখা উঠিল, পরে যথন আক্রেকের ঐ ব্যাবাত্ বত গাল উদ্ধে অবস্থিত রহিল তথন ঐ যশোদা গলিত-রাম্পবারি হারা বসন আর্জি করিয়া ফোললেন আহা। ঐ ব্যক্তেশ্বনী সমুলায় জগৎ রক্ষা করেয়া

প্রস্থা অঙ্গি বংশলরদে গোণ ভয়ানক, অন্তুত হাসতে করুণরদের অঙ্গৃতা ॥ ২৮ ॥

় শুদ্ধ বংশলরগে মুখ্যরগের সৌহার্দ্দ নাই, এ কারণ এই বংশলংশে মুখ্যরশের অঙ্গতা লিখিত হইল না॥২৯॥

অথ মুগ্য অন্ধ্রি শৃঙ্গাররদে মুখ্য স্থাঃদের অঞ্চা যথা॥

মহেশশীলিততনো: স্বলস্য পশা
বিত্তস্থ মঞ্ভ্রম্দিন্ন ভূকং মুক্দাঃ।
রোমাঞ্চকফ্ কজুদাঃ স্ফাটমসা কর্ণে
সন্দেশমপ্রিত তথি মদর্থনেব ।
করে মুখ্যে মুখ্যস্তা ॥ ৩০ ॥
তব্রেব হাস্তস্ত যথা ॥
সনাতিঃ তব নির্দ্ধে প্রিচিনোধি ন ত্বং কৃতঃ
কুরু গ্রেঘনির্ভরং মুম কুশান্তি কণ্ঠগ্রহং।

মংগ্রেছি। স্থালেন ত্রেশকারণমিদং নর্মণেতি জ্রেয়ং॥ ০• ॥ ক্ষামি ত্র নির্দ্ধি ইত্যর্দ্ধে। ত্রামি স্বয়ক্ষরী ম্মর্সি মাং **ফঠোরেণ কিং** 

শ্রীরাধা কছিলেন, সথি! অবলোকন কর, আমার বেশধারি পুলকাকুল কলেবর স্তবলের স্কন্ধে উন্ধৃক্ষ ভূজ স্থাপন
পুনক স্পান্টরূপে উহার কর্ণে আমার নিমিন্ত কোন সংক্ষেশ
অর্পণ করিভেছেন॥

এন্থলে মুখা অলি শৃলাররদে মুখ্য সধানসের অঙ্গতা ॥৩০
মুখ্য অলি শৃঙ্গাররদে গৌণ হাস্তরদের অঙ্গতা যথা॥
হে নির্দিয়ে! আমি তোমার ভগিনী ভূমি কেন আমাকে
চিনিতে পারিভেছ না, হে কুপালি! প্রণয়ে নির্ভির করিছা।
আমার কণ্ঠ ধারণ কর, যুবতি বেশাচছার হির এইরূপ মনোজ্জা
বাক্য প্রয়োগ করিলে প্রিরাধা জানিতে পারিয়াও গুরুজনের
সমক্ষে ইবৎ হাস্য করিলেন॥

ইতি ক্রবতি পেশনং যুবতিবেশগৃঢ়ে হনো কুতং স্মিতমভিজ্ঞবা গুরুপুরস্তদা রাধ্যা ॥ অত্র মুধ্য গৌণস্ত ॥ ৩১ ॥ তত্ত্বৈব প্রেয়ে বীরয়োর্যথা ॥ মুকুন্দোহয়ং চন্দ্রাবলিবদনচন্দ্রে চটুলতে স্মরস্মেরামারাদ্দ্রমসকলামর্পনতি চ । ভুজামংসে সংখ্যে পুলকিনি দধানঃ ফ্লিন্ডি-মিতারিক্ষেড়াভির্ষদক্জমুদ্যোজয়তি চ ॥ তত্ত্ব মুখ্যে মুখ্যগৌণয়োঃ।

কুক প্রাণরনির্ভরং মম স্থক ঠি কঠগ্রহমিতি পাঠা মর: ॥ ৩১ ॥

মুকুন্দোহয়মিতি । শ্রীচন্দ্রাবলী দখ্যা ভাবনা । সাচ তয়োম ধুরাং রতি

এস্থলে মুখ্য অঙ্গি শৃঙ্গাররদে গৌণ হাস্তরদের অঙ্গৃত।। ৩১
মুখ্য অজি শৃঙ্গাররদে মুখ্য প্রেয়ঃ ও গৌণ বীররদের
অঙ্গতা যথা।।

চন্দ্রবিশীর সধী মনোমধ্যে চিন্তা করিতেছেন, কি আশ্চর্য্য ! এই মুকৃন্দ চন্দ্রবিশীর চঞ্চল তারকান্ত্রিত বদনচন্দ্রে দূর হইতে কন্দর্শভাব প্রকাশক হাস্থ্যপূর্ণদৃষ্টি নিক্ষেপ এবং স্থার পুল-কান্ত্রিত ক্ষক্ষে সর্পদৃশ ভূজলত। স্থাপনপূর্বিক ঘন ঘন সিংহ-নাদ ধারা ব্যাহ্যরকে যুদ্ধে উদ্যুক্ত করিতেছেন ॥

**এছলে মুধ্য অন্ধি শৃসাররদে মুধ্য প্রে**য়ঃ ও গৌণ বীর-রনের অসতা ॥

# উতর। ৮ম। লংরা ] ভ ভিরণায়ত নিরু:।

অথ গোণানামঙ্গিতা ॥
হাস্তাদীনাস্ত গোণানাং যতুদাহরণং কৃতং ॥
তেনৈষাম ক্ষতা বাক্তা মুখ্যানাঞ্চ ভথাপতা ।
তথাপাল্ল বিশেষাল কি ফিলেব বিশিষ্যতে ॥
অথ হাস্তেহদিনি শুচেরপতা যথা ॥
মদনা ক্ষিত্য বিশ্বতার
প্রসভং পীতপটাঞ্চলে ধ্রতে ।
অদধাবিনতং জনাপ্রতো
হরিক্রৎফুল্লকপোলমাননং ॥
তত্র গোণেহ স্থিনি মুখ্যেস্পতা ॥

মানহৈবে প্রবৃত্ত। প্রেরোবীবো ভূ তদমুসদিনে বিধারেতি। যুক্তমুক্তং তরৈব প্রেরো বীবয়োগ্পতি। এবমনাত্রাপি ক্রেরং। ইভানামরবো বিজাবিকা বা

অথ গোণনস সকলের অঙ্গিতা।।
হাস্যাদি গোণনদের যে সকল উদাহরণ প্রদর্শিত হইয়াছে
তাহাতেই ইহার অঙ্গিতা ও মুখোর অঙ্গ হাক্ত হইয়াছে,
তথাপি অল্ল বিশেষন নিমিত্ত কিঞ্ছিং শিশিতেছি।।

অথ অ'ঙ্গ গৌণ হাসারেসে মুখ্য শৃগাররসের অঙ্গতা যথা। ব কুজা কামান্ধ হইয়া হঠাৎ পীতবসনের অঞ্চল ধারণ করিলে শীক্ষা জনগমকে প্রফুল গণ্ডশানী স্বীয় বদন অব-নত ক'রিয়াছিলেন।

এছলে গৌণ অবি হাগ্যরসে মুখ্য শৃকাররসের অক্তমা ।২৫

বীরে প্রেয়সে। যথা ॥
সেনান্তং বিজিত্মবেক্য ভদ্রসেনং
মাং যোদ্ধুং মিলসি পুরং কণং বিশাল
রামাণাং শতগপি নোন্তটোরুগনা
শ্রীদামা গণয়তি রে স্বমত্র কোহসি ॥
শ্রোপি গৌণেহ ক্লিনি মুখস্তে ।
ব্যাদ্রে প্রেয়ে বীরয়োর্যপা ॥
যত্তনক্লন নিক্লনে জ্বং
শিশুপালং সমরে জ্বংস্থাভিঃ ।
শ্রতিলোহিতলোচনোংপলৈ-

কেড়াঃ সিংহনাদান্তাভিঃ ॥ ৩২ ॥

**অত্তাপীতাত মুখাদোতি জী**লামেং রামপ্রতিবাছতু ক্লপকপ্রবেশেন তং-সংব্যা পু**ইতাপতেঃ ॥ ৩৩**॥

গৌণ অসি বীররদে মৃথ্য প্রেয়োরদের অঙ্গতা যথা।

অরে বিশাল। সেনাপতি ভদ্রদেনকে পরাজিত দেখিয়া

যুদ্ধ বাসনায় আমার অত্যে আদিয়া মিলিত হইতেছিদ্ কেন?

এই উদারবৃদ্ধি প্রীদাম শত শত রামকেও গণনা করে না,

এথানে তুই কোথাকার কে ?॥

আছলে পৌন অঙ্গি বীররদে মুখ্য প্রেয়োরদের অঙ্গতা ॥ ৩২
গৌণ অঙ্গি রৌদ্রেন্দে প্রেয়া ও বীররদের অঙ্গতা যথা ॥
যতুনন্দন নিন্দাকারি উদ্ধৃত শিশুপালকে সমরে বধ করণেচহায় অতি লোহিতলোচন পাণ্ডুনন্দনগণ উত্তযোত্তয় অত্র

জগৃহে পাভুহুতৈব রাগুধং॥

অত্ত গৌণে মুখা গৌণরোঃ॥ ৩০ ॥

অতুতে প্রেমোবী হহাস্যানাং বধা॥

মিত্রানী কর্তং গদায়ুধি গুরুদ্মন্যং প্রলম্বাহিষং

যন্ত্রীদামুঃ কিল বীক্ষা কেলিসমরাটোপোৎসবে পাটবং
ক্ষঃ কুল্লকপোলক পুলকবানু বিক্ষারদৃষ্টিব ভো॥

মিআনীক্ষিতি ক্সাচিনগুল সপুৰ্ব কিং। অতৈখন চৈতে রসা উদাহার্যা:।
নতু শ্রীকৃষ্ণনা ভক্তিরতৈখন প্রকৃতবাং। তর্পানতয়া ষ্ট্যা বিজিভোতি শিক্ষাবিশেষাধিকামভিপ্রেতং। স্থিত্বনাঙ্গীকৃতের সম্ভবতিচ তত্তদিতি স্মরাটোপক্রম ইতোব পাঠ:॥ ৩৪॥ .

भाग क्रिमिक्टिन ॥

এ স্থলে গৌণ অঙ্গি রোজনণে মুখ্য প্রেয়ঃ ও গৌণবীর রসের অঙ্গতা ॥ ৩০॥

পোণ অঙ্গি অভুতরদে প্রেণঃ, বীর ও হাস্তের অঙ্গতা যথ। ।

শ্রীদাম মিত্রমণ্ডলী পরিবৃত গদাযুদ্ধে গুরুম্মনা প্রলম্বারি বলদেবকৈ তুর্বল যপ্তিবারা পরাজয় করিয়া অত্যে উচ্চৈ:মরে গান করিতে থাকিলে, শ্রীদামের যুদ্ধলীলার পটুতা দেবিয়া শ্রীকৃষ্ণ ফুলগণ্ড, পুলকাষিত ও বিস্ফারিজনেত্র হুইরা শোভা পাইতে লাগিলেন ॥

অত্র গৌণে মুখ্যস্ত গৌণয়ে।শ্চ ॥ এবমন্তস্ত গৌণস্ত ছেরা কৈবিভিৎ দিত।। তথাত্র মুখ্যগোণানাং রদানামঙ্গভাপিচ। সোহক্ষা সর্বাতিলো যঃ স্থান্মখ্যো গৌণোহথ বা রসঃ। স এবাঙ্গং ভবেদঙ্গিপোষী সঞ্চারিতাং ব্রজন্॥ তথাচ নাট্যাচার্য্যাঃ পঠন্তি ॥ এক এব ভবেৎ স্থায়ী রসে। মুখ্যতমো হি যঃ। রসাস্তদসুযাথিস্থাদতো স্থাব্যভিচারিণঃ ॥ ৩৪ ॥ **बी विकृधार्या उटाउठ**ु॥ রসানাং সমবেতানাং যস্তা রূপং ভবেদ্বছ ।

এ স্থলে গৌণ অঙ্গি অভূতর্গে মুখ্য প্রেয় এবং গৌণ বার ও হাস্তের অঙ্গতা॥

রূপংশ্বরূপং বছ অধিকং। শেষা: সঞাবিণো মতা ইতি তন্মতেইপি স্থাস্থা

এইরার অন্য গোণনদের অঙ্গিতা এবং মুখ্য ও গোণ রদের অঙ্গত। জানিতে হইবে॥

মুখ্য হউক বা গোণ হউক. যে রদ দকল রদকে অতি-ক্রম করে ত। হ।কে অস্থা, আর যে রস অঙ্গিরসকে পুষ্ট করিয়া সঞ্চারিতা প্রাপ্ত হয়, তাহাকে অঙ্গ বলে॥

অতএৰ নাট্যাচাৰ্য্যগৰ বলিয়াছেন ॥

রদের মধ্যে যে রদ দর্শব প্রধান দেইটীমাত্র স্থায়ী, ভদ্তির অক্সরস সকল ভদসুগামা প্রযুক্ত ব্যভিচারী হইবে॥ ৩৪॥।

**बि**रिकुषर्या उत्त यथा ॥

রস সকল একতা মিলিত হইলে তন্মধ্যে যাহার স্বরূপ

ग मखरगा तमः श्राणी শেষাः मक्षाति । । ইতি ॥
खোকাদি ভাবন। জ্জাতঃ সম্প্রাপ্য ব্যাভিচারিত। ।
পুক্ষ দ্বপ্রভুং মুখ্যং গোণস্ত তৈবে লীয়তে।
প্রোদ্যন্ বিভাবনোৎ কর্ষ ৎ পুষ্ঠিং মুখ্যেন লম্ভিতঃ।
কৃষ্ণতা নিজনাথেন গোণোপ্য প্রিছমশ্লুতে ॥ ৩৫॥
মুখ্য অপ্রস্থানাদ্য পুক্ষ দ্বিদ্যান্ত বিভবঃ।
গোণমেবাঙ্গিনং কুরা নিগুঢ়নি জবৈভবঃ।
অনাদিবাসনোদ্যাস্বাসিতে ভক্ততে সি।

ধাবানবাভিতারিণো শৃঙ্গারশাস্তে সঞ্চারিণাবিব স্বস্থাধারাদ্বাভিচারিণো হাস্যা-দয়স্থ সঞ্চারিণ এবেতি ভেদাংশে লক্ষেহপি যথা পোষকতাসহযোগিতাদংশেনা-ভেদবিবকং তথাত্রাণি স এবাঙ্গমিত্যাদিনোক্রমিতি দর্শিক্তং॥ ৩৫॥

অনানীভাপলকণং পৃক্ষিদ্ধতে তাংপর্যাও। সঞ্চারিগৌণবদিতি ব্যক্তি

অধিক হইবে সেই রসকে স্বায়ী, আর তদ্তির অন্যারস সকলকে সঞ্চারী বলিয়া জানিতে হইবে ॥

অল্লনিভাবোৎপন্ন গৌণরদ ব্যভিচারিতা প্রাপ্ত হইয়া নিজ প্রভু মুখারদকে পোষণ কর্তঃ তাহাতেই লীন হয়।

বিভাবের অঃতিশবং হইতে উদিত হইগা সঙ্কুচিত নিজ নাথ মুখ্যরস্বারা পুষ্টি লাভ করত গৌণ রসও অঙ্কৃত প্রাপ্ত হয়॥ ৩৫॥

মুখ্যরস অকত প্রাপ্ত: হইয়া উপেন্দ্র অর্থাৎ বামনদেব যেমন ইন্দ্রকে পোষণ করেন, ভাহার আগ আপনার নিজ বৈভব গোপনপূর্বক গোণ অকিরসকে পুষ্ঠ করে কিন্তু এই ভাত্যের ন তু লীনংস্থাদেষ সঞ্চারিগোণবং ॥ ৩৬ ॥
অঙ্গী মৃধ্যঃ স্বমত্রাকৈ ভাবৈকৈর ভিবর্দ্ধরন্।
স্বজাতী থৈ বিজ্ঞাতা থৈঃ স্বতন্ত্রঃ সন্বিরাজতে ॥ ৩৭ ॥
যক্ত মৃথ্যক্ত যো ভক্তো ভবেরিভানিজাশ্রাঃ।
অঙ্গী স এব তত্র স্থান্ম্থোই প্যক্তেঙ্গভাং ব্রজেং ॥ ৩৮ ॥
কিঞ্চ ॥
আস্বাদে দ্রেকহেভুত্বসঙ্গ স্থান্ধর ক্রতে।
তিহিনা ভক্ত সম্পাতো বৈফল্যা যৈব ক্রতে।

রেকে দৃষ্টান্ত: সঞ্চারিবল্যোণবচ্চ নেত্যর্থ:॥ ৩৬ ॥

স্বমাত্রাক্টেরত্যের পাঠঃ। বিজাতীয়েঃ শত্রুবজ্জিতৈঃ কৈশ্চিৎ পূর্বাদশিতৈ রহৈন্তরপি॥ ২৭॥

মুখ্যস্যেতি লীলাভেদেন প্রকটিতনিজমুখ্যতাবিশেষস্যেত্যর্থ: ॥ ৩৮ ॥ অঙ্গিনি ষদক্ষস্যাস্থ্য: তৎ থবাপাদোদ্রেকহেতুত্বমেব নাক্সদিত্যর্থ:। তদেও

মুখ্য গৌণ সঞ্চারির স্থায় লীন না হইয়া অনাদি বাসনার প্রভাব গন্ধশালি ভক্তে উদিত হয়॥ ৩৬॥

মূধ্য অঙ্গিরস অঙ্গস্তরূপ স্বজাতীয় বিজাতীয় ভাবসকল দারা আপনাকে বর্দ্ধিত করিয়া স্বতন্ত্ররূপে প্রকাশ পায়॥৩৭॥

যিনি যে মুখ্যংসের ভক্ত তিনি আপনার নিজ রসেরই আ। এত হয়েন, তাঁহার সহলে সেই রসই অঙ্গী হয় অন্য মুখ্য রস সকল অঙ্গঙা লাভ করে॥ ৩৮॥

আরও বলি॥

অভিনয়ে যদি অপরস আফাদাতিশয়ের হেতু হয়, ভবেই

যথা মৃক্টরসালায়াং যবসালেঃ কথঞ্চন ॥
তচ্চ পিনে ভবেদের সত্গাভাবহারিতা ॥
অথ বৈরিক্তাং ॥
জনয়ত্যের বৈরস্তাং রসায়াং বৈ রণা যুতিং ।
তথ্য হি ॥
তথ্য হি ॥
তথ্য হি ॥
তথ্য হি ॥
বিশ্বালাং মে ব্যতীতঃ
কালো ভূয়ান্ হা সমাধিত্রতেন ।
সাজ্যানন্দং তথ্যা ত্রকা যুত্তং
বোণোনাক্ষঃ সাচি সব্যস্ত নৈক্ষি॥

দশ্যতি তথিনেতি ৷৷ ৩৯

তাহার অন্তর্ন, তদ্ভিন্ন তাহার সম্পাত অর্থাৎ মিলন সে কেবল বিফণমাত্র, যেমন স্থমিষ্ট রসালার সহিত্ত তৃণাদির চর্বণ করিলে তাহাকে সতৃণাভবেহারী বলে তজ্ঞপ ॥

অথ বৈরিক্তা॥

রসদকশের বৈরির গহিত মিলন বিরস্ভা উৎপাদন করে, যেমন স্থমিষ্ট পানকাদির মধ্যে কারামাদির সংযোগ বিস্থান জন্মায় তদ্রপ

**উक्टार्थित क्षत्रान यथा ॥** 

হার! ত্রন্মনিষ্ঠ সাদৃশকনের সমাধিতত্থার। বহুকাল নিফলে গত হইল, আমি সাজানশ জন্মনুঠি জীকুকত্ত বাফ-নেত্রের কোণেও প্রলোকন করিলাম না । জত্র শান্তস্থোজ্জলেন বৈরস্থা।
কণমপি পিতৃকোটিবৎসলং তং
স্থারমুনিবন্দি গুপাদমিন্দিরেশং ।
অভিনয়তি বরাঙ্গনানগান্তক্ষুরিততমুং প্রভূমীকিতুং মনো মে॥
তত্ত্ব প্রীতস্থোজ্জলেনেব ॥
দোর্ভ্যামর্গনদীর্ঘাভাগং দথে পরিরভন্দ নাং।
শিরঃ কৃষ্ণ তবাভায় বিহরিষ্যে তত্ত্বয়া॥
ক্ষাত্র প্রেয়দো বৎদলেন ॥ ৩৯ ॥

এসংলে শান্তরসে শৃঙ্গার রসদারা বিরসতা উৎপন্ন হইল।
বিনি কোটি কোটি পিতৃ অপেক্ষাও বংসল, দেবও মুনীদ্রস্থা নিরস্তর যাঁহার চরণারবিন্দ বন্দন। করিতেছেন, যিনি
লক্ষ্মীর কান্ত এবং যাঁহার ভনু বরাঙ্গনাগণের নথচিচ্ছে স্থানাভিত্ত, ক্রালাল সেই প্রভূকে দর্শন করিতে আমার মন অভিভাষ করিতেছে।

এন্থনে উদ্ধন রস্থারা প্রীতর্সের বিরস্তা॥
সংগ! অর্গলদদৃশ দীর্ঘ ভুজযুগলবারা আমাকে আলি সন
ক্ষা, তে কৃষ্ণ! তোমার মস্তক আজ্রাণ করিয়া পরে তোমার
বালে বিহার করিব॥

যং সমস্ত্রনিগমাঃ পরমেশং সাহতান্ত ভগবন্তমুশন্তি। তং স্ততেতি বতসংহসিকী ছাং ব্যা'জহীৰ্যত্ কথং মম জিহবা॥ অত্র বংসলতা প্রীতেন। एडिशिम • त्ना नगरपीय गण्यामः। অদ্যৈব দৃতি তেন হং মধা রময় মাধবং ॥ অত্যেজ্জণশ্য শান্তেন ॥ ৪০॥ চিনং জীগেতি সংযুক্ত কা'চদাশীর্ভিরচ্নতং।

সমত্তনিগ্ম: ইতি ত্ত সম্বয়াদিতি ন্যায়েন সম্ভং নিগ্ময়ভি নিগ্লাৰ্থং সমত্ত সম্বিত কুর্বন্ধি যে তে বেদান্তিন ইতার্থঃ। প্রমেশং পরবৃদ্ধপর্যারং সাহতাঃ পাক্ষবাত্রিকাঃ। ভগবস্তুং বাস্থদেবপর্যায়ং ॥ ৪০ ॥

চিরঞ্জ বৈত্যুলাহরণায় কল্পনামাত্রং। এবনক্সরাপি ক্লেরং॥ ৪১॥

यांशांक भमन्त्र देवतान्त्रिक शा भारमध्य विनाश शांकन. পাঞ্চরাত্রক প্রভৃতি বৈষ্ণবৰ্গণ বাঁহাকে ভগবান বলিতে ইচ্ছা করেন, সেই ভূমি, তোখাকে হে স্কৃত। এই বলিয়া সম্বোধন করিতে আমার জিহা। কিরপে মাংসিকী ইইবে॥

এম্বলে খীত্রসভার। বৎসল রসেম্ব বিরস্তা॥

पृष्टि ! विद्वार विलासित शाह नगर्योयन मण्लाम् मकन অতিশয় চঞ্চল, অভএৰ হে সখি! আমার সহিত অদ্যই ভূমি মাধ্বকে ব্যুণ করাও ॥

এম্বে শান্তরস্থারা শৃঙ্গার রসের বিরস্তা 👭 ৪০ 👭 কৈলাদত্বা কোন কামুকী ত্ৰী কহিলেন, কৃষ্ণ ! ভূমি \*\*

কৈলান্থা বিলাদেন কামুকী পরিষম্বজে ॥
তত্ত্ব শুচের্বংসনেন ॥
শুচেঃ সম্বন্ধগন্ধোহিপি কর্থঞ্চিদ্যদি বংসলে।
কচিন্তবেন্ততঃ স্থান্ধ্য করতে।
পিশিতাসঙ্ময়ী নাহং সত্যমন্মি তনোচিতা।
স্বাপান্ধবিদ্ধাং শুনোকরপ্যান্ধা কুরুষ মাং॥
অত্ত শুচের্বিভংগে॥ ৪১॥
এবমন্তাপি নিজ্যে। প্রাইন্তর্গবিরোধিতা।
প্রায়েনেয়ং রসভোসকক্ষায়াং প্র্যবস্তুতি॥ ৪২

প্রান্ধেণিত কেচিদ্রদাভাদাদপ্যধমকক্ষারং পর্য্যবদ্যস্তীত্যর্থ:॥ ৪২

চিরজীবী হও বলিথা আলিঙ্গন করিলেন॥

এস্থলে বৎসলরস্থারা শৃঙ্গার রদের বিরস্তা॥

শুদ্ধ বৎসলরদে যাদ কথঞ্জিৎ শৃঙ্গার রদের গদ্ধও থাকে,
ভাহা হইলে ঐ বৎসল বিরস্তা প্রাপ্ত হয়॥

হে শ্রামাক ! যাদচ এই মাংল রক্তমন্ত্রী আমি তোমার যোগ্য নহি, তথাপি কুপাপুর্বক ছদীয় অপাক্ষবিদ্ধা আমাকে অক্সকার কর ॥

একলে বীভৎসরদবারা শৃগারের বিরস্তা ॥ ৪১ ॥
প্রাক্ত ব্যক্তিগণ এইরূপ অভাত রস বিরোধিতাও অবগর্ত
হইবেন, এই রস বিরোধিতার প্রায় রসাভাসককা। পর্যাবসান হইয়া পাকে ॥ ৪২ ॥

কিঞা

च्द्रादिक उत्राख्य वादार ब्राट्स नाम वर्गन । व्यर्गमान्डयाश्रादको मात्मान बहत्नश्री ह। বদান্তরেণ বাবদো ভটক্ষেন প্রিরেণ বা। বিষয়। প্ৰায়ভেদে চ গৌণেন বিষতা সহ। ইত্যাদিয়ু ন বৈরস্তং বৈরিশে। জনয়েদ্যুতি ॥ ৪০॥ কানেকত্বতা বাধ্যকেন বৰ্ণনে ॥

तानाकः वाशारवाशाकः अवस्य वाशारवारता। अवजोकाभवर्तान वृक्तिनकः শিত্ত্যা নির্পণ ইতার্থ:। অতো বাধারা অযোগাস্য তথা বর্ণনে তু বৈরুষ্য त्यत्वि जातः । ज्विन नक्ता मखनवहनन्। शामात्वे कक्रमन्त्रताः देवन्त्रादिनः বেতি বোধাং। বিতীয়োহপাপিশক: পূর্ববং। অতো বর্ণনীয়ানাং শৃলায়াদী-नाः वीङ्गानिङ्ः गामावहनमञूहिङः। व्यशिनस्या विक्काः त्रगासदार्गकार्ता ह वाक्तिहारता महेवाः। वरमणानीनाः देवतिरयार्गं वावधाननरजनाभि देवत्रमाः ভাবামুপপত্তে:। বিষয়াশ্রহভেবে চ তত্ত্র-ভক্তিরসিকাভীইনা রসবিশেষন্যান্যত্ত সমতাং দর্শবন্ধিরটনাঃ প্রতীতে ত্যাবেহণি ভক্তিরসিটকবীতংগিততরা জাতে अभी ज्ञामि (खबर ॥ ८० ॥

তুইয়ের মধ্যে একের বাধ্যত্বরূপে উপবর্ণনে অর্থাৎ যুক্তি-সম্বলিত নিরূপণে, স্মরণের যোগ্যতারূপ উক্তিতে, সাম্ব ৰচনে, রদান্তর তটক্ষ বা ক্ছাদের বার। ব্যবধানে এবং গেণি শক্রের সহিত বিষয় ও আগ্রায় ভেলে ইত্যাদি স্থান সকলে সংযোগ বিৰুদের নিমিত্ত হয় না॥ ৪৩ ॥

তশ্বধ্যে একতনের বাধ্যত্তরপ বর্ণনে হথ। ॥

যথা বিদশ্ধনাধৰে ॥
প্রত্যাহৃত্য মুনিঃ ক্ষণং বিষয়তে। যক্ষিশ্বনো বিৎদত্তে
বালাদো বিষয়েষু বিৎসতি ততঃ প্রত্যাধ্রস্তা মনঃ।
যক্ষ ক্ষৃতিগবায় হস্ত হৃদয়ে যোগী সমুংকঠতে
মুশ্বেরং কিল তক্ষ পশ্য হৃদয়ামিক্রান্তিমাক।জ্কতি॥ ৪৪॥।
বাধ্যমত্র শান্তক্ষ শুচে রুৎকর্ষবর্ণনাৎ॥ ৪৫॥

প্রত্যান্ধত্যতি। অত্র পূর্কার্দ্ধে মুনের্বালায়ান্চ প্রথমা নিষ্ঠা। উত্তরাক্ষে ন্যোগিনস্তদ্যান্চ ক্ষুট্মুন্তরা॥ ৪৪॥

বাধ্যত্তমিতি পূর্ব্বপদ্যে শ্রীরাধামাধবরহস্যসহায়তরা পৌর্ণমাস্যাধ্যতপ্রিন্যা রস্বয়ং ভাবিতং। মুন্যাদাস্থলারেণ শাস্তঃ। শ্রীরাধাদ্যস্থলারেণ শুচি:।

অত মুনিযোগিনোর্যোগবলেন প্রবর্তমানস্যাপি মনসম্ভতাপ্রবৃত্তঃ। শ্রীরাধান্য

## विषयमाध्य २ च्या २० (सारक ॥

পৌর্ণমাসী কহিলেন, নান্দীমুখি! আশ্চর্য্য দেখ, মুনিগণ বিষয় হইতে প্রতিনির্ভ করিয়া ক্ষণকালের নিমিত্ত যেমন শ্রী-কুষ্ণে প্রবেশ করাইতে ইচ্ছা করেন, এই বালা কি না তাঁহা হইতে ঐ মন প্রতিনির্ভ করিয়া বিষয়াদিতে নিয়োগ করিতে ইচ্ছা করিভেছেন। হা কন্ট! যোগিগণ হালয়মধে। যাঁহার ক্ষৃতিলেশ নিমিত্ত যদ্ধ করিয়া থাকেন, এই কি না ভাঁহাকে হালয় হইতে বহিজ্ত করিবার নিমিত্ত অভিগায ক্রিভেছেন॥ ৪৪॥

এ স্থলে শৃঙ্গাররণের উৎকর্ষবর্ণন হেতু শান্তরদের বাধ্যত্ব ভইশা ৪৫॥

जार्रामात्व यथा ॥ সূত্ৰ বৈহাসিকভাবিনোলৈ-ত্ৰ জন্ম হাসে।কামসন্বিধাতা। क्षणीश्राद्धनांना विक्रमार्थाः করোতি হা নঃ পরিদেশনানি ॥ ৪৬॥ সামেনে শচনেন যথা। বিশ্রান্তবে।ডশকলা নির্বিকল্লা নিরার্তি: গ

ধর্মভরেন বাধামানস্যাপি তস্য ভ্রমিন প্রবৃত্তে: পূর্ব্বসা নিম্কর্মণ প্রস্যা তৃ প্রক্রমণ ম্পট্র এবেতি কিন্তীদৃগ্রগনং বক্তাতেদেনৈবাদোরার ক্রেরং সভু সর্মাঞ্জ ॥ ৪৫ ॥ न এব ইতি পদ্যবন্ধ কেবাঞ্চিৎ কোদিউদিবিঠানাং বচনং। বদিদ্দতিলিঞ্জ-चडावानाः त्निक नकारक बक्रहानांद स्वजाः। उमा देवशनिकामिनकार्माः व्याताभारतीर्वि शार । नात्रनः उन्नानियानानाः राज्याः चत्रः छगवन्नव्यानार ॥ ८७ ॥ বিভান্ত: প্রাপ্তবিভাষা বোড়শকলা রচনা: শৃলারা ব্যাণ্ট। পক্তে विद्यांकः निक्रमात्रः (बाङ्गकनः निक्रमत्रीतः यंत्रााः निर्विता स्कृत्याज्यक्षा

## न्यर्रामात्व राशा ॥

वर्गच (कान कूप्त रमवक। कहिरमन, विनि अविदार्गरकत কৌ হু কৰারা অঞ্জের হাস্তোদগমের সম্পাদক ছিলেন। হার १ (न हे कुछ जाज क्नीयत कानिय कर्जक आक्रुके हहेबा जाया-দের বিলাপদকল বিস্তার করিতেচেন ॥

#### मामायहरून यथा ।

রাধে ! তোমতে যোড়শকণা শুকাররচনা, বিশ্রাম প্রাঞ্জ ৎইগ্নাছে, ভূমি নির্নিক্লা কর্বাৎ হুপর প্রভাকরপে নির্নীত হথাত্বা ভবতী রাধে ত্রক্ষবিদেবে রাজতে ॥
যথাবা ॥
রাধা শান্তিরিবোন্ধিজং নির্নিমেষেক্ষণঞ্চ মাং ।
কৃবিতা ধ্যানলগ্রহু বাস্ত্রতাদ্রিকন্দরে ॥ ৪৭ ॥
রসান্তরেণ ব্যবধী যথা ॥
হং কাসি শান্ত। কিনিহান্তরাক্ষে
দক্তুং পরং ত্রক্ষা কৃতন্ততাকী ।

নির্ণীতা পক্ষে ভেদরহিতা। অত্ত হেতুনি রার্তির্লাতাদিব্যবধানরহিতা। পক্ষে অণাবরণশূনাব্রক্ষবিদ্যা ব্রহ্মান্থতবঃ তদেতদ্বিধম্পি বর্ণনং নর্ম্মস্থমেব রুদান্ত্র সম্পাদ্যত ইতি তথোদান্তং মুক্তিশ্রীরেবেতি পাঠস্ত্যক্তঃ ॥ ৪৭ ॥

সং কাসীতি। অত রূপগান্ত তত্থা তদাা: শান্তিরতিমাচ্ছাদা মধুররতি-

হইয়াছ, তোমার লতালে ব্যবধান নাই এবং তুমি স্থম্মী স্বরূপে প্রক্ষবিদ্যার ন্যায় অর্থাৎ স্বমধুরভাষিণী হইয়া বিক্লাজ ক্রিতেছ।

#### যথাবা

শ্রীরাধা শান্তির ন্যায় আসাকে নিজাশূন্স, নিনিমেষ লোচন ও খ্যানগংলগ্ন করিয়া পর্বতক্ষরে বাস করাই-তেছে। ৩৭।

### क्रमाख्यत्वाता व्यवसान यथा ॥

হে রজে! তুমি কে ? রস্তা কহিলেন আমি শান্তা তবে এই স্থাকাশে কেন ? রস্তা কহিলেন, পর্মত্রহ্মকে দেখিবার নিমিত, কেন চক্ষুঃ বিক্ষারিত করিণা, রস্তা কহিলেন, যাঁধার

অস্থাতির পাৎ কিমিবাকুলার। बास मगा कि जिला या वर्ग ॥ অত। हर्नेन वार्याः ॥ िस्य जिल्ला युवा शिवनाय त ত্বক শাত্রাহ-বোম-নগ-কেশ-পিনজমন্ত-মাংসান্থির ক্ত-কৃমি-বিট্ কপ-শিত্তবাতং। জী গ্লেবং ভন্নতি কা গ্ৰমতিবিষ্টা যা তে পদাভ্রমকর পমজি এতা স্ত্রী ॥ ৪৮॥

क्याविछ।। वाविश्यम्भारभागातभाग्वावानविधः माकाः चरवाका। कृ वरेवत्रमाः ७८ খনু নি বধ্যতে। ফিব্ৰ শাস্ত্ৰসঙ্গেন যত্তদেবেতি ভাবঃ। এবমন্যআপি ॥ ৪৮ ॥

অভিশয় রূপমাধুর্যাহেতু। আকুলাত্মার মত কেন ? রস্তা कहिल्लन. (अनकाती कम्मर्भ गांकून कतिए आतस कति-अर्टि ॥

এম্বলে অম্ভতের মারা ব্যবধান ॥

উক্ত পদে৷ রূপের অমুতত্ব প্রযুক্ত রম্ভার শান্তি রক্তি আচ্ছাদন করিয়া মধুর রতি উদ্ভূত হইল 🖟

বিষয়ভিন্নতে যথা ॥

জীৰশমে ৬০ অধ্যায়ে ৪৪ স্লোভে 🛭

क्रिक्रीएम्बी कहिटनन, यामिन्! (य क्वी चाननात नामू-বিদের মকরন্দ আআণ পার নাই, সেই মূঢ়তমা বাছে শ্ৰন্ত, রোম, নব ও কেশ্বারা আফ্রাদিত, অন্তরে মাংস অহি. রক্ত, কুমি, বিষ্ঠা ও বাত পিত্ত কক্ষে পরিপুরিত 🔻 🛊 দশার প্রতুল্য দে**হকে কাজজানে ভলনা ক**রে॥ ৪৮ ॥

যথা বা বিদ্যানাধ্যে ॥
তত্য': কান্তত্যতিনি বদনে মঞ্লে চাক্ষিযুগ্যে
তত্তান্মাকং যদৰণি সংগ দৃষ্টিরেষ। নিনিটা।
সত্যং ক্রমস্তদবধি ভবেদিন্দু মন্দীবরঞ
শ্বারং শ্ব রং মুথকুটিল কাকারিনী ॥ং জ্বনীয়া ॥
উভয়ত্তে শুচিনীভংসয়োঃ।
আগ্রেভিন্নছে যথা ॥
বিদ্যানমজিতং বিলোকা ক্লেশ্বশ্ভূবি সংভ্তসাংযুগীনলীলং।
শশুপসবলদাং বপূংষি ভেজুঃ
পুলককুলং দ্বিষ্ঠাং তু কালিমানং॥

স্থারং স্থারমিতি হুণীয়েতি হুয়মপান্মাক্মিতাস্যেক কর্তু ক্রিয়াহলে চানিন্

यथा वा विषक्षमां १८व २ व्यः इह ६२ (भ्रांटक ॥

শ্রীকৃণ্ড কহিলেন, সথে! কি আশ্চর্য্য! সেই শ্রীরাণার কান্তিযুক্ত বদনে ও মনোহর নয়নযুগলে যে অবধি আমার দৃষ্টি নিবিক হইয়াছে, আমি সত্য বলিতেছি, সেই হইতে চন্দ্র ও ইন্দাণরকে স্মরণ করিয়া মুখ কুটিলতাকারিণী ঘুণা শ্রাণিয়া উপাত্ত হয়।

উভয় পদে শৃঙ্গার বীভৎনের ভিন্ন বিষয়ত। ॥ আশুখনিরতে যথা॥

্ বৃদ্ধকৈতে উত্তম যোদ্ধার ন্যায় বিলাসণ।লি অপরাকিত অক্ত্রককে বিজয়ী দেখির। বয়স্য গোপদিগের বপু: কালিমা বারণ করিয়াছিল ॥ শত্র বীবভবানকয়েঃ ।
বিষয়াশ্রমে ভাষেপ্র স্থান বিষয়াশ্রমে ভাষেপ্র স্থান বিবস্থা হৈব লায়তে ।
সঙ্গতঃ কিল মুখানা বৈবস্থা হৈব লায়তে ।
আত্র বিষয় ভাষে যথা ॥ ৪৯ ॥
বিখ্যাস্থাপ্র বিব্যাহ তাতুন চর ।
যানি কাশ্যাস্থাই যুনা যনঃ শামেন মে হৃতং ॥ ৫০ ॥
আত্র শুডেঃ গ্রীতেন ॥ ৫১ ॥
আত্রয়েভেদে যথা ॥

স্ক্রিকিয়ারাঃ পুর্বরায়ন্ল্ যুজাতে এব ॥ ৪৯ ॥

कांग्राः मान्त्राभिनः॥ ८०॥

প্রীতেন ত্রাঃ পিছবিওয়েশ। ভাবনবিশেষে ছত্রাপি ন দোষঃ। যথা । অহং এরান্যাক্ষাতা যার্থানাং প্রিঃ সত্। ত্রাদন্যো বরঃ কোবা ম্লাল্লু বার ক্রতাং। অগ্নীম্রাং সূর্যাং॥ ৫১॥

এছেনে বীর ও ভয়ানকবদের আপ্রায়েভিছতা । বিষয় ও আপ্রায়ের ভিন্নতা হইলে ও সুখা ও শক্তর সহিত নিলন এ কোণ মুখোর বিব্যাতার নিনিত হইয়া থাকে ॥ ৪৯॥ তথ্যদেঃ বিষয়ভেদে যথা ॥

কোন মধুবাবাসিনী স্ত্রা কহিলেন, পিত: ! শীজ অর্গণাবন্ধন বিনোচন করুন আনে সান্ধাপনেমুনির গৃহে গমন করিব,
শুনি যুগ অ মার বন হরণ করেয়াছেন ॥ ৫০ ॥ ॥

ক্ষরিশীক্চক।শ্মীর-পদ্ধিলোরংছণং কদা।
সদানন্দং পরং ব্রহ্ম দৃষ্ট্যা সেবিষ্যতে মধা ॥
অব্র শাস্তস্য শুটিনা ॥
অব্রক্তধিয়ো ভক্ত'ঃ কেচন জ্ঞানবর্মনি ।
শাস্তস্যাশ্রমিলম্মে বৈবস্যং নামুমন্যতে ॥
কিঞ্চ ॥
ভ্ ভ্যায়োনায়কস্যেব নিদর্গবেষিণোরপি ।
অন্তয়োরনিনঃ পুটেটা ভবেদেকত্র সন্তভিঃ ॥ ৫২ ॥
যথা ॥

ক্ষিণীতি। এবাত ওচেরাশ্রঃ। বকাতু শান্তস্য। ক্ষিণীত্যাদিভাব-নারাং তু ওচেরাশ্রঃ স্যাদিতি পক্ষেত্রভারেবে দোব ইতি ভাবঃ ॥ ৬২ ॥

যাঁহার ৰক্ষঃস্থল রুজিনীর কুচন্থ কুরুমহার। পক্ষিল হই-র'ছে, সেই সদানন্দ পরসত্রক্ষকে কবে আমি দৃষ্টিহার। সেবা করিব।

এস্থলে শৃগারদার। শান্তরসের আগ্রায় ভেদ হইল। ক্তকগুলি জ্ঞানমার্গে অসুরক্ত ভক্ত শান্তরসের আগ্রয় ভিন্ন হইলে ও বিরস্ত। স্বীকার করেন না॥

### আরও বলি ঃ

শ্বভাৰতে ভিত্যভ্যের নায়কের ন্যায় শঙ্কির পৃষ্ঠির নিবিত্ত শক্তরপ শঙ্করতেবর একত্র মিশন হইলা পাকে ॥ যধা ॥ কুমারন্তে মল্লা কুসুমন্ত্রকুমারঃ প্রিয়তনে
গরিচে হিয়ং কেশী গিরিবদিতি মে বেল্লতি মনঃ।
শিবং ভূগাৎ পশ্যোন্নমিতভূজমেধিমু হুরমুং
খলং কুন্দন্ কুর্যাং ব্রজমতিত গাং শালিনমহং॥
অত্র বিশ্বিমে বার ভ্যানতে বংসলং পুঞ্জীতঃ॥ ৫০॥
যথা বা॥
কম্প্রা স্বেদিনি চূর্বকুন্তল তট ইত্যাদি॥
অত্র হাস্যক্রন্থে বংসলমের পুঞ্জীতঃ॥ ৫৪॥

কুমার ইত্যাদৌ বিষয়ভেদোহপ্যপেক্ষ্যতে। শানিনং রাঘিনং। শাল্ রাঘারাং ধাতু:। মেধিধ জিপলালপার্থক্যার আম্যাণবলীবর্দ্ধবন্ধনন্তভঃ॥ ৫০॥ কন্দ্রেত্যাদৌ কিঞিৎ কালতেশোহপি দৃষ্ঠতে॥ ৫৪॥

নন্দ কহিলেন, প্রিয়তমে! তোমার পুত্র মল্লীকুস্মের নাায় কোমল কিন্তু এই কেশীদানর পর্বত অপেকাও গুরু-তর, এই কারণে আমার মন অভিশয় কম্পিত হইতেছে। কল্যাণ হউক, দেখ আমি এই স্তম্ভসদৃশ (থামের মৃত্র) ভূজ উভোলন করিয়া এই খলকে বিদীর্ণ করত ব্রশ্নমণ্ডলকে স্থাছর করিতেছি॥

এন্থলে শক্ররূপ বীর ও ভয়ানক মুখ্য বংসল রসকে পুরু করিল ॥ ৫৩ ॥

#### যপাৰা ॥

এই অন্তম লহরার ২৮ লোকে "কম্প্রা স্বেদিনি চূর্ণকুম্বন তটে" এই পদ্যে হাস্য ও করুণরস বহুসলরসকে পৃষ্ঠ 'করি-রাছে॥ ৫৪॥ অপিচ॥
মিথো বৈরাণপি ছোঁ যোঁ ভাবো ধর্মস্তাদিয়ু।
কালাদিভেদাৎ প্রাকটাং তো বিশ্বস্তো ন হুষ্যভঃ॥ ৫৫॥
অধিরতে মহাভাবে বিরুদ্ধৈবিরসা যুতিঃ।
ন স্যাদিত্যুক্ত্বলে রাধারুঞ্ঘোদ শিতং পুরা॥ ৫৬॥
কাপাচিন্ত্যুমহাশক্তো মহাপুরুষশেখনে।

মিথ ইতি। তত্ত্বাবযোগ্যেষ্ তেষ্ ভাবভেদস্য যথাকালমূলয়াং। ধর্ম স্তেই প্রীতিবাৎদলাং দথাঞ্চলতে। যোগাভাচ তুলীশ্বতাজ্ঞানিখাং জ্যেষ্ঠ আকৃষাং নাতিলোঠনাত্ত্বাচ্চ যথা প্রীবলদেবস্থা। দেবিদ্ধং থলু অযোগ্য এব বিধীয়তে জন্ম তেব্ দোবং কিং স্থানাইন্তবেতার্থ: যোবা কেচিং প্রয়োগাং প্রীভাগবতে বিকলা ইব দৃশাস্থে ত্থুলীশানং/ভূলীভাগবতসন্রভ্না প্রীতিসন্তে ক্রুডমন্তি॥ ৫৫॥

দৰ্শিতং পুরেতি ঘোরা থক্তিশৃত্বাহুঁড়িনিতাটুদুট্নিশ্বভা কাপীতি। বিষয়ুক্ষেন প্রায় স্থানে। ন বিহ্নাতে আশ্রয়ুছেইপি স্থাদায়ের

## আরও বলি॥

ধর্মনন্দন মুখিন্ঠির প্রভৃতিতে পরস্পার বিপক্ষ প্রীতি ও বাৎসলা যে চুইটা ভাব, ইংগন্ধা কালভেদে প্রকটতা প্রাপ্ত হর, কিন্তু চুক্ট হয় না ॥ ৫৫ ॥

অধিরত মহাভাবে বিরুদ্ধ ভাব সকলের সহিত নিলন হইলে বিরুদ্ধ হয় না, পূর্বে শৃগাররসে এর রাধারুদ্ধের সহচে প্রদর্শিত হইয়াছে ॥ ৫৬॥

কোন স্থানে অচিন্ত্য মহাপুরুষশিরোদণিতে রস সকলের

রসাবলিসমাবেশঃ সাদাধ্যৈবোপকারতে ॥
তক্র রসানাং বিষয়ত্বে যথা লালভমাধ্বে ॥ ৫৭ ॥
দৈত্যাচার্যান্তেদান্তে বিকৃতিমরুণতাং মল্লবর্ষ্যাঃ স্থায়ো
গণ্ডোন্নতাং থলেশাঃ প্রলম্ম্যিগণা ধ্যান্মুষ্ণাত্রবন্ধাঃ।
রোমাঞ্চং সাংযুগীনাঃ কমপি ন চমৎকারমন্তঃস্থ্রেশা
লাস্তং দাসাঃ কটাক্ষং যযুর্গিতদৃশঃ থেক্যে রঙ্গে মুকুলাং।
ভাজান্তে যথা॥ ৫৮॥

मामिजार्थः॥ ६१॥॥

দৈত্যাচার্যাঃ কংসপুরোহিতাঃ। তদা তদানীং আস্যে মুথে বিক্কৃতিং কুণমা দিকং যয়ং পুজরক্রমুল্দিলিগুদ্ধ দৃষ্টে তি ভাবঃ অনেন বীজৎসঃ। স্থায় ইজ্যান্দেলতি রস্দ্রং। প্রশন্ত ভাবঃ অনেন নষ্টচেট্টভাং। ধ্যানং ধ্যানা-ক্রম্যমেব সাক্ষাং যয়ং অনেন শাস্তঃ। অদ্যা দেবক্যাদরঃ। এতেন বৎসলঃ কর্মণশ্য। ৫৮॥

সমাবেশ আপাদনের নিমিত্ত হইয়া থাকে॥ ৫৭॥

রস সকলের বিষয়ত্তে যথা॥

লণিভ্যাণবে॥

প্রি।হিতগণ মুখ বিকৃতি, মল্লবর্গ্য সকল অরুণ বদন সধাবর্গ গণ্ড প্রকৃত্তি, খল আর্ছগণ প্রাহিতগণ মুখ বিকৃতি, মল্লবর্গ্য সকল অরুণ বদন সধাবর্গ গণ্ড প্রকৃত্তিতা, খল আর্ছগণ প্রলায় অর্থাৎ ভয় বশতঃ নই
চেইতা, ঝিষিগণ ধ্যান, দেশকা প্রভৃতি মাতৃগণ উষ্ণ অঞ্চ,
ব্রণ্পটু যোদ্ধা সকল লোমাঞ্চ, ইন্দ্র প্রভৃতি দেবেশগণ অন্তঃকরণ মধ্যে কোন নব চমৎকার, ভূত্যবর্গ নৃত্য এবং অস্তিনপাঙ্গী যুবতিগণ কটাক্ষ ধারণ করিয়াছিলেন ॥ ৫৮ ॥

স্বিন্ধ্র্থিইপ মানি শশুষু গিরিধু চাবুদাতেরু স্মিতাস্ত-সুংকারী দল্লি বিজ্ঞা প্রণায়ধুবির • প্রোঢ়িরিজেইরুণাক্ষঃ। গোর্চে সাঞ্চিবিদ্নে গুরুল্ হার্মপং প্রাস্থা কম্প্রঃ স পায়া-দাসারে স্ফার্দৃষ্টির্বিত্র পুলকী বিজ্ঞানিং বিভূবিঃ॥৫৯॥ ॥ \*॥ ইতি শীভক্তিরসায়ত্যিদ্ধাবুত্তরবিভাগে রসানাং বৈত্তবৈর্শ্বিত্রবিভ্রেবিভাগে রসানাং

অমানীতি নিরহকার তয়া শাস্ত উক্তঃ। কম্প্রাইতনেন ভয়ানকঃ। এবমন্যে-হপি জ্যোঃ। প্রাস্যাধণ্ডয়িত্বা ॥ ৫৯ ॥

॥ • ॥ ইতি শ্রীভব্তিরসামৃত্রসিন্ধৌ নবলহ্র্যাত্মকে উত্তরবিভাগে মৈত্র-বৈরক্ষিতিলহ্র্যান্তমী॥ • ॥ ৮ ॥ • ॥

#### আশ্রয় হ যথা।

যিনি পর্বত ধারণ করিলা নিজে শ্রেষ্ঠ হইলেও অমানী, শিশুগণ পর্বত ধারণ করিতে গেলে যিনি হাস্তবদন, ায় ন আমগন্ধ শিশুট দধিতে ঘুলাকারী, যিনি প্রণায় জনেতে প্রোঢ় বাদ বিস্তার করেন, যিনি গোষ্ঠ বিনাশে সাপ্রচনেত্র যিনি ইন্দ্রয় এই করিলা গুরুবর্গে কম্পান্থিত যিনি জলধারাপাতে বিস্ফারিত নেত্র ও যুবতীসকলে পুলকী, দেই প্রভূতোমাদিগকে রক্ষা করুন ॥ ৫৯॥

॥ \* । ইতি শ্রীরামনারাণ বিদ্যরত্বক ত ব্যাখ্যায় ভক্তি-রসায়তসিদ্ধর উত্তরবিভাগে রদ সকলের মৈত্রবৈরস্থিতলহ্রী অক্টমী ॥ \* ॥ ৮॥ \* ॥ অধ ংসাভাসাঃ ॥ ১॥
পূর্ববেবানু শংকীর বিশলঃ রসলক্ষণা।
রুনা এব রসাভাসা রসজৈরকুকার্ত্তি গাং।
হুংক্রেধোশরসাশ্চানু রসাশ্চাপরসাশ্চ তে।
উত্তমা মধ্যমাঃ প্রোক্তাঃ কনিষ্ঠাংশ্চতামা ক্রমাৎ ॥
তব্রোপরসাঃ ॥
প্রাপ্তিঃ স্থায়িবিভাবানুভাবাদৈন্ত্ত নিরূপতাং
শাস্তাদধ্যে রসা এব দ্বাদশোপরসা মতাঃ ॥ ২॥
তব্র শাস্তোপরসঃ ॥
ব্রক্ষভাবাৎ পরব্রক্ষণ্যদৈত্য।দিক্যযোগতঃ।

রসা ইতি রসজেনাপাততঃ প্রতীয়মানা অপীতার্থঃ। রস্<mark>যু লক্ষণা লক্ষণেন</mark> বিক্লা বিভাবাদিযু লক্ষণ্**হীনতয়া হীনাঃ**॥ ২॥

পরবন্ধণোহি প্রতিষ্ঠাহমিত্যাদিপ্রতিপাদিতে শ্রীভগবতি বন্ধভাবাদ্মিশ্বি-

#### অথ রসাভাস ॥

পূৰ্ব উপদিষ্ট রসগক্ষণদ্বারা রগসক্র অঙ্গণীন হইলে পণ্ডিতগণ তাহাকে রসাভাস বলিয়া থাকেন ॥

রসাভাগ ক্রমে উত্তম, মধাম ও কনিষ্ঠ হেদে উপরস, অনুরস এবং অপরগ এই তিন প্রকার হয়॥

ভন্মধ্যে উপরস যথা।

বিরূপতা প্রাপ্ত স্থায়ী বিভাব ও স্বস্থাবদ্ধারা লাক্তাদি দাদশ নসই উপরস হইয়া থাকে ॥ ১ ॥

তগ্নধ্যে শাস্ত উপরস্ যথা॥

সাকার পরমত্রক্ষ ভগবানে ত্রক্ষভাব হেন্তু নির্বি**ণেযক্রপে** 

তগা বীভৎসভ্যাদেঃ শান্তে: অ্পবনো ভবেং ॥
তত্তাদ্যং যথা ॥
বিজ্ঞানস্থ্যাধোতে সমাধো যত্ত্ত্তি।
তথং দৃষ্টে তদেবাদ্য পুনাণপুরুষে ত্ত্ত্তি
বিতীয়ং যথা ॥
যত্ত্র যত্ত্রাব্ধথে মম দৃষ্টি—
তং তমেন কল্যামি ভবন্তং।
যন্ত্রিরঞ্জনপর।বর্নজিং
ত্তাং বিনা কিমাপ নাপ্রমন্তি॥

শেষতা দৃষ্টে:। তথাবৈতাধিক্যযোগত: দর্মকারণেন তেন সহ সর্ম্বানাতান্তা-ভেদ ইতি মননাং। তথা বীভংসভ্মাদে: নিরন্তরং দেহাদৌ জুগুপ্সাভাবনা দৃষ্টি এবং সর্বাকারণর ব্যক্ষের সহিত অত্যন্ত অভেদ তথা অতিশীয় মুণা বোদ, এই চুই ভেদে শাস্ত উপরস চুই প্রকার হয়॥

### रुगार्था चाना यथ।

বিজ্ঞান শোভা দারা সমাধি ধৌত হইলে যে স্থ<sup>ঁ</sup> উদিত হয়, পুরাণপুরুষ তুলিদৃষ্টিগোচর হওয়াতে আজে সেই স্থের উদয় দেখিতেছি ॥

## বিতীয় যথ। ।

মে যে বিষয়ে আনার দৃষ্টি পশ্তি হইতেছে দেই দেই ছলে তোমাকে দেখিতেছি, যিনি নিরঞ্জন ও কার্যার ক্রের শীল্পরূপ তিনিই তুমি, ভোমা ব্যভিরেকে আর অফ কিছু নাই। গ শ্রীভোপরসং ।

ক্ষেদ্যতান্ত্র পরমোৎকর্ষণীকরা।
ভীক্তদেবতান্তর পরমোৎকর্ষণীকরা।
বাদাভিক্রম দৈনেত শ্রীভোগরসভা মতা ॥ ৩ ॥
ভাদাং যথা ॥
গ্রন্বপূর্বনশতাং সতাং কুলৈব্যায়াম গনটনো পান্সলাং।
কির প্রভো দ্শামতেতাকুঠানক্

ণাজিলচিৰিবেকাজেঙি ভোৱং। ইতঃ প্ৰমূলাহ্রণাজেকলে**শদৰ্শনাদেৰ** নি ॥ ৩ ॥

শতাং প্রথমন্ পূর্ কৃক্টিতি বলামণি ভাগ পুথভলা দশ্মনিতাবা।

# অথ প্রীত উপন্দ।

নাক ফার অংগ্র ধৃষ্টতা, কৃষ্ণভক্তের প্রতি **অবহেলা,** নার অভাক্ট দেব হইতে অক দেবতার অতি**শয় উৎকর্ম** এবং মর্যাদার অতিক্রম, এই সকল ধারা **ঐতি উপর্য** বিক্রোও ॥ ৩ ॥

### जन्मत्भा चामा वर्षा॥

ন্টু (মধ্মধন) সংগকনের অবজ্ঞান্সন নৃত্যকারী **হবি-**জীক্ষের অগ্নে দেকের অল্ল বিশ্বতা সত্ত্বেও **মহ্মর** বজ্ঞ প্রকাশপূর্বক অনর্গন চটুনবাকের কহিলেন, **প্রভা**র আরু প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ কর, এই বনিয়া <mark>আপনার রতি</mark>

# ভাতেরগায়ভণিকু:। [উত্র'। ১ম ক্রিয়া

চটুলো খটুব রেপুতান্সনো রতিং ॥ ৪ ॥
অথ শ্রের উপরশঃ ॥
এক স্থান্ধর সংখ্যন হরিমিত্রাদ্যর্ক্তথা ।
যুক্ষভূমাদিনা চাপি প্রেরামুপরসে। ভবেং ॥ ৫ ॥
তত্রাদ্যং যথা ।
ফুফদিতুদিতো ভিগা চকস্পে
ছলিতনর্মগিরা স্তুতিং কার ।
স দৃপঃ পরি রিপিতো ভুজাভ্যাং
হরিণা দণ্ডবদ গ্রতঃ পপাত ॥

ভো ইতি শ্রীক্লকপ্রতিমাং প্রতি সংখাধনং ॥ ৪ ॥ একস্মিরের নতু মিথং ॥ ঁ ৫॥ সন্প ইতি শ্রীহরে: পুলাঃ পুলুস্য বা খিণুরঃ কশ্চিদিত্যর্থ:॥ ৬॥

ৰাৰ্থনা করিয়াছেন॥ ৪॥

## ব্দথ প্রেয় উপরস ॥

পরস্পর সধ্য না হইয়া একেতেই সধ্য, কৃষ্ণবন্ধু প্রভৃতির বঞ্চা এবং যুদ্ধাতিশর এই সকল দারা প্রেয়োরস উপরস্ ম ॥ ৫ ॥

## जबार्या बाता यथा॥

জীকক পাশনার পুঁজীর অধনা পুজের কোন শশুরকে কাহ এই কথা বলিলে, উৎক্ষণাৎ ঐ রাজা ভরে কম্পিত ইয়াছিলেন, পরিহাসবাক্যবারা ছল করিলে তব করিজে বিলেন এবং হত্তবর বারা স্থানিজন বরিলে ইচ্ছা করিছে ধেশ হত্তের ন্যার পতিত হইবাছিল ।

# 🎉 मुद्दी । ] एक्टिममाम्छनिष्ः।

হে ভগিনি॥ १॥

বৎসল উপরস যথা ॥

সামর্ব্যের অধিক্য জ্ঞান, লালনাদিতে অপ্রয়ন্ত এবং আভিশয় এই সকলুদারা বংসল উপরস হয় ॥ ও ॥ ভশুধ্যে আদ্য যথা ॥

লিনি ৷ যে অবধি তোমার পুত্র হইতে পর্বত অপেকা। মুম্মানের সহসা নিপাত দেবিয়াছি, সেই হইতে অবল সুমতেও আর ওাঁহাতে, উলেগ প্রাপ্ত হই না ॥

অধ শুরার উপরস 🞼

২ হাতে স্থায়ির বিরূপতা ॥

হৈরের মধ্যে কেবল একের জে রতি এবং এক ব্যক্তির লৈ যে রতি, ভাছাকেই খাষিত্র বিস্নপতা যলে এ ৭



বিভাবস্থৈব বৈরূপ্যং স্থাত্মিন্ত । তিত্রকত্ত রতির্যথা ল'লতমাধৰে । মন্দ্রিয়তং প্রকৃতিসিদ্ধমপি ব্যুদন্তং সংগোপিতশ্চ সহজোহপি দৃশোন্তরকঃ । ধুমারিতে বিজবপুসদনার্ত্তিবহৃতি। বহুরো কাপি গতিরকুরিতাম্যাসীং ॥ ৮॥ অভ্যন্তাভাব এবাত্র রতেঃ খলুবিবক্ষিতঃ ।

বিভাবভালখনরপতৈবেতি কচিত্তদেহসা কচিত্তদন্ত করণতেতার্থঃ । ব্যক্তি পতঃ ছারিলো বৈরূপাযোগাং। তত্তিক তররতাবাহরণে যজ্ঞ সজীবু দৈবিভাব বৈরূপাং ক্ষেম্ব আন্ধানে হয়ং, ১৯৯ তালুলা রতিং নিরূপয়তি
মিতি শীক্ষকরতিমপি নোলাম্যুতি । অব্যক্তি অভ্যান স্বাধান্য সংক্রমপার্থ চর্বাতে ইত্যুক্তং। এক সানে ক্রে রতি হুড়ার রাইনার বৈরূপাং। এক আর্থিক বিশ্ব রতি হুড়ার হুমরোন্তার ত্যাভাবে ক্রেম্ব ভাব। তালেভাচ নারিকাগত্যের জ্ঞেন ভিত্তান্ত হুমরোন্তার ত্যাভাবে ক্রেম্ব গভাব । ৮॥

অভ্যন্তাভাৰত্ত্ৰকালিকাসত। হত্ৰেতি তাগাং ব্ৰাহ্মণদেহম**িছিত**্ ইতাৰ্থঃ॥ ৯ ॥

বিভাবের বিরূপতা স্থায়িতে আরোপ হয়।
ভন্মধে একত্র রতি,যথা
লালতমাধবে॥

যজ্ঞপদ্বীন্ত নের বদনানল ধুমায়িত হইলে স্বলাবসিদ্ধ হাস্ত নিরস্ত এবং চক্ষুর সহজ্ঞ তর্মণ্ড সংগোপিত হইয়া কুষ্ণের শীত্র কোন গতি অনুবিত হইয়াছিল॥ ৮॥

এখনে রতির অত্যমভাবই বলিবার যোগ্য, এই



বিভাবত্যৈব বৈরূপ্যং স্থায়িন্সত্রোপচর্ব্যতে ॥
তিত্রকত্র রতির্যথা ললিতমাধবে ॥
মন্দ্রিয়াকং প্রাকৃতিসিদ্ধমপি ব্যুদন্তং
সংগোপিতশ্চ সহজোহপি দুশোন্তরকঃ ।
ধ্যারিতে বিজবপুনদনার্ত্তিবহাবহুায় কাপি গতিরঙ্কুরিতাম্যাসীৎ ॥ ৮ ॥
আভ্যন্তাভাব এবাত্র রতেঃ ধলুবিবক্ষিতঃ ।

বিভাবভালখনরপতৈবেতি কচিত্রদেহদা কচিত্তদন্তর লগতেতার্থঃ। বৃদ্ধান্ত পতঃ দারিনো বৈরূপ্যাযোগ্যাং। তত্তিক তররতাবাহরণে যজ্ঞ পত্তী ক্রিক্তর বৈরূপাং জ্ঞেরং আন্ধাদেহতাং, তচে তাদুলাং রতিং নিরূপয়তি অস্টিজেরং
মিতি শ্রিক্তরতিমিপি নোলাম্মতি । অত্তা অভ্যান দার্থনাত সংক্রেম্পার্থনাত ইত্তেইং । এক লানেক রতির্ভাবিদ্যার বৈরূপাং। এক আনিক্রিক্তির তাদেত কর্মির ক্রেম্পার্থনাত বিরূপার বির্দ্ধান্ত বিরূপার বিরূপা

অভ্যন্তাভাষত্রৈকালিকাসত। তত্ত্তেতি তাদাং ব্রহ্মণদেচন

বিভাবের বিরূপতা স্থায়িতে আরোপ হয়। তন্মধে একত্র রতি,যথা লালতমাধ্যে ॥

যজ্ঞপদ্ধীগণের বদনানল ধুমায়িত ছইলে সভাবসিদ্ধ হাত্ম নিরস্ত এবং চকুর সহজ তর্মণ্ড সংগোপিত হইয়া কুকের শীদ্র কোন গতি অছুরিত হইয়াছিল। ৮। এম্বনে রতির অত্যন্তভাবই বলিবার যোগ্য, এই

লতাপশুপুলিকীয় র্কাশ্রপি স বর্ততে ॥ ২৯ ॥
তত্ত্ব লতা যথা ॥
সথি মধু কিয়নী নিশম্য বংশীং
মধুমথনেন কটাকিতাথ মুখী ।
মুকুলপুলকিতা লতাবলীয়ং
রভিদিহ পল্লবিক্তাং হুদি ব্যনক্তি ॥ ১২ ॥
পশুর্যথা ॥

প্রেক্যতে। বৃদ্ধান্ত হাসমাত্রার্থং তাদৃশবঞ্চ বর্ণাতে। জন্মাবান্তব তদ্রত্যাভাবাদ্রুসাভাসবং। প্রিকাণু তু বান্তবেরতিবেংগি জাতিবৈদ্ধগালক্ষপদ্ধীবন্তদাভাসবং
ক্রেন্তবং। তত্র পশুরু বৈদ্ধাং নাজ্যেব। বৃদ্ধান্ত বৈদ্ধাপ্রাতিকুলাং দৃশাত।
প্রিকাশি চ বৈদ্ধাং নাভিসজ্ঞাবাতে। তত্মান্তবিরহ উদ্দিষ্ট:। অথোজ্ঞলাং নাম
আক্রতাঃ জাত্যাদিনা চ্যযোগ্যবং জন্তদেযাগ্যভাবিরহন্চ বর্থাযোগ্যং জ্ঞেব্যঃ।
স্বর্গ্যত ইতি স্বৈদ্ধ্যাদিবিরহে। বর্গতে॥ ১১॥

স্থি মধ্বিত্যক্ত। সমূক্সপুলকা নিশম্য বংশীং নধ-লিথিতাত হরিং প্রসন্ত্য জাতা। তদিহ নববন্ধা প্রতানিনীরং লগতি যথা ভবতী তথা বরারী। ইতি বা পাঠা ৪ ২২ ৪

গতা, পশু, প্লিন্দী ও রদ্ধা সকলে অবস্থিত হয় ॥ ১১ ॥
তথ্যব্যে লভায় বিদয়তার উজ্জনভাব যথা ॥
স্থি ! এই মুখী সভাবলী বংশীরৰ আবণ করিয়া মধুকরণ
এবং মধুমথনকর্ত্ব কটান্দিত হট্যা মুকুল রূপ পুলুকার্ক্র
কলেবরে জনমন্থ পলবিভা রভি প্রকাশ করিতেছে ॥ ১২ ॥
পশুতে বিয়ন্ধতার উজ্জনের অভাব বধা ॥

পশ্য গৌরি কিরতী দৃগঞ্চলং
শেরমত্যবহরং জরতাশো ॥
শংমিনোহত্ত বিরূপস্থনে করাগতয়াপি চেৎ ।
ঘটেতাশো বিভাবদ্য বিরূপজেই প্যুদাহুতিঃ।
ভাটিছো জ্বল্য বৈদ্ধাৎ ক্ষেণ্ডাচ্চ কথ্যতে।
শ্রারদ্য বিভাবহুমনা আভাদ বা তি হা ॥
অধা সূভাববৈরূপ্য ।
সময়ানাং ব্যাকিক্রা ও নামাক্ষং প্রকৃত্যপি চ।
বৈরূপ্যমন্তাবাদেম না যভিরুদীরিতং ॥ ১৩ ॥

বৈশক্ষ্যভাগিনা দৰ্শিভ্ৰেৰ বির্ণন্ন প্ৰণহরতিওচিছেতি। ভালিক নুন্ধনস্য ভাল বিভাৰত বিশিষে ভাল সভু স্থানী বা যত্ৰ তজ্ঞপতং। সাম্ব্ৰোটজা লা-বৈশক্ষেত্ৰেৰ বৈশিক বাংলঃ। শৃকার বুটনা ক্ষ্যভাগ হন্তে হন্যথেতি পাঠা-ভাল ল'ত ।

কৃষ্ণবর্ধ এবং বিশ্বযুগ্মবারা উন্নতন্তন রচন। ক্রিয়া অপাঙ্গ নিক্ষেপে জ্রিক্ষকে হাস্যায়িত করাইতেছে॥

এক রাগত। প্রযুক্ত যদি এখানে স্থায়িভাবের বিরূপত্ব ঘটে, তথাপি বিভাবের বিরূপতা বিষয়েই এই উদাহরণ॥

বিভাৰতা হয়, ক্রির ব্যত্ত সাভাগ নাত্র॥

বিভাৰতা হয়, ক্রিরে ব্যত্ত সাভাগ নাত্র॥

স্বাধ সমুভারের বিরূপতা॥

শনবের অভিজন, আম্যত্ব (শালীকত্ব ) এবং ধৃউতা এই ব ক্লাকে প্রভিত্তেরা ক্মুভারারিত বৈরুপ্য বলিয়া থাকেন ॥১৩ '

## BE FOR STEEL | WITH THE PARTY

তার সমান্যতিকানিং ।।

মানাং পরিতানীনাং প্রিয়ে ব্রেগোলিতানম ।

গুংস: স্থিতানীনাং প্রিয়ে তাড়নানিও ।

এতেধাননাথাভাবং সময়ানাং ব্যক্তিক্রমং ।

ভক্রাদাং যথা ॥

কান্তানথাকিতোংপাদ্য পরিষ্ঠা হলে হি য়ং ।

কৈলাস্বাসিনীং দাসাং স্থপাদ্টা ভজ্প মাং ॥

অধ গ্রাম্যুখ ॥

বালপ্রান্তাপন্যাসো বিরসোজিপ্রপঞ্চন

সম্বা: আচারা: % ১৪ ৪

ভক্ষধ্যে সমধ্যের অভিক্র<u>করী</u> দ্র

শতিতাদির আচার, প্রিয়ব্যক্তিতে রোধোদ্য প্রয়ুত্তি এবং প্রিয়াকর্তৃক তাড়নাদিতে পুরুষের হাস্থাদি, এই সুক্তির অন্তথা ভাব হইলে সময়াদির ব্যক্তিরুম ঘটে।

ৰে হৰে ৷ তুমি আৰু কান্তার নিশান্তিত হ**ইলেঞ্জ লাজা** পরিতামিকুক্তক এই সামি টকুলুকুল্মিনা দাসী আহাকে

कृतापृष्टिकाला स्वास करत

my divides

তজাদ্যং যথা ॥
কিং ন ফণিকিশোরীণাং দ্বং পুক্রসদাং সদা।
মুরলীধ্বনিনা নীবীং গোপবাল বিলুম্পনি ॥
ব্যক্তভা ॥
ব্যক্তভা দিঃ সাং সন্তোগাদেন্ত ধৃষ্টভা ॥
যথা ॥
কান্তঃ কৈলাসক্ঞোহয়ং রম্যাহং নবযোবনা।
দং বিদধ্বেহিদি গোবিন্দ কিন্তা বাচ্যমতঃ পরং ॥

কৈলাগৰাসিনীনামিব পুরানান্তরকথিতরীতা। ফলিকিলোরীণামপুলো-জ্ঞাতিমুপরস এবাবজ্ঞয়া বর্গগতি কিন্ন ইতি। পুরুরসলাং কালিরভূদমা জল-রাসিনীনাং। অত্ত শ্রীকৃঞ্জনা তলা বালোহপি সুরলীধ্বনিবিশেষেশকৃত-

जनार्था याना वर्था॥

এবমেব ভূ গোণানাং হাদাদীনামপি স্বয়ং।

ছে গোপবালক! আমদা সকল কালিয়ভুদবাসিনী নাগ-কিশোরী, ভূমি কেন সর্বদা মুরলীধ্বনি দারা আমাদের নীবী হরণ করিয়া থাক।

অথ ধৃষ্টত।॥

সম্ভোগাদির স্পাটকপে প্রার্থনাদিকে ধৃষ্টতা ক্রে॥

যথা॥

হে গোবিন্দ! এই মনোহর কৈলাস কুঞ্জ, ভাহাতে আমি নৰবোৰনা এবং ত্মিও রসিক, অভএব ইহার পর আর কি ইসিব ঃ

এইরপ গৌণগ্রাসপ্রভৃতি উপরসম্বের উদাহরণ প্রভরণ

## THE PROPERTY OF THE PROPERTY O

বিশ্বের বিশ্বর বিশ্বর কর্মান করি । ১৫ ।

ভক্তাবিভিনিতা গালৈ হৈ ক্ষেত্র করি বিভাগি লৈ হৈ লাভিনিতা গালি লৈ ক্ষেত্র করি লাভিনিতা ল

কৈশোরতাননা বালেতি সংখাধনং তাসামবৈদশ্বামেব জেবং॥ ১৫। দাদিতিরিতি। ভক্তা অর্থ পঞ্চিধা শান্তর রসশাস্ত্রাক্রপ্রস্থিতী কক্ষটনারী ॥১৪॥

স্বয়ং **অবগত হ**ইবেন ॥ ১৫ ॥

অথ অসুরস ম

ক্ষণভাষ্টিত পঞ্বিধ ভক্ত বিভাগদিবার। প্রভৃতি শশু রন তথা শান্ত রস, এই সকল। অনুরস্ সম্মত ঃ ১৬ ঃ

**ज्यार्था होना ज्यूबन यथा ॥** 

কৰ্ণজনামা নৰ্কটা অক্টাৰানা উৎকৃষ্ট নৃত্য করাজে বোপনমূহের বদহ হাস্থানীত হুইয়া লে হুইয়াছিল ঃ ১৭ ঃ ভাষীর ককে বছধা বিভণ্ডাং
বেলান্তভাকে তক্ষণ্ডলস্য
ভাষাকিভাকত তক্ষণ্ডলস্য
ভাষাকিভাকত হুর্যরাসীং।
ক্রেমাকিভাকত হুর্যরাসীং।
ক্রেমাকিভাকত হুর্যরাসীং।
ক্রেমাকিভাকত হুর্যরাসীং।
ক্রেমাকিভাকত হুর্যাকটাং যদি বিভ্রতি
ক্রেমাকিভিবিভাবাদ্যৈতদাপ্যক্ষনা মভাঃ ॥
ক্রান্সন্মানারাঃ॥

ক্রিকিবংশ ভদ্ধণতলতার। সৌরতেচ ত্লে কক্র বিভি বিশ্বঃ। ভাগীররক্ষ টক্রি পর্যক্ষ ক্লমণ দ ২৮ দ ক্রিকিভি শান্ত একো হাস্যাদরক্ষ সপ্তেত্যটো ॥ ১৯ ॥

আধ অমৃত অসুরস।।
ভাতীরবৃদ্ধের লতামধ্যে শুকুপক্ষি সকরে
ক্ষ্মিকার বিভগ্ন শুনিয়া দেববি নারদ রি
ব্যোক্তিকবংশবর হইয়াছিলেন ॥

শাইরূপ বীরাদিরসেরও উদাহরণ জানিতে হারটোক সভা ও পান্ত এই আটটা যদি আরু ফুটক সকলে প্রকটতা ধারণ করে, তা

चर चगद्रम ॥

## ্ত্ৰীত বিষ্ণুত প্ৰস্থাৰ প্ৰতিষ্ঠিত ইংলী । ইতিয়ো নাটা নাত্ৰাহ্ত চোটকলকণে ॥ ২২ ॥

। এই ইতি লীভ:ক্রসায়তসিদ।বৃত্রবিভাগে রসাভাগ শহরী নব্যী । এ। ৯। ৯। ৯।

ব্রিকার পৌরবর্গাদস্য ভক্তিরপত্রিয়ঃ।

मभ फर्डि नगरमन गरा तमा विनिधिक। ॥

्विश्वाः जन्मसार्के द्वार ८७० निवसायान्य मा, (योगान स्वार्क-

महित्याह श्रद्धाना अध्यानमुद्धन्य त्मान गरिया । स्टब्स् महिक्**टिस्स कार्यः** स**कटान** श्रीकृष्ण स्थार १२॥

. • देपुण्डम्बन्धाः नमानामनक्ती नवमे ॥ • ॥

কেই কেই লাব সকলকে তদাভাস, কেই কেই বা সম' ভাস বলিয়া ধর্ণন করেন কিন্তু রসজ্ঞয়া ক্রিবা শাহাতে আনন্দ-প্রদত আ'ছে কং সমুদ্ধকেই রস কলিয়া থাকেন। ২১॥

ভারণ প্রভৃতি চা'র ট বুতি নাটোই উপযুক্ত, এজন্য ভাষা নাচকচাপ্রকানাম চ নিজকত অলস্কারগ্রন্থে রসের অব-স্থান সূচক বলিখা উত্ত ধ্যাতি ॥ ২২ ॥

॥ 🛊 ॥ 📑 তি জীরামনাব ধ্ববিদ্যান্ত্রত ব্যাথ্যায় ভাজি-রমায় চবিদ্ধুর উত্রবিভাগে রংক্রিস্পৃষ্ঠী নব্যী ॥ 🛊 ॥ ৯॥॥॥॥

কামি একের গৌরবন্ধম নিবন্ধন এই ভক্তিরসদ**্পারের** সংগ্রহ সংক্ষেপে নিশ্মাণ করিকান ৪ গোপানরপ্রেশত হ দধদপি নঘুনাথত ববিস্তারী তুষত্বে সনাতনেহাগ্যি-মুভবতালে রসায়ভালে ধেঃ ॥

॥ \* ॥ ইতি এ ভাকরসাম্তদিকে। কোণভক্তিরসাদি-নিরপণং নাম চতুর্গে বিভাগঃ ॥ \* ॥ ৪॥ \* ॥

॥ 🐲 ॥ সমাজোহয়ং শ্রীমন্তক্তিরদায়ত্রসিম্পুরিতি ॥ 🗰 🛭

মানাকেতি শীকিটাতক্ষ্ণ স্বধ্নশুপুন্ন। বিজ্ঞানিতাগাশি না জোন। অলগা বানালাভিবিতি প্রশীন বিষ্টাধিকটভূল্পতীগ্রিত ইভাগা। বিজ্ঞানিত বিতাস্য কলিকত নিক্সাধনশন্তীগ্রিত হৈতি জ্ঞানঃ ম

বিটিজি ১: উইজিক:। সুষ্ঠু ক্রণেণ ইত্যের পঠিতবাংণ তেবাং দীনখনাজানত্ব-পাঠেহপি তদস্তিভঃ সরস্বতী কুলং কলং হত্তে য়ং কপং সক্ষপং ঘদ্যেতি প্রত্যান্ত স্কর্মশবং পদং পেন্বয়ন্ত্রী দ্যান্ত্রিতী।

> শ্রীক্ষণ সর্বাপৃথি ব চর্ছি বিপ্লে গোক্লেব্যক্তর্ মাধুলাখ্যাব্দাঃ সচ পশুপক্তানর লক্ষ্মীভিরিষ্টা। প্রবাধাব্যমধ্যে সচ বধুরগুবং শ্রীপুরাধামধারী-ভাবিন গ্রাহ বলারাব্যিনভম্মিটা ধার্লার প্রচারঃ ॥

ধিনি গোণালরপের শেভা ধারণ করিয়া বস্থাধের ভাই বিস্তার কলিয়াছেন, শেই দন্তন প্রভু এই ভক্তিরসায়্তসিদ্ধ উত্তরবিভাগে সম্ভূক্ত হউন॥

॥ • ॥ ইতি এ নামনারায়ণবিদ্যারস্কৃত ব্যাখ্যার ভক্তিরসার স্থ চলিকুতে গৌণভক্তিরদ্-নিরূপণ চতুর্ব বিভাগ ॥ • ॥ ॥ ॥ রামান্তশক্রগণিতে, পাকে গোকুলমধিন্তিতৈনায়ং। ক্রিভক্তিরসায় হসিজ্-বিটিকিতঃ কুদ্রেরপেণ॥ \*॥

ধনপিচ নাতিবিওছা, তদপিচ সন্ধিং কনাপুরীকার্যা।

ইপ্নসন্ধনীয়ং, নৌকৈবাস্যামৃতান্ডোধেঃ॥

॥ • ॥ সমাপ্রেরং টাকা, তেবামের প্রীত্রে ভবতু॥ • ॥

সংখ্যা = ৬৯৬৯। মৃলং ৩৩১৫। টাকা ৩৯৪৪।

আমি রূপ অতি কৃত্র হইয়া রাম, অগ ও ইস্র গণিতে অর্থাৎ ১৪৭০ শাকে গোকুলে অব্দিক্ত হইয়া এই ভক্তিরনা-মুক্তনিকুকে অক্ষর রূপে উটুজিত করিলাম সরস্বতী পকে কুজরুপ অর্থাৎ কুজে ইন্দর্রপ, এই প্রকার অর্থ হইবে॥ স্বা১৩০১ সাল। ৮ ই কাত্তিক

**छ**र्ज भश्यक्षता ।

ममाख ॥